N. T. in Hindi.
The Kaithi character.
Presb. Mission press.
Allahabad, 1846

R.

जगतारक

परभु यसु मसीह का नया नीयम

जीसको

मंगलसमाचार कहते हैं।

हींदुइ भाषा में कीया गया

उस मंडली की सहाय से जो

धरम पुसतकों को जगत में परचार करती है

जीसको अंगरेज़ी में

बैबल सुसैइटी कहते हैं।

कलकता बैबल सोसैइटी के लीए छापी गई।

इलाहाबाद के

छापेख़ाने में छापी गई।

सन १८४६।

मंगल समाचार मती नयोत।

---

१ पहीला पनव्र।
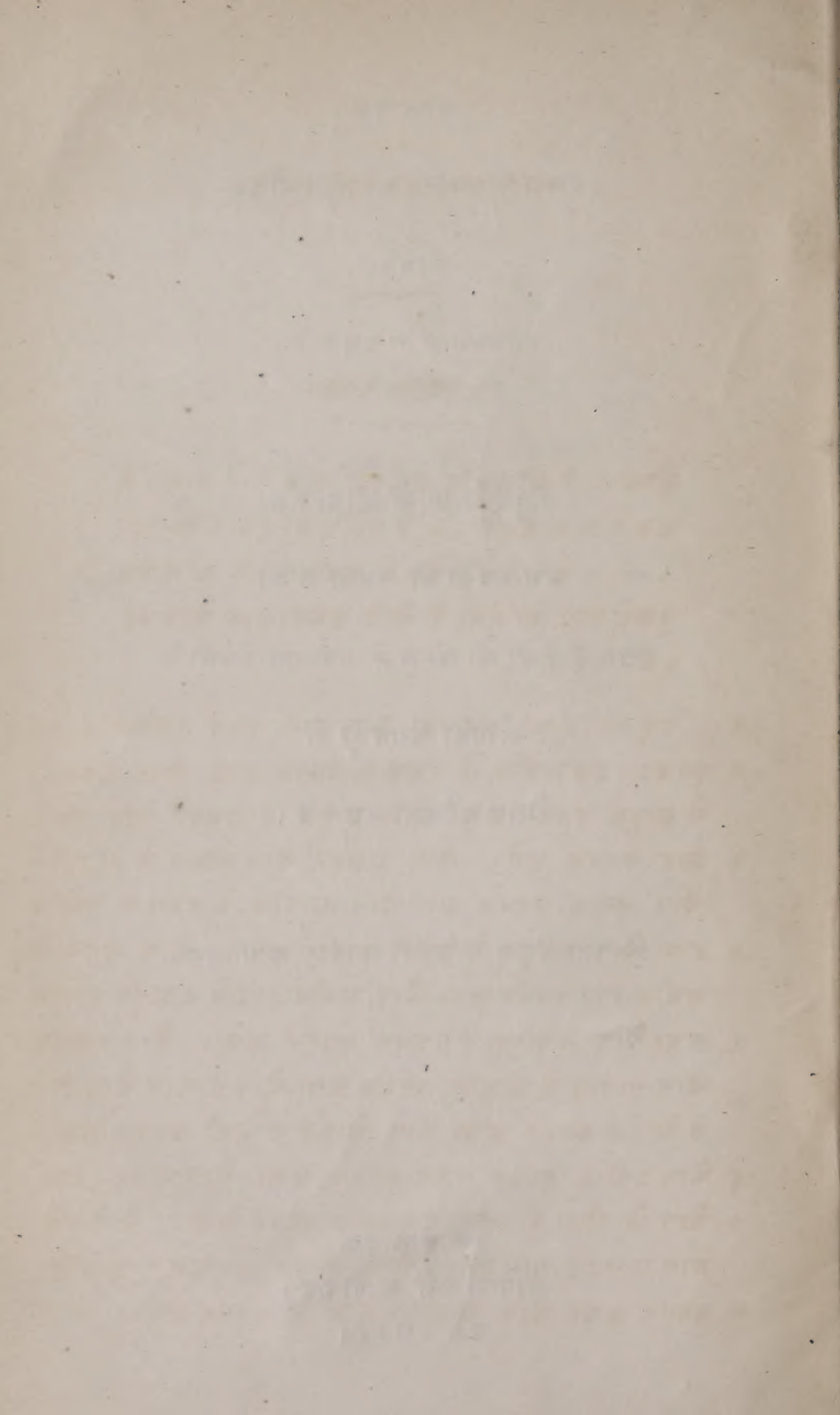
दीष्पाता है की मसीह इव्रनाहीम के श्रीान दाउद के वंस में ऊआ इव्रनाहीम से मसीह लों वयालीस पीढ़ी १—१७ कनया के गनभ में अवतान लेने का संदेस दुत युसफ को देता है श्रीान उसका नाम श्रीान पद १८—२५।

१ यसु मसीह की वंसावली दाउद का पुतन इव्रनाहीम का
२ पुतन। इव्रनाहीम से इसहाक् उतपंन ऊआ श्रीान इसहाक् से याकुव्र उतपंन ऊआ श्रीान याकुव्र से यऊदा श्रीान उसके
३ भाइ उतपंन ऊऐ। श्रीान यऊदा श्रीान तामन से फानीज् श्रीान जनाह उतपंन ऊऐ श्रीान फानीज् से हसनुन उतपंन
४ ऊआ श्रीान हसनुन से अनम उतपंन ऊआ। श्रीान अनम से अमीनादाव्र उतपंन ऊआ श्रीान अमीनादाव्र से नआसुन उतपंन
५ ऊआ श्रीान नआसुन से सलमन उतपंन ऊआ। श्रीान सलमन श्रीान नाहाव्र से व्रोआज् उतपंन ऊआ श्रीान व्रोआज् श्रीान नुत से श्रोव्रेद उतपंन ऊआ श्रीान श्रोव्रेद से यसी उतपंन ऊआ।
६ श्रीान यसी से दाउद नाजा उतपंन ऊआ श्रीान दाउद नाजा
७ श्रीान श्रीानीया की पतनी से सुलेमान उतपंन ऊआ। श्रीान सुलेमान से नहव्रोआम उतपंन ऊआ श्रीान नहव्रोआम से आव्रीया
८ उतपंन ऊआ श्रीान आव्रीया से आसा उतपंन ऊआ। श्रीान

आरा से यरूसाफरात उतपंन ऊआ और यरूसाफरात से युराम
९ उतपंन ऊआ और युराम से उजीयाह उतपंन ऊआ। और
उजीयाह से युताम उतपंन ऊआ और युताम से आहाज़ उतपंन
१० ऊआ और आहाज़ से हीज़कीया उतपंन ऊआ। और हीज़-
कीया से मनसा उतपंन ऊआ और मनसा से अमुन उतपंन
११ ऊआ और अमुन से युसीया उतपंन ऊआ। और युसीया से
युकानीया और उस के भाइ उन दोनों में उतपंन ऊए जब
१२ वे बाबुल को पऊंचाए गये। और बाबुल को पऊंचाए जाने
के पीछे युकानीया से सलताइल उतपंन ऊआ और सलताइल
१३ से ज़ोरबाबुल उतपंन ऊआ। और ज़ोरबाबुल से अबयुद
उतपंन ऊआ और अबयुद से इलीयाकीम उतपंन ऊआ और
१४ इलीयाकीम से आज़ुर उतपंन ऊआ। और आज़ुर से सादुक
उतपंन ऊआ और सादुक से आकीम उतपंन ऊआ और
१५ आकीम से इलीयुद उतपंन ऊआ। और इलीयुद से इली-
याज़र उतपंन ऊआ और इलीयाज़र से मतन उतपंन ऊआ
१६ और मतन से याकुब उतपंन ऊआ। और याकुब से युसफ
उतपंन ऊआ जो मरीयम का पती था जीसके गरभ से यसु
१७ उतपंन ऊआ जो मसीह कहावता है। सो सब पीढ़ी इबरा-
हीम से दाउद लों चौदह और दाउद से बाबुल को पऊंचाये
जाने लों चौदह पीढ़ी और बाबुल को पऊंचाये जाने से मसीह
१८ लों चौदह पीढ़ी। अब यसु मसीह का जनम यूं ऊआ की
जब उसकी माता मरीयम युसफ से बयनदत ऊइ उनके एकठे
१९ होने से आगे वुह धरमातमा से गरभनी पाइ गइ। तब उस
के पती युसफ ने धरमी होके न चाहा की उसे परगट में
२० कलंकीनी करे उसे चुपके से छोड़ने का मन कीया। परंतु इन
बातों की चीनता करते देखो की इसर के दुत ने सपन में उसे
दरसन देके कहा की हे दाउद के पुतर युसफ अपनी पतनी
मरीयम को अपने यहां लाने से मत डर कयोंकी जो उस में

२१ उतपंन है से पनमातमा से है। औान वृह पुतन जनेगी औान तु उसका नाम य़सु नप्पना क्य़ोंकी वुह अपने लोगों का उनके
२२ पापें से व्रयावेगा। अव्र य़ह सव्र ऊआ जेसतें इसन का व्रयन, जो नवीसद्व्रकता के दुवाना से कहा गय़ा था, समपुनन
२३ होवे। की देप्पो एक कुआंना गनमनी होगी औान एक पुतन जनेगी औान उसका नाम अमानुइल नप्पेंगे जीसका अनथ य़ह
२४ है की इसन हमाने संग। तव्र य़ुसफ़ ने नोंद से उठके, जैसा की इसन के दुत ने उसे कहा था, वैसा कीय़ा औान अपनी पतनी
२५ को अपने य़हां ले आय़ा। औान जव्र लों वुह अपना पहीलैाठा पुतन न जनी उस से अगय़ान नहा औान उसका नाम य़सु नप्पा।

२ दुसना पनव्र।

मसीह को गय़ानीय़ों का प्पोजना औान हीनुदीस नाजा का उनहें संदेस देना १—८ तानेका उनके आगे आगे जाना औान उनका मसीह को पुजना औान भेट देना औान अपने देस को फीन जाना ९—१२ मीसन में मसीह का पऊंयाय़ा जाना औान हीनुदीस के छल से व्रयना १३—१५ व्रैतुलहम औान उसके आस पास के व्रालकों का व्रचन कनना १६—१८ मसीह का इसनाइल के देस में फीन पऊंयाय़ा जाना औान नासनः में नहना १९—२३।

१ अव्र हीनुदीस नाजा के समय़ में जव्र य़सु का जनम य़ऊदीय़ः के व्रैतुलहम में ऊआ देप्पो की गय़ानीय़ों ने पुनव्र से य़नो-
२ सलीम में आके कहा। की य़ऊदीय़ों का नाजा, जो उतपंन ऊआ सो कहां है? क्य़ोंकी पुनव्र में हम ने उसके ताने को
३ देप्पा है औान उसे पुजने को आय़े हैं। जव्र हीनुदीस नाजा ने य़ह सुना वुह औान साने य़नोसलीम उसके संग व्रय़ाकुल

४ ऊप्ऐ। श्रौन जव्र उस ने लोगों के सव्र पनधान य़ाजकों श्रौन अयापकों को एकठ कीय़ा उसने उनसे पुछा की मसीह को
५ कहां उतपंन होना है ?। तव्र उनहों ने उसे कहा की य़ऊ-दीय़: के व्रैतुलहम में कय़ोंकी नवीसदव्रकता ने ऐसा लीष्पा
६ है। की हे य़ऊदा देस के व्रैतुलहम य़ऊदा के पनधानों में तु सव्र से छोटा नहीं कय़ोंकी तुझ से ऐक पनधान नीकलेगा जो
७ मेने इसनाइल लोगों को यनावेगा। तव्र हीनुदीस ने गय़ानो-य़ों को युपके से व्रुला के जतन से उनहें पछा की तानां कीस
८ समय़ दीष्पाइ दीय़ा। श्रौन उसने य़ह कहके उनहें व्रैतुलहम में भेजा की जाश्रो श्रौन जतन से व्रालक को ढूंढ़ो श्रौन जव्र उसे पाश्रो मुझे संदेस पऊंयाश्रो जीसतें मैं भी आके उसे
९ पननाम कनुं। नाजा की सुन के वे यले गय़े श्रौन देष्पो की वुह तानां जीसे उनहों ने पुनव्र में देष्पा था उनके आगे आगे गय़ा य़हां लों की जहां वुह व्रालक था तहां उपन आ ठहना।
१० श्रौन वे उस तानें को देष्प के अतय़ंत आनंद से व्रड़े आनंदीत
११ ऊप्ऐ। श्रौन जव्र वे घन में आय़ा उनहों ने उस व्रालक को उसकी माता मनीय़म के संग देष्पा श्रौन दंडवत कनके उसकी पुजा की श्रौन उनहों ने अपने भंडान को ष्पोल के उसे सोना
१२ श्रौन लोव्रान श्रौन गंधनस यढाय़े। श्रौन जीसतें वे हीनुदीस के पास फीन न जाय़ें इसन से सपन में यताय़े जाके दुसने
१३ मानग से अपनेही देस को यलेगय़े। श्रौन उनके जाने के पीछे देष्पो की इसन का दुत सपन में य़ुसफ को दनसन देके व्रोला की उठ श्रौन व्रालक को श्रौन उसकी माता को लेके मीसन को भाग जा श्रौन वहीं नह जव्र लों मैं तुझे न कऊं कय़ोंकी हीनुदीस इस व्रालक को नास कनने के लीय़े ढुंढ़ेगा।
१४ तव्र वुह उठके व्रालक को श्रौन उसकी माता को लेके नाते नात
१५ मीसन को यला गय़ा। श्रौन हीनुदीस के मनने लों वहीं नहा जीसतें इसन का व्रयन जो नवीसदव्रकता के दुवाना से

कहा गया की मैं ने अपने पुतन को मीसन से वुलाया पुना
१६ होवे। जव हीनुदीस ने देप्पा की गयानीयों ने उससे ठठा
कीया अती कोपीत ऊआ ओान उस समय के समान जैसा की
उसने उन गयानीयों से जतन से पुछा था उसने लोगों को भेज
के वैतुलहम के, ओान उसके साने सीवानें के, समसत वालकों को,
१७ दो वनस के ओान उस से छोटे को, मानडाला। तव अनमीया
१८ भवीसदवकता का कहा ऊआ यह वयन पुना ऊआ। की
नामा में प्रेक सवद सुना गया की हाहाकान ओान नोना पोटना
ओान अती वीलाप नाजील अपने पुतनों के लीये वीलाप कनती
थी ओान सांत न होती थी कयोंकी वे नहीं हैं।

१९ पनंतु जव हीनुदीस मन गया देप्पो की इसन के दुत ने
२० मीसन में यसफ को सपन में दनसन देके कहा। की उठ ओान
उस वालक को ओान उसकी माता को लेके इसनाइल के देस
को जा कयोंकी जो वालक के पनानके गांहक थे सो मनगये।
२१ तव वुह उठके वालक को ओान उसकी माता को लेके इसनाइल के
२२ देस में आया। पनंतु जव उसने सुना की अनकीलाउस अपने
पीता हीनुदीस की संती यऊदीयः में नाज कनता है वुह उधन
जाने को डना तीसपन भो सपन में इसन से यीताया जाके जलील
२३ की ओान यला गया। ओान आके प्रेक नगन में, जो नासनः
कहावता है, वास कीया जीसतें जो भवीसदवकतों के दुवाना
से कहागया था की वुह नासनी कहावेगा सो पुना होवे।

३ तीसना पनव्र।

यहीया का जीवन ओान उपदेस १—१२ मसीह का
सनान पाना ओान उस के वीप्पय में आकास वानी
होनी १३—१७।

१ उनहीं दीनों में यऊदीयः के वन में यहीया सनानकानक
२ आके पनयान के कहने लगा। की पछताओ इस लीये की सनग

३ का राज समीप है। क्योंकी यह वुह है जीसके व्रीप्पय में असाया नवीसद्वक्ता के दुवारा से यह व्रयन कहा गया की कीसी का सब्द व्रन में पुकारता है की इस्वर के मारग को
४ सुधारो और उसके पथों को सीधा करो। और उसी यहीया का पहीरावा उंट के रोम का था और यमड़े का पटुका अपनी कट में लपेटे था और उसका भोजन टीडी और व्रन मधु थीं।
५ तव्र यरोसलीम और सारे यहूदीयः और अरदन के आस
६ पास के समस्त देस उस पास नीकल आये। और अपने अपने पापों को मान रनान के अरदन में उस से सनान पाते थे।
७ परंतु जव्र उसने व्रहुत से फरीसी और जादुकीयों को अपने सनान के लीये आते देष्पा तो उसने उनहें कहा की हे सांपों के व्रंसो अवैया कोप से भागने को तुमहें कीसने यीताया है?
८।९ इस लीये फल जो पछताने के जोग है लाओ। और अपने अपने मन में मत समझो की हमारा पीता इव्रराहीम है क्योंकी मैं तुमहें कहता हूं की इस्वर सामरथी है की इन
१० पथरों से इव्रराहीम के लीये व्रालक उतपंन करे। और अभी कुलहाड़ी पेड़ों के जड़ पर लगी है इस लीये जो जो पेढ़ अछा फल नहीं फलता काटा जाता और आग में झोंका जाता है।
११ नीसयय मैं तुमहें पछताने के लीये जल से सनान देता हूं परंतु जो मेरे पीछे आता है सो मुझ से अधीक सामरथी है जीसका प्पनपा उठाने को मैं जोग नहीं हूं वुह तुमहें धरमातमा से और
१२ आग से सनान देगा। उसके हाथ में एक सुप है और वुह अपने प्पलीहान को अछी रीत से झाड़ेगा और गोहूं को अपने प्पते में एकठे करेगा परंतु भुसी को अव्रुझा आग से जलावेगा।
१३ तव्र यसु जलील से अरदन को यहीया के पास आया की उससे
१४ सनान कीया जाय। परंतु यहीया ने यह कहके उसे व्ररजा की मुझे आप से सनान कीये जाने को आवसक है और आप
१५ मुझ पास आते हैं। तव्र यसु ने उतर देके उसे कहा की अव्र

होने दे कय़ोंकी हमें य़ुं सकल धनम पुना कनने को याहीय़े
१६ तव़ उसने उसे न नोका। श्रैान सनान कोय़ा जाके य़सु जोंहीं
पानी से उपन श्राय़ा तोंहीं देप्पो की उस पन सनग प्पुल गय़े
श्रैान उसने इसन के श्रातमा को कपोत के समान उतनते श्रैान
१७ श्रपने उपन ठहनते देप्पा। श्रैान देप्पो की य़ह श्राकास वानी
ऊइ की य़ह मेना पीनय़ पुतन है जोस में मैं श्रती पनसंन ऊं।

४ चैाथा पनव़।

मसीह का वन में जाके वनत कनना पनीक्षा में पडना सैतान पन पनवल होना १—११ कपननाहम में जा के उपदेस कनना १२—१७ कइ जन को वुलाना १८—२२ मंडली में उपदेस कनके नोगी को यंगा कनना श्रैान उसकी कीनत फैलती है २३—२५।

१ तव़ श्रातमा से य़सु वन में पऊंयाय़ा गय़ा जीसतें सैतान से
२ पनप्पा जाय़। श्रैान जव़ वुह यालीस नात दीन उपवास कन
३ युका उस से पीछे भुप्पा ऊश्रा। तव़ पनीछक ने उस पास श्राके
कहा की य़दी तु इसन का पुतन है तो श्रगय़ा कन की य़े पथन
४ नोटी वन जांय़ें। पनंतु उसने उतन देके कहा की य़ह लीप्पा
है की केवल नोटी से नहीं पनंतु हन ऐक वयन से जो इसन के
५ मुंह से नीकलता है मनुप्प जीता नहेगा। तव़ सैतान उसे
पवीतन नगन में ले गय़ा श्रैान मंदीन के ऐक कलस पन वैठाय़ा।
६ श्रैान उसे कहा की य़दी तु इसन का पुतन है तो नीये गीन पड़
कय़ोंकी लीप्पा है की वुह तेने लीय़े श्रपने दुतों को श्रगय़ा
कनेगा श्रैान वे हाथों में तुझे उठालेंगे न हो की तेना पांव पथन
७ पन लगने पावे। य़सु ने उसे कहा की य़ह भी लीप्पा है की तु
८ पनमेसन श्रपने इसन की पनीछा मत कन। फेन सैतान उसे
ऐक श्रती उंये पहाड़ पन ले गय़ा श्रैान उसे जगत का समसत

९ राज और उनका वीभव दीप्पाया। और उसे कहा की ये
१० सव मैं तुझे देउंगा यदी तु नीचे झुक के मुझे परनाम करे। तव
यसु ने उसे कहा की अरे सैतान यहां से दुर हो कयोंकी यह
लीप्पा है की परमेसर अपने इसर की पुजा कर और केवल
११ उसी की सेवा कर। तव सैतान ने उसे छोड़ा और देप्पो की
१२ दुतों ने आके उसकी सेवा की। जव यसु ने सुना की यहीया
१३ वंधन में डाला गया वुह जलील को यलागया। और नासरः
को छोड़ के, कपरनाहुम में जो समुंदर के तीर पर जावुल और
१४ नपरतुली के सीवाने में है, आके रहा। कीसतें असाया नवीपद-
१५ वकता का कहा हुआ वयन पुरा होवे। की जावुल और
नपरतुली की भुम समुंदर के मारग में अरदन के पार अनदेस
१६ के जलील में। जो लोग अंधीयारे में वैठे थे उनहों ने वड़ी
जोत देप्पी और जो मीरतु की छाया और देस में वैठे थे उन
१७ पर उंजीयाला उदय हुआ। उस समय से यसु ने परयारना
और यह कहना आरंभ कीया की पछताओ कयोंकी सरग का
राज समीप है।

१८ और यसु जलील के समुंदर के तीर फीरते फीरते दो
भाइयों को, अरथात समउन को जो पतरस कहावता है और
उसके भाइ अंदरीयास को, समुंदर में जाल डालते देप्पा कयोंकी
१९ वे धीवर थे। और उसने उनहें कहा की मेरे पीछे यले आओ
२० और मैं तुमहें मनुप्पों का धीवर वनाउंगा। तव वे तुरंत जालों
२१ को छोड़ के उसके पीछे यले गये। और वहां से आगे वढ़ के
उसने और दो भाइयों को, अरथात जवदी के वेटे याकुव को
और उसके भाइ युहना को, अपने पीता जवदी के संग नाव पर
२२ अपने जालों को सुधारते देप्पा और उसने उनहें वुलाया। तव
वे तुरंत नाव को और अपने पीता को छोड़ के उसके पीछे यले
२३ गये। और यसु सारे जलील में फीरता और उनकी मंडली
में परयारता राज का मंगल समायार सुनावता और लोगों के

२४ सकल नोग ब्रौन दुनव़लता यंगा कनता गय़ा। ब्रौन उसकी कीनत सुनीय़ा के सनव़तन फैल गइ ब्रौन उनहों ने समसत-नोगीय़ों को जो भांत भांत के नोग ब्रौन पीड़ा से, ब्रौन उनहों को जो पीसाचों से, गनसत थे ब्रौन मोनगीहों को ब्रौन ब्रनघां-
२५ गीय़ों को उस पास लाय़े ब्रौन उसने उनहें यंगा कीय़ा। ब्रौन व़ड़ी व़ड़ी मंडली जलील से ब्रौन दस नगनों से ब्रौन य़नो सलीम से ब्रौन य़ऊदीय़ः से ब्रौन ब्रनदन पान से उसके पीछे पीछे यली गइ।

५ पांयवां पनव़।

मसीह का व़खाना की कौन कौन घंन हैं १—१२ ब्रपने सीप्पों को कइ व़सतु से दीसटांत देना १३—१६ व़ैवसथा को पुना कनने ब्राय़ा १७—२० छठवीं ब्रगय़ाका ब्रातमीक ब्रनथ २१—२६ सातवीं का ब्रनथ २७—३२ तीसनी का ब्रनथ ३३—३७ उपदेस कनना की संतोस से सताय़ा जाना ३८—४२ व़ैनय़ों से पनेम कनना ब्रौन सीघाइ का पीछा कनना।

१ ब्रौन मंडलीय़ों को देप्प के वुह ऐक पहाड़ पन यढ़गय़ा ब्रौन
२ जव़ व़ैठा उसके सीप्प उस पास ब्राय़े। तव़ उसने ब्रपना मुंह
३ प्पोल के उनहें उपदेस में कहा। की घंन वे जो मन में दीन हैं
४ कय़ोंकी सनग का नाज उनहों का है। घंन वे जो सोक कनते
५ हैं कय़ोंकी वे सांत कीय़े जाय़ेंगे। कोमल घंन हैं कय़ोंकी वे
६ पीनथीवी के ब्रघीकानी होंगे। घंन वे जो घनम के भुप्पे पीय़ासे
७ हैं कय़ोंकी वे तीनीपत होंगे। दय़ावंत घंन हैं कय़ोंकी वे दय़ा
८ पावेंगे। घंन वे जीन का ब्रंत:कनन पवीतन है कय़ोंकी वे इसन
९ को देप्पेंगे। मेल कनवैय़े घंन हैं कय़ोंकी वे इसन के पुतन
१० कहावेंगे। घंन वे जो घनम के लीय़े सताऐ जाते हैं कय़ोंकी
११ सनग का नाज उनहों का है। जव़ मनुप्प मेने लीय़े तुमहानी

नींनदा कनें औन तुमहें सतावें औन तुमहाने व़ीनोघ में समसत
१२ नीत की वुऩी व़ात झुठाइ से कहें ता धंन हो। आनंदीत औन
अती अलहादीत होओ कय़ोंकी सनग में तुमहाना पनतीफल
है इुस लीय़े वी उनहों ने तुमसे आगे भवीसदव़कतो को इुसी
१३ नीत से सताय़ा था। तुम पीनथीवी के लोन हो पन य़दी लोन
असवादीत होय़ तो वुह कीस से लोना कीय़ा जाय़गा? वुह
फीन कीसी काम का नहीं केवल फेंके जाने के औन मनुप्पों के
१४ पांव तले लताड़े जाने के। तुम जगत के उंजीय़ाले हो जो नगन
१५ पहाड़ पन व़ना है सो छीप नहीं सकता। दीपक को व़ान के
मनुप्प नांद तले नहीं नप्पते पनंतु दीअट पन औन वुह सव़ को
१६ जो उस घन में हैं उंजीय़ाला कनंता है। तुमहाना उंजीय़ाला
मनुप्पों के आगे ऐसाही यमके जीसतें वे तुमहाने सुकनमों को
१७ देप्प के तुमहाने पीता की, जो सनग में है, महीमा कनें। य़ह
मत समझो की मैं व़य़वसथा को अथवा भवीसदव़कतो को उठा
देने आय़ा ऊं मैं उठा देने को नहीं पनंतु पुना कनने को आय़ा
१८ ऊं। कय़ोंकी मैं तुमहें सय कहता ऊं की जव़ लों सनग औन
पीनथीवी व़ीलाय़ न जाय़ व़य़वसथा में से ऐक व़ींदु अथवा ऐक
व़ीसनग व़ीलाय़ न जाय़गा जव़ लों सव़ व़सतु पुनी न होजाय़ें।
१९ इुस लीय़े जो कोइु इुन आगय़ा में से सव़ से छोटी को न मान
औन मनुप्पों को ऐसाही सीप्पावे वुह सनग के नाज में सव़ से
छोटा गीना जाय़गा पनंतु जो कोइु उनहें माने औन सीप्पावे
२० सोइु सनग के नाज में व़ड़ा कहावेगा। कय़ोंकी मैं तुमहें
कहता ऊं की य़दी तुमहाना धनम फनीसीय़ों औन अघापकों
के धनम से अघीक न हो तो तुम कीसी नीत से सनग के नाज
२१ में पनवेस न कनोगे। तुम ने सुना है की पनायीनों को कहा
गय़ा था की हतय़ा मत कन औन जो कोइु हतय़ा कनेगा सो
२२ नय़ाय़ में दंड के जोग होगा। पनंतु मैं तुमहें कहता ऊं की
जो कोइु अपने भाइु पन अकानन कनोघ कने सो नय़ाय़ में दंड

के जाेग हाेगा और जाे कोइ अपने भाइ को तुछ कहे साे सभा के दंड के जाेग हाेगा परंतु जाे कोइ कहे की तु प्पख है साे
२३ नरक के आग की जाेग हाेगा। इस कारन यदी तु अपनी भेंट को ब़ेदी में लावे और वहां येत करे की तेरे भाइ का कुछ बैर
२४ तुह पर है। ताे वहां ब़ेदी के आगे अपनी भेंट छोड़ के यला जा पहीले अपने भाइ से मील तब़ आके अपनी भेंट यढा।
२५ जब़ लाें तु अपने बैरी के संग मारग में है तुरंत उस से मीलाप कर न हाे की बैरी तुहे नयायी काे सोंपे और नयायी तुहे
२६ दंकारी काे सोंपे और तु बंधन में डाला जाय। मैं तुहे सत कहता हुं की जब़ लाें दुकरा दुकरा भर न दे तु कीसी रीत से
२७ वहां से न छुटेगा। तुम ने सुना है की पराचीनाें काे कहा
२८ गया था की पर इसतीरी गमन मत कर। पर मैं तुमहें कहता हुं की जाे कोइ कुइछा से इसतरी काे ताके वुह अपने मन में
२९ उस से ब्यभीयार करयुका। और यदी तेरी दहीनी आंख्य तुहे ठाेकर ख्वीलावे ताे उसे नीकाल के अपने पास से फेंक दे कयोंकी तेरे अंगाें में से ऐक का नास हाेना उस से भला है की
३० तेरा सरब़ देह नरक में डाला जाय। हां यदी तेरा दहीना हाथ तुहे ठाेकर ख्वीलावे ताे उसे काट डाल और अपने पास से फेंक दे कयोंकी तेरे अंगाें में से ऐक का नास हाेना तेरे लीये
३१ उस से भला है की तेरा सरब़ देह नरक में डाला जाय। यह कहा गया है की जाे कोइ अपनी पतनी काे तयाग करे साे उसे
३२ तयाग पतर देवे। परंतु मैं तुमहें कहता हुं की जाे कोइ परगमन बीना अपनी पतनी काे तयाग करे साे उस से ब्यभीयार करवाता है और जाे कोइ उस तयकत से बीवाह करे साे ब्यभीयार करता है।

३३ यह भी तुम सुन युके हाे की पराचीनाें काे कहा गया था की झुठी कीरीया मत ख्वा परंतु परमेसर के लीये अपनी कीरीयाें काे पुरा कर।
३४ पर मैं तुमहें कहता हुं की कीसी रीत से

कीरीया मत ष्पाओ न तो सरग की कयोंकी वह इसर का सीं-
३५ हासन है। न तो पीरथीवी की कयोंकी वुह उसके यरन की
पीढ़ी है न तो यरोसलीम की कयोंकी वुह महाराज का नगर
३६ है। अपने सीर की कीरीया मत ष्पा कयोंकी तु एक बाल को
३७ उजला अथवा काला नहीं कर सकता। परंतु तुमहारी बात
यीत हां हां नहीं नहीं होवे कयोंकी जो इन से अधीक है सो
दुसट से होती है।

३८ तुम सुन युके हो का कहा गया है की आंष्प की संती आंष्प
३९ और दांत की संती दांत। पर मैं तुमहें कहता ऊं की बीगाड़ का
सामना मत करना परंतु यदी कोइ तेरे दहीने गाल पर थपेड़ा
४० मारे दुसरा भी उसे फेर दे। और यदी कोइ याहे की तुझे
नयाय सथान में ले जाय और तेरा बसतर उतार लेवे तो
४१ ओढ़ना भी उसे लेने दे। और यदी कोइ तुझे आध कोस बर-
४२ बस ले जाय तो उसके संग कोस भर यला जा। जो तुझ से मांगे
उसे दे और जो तुझ से उधार मांगे उस से मुंह मत मोड़।
४३ तुम सुन युके हो की कहा गया था की अपने परोसी को पीआर
४४ कर और अपने बैरी से बैर। परंतु मैं तुमहें कहता ऊं की
अपने बैरी को पीआर करो जो तुमहें धीकारें उनहें आसीस
देओ जो तुम से बैर करें उनसे भलाइ करो और जो तुमहें
४५ सतावें और दुष्प देवें उनके लीये परारथना करो। जीसतें
तुम अपने सरगीय पीता के संतान होओ कयोंकी वुह अपने
सुरज को भलों और बुरों पर उदय करता है और धरमी
४६ और अधरमी पर मेंह बरसाता है। कयोंकी यदी तुम उनसे
परेम करो जो तुम से परेम करते हैं तो तुमहारा कया फल
४७ है? कया करगराहक भी ऐसा नहीं करते?। और यदी
तुम केवल अपने भाइयों को नमसकार करो तो तुम ने अधीक
४८ कया कीया? कया करगराहक भी ऐसा नहीं करते?। इस
लीये ऐसा सीध बनो जैसा तुमहारा सरगीय पीता सीध है।

६ छठवां पत्र।

दान करने का उपदेस १—४ प्रार्थना की ५—८ प्रभु की प्रार्थना ९—१३ छमा करने का और व्रत रखने का उपदेस १४—१८ स्वर्ग पर धन बटोरना १९—२१ नीरमल आंख २२—२३ ईस्वर की और धन की सेवा नहीं हो सकती २४ जगत की अती सोच का तयाग करना और ईस्वर के धर्म और राज की खोजना २५—३४

१ चौकस होओ की मनुष्यों से देखे जाने के लीये उनके आगे अपना दान मत करो नहीं तो तुमहारे स्वर्गीय पीता से तुम-
२ हारा कुछ प्रतीफल नहीं। इस लीये जब तु दान करे तब अपने आगे तुरही मत बजा जैसे की कपटी मंडलीयों में और मार्गों में मनुष्यों से स्तुत पाने के लीये करते हैं मैं तुमहें सत
३ कहता हुं की उनहों ने अपना प्रतीफल पाया है। परंतु जब तु दान करे तब तेरा बांयां हाथ न जाने जो तेरा दहीना हाथ
४ करता है। जीसतें तेरे दान गुप्त में होवें और तेरा पीता जो गुप्त में देखता है आपही तुझे प्रगट में प्रतीफल देगा।
५ और जब तु प्रार्थना करे कपटीयों के समान मत हो कयोंकी वे मनुष्यों से देखे जाने के लीये मंडलीयों में और मार्गों के कोनों में खड़े होके प्रार्थना करने को प्रीत रखते हैं मैं तुमहें सत कहता हुं की उन्हों ने अपना प्रतीफल पाया है।
६ परंतु जब तु प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा और दुवारा को मुंद के अपने पीता की, जो गुप्त है प्रार्थना कर और तेरा पीता जो गुप्त में देखता है, सो तुझे प्रगट में प्रती-
७ फल देगा। परंतु जब तुम प्रार्थना करो तो अनदेसीयों की नाइं बयर्थ बक बक मत करो कयोंकी वे समझते हैं की
८ हमारे अधीक बोलने से हमारी सुनी जायगी। इस लीये तुम

उनके समान मत होओ कयोंकी तुमहाना पीता तुमहाने मांगने
९ से आगे जानता है की तुमहें कद्धा कया अवेसक है। इस
कानन इसी नीत से पनानथना कनो की हे हमाने पीता जो
१० सनग में है तेना नाम पवीतन कीया जाय। तेना नाज आवे
११ तेनी इछा जैसी सनग में वैसी पीनथीवी में होवे। हमाने पनती
१२ दीन की नोटी आज हमें दे। औन हमाने नीनें को ऐसा छमा
१३ कन जैसे हम भी अपने नीनीयों को छमा कनते हैं। औन
हमें पनीछा में न डाल पनंतु दुसट से छुड़ा कयोंकी नाज औन
१४ पनाकनम औन महातम सदा तेने हैं आमीन। कयोंकी यदी
तुम मनुष्यों के लीये उनके अपनाध को छमा कनो तो तुमहाना
१५ सनगीय पीता भी तुमहें छमा कनेगा। पनंतु यदी तुम मनुष्यों
के लीये उनके अपनाध को छमा न कनो तो तुमहाना पीता भी
१६ तुमहाने अपनाधों को छमा न कनेगा। फेन जब तुम ब्रनत
कनो कपटीयों के समान उदास मुख मत बनो कयोंकी वे अपने
मुख को बीगाड़ते हैं जीसतें वे मनुष्यों को ब्रनती दीख्याइ देवें
मैं तुमहें सत कहता हूं की उनहों ने अपना पनतीफल पाया
१७ है। पनंतु जब तु ब्रनत कने अपने सीन को चीकना कन
१८ औन अपने मुंह को धो। जीसतें तु मनुष्यों को ब्रनती न
दीख्याइ देवे पनंतु अपने पीता को जो गुपत में है, औन तेना
पीता जो गुपत में देख्यता है पन गट में तुझे पनतीफल देगा।
१९ अपने लीये पीनथीवी पन धन मत बटोनो जहां कीड़ा औन
काइ बीगाड़ते हैं औन जहां चोन सेंध देते हैं औन चुनावते
२० हैं। पनंतु अपने लीये सनग पन धन बटोनो जहां कीड़ा औन
काइ नहीं बीगाड़ते औन जहां चोन सेंध नहीं देसकते न
२१ चुनाते हैं। कयोंकी जहां तुमहाना धन है तहां तुमहाना
२२ मन भी लगा नहेगा। सनीन का दीपक आंख्य है इस लीये
यदी तेनी आंख्य नीनमल होवे तो तेना साना सनीन जोतमय
२३ होगा। पनंतु यदी तेनी आंख्य नोगी होय तो तेना साना सनीन

अंधकारमय होगा इस लीये यदी उंजीआला जो तुह में है
२४ अंधीयारा हे जाय ते। कया वा अंधीयारा होगा। कोइ मनुष्य दो सामी की सेवा नहीं कर सकता कयोंकी वह ऐक से वैर रख्पेगा और दुसरे से पेम, अथवा वह ऐक का पक्ष करेगा और दुसरे की नींनदा तम इसर की और धन की सेवा नहीं
२५ कर सकते। इस लीये मैं तुमहें कहता हुं की अपने जीवन के नमीत सोच मत करो की हम कया ष्पायेंगे अथवा हम कया पीयेंगे न अपने सरीर के लीये की हम कया पहीनेंगे कया जीवन भोजन से और सरीर वसतर से अधीक नहीं ?।
२६ अकास के पंक्षीयों को देष्पो कयोंकी वे न वोते हैं न लवते हैं न वटोरते हैं तीस पर भी तुमहारा सरगीय पीता उनहें
२७ पालता है कया तम उन से अधीक मोल के नहीं हो ?। तुम में से सोच करके कौन अपने डील को हाथ भर बढ़ा सकता
२८ है ?। और वसतर के लीये कयों सोच करते हो ष्पेत के सोसन के पटों का सोचो वे कयोंकर बढ़ते हैं वे परीसरम नहीं
२९ करते न कातते हैं। तीस पर भी मैं तुमहें कहता हुं की सुलेमान भी अपने सारे वीभव में इन में से ऐक के समान
३० वीभुसीत न था। इस लीये यदी इसर ष्पेत की घास को जो आज है और कल भठी में झोंकी जायगी युं पहीराता है तो
३१ हे अलप वीस्वासीयो कया तुमहें अधीक न पहीरावेगा। इस लीये सोच से मत कहो की हम कया ष्पायेंगे ? अथवा कया
३२ पीयेंगे ? अथवा कया पहीनेंगे ?। कयोंकी अनदेसी इन सारी वसतुन की ष्पाज करते हैं परनतु तुमहारा सरगीय पीता जानता
३३ है की तुमहें इन सारी वसतुन का अवेसक है। परंत पहीले इसर के राज का और उस के धरम का ष्पोज करो और ये सब वसतें तुमहारे लीये उपरते हुऐ अधीक की जायेंगी।
३४ इस कारन कल के लीये सोच मत करो कयोंकी कल अपने ही लीये सीच करेगा दीन का दुष्प दीनही के लीये बहुत है।

७ सातवां पनद्र।

दोष्प के व्रीष्पय़ में उपदेस १—५ पवीतन व्रसतु कुकन को न देना ६ पनानथना में उन्नाड़ना ७—११ श्चैानों से व्रेवहान कनने का उपदेस १२ सकेत श्चैान यैाड़े फराटक श्चैान मानग १३—१४ झुठे नवीसद्‌वकतों से यीताना १५—२० कुकनमी न व्रयेंगे य़दपी वे श्चासयनज की सकत नष्पें २१—२३ घन का द्रानीसटांत २४—२७ मसीह समापत कनता है श्चैान लोग श्चासयनज मानते हैं २८—२९।

१ दोष्प मत लगाश्चो जीसतें तुम पन दोष्प न लगाय़ा जाय़।
२ कय़ोंकी जीस दोष्प से तुम दोष्प लगाते हो उस से तुम पन भी दोष्प लगाय़ा जाय़गा श्चैान जीस नपुष्ऐ से तुम नापते हो उसी
३ से तुनहाने लीय़े फेन नापा जय़गा। पनंतु उस कीनकीनी को जो तेने भाइ की श्चांष्प में है कय़ों देष्पता है? पनंतु उस
४ लठे को जो तेनी श्चांष्प में है नहां देष्पाता?। श्चथवा श्चपने भाइ को कय़ोंकन कह सकता है की नहजा उस कीनकीनी को जो तेनी श्चांष्प में है नीकाल देउं श्चैान देष्प तेनीहो श्चांष्प में
५ ऐक लठा है। श्चने कपटी पहीले श्चपनेही श्चांष्प से उस लठे को दुन कन तव्र तु फेनकाइ से देष्पके श्चपने भाइ की श्चांष्प से उस
६ कीनकीनी को नीकाल सकेगा। पवीतन व्रसतु कुतों के मत देश्चो श्चैान श्चपनी मातीय़ों को सुश्ननों के श्चागे मत फेंको न हो की वे श्चपने पांव तले उनहें नैांदें श्चैान फीनके तुमहीं को फाड़ें।
७ मांगो श्चैान तुमहें दीय़ा जाय़गा ढुंढ़ो श्चैान तुम पाश्चोगे
८ ष्पटष्पटाश्चो श्चैान तुमहाने लीय़े ष्पोला जाय़गा। कय़ोंकी जो कोइ मांगता है सो लेता है श्चैान जो ढुंढ़ता है सो पाता है श्चैान
९ जो ष्पटष्पटाता है उसके लीय़े ष्पोला जाय़गा। तुम में कैान

मनुष्य है ग्रदी उसका पुतर उस से रोटी मांगे कय़ा वुह उसे
१० पथर देगा ? । अथवा यदी वुह मछली मांगे कय़ा वुह उसे
११ सांप देगा ? । इस लीये यदी अधम होके तुम अपने पुतरों
को अछा दान देने जानते हो तो तुमहारा पीता जो सरग में
है कय़ा उन सभों को जो उस से मांगते हैं अचीक भली वसतु
१२ न देगा ? । इस लीये सब जो तुम याहते हो की मनुष्य तुम
से करें तुम भी उन से वैसाही करो कयोंकी वयवसथा और
१३ भवीसदवकता येही हैं । सकेत फाटक से परवेस करो कयोंकी
चौड़ा है वुह फाटक और फैलाव है वुह मारग जो वीनास को
१४ पहुंयाता है और वहुत हैं जो उस से जाते हैं । इस कारन की
सकेत है वुह फाटक और सकेत है वुह मारग जो जीवन
१५ को पहुंयाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं । झूठे भवीसद-
वकतों से यौकस रहो जो भेड़ों के भेस में तुमहारे पास आते
१६ हैं परन्तु भीतर में फड़वैये हुंडार हैं । तुम उनहें उनके
फलों से पहीयानोगे कया मनुष्य कांटों से दाख अथवा ऊंट-
१७ कटारो से गुलर वटोरते हैं । इसी रीत से हर एक अछा पेड़
अछा फल फलता है परंतु वुरा पेड़ वुरा फल फलता है ।
१८ अछा पेड़ वुरा फल नहीं फल सकता न वुरा पेड़ अछा फल
१९ फल सकता । जो जो पेड़ अछा फल नहीं फलता सो सो
२० काटा जाता और इंधन वनता है । सो उनहें उनके फलों से
जानोगे ।

२१ हर एक जो मुझे परभु परभु कहता है सरग के राज में
परवेस न करेगा परंतु वुह जो मेरे सरगीय पीता की इछा पर
२२ यलता है । वहुतेरे उस दीन मुझे कहेंगे की हे परभु हे परभु
कय़ा हमने तेरे नाम से भवीस नहीं कहा और तेरे नाम से
पीसायों को दुर नहीं कीया ? और तेरे नाम से वड़े आसयरज
२३ करम नहीं कीये ? । और तव मैं उनहें कहुंगा की मैं ने
तुमहें कभी न जाना अरे कुकरमीयो मुझ से दुर होओ ।

२४ इस लीये जो कोइ मेने ये वयन सुनता है और उन्हें मानता है मैं उसे ऐक वुधमान से उपमा देउंगा जीसने यटान २५ पन अपना घन उठया। और मेंह वनसा और वाढ़ आये और वयान वहीं और उस घन पन वौछाड़ लगा और वह न २६ गीना कयोंकी यटान पन उठया गया था। पनंतु जो कोइ मेने ये वयन सुनता है और उनहें नहीं पालता से ऐक वावने मनुष्य से उपमा दीया जायगा जीसने अपना घन वालु पन २७ उठाया। और मेंह वनसा और वाढ़ आये और वयान वहीं और उस घन पन वौछाड़ लगा और वह गीनपड़ा और उसका २८ गीनाव वड़ा ऊआ। और ऐसा ऊआ क जव यसुने इन वातों को समापत कीया तव मंडली उसके उपदेस से आसयनजीत २९ ऊइ। कयोंकी उसने उनहें पनाकनमी के समान सीष्याया और अघापकों के समान नहीं।

८ आठवां पनव।

मसीह ऐक कोढ़ी को पावन कनता है १—४ सतपती के दास को यंगा कनके भवीस कहता है ५—१३ पतनस को सास को और अनेकों को यंगा कनता हैं १४—१८ उसके पीछे कौन नीत से जाया याहीये १९—२२ वयन से समुंदन और आंधी को स्थान कनता है २३—२७ पीशायों को दुन कनता है २८—३२ लोग उसे अपने देस से नीकलते हैं ३३—३४

१ जव वुह उस पहाड़ से उतना वड़ी वड़ी मंडली उसके पीछे २ पीछे गइ। और देष्यो की ऐक कोढ़ी ने आके उसे दंडवत कनके कहा की हे पनभु यदी आप याहें तो मुझे पवीतन कन ३ सकते हैं। यसु ने यह कहके हाथ वढ़ाये और उसे छुके कहा की मैं याहता ऊं पवीतन होजा और ततकाल उसका कोढ़

४ अच्छा होगया। तब यसू ने उसे कहा की देख कीसी से मत कह परन्तु जाके अपने तईं याजक को दीखा और जो दान मूसा
५ ने ठहराया है सो उनके साक्षी के लीये दे। और जब यसू ने कफरनहूम में प्रवेस कीया एक सतपती ने उस पास आके
६ बीनती की। और कहा की हे प्रभु मेरा सेवक अर्धांग के
७ रोग से अती पीड़ीत घर में पड़ा है। यसू ने उसे कहा की
८ आके मैं उसे चंगा करूंगा। उस सैकड़ापती ने उत्तर देके कहा की हे प्रभु मैं इस जोग नहीं की आप मेरे छत तले आवें परंतु केवल बचन कहीये और मेरा सेवक चंगा हो
९ जायगा। क्योंकी मैं एक मनुष्य दुसरे के बस में हूं और जोधा मेरे बस में है और मैं एक को कहता हूं की जा और वुह जाता है और दुसरे को की आ और वुह आता है और
१० अपने सेवक को की यह कर और वुह करता है। यसू ने सुन के आसचरज कीया और अपने पछुओं को कहा की मैं तुम्हें सत कहता हूं की मैं ने ऐसा बड़ा बीसवास इसराइल
११ में भी न पाया। और मैं तुम्हें कहता हूं बहुतेरे पुरब और पछीम से आवेंगे और इबराहीम और इसहाक और
१२ याकूब के संग सरग के राज में बैठेंगे। परन्तु इस राज के संतान बाहर अंधयारे में डाल जायेंगे जहां रोना और दांत
१३ कीचकीचाना होगा। तब यसू ने उस सतपती से कहा की जा और तेरे बीसवास के समान तेरे लीये होवे और उसका
१४ सेवक उसी घड़ी चंगा होगया। और जब यसू पतरस के घर
१५ में आया उसने उसकी सास का जर से रोगी पड़ी देखा। और उसने उसका हाथ छूआ तब जर ने उसे छोड़ा और उसने उठके
१६ उनकी सेवा की। जब सांझ हुई वे उसके पास बहुत से पीसाच्य ग्रसतों को लाये और उसने बचन से आतमों को दुर कीया
१७ और सभों को जो रोगी थे चंगा कीया। जीसतें जो आसीया भवीसदबकता ने कहा था पुरा होवे की उसने आप हमारी

१८ दुनवृषता को ले लीया औन नोगों को उठा लीया। पन जव्
यसु ने अपने आस पास वृती मंडलीयों को देष्पा उसने उस
१९ पान जाने की अगया की। औन क.सी अध्यापक ने आके उसे
कहा की हे गुनु जहां कहीं आप जायेंगे मैं आपके पाछे यलूं-
२० गा। तव् यसु ने उसे कहा की लोम.ीयां के लीये मांदें हैं औन
आकास के पक्षीयों के ष्पांथे पनंतु मनुष्य के पुतन के सीन धनने
२१ का सथान नहीं है। औन उसके सीष्पों में से प्रेक ने उसे कहा
की हे पनभु मुझे जाने दीजये की पहीले अपने पीता को
२२ गाडुं। पनंतु ने यसु ने उसे कहा की मेन पीछे यला आ औन
२३ मीनतक अपने मीनतकों को गाडें। औन जव् वुह नाव पन
२४ यढा उसके सीष्प उसके पीछे होलीये। औन देष्पो की समुंदन
में प्रेक वडी आंधी उठी यहां लों की लहनों से नाव ढंप गई
२५ पनंतु वुह नींद में था। तव् उसके सीष्पने आके उसे जगाके
२६ कहा की हे पनभु हमें वयाइये हम नसट होते हैं। उसने
उनहें कहा की हे अलप वीसवासीयो तुम कयों डनते हो तव्
उसने उठके वयान औन समुंदन को दपटा औन वडा यैन हो
२७ गया। पनंतु लोग अयंभीत होके बोले की यह कैसा मनीत का
२८ मनुष्य है जीसके वस में वयान औन समुंदन भी हैं। औन
जव् वुह पान जनगसीन के देस में पहुंया दो पीसायगीनसत
मनुष्य समाधीन से नीकल के उसे मीले जो यहां लों अती
२९ भयंकन थे की उस मानग से कोई जा न सकता था। औन
देष्पो की उनहों ने यीला के कहा की हे ईसन के पुतन यसु
हमें तुझ से कया काम कया तु ईधन आया है की समय से
३० आगे हमें पीडा देवे। औन उनसे दुन वहुत से सुअनों का
३१ प्रेक झुंड यनता था। तव् पीसायों ने उसकी वीनती कनके
कहा की यदी आप हमें दुन कनें तो जाने दीजये की उन
३२ सुअनों के झुंड में पैठें। उसने उनहें कहा की जाओ तव् वे
नीकल के सुअनों के झुंड में पैठे औन देष्पो की सुअनों के साने

हुंड करते पन से हट समुंदर में जा गीने चैान जल में नसट
१३ ऊप्रे। तव उनके यनवाहे भागे चैान नगन में गये चैान
समसत समायानें का, जो पीसाय गनसतें पन वीता था वननन
१४ कीया। चैान देष्पो की सारे नगन यसु की भेंट का वाहन
नीकल आये चैान जव उनहें ने उसे देष्पा तो वीनती का, की
हमारे सीवाने से वाहन जाइये।

९ नवां पत्र।

यसु कपननाहम में जाके प्रेक आनघांगी को यंगा
कनता है १—८ पापीग्रें के संग भोजन कनने से
आप का नीनदोप्प ठहनाता है ९—१७ वनत न
कनने से अपने सीप्पों का नीनदोप्प ठहनाता है
१४—१७ प्रेक डुसनीनी को यंगा कनता है १८—२२
प्रेक कंनया को जीलाता है २३—२६ दो अंधो को
यंगा कनता है २७—३१ प्रेक पीसाय को दुन कनता
है फरीसी उसे पीसायी कनम में नापते हैं ३२—३४
यसु मंडली पन दया कनके सीप्पों का अगया कनता
है की उपदेसकों के लीये पनानथना कनें ३५—३८।

१ तव वुह नाव पन यढ़ के पान पऊंया चैान अपने नगन म
२ आया। चैान देष्पा की ष्पाट पन पड़े ऊप्रे प्रेक आनघ गी को
उस पास लाये चैान यसु ने उनका वीसवास देष्पके उस आन-
घागी को कहा की हे पुतन सुसथीन हो तेने पाप छमा कीये
३ गये। चैान देष्पो की अघापकों में से कीतनें ने अपने घपने
४ मन में कहा की यह इसन की अपनीनदा कनता है। यसु ने
उनकी यींनतें को जान के कहा की कीस लीये अपने अपने
५ मन में बुनी यींनता कनते हो। कयोंकी कया कहना सहज
है की, पाप छमा कीये गये अथवा कहना की उठ चैान यल।
६ पनंतु जीसतें तुम जानो की मनुष्प के पुतन का पीनथीवी पन

पाप छमा करने का सामरथ है उसने उस अरधांगी को कहा
७ की उठ अपनी खाट उठा और अपने घर को जा। तब वुह
८ उठा और अपने घर को चला गया। परंतु जब मंडली ने
देखा तब उनहों ने अचंभा करके ईश्वर की स्तुत की, की
९ उसने ऐसा सामरथ मनुष्यों को दीया है। और यसु ने वहां से
बढ़ के कर लेने के स्थान में एक मनुष्य को बैठे देखा जीस का
नाम मती था और उसने उसे कहा की मेरे पीछे आ तब वुह
१० उठा और उसके पीछे हो लीया। और युं हुआ की जब यसु
घर में भोजन पर बैठा तो देखो की बहुत से करगर हक
और पापी आके उसके और उसके सीष्यों के संग बैठ गये।
११ और जब फरीसीयों ने देखा तब उनहों ने उसके सीष्यों से
कहा की तुमहारा गुरु करगर हकों और पापीयों के संग
१२ क्यों भोजन करता है। परंतु जब यसु ने सुना उसने उनहें
कहा की भले चंगों को बैद का आवेसक नहीं परंतु रोगीयों
१३ को। पर जाओ और इसके अरथ को सीखो की मैं दीनता
को चाहता हुं और बलीदान को नहीं क्योंकी मैं धरमीयों
को बुलाने नहीं आया परंतु पापीयों को जतें पसचाताप
१४ करें। तब यहीया के सीष्यों ने उस पास आके कहा की हम
और फरीसी क्यों बारंबार ब्रत करते हैं परंतु आप के
१५ सीष्य ब्रत नहीं करते। यसु ने उनहें कहा की जब लों
दुलहा संग है ब्रतों बीलाप करसकते हैं? परंतु वे दीन
आवेंगे जब दुलहा उनसे अलग कीया जायगा तब वे ब्रत
१६ करेंगे। कोई मनुष्य नये कपड़े का टुकड़ा पुराने बसतर पर
नहीं जोड़ता क्योंकी वुह जो उसे सुधारने के लीये उस पर
जोड़ा गया है बसतर से खींचता है और फटा अधीक होता
१७ है। मनुष्य पुराने कुपे में नया दाखरस नहीं भरता नहीं तो
कुपे फटते हैं और दाखरस बह जाता है और कुपे नसट होते
हैं परंतु नये कुपे में नये दाखरस भरते हैं और दोनों जतन

१८ से नहते हैं। जव्र वह उनहें ग्रह कह नहा था देप्पो की ग्रेक
अघक्ष ने आके उसको व्रीनती कनके कहा की मेनी व्रटी अव्रो
मनगइ पनंतु आइग्रे ग्रोन अपना हाथ उस पन नप्पग्रे ग्रोन
१९ वुह जोग्रेगी। तव्र ग्रसु उठा ग्रोन अपने सीप्प समेत उसके
२० पीछे हो लीग्रा। ग्रोन देप्पो की ग्रेक इसतोनी ने जोस को
व्रानह व्रनस से नकत व्रहने का नोग था पीछे आके उसके व्रसतन
२१ के प्पुंट को छुआ। कग्रोंकी उसने अपने मन में कहा की ग्रदी
२२ मैं केवल उसका व्रसतन छुउं तो यंगी होजाउंगी। पनंतु ग्रसु
पीछे प्रीना ग्रोन उसे देप्प के कहा की हे पुतनी सुसथान हो
तेने व्रीसवास ने तुहे यंगा कीग्रा ग्रोन वुह इसतीनी उसी घड़ी
२३ यंगी हो गइ। ग्रोन जव्र ग्रसु उस अघक्ष के घन में आग्रा ग्रोन
२४ व्रजनीग्रें ग्रोन लोगें को यीलाते देप्पा। उसने उनहें कहा
की अलग होओ कग्रोंकी कनग्रा मन नहीं गइ पन सोती है
२५ ग्रोन उनहों ने उस से ठठा कीग्रा। पनंतु जव्र लोग व्राहन
नीकाले गग्रे उसने भीतन जाके उसका हाथ पकडा ग्रोन वुह
२६ कनग्रा उठी। ग्रोन ग्रह कीनत उस सानें देस में प्रैल गइ।
२७ ग्रोन जव्र ग्रसु वहां से यला गग्रा तो दो अंघे यीलाते ग्रोन
ग्रह कहते उसके पीछे हो लीग्रे की हे दाउद के पुतन हम पन
२८ दग्रा कनीग्रे। ग्रोन जव्र वुह घन में आग्रा वे अंघे उस पास
आग्रे ग्रोन ग्रसु ने उनहें कहा की तुम व्रीसवास नप्पते हो की
मैं ग्रह कन सकता हुं? उनहों ने उसे कहा की हां हे पनभु।
२९ तव्र उसने उनकी आंप्पें छुके कहा की तुमहाने व्रीसवास के
३० समान तुमहाने लीग्रे होवे। ग्रोन उनकी आंप्पें प्पुल गइं
ग्रोन ग्रसु ने उनहें यीता के कहा की देप्पो कोइ न जाने।
३१ पनंतु उनहों ने वहां से नीकल के उसकी कीनत उस समसत
३२ देस में प्रैलाइ। जव्र वे व्राहन गग्रे तो देप्पो की लोग ग्रेक
३३ पीसाय गनसत गुंगे मनुप्प को उस पास लाग्रे। ग्रोन जव्र
पीसाय नीकाला गग्रा वुह गुंगा व्रोला ग्रोन मंडली आसयनज

कनके कहनेलगी की ऐसा इसनाइल में कभी न देष्पा गया था।
३४ पनंतु फनीसीयों ने कहा की वुह भीसायों के नाजा की सहाय
३५ से भीसायों को दुन कनता है। श्रीन ग्रस समसत नगनों में श्रीन गांश्रों में जाके उनकी मंडलीयों में नाज का मगल समा-यान पनयानते श्रीन लोगों के हन ऐक नोग श्रीन हन ऐक
३६ दुष्प दुन कनते सनवतन फीना। पन जव उसने मंडलीयों को देष्पा तो वुह उन पन दयाल ऊश्रा इस कानन की वे थके पड़े थे श्रीन उन भेड़ों के समान जोनका गड़नीया नहीं हो छींन
३७ भींन थे। तव उसने श्रपने सीष्पों से कहा की कटनी तो वऊत
३८ हैं ठीक पनंतु लवैये घोड़े। इस लीये कटनी के सामी की वीनती कनो की वुह श्रपनी कटनी में लवैयों को वाहन कने।

दसवां पनव।

मसीह श्रपने वानह पनेनीतों को श्रासयनज की सकती देके भेजता है श्रीन उनके नाम १—४ कहां कहां जाने का श्रीन उनके सीष्पाने का उपदेस ५—१५ कसट पाने की श्रीन उनहें घीनज देने की भवीस वानी १६—३९ उनके गनहन कनवैयों के लीये श्रासीस पाने का वयन देना ४०—४२।

१ श्रीन श्रपने वानह सीष्पों को वुलाके उसने उनहें श्रपवीतन श्रातमों को दुन कनने का श्रीन समसत पनकान के नोग श्रीन
२ हन ऐक नीत के दुष्प को यंगा कनने का सामनथ दीया। श्रव वानह पनेनीतों के नाम ये हैं पहीला समउन जो पतनस कहा-वता है श्रीन उसका भाइ श्रंदनीयास जवदी का वेटा याकुव
३ श्रीन उसका भाइ युहना। फैलवुस श्रीन वनतुलमा सुमा श्रीन मती कनगनाहक श्रीन हलफा का वेटा याकुव श्रीन लवी
४ जो सदी कहावता है। समउम कीनानी श्रीन यऊदा श्रसकन-
५ युती जीसने उसे पकड़वाया भी। यसु ने इन वानहों को भेजा

औार उनहें अगया कर के कहा की अनदेसीयों की ओार मत
६ जाओ और सामनीयों के नगर में परवेस मत करो। परंतु
नीज कर के इसराइल के घर की खोइ ऊइ भेड़ के पास जाओ।
७ औार जाते ऊए परचार करके कहो की सरग का राज समीप
८ है। रोगीयों को चंगा करो कोढ़ीयों को पावन करो मीरतकों
को जीलाओ पीसाचों को दुर करो सेंत पाये हो सेंत देओ।
९ अपने बटुए में सोना अथवा रुपा अथवा पीतल मत सोंच करो।
१० और जातरा के लीये झोला अथवा दो बसतर अथवा जुता
अथवा लाठी मत लेओ कयोंकी बनीहार अपने भोजन के जोग
११ है। और जीस कीसी नगर अथवा गांव में परवेस करो बुझो
की उस में जोग कौन है और जब लों वहां से न जाओ वहीं
१२ रहो। और जब तुम कीसी घर में परवेस करो तो उस पर
१३ आसीस देओ। यदी वुह घर जोग होय तो तुमहारा कलयान
उस पर पऊंचे परंतु यदी वुह अजोग होय तो तुमहारा
१४ कलयान तुम पर फीर आवे। और जो कोइ तुमहें गरहन
न करे और तुमहारी बातें न सुने जब तुम उस घर से अथवा
१५ नगर से बाहर जाओ अपने पांव की धुल झाड़ो। मैं तुमहें
सत कहता ऊं की उस नगर से सदुम और अमुरा देस के लीये
१६ बीचार के दीन में अधीक सहज होगा। देखो मैं तुमहें भेड़ों
के समान ऊंडारों के बीच भेजता ऊं इस लीये सरप के समान
१७ बुधमान और कपोत के तुल सुधे होओ। परंतु मनुष्यों से
चौकस रहो कयोंकी वे तुमहें सभाओं में सौंपेंगे और तुमहें
१८ अपनी मंडलीयों में कोड़े मारेंगे। और मेरे कारन अधछों
और राजाओं के आगे पकड़वाये जाओगे जीसतें उन पर और
१९ अनदेसीयां पर साखी होवे। परंतु जब वे तुमहें सौंपें चींनता
मत करीयो की हम कीस रीत से अथवा कया कहें कयोंकी जो
२० तुम कहोगे उसी घड़ी तुमहें दीया जायगा। कयोंकी तुम नहीं
२१ परंतु तुमहारे पीता का आतमा जो तुम में है कहता है। तब

भाइ भाइ को ग्रौन पोता पुतन को घात के लीये सैांपेंगे ग्रौन व्रालक माता पीता के व्रीनोघ में उठेंगे ग्रौन उनहें व्रघन
२२ कनवावेंगे। ग्रौन मेने नाम के लीये सव्र तुम से व्रैन कनेंगे पनंतु जो ग्रंत लों सहेगा सो सुकत पावेगा।
२३ पनंतु जव्र वे तुमहें इस नगन में सतावें दुसने को भाग जाग्रो कग्रोंकी मैं तुमहें सय कहता ऊं की तुम इसनाइल के नगनों
२४ में सनव्रतन न फीनोगे जव्र लों मनुष्य का पुतन न ग्रावे। सीष्य
२५ गुनु से व्रड़ा नहीं न सेवक ग्रपने सामी से। व्रस है की सीष्य गुनु के समान ग्रौन सेवक ग्रपने सामी के तुल होवे यदी उनहों ने घन के सामी को व्रालजव्रुल कहा है तो कीतना ग्रघीक
२६ उसके पनीवानों को कहेंगे। इस लीये उनसे मत डनो कयों-की कोइ व्रसतु छीपाइ नहीं जो पनगट न होगी ग्रौन न गुपत
२७ जो जानी न जायगी। जो कुछ मैं तुमहें ग्रंघयाने में कहता ऊं उसे उंजीग्राले में कहो ग्रौन जो कुछ तुम काने कान सुनो
२८ कोठों पन से पनयानो। ग्रौन उनसे मत डनो जो देह को घात कनते हैं पनंतु ग्रातमा को घात नहीं कनसकते पनंतु नीज कनके उस से डनो जो ग्रातमा को ग्रौन देह को ननक में
२९ नास कन सकता है। कया ऐक ग्रघेले को दो यीड़ीयां नहीं व्रीकतीं ग्रौन व्रीना तुमहाने पीता के उनमें से ऐक भी भुम
३० पन नहीं गीनेगी। पनंतु तुमहाने सीन के व्राल लों सव्र गीने
३१ ऊऐ हैं। इस लीये मत डनो कयोंकी तुम व्रऊतेनी यीड़ीयों
३२ से ग्रघीक मोल के हो। इस कानन जो कोइ मनुष्यों के ग्रागे मुह्ह मान लेगा उसे मैं भी ग्रपने पीता के ग्रागे, जो सनग में
३३ है मान लेउंगा। पनंतु जो कोइ मनुष्यों के ग्रागे मुह्ह से मुकनेगा उस से मैं भी, ग्रपने पीता के ग्रागे जो सनग में है, मुकनुंगा।
३४ मत समझो की मैं पीनथीवी पन मीलाप कनवाने को ग्राया ऊं मैं मीलाप कनवाने को नहीं पनंतु तलवान यलवाने को

३५ आया ऊं। कयोंकी मैं मनुष्य को उसके पीता से औान कनया को उसकी माता से औान पतोह को उसकी सास से पऱुट कनवाने
३६ आया ऊं। औान मनुष्य के व्रैनी उनके घनही के लोग होंगे जो माता अथवा पीता को मुझ से अघीक पीआान कनता है सो मेने जोग नहीं औान जो व्रेटा अथवा व्रेटी को मुझ से अघीक
३७ पीआान कनता है सो मेने जोग नहीं। औान जो अपने कुनुस
३८ को उठा न लेवे औान मेने पीछे न आवे सो मेने जोग नहीं। जो अपने पनान को व्रयाता है सो उसे गंवावेगा औान जो मेने
३९ नीमोत अपना पनान गंवाता है उसे पावेगा। जो तुमहें गनहन कनता है सो मुझे गनहन कनता है औान जो मुझे गनहन कनता है जीसने मुझे भेजा उसे गनहन कनता है।
४० वुह जो भवीसदव्रकता के नाम से भवीसदव्रकता को गनहन कनता है भवीसदव्रकता का पनतीफरल पावेगा औान जो घनमी के नाम से घनमी को गनहन कनता है घनमी का पनतीफरल
४१ पावेगा। औान जो कोइ इन छोटों में से प्रेक को सीप्य के नाम से केवल प्रेक कटोना सीतल जल पीलावेगा मैं तुमहें सत कहता ऊं की वुह कीसी नीत से अपना पनतीफरल न प्पावेगा।

११ गयाानहवां पनव्र।

यसु उपदेस कनता है यहीया अपने सीप्य को उस पास भेजता है औान यसु का उतन १—६ यहीया पन साप्पी देता है ७—१५ यहीया के औान यसु के व्रीप्यय में लोगों का कुव्रीयान १६—१९ पनभु कइ नगनों को ओानाहना देता है २०—२४ अपना भेद पनगट कनने के लीये पीता का घंन मानता है २५—२७ थके ऊओं को अपने पास व्रुलाता है २८—३०।

१ औान प्रेसा ऊआ की जव्र यसु अपने व्रानह सीप्यों को अगया

कन यूका तव़ वुह वहां से यला गय़ा की उनके नगनें में सीप्पावे
२ ग्रौन पनयावे। ग्रौन जव़ य़हीय़ा ने वृंधन में मसीह के
३ कानजें को सुना उसने ग्रपने सीप्पों में से दे को भेज के। उसे
पुछा की कय़ा जे ग्रावने पन थे से ग्राप हैं ग्रथवा हम दुसने
४ की वाट जोहें? य़सु ने उतन देके उनहें कहा की जाग्रो ग्रौन
जो कुछ की तुम सुनते ग्रौन देप्पते हे से य़हीय़ा से कहे।
५ ग्रंधे दीनीसट पाते हैं लंगड़े यलते हैं कोढ़ी पवीतन कीय़े
जाते हैं वृहीने सुनते हैं मीनतक जीवाय़े जाते हैं ग्रौन कंगालें
६ को मंगल समायान सुनाय़ा जाता है। ग्रौन घन वुह जो मेने
७ कानन ठोकन न प्पावे। ग्रौन जव़ वे यले जाते थे य़सु य़हीय़ा
के वृीप्पय़ में मंडलीय़ों को कहने लगा की वृन में तुम कय़ा
देप्पने के नीकले कय़ा ग्रेक ननकट पवन से हीलता ऊग्रा?।
८ फरेन कय़ा देप्पने के वृाहन नीकले कय़ा कोमल वृसतन पहीने
ऊग्रे मनुप्प को? देप्पो जो कोमल पहीनते हैं से नाजभवनें में
९ हैं। पनंतु कय़ा देप्पने के वृानह नीकले कय़ा ग्रेक भवीसद-
वृकता को? हां मैं तुमहें कहता ऊं की ग्रेक भवीसदवृकता से
१० सनेसठ। कय़ोंकी य़ह वुह है जीसके वृीप्पय़ में लीप्पा है की
देप्पो मैं ग्रपना दुत तेने ग्रागे भेजता ऊं जो तेने मानग को
११ तेने ग्रागे सुधानेगा। मैं तुमहें सत कहता ऊं की उन में से
जो इसतीनीय़ों से उतपंन ऊग्रे हैं य़हीय़ा सनान कानक से
ग्रेक भी वृड़ा पनगट नहीं ऊग्रा तीस पन भी जो सनग के नाज
१२ में ग्रत छेटा है से उस से वृड़ा है। ग्रौन य़हीय़ा सनान कानक
के दीनें से ग्रव़ लें सनग का नाज वृल सहता है ग्रौन वृलवंत
१३ उसे छुपट के लेता है। कय़ोंकी सानें भवीसदवृकता ग्रौन
१४ वृय़वसथा ने य़हीय़ा लें भवीस कहा। ग्रौन य़दी तुम गनहन
१५ कीय़ा याहे तो इलीय़ास जो ग्राने पन था य़ही है। जीस
१६ कीसी के कान सुनने के होवे से सुने। पनंतु मैं इस पीढ़ी
के कीस से उपमा देउं वे उन वृालकें के ग्रैसे हैं जो हाटें में

१७ वैठ के अपने संगीयों को पुकारते हैं। और कहते हैं की हम तुम्हारे लीये वांसली वजाये कीये और तुम न नाचे हम
१८ ने तुम्हारे लीये वीलाप कीया और तुम न रोए। कयोंकी युहीया पाता पीता नहीं आया और वे कहते हैं की उस में
१९ पीसाच है। मनुष्य का पुतर पाता पीता आया और वे कहते हैं की देषो एक भोजनी और मदयप करगराहकों और पापीयों का मीतर परंतु वुध अपने पुतरों से नीरदोष ठहराइ
२० गइ है। तव वुह उन नगरों को जीन में उसने सव से वहुत पराकरम दीषाया था, ओराहना देने लगा कयोंकी वे न पछ-
२१ ताए। हे कोरजीन हाय तुझ पर हे वैत सैदा हाय तुझ पर कयोंकी जो पराकरम तुझ में परगट हुए यदी सुर और सैदा में परगट होते तो वे वहुत दीन से टाट और राष में पछताते।
२२ परंतु मैं तुम्हें कहता हुं की वीचार के दीन में सुर और सैदा
२३ के लीये तुम से अधीक सहज होगा। और हे कपरनाहुम जो सरग लों वढाया गया है नरक लों गीराया जायगा कयों-की जो पराकरम तुझ में परगट हुए यदी सदुम में परगट
२४ कीये जाते तो वुह आज लों वना रहता। परंतु मैं तुम्हें कहता हुं की नयाय के दीन में सदुम के देस के लीये तुझ से
२५ अधीक सहज होगा। उस समय में यसु ने उतर देके कहा की हे पीता सरग और पीरथीवी के परभु मैं तेरा धंन मानता हुं इस कारन की तुने इन वसतुन को वुधमानों और यतुनों से
२६ गुपत रषा और उन्हें वालकों पर परगट कीया। हां हे पीता ऐसा होने में तेरी दीसट में अछा लगा सव कुछ मेरे
२७ पीता से मुझे सैांपा गया। पीता को छोड़ कोइ पुतर को नहीं जानता और पुतर को छोड़ कोइ पीता को नहीं जानता और
२८ वही जीस पर पुतर उसे परगट कीया चाहे। हे सारे लोग जो थके और वड़े वोझे से दवे हो मेरे पास आओ और मैं
२९ तुमह सुष देउंगा। मेरा जुआ अपने उपर लेओ और मुझ

से सीप्पो। कयोंकी मैं कोमल ग्रैान मन में दीन ऊं ग्रैान तुम
३० ग्रपने ग्रपने पनानों में सुप्प पाग्रोगे। कयोंकी मेना जुग्रा
सहज ग्रैान मेना व्रोह्न हलुक है।

१२ व्रानहवां पनव्र।

व्रोसनाम में सीप्पों का व्रालें तोड़ना ग्रैान मसीह का उनहें नीनदोप्प ठहनाना १—८ हुनाये हाथ का यंगा कनना ९—१३ लोगों का व्रैन ग्रैान ग्रवीस व्रानी पुनी होनी १४—२१ पीसाय को दुन कनता है ग्रैान व्रैनीयों को ग्रव्राकय कनता है २२—३० घनमातमा के व्रोप्पय का पाप व्रताता है ३१—३७ लछन के ग्रमीलासीयों को दपटता है ३८—४० उस पीढ़ी की व्रनाइ व्रताता है ४१—४५ उसके सीप्प उसके कुटुमव्र ४६—५०।

१ उस समय में यसु व्रोसनाम में ग्रनाज के प्पेतों में होके यला जाता था ग्रैान उसके सीप्प भुप्पे होके व्रालों को तोड़ तोड़
२ प्पाने लगे। पनंतु जव्र फरीसीयों ने देप्पा उनहों ने उसे कहा की देप्पीये जो कानज व्रोसनाम के दीन में कनना जोग नहीं
३ सो ग्राप के सोप्प कनते हैं। पनंतु उसने उनहें कहा कया तुम ने नहीं पढ़ा जो दाउद ने कीया जव्र वुह भुप्पा था ग्रैान
४ उसके संगीयों ने। वुह कयोंकन इसन के मंदीन में गया ग्रैान भेंट की नोटी को प्पाया जो उसे ग्रैान उसके संगीयों को प्पाना
५ जोग न था पनंतु केवल याजकों को? ।ग्रथवा कया तुमने व्रय-वसथा में नहीं पढ़ा की याजक व्रोसनाम में मंदीन में कयोंकन
६ व्रोसनाम का ग्रादन नहीं कनते ग्रैान नीनदोप्प हैं?। पनंतु मैं तुमहें कहता ऊं की इस संथान में ग्रेक मंदीन से भी व्रड़ा
७ है। पनंतु यदी तुम इस का ग्रनथ जाने होते की, मैं दया याहता ऊं ग्रैान व्रलीदान नहीं, तो नीनदोप्पीयों को ग्रपनाधी

८ न छहनाते। कह्योंकी मनुष्य का पुतन ब्रीसनाम का भी पनभु
९ है। श्रौन वुह वहां से सीघान के उनकी मंडली में गया।
१० श्रौन देष्पो की वहां ग्रेक मनुष्य था जीसका हाथ सुष्प गया था
श्रौन उनहों ने उसे दोष्प देने के लीये उस से ग्रह कह के
११ पुछा कया ब्रीसनामें में यंगा कनना जोग है?। तब उसने
उनहें कहा की तुम में कौन ग्रैसा मनुष्य है जीसके ग्रेक भेड़ होय
श्रौन ग्रदी वुह ब्रीसनाम में गड़हे में गीन पड़े कया वुह
१२ उसे पकड़ के ब्राहन न नीकालेगा?। फेन मनुष्य भेड़ से
कीतना भला है इस कानन ब्रीसनामें में भला कनना जोग है।
१३ तब उसने उस मनुष्य के कहा की श्रपना हाथ ब्रढ़ा उसने ब्रढ़ाया
१४ श्रौन वुह दुसने के समान नीनोग हो गया। तब फनीसीयों ने
ब्राहन जाके उसके ब्रीनोघ में सभा की, की वे उसे कीस नीत से
१५ नास कनें। पनंतु जब ग्रसु ने जाना वुह वहां से श्रलग हो
गया श्रौन ब्रड़ी ब्रड़ी मंडली उसके पीछे पीछे गई श्रौन उसने उन
१६ सभों के यंगा कीया। श्रौन उनहें श्रगया की, की मुहे पनगट
१७ मत कनो। जीसतें वुह ब्रयन जो श्रसाया भवीसदब्रकता के
१८ दुवाना से कहा गया था पुना होवे। की देष्पो मेना सेवक
जीसे मैं ने युना है मेना पीनय जीस पन मेना मन श्रती पनसंन
है जीस पन मैं श्रपना श्रातमा नष्पुंगा श्रौन वुह श्रनदेसीयों
१९ पन नयाय पनगट कनेगा। वुह न हगड़ेगा न यीलायेगा श्रौन
२० मानगों में कोइ उसका सब्रद न सुनेगा। वुह कुयले हुग्रे
ननकट के न तोड़ेगा श्रौन घुश्रां उठते हुग्रे सन के न ब्रुहा-
२१ वेगा जब लों वुह नयाय के जय लों न पहुंयावे। श्रौन उसके
२२ नाम पन श्रनदेसी श्रासना कनेंगे। तब ग्रेक श्रंघा गुंगा पीसाय
गनसत पहुंयाया गया श्रौन उसने उसे यंगा कीया ग्रहां लों
२३ की वुह श्रंघा गुंगा देष्पा श्रौन ब्रोला। श्रौन समसत लोग
श्रासयनज कनके ब्रोले की कया ग्रह दाउद का पुतन नहीं
२४ है?। पनंतु जब फनीसीयों ने सुना वे ब्रोले की ग्रह पीसायों

२५ के नाजा व्राखजवुल व्रीना पीसायों को दुन नहीं कनता। ग्रीन यस ने उनकी यीनता जान के उनहें कहा की जो जो नाज अपने व्रीनोघ में दो न्नाग होवे सो सो उजाड़ होता है ग्रीन जो जो नगन अथवा घन अपने व्रीनोघ में दो न्नाग होवे सो रो सथीन
२६ न नहो।घ ग्रीन यदी सैतान सैतान को दुन कने तो वुह अपने व्रीनोघ में व्रीन्नाग ङग्रा फ्रेन उसका नाज कयोंकन सथीन
२७ नहेगा?। ग्रीन यदी मैं व्रालजवुल से पीसायों को दुन कनता ङं तो तुमहाने पुतन कीस से दुन कनते हैं? इस लीये वे
२८ तुमहाने नयायी होंगे। पनंतु यदी मैं इसन के ग्रातमा से पीसायों को दुन कनता ङं तो इसन का नाज तुम लों पङ्ङया
२९ है। नहीं तो कोइ प्रेक व्रलवंत के घन में कयोंकन पैठ सके ग्रीन उसकी सामगनी को लुटे जव्र लों पहीले वुह उस व्रलवंत
३० को न व्रांघे? ग्रीन तव्र वुह उसके घन को लुटेगा। जो मेना संगी नहीं सो मेना व्रैनी है ग्रीन जो मेने संग नहीं व्रटोनता
३१ सो व्रीथानता है। इस लीये मैं तुमहें कहता ङं की मनुप्प के लीये समसत पनकान का पाप ग्रीन अपनीनदा क्षमा की जायगी पनंतु अपनीनदा जो ग्रातमा के व्रीनोघ में है सो नहीं क्षमा
३२ की जायगी। ग्रीन जो कोइ मनुप्प के पुतन के व्रीनोघ में व्रात कहे वुह उसके लीये क्षमा की जायगी पनंतु जो घनमातमा के व्रीनोघ में कहेगा वुह उसके लीये क्षमा न की जायगी न इस
३३ लोक में न पन लोक में। पेड़ को ग्रछा कनो ग्रीन उसके फरल को ग्रछा अथवा पेड़ को व्रुना कनो ग्रीन उसके फरल को व्रुना
३४ कयोंकी पेड़ फरल से जाना जाता है। हे सनप व्रंसीयो तुम व्रुने होके कयोंकन न्नला कह सकते हो? कयोंकी मन की न्नन
३५ पुनी से मुंह कहता है। उतम मनुप्प मन के उतम न्नंडान से उतम व्रसतु व्राहन नीकालता है ग्रीन अघम मनुप्प मन के
३६ अघम न्नंडान से अघम व्रसतु व्राहन नीकालता है। पनंतु मैं तुमहें कहता ङं की हन प्रेक व्रयनथ व्रयन जो मनुप्प कहते हैं

३७ वे व्रीयान के दीन में उसका लेप्पा देंगे। कयोंकी तु अपने व्रयन से नीनदोप्प ठहनेगा श्रीान अपने व्रयन से दोप्पी ठहन
३८ जाय़गा। तव्र कइ ऐक अघापकों श्रीान फनीसीय़ों में से उतन देके कहने लगे की हे गुनु हम आप से ऐक लछन देप्पा
३९ याहते हैं। पनंतु उसने उनहें उतन देके कहा की ऐक व्रुनी श्रीान पन इसतीनी गामी पीढ़ी लछन ढुंढती है पनंतु य़ुनस भवीसदव्रकता के लछन को छोड़ उनहें कोइ लछन न दीप्पाय़ा
४० जाय़गा। कय़ोंकी जीस नीत से य़ुनस तीन नात दीन मछली के पेट में था उसी नीत से मनुप्प का पुतन तीन नात दीन पीन-
४१ थीवी के भीतन नहेगा। नैनीवो के लोग नय़ाय़ के दीन में इस पीढ़ी के संग उठेंगे श्रीान उनहें दोप्पी ठहनावेंगे कय़ोंकी वे य़ुनस के उपदेस से पछताय़े श्रीान देप्पो की य़ुनस से भी व्रड़ा
४२ य़हां है। दप्पीन की नानी इस पीढ़ी के संग नय़ाय़ के दीन में उठेगी श्रीान उनहें दोप्पी ठहनावेगी कय़ोंकी वुह पीनथीवी के अंत सीवाने से सुलेमान का गय़ान सुनने को आइ श्रीान देप्पो
४३ को सुलेमान से भी व्रड़ा य़हां है। जव्र अपवीतन आतमा मनुप्प से नीकल जाता है वुह सुप्पे सथान में जा जा के व्रीसनाम ढुंढता
४४ फीनता है श्रीान नहीं पाता। तव्र वुह कहता है की मैं अपने घन में, जहां से, नीकला, फेन जाउंगा श्रीान आके उसे सुना श्रीान
४५ झाड़ा सुघाना पाता है। तव्र वुह जाता है श्रीान अपने संग श्रीान सात आतमा को लेता है जो उस से अघीक दुसट हैं श्रीान वे भीतन जाके व्रास कनते हैं तव्र उस मनुप्प की पीछली दसा अगली से अघीक व्रुनी होती है इसी नीत से इस समय़ के दुसट
४६ पीढ़ी की भी होगी। जव्र वुह लोगों से कह नहा था देप्पो की उसकी माता श्रीान उसके भाइ व्राहन प्पड़े ऊऐ उस से व्रानता
४७ कनने याहते थे। तव्र ऐकने उसे कहा की देप्पीय़े आप की माता श्रीान आपके भाइ व्राहन प्पड़े ऊऐ आप से व्रानता कनने
४८ याहते हैं। पनंतु उसने उसे उतन देके कहा की कैान है मेनी

४९ माता ? औन कौन है मेने भाइ ? । तव़ उसने अपने सीप्पों की ओन अपना हाथ व़ढ़ा के कहा की देप्प मेनी माता औन
५० मेने भाइ। कयोंकी जो कोइ मेने सनगीय़ पीता की इछा पन यलता है सोइ मेना भाइ औन व़हीन औन माता है।

१३ तेनहवां पनव़।

व़ोवैय़े का दीनीसटांत १—९ कीस लीये य़सु दीनीसटांतों में उपदेस कनता है १०—१७ उस दीनीसटांत का अनथ १८—२३ व़नैला व़ीज का दीनीसटांत २४—३० नाइ का औन प्पमीन का दीनीसटांत ३१—३३ मसीह के उपदेस में भवीस व़ानी पुनी होनी ३४—३५ व़नैले व़ीज के दीनीसटांत का अनथ ३६—४३ भंडान के औन मोती के दीनीसटांत ४४—४६ जाल का ४७—५० गीनहसथ का ५१—५२ मसीह के देसी उस से ठोकन प्पाते हैं ५३—५८।

१ उसी दीन य़सु घन से नीकल के समुंदन के तीन जा व़ैठा।
२ औन व़ड़ी व़ड़ी मंडली उसके पास ऐकठी ऊइं य़हां लों की वुह ऐक नाव पन यढ़ व़ैठा औन सानी मंडली तीन पन प्पड़ी नही।
३ औन उसने उनहें व़ऊत सी व़ातें दीनीसटांतों में कहीं की देप्पो
४ ऐक व़ोवैय़ा व़ोने को नीकला। औन उसके व़ोने में कुछ मानग
५ की अलंग गीने औन पंछीय़ों ने आके उनहें युग लीय़ा। कुछ पथनैली भुम पन गीने जहां उनहों ने व़ऊत मीटी न पाइ औन उनके अंकुन नीकले इस कानन की उनहों ने मीटी की
६ गहीनाइ न पाइ। औन जव़ सुनज उदय़ ऊआ वे हैांस गय़े
७ औन जड़ न नप्पने के कानन सुनझा गय़े। औन कीतने कांटों
८ में गीने औन कांटों ने व़ढ़ के उनहें घोंट डाला। पनंतु कीतने अछी भुम में गीने औन व़ालें लाय़े कीतने तो सौ गुने कीतने

९ साठ कीतने तीस गुने। सुनने के लीये जो कान नप्पते हैं
सो सुनें।
१० तव्र सीप्पों ने आके उसे कहा की आप उनहें दीनीसटांतों
११ में कयों कहते हैं ?। उसने उतन दे के उनहें कहा इस कानन
की तुमहें सनग के नाज का भेद जानने के दीया गया है पनंतु
१२ उनहें नहीं दीया गया। कयोंकी जीस पास है उसे दीया
जायगा औान उसकी अघीक व्रढ़ती होगी पनंतु जीस पास नहीं
१३ है उस से वुह भी जो उस पास है लीया जायगा। इस लीये
मैं उनहें दीनीसटांतों में कहता ऊं इस कानन की देप्पते ऊप्रे
वे नहीं देप्पते औान सुनते ऊप्रे नहीं सुनते औान नहीं समझते
१४ हैं। औान उन पन असाया की भवीस कही ऊइ व्रातें पुनी
ऊइं की सुनते ऊप्रे तुम सुनोगे पन न समझोगे औान देप्पते
१५ ऊप्रे देप्पोगे पनंतु न सुझेगा। कयोंकी इस लोग का मन मोटा
है औान कानों से उंचा सुनते हैं औान अपनी आंप्पें उनहों ने
मुंद लीयां हैं न हो की वे कभी आंप्पों से देप्पें औान कानों से
सुनें औान अंतःकनन से समझें औान फीन जायें औान मैं उनहें
१६ चंगा कनुं। पनंतु धंन तुमहानी आंप्पें कयोंकी वे देप्पती हैं
१७ औान तुमहाने कान की वे सुनते हैं। कयोंकी मैं तुमसे सच
कहता ऊं की जो तुम देप्पते औान सुनते हो सो व्रऊत से भवी-
सद्व्रकतों औान घनमीयों ने देप्पने औान सुनने चाहा पन
१८ उनहों ने न देप्पा औान न सुना। इस लीये तुम व्रोवैये का
१९ दीनीसटांत सुनो। जव्र कोइ उस नाज का व्रचन सुनता है
औान नहीं समझता तव्र वुह दुसट आता है औान जो कुछ उस
के मन में व्रोया गया था छीन लेता है यह वही है जीसने मानग
२० की अलंग व्रीज को पाया। पनंतु जीसने व्रीज को पथनैली भुम
में पाया सो वही है जो व्रचन को सुनता है औान तुनंत आनंद
२१ से गनहन कनता है। तीस पन भी उस में जड़ नहीं होती
पनंतु तनीक भन ठहनता है कयोंकी जव्र उस व्रचन के कानन

२२ लाड़ना और कसट होता है तुरंत वुह ठोकर प्याता है। वुह भी जीसने व्रीज को कांटों में पाया वुह है जो व्रयन को सुनता है और इस संसार की चंघा और घन का छल व्रयन को घोंट
२३ डालता है और वुह नीसफल होता है। परंतु जीसने व्रीज को अछी भुम में पाया सो यह है जो व्रयन को सुनता है और समझता है और फलता है कीतने तो सौ गुने कीतने तो साठ
२४ कीतने तो तीस। उसने उनहें और ऐक दृीनीसटांत कहा की सरग का राज ऐक मनुष्य के तुल है जीसने अपने प्येत में अछा
२५ व्रीज व्रोया। परंतु जव्र लोग सो गये उसका व्रैरी आया और
२६ गोऊं में व्रनैला व्रीज व्रोके यला गया। पर जव्र अंकुर नीकला
२७ और व्राल लगी तव्र व्रनैले व्रीज भी दीप्पाइ दीये। तव्र उस गरहसथ के सेवकों ने आके उसे कहा की हे सामी कया आप ने अपने प्येत में अछा व्रीज नहीं व्रोया था? फेर उस में व्रनैले
२८ व्रीज कहां से आये?। उसने उनहें कहा की कीसी व्रैरी ने यह कीया है सेवकों ने उसे कहा की यदी आप की इछा होय
२९ तो हम जाके उनहें ऐकठे करें। परंतु उसने कहा की नहीं ऐसा नहो की जव्र तुम व्रनैले व्रीज को ऐकठे करो उनके संग
३० गोऊं भी उप्पाड़ लेओ। कटनी लों दोनों को ऐकठे व्रढ़ने देओ और कटनी में मैं लवैयों को कहूंगा की पहीले व्रनैले व्रीज को ऐकठे करो और जलाने के लीये उनके गठे व्रांधो परंतु गोऊं
३१ को मेरे प्पते में व्रटोरो। उसने उनहें ऐक और दृीनीसटांत कहा की सरग का राज ऐक राइ के तुल है जीसे ऐक मनुष्य ने
३२ लेके अपने प्येत में व्रोया। वुह ठीक सव्र व्रीजों से छोटा है परंतु जव्र व्रढ़ गया तो तरकारीयों से व्रड़ा होता है और ऐसा पेड़ होता है की आकास के पंछी उसके डालों पर आके व्रसेरा करते हैं।

३३ उसने उनहें ऐक और दृीनीसटांत कहा की सरग का राज प्पमीर के तुल है जीसे कीसी इसतीरी ने लेके तीन सेर पीसान

३४ में छीपाया ग्रहां लों की सव्र प्मीन हे। गया। ग्रह सव्र व्रातें ग्रसु ने मंडली को द्रीनीसटांतें में कहीं ग्रैान व्रीन द्रीनीसटांत
३५ से वुह उनसे न व्रोलता था। जीसतें जे। व्रयन नवीसद्‌व्रकता के दुवाना से कहा गया था से। पुना होवे की मैं अपना मुंह द्रीनीसटांतें में प्योलुंगा मैं उन व्रसतुन को, जे। जगत के
३६ ग्रानंभ से गुपत नप्यी गई थीं पनगट कनुंगा। तव्र ग्रसु मंडली को व्रीदा कनके घन में गया ग्रैान उसके सीप्यें ने उस पास ग्राके कहा की प्येत के व्रनैले व्रीज के द्रीनीसटांत का ग्रनथ हम
३७ से व्रननन कीजीये। उसने उतन देके उनहें कहा की जे।
३८ ग्रच्छा व्रीज व्रोता है से। मनुप्य का पुतन है। वुह प्येत जगत है ग्रच्छा व्रीज उस नाज के व्रालक हैं पनंतु व्रनैले दुसट के सनतान
३९ हैं। जीस व्रैनी ने उनहें व्रोया से। सैतान है कटनी जगत
४० की समापत है ग्रैान लवैये दुत हैं। से। जैसे व्रनैले व्रीज व्रटोने जाके ग्राग में जलाये जाते हैं ग्रैसाही इस जगत के ग्रंत में
४१ होगा। मनुप्य का पुतन ग्रपने दुतें को भेजेगा ग्रैान वे उसके नाज में से उन सभों को, जे। ठोकन प्यीलाते हैं ग्रैान उन
४२ लेगों को, जे। वुनाई कनते हैं व्रटोनेंगे। ग्रैान उनहें ग्राग के
४३ कुंड में डाल देंगे जहां नोना ग्रैान दांत पीसना होगा। तव्र घनमी ग्रपने पीता के नाज में सुनज के तुल पनकास होंगे
४४ जीसके कान सुनने के लीये होवे से। सुने। फ्रेन सनग का नाज प्येत में छीपे ऊग्रे घन के तुल है जव्र मनुप्य उसे पाता है उसे छीपाता है ग्रैान उसके ग्रानंद के माने जाता है ग्रैान ग्रपना
४५ सव्र कुछ व्रेय के उस प्येत को मोल लेता है। फ्रेन सनग का नाज ग्रेक व्रैपानी के तुल है जे। ग्रोप्ये ग्रोप्ये मोतीयों को ढुंढता है।
४६ जीसने जव्र व्रड़े मोल के ग्रेक मोती को पाया था जाके ग्रपना सव्र कुछ व्रेय के उसे मोल लीया।

४७ फ्रेन सनग का नाज ग्रेक जाल के तुल है जे। समुंदन में डाला
४८ गया ग्रैान हन ग्रेक नीत की मछली व्रटोनी। जव्र वुह भनगया

ये तीन पन प्येंय लाये औान वैठ के अछी अछी को पातनों में
४९ वटोना पनंतु वुनी वुनी को फेंक दीया। जगत के अंत में
ऐसाही होगा दुत नीकलेंगे औान दुसटों को घनमीयों म से
५० अलग कनेंगे। औान उनहें आग के कुंड में डाल देंगे जहां नोना
५१ औान दांत पीसना होगा। यसु ने उनहें कहा कया तुमने ये
५२ वातें समहीं? उनहों ने उसे कहा की हां हे पनभु। तव
उसने उनहें कहा इस लीये हन ऐक अधापक जीसने सनग के
नाज के लीये उपदेस पाया है ऐक गनहसथ पनुप्प के समान
५३ है जो अपने भंडान से नइ औान पुनानी नीकालता है। औान
यूं ऊआ की जव यसु ने इन दीनोसटांतें को समापत कीया
५४ वुह वहां से यला गया। औान जव वुह अपने देस में आया
उसने उनकी मंडली में ऐसा उपदेस कीया की वे अयंभीत
होके वोले की यह गयान औान आसयनज कनम इसे कहां से
५५ हैं। कया यह वढ़इ का वेटा नहीं? कया उसकी माता
मनीयम नहीं कहाती? औान उसके भाइ याकुव औान युसा
५६ औान समउन औान यऊदा?। औान उसकी वहीनें कया
सवकी सव हमाने संग नहीं? फेन इस ने यह सव कहां से
५७ पाया?। औान उनहों ने उस से ठोकन खाया तव यसु ने
उनहें कहा की भवीसदवकता आदन नहीत नहीं है पनंतु
५८ केवल अपने ही देस में औान अपने ही घन में। औान
उसने उनके अवीसवास के कानन वऊत आसयनज कनम
नहीं कीया।

१४ यौदहवां पनव।

हीनुदीस यसु को यहीया समहता है यहीया के
मानें जाने का समायान १—१२ यसु मंडलीयों को
भोजन कनाता है १३—२१ यसु पनानथना को जाता

है, समुंद्र पर चलता है, पतरस को बचा लेता है, उसके सीष्य उसे पूजते हैं २२—३३ जनेसर के रोगीयों को चंगा करता है ३४—३६।

१ उस समय में राज के चौथाई के अधीकारी हीरोदीस ने यीसु की
२ कीरत सुनी। और अपने सेवकों से कहा की यह यहोया सनान कारक है वुह मीरतु से जी उठा है इस कारन आस-
३ चरज करम उस से परगट होते हैं। कयोंकी हीरोदीस ने अपने भाई फीलीपुस की पतनी हीरोदीयास के कारन यहीया
४ को पकड़ के बंधन में डाल दीया। कयोंकी यहीया ने उसे
५ कहा की तुझे उसे रपना जोग नहीं है। और जब उसने उसे वध करने चाहा वुह मंडली से डरा इस कारन की वे उसे
६ भवीसदवकता जानते थे। परंतु जब हीरोदीस के जनम दीन का आनंद होने लगा हीरोदीयास की पुतरी उनके मध में
७ नाची और हीरोदीस को हरसीत कीया। तीस पर उसने कीरीया षाके परन कीया की जो कुछ वुह मांगेगी उसे देउंगा।
८ और जैसा उसकी माता ने आगे से उसे कह रष्पा था वैसा वुह बोली की यहीया सनान कारक का सीर ऐक थाल में मुझे
९ दीजीये। तब राजा उदास हुआ तथापी कीरीया के और
१० जेवनहारीयों के कारन देने की आगया दी। और उसने भेज
११ के बंधन में यहीया का सीर कटवाया। और उसका सीर ऐक थाल में पहुंचाया जाके उस कनया को दीया और वुह
१२ अपनी माता के पास ले गई। और उसके सीष्पों ने आके धड़
१३ को उठा के गाड़ दीया और जाके यीसु से कहा। जब यीसु ने सुना वुह वहां से नाव पर होके ऐक अनरन्य सथान में अलग गया और जब लोगों ने सुना वे नगरों से नीकल के पांव पांव
१४ उसके पीछे चले गये। और यीसु ने बाहर जा के ऐक बड़ी मंडली को देष्पा और उन पर दयाल हुआ और उनके रोगीयों
१५ को चंगा कीया। और जब सांझ हुई उसके सीष्पों ने उस पास

आके कहा की यह अनन्य सथान है समय भी वीत गया मंडली को वीदा कनीये जीसतें वे गांओं में जाके अपने लीये
१६ भोजन मोल लेवें। पनंतु यसु ने उनहें कहा की उनके जाने
१७ का पनयोजन नहीं तुम उनहें प्याने को देओ। तव उनहें ने उसे कहा की हमांने पास यहां केवल पांय नोटीयां औन दो
१८।१९ मछलीयां हैं। उसने कहा की उनहें मेने पास लाओ। तव उसने मंडली को घास पन वैठने की अगया की औन पांय नोटीयों औन दो मछलीयों को लेके उसने सनग की ओन दीनीसट को औन आसीस देके नोटीयों को तोड़ा औन सीप्पों
२० को दीया औन सीप्पों ने मंडली को। औन सव प्याके तीनपत हुए औन वये हुए यन यान से उनहें ने वानह टोकनीयां
२१ भनी उठाईं। औन जीनहें ने प्याया था सो इसतीनी औन
२२ वालकों को छोड़ के पांय सहसन पुनुप्प थे। तव यसु ने तुनंत अपने सीप्पों को नाव पन यढाया जीसतें अपने से आगे आगे
२३ पान जायें जव लों मंडलीयों को वीदा कने। औन जव वुह मंडलीयों को वीदा कन युका वुह पनानथना के लीये एक पहाड़ पन अलग यढ़ गया औन जव सांझ हुई वुह वहां
२४ अकेला था। पनंतु नाव समुंदन के मध लहनों से डगमगाती
२५ थी कयोंकी वयान उलटी थी। औन नात के यौथे पहन में
२६ यसु समुंदन पन यलते यलते उन पास आया। औन जव सीप्पों ने उसे समुंदन पन यलते देप्पा वे घवनाके कहने लगे
२७ की पनेत है औन मानेडन के यीलाये। तव यसु ने तुनंत
२८ उनहें कहा की सुसथीन होओ मैं हूं मत डनो। तव पतनस ने उतन देके उसे कहा की हे पनभु यदी आप हैं तो मुझे
२९ अगया कीजीये की पानी पन आप पास आउं। तव उसने कहा की आ औन जव पतनस नाव पन से उतना वुह पानी पन
३० यलने लगा की यसु पास जाय। पनंतु जव उसने देप्पा की वयान पनयंड है वुह डनगया औन डुवते डुवते यीला के कहा

३१ की हे पनभु मुहे व़याइझे। तव़ य़सु ने तुनंत हाथ व़ढ़ाय़ा
और उसे पकड़ के कहा की हे अलप व़ीसवासी तु ने कय़ों
३२ सनदेह कीय़ा ?। और जव़ वे नाव पन आय़े व़य़ान थम गइ।
३३ तव़ वे जो नाव पन थे आके उसे दंडवत कनके कहने लगे की
३४ आप इसन के पुतन हैं। और जव़ वे पान गय़े तव़ जनेसन के
३५ देस में पहुंचे। और जव़ वहां के मनुप्यों ने उसे जाना उनहों
ने उस देस की यानों ओन भेजा और साने नोगीय़ों को उस
३६ पास लाय़े। और उसकी व़ीनती की, की केवल उसके व़सतन
का प्युंट छुवें और जीतनें ने छुआ तीतने नीनघान यंगे हो गय़े।

१५ पंद्रहवां पनव़।

अधापकों और फनीसीय़ों को दपट के उनके कपट
को पनगट कनता है१—९ व़ताता है की कौन
सी व़सतु मनुप्य को अपवीतन कनतीं है१०—२०
कीनानी इसतनी की कनय़ा को यंगा कनता है
२१—२८ व़हुत से लोगों को यंगा कनता है
२९—३१ मंडली को भोजन कनाता है ३२—३९।

१ तव़ य़नोसलीम के अधापकों और फनीसीय़ों ने य़सु पास
२ आके कहा। की आप के सीप्य पनायीनों के व़ेवहान को कय़ों
उलंघन कनते हैं कय़ोंकी जव़ वे नोटी प्याते हैं हाथ नहीं
३ धोते। पन उसने उनहें उतन देके कहा की तुम भी कय़ों
अपने व़ेवहान से इसन की अगय़ा को उलघन कनते हो ?।
४ कय़ोंकी इसन ने य़ह कह के अगय़ा की, की अपनी माता पीता
का सनमान कन और जो माता अथवा पीता को धीकाने सो
५ पनान से माना जाय़। पनंतु तुम कहते हो की जो कोइ माता
पीता को कहे कीं जो कुछ तुहे मुझ से पनापत होना था सो
६ भेंट कीय़ा गय़ा। वुह अपनी माता अथवा पीता का सनमान
न कने इस नीत से तुम ने अपने व़ेवहान से इसन की अगय़ा

७ को व्रयनथ कीया। अने कपटीयो असाया ने तुमहाने व्रीष्यय
८ में ठीक भवीस कहा। कीये लोग अपने मुंह से मेने पास आते
हैं ओान होठों से मेना सनमान कनते हैं पनंतु उनका मन मुह
९ से दुन है। पन वे मेनो सेवा व्रीनया कनते हैं की मनुष्यों की
१० अगया का उपदेस कनते हैं। तव्र उसने मंडली को व्रुला के
११ उनहें कहा की सुनो ओान समहो। जो मुंह में जाती है सो
मनुष्य को अपवीतन नहीं कनती पनंतु जो मुंह से नीकलती है
१२ सो मनुष्य को अपवीतन कनती है। तव्र उस के सीष्यों ने आके
उसे कहा की आप जानते हैं की फनीसीयों ने यह व्रयन सुन
१३ के ठोकन प्याया। पनंतु उसने उतन दीया ओान कहा की हन
एेक पौधा जीसे मेने सनगीय पीता ने नहीं लगाया उप्याड़ा
१४ जायगा। उनहें नहने देओ वे अंधे अंधों के अगुआ हैं ओान
यदी अंधा अंधे का अगुआ होवे तो दोनों गड़हे में गीनपड़ेंगे।
१५ तव्र पतनस ने उतन दीया ओान उसे कहा की इस दीनीसटांत
१६ का अनथ हमें कहीये। तव्र यसु ने कहा की कद्दा तुम भी
१७ अव्र लों ना समह हो ?। कया अव्रलों नहीं व्रुहते की जो
कछ मुंह में जाता है सो उदन में पड़ता है ओान गड़हे में
१८ फेंका जाता है ?। पनंतु जो व्रसतु मुंह से नीकलती हैं मन
से व्राहन आती हैं ओान वे मनुष्य को अपवीतन कनती हैं।
१९ कयोंकी मन से व्रुने व्रीयान हतया पनइसतीनी गमन व्रयभीयान
२० योनी कुठी साखी इसन की अपनीनदा। येही हैं जो मनुष्य
को अपवीतन कनती हैं पनंतु व्रीन धोए हाथ से भोजन कनना
२१ मनुष्य को अपवीतन नहीं कनता। तव्र यसु वहां से यलके
२२ सुन ओान सैदा के सीवानों में गया। ओान देप्यो की एेक कीनानी
इसतीनी उन सीवानों में से नीकल कन यीलाके उसे व्रोली
की हे पनभु दाउद के पुतन मुह पन दया कीजीये मेनी व्रेटी
२३ एेक पीसाय से अती दुष्यीत है। पनंतु उसने उसे उतन में
कोइ व्रयन न कहा ओान उसके सीष्यों ने आके व्रीनती कनके

उसे कहा की उसे बीदा कीजीये क्योंकी वुह हमारे पीछे
२४ चीलाती है। तब उसने उत्तर देके कहा की इसराइल के
घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं कीसी के पास भेजा नहीं
२५ गया। तब वुह आई और उसे दंडवत करके बोली की हे
२६ परभु मेरी सहाय कीजीये। परंतु उसने उत्तर देके कहा की
२७ उचीत नहीं की बालकों की रोटी लेके कुत्तों को दीजीये। तब
उसने कहा सत्त हे परभु तथापी कुत्ते चुर चार खाते हैं जो
२८ उनके सामीयों के मंच से गीरते हैं। तब यसु ने उत्तर देके
उसे कहा की हे इसतीरी तेरा बड़ा बीसवास तेरी इछा के
समान तेरे लीये होवे और उसकी बेटी उसी घड़ी चंगी
हो गई।

२९ और यसु वहां से जाके जलील के समुंद्र के तीर पर आया
३० और एक पहाड़ पर चढ़के वहां बैठा। और बड़ी बड़ी
मंडली जीनके संग लंगड़े अंधे गुंगे टुंडे और बहुत से और थे
उस पास आई और उन्हें यसु के चरन पास डाल दीया और
३१ उसने उन्हें चंगा कीया। यहां लों की जब मंडली ने देखा
की गुंगे बोले टुंडे अछे हुए लंगड़े चले और अंधे देखने लगे
तो आसचरजीत होके इसराइल के इसर की बड़ाई की।
३२ तब यसु ने अपने सीष्यों को बुलाके कहा की मंडली पर मुझे
दया आती है इस कारन की वे तीन दीन से मेरे संग हैं और
खाने को कुछ नहीं रखते और मैं नहीं चाहता की उन्हें
उपवासी बीदा करुं न हो की वे मारग में नीरबल हो जायें।
३३ तब उसके सीष्यों ने उसे कहा की इस बन में हम इतनी रोटी
३४ कहां से लावें की ऐसी बड़ी मंडली को तोरीपत करें। तब
यसु ने उन्हें कहा की तुम्हारे पास कीतनी रोटीयां हैं? वे
३५ बोले की सात और कई छोटी छोटी मछलीयां। तब उसने
३६ मंडली को भुम पर बैठ जाने की आगया की। और उसने उन
सात रोटीयों और मछलीयों को लेके सतत करके तोड़ा और

३७। ३८ अपने सीष्यों को दीय़ा। औार सीष्यों ने मंडली को। औार वे सव़ ष्या के तीनीपत ऊप्ऐ औार उनहें ने व़ये ऊप्ऐ युन याान
३९ से सात टोकनीय़ां ननो उठाइं। औार नीनहें ने नोजन कीय़ा सो इसतीनी औार व़ालकों को छोड़ यान सहसन पुनुष्य
४० थे। तव़ वुह मंडली को व़ीदा कनके नाव पन यढ़ा औार मजदल के सीवानें में आय़ा।

१६ सोलहवां पनव़।

फनीसी औार सादुकी के छल को य़सु डपटता है १—४ सीष्यों के उपदेस कनता है ५—१२ उसके व़ीष्यय़ में लोगें की समह्न औार पतनस का व़ीसवास १३—२० य़सु की ननीस व़ानी २१—२८।

१ तव़ फनीसी औार सादुकी आय़े औार पनीछा कनके उस से
२ याहा की हमें सनग से ऐक लछन दीष्या। उसने उतन देके उनहें कहा की जव़ सांह्न होती है तुम कहते हो की फनछा
३ होगा कय़ोंकी आकास लाल है। औार व़ीहान को की आज गड़व़ड़ होगा कय़ोंकी आकास लाल औार ननयंकन है अने कपटीय़ो आकास के सनुप का नीननय़ जानते हो पनंतु समय़ों
४ के यीनह को नहीं जानते ?। ऐक दुसट औार पन इसतीनी गामी पीढ़ी लछन ढुंढता है पन य़ुनस ननीसदव़कता के लछन को छोड़ उसे कोइ लछन दीय़ा न जाय़गा औार वुह उनहें छोड़
५ के यला गय़ा। औार जव़ उसके सीष्य उस पान पहुंये वे नोटी
६ लेने को नुल गय़े थे। तव़ य़सु ने उनहें कहा की सैायेत नहो औार फनासीय़ों औार सादुकीय़ों के ष्मीन से यैाकस नहो।
७ औार वे आपुस में व़ीयान कनके कहने लगे की य़ह नोटी न
८ लाने के कानन है। जव़ य़सु ने जाना उसने उनहें कहा की हे अलप व़ीसवासीय़ो कय़ों आपुस में व़ीयान कनते हो की य़ह
९ नोटी नहीं लाने के कानन है ?। कय़ा तुम अव़ लों नहीं

समझते श्रीन येत नहीं कनते उन पांय सहसन की पांय
१० नोटीयां श्रीन तुमने कीतनी टोकनीयां उठाईं?। श्रीन यान
सहसन की सात नोटीयां श्रीन तुम ने कीतनी टोकनीयां
११ उठाइं?। यह कयांकन है की तुम नहीं समझते की मैं ने
तुमहें नोटी के व्रीप्पय में नहीं कहा पनंतु जीसतें तुम फनीसी-
१२ यों श्रीन सादुकीयों के प्पमीन से यौकस नहो?। तव्र उनहों
ने समझा की उसने नोटी के प्पमीन से नहीं पनंतु फनीसीयों
१३ श्रीन सादुकीयों के उपदेस से यौकस होने को कहा। जव्र
यसु कैसनीयः फीलव्रुस के सीवानों में श्राया उसने श्रपने सीप्पों
से यह कहके पुछा की मैं कैान ऊं लोग मुझ मनुप्प के पुतन को
१४ कया कहते हैं?। उनहों ने कहा की कीतने ते यहीया
सनानकानक, कीतने ते इलायास श्रीन कीतने यनमीया श्रथवा
१५ नवीसदव्रकतों में से ऐक। उसने उनहें कहा पनंतु तुम कया
१६ कहते हो मैं कैान ऊं?। तव्र समउन पतनस ने उतन देके
१७ कहा की तु मसीह जीवत इसन का पुतन है। तव्र यसु ने
उतन दीया श्रीन उसे कहा की हे समउन युनस के पुतन तु
घंन है कयोंकी मांस श्रीन लोहु ने तुझ पन पनगट नहीं
१८ कीया पनंतु मेने पीता ने जो सनग में है। श्रीन मैं भी तुझ से
कहता ऊं की तु पतनस है श्रीन इस यटान पन मैं श्रपना मंदीन
व्रनाउंगा श्रीन ननक के फाटक उस पन पनव्रल न होंगे।
१९ श्रीन मैं सनग के नाज की कुंजीयों को तुझे देउंगा श्रीन जो
कुछ तु पीनथीवी पन व्रांघेगा सनग में व्रांघा जायगा श्रीन जो
२० कुछ तु पीनथीवी पन प्पोलेगा सनग में प्पोला जायगा। तव्र
उसने श्रपने सीप्पों को यीता दीया की कीसी मनुप्प से न कहो
की मैं यसु वुह मसीह ऊं।

२१ उस समय से यसु ने श्रपने सीप्पों को व्रताना श्रानंभ कीया
की कयोंकन मुझे श्रावेसक है की यनोसलीम में जाउं श्रीन
पनायीनों श्रीन पनघान याजकों श्रीन श्रघापकों से व्रऊत सी

पीड़ा पाउं और माना जाउं और तीसने दीन फेर उठाया
२२ जाउं। तव्र प.तस उसे लेके कहने लगा की हे पनञ्च आप पन
२३ दया कजीये आप पन यह न होगा। पनंतु उसने फीन के
पतनस के कहा की अने सैतान मेने आगे से दुन हो तु मेने
लीये ठोकन है कयोंकी तु इसन की व्रातें का नहीं देप्पता
२४ पनंतु मनुप्यां की। तव्र यसु ने अपने सीप्यों को कहा की यदी
कोइ मेने पीछे आया याहे तो अपनी इछा को तयागे और
२५ अपने कनुस को उठाके मेने पीछे आवे। कयोंकी जो कोइ
अपने पनान को व्रयाने याहेगा सो उसे गंवावेगा और जो
२६ कोइ मेने लीये अपने पनान को गंवावेगा उसे पावेगा। कयोंकी
मनुप्य को कया लाभ है यदी वुह समसत जगत को पनापत
कने और अपने पनान को गंवावे? अथवा मनुप्य अपने पनान
२७ की सनती कया देगा?। कयोंकी मनुप्य का पुतन अपने दुतों
के संग अपने पीता के प्रेसनय्र में आवेगा और तव्र वुह हन प्रेक
२८ मनुप्य को उसकी याल के समान पनतीफल देगा। मैं तुम से
सत कहता ऊं की कइ प्रेक यहां प्पड़े हैं जो मीनत् का सवाद
न योप्पेंगें जव्र लों मनुप्य के पुतन को अपने नाज नें आते न
देप्प लेवें।

१७ सतनहवां पनव्र।

कसीह के नुप का व्रदलना और मुसा और इलीयास
से व्रात यीत कनना १—८ सीप्यों को उपदेस कनता
है ९—१३ प्रेक पीसाय को दुन कनता है १४—२१
अपने माने जाने को और जी उठने की भवीस
व्रानी २२—२३ आसयनज दोप्पा के कन देता है
२४—२७।

१ और छः दीन के पीछे यसु पतनस और याकुव्र और उसके
भाइ युहना को संग लेके प्रेक उंये पहाड़ पन अलग यढ गया।

२ श्रीन उनके आगे उसका नुप श्रीनही होगया श्रीन उसका मुंह सुनज के समान यमका श्रीन उस का व्रसतन जोत की नाइं
३ उजला ऊआ। श्रीन देष्पो की मुसा श्रीन इलीयास उस से
४ व्रानता कनते दीप्पाइ दीये। तव्र पतनस ने उतन देके यसु से कहा की हे पनभु हमाना यहां नहना श्रद्धा है यदी श्राप की इक्षा होय तो हम तीन डेने यहां व्रनावें ग्रेक श्राप के श्रीन ग्रेक
५ मुसा के श्रीन ग्रेक इलीयास के लीये। वुह कह नहा था देष्पो ग्रेक उंजीयाले मेघ ने उन पन छाया की श्रीन देष्पो की उस मेघ से यह कहते ऊग्रे ग्रेक सव्रद नीकला की यह मेना पीनय
६ पुतन है जीस से मैं श्रती पनसंन ऊं तुम उसकी सुनो। श्रीन जव्र
७ सीष्पों ने सुना वे श्रोंधे मुंह गीने श्रीन व्रऊत डन गये। तव्र
८ यसु ने श्राके उनहें छूश्रा श्रीन कहा की उठो मत डनो। श्रीन जव्र उनहों ने श्रपनी श्रांष्पें उपन उठाइं यसु को छोड़ उनहों ने
९ कीसी को न देष्पा। श्रीन जव्र वे उस पहाड़ से उतने यसु ने उनहें श्रगया कनके कहा की जव्र लों मनुष्प का पुतन मीनतकन
१० में से फीन न उठे यह दनसन कसी से न कहना। तव्र उसके सीष्पों ने उसे यह कहके पुछा तो श्रधापक कीस लीये कहते
११ हैं की पहीले इलीयास का श्राना श्रवस है?। तव्र यसु ने उतन देके उनहें कहा की इलीयास पहीले श्रावेगा ठीक श्रीन
१२ समसत व्रसतुन को सुधानेगा। पनंतु मैं तुमहें कहता ऊं की इलीयास श्रायुका है श्रीन उनहों ने उसे नहीं जाना पनंतु जो याहते थे सो उनहों ने उस से कीया इसी नीत से मनुष्प का
१३ पुतन भी उन से दुष्प पावेगा। तव्र सीष्पों ने समझा की उसने यहीया सनान कानक के व्रीष्पय में उनसे कहा।

१४ श्रीन जव्र वे मंडली के पास श्राये ग्रेक मनुष्प उसके समीप
१५ श्राकन घुटना टेक के व्रोला। की हे पनभु मेने पुतन पन दया कीजीये कयोंकी वुह व्रावला श्रीन व्रड़ा दुष्पी है कयोंकी वुह
१६ व्रानंव्रान श्राग में श्रीन पानी में गीन पड़ता है। श्रीन मैं उसे

आप के सीष्पों के पास लाया परंतु वे उसे चंगा न कर सके।
१७ तब यसु ने उतर देके कहा की हे अबीसवासी और हठीली पीढ़ी मैं कब लों तुमहारे संग रहूं? मैं कबलों तुमहारी सहूं?
१८ उसे इधर मुझ पास लाओ। और यसु ने उस पीसाच को दपट दीया तब वुह उस से नीकल गया और वुह बालक उसी
१९ घड़ी चंगा हो गया। तब सीष्पों ने यसु पास अलग आके कहा
२० की हम उसे दुर कयों न कर सके?। यसु ने उनहें कहा की तुमहारे अबीसवास के कारन कयोंकी मैं तुम से सत कहता हूं की यदी तुम एक राइ भर बीसवास रष्पो तो इस पहाड़ को कहोगे की यहां से टलके वहां जा और वुह जायगा और
२१ तुमहारे कारन कुछ भी अनहोना न होगा। तीस पर भी इस भीत का नहीं नीकलता परंतु केवल परारथना और ब्रत
२२ से। और जब वे जलील में थे यसु ने उनहें कहा की मनुष्प
२३ का पुतर मनुष्पों के हाथों में सोंपा जायगा। और वे उसे मार डालेंगे और वुह तीसरे दीन फेर उठेगा तब वे अतयंत उदा-
२४ सीन हुए। और जब वे कपरनाहूम में आये करगराहकों ने आके पतरस से कहा की तुमहारा गुरु कर नहीं देता?।
२५ उसने कहा की हां और जब वुह घर में आया यसु ने आगे होके उसे कहा की हे समउन तु कया समझता है? पीरथीवी के राजा कीन से सुलक अथवा कर लेते हैं अपनेही पुतरों से
२६ अथवा परदेसीयों से?। पतरस ने कहा की परदेसीयों से
२७ यसु ने उसे कहा तो बालक नीरबंध हैं। तीस पर भी ऐसा न हो की हम उसके आगे ठोकर होवें तु समुंदर को जा और बंसी डाल और जो मछली पहीले आवे उसे ले और उसका मुंह खोल के तु नोकड़ पावेगा उसे लेकर मेरे और अपने लीये उनहें दे।

१८ अठानहवां पनव्र।

दीनताइ का औान अपने जन की नछा कनने का य़सु उपदेस कनता है १—१४ अपनाधीय़ों से कैसा व्रेवहान कीय़ा याहीय़े १५—१७ मील के पनानथना कनने का गुन १८—२० अपनाधीय़ों को छमा कनने का उपदेस २१—३५।

१ उसी सनय़ में सीष्पों ने य़सु पास आके कहा की सनग के २ नाज में कौन सव्र से व्रड़ा है?। तव्र य़सु ने प्रेक नंहें व्रालक ३ को अपने पास व्रुला के उसे उनके मघ में व्रैठाय़ा। औान कहा की मैं तुमहें नीसयय़ कहता ऊं की य़दो तुम फीनाप्रे न जाओ औान नंहें व्रालक के समान न व्रनो तो तुम सनग के नाज में ४ पनवेस न कनोगे। इस कानन जो कोइ आप को इस नंहें व्रालक के समान दीन कनेगा वही सनग के नाज में सव्र से व्रड़ा ५ है। औान जो कोइ प्रैसे प्रेक नंहें व्रालक को मेने नाम के लीय़े ६ गनहन कने मुझे गनहन कनता है। पनंतु जो कोइ इन छोटों में से प्रेक को जो मुझ पन व्रीसवास नष्पता है ठोकन ष्पीलावे य़ह उसके कानन अती भला था की प्रेक यकी का पाट उसके गले में लटकाय़ा जाता औान वुह समुंदन के गहीने में ७ डुव्राय़ा जाता। ठोकनों के कानन जगत पन हाय़ है कय़ोंकी ठोकन का आना अवस है पनंतु उस मनुष्प पन जीसके कानन ८ ठोकन लगता है हाय़ है। इस कानन य़दी तेना हाथ अथवा तेना पांव तुझे ठोकन ष्पीलावे उनहें काट डाल औान अपने से फेंक दे तेने लीय़े अती भला है की लंगड़ा अथवा टुंडा जीवन में पनवेस कनना तेने दो हाथ अथवा दो पांव होवें औान तु ९ अनंत आग में डाला जाय़। औान य़दी तेनी आंष्प तुझे ठोकन ष्पीलावे उसे नीकाल डाल औान अपने से फेंक दे की जीवन

में काना पनवेस कनना तेने लोये उस से भला है की दे। आंप्पें
१० नप्पते ही तु ननक की आग में डाला जाय। योकस नहो की
इन छाेटां में से प्रेक की नीनदा न कने कयोंकी मैं तुमहें कहता
हुं की सनग में उनके दुत मेने सनगवासी पीता का मुंह सदा
११ देप्पते हैं। कयोंकी मनुप्य का पुतन आया है की प्पाप्रे हुप्रे
१२ को व्रचावे। तुम कया समझते हो यदी प्रेक मनुप्य के सो भेड़
होवें ग्रैान उस में से प्रेक भटक जाय कया वुह नीनानवे को
छोड़ के पहाड़ को नहीं जाता ग्रैान उस भटकी हुइ को नहीं
१३ ढुंढता ?। ग्रैान यदी वुह उसे पा जाय मैं नीसचय तुमहें
कहता हुं की वुह नीनानवे से जो भटक न गइ थीं उस प्रेक
१४ से ग्रघीक ग्रानंद पावेगा। प्रैसाही तुमहाने सनगीय पीता
की इछा नहीं है की इन छाेटां में से प्रेक का नास होवे।
१५ ग्रैान यदी तेना भाइ तेने व्रीनोघ में पाप कने तो जा ग्रैान
आपुस के सुने में उसे उसका दोप्प कह यदी वुह तेनी सुने
१६ तुने अपने भाइ को पाया है। पनंतु यदी वुह न सुने तो प्रेक
अथवा दो को अपने संग ले जीसतें दो अथवा तीन साप्पीयों के
१७ मुंह से हन प्रेक व्रात ठहनाइ जाय। पनंतु यदी वुह उनकी
न माने तो मंडली से कह पनंतु यदी वुह मंडली को न माने
१८ तो वुह तेने लोये जैसे ग्रनदेसी ग्रैान कनगनाहक होवे। मैं
तुमहें सत कहता हुं की जो कुछ तुम पीनथीवी पन व्रांघोगे
सनग में व्रांघा जायगा ग्रैान जो कुछ पीनथीवी पन प्पोलोगे
१९ सनग में प्पोला जायगा। फेन मैं तुमहें कहता हुं की यदी
तुम में से दो पीनथीवी पन मेल के कीसी व्रसतु के व्राप्पय में
जो वे मांगे वुह मेने पीता से जो सनग में है उनके लोये कीया
२० जायगा। कयोंकी जहां दो अथवा तीन मेने नाम पन प्रेकठें हैं
२१ वहां मैं उनके मघ में हुं। तव्र पतनस ने उस पास ग्राके कहा
की हे पनभु कै व्रेन मेना भाइ मेना ग्रपनाघ कने ग्रैान मैं उसको
२२ छमा कनुं ? कया सात व्रेन लों ?। यसु ने उसे कहा की मैं

तुझ से सात व्रेन लों नहीं कहता पनंतु सतन गुने सात व्रेन लों।
२३ इस कानन सनग का नाज कीसी नाजा से उपमा कीया गया
२४ है जीसने अपने सेवकों से लेप्पा लेने को ठाना था। श्रैान जव्र
वुह लेप्पा लेने लगा प्रेक उस पास पक्रंयाया गया जो उसके
२५ दस सहसन तोड़े घानता था। श्रैान जैसा की देने को उस
पास कुछ न था उसके सामी ने अगया की, की वुह श्रैान उसकी
पतनी श्रैान लड़के व्राले श्रैान सव्र जो उसका था व्रेंया जाय़
२६ श्रैान भनदीया जाय़। इस लीये वुह सेवक गीन के उसका
गोड़ ले पड़ा श्रैान कहा की हे पनभु मुझ पन धीनज धनीये
२७ श्रैान मैं आप को सव्र भन देउंगा। तव्र उस सेवक के सामी का
दया लगी श्रैान उसे छोड़ दीया श्रैान उसका साना उधान छमा
२८ कीया। पनंतु जयों वुह सेवक व्राहन गया उसने अपने संगी
सेवकों में से प्रेक को पाया जो उसकी सैा सुकी धानता था श्रैान
उसने उसकी नटइ पकड़ के उसे कहा की जो तु धनाता है मुझे
२९ दे। तव्र उसका संगी सेवक उसके गोड़ पन गीना श्रैान उस
की व्रीनती कनके व्रोला की मुझ पन धीनज धन श्रैान मैं तुझे
३० सव्र भन देउंगा। उसने न माना पनंतु जाके उसे व्रंधन में
३१ डाल दीया जव्र लों वुह उधान भन दे। श्रैान उसके संगी
सेवक व्रीते ऊप्रे को देप्प के अती दुप्पी ऊप्रे श्रैान आके सानी
३२ व्रातों के अपने सामी से कहा। तव्र उसके सामी ने उसे व्रुलाके
कहा की हे दुसट सेवक मैं ने तुझे इस कानन सव्र उधान छमा
३३ कीया की तुने मेनी व्रीनती कीं। जैसी दया मैं ने तुझ पन की
वैसी अपने संगी सेवक पन तुझे कननी उचीत न थी?।
३४ तव्र उसके सामी ने नीसीया के उसे पीड़ा दायकों को य़हां
३५ लों सैांपा की सव्र जो वुह उसका धानता था भन दे। सो
मेना सनगीय़ पीता भी तुम से वैसाही कनेगा य़दी तम में
से हन प्रेक अपने अपने मन से अपने भाइयों का अपनाध
छमा न कने।

१९ उनीसवां पनव।

यसु नोगीयों का यंगा कनता है तयाग पतन का यैान व्रीवाह का उपदेस कनता है १—१२ व्राबकों का गनहन कनके उनहें आसीस देता है १३—१५ ऐक तनुन से अनंत जीवन के व्रीप्पय में व्रानता कनता है १६—२२ धनमान के मुकत पाने की दुन-लभता २३—२६ संसानीक व्रसतु के तयाग कनने का फल २७—३०।

१ यैान ऐसा ऊया की जव यसु ने ये कथा समापत कीं वुह जलील से यला गया यैान अनदन के उस पान यऊदीयः के
२ सीवानों में आया। यैान व्रड़ी व्रड़ी मंडली उसके पीछे पीछे
३ गई यैान वहां उसने उनहें यगा कीया। फनीसी भी उसकी पनीछा कनते उस पास आके कहने लगे जोग है की मनुप्प हन
४ ऐक कानन से अपनी पतनी का तयाग कने?। उसने उतन दीया यैान उनहें कहा की तुमने नहीं पढ़ा है की जीसने
५ आनंभ में उतपंन कीया उनहें नन यैान नानी व्रनाया। यैान कहा की इस कानन मनुप्प अपनी माता पीता का छाड़ेगा यैान अपनी पतनी से मीला नहेगा यैान वे दोना ऐक मांस होंगे?।
६ इस लीये वे अव्र से दा नहीं पनंतु ऐक हैं इस लीये जा की
७ इसन ने जोड़ा है मनुप्प उसे अलग न कने। उनहों ने उसे कहा ता मुसा ने कीस लीये अगया की, की तयाग पतन देके
८ उसे छाेड़ देना?। उसने उनहें कहा की मुसा ने तुमहाने मन की कठोनता के कानन तुमहें अपनी पतनीयों का तयागने दीया।
९ पनंतु आनंभ से ऐसा न या। यैान मैं तुमहें कहता ऊं की जा कोइ व्रैभीयान के कानन का छाेड़ के अपनी पतनी का तयागे यैान दुसनी से व्रीवाह कने सो व्रैभीयान कनता है यैान जो

कोइ उस नय़कत से व्रीवाह कने सो व्रैभीयान कनता है।
१० उसके सीप्यों ने उसे कहा की य़दी पतनी के संग मनुप्य को य़ह
११ व्रेवहान है तो व्रीवाह कनना ठीक नहीं। पनंतु उसने उनहे
कहा की सव्र इस व्रयन को गनहन नहीं कन सकते पनंतु केवल
१२ वे जीनहें दीय़ा गय़ा है। कय़ोंकी कीतने होजड़े हैं जो माता
की कोप्य से प्रैसे उतपंन ऊप्रे ग्रैान कीतने होजड़े हैं जो
मनुप्यों से हीजड़े कीय़े गय़े ग्रैान कीतने हीजड़े हैं जीनहों ने
सनग के नाज के लीय़े ग्राप को हीजड़ा व्रनाय़ा है जो कोइ
१३ गनहन कन सकता है सो गनहन कने। तव्र उसके पास नंहें
व्रालक पऊंयाप्रे गय़े जीसतें वह उन पन हाथ नप्य के पनानथना
१४ कने तव्र सीप्य उन पन हुंहलाय़े। पनंतु य़सु ने कहा की नंहें
व्रालकों को मेने पास ग्राने देवो ग्रैान उनहें मत नोको कय़ोंकी
१५ सनग का नाज प्रैसों ही का है। ग्रैान वुह हाथ उन पन नप्य
के वहां से यला गय़ा।
१६ ग्रैान देप्यो की प्रेक ने ग्राके उसे कहा की हे उतम गुनु मैं कैानसा
१७ उतम कानज कनुं जीसतें ग्रनंत जीवन पाउं ?। उस ने उसे कहा
की तु मुहे कय़ों उतम कहता है ? उतम तो कोइ नहीं पनंतु
केवल प्रेक ग्रनथात इसन पनंतु य़दी तुहे जीवन में पनवेस कनना
१८ ही है तो ग्रगय़ाग्रों का पालन कन। उसने उसे कहा की कैानसी ?
य़सु ने कहा की हतय़ा मत कन व्रैभीयान मत कन योनी मत
१९ कन हुठी साप्यी मत दे। ग्रपनी माता पीता का सनमान कन
ग्रैान ग्रपने पनोसी से ग्रपने समान पीनीत कन। उस तनुन
२० मनुप्य ने उसे कहा की लड़काइ से मैं ने इन सव्र व्रातों को माना
२१ है ग्रव्र मुहे कय़ा याहीय़े ?। य़सु ने उसे कहा की य़दी तु सीघ
ऊग्रा याहे तो जा ग्रैान जो कुछ तेना है व्रेंय डाल ग्रैान
कंगालों को दे ग्रैान मेने पीछे यला ग्रा ग्रैान तु सनग में
२२ घन पावेगा। पनंतु जव्र उस तनुन मनुप्य ने य़ह व्रयन सुना
तो वुह उदासीन यला गय़ा कय़ोंकी उसको व्रड़ी संपत थी।

२३ तव़ य़सु ने अपने सीप्पों से कहा की मैं तुमहें सत कहता
ऊं की घनमान मनुप्प कठीनता से सनग के नाज में पनवेस
२४ कनेगा। औान फेन मैं तुम से कहता ऊं की सुइ के छेद से
उंट का पैठना उस से सहज है की ऐक घनमान मनुप्प इसन के
२५ नाज में पनवेस कने। जव़ उसके सीप्पों ने सुना वे अतय़ंत
२६ आसयनजीत होके वोले फेन कौन व़च सकता है?। पनंतु
य़सु ने देप्प के उनहें कहा की मनुप्पों से य़ह अन होना
२७ है पनंतु इसन से सव़ कुछ हो सकता है। तव़ पतनस ने
उतन देके उसे कहा की देप्पीय़े हम ने सव़ कुछ छोड़ा है
औान आप के पीछे हो लीय़े इस कानन हमें कय़ा मीलेगा?।
२८ य़सु ने उनहें कहा की मैं तुमहें सत कहता ऊं की तुम जो
मेने पीछे आय़े हो नय़े जनम में जव़ मनुप्प का पुतन अपने
ऐसनय़ के सींहासन पन व़ैठेगा तुम भी व़ानह सींहासन
पन व़ैठ के इसनाइल की व़ानह गोसटीय़ों का नय़ाय़ क-
२९ नोगे। औान जीस कीसी ने घन अथवा भाइ अथवा व़हीन
अथवा माता अथवा पीता अथवा पतनी अथवा लड़के व़ाले
अथवा भुम मेने नाम के लीय़े छोड़ा है सो सैागुना पावेगा औान
३० अनंत जीवन का अघीकानी होगा। पनंतु व़ऊत से पहीले
पीछले होंगे औान पीछले पहीले।

२० व़ीसवां पनव़।

य़सु व़नीहानों का दीनीसटांत देता है १—१६ अपने
मनने का औान जी उठने का भवीस कहना १७—१९
दो सीप्प की मां की इछा को टाल देना औान नहे ऊऐ
सीप्पों की जलजलाहट को नोकना २०—२८ औान
दो अंधों को दीनीसट देना २८—३४।

१ कय़ोंकी सनग का नाज ऐक गनहसथ मनुप्प के समान है

जो भोर को नीकला की अपनी दाष्प की बारी में बनीहारों
२ को लगावे। और जब उस ने बनीहारों से दीन भर की सुकी
३ चुकाइ उसने उनहें अपने दाष्प की बारी में भेजा। और
पहर दीन के अटकल में वुह बाहर गया और औरों को हाट
४ में बेकाम प्पड़े देप्पा। और उनहें कहा की तुम भी दाष्प
की बारी में जाओ और जो कुछ की ठीक है मैं तुमहें देउंगा
५ और वे चले गये। फेर उसने दो पहर और तीसरे पहर
६ के अटकल में बाहर जाके वैसाही कीया। और घंटा भर
दीन रहते हुए वुह बाहर गया अरु औरों को बेकाम प्पड़े
पाया और उनहें कहा की तुम यहां दीन भर कयों बेकाम
७ प्पड़े हो?। उनहों ने उसे कहा इस कारन की हमें कीसी ने
काम में न लगाया उसने उनहें कहा की तुम भी दाष्प की
८ बारी में जाओ और जो कुछ की ठीक है तुम पाओगे। और
जब सांझ हुइ दाष्प की बारी के सामी ने अपने भंडारी को
कहा की बनीहारों को बुला और पीछले से लेके पहीले लों
९ उनहें बनी दे। और जीतनों ने घंटा भर काम कीया था
१० उनहों ने आके एक एक सुकी पाइ। परंतु जब पहीले के
आये उनहों ने समझा की हम अधीक पावेंगे परंतु उनहों में से
११ भी एक एक हर एक ने सुकी पाइ। और पाके वे घर के
१२ उतम मामी के बीरोध में कुड़कुड़ा के बोले। की इन पीछलों
ने एकी घंटा काम कीया और आप ने उनहें हमारे तुल कीया
१३ जीनहों ने दीन का भार और घाम सहा। तब उसने उन में
से एक को उतर देके कहा की हे मीतर मैं तुझ से अनीती
नहीं करता कया तुने मुझ से एक सुकी पर नहीं ठहराया?।
१४ अपनी ले और चला जा कयोंकी इस पीछले को मैं तेरे ही
१५ समान देउंगा। उचीत नहीं की मैं अपने ही में से जो चाहुं
सो करूं? तेरी आंप्प इस लाये बुरी है की मैं भला हुं?।
१६ ऐसा ही पीछले अगले होंगे और अगले पीछले कयोंकी बहुतेरे

१७ वुलाये गये पनंतु थोड़े युने ऊपे। औान यनोसलीम को यढ़ जाते ऊपे यसु वानह सीप्पों को मानग में अलग लेगया औान
१८ उनहें कहा। की देप्पो हम यनोसलीम को यढ जाते हैं औान मनुप्प का पुतन पनघान याजकों औान अयापकों को सोंपा
१९ जायगा औान वे उस पन मान डालने की अगया कनेंगे। औान उसे अनदेसीयों को सोंपेंगे की ठठों में उड़ावें औान कोड़े मानें औान कुनुस पन प्पींयें औान वुह तीसने दीन फेन जी
२० उठेगा। तव जवदी के वेटों की माता अपने वेटों के संग उस पास आइ औान पननाम कनके उस से एक वात याही।
२१ तव उसने उसे कहा की तु कया याहती है? उसने उसे कहा की यह कीजीये की मेने ये दो वेटे एक आप की दहीनी
२२ दुसना आप की वाइं आप के नाज में वैठे। पनंतु यसु ने उतन देके कहा की तुम नहीं जानते की कया मांगते हो कया उस कटोने से जीस से मैं पीने पन ऊं पी सकते हो? औान उस सनान से जीस से मैं सनान पाता ऊं सनान पासकते हो? वे
२३ उसे वोले की हम सकते हैं। उस ने उनहें कहा की तुम नीसयय मेने कटोने से पीओगे औान उस सनान से जीस से मैं सनान पाता ऊं सनान पाओगे पनंतु मेनी दहीनी औान वाइं औान वैठना मेने देने में नहीं है पनंतु जीनके कानन मेने पीता
२४ ने ठहनाया है। औान जव उन दसों ने सुना वे उन दो भाइयों
२५ पन जल उठे। पनंत यसु ने उनहें वुला के कहा की तुम जानते हो की अनदेसीयों के अयक्ष उन पन नाज कनते है
२६ औान जो महान हैं सो उन पन अगया कनते हैं। पनंतु तुम में ऐसा न होगा पन जो कोइ तुम में महान ऊआ याहे सो
२७ तुमहाना सेवक होवे। औान जो कोइ तुम में सनेसठ ऊआ
२८ याहे सो तुमहाना सेवक होवे। जैसा मनुप्प का पुतन भी सेवा कनवाने नहीं आया पनंतु सेवा कनने औान वऊतेनों के लीये अपने पनान को मोल में देने को।

२९ औान जव्र वे अनीहू से जाने लगे ऐक व्रड़ी मंडली उसके
३० पीछे हो ली। औान देष्पो की दो अंधे जो मानग की औान
व्रैठे थे य़ह सन के की य़सु जाता है यीला के व्राले की हे पनभु
३१ दाउद के व्रेटे हम पन दय़ा कनाय़े। औान मंडली ने उनहें घुनक
दीय़ा जीसतें वे युप नहें पनंतु य़ह कहके वे अधीक यीलाके
३२ व्राले की हे पनभु दाउद के व्रेटे हम पन दय़ा कनाेय़े। तव्र
य़सु ष्पडा ऊआ औान उनहें व्रुलाके कहा की तुम कय़ा याहते
३३ हो की मैं तुम्हाने लीय़े कनुं। उनहों ने उसे कहा की हे
३४ पनभु की हमानी आंष्पें ष्पुल जाय़ें। तव्र य़सु ने दय़ाल होके
उनकी आंष्पों को छुआ औान तुनंत उनकी आंष्पों ने दीनीसट
पाइ औान वे उसके पीछे हो लीय़े।

२१ इकीसवां पनव्र।

गदही के व्रछेने पन यढ के य़सु का य़नोसलीम में जाना १—११ मंदीन में से व्रैपानीय़ों को दुन कनना अंधे लंगड़े को यंगा कनना औान य़ाजकों को उतन देना १२—१६ गुलन पेड़ को सुष्पा देना औान व्रीसवास का औान पनानथना का पनाकनम १७—२२ व्रैनीय़ों का मुंह व्रंद कनना २३—२७ दो व्रेटों के दीनीसटांत से पनघानों की दुसटता दीष्पानी २८—३२ औान दाष्प की व्रानी के दीनीसटांत से वही व्रताना ३३—४६।

१ औान जव्र वे य़नोसलीम के पास पऊंये औान व्रैतफगा को
अलपाइ के पहाड़ लों आय़े तव्र य़सु ने य़ह कहके दो सीष्पों
२ को भेजा। की अपने सनमुष्प के गांव में जाओ औान ऐक
व्रंधी ऊइ गदही को औान उसके संग ऐक व्रछेने को तुनंत
३ पाओगे ष्पोल के मेने पास लाओ। औान य़दी कोइ तमहे

कुछ कहे तो कहीओ की परभु को उनका आवसक है और
४ वुह तुरंत उनहें भेजेगा। ग्रह सब कुछ हुआ की जो व्रयन
५ भवीसदव्रकता ने कहा था संपनन होवे। की सीहुन की पुतरो
से कहो की देष्य तेरा राजा गदहो पर हां लादु के व्रछेरे पर
६ यढ़के कोमलता से तेरे पास आता है। तव सीष्यों ने जाके
७ ग्रसु की अगग्रा के रुनमान कीग्रा। और उस गदहो को
व्रछेरे समेत ले आग्रे और उन पर अपना व्रसतर रष्य के
८ उन पर यढ़ाग्रा। और ग्रेक अती व्रड़ी मंडली ने अपने
व्रसतरों को मारग में व्रीछाग्रा औरो ने पेड़ों की डालीग्रां
९ काटीं और मारग में व्रीथराई। और मंडली जो उसके आगे
पीछे जाती थीं पुकार के कहने लगीं की दाउद के व्रेटे को
होसाना धंन वुह जो परभु के नाम से आता है होसाना अतग्रंत
१० उंये पर। और जव्र वुह ग्रेरोसलीम में पहुंया समसत नगर
११ यंयल होके कहने लगे की ग्रह कौन है। तव्र मंडली ने
कहा की ग्रह जलील के नासरःका भवीसदव्रकता ग्रसु है।
१२ और ग्रसु इसर के मंदीर में गग्रा और उन सभों को, जो
मंदीर में व्रेंयते कीनते थे व्राहर नीकाल दीग्रा और ष्परदीग्रों
की यौकीग्रों को और कपोत के व्रेपारीग्रों के व्रैठकों को उलट
१३ दीग्रा। और उनहें कहा की ग्रह लीष्या है की मेरा घर
पराथना का घर कहावेगा परंतु तुम ने उसे योरों की मांद
१४ व्रनाई। और मंदीर में अंधे और लंगड़े उस पास आग्रे
१५ और उसने उनहें यंगा कीग्रा। और जव्र परधान ग्राजकों
और अधापकों ने उन आसयरज कारजों को, जो उसने कीग्रे
और लड़कों को मंदीर में पुकारते और दाउद के व्रेटे को
१६ होसाना कहते देष्या वे अती रीसीग्रा गग्रे। और उसे कहा
की तु सुनता है की ग्रे कग्रा कहते हैं? ग्रसु ने उनहें कहा की हां,
कग्रा तुम ने कभी नहीं पढ़ा है की व्रालकों और दुध पीओं के
१७ मुंह से तुने सतुत पुरी की?। तव्र उसने उनहें छोड़ा और

१८ नगर से बाहर बैतनिय में गया और वहां टीक रहा। और
१९ बिहान को जब वुह नगर में जाने लगा उसे भुष्प लगी। और
जब उसने गुलर के एक पेड़ को मारग में देष्पा वुह उस पास
आया परन्तु पतों को छोड़ उस पर कुछ न पाया और उसे
कहा की तुझ पर अब से कधो फल न लगे ततकाल गुलर का
२० पेड़ सुष्प गया। और जब सीष्पों ने देष्पा वे आसचरजीत
२१ हो के बोले की गुलर का पेड़ कैसा सीघर सुनष्ट गया। यसु
ने उतर देके उन्हें कहा की मैं तुमहें सत कहता हूं की यदी
तुमहें बीसवास होवे और संदेह न करो तो तुम केवल यही
न करोगे जो गुलर पेड़ से कीया गया है परन्तु यदी तुम इस
पहाड़ को भी कहोगे की उठ और समुंद्र में गीर पड़ तो
२२ वैसाही होगा। और सब कुछ जो तुम परारथना में परतीत
करके मांगोगे सो पाओगे।

२३ और जब वुह मंदीर में आके उपदेस करता था तब परधान
याजक और लोगों के परायीन उस पास आके बोले की तु
कीस पराकरम से यह कारज करता है? और कीसने तुझे
२४ यह पराकरम दीया है?। यसु ने उनहें उतर देके कहा की
मैं भी तुम से एक बात पुछता हूं जो तुम मुझे बतलाओगे तो
मैं भी तुमहें बतलाउंगा की मैं कीस पराकरम से यह कारज
२५ करता हूं। यहोहन का सनान कहां से था? सरग से अथवा
मनुष्पों से तब वे आपस में बीचार करके कहने लगे की जो
हम कहें की सरग से तो वुह हमें कहेगा फेर तुम कीस लीये
२६ उस पर बीसवास न लाये?। परंतु जो हम कहें की मनुष्पों से
तो हम लोगों से डरते हैं कयोंकी सब यहोहन को भवीसद-
२७ बकता जानते हैं। और उनहोंने यसु को उतर देके कहा
की हम नहीं कह सकते तब उसने उनहें कहा की मैं भी तुमहें
नहीं बतलाता की मैं कीस पराकरम से यह कारज करता हूं।
२८ परंतु तुमहें कया बुझ पड़ता है एक मनुष्प के दो बेटे थे उसने

पहीले के पास आके कहा की व्रेटे जा आज मेने दाष्प की
२९ व्रानी में काम कन। उसने उतन देके कहा की मेनी इछा नहीं
३० पनंतु पीछे वुह पछताके गया। और उसने दुसने के पास
आके वैसाही कहा और उसने उतन देके कहा की हे पनभु मैं
३१ जाता ह्रं पन न गया। उन दोनें में कीस ने पीता की इछा
मानी? उनहों ने उसे कहा की पहीले ने यसु ने उनहें कहा
की मैं तुमहें सत कहता ह्रं की कनगनाह ओन व्रेसवा तुम
३२ से आगे इसन के नाज में जाते हैं। कयोंकी यहीया घनम
के मानग से तुमहाने पास आया और तुन ने उसकी पनतीत न
की पनंतु कनगहाहकों और व्रेसवाओं ने उसकी पनतीत की
पन तुम देष्प के पीछे भी न पछताये की उसकी पनतीत कनते।
३३ दुसना दीनीसटांत सुनो की कीसी गीनहसथ ने दाष्प की व्रानी
लगाई और उसके यानें और व्राड़ा व्रांघा और उस में कोलहु
गाड़ा और ऐक गढ व्रनाया और उसे कीसानें को सैांप के
३४ पनदेस को यला गया। और जव्र फलने का समय पहुंया
उसने अपने सेवकों को कीसानें पास भेजा की वे उसके फल
३५ लेवें। पन कीसानें ने उसके सेवकें को पकड़ के ऐक को मानाा
३६ दुसने को व्रचन कीया और तीसने को पथनाया। फेन उसने
और सेवकें को, जो पहीले से अघीक थे, भेजा और उनहों ने
३७ उनसे भी वैसाही कीया। पनंतु सव्र के पीछ उसने यह कहके
अपने व्रेटे को उन पास भेजा की वे मेने व्रेटे का आदन कनेंगे।
३८ पनंतु कीसानें ने व्रेटे को देष्पके आपुस में व्रोले की यह अघी-
कानी है आओ इसे मान डालें और इस का अघीकान छीन
३९ लेवें। तव्र उनहों ने उसे पकड़ के दाष्प की व्रानी से व्राहन
४० नीकाल के मान डाला। अव्र यदी दाष्प की व्रानी का सामी
४१ आवे तो उन कीसानें को कया कनेगा?। उनहों ने उसे
कहा की उन दुसटों को व्रुनी नीत से नास कनेगा और दाष्प
की व्रानी और कीसानें को सैांपेगा जो फलें को उनकी नीतुन

४२ में पङ्गंयावेंगे। य़सु ने उनहें कहा की तुम ने लीष्पे ङुए में नहीं पढा की जीस पथन को थवय़ों ने फेन दीय़ा सोही कोने का सीना ङुआ य़ह पनमेसन का कानज है आैन हमानी दीनीसट
४३ में आसयनजीत। इस लीय़े मैं तुमहें कहता ङुं की इसन का नाज तुमसे लीय़ा जाय़गा अनु आैन देसी को दीय़ा जाय़गा
४४ जो उस ा फल को लावेंगे। आैन जो कोइ इस पथन पन गीनेगा टुट फुट जाय़गा पनंतु जीस पन वह गीनेगा उसे पीस
४५ डालेगा। आैन जव पनघान य़ाजकों आैन फनीसीय़ों ने उसके दीनीसटांत को सुना था वे वुझ गये की उसने उनके
४६ वीष्पय़ में कहा था। पनंतु जव उनहों ने याहा की उस पन हाथ डालें वे मंडली से डने कय़ोंकी वे उसे नवीसदवकता जानते थे।

२२ वाइसवां पनव।

वीवाह की वीआनी आैन वीवाह वसतन का दीनीसटांत १—१४ फनीसीय़ों को आैन होनुदीसीय़ों को कन वीष्पय़ में पनङ्गु उतन देता है १५—२२ सादुकीय़ों को जी उठने का उतन देता है २३—३३ स्नेसठ अगय़ा का उतन वैवसथा के गय़ाता को देता है ३४—४० उनसे अपने वीष्पय़ में पनसन कनता है ४१—४६।

१ आैन य़सु ने उतन दीय़ा आैन दीनीसटांतों में उनहें फेन
२ कहके वाेला। की सनग का नाज कीस नाजा जन के तुल है
३ जीसने अपने वेटे के वीवाह के लीय़े भोज कीय़ा। आैन अपने सेवकों का भेजा की नेउतहनीय़ों को वीवाह के भोज में
४ वुलावें पनंतु उनहों ने आने न याहा। फेन उस ने आैन सेवकों को य़ह कहके भेजा की नेउतहनीय़ों को कहो की

देष्यो मैं ने अपना भोजन सीध कीया है मेने वैल और मोटे पसु मारे गये और समसत वसतु सध हैं वीवाह के भोज में
५ आओ। परंतु वे सुनत न करके यले गये ऐक अपने ष्येत को
६ और दुसरा अपने वैपार को। और उवरे ऊओं ने उसके सेवकों को पकड के दुरदसा की और उनहें वधन कीया।
७ परतु जव राजा ने सुना उसने करोध करके अपने सेनाओं को भेजा और उन हतयारों का नास कीया और उनके नगर
८ को फुक दीया। तव उसने अपने सेवकों से कहा की वीवाह का भोज सीध है परतु जी हें नेउता दीया गया वे अजोग
९ थे। इस लीये राजमारगों में जाओ और जीतने तुमहें
१० मीलें वीवाह के भोज में नेउता देओ। तव वे सेवक नीकल के मारगों में गये और कया वुरे कया भले जीतनों को पाया
११ ऐकठे कीया और भोज में नेउतहरों से भर गये। परंतु राजा नेउतहरायों को भीतर देष्यने आ के कया देष्यता है की ऐक
१२ मनुष्य वहां वीवाह के वसतर वीना था। और उसने उसे कहा की हे मीतर तु कीस रीत से वीवाह के वसतर वीना यहां आया
१३ परंतु उसका मुंह वंद होगया। तव राजा ने अपने सेवकों से कहा की उसके हाथ पांव वांध के उसे ले जाओ और वाहर अंधयारे में डाल देओ जहां रोना और दांत पीसना
१४ होगा। कयोंकी व ऊतेरे वुलाये गये परंतु थोड़े युने ऊऐ हैं।
१५ तव फरीसीयों ने जाके परामरस कीया की उसे कीस रीत से
१६ उस की वातों में फसावें। और उन्हों ने अपने सीष्यों को हीरु-दीसीयों के संग उस पास यह कहला भेजा की हे गुरु हम जानते हैं की आप सत हैं और सयाई से ईसर का मारग सीष्याते हैं और कीसी का ष्यटका नहीं रष्यते कयोंकी आप
१७ कीसी की मनुसत पर दीसीट नहीं करते। इस लीये हमें कहीये आप कया समझते हैं? कैसर को कर देना जोग है
१८ अथवा नहीं?। तव यसु ने उनकी दुसटता वुझ के कहा की

१८ अने कपटीय़ो तुम कय़ों मेनी पनीछा कनते हो। मुहे कन
२० का नोकड़ दीप्पाअेा तब़ वे उस पास प्रेक सुकी लाय़े। अेान
उसने उनहें कहा की य़ह मुनत अेान लीप्पीत कीसका ?।
२१ उनहों ने उसे कहा की कैसन का तब़ उसने उनहें कहा इस
लीय़े जो कैसन की हैं कैसन को देअेा अेान जो इसन की हैं
२२ इसन को। तब़ वे सुन के आसयनजीत ऊप्रे अेान उसे छोड़
२३ के यले गय़े। उसी दीन सादुकी जो कहते हैं की फ़ेन उठना
२४ नहीं है उस पास आय़े अेान उसे य़ह कहके पुछा। की हे गुनु
मुसा ने कहा की जब़ कोइ पनुष्प नीनब़ंस मने तब़ उसका ञाइ
उसकी पतनी से ब़ीवाह कने अेान अपने ञाइ के नीमीत
२५ ब़ंस यलावे। अब़ हमाने संग सात ञाइ थे अेान पहीला
ब़ीवाह कनके मन गय़ा अेान नीनब़ंस था अपनी पतनी को
२६ अपने ञाइ के लीय़े छोड़ गय़ा। इसी नीत से दुसना ञी अेान
२७ तीसना सातवें लों। अेान सब़ से पीछे वुह इसतीनी ञी मन
२८ गइ। इस कानन फ़ेन उठने में उन सातों में से वुह कीस की
२९ पतनी होगी कय़ोंकी उन सञों ने उसे नप्पा था ?। य़सु ने
उतन देके उनहें कहा की लीप्पे ऊप्रे से अेान इसन के पना-
३० कनम से अगय़ान होके युक कनते हो। कय़ोंकी फ़ेन उठने
में वे ब़ीवाह नहीं कनते न ब़ीवाह में दीय़े जाते हैं पनंतु सनग
३१ में इसन के दुतों की नाइं हैं। पनंत मीनतु से फ़ेन उठने के
ब़ीप्पय़ में कय़ा तुम ने नहीं पढा जो इसन ने तुमहें कहा ?।
३२ की मैं इब़नाहीम का इसन अेान इसहाक़ का इसन अेान
य़ाकुब़ का इसन ऊं ? इसन मनीतकों का इसन नहीं पनंतु
३३ जीवतों का। अेान जब़ मंडली ने सुना वे उसके उपदेस से
३४ आसयनजीत ऊइं। पनंतु जब़ फ़नीसीय़ों ने सुना की उसने
३५ सादुकीय़ों का मुंह ब़ंद कीय़ा वे ब़टुन गय़े। अेान उन में से
३६ प्रेक ब़ेवसथा के गय़ाता ने उसकी पनीछा कनके पुछा। की हे
३७ गुनु ब़ेवसथा में ब़ड़ी अगय़ा कैान सी है ?। य़सु ने उसे कहा

की परमेसर को जो तेरा ईसर है अपने सारे अंतःकरन से
और अपने सारे परान से और अपने सारे मन से पीआर
३८।३९ कर। पहीली और वड़ी अगया यही है। और दुसरी
उसी की नाई है की तु अपने परोसी को अपने तुल पीआर
४० कर। समसत वैवसथा और नवीसदवकता इनहीं दोनों
४१ अगयाओं में से हैं। जव लों फरीसी एकठे थे यसु ने उनहें
४२ यह कहके पुछा। की मसीह को कया समझते हो वुह कीस
४३ का वेटा है? वे उसे वोले की दाउद का। उसने उनहें कहा
तो दाउद आतमा से कयों यह कह के उसे परभु कहता है।
४४ की परमेसर ने मेरे परभु को कहा की तु मेरी दहीनी और
वैठ जव लों मैं तेरे सतरुन को तेरे पांव की पीढ़ी करुं?।
४५ यदी दाउद उसे परभु कहे तो वुह कीस रीत से उसका पुतर
४६ है?। पर कोई मनुष्य उतर में उसे एक वात न कह सका
और उसी दीन से कीसी का हीयाव न हुआ की उसे फेर पुछे।

२३ तेईसवां परव।

यसु वचन पालन करने का उपदेस करता है
१—१२ उनकी अंघापन और कपट और वुराई
के लीये अनेक सताप उचारन करता है १३—३३
यरोसलीम के वीनास होने की और यहुदीयों की
वीपत की नवीस वानी ३४—३९

१ तव यसु मंडली को और अपने सीष्यों को कह के वोला।
२ की अधापक और फरीसी मुसा के आसन पर वैठते हैं।
३ इस लीये सव कुछ जो वे तुमहें मानने को कहें उसे मानो
और पालन करो परंतु उनके समान मत करो कयोंकी वे कहते
४ हैं और नहीं करते। इस लीये की वे भारी वोझे वांधते हैं
जीनका उठाना कठीन है और मनुष्यों के कंधे पर रष्पते हैं

५ पनंतु आप उनहें प्रेक अंगुली से हीलाने नहीं याहते। पन वे अपने साने कामजों को मनुप्पन को दीप्पाने के लीये कनते हैं वे अपने जंतनों को यैड़ा कनते हैं और अपने व्रसतनों के
६ प्यंट को व्रढ़ाते हैं। और जेवनान में पनचान सथान और मंडली
७ में सनेसठ आसन। और हाट में नमसकान की और ग्रह की
८ मनुप्य उनहें गुनु गुनु कहें इछा नप्पते हैं। पनंतु तुम गुनु मत कहाओ कयोंकी तुमहाना प्रेक गुनु मसीह है और तुम
९ सव्र भाइ हो। और पीनथीवी पन कीसी को पीता मत कहो
१० कयोंकी तुमहाना पीता प्रेक है जो सनग में है। और तुम
११ गुनु मंत कहाओ कयोंकी तुमहाना गुनु प्रेक मसीह है। पनंतु
१२ वुह जो तुम में सव्र से व्रड़ा है तुमहाना सेवक होगा। और जो कोइ अपने को व्रढ़ावेगा घटाय़ा जाय़गा और जो कोइ आप को दीन कनेगा व्रढाय़ा जाय़गा।

१३ पनंतु अने कपटी अधापको और फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है इस लीय़े की तुम मनुप्यों पन सनग का नाज व्रंद कनते हो कयोंकी तुम आप भीतन नहीं जाते और जो भीतन जाने
१४ याहते हैं उनहें भीतन जाने नहीं देते हो। अने कपटी अधापको और फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कयोंकी तुम नांडों के घनों को नोंगलते हो और छल से व्रढ़ा व्रढ़ा के पनानथना
१५ कनते हो इस लीय़े तुमहें अती व्रड़ा दंड होगा। अने कपटी अधापको और फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कयोंकी तुम प्रेक को अपने मत में लाने को समुंदन और पीनथोवी की यानों ओन फीनते हो और जव्र वुह आयुका तुम उसे अपने से
१६ दुना ननक का पुतन व्रनाते हो। अने अंधे अगुआ तुम पन हाय़ है जो कहते हो की जो कोइ मंदीन की कीनीय़ा प्पाय़ से कुछ नहीं पनंतु जो कोइ मंदीन के सोने की कीनीय़ा प्पाय़
१७ सो उधाननीक है। अने मुनप्प और अंधे कैान अती व्रड़ा है
१८ सोना अथवा मंदीन जो सोने को पवीतन कनता है?। और

जो कोइ व्रेदी की कीनया प्याय़ सो कुछ नहीं पनंतु जो कोइ उस दान की जो उस पन घना है कीनीय़ा प्याय़ सो उघाननीक
१९ है। अने मुनप्प औान अंघे कौान व्रड़ा है दान अथवा व्रेदी जो
२० दान को पवीतन कनती है ?। इस लोय़े जो कोइ व्रेदो की कीनीय़ा प्याय़ सो उसकी औान उस पन की सव्र की कीनीय़ा
२१ प्याता है। औान जो कोइ मंदीन की कीनीय़ा प्याय़ सो उसकी
२२ औान जो उस में नहता है कीनीय़ा प्याता है। औान वुह जो सनग की कीय़ा प्याय़ इसन के सींहासन की औान उसकी जो
२३ उस पन व्रैठता है कीनीय़ा प्याता है। अने कपटी अघापको औान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय़ोंकी तुम पुदीना औान सोआ औान जीना का दसवां भाग देते हो औान व्रैवसथा का अती व्रड़ा नयाय़ औान दय़ा औान व्रीसवास छोड़ दीय़े हो
२४ याहता था की तुम इनहें कनते औान उनहें न छोड़ते। अने अंघे अगुआ जो मछड़ को छान लेते हो औान उंट को नींगलते
२५ हो। अने कपटी अघापको औान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय़ोंकी तुम कटोने औान थाली के व्राहन व्राहन मांजते हो पनंतु भीतन भीतन व्रनव्रसती औान कुव्रनाव से भने ऊऐ हैं।
२६ अने अंघे फनीसीय़ो पहीले कटोने औान थाली के भीतन भीतन मांजो की उनके व्राहन व्राहन भी नीनमल होवे।
२७ अने कपटी अघापको औान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय़ोंकी तुम उजले समाघीन के समाग हो जो व्राहन व्राहन नीसयय़ सुंदन दीप्पाइ देते हैं पनंतु भीतन में मीनतकों के हाड़ से औान
२८ समसत अपवीतनता से भने ऊऐ हैं। ऐसाही तुम भी व्राहन व्राहन मनुप्पों को घनमी दीप्पाइ देते हो पनंतु भीतन से
२९ कपटाइ औान पाप से भने ऊऐ हो। अने कपटी अघापको औान फनीसीय़ो तुम पन हाय़ है कय़ोंकी तुम भवीसदव्रकतों के समाघीन को व्रनाते हो औान घनमीय़ों के समाघीन को
३० सींगान कनते हो। औान कहते हो की य़दी हम अपने पीतनों

के दीनों में होते तो भवीसदव्रकतों के लोऊ में उनके साथी न
३१ होते। इस कानन तम अपने अपने साप्पी हो की तुम भवीसद-
३२ व्रकतों के व्रघीकों के लड़के हो। अच्छा तुम अपने पीतनों के
३३ नपुयों को पुना कनो। अने सांपो अने नाग व्रंसीयो तुम ननक
३४ के दंड से कयोंकन भागेगे?। इस कानन देप्पो मैं भवीसद-
व्रकतों यौन व्रुधमानों यौन अघापकों को तुमहाने पास भेजता
ऊं यौन उन में से तुम घात कनोगे यौन कुनुस पन मानोगे
यौन उन में से मंडलीयों में पीटोगे यौन नगन नगन ताड़ना
३५ कनोगे।/ जीसतें घनमीयों का लोऊ जो पोनथीवी पन व्रहाया
गया है घनमी हाव्रील के लोऊ से लेके व्रानाप्पीयास के व्रेटे
जप्पनीयास के लोऊ लों जीसे तुम ने मंदीन यौन व्रेदी के मघ
३६ में घात कीया तुम सभों पन यावे। मैं तुम से सत कहता
३७ ऊं की ये समसत व्रघतें इस पीढ़ी पन यावेंगी। हे यनोसलीम
यनोसलीम जो भवीसदव्रकतों को घात कनती है यौन जो
तेने पास भेजे गये हैं उनहें पथनाती है मैं ने कीतने व्रेन याहा
की तेने व्रालकों को ऐसे एकठे कनुं जैसे कुकुटी अपने यींगनों
३८ को पंप्पों के तले व्रटोनती है पनंतु तुम ने न याहा। देप्पो
३९ तुमहाने लीये तुमहाना घन उजाड़ छोड़ा जाता है। कयोंकी
मैं तुमहें कहता ऊं की तुम मुझे अव्र से फेन न देप्पोगे
जव्र लों यह न कहोगे की घंन वुह जो पनमेसन के नाम से
याता है।

२४ योव्रीसवां पनव्र।

मंदीन के नास की भवीस व्रानी १—२ उसके यागे
के यीनह यौन यीतावनी ३—२८ यौन पीछे का
ऐन फेन यौन व्रीपत यौन जगत की समापत
२९—३१ गुलन पेड़ के दीनीसटांत से नीसयय

होना व्रताता है ३२—३५ उस दीन ग्रैान घड़ी को कोइ नहीं जानता ३६—४१ सव्र को ग्रैाकस होने की यीतावनी ४२—५१।

१ ग्रैान य़सु मंदीन से नीकल कन व्राहन गय़ा ग्रैान उसके सीप्प
२ मंदीन की व्रनावट दीप्पाने को उस पास ग्राय़े। ग्रैान य़सु ने उनहें कहा की तुम य़ह सव्र नहीं देप्पते हो? मैं तुमहें सत कहत ऊं की य़हां ऐक पथन दुसने पन न छुटेगा जो
३ गीनाय़ा न जाय़गा। ग्रैान जव्र वुह जलपाइ के पहाड़ पन व्रैठा उसके सीप्प ग्रलग उस पास ग्रा के व्रोले की हमें कहीय़े की य़ह सव्र कव्र होंगी? ग्रैान ग्राप के ग्रावने का ग्रैान जगत के
४ ग्रंत का कय़ा योनह है?। तव्र य़सु ने उतन दीय़ा ग्रैान उनहें
५ कहा ग्रैाकस नहो की कोइ मनुप्प तुमहें न भ्रनमावे। कय़ोंकी मेने नाम से व्रऊतेने य़ह कहते ऊऐ ग्रावेंगे की मैं मसीह ऊं
६ ग्रैान व्रऊतों को भ्रनमावेंगे। ग्रैान तुम संगनामों को ग्रैान संगनामों की यनया सुनोगे ग्रैाकस होग्रो ग्रैान मत घव्रनाइय़ो कय़ोंकी इन सभों का होना ग्रावेस है पनंतु ग्रभी ग्रंत नहीं
७ है। कय़ोंकी लोग लोग पन ग्रैान नाज नाज पन यढ़ेंगे ग्रैान ग्राकाल ग्रैान मनी पड़ेंगी ग्रैान ग्रनेक सथान में भुइडोल होंगे।
८।९ य़ह सव्र दुप्पों का ग्रानंभ है। तव्र वे तुमहें कसट पाने के लोय़े सैांपेंगे ग्रैान तुमहें घात कनेंगे ग्रैान मेने नाम के
१० लीय़े समसत जातगन तुम से व्रैन कनेंग। ग्रैान जव्र व्रऊतेने ठोकन प्पाय़ेंगे ग्रैान ऐक दुसने को पकड़वाय़ेगा ग्रैान ऐक
११ दुसने का व्रैन कनेगा। ग्रैान व्रऊत से मीथय़ा भ्रवीसदव्रकता
१२ पनगट होंगे ग्रैान व्रऊतेनों को भ्रनमावेंगे। ग्रैान पाप की
१३ ग्रघीकाइ के कानन व्रऊतेनों का पनेम ठंडा हो जाय़गा। पनंतु
१४ जो ग्रंत लों सहेगा सोइ मुकत पावेगा। ग्रैान समसत जातगनों के साप्पी के लीय़े नाज का य़ह मंगल समायान समसत जगत
१५ में पनयाना जाय़गा ग्रैान तव्र ग्रंत ग्रावेगा। इसी लीय़े जव्र

तुम व्रीनास की चीनीत व्रसतु को, जीसके व्रीप्पय़ में दानीय़ाल भवीसदव्रकता ने कहा है पवीतन सथान में प्पड़ा ऊआ देप्पो
१६ जो कोइ पढ़ता है सो समझे। तव्र जो य़ऊदीय़ः में सो पहाड़ों
१७ को भागें। जो कोठे पन है सो अपने घन से कुछ लेने को न
१८ उतने। श्रोन जो प्पेत में है सो अपना व्रसतन लेने को न
१९ फीने। श्रोन हाय़ उन पन जो उनहीं दीनों में गनभनी श्रोन
२० दुघ पीलातीय़ां होंगी। पनंतु पनानघना कनो की तुमहाना
२१ भागना जाड़े में अथवा व्रीसनाम में न होय़। कय़ोंकी तव्र महा कसट होगा जैसा की जगत के आनंभ से अव्रलों न ऊआ
२२ हां श्रोन न कघी होगा। श्रोन य़दी वे दीन घटाय़े न जाते तो कोइ पनानी सुकत न पाता पनंतु युने ऊश्रों के कानन वे
२३ दीन घटाय़े जाय़ेंगे। तव्र य़दी कोइ तुमहें कहे की देप्पो
२४ मसीह य़हां अथवा वहां पनतीत मत कनीय़ो। कय़ोंकी झुठे मसीह श्रोन झुठे भवीसदव्रकता पनगट होंगे श्रोन ऐसे व्रड़े यीनह श्रोन आसयनज दीप्पावेंगे की य़दी होनहान होता तो
२५ वे युने ऊश्रों को भी भनमाते। देप्पो मैं आगे से तुमहें कह
२६ युका ऊं। इस कानन य़दी वे तुमहें कहें की देप्पो वुह व्रन में है तो व्राहन मत जाइय़ो अथवा की देप्पो गुपत कोठनीय़ों
२७ में है पनतीत मत कनीय़ो। कय़ोंकी जीस नीत से व्रीजुली पुनव्र से नीकलती है श्रोन पछीम लों लैाकती है वैसेही मनुप्प
२८ के पुतन का भी आना होगा। कय़ोंकी जहां कहीं लोथ है तहां गीघ एकठे होंगे।

२९ उन दीनों के कसट के पीछे तुनंत सुनज अंधीय़ाना हो जाय़गा श्रोन यंदनमा अपना उंजीय़ाला न देगा श्रोन तानें सनग से
३० गीनेंगे श्रोन सनगों की दीनढ़ता हील जाय़ेंगी। श्रोन तव्र मनुप्प के पुतन का यीनह सनग में दीप्पाइ देगा श्रोन उस समय़ में पीनथीवी के समसत लोग व्रीलाप कनेंगे श्रोन मनुप्प के पुतन को पनाकनम के साथ श्रोन व्रड़े व्रीभव से आकास

३१ के मेघों पन आते देष्पेंगे। औान वुह अपने दुतों को तुनही
के व़ड़े सव़द के संग भेजेगा औान वे उसके युने झूओं को यानों
३२ पवन से सनग के प्रेक ष्पुंट से दुसने लों प्रेकठा कनेंगे। अव़
गुलन पेड़ से प्रेक दीनीसटांत सीष्पो जव़ उसकी डाली कोमल
होती है औान पते नोकलते हैं तुम जानते हो की गनीसम
३३ समीप है। इसी नीत से जव़ तुम य़ह सव़ व़सतें देष्पो तो
३४ जानीय़ो की वुह समीप अनथात दुवानों पन। मैं तुमहें सत
कहता हूं की य़ह पीढ़ी व़ीत न जाय़गी जव़ लों य़े सव़ व़ातें
३५ पुनी न होलें। सनग औान पीनथीवी व़ीलाय़ जाय़ेंगी पनंत
३६ मेने व़यन न व़ीलाय़ जाप्रेंगे। पनंतु उस दीन औान उस घड़ी
के मेने पीता को छोड़ सनग के दुत भी कोइ नहीं जानते।
३७ पन जीस नीत से नुह के दीनों में हुआ मनुष्प के पुतन का आना
३८ भी प्रेसाही होगा। कय़ोंकी जोस नीत से जलमय़ के दीनों
के आगे वे ष्पाते पीते थे वीवाह कनते थे औान व़ीवाह में दीय़े
३९ जाते थे उस दीन लों की नुह ने जहाज़ में पनवेस कीय़ा। औान
न जाना जव़ लों जलमय़ आय़ा औान उन सभों को ले लीय़ा
४० तैसे मनुष्प के पुतन का भी आना होगा। तव़ ष्पेत में दो होंगे
४१ प्रेक पकड़ा जाय़गा औान दुसना छुट जाय़गा। दो यकी पीस-
तीय़ां होंगी प्रेक पकड़ी जाय़गी औान दुसनी छुट जाय़गी।
४२ इस लीय़े जागते नहो कय़ोंकी तुम नहीं जानते की तुमहाना
४३ पनभु कीस घड़ी आवेगा। पनंतु य़ह जानो की य़दी घन का
सामी जानता की योन कीस पहन में आवेगा तो वुह जागता
४४ नहता औान अपने घन में सेंघ लगने न देता। इस लीय़े तुम
भी लैस नहो कय़ोंकी मनुष्प का पुतन प्रेसी घड़ी में आवेगा
४५ की तुमहें सुनत न होगी। फ्रेन वुह व़ीसवासमय़ औान व़ुघ-
मान सेवक कौान है जीसे उसका पनभु अपने घनाने पन पनघान
४६ कनेगा की समय़ में उनहें भोजन कनावे?। घंन वुह सेवक
४७ जीसे उसका पनभु आके प्रेसाही कनते हुप्रे पावे। मैं तुमहें

सत कहता ऊं की वुह उसे अपने समसत घन पन पनघान
४८ कनेगा। पनंतु यदी वुह दुसट सेवक अपने मन में कहे की
४९ मेना पनभ आने में व्रालंव्र कनता है। ओान अपने संगी सेवकों
५० को माननने ओान मद्पों के संग प्याने पीने लगे। उस सेवक का
सामी ऐसे दीन में आवेगा की वुह व्राट न जोहता हो ओान
५१ जीस घड़ी वुह नीसयीनत हो। ओान उसे काट डालेगा ओान
उस का भाग कपटीयों के संग देगा जहां नोना ओान दांत
पीसना होगा।

२५ पचीसवां पनव्र।

व्रुघमती ओान मुनष्प कनयों का दीनीसटांत
१—१३ तोड़ों का दीनीसटांत १४—३० नयाय के
दीन का व्रननन ओान उसका भयंकन समायान
३१—४६।

१ उस समय में सनग का नाज दस कंनया के तुल होगा जो
अपने अपने दीपक को लेकन दुलहा की भेंट को व्राहन नीकलीं।
२। ३ ओान उन में पांय यतुनी ओान पांय मुनष्प थीं। जो मुनष्प
थीं उनहों ने अपने अपने दीपक को उठा लीया ओान तेल अपने
४ संग न लीया। पनंतु यतुनीयों ने अपने पात्नों में दीपकों
५ के संग तेल लीया। ओान जव्र लों दुलहा ने व्रीलंव्र कीया वे
६ सव्र उंघ गईं ओान सो गईं। ओान आधी नात को घुम मयी
७ की देप्पो दुलहा आता है उसकी भेंट को नीकलो। तव्र उन
८ सव्र कुंआनीयों ने उठ कन अपने दीपकों को सवांना। ओान
मुनष्पों ने यतुनीयों से कहा की अपने तेल में से हमें देओ
९ कयोंकी हमाने दीपक व्रुझते हैं। पनंतु यतुनीयों ने उतन
देके कहा न होवे की हमाने ओान तुमहाने लीये व्रस न
हो इस लीये भला है की तुम व्रेयवैयों पास जाओ ओान

१० अपने लीये मोल लेओ। ओान जव् वे मोल लेने गइं दुलहा आया ओान जो सीघ थीं से उसके संग वीवाह भोज में गइं
११ ओान दुवान व्ंद ऊआ। पीछे वे कनया भी यह कहती ऊइ
१२ आइं की हे पनभु हे पनभु हमाने लये ष्योलीये। पनंतु उस ने उतन देके कहा मैं तुमहें सत कहता ऊं की मैं तुमहें नहीं
१३ जानता। इस लीये जागते नहो कयोंकी तुम नहीं जानते की मनुष्य का पुतन कैान से दीन ओान कैान सी घड़ी में आवेगा।
१४ कयोंकी यह उस मनुष्य के समान है जीसने पनदेस को जाते ऊऐ अपने सेवकों को वुलाया ओान अपनी संपत उनहें सैांप
१५ दी। ओान ऐक को उस ने पांय तोड़े दीये दुसने को दो ओान तीसने को ऐक हन ऐक मनुष्य को उसके वीत के समान दीया
१६ ओान तुनंत यला गया। तव् जीसने पांय तोड़े पाये थे वुह गया ओान उन से लेन देन कीया ओन ओान पांय तोड़े अधीक
१७ कमाये। ओान इसी नीत से जीसने दो पाये थे उस ने भी दो
१८ ओान कमाये। पनंतु जीसने ऐक पाया था उस ने जाके भुम
१९ को ष्योद के अपने पनभु के नोकड़ को छीपाया। पनंतु वृऊत दीन के पीछे उन सेवकों का सामी आया ओान उनसे लेष्पा लेने
२० लगा। ओान जीसने पांय तोड़े पाये थे वुह आया ओान पांय तोड़े ओान भी लाया ओान कहा की हे पनभु आप ने मुझे पांय तोड़े सैांपे थे देष्पीये मैं ने उन से पांय तोड़े अधीक कमाये।
२१ उसके सामी ने उसे कहा की धंन हे अछे ओान वीसवासमय सेवक तु थोड़ी सी वसतु में वीसवासमय नीकला मैं तुझे वृऊत सी वसतु पन पनधान कनुंगा तु अपने पनभु के आनंद में पनवेस
२२ कन। जीस ने दो तोड़े पाऐ थे वुह भी आया ओान वोला की हे पनभु आप ने मुझे दो तोड़े सैांपे थे देष्पाये मैं ने उनसे
२३ ओान दो तोड़े अधीक कमाये। उसके सामी ने उसे कहा की धंन हे अछे ओान वीसवासमय सेवक तु थोड़ी सी वसतु में वीसवासमय नीकला मैं तुझे वृऊत सी वसतु पन पनधान कनुंगा

२४ तु अपने पत्र्भु के आनंद में परवेस कर। तब्र जीसने ऐक तोड़ा पाया था वुह आया और कहा की हे पत्र्भु मैं आप को जानता था की आप कठोर मनुष्य हैं और लवते हैं जहां आप ने नहीं ब्रोया और ऐकठा करते हैं जहां आप ने नहीं ब्रीथ-
२५ राया। इस लीये मैं डरा और जाके आप के तोड़े को भुम
२६ में छीपा रख्या सो अपना देख्य लीजये। उसके पत्र्भु ने उसे उतर देके कहा की हे दुसट और आलसी सेवक तु ने जाना की जहां मैं ने नहीं ब्रोया तहां लवता हुं और जहां मैं ने नहीं
२७ ब्रीथराया ऐकठा करता हुं। इस लये तुहे उचीत था की मेर रोकड़ कोठी में रख्यता और आते हुऐ मैं अपना ब्रीआज
२८ समेत पाता। इस लीये उस से वुह तोडा ले लेओ और जीस
२९ पास दस तोड़े हैं उसे देओ। क्योंकी जीस पास कुछ है उसे दीया जायगा और उसे अधीक ब्रढ़ती होगी परंतु जीस पास कुछ नहीं है उस से वुह भी जो उसके पास है लीया जायगा।
३० और उस नीकमे सेवक को ब्राहर अंधीयारे में डाल देओ जहां
३१ रोना और दांत पीसना होगा। जब्र मनुष्य का पुत्र सारे पवीत्र दुतों के संग अपने ब्रीभव में आवेगा तब्र वुह अपने
३२ ब्रीभव के सींहासन पर ब्रैठेगा। और उस के आगे समसत जातगन ऐकठे कीये जायेंगे और वुह ऐक को दुसरे से अलग करेगा जीस रीत से गड़ेरीया भेड़ों को ब्रकरीयों से अलग
३३ करत है। और वुह भेड़ों को अपनी दहीनी परंतु ब्रकरीयों
३४ को अपनी ब्राइं ओर रख्येगा। तब्र जो उसकी दहीनी ओर हैं राजा उन्हें कहेगा की आओ मेरे पीता के धंन लोग उस राज के अधीकारी होओ जो जगत के आरंभ से तुमहारे
३५ कारन ब्रनाया गया है। क्योंकी मैं भुख्या था और तुमने मुहे भोजन दीया मैं पीयासा था और तुमने मुहे पीलाया मैं परदेसी
३६ था और तुम ने मुहे उतारा। नंगा था और तुम ने मुहे पहीनाया मैं रोगी था और तुम ने मेरी सेवा की मैं ब्रंधन में

३७ था और तुम मुझ पास आये। तव धनमी उसे उतर देके कहेंगे की हे परमु कव हम ने आप को भुष्या देष्या और भोजन दीया
३८ अथवा पीयासा और पीलाया ?। अथवा हमने कव आप को परदेसी देष्या और आदर कीया ? अथवा नंगा और पही-
३९ नाया ?। अथवा कव हमने आप को रोगी अथवा वंधन में
४० देष्या और आप के पास आये ?। तव राजा उतर देके उनहें कहेगा की मैं तुमहें सत कहता हुं की जैसा तुम ने मेरे इन
४१ अती छोटे भाइयों से कीया तुम ने मुझ से कीया। तव जो उसकी वांई ओर हैं वुह उनहें कहेगा की अरे सरापीतो मेरे आगे से, उस अनंत आग में, जो सैतान और उसके दुतों के
४२ कारन सोच की गई है दुर होओ। कयोंकी मैं भुष्या था और तुम ने मुझे भोजन न दीया मैं पीयासा था और तुम ने मुझे
४३ न पीलाया। मैं परदेसी था और तुम ने मुझे न उतारा नंगा था और तुम ने मुझे न पहीनाया रोग और वंधन में था और
४४ तुम ने मेरी सुध न ली। तव वे भी उसे उतर देके कहेंगे की हे परमु कव हमने आप को भुष्या अथवा पीयासा अथवा परदेसी अथवा नंगा अथवा रोगी अथवा वंधन में देष्या
४५ और आप की सेवा न की ?। तव वुह उतर देके उनहें कहेगा की मैं तुमहें सत कहता हुं की जैसा तुम ने इन अती
४६ छोटों में से ऐक से न कीया तुम ने मुझ से न कीया। और ये सव अनंत पीड़ा में जायेंगे परंतु धरमी अनंत जीवन में।

२६ छवीसवां परव।

यसु के मारे जाने की भवीस वानी १—२ अपने वीनाष में परधान याजकों की गुसट ३—५ ससु के सीर पर ऐक इसतीरी सुगंध डालती है ६—१३ उसे पकड़वाने को यहुदा परधान याजकों से

मोल करता है १४—१६ यसु बीतजाना प्याता है और कलो को परगट करता है १७—२५ अपनी बीआरी ठहराता है २६—२९ सब सीष्यों के उसे तयाग करने की खबीस बारी ३०—३५ बाटीका में पीड़ीत होके यसु परारथना करता है ३६—४६ उसका पकड़वाया जाना ४७—५० सीष्य एक सेवक का कान उड़ा देता है परंतु यसु रोकता है ५१—५६ काफरा के आगे यसु की दुरदसा ५७—६८ तीन बार पतरस उस से मुकर जाता है और बीलाप करता है ६९—७५।

१ और ऐसा हुआ की जब यसु ये सब बातें कह चुका उसने
२ अपने सीष्यों से कहा। की तुम जानते हो की दो दीन के पीछे बीत जाने का परब होगा और मनुष्य का पुत्र कुरुस पर
३ मारे जाने के लीये पकड़वाया जायगा। तब परधान याजक और अधापक और लोगों के परायीन काफरा नाम परधान
४ याजक के सदन में एकठे हुए। और परामरस कीया की यसु
५ को कपट से पकड़ के मार डालें। परंतु उनहों ने कहा की
६ परब में नहीं न हो की लोगों में हौरा मचे। और जब यसु
७ बैतीना में कोढ़ी समउन के घर था। एक उजले पथर की डीबीया में बहुमुल सुगंध तेल लीये हुए एक इसतीरी उस पास आई और उस के बैठने के समय उसके सीर पर ढाल दीया।
८ परंतु उसके सीष्यों ने देखके जलजलाहट होके कहा की यह
९ बयरथ उठान कीस कारन है?। कयोंकी यह सुगंध तेल बहुत मोल पर बेचा जाता और कंगालों को दीया जाता।
१० जब यसु ने जाना उसने उनहें कहा की तुम इस इसतीरी को
११ कयों छेड़ते हो उसने मुझ पर उतम कारज कीया है। कयों-
१२ की कंगाल तुमहारे संग सदा हैं परंतु मैं सदा नहीं हुं। कयों-की उसने जो यह सुगंध तेल मेरे देह पर डाला सो उसने मेरे

१३ गाड़ने के लीये कीया। मैं तुम से सत कहता ऊं की सारे जगत में जहां कहीं यह मंगल समाचार पनचाना जायगा यह भी जो इस इसतीनी ने कीया उसके समनन के कानन कहा जायगा।

१४ तव उन वानह में से ऐक जो यऊदा असकनयुती कहाता था
१५ परधान याजकों के पास जाके। वोला की तुम सुहे कया देउगे यदी मैं उसे तुम्हें सौंप देउं? तव उनहों ने उस से तीस टुकड़े
१६ चांदी पन ठीक कीया। औान उस समय से वुह अवसन ढुंढता
१७ था की उसे पकड़वा दे। औान अप्पमीनी नेटी के पहीले सीष्यों ने यसु पास आके उसे कहा की आप कहां चाहते हैं की हम
१८ आप के भोजन के लीये वीतजाना सीघ कनें?। उसने कहा की नगन में अमुक मनुष्य पास जाओ औान उसे कहो की गुनु ने कहा है की मेना समय आ पऊंचा मैं अपने सीष्यों के संग
१९ वीतजाना तेने घन में नष्पुंगा। औान जैसा यसु ने ठहनाया
२० था सीष्यों ने वीत जाना सीघ कीया। औान जव सांह ऊई वुह
२१ उन वानह के संग वैठ गया। औान जव वे भोजन कन नहे थे उसने कहा की मैं तुम से सत कहता ऊं की तुम में से ऐक सुहे
२२ पकड़वावेगा। तव वे अती उदासीन ऊऐ औान उन में से हन
२३ ऐक उसे कहने लगा की हे पनभु कया मैं ऊं। तव उसने उतन दीया औान कहा की जो मेने संग थाली में हाथ वोनता
२४ है सोइ सुहे पकड़वावेगा। जैसा की उसके वीष्यय में लीष्पा है मनुष्य का पुतन जाता है पनंतु हाय उस मनुष्य पन जीस से मनुष्य का पुतन पकड़ाया जाय उस मनुष्य के लीये भला होता
२५ जो वुह उतपन न होता। तव जीसने उसे पकड़वाया अनथात यऊदा ने उतन देके कहा की हे गुनु कया मैं ऊं? उसने उसे कहा की तूही ने कहा।

२६ औान जव वे भोजन कन नहे थे यसु ने नोटी लो औान धंन मान के तोड़ी औान सीष्यों को दी औान कहा की लेओ ष्याओ

२७ यह मेरा देह है। और उसने कटोरा भी लीया और धन मान
२८ के उनहें देके कहा को तुम सब इस से पीओ। कयोंकी नये
नीयम का यह मेरा लोऊ है जो बहुतेरों के पाप मोचन के
२९ लीये बहाया गया है। परंतु मैं तुमहें कहता हुं की मैं दाख
का रस अब से आगे न पीउंगा उस दीन लों जब की मैं अपने
३० पीता के राज में तुमहारे संग उसे नया पीउं। और एक
भजन गा के वे बाहर नीकल के जलपाई के पहाड़ को गये।
३१ तब यसु ने उनहें कहा की इसी रात तुम सब मेरे कारन
ठोकर खाओगे कयोंकी लीखा है की मैं गड़ेरीये को मारुंगा
३२ और झुंड की भेड़ छींन भींन हो जायेंगी। परंतु फेर उठाये
३३ जाने के पीछे मैं तुमहारे आगे जलील को जाउंगा। पतरस
ने उतर देके उसे कहा की यदपी आप के कारन सब ठोकर
३४ खावें मैं कधी ठोकर न खाउंगा। तब यसु ने उसे कहा की
मैं तुझे सत कहता हुं की इसी रात कुकुट के बोलने से आगे
३५ तु तीन बार मुझ से मुकरेगा। पतरस ने उसे कहा की यदपी
मेरा मरना आपके संग होवे तथापी मैं आपसे न मुकरुंगा
३६ सब सीष्यों ने भी ऐसाही कहा। तब एक स्थान में जो
जसमन कहावता है यसु उनके संग आया और सीष्यों ने कहा
३७ की यहां बैठो जब लों मैं वहां जाके परारथना करुं। और
उसने पतरस और जबदी के दो बेटों को संग लीया और
३८ उदासीन होके अती सोकीत होने लगा। तब उसने उनहें कहा
की मेरा परान मीरत लों अती उदासीन है तुम यहां ठहरो
३९ और मेरे संग चौकस रहो। और वुह थोड़ा आगे बढ़ के
औंधे मुंह गीर पड़ा और यह कहके परारथना कीं, की हे
मेरे पीता यदी होसके तो यह कटोरा मुझ से बीतजाय तोस
४० पर भी मेरी इछा नहीं परंतु तेरी होवे। तब सीष्य पास आया
और उनहें सोते पाया और पतरस से कहा की तुम घटी भर
४१ मेरे संग चौकस न रह सके?। चौकस होओ और परारथना

कनो जीसतें तुम पनीछा में न पड़ो आतमा तो लेस है ठीक
४२ पनंतु सनीन दुनवल है। वुह दुसने वान फेन गया औान
पनानथना कनके वोला की हे मेने पीता जो मेने पीने वीना
४३ यह कटोना मुह्ह से टल न जाय तो तेनी इछा होय। तव
उसने आके उनहें फेन सोते पाया कयोंकी उनकी आंप्पें भानी
४४ थीं। औान वुह उनहें छोड़ के फेन यला गया औान वही
४५ वयन कहके तीसने वान पनानथना की। फेन वुह अपने सीप्प
पास आया औान उनहें कहा की अव सोते नहो औान वीसनाम
कनो देप्पो घड़ी आ पहुंयी है की मनुप्प का पुतन पापीयों के
४६ हाथों में पकड़वाया जाता है। उठो यलें देप्पो वुह जो मुह्हे
४७ पकड़वाता है आ पहुंया। औान जव वुह कह नहा था देप्पो
की यहुदा वाहन में से प्रेक अपने संग प्रेक वड़ी मंडी प्पड़ग
औान लाठीयां लीये हुप्रे पनधान याजकों औान लोगों के पना-
४८ यीनों की ओान से ले के आया। अव जीस ने उसे पकड़वाया
उसने उनहें यह कहके पता दीया था की जीस कीसी को मैं
४९ युमुं वुह वही है उसे पकड़ लेओ। औान तुनंत वुह यसु पास
५० आके वोला की हे गुनु पननाम औान उसे युमा। औान यसु ने
उसे कहा की हे मीतन तु कीस लीये आया तव उनहों ने यसु
५१ पन हाथ डाले औान उसे पकड़ लीया। औान देप्पो की उन
में से प्रेक ने, जो यसु के संग थे हाथ वढ़ा के अपना प्पडग प्पींया
औान पनधान याजक के प्रेक सेवक को लगाया औान उसका
५२ कान उड़ा दीया। तव यसु ने उसे कहा की अपने प्पडग को
काठी में फेन नप्प कयोंकी सव जो प्पडग प्पींयते हैं प्पडग ही
५३ से मानें जायेंगे। तु नहीं समह्हता की मैं अभी अपने पीता की
पनानथना कन सकता हुं औान वुह तुनंत दुतों की वानह सेना
५४ मुह्हे देगा?। पनंतु तव लीप्पे हुप्रे कयोंकन पुने होंगे की युं
५५ होना अवस है?। उसी घड़ी यसु ने मंडलीयों से कहा की
तुम मुह्हे योन की नाईं पकड़ने को प्पडग औान लाठीयां लेके

व्राहन नीकले हो? मैं तो पतती दीन तुमहारे संग मंदीर में व्रैठ के उपदेस करता था और तुम ने मुझ पर हाथ न डाला।
५६ परंतु यह सव्र हुआ जीसतें नवीसदव्रकतों के लीष्पे हुए पुरे
५७ होवें तव्र सारे सीष्य उसे छोड़के भागे। और जीनहों ने यसु को पकड़ा था वे परधान याजक काअफा के पास ले गये जहां
५८ अधापक और परायीन एकठे थे। परंतु पतरस दुर से उसके पीछे पीछे परधान याजक के सदन लों यला गया और भीतर
५९ जाके सेवकों के संग व्रैठ गया की अंत को देष्पे। तव्र परधान याजक और परायीन और समसत सभा यसु पर झुठी साष्पी
६० ढुंढ़ते थे की उसे मार डालें परंतु कोइ न पाये। हां यदपी व्रहुतेरे झुठी साष्पी आये तथापी वे न पाये अंत में दो झुठे
६१ साष्पी आये। और व्रोले की इस ने कहा की मैं इसर के मंदीर
६२ को ढाके उसे तीन दीन में ष्पड़ा कर सकता हुं। तव्र परधान यजाक उठा और उसे व्रोला की तु कुछ उतर नहीं देता? ये
६३ तुझ पर कया कया साष्पी देते हैं?। परंतु यसु युपका रहा और परधान याजक ने उतर दीया और उसे कहा मैं तुझे जीवते इसर को कीरीया देता हुं की यदी तु वुह मसीह इसर
६४ का पुतर है तो हम से कह। यसु ने उसे कहा की तुही ने कहा है तीस पर भी मैं तुमहें कहता हुं की इस के पीछे तुम मनुष्य के पुतर को पराकरम की दहीनी ओर व्रैठे और आकास
६५ के मेघों पर आते देष्पोगे। तव्र परधान याजक ने अपने व्रसतर को फाड़ के कहा की वुह पाष्पंडता कह युका है अव्र हमें आगे साष्पी का कया परयोजन है? देष्पो अभी तुम ने
६६ उसकी पाष्पंडता सुनी है। तुम कया सोयते हो? उनहों ने
६७ उतर दीया और कहा की यह मीरतु के जोग है। तव्र उनहों ने उसके मुंह पर थुका और उसे घुसे मारे अर औरों ने
६८ थपेड़े मारे। और कहा को हे मसीह हमें भवीस कह कीसने
६९ तुझे मारा है?। तव्र पतरस व्राहर सदन में व्रैठा था और

ऐक दासी उस पास आइ और बोली की तु भी ग़सु जलीली के
७० संग था। पनंतु वुह सब के आगे मुकन गया और कहा की मैं
७१ नहीं जानता तु कया कहती है। और जब वुह बाहन ओसाने
नें आया ऐक दुसनी उसे देष्के, जो वहां ष्पड़े थे, उनहें बोली
७२ की यह भी ग़सु नासनी के संग था। और फीन वुह कीनीया
७३ ष्पा के मुकन गया की मैं उस मनुष्प को नहीं जानता। और
तनीक पीछे वे जो वहां ष्पड़े थे पतनस पास आये और बोले
की नीसयय तु भी उनमें से है कयोंकी तेनी भाष्पा तुहे पंनगट
७४ कनती है। तब वुह घीकान के और कीनीया ष्पाके कहने
लगा की मैं उस मनुष्प को नहीं जानता और तुनंत कुकुट
७५ बोला। तब पतनस ने ग़सु के बयन की सुघ की जो उसे कहा था
की कुकुट के बोलने से आगे तु तीन बान मुहु से मुकन जायगा
तब वुह बाहन जाके बीलष्प बीलष्प नोया।

२७ सताइसवां पनब।

ग़सु पीलातुस को सैंपा जाता है १—२ ग़ऊदा यादी
फेन लाके आप को फांसी देता है ३—१० मसीह
पीलातुस के आगे युप नहता है और वुह उसे छुड़ाने
याहता है ११—१८ पीलातुस की पतनी अपने
पती को यीताती है पीलातुस अपने हाथ घोता है
और बनबास को छुड़ा के ग़सु को घात कनने को
सैंपता है १९—२५ ग़सु ठठों में उड़ाया जाता है
और दो योनों के मघ कुनस पन माना जाता है
२६—४४ देस अंघीयाना हो जाता है ग़सु मनता है
कइ लछन पनगट होते हैं ४५—५६ ग़ुसपर उसे
गाड़ता है ५७—६१ उसकी समाघ पन छाप होता
है और नष्पवाल बैठाये जाते हैं ६२—६६।

१ जब बीहान हुआ सब पनघान याजकों और लोगों के

पनायीनें ने य़सु को मान डालने के व्रीनोच में पनामनस कीय़ा।
२ श्रोन जव्र उनहों ने उसे व्रांचा ता ले यले श्रोन पनतीय़ुस पीला-
३ तुस श्रचक्ष को सैांप दीय़ा। तव्र जीसने उसे पकड़वाय़ा था
श्रनथात य़ऊदा ने जव्र देप्पा की उस पन दंड की श्रगय़ा ऊइ
श्राप पक्षता के उन तीस टुकड़े यांदी को पनघान य़ाजकों श्रोन
४ पनायीनों के पास फेन लाके कहने लगा। की मैं ने इस में
पाप कीय़ा की नीसपापी के लोऊ व्रहाने के लीय़े उसे पकड़वाय़ा
५ तव्र वे व्रोले की हमें कय़ा? तुही जान। श्रोन वुह यांदी
के टुकड़ों को मंदीन में फेंक के यल नीकला श्रोन जाके श्रपने
६ को फांसी दी। श्रोन पनघान य़ाजकों ने यांदी के उन टुकडों
को लेकन कहा की उनहें भंडान में नप्पना जोग नहीं कय़ोंकी
७ य़ह लोऊ का मोल है। तव्र उनहों ने पनामनस कीय़ा श्रोन पन
देसीय़ों के गाड़ने को उनहें देके कुमहान का प्पेत मोललीय़ा।
८।९ इस लीय़े वुह प्पेत श्राज लों लोऊ का प्पेत कहावता है। तव्र
वुह जो इनमीय़ा भवीसद्व्रकता से कहा गय़ा था पुना ऊश्रा की उनहों
ने तीस टुकड़े यांदी उसका मोल जो ठहनाय़ा गय़ा हां जीसका
१० मोल इसनाइल के व्रंस में से कीतनों ने ठहनाय़ा। श्रोन उनहें
कुमहान के प्पेत के लीय़े दीय़ा जैसा पनभु ने मुझे श्रगय़ा की।

११ श्रोन श्रचक्ष के श्रागे य़सु प्पड़ा ऊश्रा श्रोन श्रचक्ष ने उसे य़ह
कहके पुछा की तु य़ऊदीय़ों का नाजा है? य़सु ने उसे कहा तुही
१२ तो कहता है। श्रोन जव्र पनघान य़ाजक श्रोन पनायीन उस
१३ पन दोप्प देनहे थे उस ने कुछ उतन न दीय़ा। तव्र पीलातुस
ने उसे कहा की तु नहीं सुनता की वे कय़ा कय़ा तुझ पन साप्पी
१४ देते हैं?। पनंतु उसने प्रेक व्रयन का भी उसे उतन न दीय़ा
य़हां लों की श्रचक्ष ने व्रड़ा श्रासयनज माना।

१५ श्रोन उस पनव्र में श्रचक्ष की नीत थी की लोगों के लीय़े जीसे
१६ वे याहते थे प्रेक व्रंधुश्रा को छोड़ देता था। श्रोन उस समय़
१७ उनका प्रेक पनसीघ व्रंधुश्रा था जो व्रनव्रास कहावता था। इस

लीये जव वे वटुने थे पीलातुस ने उनहें कहा की तुम कीसे याहते हो की मैं तुमहाने लीये छोड़ देउं? वनवास को अथवा
१८ यसु को जो मसीह कहावता है। कयोंकी वुह जानता था की उनहों ने उसे डाह से सैांपा था।
१९ जव वुह नयाय के आसन पन वैठा था उस की पतनी ने उसे यह कहला भेजा की तु उस सजन से कुछ काम मत नष्प कयोंकी उस के कानन मैं ने आज सपन में वज्ञत सनताप पाया
२० है। पनंतु पनचान याजकों औान पनायीनों ने मंडली को
२१ उसकाया की वनवास को मांगें औान यसु को नास कनें। अघछ ने उतन देके उनहें कहा की तुम दोनों में से कीसे याहते हो की मैं तुमहाने लीये छोड़ दूं? वे वोले की वनवास को।
२२ पीलातुस ने उनहें कहा की पने यसु को जो मसीह कहावता है मैं कया कनुं सव के सव उसे वोले की वुह कुनुस पन माना
२३ जाय। तव अघछ ने कहा कयों उसने कया अपनाध कीया है? पनंतु वे औान भी यीलाके वोले की वुह कुनुस पन माना
२४ जाय। जव पीलातुस ने देष्पा की उसका कुछ न यला पनंतु अघीक ऊलन होता है उसने पानी ले के मंडली के आगे हाथों को घोया औान कहा की मैं इस सजन के लोऊ से नीनदोष्प ऊं
२५ तुमहीं जानो। तव साने लोगों ने उतन देके कहा की उसका
२६ लोऊ हम पन औान हमाने वंस पन होवे। तव उसने उनके लीये वनवास को छोड़ दीया औान यसु को कोड़े मान के कुनुस
२७ पन टांगे जाने के लीये सैांप दीया। तव अघछ के जोघाओां ने यसु को वैठक में ले जाके सानी जथा को उसके पास एकठे
२८ कीया। औान उनहों ने उसे उघान के लाल वसतन पहीनाया।
२९ औान जव उनहों ने कांटों का मुकुट गांथा तो उसके सीन पन नष्पा औान उसके दहीने हाथ में एक ननकट नष्पा औान उसके आगे घुटना टेका औान यह कह के ठठा कीया की हे यऊदीयों
३० के नाजा पननाम। तव उनहों ने उस पन थका औान ननकट

३१ ले के उसके सीन पन माना। औान उसे ठठा में उड़ा के उनहों ने उस पन से व्रसतन उताना औान उसका अपना व्रसतन उसे
३२ पहीनाय़ा औान उसे कुनुस पन मानने को ले यले। औान व्राहन आय़े उनहों ने कुनोनी के प्रेक मनुष्य को पाय़ा जीस का नान समउन था उनहों ने उस से व्रनव्रस उस का कुनुस
३३ उठवाय़ा। औान जव्र वे प्रेक सथान में पहुंये जो जलजता कहावता है अनथात प्योपड़ी का सथान उनहों ने सीनका में
३४ पीत मीला के उसे पीने को दीय़ा। औान जव्र उसने यीप्पा तो
३५ पीने को न याहा। औान उनहों ने उसे कुनुस पन टांगा औान उसके व्रसतनों को भाग कन के यीठो डाला जीसतें भवीसद्-व्रकता का कहा हुआ व्रयन पुना होवे की उनहों ने आपुस में मेने व्रसतनों को व्रांट लीय़ा औान मेने व्रागे पन यीठीय़ां डालीं।
३६।३७ औान वहां व्रैठ के उसकी नष्पवाली की। औान उस का दोष्प पतन लीष्प के उसके सीन के उपन नष्पा की य़ह य़हूदी-
३८ य़ों का नाजा य़सु है। तव्र वहां उसके संग दो योन भी कुनुस
३९ पन टांगे गय़े प्रेक दहीने हाथ औान दुसना व्राप्रें। औान वे जो
४० उधन से जाते थे सीन धुन के उस से ठठा कनके कहते थे। की तु जो मंदीन को ढाता औान तीन दीन में उठाता है आप को व्रया य़दी तु इसन का पुतन है तो कुनुस पन से उतन आ।
४१ इसी नीत से पनधान य़ाजकों ने भी अधापकों औान पनायीनों
४२ के संग य़ह कहके ठठा में उड़ाय़ा। की इसने औानों को व्रयाय़ा अपने को व्रया नहीं सकता य़दी वुह इसनाइल का नाजा है तो कुनुस पन से उतन आवे औान हम उस पन व्रीसवास लावेंगे।
४३ उसने इसन पन भनोसा नष्पा था य़दी वुह उस से पनसंन है तो अव्र वुह उसे छुड़ावे कय़ोंकी उसने कहा था की मैं इसन का
४४ पुतन हुं। वे योन भी जो उसके संग कुनुस पन टांगे गय़े थे
४५ वही व्रात उसके मुंही पन कहते थे। तव्र दो पहन से तीसने
४६ पहन लों साने देस में अंधकान छा गय़ा। औान तीसने पहन के

घंटकल में य़सु ने व़ड़े सव़्द से यीला के कहा की प्रेली प्रेली लामा सव़कतानी अनयात हे मेने इसन हे मेने इसन तु ने मुझे
४७ कय़ों तय़ागा है ?। उन में से जो वहां प्पड़े थे कीतनों ने
४८ सुनके कहा की य़ह इलीय़ास को वुलाता है। औान तुनंत उन में से प्रेक ने दौड़ के व़ादल ले के सोनके से भना औान नल
४९ पन नप्पके उसे पीने को दीय़ा। औानों ने कहा की नहने देओ हम देप्पें की इलीय़ास उसे छुड़ाने को आवेगा की नहीं।
५० तव़ य़सु ने दुसने व़ान व़ड़े सव़्द से यीला के पनान सौंप दीय़ा।
५१ औान देप्पो मंदीन का घुंघट उपन से नीये लों फट गय़ा औान
५२ भुईंडोल ऊआ औान पहाड़ तड़क गय़े। औान समाघ प्पुल गईं
५३ औान व़ऊत संतन के देह जो सोय़े थे उठे। औान उसके जी उठने के पीछे समाघीन से व़ाहन आय़े औान पवीतन नगन में
५४ गय़े औान व़ऊतों को दीप्पाइ दीय़े। औान जव़ सतपती औान उनहों ने, जो उसके संग य़सु की नप्पवाली कनते थे भुइंडोल को औान जो कुछ की व़ीता था देप्पा, वे य़ह कहके व़ऊत डन
५५ गय़े की य़ह सयमुय इसन का पुतन था। औान व़ऊत सी इस-तीनी वहां थीं जो जलील से य़सु के पीछे उसकी सेवा कनती
५६ आइं दुन से देप्प नही थीं। जीन में मनीय़म मजदली औान य़ाकुव़ औान य़ोसी की माता मनीय़म औान ज़व़दी के व़ेटे की
५७ माता। जव़ सांझ ऊइ अनमतीय़ा का प्रेक घनमान आय़ा
५८ जीसका नाम य़ुसफ था वुह भी आप य़सु का सीप्प था। औान पीलातुस पास जा के य़सु की लोथ मांगी तव़ पीलातुस ने अगय़ा
५९ की, की उसे दी जाय़। औान जव़ य़ुसफ ने लोथ को लीय़ा उसने
६० घोय़े ऊप्रे सुती कपड़े में लपेटा। औान उसे अपनीही नइ समाघ में नप्पा जो उस ने पथन में प्पोदी थी औान प्रेक व़ड़ा पथन
६१ समाघ के मुंह पन ढुलका के यला गय़ा। औान वहां मनीय़म मजदली औान दुसनी मनीय़म समाघ के सामने व़ैठी थीं।
६२ अव़ दुसने दीन, जो व़नावनी के पीछे था पनघान य़ाजक औान

६३ फरीसी एकठे होके पीलातुस पास आये। और कहा की हे महासय हमें येत है की वुह छली अपने जी तेजी कहता था की मैं
६४ तीन दीन पीछे फरीन उठुंगा। इस लीये अगया कीजीये की तीन दीन लों समाध की नष्पवाली की जाय न हो की उसके सीष्प रात को आके उसे युरा ले जावें और लोगों से कहें की वुह मीरतकों में से जी उठा सो पीछली युक पहीली से अधीक होगी।
६५ पीलातुस ने उनहें कहा की नष्पवाल तुमहारे पास हैं जाओ और
६६ अपने जानते भर नष्पवाली करो। सो वे गये और पथर पर छाप करके समाध की यौकसी की और नष्पवाल वैठाये।

२८ अठाइसवां पनब्र।

यसु जी उठता है और सीष्पों पर परगट होता है १—१० याजक जोधाओं को घुस देता है जीसतें कहें की उसकी लोथ युराइ गइ ११—१५ यसु जलील में परगट होता है और सीष्पों को सारे जगत में मंगल समायार परयारने को भेजता है १६—२०।

१ वीसराम के अंत अठवारे के पहीले दीन जब पह फरटने लगा मरीयम मजदली और दुसरी मरीयम समाध देष्पने को
२ आइ। और कया देष्पती हैं की वड़ा भुइंडोल हुआ कयोंकी इसर का दुत सरग से उतर आया और उस पथर को समाध के
३ मुंह पर से ढुलका के उस पर वैठा। उस का रुप वीजली के
४ समान और उसका वसतर पाला की नाइं सेत था। और उस के डर के मारे नष्पवाल कांप गये और मीरतक समान हुए।
५ और उस दुत ने उतर देके इसतीरीयों से कहा की मत डरो कयोंकी मैं जानता हुं की तुम यसु को, जो कुरुस पर मारा
६ गया, ढुंढतीयां हो। वुह यहां नहीं है परंतु अपने कहने के समान जी उठा है आओ जहां परभु पड़ा था उस सथान को
७ देष्पो। और तुरंत जाओ और उसके सीष्पों से कहो की वुह

मीनतु से जीउठा है ग्रौन लो वुह तुम से ग्रागे जलील का जाता
८ है तुम उसे वहां देष्पोगे लो मैं ने तुमहें जता दीग़ा है। ग्रौन
वे समाध से तुनंत डन ग्रौन व्रड़े ग्रानंद से उसके सीष्पों को
कहने दौड़ीं।
९ ग्रौन जव्र वे उसके सीष्पों से कहने को यली जाती थीं देष्पो की
ग़सु उनहें मीला ग्रौन व्रोला की कलयान ग्रौन उनहों ने ग्राके
१० उसका यनन पकड़ के दंवत की। तव्र ग़सु ने उनहें कहा की
मत डनो, जाग्रो मेने भ्राइयों से कहो की वे जलील को जायें
११ ग्रौन मुझे वहां देष्पेंगे। ग्रौन जव्र वे यली जाती थीं देष्पो की
कइ उन नष्पवालों में से नगन में ग्राये ग्रौन सव्र जो व्रीत गया था
१२ सो पनधान ग़ाजकों को सुनाया। ग्रौन जव्र उनहों ने पनायीनों
के संग ऐकठे होके पनामनस कीया तो उन जोधाग्रों को ग़ह
१३ कहके व्रडत नोकड़ दीये। की कहीयो की नात को जव्र हम
१४ सो गये थे उसके सीष्प ग्राके उसे युना ले गये। ग्रौन ग़दी ग़ह
ग्रयक्ष के कान लों पडंये तो हम उसे समझा के तुमहें व्रया लेंगे।
१५ सो उनहों ने नोकड लीये ग्रौन जैसा सीष्पाये गये थे वैसा कीया
ग्रौन ग़ह व्रात ग्राज लों ग़ड़दीयों में यनया कीजाती है।
१६ तव्र वे गयानह सीष्प जलील में उस पहाड़ को गये जहां ग़सु
१७ ने उनसे ठहनाया था। ग्रौन जव्र उनहों ने उसे देष्पा तो उसे
१८ दंडवत की पनंतु कीधी कीसी को संदेह था। ग्रौन ग़सु उन पास
ग्राया ग्रौन ग़ह कहके व्रोला की सनग ग्रौन पीनथीवी पन
साना पनकनम मुझे दीया गया है।
१९ इस लीये जाग्रो ग्रौन सव्र देसीयों को पीता पुतन ग्रौन धनमा-
२० तमा के नाम से सनान देके सीष्प कनो। ग्रौन सव्र जो मैं ने
तुमहें ग्रगया की है पालन कनने को उनहें सीष्पाग्रो ग्रौन देष्पो
की पनती दीन जगत की समापत लों मैं तुमहाने संग ड़ं।
ग्रामीन।

मंगल समायान मनकस नयीत।

---

१ पहीला पनव्र।

यहीया सनान कानक का समायान औान उपदेस १—८ मसोह्न का सनान पाना औान पनीक्षा में पड़ना ९—१३ यहीया का व्रंधन में पड़ना यसु का उपदेस औान कड़ी सीष्यों को वुलाना १४—२० पीसायों को दुन कनना २१—२८ अनेक नोगीयों को यंगा कनना २९—३४ औान को पनानथना को जाता है उपदेस कनता है औान कोढ़ी को यंगा कनता है ३५—४५।

१ ईसन के पुत्तन यसु मसीह के मंगल समायान का आनंभ।
२ जैसा की नवीसदव्रकतों ने लीष्या की देष्यो मैं अपने दुत को तेने आगे आगे भेजता हुं जो तेने आगे तेने मानग को सुधा-
३ नेगा। ऐक का सव्रद व्रन में पुकानता है की ईसन के मानग
४ को सुघानो औान उसके पंथों को सोधा कनो। यहीया व्रन में सनान देता था औान पापमोयन के लोये पसयाताप के सनान
५ का पनयान कनता था। औान उसके पास यऊदीयः के साने देस औान यनोसलीम व्रासी नाकल आये औान सव्र अपने अपने पापों को मान मान के अनदन नदो में उस से सनान कीये
६ जाते थे। औान यहीया का व्रसतन उंट के नोम का था औान उसकी कनीहांव पन यमड़े का पटुका व्रंघा था औान वह टीडी

७ श्रौन व्रनमधु प्याता था। श्रौन पनयान के कहता था की मेने पीछे एक श्राता है जो मुझ से श्रधीक सामनथी है मैं इस जोग
८ नहीं की उसकी जुतो का वंद झुक के प्योलुं। ठीक मैं ने तुमहें जल से सनान दीया है पनंतु वुह तुमहें धननातमा से सनान
९ देगा। उनहीं दीनों में ऐसा ज्ञा की ग्रसु ने जलील के नासनः
१० से श्राके श्रनदन में यहीया से सनान पाया। श्रौन तुनंत जल से व्राहन श्राते ज्ञए उसने सनग को प्युला श्रौन श्रातमा
११ को कपोत के समान श्रपने उपन उतनते देप्या। श्रौन श्राकास व्रानी ज्ञइ की तु मेना पीनय पुतन है जीस से मैं श्रती पनसंन
१२ ज्ञं। श्रौन तुनंत श्रातमा ने उसे व्रन में नीकाल दीया।
१३ श्रौन वुह वहां व्रन में यालीस दीन लों सैतान से पनीछा कीया गया श्रौन वुह व्रन पसुन में था श्रौन दुत उसकी सेवा कनते थे।
१४ श्रव यहीया के व्रंधन में डाले जाने से पीछे ग्रसु जलील में श्राके इसन के नाज के मंगल समायान का उपदेस कनने लगा।
१५ श्रौन कहने लगा की समय पुना ज्ञश्रा श्रौन इसन का नाज श्रा पज्ञंया है पसयाताप कनो श्रौन मंगल समायान पन व्रीसवास
१६ लाश्रो। श्रौन जव वुह जलील के समुदन के तीन फीनता था उसने समउन श्रौन उसके भाइ श्रंदनयास को समुदन में
१७ जाल डालते देप्या कयोंकी वे मछुए थे। श्रौन ग्रसु ने उनहें कहा की मेने पीछे श्राश्रो श्रौन मैं तुमहें मनुप्यों का धीवन
१८ व्रनाउंगा। श्रौन वे तुनंत श्रपने जाल को छोड़ के उसके पीछे
१९ यले गये। श्रौन जव वुह वहां से थोड़ा श्रागे व्रढ़ा उसने जव्दी के व्रेटे याकुव को श्रौन उसके भाइ युहना को देप्या वे
२० भी नाव पन श्रपने जाल को सुधानते थे। श्रौन उसने तुनंत उनहें वुलाया श्रौन वे श्रपने पीता जव्दी को सेवकों के संग
२१ नाव पन छोड़ के उसके पीछे यले गये। तव वे कफननाज्ञम में गये श्रौन तुनंत व्रीसनाम में उसने मंडली में जाके उपदेस
२२ कीया। श्रौन वे उसके उपदेस से श्रासयनजीत ज्ञए कयोंकी

उसने उनहें प्रेक सामनथी के समान उपदेस कीया श्रोन अघा-
२३ पकों के समान नहीं। श्रोन उनकी मंडली में प्रेक मनुष्य था
२४ जीस पन अपवीतन श्रातमा था उसने यीलाके कहा। की नहने
दीजीये हमसे श्राप से कया काम हे यसु नासनी? कया श्राप
हमें नास कनने को श्राये हैं? मैं श्राप को जानता ऊं की श्राप
२५ कैान हैं इसन का वहो घानमीक। तव्र यसु ने उसे दपट
२६ के कहा की युप नह श्रोन उस से व्राहन श्रा। तव्र अपवीतन
श्रातमा ने उसे पराडा श्रोन व्रडे सव्रद से यीला के उस से व्राहन
२७ नीकल गया। श्रोन सव्र के सव्र यहां लों व्रीसमीत ऊप्रे की वे
आपुस में यह कहके पुछ पाछ कनने लगे की यह कया है?
यह कैसा नया उपदेस है? कयोंकी वुह अपवीतन श्रातमाश्रों
को भी पनाकनम से अगया कनता है श्रोन वे उसे मानते हैं।
२८ श्रोन तुनंत उसकी कीनत जलील के साने देस में परैल गई।
२९ श्रोन ततकाल वे मंडली से व्राहन नीकल के याकुव्र श्रोन युहना
३० के संग समउन श्रोन श्रंदनयास के घन में गये। पनंतु समउन
को सास जन से नोगी पडी थी तव्र उनहोंने उसके व्रीप्पय में
३१ तुनंत उसे कहा तव्र उसने श्राके उसका हाथ। पकडा श्रोन उसे
उठाया श्रोन जन ने तुनंत उसे छोड दीया श्रोन उसने उनकी
सेवा की।

३२ श्रोन सांझ को जव्र सुनज असत ऊश्रा वे समसत नोगीयों
३३ श्रोन पीसाय गनसतों को उसके पास लाये। श्रोन समसत
३४ नगन दुवान पन प्रेकठे ऊप्रे। श्रोन उसने श्रनेकों को, जो
नाना पनकान के दुप्प से नोगी थे, यंगा कीया श्रोन व्रऊत से
पीसायों को दुन कीया श्रोन पीसायों को व्रोलने न दीया कयों-
की वे उसे जानते थे।

३५ श्रोन तडके व्रऊत नात नहते वुह उठके व्राहन नीकला श्रोन
३६ प्रेक श्रनन सथान में जाके उसने पनानथना की। तव्र समउन
३७ श्रोन वे जो उसके संग थे उसके पीछे पीछे यले गये। श्रोन

जब उनहों ने उसे पाया वे उसे बोले की सब आप को ढुंढते
३८ हैं। और उसने उनहें कहा की आओ हम आस पास के नगनों
में भी पनयानने के लीये यलें कयोंकी मैं इसी कानन बाहन
३९ नीकला हुं। और वुह साने जलील में उनकी मंडलीओं में
४० उपदेस कनता और पीसयों को दुन कनता था। तब ऐक
कोढी ने पास आके उसको बीनती की और उसके आगे घुठने
टेक के बोला की यदी आप याहें तो मुझे पवीतन कन सकते
४१ हैं। यसु ने दयाल होके हाथ बढाया और उसे छुके कहा
४२ की मैं याहता हुं की तु पवीतन होजा। और बयन कहतेही
तुनंत कोढ उस से जाता नहा और वुह पवीतन हो गया।
४३।४४ और उसने उसे अगया कनके तुनंत बीदा कीया। और
उसे कहा की देख्ख कीसी मनुख्य से कुछ मत कह पनंतु यला जा
और अपने तईं याजक को दीख्खा और अपने पवीतन होने के
लीये, जो कुछ मुसा ने उनकी साख्खी के लीये अगया की है, दान
४५ कन। पनंतु वुह बाहन जाके उस कनम को फैलावने और
पनगट कनने लगा यहां लों की यसु फेन नगन में पनगट न
जा सका पनंतु बाहन बाहन अनन सथानों में नहा और यानों
ओन से लोग उस पास आये।

२ दुसना पनब।

यसु ऐक अनधांगी को यंगा कनता है और पाप
मोयन कनने का पनाकनम दीख्खाता है १—१२ मती
को बुलाता है और अपने दोख्ख दायकों को उतन
देता है १३—१७ और अपने सीख्खों को नीनदोख्ख
ठहनाता है १८—२८।

१ और कई दीन बीते वुह कपननाहुम में फेन गया और
२ यनया हुइ की वुह घन में है। और तुनंत बहुतेने बटुन गये

य़हां लें की दुवान के श्रास पास भी समाइ न थी श्रौन उसने
३ उन पन व्रयन पनयान कीय़ा। तव्र वे यान जन से उठवाय़े
४ ऊप्रे प्रेक श्रनघांगी के उस पास लाय़े। श्रौन जव्र भीड़ के
माने वे उस पास न श्रा सके ते उनहें ने उस छत के जीस में
वुह था उचेना श्रौन उसे तोड़ के, जीस प्याट पन वुह श्रनघांगी
५ पड़ा था, उसे लटका दीय़ा। तव्र य़सु ने उनका व्रीसवास देप्य के
उस श्रनघांगी के कहा की पुतन तेने पाप छमा कीय़े गय़े।
६ पनंतु वहां कीतने श्रघापक व्रैठे श्रपने श्रपने मन में ध्रीयानते
७ थे। की य़ह कय़ों इसनापनीनदक व्रयन कहता है? इसन
८ के छोड़ कैान पाप के छमा कन सकता है?। श्रौन तुनत
य़सु ने श्रपने श्रातमा में जाना की वे श्रपने श्रपने मन में प्रैसा
व्रीयान कनते हैं तव्र उसने उनहें कहा की श्रपने श्रपने मन में
९ कय़ों प्रैसा व्रीयान कनते हे?। उस श्रनघांगी के कय़ा कहना
सहज है की पाप छमा कीय़े गय़े श्रथवा कहना की उठ श्रौन
१० श्रपनी प्याट उठा ले श्रौन यल?। पनंतु जीसतें तुम जानो की
मनुप्य का पुतन पीनथीवी पन पाप छमा कनने के सामनथ
११ नप्यता है उसने उस श्रनघांगी के कहा। की मैं तुहे कहता हूं
की उठ श्रौन श्रपनी प्याट उठा ले श्रौन श्रपने घन के यला जा।
१२ श्रौन वुह तुनंत उठा श्रौन प्याट उठाके उन सभों के श्रागे यल
नीकला य़हां लें की सव्र व्रीसमीत ऊप्रे श्रौन इसन की सतुत
१३ कनके व्रोले की हम ने इस नीत के कभी न देप्या था। श्रौन
वुह नीकल के फेन समुदन के तीन गय़ा श्रौन सानी मंडली
१४ उस पास श्राइ श्रौन उसने उनहें सीप्याय़ा। श्रौन जाते जाते
उसने हलफ़ा के व्रेटे लुइ के कन लेने के सथान में व्रैठे देप्या
श्रौन उसे कहा की मेने पीछे श्रा तव्र वुह उठा श्रौन उसके
१५ पीछे हे लीय़ा। श्रौन प्रैसा ऊश्रा की जव्र य़सु उसके घन में
व्रैठ के भोजन कन नहा था व्रऊत से कनगनाहक श्रौन पापी
भी य़सु के श्रौन उसके सीप्यों के संग प्रेकठे व्रैठे कय़ोंकी वहां

१६ ब्रह्मन थे औान वे उसके पीछे यले आये थे। औान जब्र अघ्यापकों औान फनीसीयों ने उसे कनगनाहकों औान पापीयों के संग भोजन कनते देप्पा वे उसके सीप्पों से ब्रोले की यह कैसा है

१७ की वुह कनगहकों औान पापीयों के संग प्पाता पीता है। तब्र यसु ने सुन के उनहें कहा की जो जो भले यंगे हैं सो सो को ब्रैद का आवसक नहीं पनंतु नोगीयों को, मैं घनमीयों को वुलाने नहीं आया पनंतु पापीयों को जीसतें पसयाताप कनें।

१८ औान यहीया के औान फनीसीयों के सीप्प ब्रनत कीया कनते थे सो उनहों ने आके उसे कहा की यहीया के औान फनीसीयों के सीप्प कयों ब्रनत कनते हैं पनंतु आप के सीप्प ब्रनत नहीं

१९ कनते?। तब्र यसु ने उनहें कहा की जब्र लों ब्रनाती के संग दुलहा है कया वे ब्रनत कनसकते हैं? जब्र लों दुलहा उनके

२० संग है वे ब्रनत नहीं कन सकते। पनंतु वे दीन आवेंगे जब्र की दुलहा उनसे अलग कीया जायगा औान उनहीं दीनों में

२१ वे ब्रनत कनेंगे। कोइ मनुप्प नये कपड़े का टुकड़ा पुनाने ब्रसतन में नहीं जोड़ता नहीं तो वुह नया टुकड़ा जो लगाया

२२ गया पुनाने से प्पींयता है औान वुह फटा ब्रढ़ जाता है। औान कोइ मनुप्प नये दाप्प नस को पुनाने कुपे में नहीं नप्पता नहीं तो नये दाप्प नस से कुपे फटजाते हैं औान दाप्प नस ब्रह जाता है औान कुपे नसट होते हैं पनंतु नये दाप्प नस को अवेस

२३ है की नये कुपे में नप्पें। औान ऐसा ऊआ की ब्रीसनाम में अंन के प्पेत में होके वुह यला जाता था औान उसके सीप्प जाते

२४ जाते अंन की ब्रालें तोड़ने लगे। तब्र फनीसीयों ने उसे कहा की देप्पीयो जो ब्रीसनाम में कनना अनुयीत है वे कया कनते

२५ हैं। तब्र उसने उनहें कहा कया तुमने नहीं पढ़ा जो दाउद ने औान उसके संगीयों ने जब्र उनहें भुप्प लगी औान सकेती में

२६ थे कीया?। उसने कयोंकन अब्रीयासान पनघान याजक के समय में इसन के मंदीन में जाके भेंट की नोटी प्पाइ जो

याजकों को छोड़ कीसी को प्पाना उयीत न था ओान अपने
२७ संगीयों को न्नी दी?। ओान उसने उनहें कहा की व्रीसनाम
मनुप्प के लीये ठहनाया गया पनंतु मनुप्प व्रीसनाम के लीये
२८ नहीं। इस लीये मनुप्प का पुतन व्रीसनाम का न्नी पनन्नु है।

३ तीसना पनव्र।

यसु हुनाये हाथ को यंगा कनता है १—५ फनी-
सीयों की जुकत से अलग होता है ओान व्रकुतों को
यंगा कनता है ६—१२ व्रानह पनेनीतों को युन
लेता है १३—१९ उसके मीतन की उलटी समझ
२०—२१ अघापकों के अपनीनदक व्रयन को हुठा-
लता है २२—३० इसन के जन उसके कुटुंव्र हैं
३१—३५।

१ तव्र वुह मंडली में फेन गया ओान वहां ऐक मनुप्प था जीस
२ का हाथ हुना गया था। ओान वे उसे अगोन नहे थे की देप्पें
की वुह उसे व्रीसनाम में यंगा कनेगा अथवा नहीं जीसतें उसे
३ दोप्प देवें। ओान उसने उस मनुप्प को कहा, जीसका हाथ
४ हुनाया हुआ था, की व्रीय में प्पड़ा हो। ओान उसने उनहें
कहा की व्रीसनाम में न्नला कनना उयीत है की व्रुना? पनान
५ को व्रयाना अथवा घात कनना? पनंतु वे युपके नहे। ओान
जव्र उसने यानों ओान उन पन नीसीया के देप्पा तो उनके मन
की कठोनता से प्पेदीत होके उस मनुप्प को कहा की अपना
हाथ व्रढ़ा उसने व्रढ़ाया ओान उसका हाथ दुसने के समान यंगा
६ हो गया। तव्र फनीसीयों ने तुनंत जाके हीनुदीसीयों के
संग उसके व्रीनोघ में पनामनस कीया की उसे कीस नीत से नास
७ कनें। पनंतु यसु अपने सीप्प समेत अलग होके समुदन के
तीन गया ओान ऐक व्रड़ी मंडली जलील से ओान यहुदीयः से।

८ ग्रौन य़नोसलीम से ग्रौन ग्रदुमीय़ः से ग्रौन ग्रनदन के पान से ग्रौन सुन ग्रौन सैदा के ग्रास पास से उसके व़ड़े व़ड़े कानजों
९ को, जो उसने कीय़े थे सुनके उसके पास ग्राइ। तव़ उसने ग्रपने सीष्पों से कहा की मंडली के कानन से मेने लीय़े ग्रेक छोटी
१० नाव घनी नहे न हो की वे मुहू पन मीड़ कनें। कय़ोंकी उसने व़ऋतों को यंगा कीय़ा था य़हां लों की जोतने नोगी थे उसे छुने
११ के लीय़े उस पन गीने पड़ते थे। ग्रौन जव़ ग्रपवीतन ग्रातमा उसे देष्पते थे उसके ग्रागे गीन के पुकान के कहते थे की तु इसन
१२ का पुतन है। तव़ उसने उनहें दीनढ़ता से ग्रगय़ा की, की मुहे पनगट न कनो।

१३ ग्रौन ग्राप ग्रेक पहाड़ पन यढ़ गय़ा ग्रौन जोनहें उसने याहा
१४ उनहें व़ुलाय़ा ग्रौन वे उस पास ग्राय़े। तव़ उसने व़ानह को ठीक कीय़ा की उसके संग नहें ग्रौन जीसतें वुह उनहें पनयान
१५ कनने को मेजे। ग्रौन नोगों को दुन कनने का ग्रौन पीसायों
१६ को व़ाहन नीकालने का सामनथ नष्पें। ग्रौन उसने समउन
१७ का नाम पतनस नष्पा। ग्रौन जव़दी के व़ेटे य़ाकुव़ का ग्रौन य़ाकुव़ के माइ य़ुहना का नाम उनसे वुननजीस नष्पा ग्रनथात
१८ गनजन के व़ेटे। ग्रौन ग्रंदनय़ास ग्रौन फरैलव़स ग्रौन व़ानतुलमा ग्रौन मती ग्रौन तुमा ग्रौन हलफा का व़ेटा य़ाकुव़ ग्रौन
१९ सदी ग्रौन समउन कीनानी। ग्रौन य़ऋदा ग्रसकनय़ुता जीसने
२० उसे पकड़वाय़ा मी ग्रौन वे ग्रेक घन में ग्राय़े। ग्रौन मंडली
२१ फरेन ग्रेकठी ऋइ ग्रेसा की वे नोटी मी न ष्पा सके। ग्रौन जव़ उसके मीतनों ने सुना वे उसे पकड़ लेने को व़ाहन गय़े कय़ोंकी
२२ उनहों ने वहा की वुह ग्राप में नहीं है। तव़ ग्रघापक, जो य़नोसलीम से ग्राये थे, व़ोले की व़ालजव़ुल उस में है ग्रौन वुह
२३ पीसायों के नाजा की सहाय़ से पीसायों को दुन कनता है। ग्रौन उसने उनहें व़ुला के दोनीसटांतों में कहा की सैतान सैतान को
२४ कय़ोंकन नीकाल सकता है। ग्रौन य़दी कोइ नाज ग्रपने

ब्रीनोच में दो भाग होजाय तो वह राज ठहर नहीं सकता।
२५ और यदी कोइ घर अपने ब्रीनोच में दो भाग होजाय वुह
२६ घर सथीर नहीं रह सकता। और यदी सैतान अपनाही
ब्रीनोध कर उठे और अलग होय वह ठहर नहीं सकता परंतु
२७ उसका अंत होता है। कोइ मनुष्य कीसी ब्रलवंत के घर में
पैठ के उसकी संपत को लुट नहीं सकता जब लों वुह पहीले उस
२८ ब्रलवंत को ब्रांधे तब उसके घर को लुटेगा। मैं तुमहें सत
कहता हूं की मनुष्य के पुतरों के सारे पाप और पाष्पंडता जो
२९ वे पाष्पंड ब्रकते हैं छमा कीये जायेंगे। परंतु जो धरमातमा
के ब्रीनोध में पाष्पंड ब्रकता है सो कभी छमा न कीया जायगा
३० परंतु सदा के दंड के जोग होगा। इस कारन की उनहों ने
३१ कहा की उस में अपवीतर आतमा है। तब उसके भाइ और
उसकी माता आइ और ब्राहर खड़े होके उसे बुलवा भेजा।
३२ तब उसके आस पास की ब्रैठी हुइ मंडली ने उसे कहा की देख्ख
आप की माता और आप के भाइ ब्राहर आप को ढुंढते हैं।
३३ तब उसने उनहें उतर देके कहा की कौन है मेरी माता अथवा
३४ मेर भाइ?। और उसने अपने आस पास के ब्रैठे हुओं को
३५ देख्खके कहा की लो मेरी माता और मेरे भाइ। कयोंकी जो
कोइ इसर की इछा पर चलेगा सोइ मेरा भाइ और मेरी
ब्रहीन और माता है।

४ चौथा पत्र।

ब्रोवैये का दीसटांत १—९ दीसटांतों में कहने
का कारन १०—१३ उस दीसटांत का अरथ
१४—२० गयान, परैलाने के लीये दीया जाता है
२१—२२ धयान से सुनने का उपदेस २३—२५ ब्रीज
के ब्रोने, उगने, और पकने का दीसटांत २६—२९

नाइ का दीनीसटांत ३०—३२ मसीह केवल दीनीस-
टांतें में उपदेस कनता है ग्रोन सीप्पों को ग्रनथ
ब़ताता है ३३—३४ ब़यन से ग्रांघी के नोकता है
३५—४१।

१ ग्रोन वुह समुदन के तीन पन फ़ेन उपदेस कनने लगा ग्रोन
ग्रेक ब़ड़ी मंडली उस पास ग्रेकठी ऊइ य़हां लें की वुह समुदन
में ग्रेक नाव पन जा ब़ैठा ग्रोन सानी मंडली समुदन के तीन भूम
२ पन थी। ग्रोन उसने उनहें ग्रनेक ब़ात दीनीसटातें में सीप्पाय़ा
३ ग्रोन ग्रपने उपदेस में उनहें कहा। की सुनो, देप्पो ग्रेक
४ ब़ोवैय़ा ब़ोने के नोकला। ग्रोन य़ुं ऊग्रा की जब़ वुह ब़ोता
था कुछ मानग की ग्रोन गीने ग्रोन ग्राकास के पंछी ग्राय़े ग्रोन
५ उसे युग गय़े। ग्रोन कुछ पथनैली भुम पन गीने जहां उनहें
ब़ऊत मीटी न मीली ग्रोन तुनंत उगे इस कानन की गहीनी
६ मीटी न पाइ थी। पनंतु जब़ सुनज उदय़ ऊग्रा वे भुलस गय़े
७ ग्रोन जड़ न नप्पने के कानन हुना गय़े। ग्रोन कुछ कांटों में
गीने ग्रोन कांटों ने ब़ढ़के उनहें घोंट लीय़ा ग्रोन उन में कुछ
८ न फ़ला। ग्रोन कुछ योप्पी भुंइ पन गीने ग्रोन उगके ब़ढ़े
ग्रोन फ़ल लाय़े कुछ तीस गुने कुछ साठ ग्रोन कुछ सो गुने।
९ ग्रोन उसने उनहें कहा की जो कीसी के कान सुनने के होवे
१० सो सुने। ग्रोन जब़ वुह ग्रकेला था तो जो उसके ग्रास पास
थे उनहों ने उन ब़ानह के संग उस दीनीसटांत के उसे पुछा।
११ तब़ उसने उनहें कहा की इसन के नाज के भेद का गय़ान तुमहें
दीय़ा गय़ा है पनंतु उनके लीय़े जो ब़ाहन हैं सानी ब़सतें
१२ दीनीसटांतें में होती हैं। कीसतें देप्पते ऊग्रे देप्पें ग्रोन न
सुहें ग्रोन सुनते ऊग्रे सुनें ग्रोन न समहें न हो की वे कभी
१३ फ़ीनाय़े जाय़ें ग्रोन पाप छमा कीय़े जाय़ें। ग्रोन उसने उनहें
कहा की तुम य़ह दीनीसटांत नहीं जानते ? फ़ेन सानें दीनसी-

१४।१५ टांत कैसे जानोगे ?। व्रोबेया व्रयन व्रोता है। श्रोन ये
हैं वे जो मानग की श्रोन हैं जहां व्रयन व्रोया जाता है पनंतु
जव्र उनहों ने सुना सैतान तुनंत श्राता है श्रोन व्रयन को, जो
१६ उनके मन में व्रोया गया था लेजाता है। श्रोन वैसेही वे हैं
जो पथनैली भूम में व्रोये गये हैं जो व्रयन को सुनके तुनंत
१७ श्रानंदता से गनहन कनते हैं। श्रोन श्राप में जड़ न नप्प के
तनीक ठहनते हैं श्रोन उसके पीछे, जव्र व्रयन के नोमीत दुप्प
१८ श्रोन ताड़ना होती है वे तुनंत ठोकन प्पाते हैं। श्रोन जो
१९ कांटों में व्रोये गये सो वे हैं जो व्रयन को सुनते हैं। श्रोन
इस जगत की यीनता श्रोन घन की छलता श्रनु श्रोन व्रसतुन
के लोभ भीतन पैठ के व्रयन को घोंट डालते हैं श्रोन वुह
२० नीसफल होता है। श्रोन वे जो योप्पी भुइं में व्रोये गये हैं
ये हैं जो व्रयन को सुन के गनहन कनते हैं श्रोन फल लाते हैं
२१ कीतने तीस गुने कीतने साठ श्रोन कीतने सो गुने। श्रोन उसने
उनहें कहा की दीपक इस लीये लाते हैं की नांद के श्रथवा
२२ प्पाट के नीये नप्पें श्रोन दीश्रट पन नहीं ?। कयोंकी कुछ
छीपी नहीं है जो पनगट न होगी श्रोन कोइ व्रसतु गुपत न
२३ नप्पी गइ पनंतु जीसतें प्पुल जाय। यदी कीसी के कान सुनने
२४ को होवें तो सुने। फेन उसने उनहें कहा योकस हो की कया
सुनते हो की जीस नपुऐ से नापते हो तुमहाने लीये नापा
२५ जायगा श्रोन तुमहें जो सुनते हो श्रघीक दीया जायगा। कयोंकी
जीस पास है उसे दीया जायगा श्रोन जीस पास नहीं है उस से
२६ वुह भी जो वुह नप्पता है फेन लीया जायगा। श्रोन उसने
कहा की इसन का नाज ऐसा है जैसा की कोइ मनुप्प भुइं में
२७ व्रीहन व्रोवे। श्रोन नात दीन सोवे जागे श्रोन व्रीहन उग के
२८ व्रढ़े वुह नहीं जानता की कीस नीत से। कयोंकी पीनथीवी
श्राप से फल लाती है पहीले श्रंकुन फेन व्राल उसके पीछे व्राल
२९ में भन पुन श्रंन लगते हैं। पनंतु जव्र वुह पका तुनंत वुह

३० हंसुआ लगता है इस कानन की लवनी पहुंयी है। और उस
ने कहा की हम ईसन के नाज को कीस से उपमा देवें? और
३१ उसके लीये कौन सा उपमा लावें?। वुह नाइ के समान है
जो जव् पोनथीवी में व्रोया गया साने व्रीहन से जो पीनथीवी में
३२ हैं छोटा है। पनंतु जव् व्रोया गया है वुह उगता है और
साने तनकानीयों से व्रड़ा होता है और व्रड़ी व्रड़ी डालीयां
फुटती हैं यहां लों की आकास के पंछी उसकी छाया तले व्रास
३३ करें। और वुह उनहें ऐसेही व्रहुत से दीनीसटांटों में उनकी
३४ व्रह के समान कहता था। पनंतु व्रीना दीनीसटांत वुह उनसे
न कहता था और जव् वे ऐकानत में होते थे वुह अपने सीष्यों
३५ से सव् का अनथ कनता था। और उसी दीन जव् सांह हुई
३६ उसने उनहें कहा की आओ उस पान यलें। और वे उस
मंडली को व्रीदा कनके उसे जैसा था वैसा नाव पन उठालीया
३७ और वहां और भी छोटीं नावें उसके संग थीं। तव् व्रयान की
व्रड़ी आंधी यली और लहनें नाव में ऐसी लगीं की वुह भन
३८ गई। और वुह पतवान की ओन ऐक उसीसे पन सोआ था
तव् उनहों ने उसे जगा के कहा की हे गुनु आप यीनता नहीं
३९ कनते की हम नसट होते हैं?। तव् उसने उठके व्रयान को
दपटा और समुद्न को कहा की सथीन हो तव् व्रयान थमगइ
४० और व्रड़ा यैन हुआ। फेन उसने उनहें कहा कयों ऐसे
भयमान हो? कयोंकन है की तुम व्रीसवास नहीं नप्पते?।
४१ तव् वे अतयंत डन के आपुस में कहने लगे की यह कीस नीत
का मनुष्य है की व्रयान और समुद्न भी उसे मानते हैं।

५ पांयवां पनव्।

यष् व्रहुत से देवों को दुन कनता है जो सुअन के
हुंडों को नास कनते हैं १—११ उस देस के लोग

य्रसु को नीकाल देते हैं १४—२० मसीह य़ाइनस की कंनय़ा को चंगा कनने जाता है २१—२४ मानग में उसे छुके ऐक इसतीनो चंगी होती है २५—३४ ऐक कंनय़ा को जीलाता है ३५—४३।

१ ओान वे समुदन के उस पान जदनानीय़ों के देस में पऊंचे।
२ ओान जव्व वुह नाव से उतना तुनंत ऐक मनुष्प जीस पन
३ अपवीतन आतमा था समाधीन से नीकलके उसे मीला। वुह समाधीन में नहता था ओान कोइ मनुष्प उसे सीकनों से भी
४ व्वांध न सकता था। कय़ोंकी वुह कइ व्वेन पैकड़ीय़ां ओान सीकनों से जकड़ा गय़ा था ओान उसने सीकनों को झटके से अलग कीय़ा था ओान पैकड़ीय़ां को तोड़के टुकड़े टुकड़े कन
५ दीय़ा था ओान कोइ उसे व्वस में न कन सका था। ओान वुह नात दीन नीत पहाड़ों में ओान समाधीन में नहता था ओान
६ चीला चीला अपने को पथनों से काटता था। पनंतु जव्व उसने
७ य्रसु को दुन से देष्पा तो दौड़के उसे पननाम कीय़ा। ओान व्वड़े सव्वद से चीला के कहा की हे अतीमहान इसन के पुतन य्रसु मुझे आप से कय़ा काम? मैं आप को पनमेसन की कीनीय़ा
८ देता ऊं की आप मुझे न सताइय़े। (कय़ोंकी उसने उसे कहा था की अने अपवीतन आतमा इस मनुष्प से व्वाहन नीकल)।
९ तव्व उसने उसे पुछा की तेना नाम कय़ा? उसने उतन देके
१० कहा की मेना नाम लाजउन कय़ोंकी हम व्वऊत हैं। ओान उसने उसकी अती व्वीनती की, की हमें इस देस से नीकाल न
११ दीजीय़े। ओान वहीं पहाड़ों के पास सुअनों का ऐक व्वड़ा
१२ झुंड चनता था। तव्व साने पीसाचों ने उसकी व्वीनती कनके कहा की हमें उन सुअनों में भेजीय़े की हम उन में पैठें।
१३ य्रसु ने तुनंत उनहें जाने दीय़ा ओान अपवीतन आतमा व्वाहन जाके सुअनों में पैठ गय़े ओान वुह झुंड कड़ाने पन से व्वेग दौड़

के समुद्र में गीन पड़ा ओन समुद्र में सांस नुक गये (वे दो
१४ सहसन के लगभग थे)। ओन सुअनों के यनवाहे भागे ओन
नगन में ओन उस देस में सदेस दीया तव़ जो को कीया गया
१५ था उसे देप्पने को वे नीकल आये। ओन उनहों ने य़सु के
पास आके उस पीसाय गनसत को, जीसपन लाजउन था व़ैठे
१६ ओन व़सतन पहीने सगयान देप्पा तव़ वे डन गये। ओन जो
की पीसाय गनसत पन व़ीतगया था ओन सुअनों की दसा को
१७ जीनहों ने देप्पा था उनहों ने उनहें कहा। तव़ वे उसकी
१८ व़ीनती कनने लगे की हमाने सीवाने से नीकल जाइये। ओन
जव़ वुह नाव पन आया तव़ जो पीसाय गनसत था उसने उसके
१९ संग नहने के लीये उसकी व़ीनती की। तीस पन भी य़सु
ने उसे आने न दीया पनंतु कहा की अपने मीतनों के पास घन
जा ओन उनहें कह की पनभु ने तुझ पन दया कनके कैसे कैसे
२० व़ड़े अनुगीनह कीये। तव़ वुह यला गया ओन दस नगन में
उन व़ड़े कानजों को, जो य़सु ने उसके लीये कीये थे पनगट
२१ कनने लगा ओन सभों ने आसयनज माना। ओन य़सु नाव
पन यढ़के इस पान फीन आया व़हुत लोग उस पास एकठे
२२ हुए ओन वुह समुद्र के लग था। ओन देप्पो की मंडली
का एक पनधान य़ाइनस नाम आया ओन उसे देप्प कन उसके
२३ यनन पन गीना। ओन उसकी व़हुत व़ीनती कनके कहा की
मेनी छोटी व़ेटी मनने पन पड़ी है आके अपने हाथों को उस
२४ पन नप्पीये जीसतें वुह यंगी होजाय ओन वुह जीएगी। तव़
य़सु उसके संग गया ओन व़हुत से लोगों ने उसके पीछे होके
२५ उस पन भीड़ की। ओन एक इसतीनी जीसका व़ानह व़नस
२६ से लोहु व़हता था। ओन व़हुत से व़ैदों से व़ड़ा व़ड़ा दुप्प
उठाया ओन अपना सव़ कुछ उठान कनके यंगी न हुई पनंतु
२७ अधीक नोगीनी हुई। य़सु का समायान सुनके उस भीड़ में
२८ पीछे आइ ओन उसके व़सतन को छुलीया। कयोंकी उसने

कहा की यदी मैं केवल उसके वसतरों को छुउं तो चंगी हो
२९ जाउंगी। और तुरंत उसके लोहू का सोता सुख गया और
उसने अपने सरीर से जान लीया की उस रोग से मैं चंगी हुई
३० तब यसु ने तुरंत आप में जाना की मुझ से सकती नीकली और
की ओर फीर के कहा की कीसने मेरे वसतरों को छुआ।
३१ तब उसके सीष्यों ने उसे कहा की आप देखते हैं की मंडली
आप पर भीड़ करती है और फेर कहते हैं की मुझे कीसने
३२ छुआ? । और जीसने यह कीया था उसे देखने को वुह चारों
३३ ओर दीष्टी करने लगा। परंतु जो की उस पर वीत गया
था उसे जान के वुह इसतीरी डरती कांपती आई और उसके
३४ आगे गीर के सच सच बोली। और उसने उसे कहा की हे
पुतरी तेरे वीसवास ने तुझे चंगा कीया कुसल से जा और अपने
रोग से बची रह।

३५ वुह कहता ही था की मंडली के उस परधान करने से लोगों ने
आके कहा की तेरी बेटी मर गई तु गुरु को अब कयों कलेस
३६ देता है। यसु ने उस कहे हुए बचन को सुन के मंडली के
३७ उस परधान से कहा की मत डर केवल वीसवास रख। तब
उसने पतरस और याकुब और उसके भाई युहना को छोड
३८ कीसी को अपने पीछे आने न दीया। और उसने मंडली के
परधान के घर में आके लोगों को धुम करते और रोते और
३९ अती बीलाप करते देखा। और भीतर जाके उसने उनहें
कहा की तुम कयों धुम करते और रोते हो? कंनया मर
४० नहीं गई परंतु सोती है। तब वे उस पर हंसे परंतु वुह सब
को बाहर करके उस कंनया के माता पीता को और अपने
४१ संगीयों को लेके, जहां वुह कंनया पड़ी थी, भीतर गया। तब
उसने उस कंनया का हाथ पकड़ के उसे कहा की तालीताकुमी
४२ अरथात कंनया मैं तुझे कहता हुं की उठ। और वुह कंनया
तुरंत उठी और चलने लगी कयोंकी वुह बारह बरस की थी

४३ श्रीन वे व़ड़े श्रासयनज से श्रासयनजीत ऊए। तव़ उसने उनहें दोनढ़ता से कहा को उसे कोइ न जाने श्रीन श्रगया की, की उसे कुछ प्याने को देश्रो।

६ छठवां पनव़।

श्रपने ही देस में य़सु की नीनदा होती है १—६ य़सु पनेनीतें को उपदेस के लीय़े भेजता है ७—१३ मसीह के व़ीप्पय़ में हीनुदोस की समझ १४—१६ वुह य़हीय़ा सननकानक का सीन कटवाता है १७—२९ पनेनीत य़सु पास फीन श्राते हैं ३०—३३ य़सु का उपदेस श्रीन मंडलीय़ों को भोजन कनाना ३४—४४ समुदन पन यलता है ४५—५२ जनेसन में पऊंय के नोगीय़ों को यंगा कनता है ५३—५६।

१ तव़ वुह वहां से यला श्रीन श्रपनेही देस में श्राया श्रीन उस
२ के सोप्प उसके पीछे हो लीय़े। श्रीन जय़ व़ोसनाम श्राया वुह मंडली में उपदेस कनने लगा श्रीन व़ऊतेने सुनके व़ीसमीत हो कहने लगे की इसने य़े सव़ कहां से पाय़े? श्रीन उसे य़ह कय़ा वुघ दी गइ है की ऐसे ऐसे श्रासयनज कनम उसके हाथों से
३ कीय़े जाते हैं ?। कय़ा य़ह मनीय़म का पुतन व़ढ़इ नहीं? य़ाकुव़ श्रीन य़ुसा श्रीन य़ऊदा श्रीन समउन का भाइ नहीं? श्रीन कय़ा उसकी व़हीनें य़हां हमाने पास नहीं? श्रीन उनहों
४ ने उस से ठोकन प्याया। पनंतु य़सु ने उनहें कहा को भवीसद- व़कता श्रादन नहीत नहीं केवल श्रपनेही देस में श्रीन श्रपनेही
५ कुटुंव़ में श्रीन श्रपनेही घन में। श्रीन वुह वहां कोइ श्रासयनज कनम न कन सका केवल उसने हाथ नप्पके थोड़े नोगीय़ों को
६ यंगा कीया। श्रीन वुह उनके श्रव़ीसवास के कानन व़ीसमीत ऊश्रा श्रीन यानों श्रोन के गांश्रों में उपदेस कनता फीना।

७ तव़ उसने उन व़ारह को व़ुलाय़ा और उनहें दो दो करके भेजन आरंभ कीय़ा और उनहें अपवीतर आतमाओं पर
८ सामरथ दीय़ा। और उनहें अगय़ा की, की जातरा के लीय़े एक लाठी को छोड़ कुछ न लेओ न झोली न रोटी न पटुके
९ में रोकड़। परंतु अपने पांव में पनहा पहीन लेओ और दो
१० अंगे न पहीनो। और उसने उनहें कहा की जहां कहीं कीसी घर में जाओ जव़ लों उस सथान से न नीकलो वहीं रहो।
११ और जो कोइ तुमहें गरहन न करे और तुमहारी न सुने जव़ तुम वहां से नीकलो तो उन पर साख्नी के लीय़े अपने चरन की धुल झाड़ो मैं तुमहें सत कहता हुं की नयाय़ के दीन में सदुम और अमुरा के लीय़े उस नगर से अधीक सहज होगा।
१२ और वे व़ाहर जाके परचारने लगे की लोग पसचाताप करें।
१३ और अनेक भूतों को दुर कीय़ा और व़हुत रोगीय़ों पर
१४ तेल लगा के चंगा कीय़ा। और हीरुदीस राजा ने सुना (कय़ोंकी उसका नाम फैल गय़ा था) तव़ उसने कहा की य़हाय़ा सनान कारक मीरतु से जी उठा है इस लीय़े उस से अ सचरज
१५ करम दीखाइ देते हैं। औरों ने कहा की य़ह इलीय़ास है और कीतनों ने कहा की एक भवीसदव़कता है अथवा एक भवीसद-
१६ व़कता के समान। परंतु जव़ हीरुदीस ने सुना उसने कहा की य़ह य़हीय़ा है जीसका मैं ने सीर कटवाय़ा वही मीरतु से
१७ जी उठा है। कय़ोंकी हीरुदीस ने अपने भाइ फीलव़ुस की पतनी हीरुदीय़ास के लीय़े, जीसे उसने व़ीय़ाहा था आपही लोगों को भेज के य़हीय़ा को पकड़वाके व़ंधन में डाला था।
१८ कय़ोंकी य़हीय़ा ने हीरुदीस से कहा था की आप को उचीत
१९ नहीं की अपने भाइ की पतनी रख्खें। इस लीय़े हीरुदीय़ास उस से व़ैर रख्खती थी और उसे घात कीय़ा चाहती थी
२० परंतु न सकती थी। कय़ोंकी हीरुदीस य़हीय़ा को सजन और पवीतर मनुष्य जानके उस से डरता था और उसे मानता

था श्रीन उसका उपदेस सुनके व्रजत सी व्रातें पन यलता था
२१ श्रीन श्रानंद से उसे सुनता था। श्रीन जव श्रोसन का दीन
श्रा पज्ञया की हीनुदीस ले श्रपने जनम दीन में श्रपने व्रडों
श्रीन सेनापतीश्रों श्रीन जलील के पनधानों के लाश्रे व्रोश्रानो
२२ व्रनाइ। तव हीनुदीयास की पुतनी भीतन श्राइ श्रीन नाची
श्रीन हीनुदास के, श्रीन उनहें जो उसके संग व्रैठे थे पनसंन
कीश्रा तव नाजा ने उस कंनश्रा को कहा की जो तेना इछा होश्र
२३ मुहे से मांग श्रीन मैं तुहे देउंगा। श्रीन उसने उसके लीश्रे
कीनीश्रा प्याइ की मेंने श्राधा नाज लों जो कुछ तु मांगेगी मैं तुहे
२४ देउंगा। श्रीन उसने जाके श्रपनी माता को पुछा की मैं कश्रा
२५ मांगुं? उसने कहा की श्रहीश्रा सनानकानक का सीन। तव
वुह तुनंत व्रेग से नाजा पास श्राइ श्रीन श्रह कहके मांगा की
मैं याहती हुं की श्रेक थाल में श्रहीश्रा सनानकानक का सीन
२६ श्रभी मुहे मंगवा दीजीश्रे। तव नाजा श्रती उदास हुश्रा पनंतु
श्रपनी कीनीश्रा के श्रीन जेवनहनीश्रों के लाश्रे उसने न याहा
२७ की उसे फरे। तव नाजा ने तुनंत श्रपने श्रेक पहनु को भेज
कन श्रगश्रा की, की उसका सीन लावे सो उसने जाके व्रदी-
२८ गीनह में उसका सीन काट डाला। श्रीन उसे श्रेक थाल में
लाके उस कंनश्रा को दीश्रा श्रीन कंनश्रा ने उसे श्रपनी माता
२९ को दीश्रा। जव उसके सीष्यां ने सुना वे श्राके उसकी लोथ को
३० लेके समाध में नष्या। श्रीन पनेनीत श्रसु के पास श्रेकठे होके
सव व्रातों को, जो उनहों ने कीं श्रीन जो उनहों ने सीष्याइं
३१ उसे कहीं। तव उसने उनहें कहा की तुम सुने सथान में
श्रलग यलो श्रीन तनीक व्रीसनाम कनो कश्रोंकी वहां व्रहुत
श्राते जाते थे श्रीन उनहें भोजन कनने का भी श्रवकास न
३२ मीलता था। तव वे श्रलग न व पन व्रैठके श्रेक सुने सथान में
३३ यले गश्रे। श्रीन लोगों ने उनहें जाते देष्या श्रीन व्रहुतेरों ने
उसे यीनहा श्रीन साने नगनों से पांव पांव उधन दैाडे श्रीन

३४ उनसे आगे जा पज्ञंये औान ऐकठे उस पास आये। तव्र यसु व्राहन नीकल के व्रज्ञत से लोगें को देप्प के उन पन दयाल ज्ञआ कयोंकी वे उन भेड़ों की न इं थे जीनका गड़ेनीया न होवे
३५ औान वुह उनहें व्रज्ञत सा उपदेस कनने लगा। औान जव्र दीन व्रज्ञत ढल गया उसके सीप्पों ने उस पास आके कहा की
३६ यह सुना सथान है औान समय व्रज्ञत व्रीत गया। उनहें व्रीदा कीजाये की वे यानों औान के देसें औान गाओं में जायें औान अपने लीये भोजन मोल लेवें कयोंकी उनके भोजन के लीये
३७ कुछ नहीं है। उसने उनहें उतन देके कहा की तुम उनहें प्पाने के देउ तव्र वे उसे व्रोले की हम जायें औान दो सै सुकी
३८ की नोटी मोल लेके उनहें प्पाने का दें?। उसने उनहें कहा की तुमहाने पास कीतनी नोटीयां हैं? जाके देप्पो औान उनों
३९ ने वुह के कहा की पांय नोटीयां औान दो मछलीयां। औान उसने उनहें अगया की, की हनी घास पन पांती पाती सभों को
४० व्रैठाओ। तव्र वे सै सै औान पयास पयास की पांती व्रांय के
४१ व्रैठ गये। औान जव्र उसने उन पांय नोटीयां औान दो मछली-यों को लीया तो सनग की औान ताक के असीस दीया औान नोटीयों को तोड़ के अपने सीप्पों को दीया की उनके आगे नप्पें औान दो मछलीयों को भी भाग कनके उन सभों को व्रांट
४२।४३ दीया। तव्र सव्र प्पाके तीनीपत ज्ञए। औान उनों ने युन यान से व्रानह टोकनीयां भनीं उठाइं औान मछलीयों से
४४ भी। औान जीनहों ने नोटीयां प्पाइं सो पांय सहसन पुनुप्प
४५ के लग भग थे। औान तुनंत उसने सीप्पों को दीनढ अगया की, की नाव पन यढ़के आगे उस पान व्रैत सैदा को जाओ जव्र लों
४६ मैं लोगों को व्रीदा कनुं। औान जव्र उसने उनहें व्रीदा कीया
४७ वुह ऐक पहाड़ पन पनानथना के लीये गया। औान जव्र सांझ ज्ञइ नाव समुदन के मध में थी औान आप भुम पन अकेला था।
४८ औान उसने उनहें प्पेवते प्पेवते पनीसनम में देप्पा कयोंकी पवन

उनके सनमुष्प था ओान नात के यौथे पहन में समुदन पन यलते यलते वुह उनके पास आया ओान उनसे आगे वढ़ यला था।
४९ पनंतु जव उनहों ने उसे समुदन पन यलते देष्पा तो भनम
५० समझ के यौला उठे। कयोंकी उसे देष्पके सव व्याकुल ऊग्रे ओान उसने तुनंत उन से वानता कनके कहा की ससथीन
५१ होओ मत डनो मैं ऊं। ओान वुह उन पास नाव पन गया ओान पवन थम गया ओान वे आप में वेपनीमान अती वीसमीत ऊग्रे
५२ ओान आसयनज कीया। कयोंकी उनहों ने उन नोटीयों के आसयनज को न सोया थ इस कीये की उनका अनतःकनन
५३ कठोन ऊआ। ओान जव वे पान पऊंये तो जनेसनत के देस में
५४ आये ओान तीन पन गये। ओान जव वे नाव से उतन आये
५५ तुनंत लोगों ने उसे पहीयाना। ओान उस देस की यानों ओान दौड़े ओान नोगीयों को ष्पाटों पन उठा उठा के वहां लाते
५६ थे जहां उनहों ने सुना था की वुह है। ओान जहां कहीं गांओं में अथवा नगनों में अथवा देस में वुह जाता था उनहों ने नोगी-ओं को मानगों में नष्पा ओान उसकी वीनती की, की हम केवल आप के वसतन का ष्पुंट लें छुवें ओान जीतनें ने छुआ यंगे हो गये।

७ सातवां पनव।

सीष्पों पन फनीसीयों का दोष्प लगाना ओान यसु का उतन १—१३ असुचता के वीष्पय में यसु का उपदेस १४—२३ ग्रेक कंनया को यंगा कनता है २४—३० ओान ग्रेक गुंगे वहीने को ३१—३७।

१ तव कइ फनीसी ओान अधापक, जो यनोसलीम से आये थे,
२ उस पास ग्रेकठे ऊग्रे। ओान जव उनहों ने उसके कीतने सीष्पों को असुच अनथात वीन घोये हाथों से नोटी ष्पाते देष्पा तो

३ दोप्प दीय़ा। कय़ोंकी फरीसी श्रैान साने य़ऊदी पनायीनों
के व्रेवहानों को मान मान के व्रानं व्रान व्रीना हाथ घोय़े नहीं
४ प्याते हैं। श्रैान हाट से श्राके व्रीना सनान कीय़े नहीं प्याते
हैं श्रैान व्रऊतेनी अनेक नीत हैं जो उनहों ने गनहन कनके
मान लीय़ा है जैसा की कटोना कटोनी श्रैान पीतल के व्रनतन
५ श्रैान मंय का घोना। तव्र फरीसीय़ों श्रैान अघापकों ने उसे
पुछा की आप के सीप्प पनायीन के व्रेवहान पन कय़ों नहीं
६ यलते पनंत् व्रीन घोय़े हाथों से नोटी प्याते हैं?। उसने
उतन देके ‌उनहें कहा की आसाय़ा ने भ्रवीस से तुम कपटीय़ों
के व्रीप्पय़ में भला कहा जैसा लीप्पा है की य़े लोग होठों से
७ मेना आदन कनते हैं पनंत् उनका मन मुह से दुन है। पथापी
वे व्रीनथा मेनी सेवा कनते हैं की मनुप्पो की अगय़ा को अवेस
८ ठहना के सीप्पावते हैं। कय़ोंकी इसन की अगय़ा को टाल के
तुम मनुप्पों के व्रेवहान को मानते हो जैसा की कटोना कटोनी
९ का घोना श्रैान ऐसी ऐसी अनेक व्रात हैं जो कनते हो। श्रैान
उसने उनहें कहा की तुम इसन की अगय़ा को भली नीत से
१० टाल देते हो जीसतें अपनेही व्रेवहान में नहो। कय़ोंकी मुसा
ने कहा है की अपनी माता पीता का आदन कन श्रैान जो
कोइ माता अथवा पीता को धीकाने वुह नीसयय़ माना जाय़।
११ पनंतु तुम कहते हो की य़दी मनुप्प अपनी माता अथवा पीता
को कहे की जो कुछ तुहे मुह से लाभ मील सकता था सो कुन-
१२ व्रान है अनथात अनपन कीय़ा गय़ा। श्रैान आगे को तुम उसे
१३ माता अथवा पीता के लीय़े कुछ कनने नहीं देते। सो अपना
व्रेवहान ठहना के इसन के व्रयन को व्रय़नथ कनते हो श्रैान
१४ ऐसी ऐसी अनेक व्रात मानते हो। श्रैान उसने सव्र लोगों को
वुला के उनहें कहा की हन ऐक मेनी सुनो श्रैान समझो।
१५ मनुप्प के व्राहन व्राहन कोइ व्रसत् नहीं जो उस में पैठ के उसे
असुघ कन सके पनंतु जो जो उस में से नीकलती हैं सो सो हैं

१६ जो मनुष्प को असुच कनती हैं। जो कीसी के कान सुनने के
१७ लीये होय़ तो सुने। श्रीन जव़ वुह लोगों के पास से घन में
गय़ा उसके सीष्पां ने उस द्ानीसटांनत के व़ीष्पय़ में उसे पुछा।
१८ तव़ उसने उनहें कहा की तुम भी ग्रैसे अव़ोध हो? तुमहें नहीं
सुह्ता की जो व़ाहन से मनुष्प में पैठती है सो उसे असुच नहीं
१९ कन सकती। इस कानन की वुह उसके मन में नहीं पैठती
पनंतु श्रोदन में श्रीन साने भोजन को सुच कनके संडास में
२० नीकलती है। श्रीन उसने कहा की जो मनुष्प से नीकलती है
२१ सो मनुष्प को असुच कनती है। कय़ोंकी मनुष्पों के मन में से
२२ व़ुनी यीनता, पनइसतीनी गमन, व़ैभीयान, हतय़ा,। योनी,
लालच, दुसटता, छल, छीनालपन, कुदीनोसट, पाष्पंडता, अहं-
२३ कान, मुनष्पता। य़े सव़ व़ुने व़ुने कनम भीतन से नीकल के मनुष्प
२४ को असुच कनते हैं। तव़ य़सु वहां से उठ के सुन श्रीन सैदा
के सीवानों में गय़ा श्रीन उसने ग्रेक घन में जाके चाहा की कोइ
२५ न जाने पनंतु वुह छीपाय़ा न जा सकता था। कय़ोंकी ग्रेक
इसतीनी जीसकी कंनय़ा पन असुच आतमा था उसका समाचान
२६ सुन के आइ श्रीन उसके चनन पन गीनी। वुह इसतीनी
य़ुनानी श्रीन सनफुनीकी के देसी थी उसने उसकी व़ीनती की,
२७ की आप पीसाच को मेनी पुतनी पन से दुन कनीय़े। पनंतु
य़सु ने उसे कहा की पहीले व़ालकों को तीनोपत होने दे
कय़ोंकी उचीत नहीं की व़ालकों की नोटी लेके कुतों के आगे
२८ फेंकीय़े। तव़ उसने उतन देके उसे कहा की ठीक है पनभु
तथापी कुतते भी मच के नीचे व़ालकों की नोटी का चुन चान
२९ घ्याते हैं। तव़ उसने उसे कहा की इस कहने के लीय़े चली जा
३० वुह पीसाच तेनी पुतनी से उतन गय़ा। श्रीन जव़ वुह अपने घन
पहुंची उसने देष्पा की पीसाच उतन गय़ा श्रीन उसकी पुतनी
३१ घ्याट पन लेटी है। श्रीन फीन वुह सुन श्रीन सैदा के सीवानों
से नीकल के सद नगन के सीवाने के मघ से जलील के समुद्दन

१२ की ओान आया। तव्र वे ओेक व्रहीने मनुप्प को जो तोतला के व्रोलता था उस पास लाये ओान उसकी व्रीनती की, की अपना
१३ हाथ उस पन घनीये। ओान वृह उसे उस मंडली से अलग ले गया ओान अपनी अंगुलीयां उसके कानों में डालीं ओान थुक के
१४ उसके जीभ को छुआ। ओान सनग की ओान देप्पते ऊये हाय
१५ कीया ओान उसे कहा की अफ्फता अनयात प्पुल जा। ओान तुनंत उसके कान प्पुल गये ओान उसकी जीभ का व्रंधन ढीला
१६ ऊआ ओान वुह प्पोल के व्रोलने लगा। ओान उसने उनहें अगया की, की कीसी को न कहो पनंतु जीतना उसने उनहें
१७ व्रनजा था तीतना वे उसे अधीक पनयानते थे। ओान व्रेपनीमान व्रीसमीत होके कहने लगे की उसने सव्र कुछ अछा कीया है वुह व्रहीनों को सनोता ओान गुंगों को व्रकता कनता है।

८ आठवां पनव्र।

यसु मंडलीयों को भोजन कनाता है १—९ फनीसीयां को लछन देने को नाह कनता है १०—१३ सीप्पों को उपदेस कनता है १४—२१ ओेक अंधे को यंगा कनता है २२—२६ पतनस का व्रीसवास ओान यसु के कसट पाने का आगम व्रयन २७—३३ यसु का उपदेस ३४—३८।

१ उसी समय में, जव्र मंडली व्रऊत ऊइ ओान उन पास कुछ
२ भोजन न था यसु ने अपने सीप्पों को व्रुला के उनहें कहा। की मंडली पन मुझे दया आती है कयोंकी वे तीन दीन से मेने संग
३ हैं ओान कुछ प्पाने को नहीं नप्पते। ओान जो मैं अपने अपने घन उनहें उपवासी भेजुं वे मानग में मीनव्रल हो जायेंगे कयोंकी
४ कीतने उनमें दुन से आयें थे। तव्र उसके सीप्पों ने उसे उतन दीया की मनुप्प इस व्रनन में कहां से उनहें नोटी से तीनीपत

५ कन सके?। तव़ उसने उनहें पुछा की तुमहाने पास कीतनी
६ नोटीय़ां है? वे व़ोले का सात। तव़ उसने लोगों को अगय़ा
की, की भुम पन व़ैठ जाओ ओैान उसने उन सात नोटीय़ों को
ले कन घंनव़ाद कनके तोड़ा ओैान अपने सीप्पन को दीय़ा की
७ उनके आगे घनें ओैान उनहों ने लोगों के आगे नप्पा। ओैान
उन पास कइ ऐक छोटी मछलीय़ां थीं उसने घंनव़ाद कनके
८ अगय़ा की, की उनहें भी आगे घनो। सो वे भोजन कनके
तीनीपत ऊऐ ओैान उनहों ने युन यान से, जो व़य नहे थे सात
९ टोकनीय़ां उठाइं। ओैान जोनहों ने भोजन कीय़ा था सो
यान सहसन के लग भग थे तव़ उसने उनहें व़ीदा कीय़ा।
१० ओैान तुनंत वुह अपने सीप्पों के संग नाव पन यढ़ व़ैठा ओैान
११ दाल मनुथा के सीवाने में आय़ा। तव़ फनीसी नीकले ओैान
उसकी पनीछा कनके उस से पनसंन कनके सनग से ऐक लछन
१२ याहा। तव़ उसने अपने मन में अती हाय़ कनके कहा की
य़ह पीढ़ी कीस कानन लछन ढुंढ़ती है मैं तुमहें सत कहता ऊं
१३ की इस पीढ़ी को कोइ लछन दीय़ा न जाय़गा। ओैान वुह
१४ उनहें छोड़ के नाव में होके उस पान यला गय़ा। ओैान नोटी
लेने को भुल गय़े थे ओैान उनके संग नाव पन ऐक नोटी से
१५ अघीक न थी। तव़ उसने उनहें अगय़ा कनके कहा की देप्पो
फनीसीय़ों के प्पमीन ओैान हीनुदीस के प्पमीन से यैाकस नहो।
१६ तव़ वे आपुस में युं व़ीयानने लगे की य़ह इस कानन है की
१७ हमाने पास नोटी नहीं। ओैान जव़ य़सु ने जाना उसने उनहें
कहा की तुम कय़ों व़ीयानते हो की य़ह इस कानन है की
हमाने पास नोटी नहीं? तुम अव़ लों नहीं जानते ओैान नहीं
१८ व़ुझते? तुमहना मन अव़ लों कठोन है?। आंप्प नप्पते
ऊऐ नहीं देप्पते? ओैान कान नप्पते ऊऐ नहीं सुनते? ओैान
१९ तुम समझन नहीं कनते?। जव़ मैं ने पांय नोटीय़ों को पांय
सहसन के कानन तोड़ा तुमने युन यान से कीतनी टोकनीय़ां

२० मनी उठाई ? उनहें। ने उसे कहा की व्रानह। श्रीन जव्र याान सहसन के कानन सात तुम ने युन याान से कीतनी टोक-
२१ नीयां मनी उठाई ? उनहें। ने कहा की सात। श्रीन उसने उनहें कह की यह कयोंकन है की तुम नहीं वुझते ?।

२२ श्रीन वुह व्रैतसैदा में श्राया तव्र वे उसके पास ऐक अंधे
२३ मनुष्य को लाये श्रीन उसकी व्रीनती की, की उसे छुवें। श्रीन वुह उस अंधे मनुष्य का हाथ पकड़ के नगन के व्राहन ले गया श्रीन उसने उसकी अांषों पन थुक के श्रीन अपना हाथ उसपन
२४ नष्य के उसे पुछा की तु कुछ देष्पता है ?। उसने उतन देष्प के कहा की मैं मनष्यों को पेड़ की नाई यलते देष्पता हुं।
२५ तव्र उसने उसकी आंष्पों पन हाथ फेन नष्पा श्रीन उसे उपन दीष्पाया तव्र वुह यंगा होगया श्रीन हन ऐक मनुष्य को
२६ परनछाई से देष्पा। श्रीन उसने उसे यह कहके अपने घन भेजा की नगन में मत जा श्रीन कीसी से नगन में मत कह।

२७ तव्र इसु श्रीन उसके सीष्य कैसनाय: फैलव्रुस के नगनें में गये श्रीन उसने मानग में अपने सीष्पें से पुछा की मनुष्य कया
२८ कहते हैं की मैं कैान हुं ?। उनहें। ने उतन दीया की यहीया सनानकानक, पनंतु कीतने की इलीयास, श्रीन कीतने की
२९ भवीसदव्रकतें में से ऐक। उसने उनहें कहा पनंतु तुम कया कहते हो मैं कैान हुं ? पतनस ने उतन देके उसे का की
३० आप मसीह हैं। तव्र उसने उनहें अगया की, की मेने व्रीष्पय
३१ में कीसी से मत कहो। फेन उसने उनहें उपदेस कनना आनंभ कीया की मनुष्य के पुतन को आवेसक है की व्रहुत दुष्प उठावे श्रीन पनायीनें श्रीन पनधान याजकें श्रीन अध्यापकें से तयाग कीया जाय श्रीन मानाा जाय श्रीन तीन दीन पीछे फेन उठे।
३२ श्रीन उसने यह व्रयन ष्पोल के कहा तव्र पतनस उसे लेके डांटने
३३ लगा। पनंतु वुह घुम कन अपने सीष्यें की श्रीन देष्पके पतनस को घुनक के व्राला की हे सैतान मेने पीछे जा कयोंकी वे व्रसतें

जो इसन की हैं तुहे नहीं सोह्यातीं पनंत वे वसतें जो मनुष्य
३४ की हैं। श्रौन जव उसने सीष्यों के संग लोगों को वुलाया उसने
उनहें कहा की जो कोइ मेने पीछे श्राया याहे सो श्रपनी
इछा को तयागे श्रौन श्रपने कुनुस को उठा ले श्रौन मेने पीछे
३५ श्रावे। कयोंकी जो कोइ श्रपने पनान को वयावेगा उसे गंवा-
वेगा पनंतु जो कोइ मेने श्रौन मंगल समायान के कानन श्रपने
३६ पनान को गंवावेगा सोइ उसे वयावेगा। कयोंकी मनुष्य को
कया लाभ होगा यदी वुह साने जगत को कमावे श्रौन श्रपने
३७ पनान को गंवावे?। श्रथवा मनुष्य श्रपने पनान की संती
३८ कया देगा?। इस कानन जो कोइ इस पनइसतीनी गामी श्रौन
पापमय पीढ़ी में मुझसे श्रौन मेने वयन से लजावेगा मनुष्य का
पुतन भो, जव वुह श्रपने पीता के प्रेसयनय में पवीतन दुतों के
संग श्रावेगा उस से लजायेगा।

९ नवां पनव।

मसीह के नुप का वदलना १—१० वताना की यहीया
सनानकानक इलीयास है ११—१३ गुंगे वहीने
श्रातमा को दुन कनना १४—२९ श्रपनी मीनत
का श्रागम वयन ३०—३२ सीष्यों को दपटता है
३३—३७ उनहें उपदेस कनता है ३८—४२ ननक
की पीड़ा से वयने का उपदेस ४३—५०।

१ तव उसने उनहें कहा की मैं तुम से सत कहता हुं की इन में
से कीतने यहां ष्पड़े हैं जो मीनत का सवाद न यीष्पेंगे जव
२ लों इसन के नाज को पनाकनम से श्राते न देष्पें। श्रौन छः
दीन वीते यसु पतनस श्रौन याकुव श्रौन युहना को लेके श्रलग
उनहें प्रेक उंय पहाड़ पन ले गया श्रौन उनके श्रागे उसका नुप
३ श्रौन ही हो गया। श्रौन उसका वसतन यमकने लगा श्रौन

पाला के समान व्रह्रत उजला हो गया। जैसा की कोइ धोव्री
४ पीनथीवी पन उजला नहीं कन सकता। ग्रोन उनहें मुसा के
संग इलीय़ास दीप्पाइ दीय़ा ग्रोन वे य़सु से व्रात यीत कनते
५ थे। तव्र पतनष ने उतन देके य़सु से कहा की हे गुनु हमाने
ल य़े य़हां नहना ग्रक्का है ग्रोन तीन तंव्रु व्रनावें प्रेक ग्राप के
६ लीय़े प्रेक मुसा के लीय़े ग्रोन प्रेक इलय़ास के लीय़े। इस
लोय़े की वुह न जानता था की कय़ा कहे कय़ोंकी वे व्रह्रत डन
७ गय़े। तव्र प्रेक मेघ ने उन पन छाय़ा की ग्रोन उस मेघ से प्रेक
सव्रद य़ह कहते ह्रप्रे नीकला की य़ह मेना पीनय़ पुतन है
८ उसको सुनो। ग्रोन तुनंत जव्र उनहों ने याने‍ां ग्रोन दीनीसट
९ की तो केवल य़सु को छोड़ कीसी मनुप्प को न देप्पा। ग्रोन
जव्र वे पहाड़ स उतनते थे उसने उनहें ग्रगय़ा की, की य़े व्रसतें,
जो तुमने देप्पीं, जव्र लों मनुप्प का पुतन मीनतकों में से न उठे,
१० कीसी से नत कहीय़ो। ग्रोन वे उस व्रयन को ग्रपने हीे में
नप्प के ग्रापुस में यनया कनने लगे की मीनतु से उठने का कय़ा
११ ग्रनथ है। फेन उनहों ने य़ह कहके उस से पुछा की ग्रचापक
कय़ों कहते हैं की पहीले इलीय़ास का ग्राना ग्रवेस है?।
१२ उसने उतन देके उनहें कहा की इलीय़ास का पहीले ग्राना
ग्रोन सव्र कुछ को सुधानना ठीक है ग्रोन मनुप्प के पुतन की
ग्रवसथा में कय़ोंकन लीप्पा है की वुह ग्रवेस व्रह्रत दुप्प उठावे
१३ ग्रोन नीनदीत कीय़ा जाय़। पनंतु मैं तुमहें कहता ह्रं की इली-
य़ास तो ठीक ग्राचुका है ग्रोन जो कुछ उनहों ने याहा उस से
१४ कीय़ा जैसा उसके व्रीप्पय़ में लीप्पा है। ग्रोन जव्र वुह सीप्पों के
पास ग्राय़ा उनके ग्रास पास उसने प्रेक व्रड़ी मंडली ग्रोन ग्रचापकों
१५ को उनसे पनसन कनते देप्पा। तव्र तुनंत सव्र लोग उसे देप्पके
१६ ग्रती व्रीसमीत होके दैाड़े ग्राय़े ग्रोन पननाम कीय़ा। सो उसने
१७ ग्रचापकों से पुछा की तुम उनसे कय़ा पुछते हो?। तव्र मंडली में
से प्रेक ने उतन देके कहा की हे गुनु मैं ग्रपने पुतन को ग्राप

१८ के पास लाया हुं जीस पन ऐक गुंगा आतमा है। और वुह जहां कहीं उसे ले जाता है उसे पराड़ता है और वुह परेन बहता और आन दंत कीचकीचाता है और गलाजाता है और मैं ने आप के सीष्ये से कहा की उसे दुन करें परंतु वे
१९ न सके। उसने उत्तन देके उसे कहा की हे अबीसवासी पीढ़ी मैं कब लों तुमहानें संग नहुं? और मैं कब लों तुमहानी सहुं?
२० उसे मेने पास लाओ। तब वे उसे उस पास लाये और जब उस ने उसे देष्या तुनंत उस आतमा ने उसे पराड़ा और वुह भुम
२१ पन गीना और परेन बहा के लोट गया। और उसने उसके पीता से पुछा की उसे यह कीतने दीन से हुआ है? उसने
२२ कहा की लड़काइ से। और नास कनने के लीये उसने उसे आग में और जल में बानंबान फेंका पनंतु यदी आप कुछ
२३ कन सकें तो हम पन दयाल होके सहाय कीजीये। तब यसु ने उसे कहा की जो तु बीसवास लासके तो सब कुछ बीसवासीयों
२४ के लीये हो सकता है। तब उस बालक का पीता तुनंत चीलाया और आंसु बहाके बोला की हे पनभु मैं बीसवास लाता हुं
२५ मुझ अबीसवासी का उपकान कीजीये। जब यसु ने देष्या की लोग दौड़े आते हैं उसने अपवीतन आतमा को घुनक के कहा की अने गुंगे और बहीने आतमा मैं तुझे आगया कनता हुं की
२६ उस से बाहन नीकल और उसमें फेन मत पैठ। तब वुह चीलाया और उसे अतयंत पराड़ के उस से नीकल आया और वुह मीनतक समान होगया यहां लों की बहुतों ने कहा की
२७ वुह मन गया। पनंतु यसु ने उसका हाथ पकड़के उसे उठाया
२८ और वुह उठा। और जब वुह घन में आया उसके सीष्य ने
२९ ऐकांत में उसे पुछा की हम उसे दुन कयों न कन सके?। उस ने उनहें कहा की इस नीत की पनानथना और बनत को छोड़
३० कीसी भांत से नहीं नीकल सकता। फेन वे वहां से चले और जलील से होके नीकल गये और उसने चाहा की कोइ मनुष्य

३१ न जाने। इस लीये उसने अपने सीष्यों को उपदेस कीया औन
उनहें कहा की मनुष्य का पुतन मनुष्यों के हाथों में सौंपा जाता
है औन वे उसे मान डालेंगे औन मानें जाने के पीछे वुह तीसनें
३२ दीन उठेगा। पनंतु उनहों ने यह कहना न समझा औन उससे
३३ पुछने को डने। फीन वुह कपननहुम में आया औन
घन में होते हुए उसने उनहें पुछा की मानग में तुम आपुस
३४ में कया यनया कनते थे?। पनंतु वे चुप नहे कयोंकी
मानग में वे आपुस में यनया कनते थे की सब में वडा कौन?।
३५ औन उसने बैठ के उन बानहों को वुलाया औन उनहें कहा
की यदी कोइ मनुष्य अगीला हुआ चाहे तो सब से पीछे औन
३६ सब का दास होगा। औन उसने एक बालक को ले कन उनके
मघ में बैठाया औन जब उसने उसे गोद में लीया उसने उनहें
३७ कहा। जो कोइ मेने नाम से एसे एक बालकों को गनहन कने
मुझे गनहन कनता है औन जो कोइ मुझे गनहन कने मुझे
३८ नहीं पनंतु उसे जीसने मुझे भेजा गनहन कनता है। तब
युहना उसे उतन देके कहने लगा की हे गुनु हमने एक को
आपके नाम से पीसाचों को दुन कनते देष्या औन वुह हमाने
संग नहीं आता औन हमाने संग न आने के कानन हमने उसे
३९ बनजा। तब यसु ने कहा की उसे मत बनजो कयोंकी कोइ
मनुष्य नहीं है जो मेने नाम से आसयनज कनके सहज से मेने
४० बीष्यय में बुना कह सके। कयोंकी वुह जो हमसे बीनुघ नहीं
४१ हमाना संगी है। इस लीये मसीह के होने के कानन मेने
नाम पन जो कोइ तुमहें एक कटोना जल पीने को देवे मैं तुम
४२ से सत कहता हुं की वुह अपना पनतीफल न ष्योवेगा। औन
जो कोइ छोटों में से एक को, जो मुझ पन बीसवास नष्पता है
ठोकन ष्यीलावे उसके लीये अती भला है की उसके गले में एक
यकी का पाट लटकाया जाता औन वुह समुदन में फेंका जाता।
४३ औन यदी तेना हाथ तुझे ठोकन ष्यीलावे तो उसे काट डाल

क्य़ोंकी टुंडा जीवन में पऊंयना तेने लीय़े उस से भला है की
दो हाथ नप्पते ऊप्ऐ ननक की उस आग में, जो कघी नहीं
४४ वुहती डाला जाय़। जह उनका कीड़ा नहीं मनता औान
४५ आग नहीं वुहती। औान य़दी तेना पांव तुहे ठाकन प्पीलावे
तो उसे काट डाल क्य़ोंकी लगड़ा जीवन में पऊंयना तेने लीय़े
उस से भला है की दो पांव नप्पते ऊप्ऐ ननक के उस आग में,
४६ जो कघी नहीं वुहेगी डाला जाय़। जहां उनका कीड़ा नहीं
४७ मनता औान आग नहीं वुहती। औान य़दी तेनी आंप्प तुहे
ठाकन प्पीलावे तो उसे नीकाल डाल क्य़ोंकी ईसन के नाज
में काना पऊंयना तेने लीय़े उस से भला है की दो आंप्प नप्पते
४८ ऊप्ऐ ननक की आग में डाला जाय़। जहां उनका कीड़ा नहीं
४९ मनता औान आग नहीं वुहती। क्य़ोंकी आग से हन प्ऐक
लोना कीय़ा जाय़गा औान हन प्ऐक जग लोन से लोना कीय़ा
५० जाय़गा। लोन अछा है पनंतु य़दी लोन का सवाद जाता नहे
तो उस को कीस से सवादीत कनोगे आप में लोन नप्पो औान
आपुस में मेल नप्पो।

१० दसवां पनव।

उपदेस कनके य़सु पनीसोय़ों को उतन देता है
१—१२ वालकों को आसीस देता है १३—१६
घनमान को उपदेस कनता है १७—३१ अपनी
मीनतु औान जी उठने का आगम वयन औान दो
सीप्पों को दपटना ३२—४५ अंघा वानतमी को यंगा
कनता है ४६—५२।

१ फीन वहां से उठके वह यनदन के उस पान य़ऊदीय़: के
सीवानें में आय़ा औान लोग उसके पास फेन प्ऐकठे ऊप्ऐ औान
२ उसने अपने व्य़वहान पन फेन उनहें उपदेस कीय़ा। तव

फनौसीयों ने पनीक्षा कनते उस पास आके उस से पुछा की
३ उचीत है की मनुष्प अपनो पतनी को तयाग कने?। उसने
उतन देके उनहें कहा की मुसा ने तुमहें कया अगया की?।
४ वे वोले की मुसा ने तयाग पतन लीप्पने औन छोड़ने को दो।
५ तव यसु ने उतन देके उनहें कहा की उसने तुमहाने मन की
६ कठानता के लीये तुमहें यह अगया लीप्पो। पनंतु सनीसट
के आनंभ से इसन ने उनहें नन औन नानो उतपंन कीया।
७ इस कानन मनुष्प अपना माता पीता को छोड़ेगा औन अपनी
८ पतनी से मीला नहेगा। औन वे दोनों एक मांस होंगे सो वे
९ दो नहीं पनंतु एक मांस हैं। इस लीये जोसे इसन ने जोड़ा
१० है मनुष्प अलग न कने। औन घन में उसके सीप्पों ने वही वात
११ फेन उस से पुछी। तव उसने उनहें कहा की जो कोइ अपनी
पतनी को तयागे औन दुसनी को वीयाहे सो उसके वीनुध
१२ वैभीयान कनता है। औन यदी इसतीनी अपने पती को
तयागे औन दुसने से वीयाही जाय वुह वैभीयान कनती है।
१३ फीन वे उसके पास वालकों को लाये की वुह उनहें छुवे पन
१४ जो लाते थे सीप्पों ने, उनहें घुनक दीया। पनंतु यसु देप्प के
अपनसंन ङुआ औन उनहें वोला की वालकों को मेने पास
आने देओ औन उनहें मत वनजो कयोंकी इसन का नाज
१५ एसों का है। मैं तुमहें सत कहता ङ की जो छोटे वालक के
समान इसन के नाज को गनहन न कने सो उस में न पङंयगा।
१६ औन उसने उनहें गोद में लीया औन उन पन हाथ नप्प के
उनहें आसीनवाद दीया।

१७ औन जव वुह मानग में जाता था एक मनुष्प दौड़ा आया
औन उसके आगे घुटना टेक के उस से पुछा की हे उतम गुनु
मैं कया कनुं जीसतें अनंत जीवन का अधीकानी होउं?।
१८ यसु ने उसे कहा की तु मुझे कयों उतम कहता है? उतम कोइ
१९ नहीं पनंतु केवल एक इसन। तु अगया को जानता है,

व्यभीचार मत कर, हत्या मत कर, योरी मत कर, झूठी साप्षी
२० मत दे, छल मत दे, अपनी माता पीता का सनमान कर। तब
उसने उतर देके उसे कहा की हे गुरु यह सब मैं ने अपने
२१ लड़कपन से माना है। यसु ने उसे देष्प के उसे पीआर कीया
और उसे कहा की तुझे एक बात घटी है जाके जो कछ तेरा
है बय डाल और कंगालों को दे और तु सरग में धन पावेगा
२२ और क्रुस उठा के मेरे पोछे यला आ। वुह उस बात से
२३ उदास होके यला गया कयोंकी उसकी बड़ी संपत थी। तब
यसु ने यारों ओर देष्प के अपने सीष्पों से कहा की धनमान
२४ को सरग के राज में पहुंयना कैसाही कठीन है। तब सीष्प
उसके बयन से बीसमीत हुए परंतु यसु ने फेर उतर देके
उनहें कहा की हे बालको जो धन पर आसरा रष्पते हैं उनके
२५ लीये इसर के राज में पहुंयना कैसा कठीन है। सुई के छेद
में से उंट का जाना उस से सहज है की एक धनमान इसर के
२६ राज में पहुंये। और वे बेपरीमान आसयरज करके आपुस
२७ में कहने लगे तो कौन तरान पा सकता है?। यसु ने उन
पर दीसट करके कहा की मनुष्प से अन होना है परंतु इसर
२८ से नहीं कयोंकी इसर से सब कुछ हो सकता है। तब पतरस
उसे कहने लगा की देष्पीये हमने सब कुछ छोड़ा है और आप
२९ के पीछे यले आये। तब यसु ने उतर देके कहा की मैं तुमहें
सत कहता हुं की ऐसा कोई मनुष्प नहीं जीसने घर अथवा
भाई अथवा बहीन अथवा माता अथवा पीता अथवा पतनी
अथवा संतान अथवा भुम को मेरे और मंगल समायार के लीये
३० छोड़ा है। परंतु अब इस समय में वुह सौ गुना घर और
भाई और बहीन और माता और बालक और भुम सताये
जाने के साथ पावेगा और आवेगे जगत में अनंत जीवन।
३१ परंतु बहुतेरे अगीले पीछले और पीछले अगीले होंगे।
३२ और वे मारग में यरोसलोम को जाते थे और यसु उनके

आगे आगे जाता था और वे ब्रीसमीत ऊए और डरते ऊए
पीछे पीछे जाते थे और उसने फेर उन बारह को लीया और
३३ अपने पर जो बीतना था सो उनहें कहने लगा। की देष्यो हम
यरोसलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र परधान याजकों
और अधापकों को सौंपा जायगा और वे उसे बधन करने की
३४ अगया देंगे और उसे अनदेसीयों को सौंपेंगे। और वे उस
पर ठठा करेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और उस पर थुकेंगे और
उसे मार डालेंगे और वुह तीसरे दीन फेर उठेगा।

३५ तब जबदी के बेटे याकुब और युहना उस पास आके कहने
लगे की हे गुरु हम चाहते हैं की जो कुछ हमारी इछा है
३६ आप हमारे लीये करीये। उसने उनहें कहा की तुम कया
३७ चाहते हो की मैं तुमहारे लीये करूं। वे उसे बोले की हमारे
लीये यह कीजीये की हम एक आप के दहीने हाथ और
३८ दुसरा आप के बाएं हाथ आप के ऐसरय में बैठें। यसु ने
उनहें कहा की तुम नहीं जानते की कया मांगते हो जीस कटोरे
से मैं पीता ऊं तुम उस से पी सकते हो? और जीस सनान से
३९ मैं सनान पाता ऊं सनान पा सकते हो?। वे उसे बोले की
हम सकते हैं तब यसु ने उनहें कहा की तुम ठीक उस कटोरे से
जीस से मैं पीता ऊं पीओगे और जीस सनान से मैं सनान पाता
४० ऊं तुम सनान पाओगे। परंतु मेरे दहीने और बाएं हाथ
बैठना उनहें छोड़ के जीनके कारन सीध कीया गया मेरे देने
४१ में नहीं है। और जब दसों ने सुना तो याकुब और युहना
४२ से अती अपरसंन ऊए। तब यसु ने उनहें पास बुलाके कहा
की तुम जानते हो की जो अनदेसीयों के परधान हैं सो उन
पर परभुता करते हैं और उनके बड़े लोग उन पर पराकरम
४३ दीष्याते हैं। पर तुम में ऐसा न होगा परंतु जो कोइ तुम में
४४ बड़ा ऊआ चाहे सो तुमहारा सेवक होवेगा। और जो कोइ
४५ तुम में मुष्यीआ ऊआ चाहे सो सब का सेवक होगा। कयोंकी

मनुष्य का पुतन भी सेवा कनवाने नहीं आया पनंतु सेवा कनने
४६ औन वहुतें को छुड़ाने के लीये अपना पनान देने आया। औन
वे अनीहा में आये औन जव वुह औन उसके सीष्य औन एक
वड़ी मंडली अनीहा से नीकली तो तीमी का वेटा वनतीमी
४७ अंधा मानग की औन वैठ के भीष्य मांगता था। औन जव
उसने सुना की वुह नासनी यसु है वुह यीला के कहने लगा
४८ की हे दाउद के वेटे यसु मुझ पन दया कीजीये। औन वहु-
तेनें ने उसे घुनक के कहा की यप नह पनंतु वुह अधीक
४९ यीलाया की हे दाउद के वेटे मुझ पन दया कीजीये। यसु
ने खड़ा हो के उसे वुलाने की अगया की तव उनहें ने यह
कह के उस अंधे मनुष्य को वुलाया की सुसथीन हो उठ वुह तुझे
५० वुलाता है। औन वुह अपने वसतन को फेंकते हुए उठा
५१ औन यसु के पास आया। तव यसु ने उतन देके उसे कहा की
तु अपने लीये मुझ से कया कनवाने याहता है? उस अंधे
मनुष्य ने उसे कहा की हे पनभु मैं अपनी दीनीसट पाउं।
५२ यसु ने उसे कहा की यला जा तेने वीसवास ने तुझे यंगा कीया
है औन तुनंत उसने अपनी दीनीसट पाइ औन मानग में यसु
के पीछे पीछे यला गया।

११ गयानहवां पनव।

यसु यनोसलीम में जाता है १—११ एक गूलन पेड़
को सनाप देता है १२—१४ वैपानीयों को मंदीन
से दुन कनता है १५—१९ वीसवास का पनाकनम
औन पनानयना का गुन २०—२६ याजकों औन
अघापकों का मुंह वंद कनता है २७—३३।

१ औन जव वे यनोसलीम के लग जलपाइ पहाड़ के पास
वैतफगजा औन वैतीना में आये तो उसने अपने सीष्यों में से दो

१ को भेजा। और उनहें कहा की अपने सनमुष्य के गांव में जाओ और उस में पज्ञंयातेही ओक वंधा ज्ञआ वछेना पाओगे
२ जीस पर कोइ मनुष्य नहीं यढ़ा उसे षोल के ले आओ। और
३ यदी कोइ तुमहें कहे की ओसा कयों करते हो? तो कहीयो की परभु को उसका आवेसक है और वुह तुरंत उसे भेजेगा।
४ तव वे गये और दुवार के पास वाहर ओक सथान में, जहां दो मारग मीलता था, उस वछेने को पाया और उसे षोला।
५ और उन में से कीतनों ने, जो वहां षड़े थे, उनहें कहा की
६ वछेने को कयों षोलते हो?। उनहों ने यसु की अगया के
७ समान उतर दीया तव उनहों ने उनहें जाने दीया। तव वे उस वछेने को यसु पास लाये और अपने वसतरों को उस पर
८ वीछाया और वुह उस पर यढ़ वैठा। और वज्ञतों ने अपने वसतरों को मारग में वीछाया अरु औरों ने पेड़ों की डालीयां
९ काटीं और मारग में वीथराइं। और जो आगे पीछे जाते थे सो पुकारने लगे की होसाना, उस पर आसीरवाद जो पर-
१० मेसर के नाम से आता है। हमारे पीता दाउद के राज पर, जो परमेसर के नाम से आता है, आसीरवाद अतयंत उंये
११ में होसाना। और यसु यरोसलीम में और मंदीर में गया और जव उसने यारों ओर सव कुछ देषा तो वुह वारहों के
१२ संग वैतीना को गया कयोंकी सांझ का समय था। और दुसरे
१३ दीन जव वे वैतीना से नीकले उसे भुष लगी। और वुह ओक गुलर पेड़ को पते से भरा ज्ञआ दुर से देष के आया कया जाने की उस पर कुछ पावे परंतु उसने उस पास आके केवल
१४ पतों के कुछ न पाया कयोंकी गुलर का समय न था। तव यसु ने उसे कहा की अव से कभो तेरा फल कोइ मनुष्य न षावे और उसके सीष्यों ने सुना।

१५ और वे यरोसलीम को आये और यसु मंदीर में गया और जो मंदीर में वेयते कीनते थे उनहें वाहर कीया और

प्युनदीयों के पटनें का, और कपोत के वैपानीयों के आसनें
१६ का उलट दीया। और कीसी मनुष्य का मंदीन में से व्रनतन ले
१७ जाने न देता था। और यह कहके उनहें उपदेस कीया की
नहीं लीप्पा है ? की मेना मंदीन साने जातीगनें में पनानथना
का घन कहावेगा ? पनंतु तुम ने उसे योनें की मांद व्रनाइ।
१८ तव्र अघापकों और पनघान याजकों ने सुन के उसे नास कनने
का सोय कीया कयोंकी वे उसे डनते थे इस कानन की साने
१९ लोग उसके उपदेस से व्रीसमीत ऊए थे। और जव्र सांह ऊइ
२० वुह नगन से व्राहन गया। और व्रीहान का, जव्र वे जाते थे,
२१ उनहों ने उस गुलन पेड़ का जड़ से सुप्पा देप्पा। और पतनस
ने येत कनके उसे कहा की हे गुनु देप्पीये यह गुलन पेड़,
२२ जीसे आप ने सनाप दीया, सुप्प गया है। यसु ने उतन देके
२३ कहा की इसन पन व्रीसवास नप्पो। कयोंकी मैं तुमहें सत
कहता ऊं की जो कोइ इस पहाड़ का कहे की सनक जा और
समुदन में गीन पड़ और अपने मन में संदेह न कने पनंतु
पनतीत नप्पें की जो मैं कहता ऊं सो हो जाएगा ते जो कुछ
२४ वुह कहेगा सो पावेगा। इस लीये मैं तुमहें कहता ऊं की
पनानथना में जो कुछ तुम मांगोगे व्रीसवास कना की हम पाते
२५ हैं और तुम पाओगे। और जव्र तुम पनानथना कनने का
प्पड़े होओ ते यदी तुम कीसी पन कुछ अपव्राद नप्पते हो ते
छमा कनो जीसतें तुमहाना पीता भी, जो सनग में है तुमहाने
२६ अपनाघ छमा कने। पनंतु यदी तुम छमा न कनोगे ते तुम-
हाना पीता भी, जो सनग में है तुमहाने अपनाघों का छमा न
२७ कनेगा। और वे फेन यनोसलीम में आये और जव्र वुह
मंदीन में फीनता था पनघान याजक और अघापक और
२८ पनायीन उस पास आये। और उसे कहा की तु कीस पनाकनम
से यह कानज कनता है ? और तुहे यहकानज कनने का कीस
२९ ने पनाकनम दीया ?। यसु ने उतन देके उनहें कहा की मैं

तुमहें भी ऐक ब्रात पुछता ऊं मुझे उतन देओ तो मैं तुनहें
१० कऊंगा की कौन पनाकनम से य़ह कानज कनता ऊं। य़हीया
११ का सनान सनग से था की मनुप्पन से? मुझे उतन देओ। तब्र
वे य़ह कहके आपुस में ब्रीयानने लगे की जो हम कहें की
सनग से तो वुह कहेगा की फेन तुम ने उसकी पनतीत कय़ों
१२ न की?। पनंतु य़दी हम कहें की मनुप्पों से तो लोगों से
डनते हैं कय़ोंकी सब्र य़हीय़ा को नीसचय़ भवीसदब्रकता
१३ जानते थे। तब्र उनहों ने उतन देके य़सु से कहा की हम
नहीं कह सकते औन य़सु ने उतन में उनहें कहा की मैं
भी तुमहें नहीं कहता की मैं कौन पनाकनम से य़ह कानज
कनता ऊं।

१२ ब्रानहवां पनब्र।

दाप्प की ब्रानी का दीनीसटांत १—१२ कन देने
का उतन १३—१७ फेन उठने के ब्रीप्पय़ का उतन
१८—२७ ब्रैवसथा की पहीली अगय़ा का ब्राप्पय़
२८—३४ मसीह कीसका पुतन है ३५—३७ अघा-
पकों के कपट से लोगों को चौकस कनता है
३८—४० कंगाल ब्रीधवा की दो अघी का ब्रप्पान
४१—४४।

१ औन वुह उनहें दीनीसटांतों में कहने लगा की कीसी मनुप्प
ने दाप्प की ऐक ब्रानी लगाइ औन आस पास ब्राड़ा बांधा औन
कोलऊ प्पोदा औन गढ़ ब्रनाय़ा औन मालीय़ों को ठीका देके
२ दुन देस को यला गय़ा। औन समय़ में उसने ऐक सेवक को
मालीय़ों के पास भेजा की मालीय़ों से दाप्प की ब्रानी का फल
३ पावे। पन उनहों ने पकड़ के उसे माना औन छुछा फेन
४ दीय़ा। फेन उसने उनके पास दुसने सेवक को भेजा औन

उनहों ने उसे पथनों से माना श्रोन सीन फोड़ा श्रोन अपमान
५ कनके फेन दीया। फेन उसने तीसने को भेजा श्रोन उनहों
ने उसे मान डाला अनु श्रोन वक्तनों को माना श्रोन कीतनों
६ को वध कीया। अव उसका एक ही अती पीनय पुतन नहगया
उसने अंत में यह कह के उसे भी उनके पास भेजा की वे मेने
७ पुतन का आदन कनेंगे। पनंतु उन मालीयों ने आपुस में कहा
की यह अधीकानी है आओ इसे मान डालें श्रोन अधीकान
८ हमाना हो जायगा। श्रोन उनहों ने उसे पकड़ के मान डाला
९ श्रोन दाप्प को वानी के वाहन फेंक दीया। इस कानन दाप्प
की वानी का सामी कया कनेगा? वुह आवेगा श्रोन उन
मालीयों को नास कनेगा श्रोन दाप्प की वानी श्रोनों को देगा।
१० श्रोन यह जो लीप्पा है तुम ने नहीं पढ़ा की जोस पथन को
थवइयों ने नीकमा ठहनाया से कोने का सीना ऊआ?।
११ यह इसन का कानज है श्रोन हमानी दीनीसट में आसयनजीत
१२ है। श्रोन उनहों ने यहा की उसे पकड़ लेवें पनंतु लोगों से
डने कयोंकी वे जान गये की उसने यह दीनीसटांत उनके
१३ वीप्पय में कहा श्रोन वे उसे छोड़ के यले गये। फेन उनहों
ने कइ फनीसीयों श्रोन होनुदीसीयों को उसके पास भेजा की
१४ वयन में उसे वझावें। श्रोन आके उनहों ने उसे कहा की हे
गुनु हम जानते हैं की आप सये हैं श्रोन कीसी का प्पटका
नहीं नप्पते कयोंकी आप मनुप्पों की पनगट दसा को नहीं
मानते पनंतु इसन के मानग को सयाइ से सीप्पाते हैं कैसन को
१५ कन देना जोग है अथवा नहीं?। हम देवें अथवा न देवें?
पनंतु उसने उनके कपट को देप्प के उनहें कहा की मेनी पनीछा
१६ कयों कनते हो? मुझे दीप्पाने को एक मुकी लाश्रो। श्रोन
वे लाये तव उसने उनहें कहा की यह कीसकी मुनत श्रोन
१७ छाप है? उनहों ने उसे कहा की कैसन की। यसु ने उतन
देके उनहें कहा की जो वसतु कैसन की हैं कैसन को श्रोन

जो की इसन की है इसन को देखो और वे उस से ब्रीसमीत
१८ झुए। तब्र जादुकी, जो कहते हैं की जी उठना नहीं है, उस
१९ पास आये और यह कहके उसे पुछा। की हे गुन, हम ने लीये
मुसा ने लीप्पा है की यदी कोसी का भाइ मने और पतनी को
नीनब्रंस छोड़ जाय तो उसका भाइ उसकी पतनी को लेवे और
२० अपने भइ के लीये ब्रंस यलावे। अब्र सात भाइ थे और
२१ पहीले ने पतनी की और न नब्रंस मनगया। तब्र दुसने ने उसे
लीया और मन गया वह भी कोइ ब्रंस न छोड़ गया और
२२ इसी नीत से तीसने ने भी। और सातों ने उसे लीया और
कोइ ब्रंस न छोड़ गया सब्र के पीछे वुह इसतीनी भी मन गइ।
२३ इस लीये जी उठने में जब्र वे उठेंगे वुह उनमें से कीस की पतनी
२४ होगी? कयोंकी सातों ने उसे पतनी कीया था। यसु ने उतन
देके उनहें कहा की तुम इस कानन नहीं युक कनते की लीप्पे
२५ झुए को और इसन के समनथ को नहीं जानते?। कयोंकी
जब्र वे मीनतु से उठेंगे वे ब्रीवाह नहीं कनते और ब्रीवाह में
२६ नहीं दीये जाते हैं पनंतु सनग के दुतों के समान हैं। और
मीनतकों के जी उठने के ब्रीप्पय में तुम ने मुसा की पुसतक में
नहीं पढ़ा की झाड़ी में इसन उसे कैसा यह कहके ब्रोला की
मैं इब्रनाहीम का इसन और इसहाक का इसन और याकुब्र
२७ का इसन?। वुह मीनतकों का इसन नहीं पनंतु जीवतों का
२८ इसन है इस लीये तुम ब्रझुत युक कनते हो। तब्र अधापकों
में से एक आया और उनहें आपस नें यनया कनते सुनके
देप्पा की उस ने उनहें ठीक उतन दीया उसने उसे पुछा की
२९ सानी अगयाओं में सनेसठ कौनसी है?। यसु ने उसे उतन
दीया की सब्र से सनेसठ अगया यह की सुनो हे इसनाइल पन-
३० मेसन हमाना इसन एक पनमेसन है। और तु अपने साने
मन से और अपने साने पनान से और अपने साने अंतःकनन
से और अपने साने ब्रल से पनमेसन अपने इसन को पीआन

३१ कन यही पहली अगया है। और दुसनी इसी के समान है
की तु अपने पनोसी को अपने समान पोआन कन इन से और
३२ कोइ वड़ी अगया नहीं। तव उस अचापक ने उसे कहा की
अछा हे गुनु आप ने सत कहा है कयोंकी ऐकही इसन है और
३३ उसे छोड़ दुसना कोइ नहीं। और उसे साने अंतःकनन से
और सानी वुध से और साने पनान से और सानी सामनथ से
पीआन कनना और पनोसीयों को अपने समान पीआन कनना
३४ यह साने जग और होम से अती वड़ा है। और जव यसु
ने देष्पा की उसने वुध से उतन दीया तो उसने उसे कहा की
तु इसन के नाज से दुन नहीं और उसके पीछे कोइ मनुष्प का
३५ हीयाव न ऊआ की उसे पुछे। और यसु मंदीन में उपदेस
कनते ऊऐ उनहें पुछा की अचापक कयों कहते हैं की मसीह
३६ दाउद का पुतन है?। कयोंकी दाउद ने आपही घनमातमा
में होके कहा की पनमेसन ने मेने पनभु से कहा की तु मेने
दहीने हाथ वैठ जव लों मैं तेने वैनीयों को तेने पांव की पीढ़ी
३७ कनुं। सो दाउद तो आपही उसे पनभु कहता है परंन वह
उसका पुतन कयोंकन है? और सामानय लोग आनंद से उसे
३८ सुनते थे। और उसने अपने उपदेस में उनहें कहा की अचाप-
कों से चौकस नहो जो लमवे वसतन पहीन के चलने की और
३९ हाट में नमसकानों की। और मंडलीयों में पनघान आसनों
४० की और जेवनानों में सनेसठ सथानों की पनीत नप्पते हैं। जो
वीघवा के घनों को नींगलते हैं और छल से पनानथना को
४१ वढ़ाते हैं उनको वऊत वड़ा दंड होगा। और यसु भंडान
के संमुप्प वैठ के देप्प नहा की लोग भंडान में नोकड़ कयोंकन
४२ डालते हैं और वऊतेने जो घनमान थे वऊत डालते थे। तव
ऐक कंगाल वीघवा ने दो छदाम, जो मोल के ऐक अघेला होता
४३ है डाले। और उसने अपने सीष्पों को वुला के उनहें कहा की
मैं तुमहें सत कहता ऊं की औनहोंने भंडान में डाला है इस

४४ कंगाल व्रीधवा ने उन सभों से अधीक डाला। कयोंकी सभों ने अपनी अधीकाइ से डाला पनंतु इसने अपनी कंगालपना से जो कुछ नप्पती थी अपनी जीवका डाला।

१३ तेनहवां पनव्न।

यनोसलीम के नसट होने की भवीस व्रानी १—२ औान यीनह औान व्रीपत ३—२३ औान मसीह के आने पन कया कया व्रीतेगा २४—२७ गुलन पेड़ का दीनीसटांत २८—३१ उस दीन को औान घड़ी को कोइ नहीं जानता औान यौकस होने का उपदेस ३२—३७।

१ औान जव्र वुह मंदीन से व्राहन जाता था उसके सीप्पों में से एक ने उसे कहा की हे गुन देप्पीये कैसे कैसे पथन औान कैसी २ जोड़ाइयां। यसु ने उतन देके उसे कहा की तू ये व्रड़ी जोड़ाइयां देप्पता है यहां एक पथन दुसने पन न छुटेगा जो गीनाया ३ न जाय। औान जव्र वुह जलपाइ के पहाड़ पन मंदीन के संतुप्प व्रैठा था पतनस औान याकुव्र औान युहना औान अंदनयास ने एकानत में उसे पुछा। की हमें कहीये की ये व्रातें कव्र होंगी ? औान इन सभों के पुने होने का कया यीनह है ?। ५ यसु उतन देके उनहें कहने लगा की यौकस नहो की कोइ ६ तुमहें छल न देवे। कयोंकी व्रहुतेने यह कहके मेने नाम से आवेंगे की मैं ऊं औान व्रहुतों को छलेंगे औान जव्र तुम ७ संगनाम की व्रात। औान संगनाम का ऊहा सुनो तो व्रयाकुल मत होइयो कयोंकी उनका होना अवेस है पनंतु अभी अंत ८ नहीं है। कयोंकी लोग लोग पन औान नाज नाज पन यढेंगे औान अनेक सथान में भुयाल होंगे औान अकाल औान कलेस ९ होंगे ये दुप्पों के आनंभ हैं। पनंतु आप आप को यौकस नप्पो।

कय़ोंकी वे तुमहें सभाश्रों में सैांपेंगे श्रैान तुम मंडलीय़ों में मानेजाश्रोगे श्रैान उनके व़ीनोघ साप्पी होने के लीय़े मेने नाम के कानन तुम श्रघछों श्रैान नाजाश्रों के श्रागे पङंयाय़े जाश्रोगे।
१० श्रैान श्रवस है की पहीले मंगल समायान समसत जातगनों में
११ पनयाना जाय़। पनंतु जव़ वे लेजाय़ें श्रैान तुमहें सैांपें श्रागे से यीनता मत कनो की हम कय़ा कहेंगे श्रैान श्रागे से सोय मत कनो पनंतु जो कुछ तुमहें उस घड़ी दीय़ा जाय़ वही कहीय़ो कय़ोंकी तुम नहीं जो कहते हो पनंतु घनमातमा।
१२ श्रैान भाइ भाइ को श्रैान पीता पुतन को घात के लीय़े पकड़वाय़ेगा श्रैान व़ालक माता पीता के व़ीनोघ उठेंगे श्रैान उनहें
१३ घात कनवावेंगे। श्रैान मेने नाम के लीय़े सव़ तुमसे व़ैन
१४ कनेंगे पनंतु जो श्रंत लों सहेगा सो तनान पावेगा। पनंतु जव़ तुम नास की घीनीत को देप्पो जीसके व़ीप्पय़ में दानीय़ाल भवीसदव़कता ने कहा है जहां उसे जोग नहीं तहां प्पड़ा है जो पढ़ता है सो समहे तव़ जो य़हूदीय़ः में होंगे सो पहाड़ों को
१५ भागें। श्रैान जो कोठे पन होगा सो घन में न उतने की पैठ के
१६ श्रपने घन से कोइ व़सतु नीकाले। श्रैान जो प्पेत में होवे सो
१७ श्रपने व़सतन को उठाने के लीय़े पीछे न फीने। पनंतु हाय़ उन पन जो उन दीनों में गनभनी श्रैान उन पन जो दुघ पीला-
१८ तीय़ां होंगी। श्रैान पनानथना कनो की तुमहाना भागना
१९ जाड़े में न हो। कय़ोंकी उन दीनों में ऐसा कसट होगा जैसा की सनीसट के श्रानंभ से, जो ईसन ने उतपंन कीय़ा, श्रव़ लों
२० न ऊश्रा श्रैान न होगा। श्रैान य़दी पनमेसन उन दीनों को न घटाता तो कोइ पनानी उघान न पाता पनंतु चुने ऊश्रों के हेतु जीनहें उसने छांट नप्पा है उसने उन दीनों को घटाय़ा
२१ है। श्रैान तव़ य़दी कोइ तुमहें कहे की देप्पो मसीह य़हां
२२ श्रथवा देप्पो वहां है पनतीत मत कनीय़ो। कय़ोंकी झुठे मसीह श्रैान झुठे भवीसदव़कता नीकलेंगे श्रैान लछन श्रैान

आसयनज दीप्पावेंगे की यदी होनहान होता तो युने ऊओं
२३ को भी भनमावते। पनंतु सैांयेत नहो देप्पो मैं ने तुमहें आगे
२४ से सव्र व्रात कह दी है। पन उन दीनों में उस कसट के पीछे
सुनज अंघीयाना होगा ओान यंदनमा अपनी जोत न देगा।
२५ ओान सनग से तानें गीनेंगे ओान सनग की दीनढ़ता हील
२६ जायेंगी। ओान तव्र वे मनुप्प के पुतन को मेघों पन व्रड़े पना-
२७ कनम ओान प्रेसनय्र से आते देप्पेंगे। ओान तव्र वृह अपने
दुतों को भेजेगा ओान अपने युने ऊओं को यानों पवन से पीन-
२८ थीवी के सीवाने से सनग के सीवाने लों प्रेकठे कनेगा। अव्र
गुलन पेड़ से प्रेक दीनीसटांत सीप्पो जव्र उसकी डाली अव्र लों
कोमल है ओान पते नीकालती हैं तुम जानते हो की गनमी
२९ नीकट है। सो इसी नीत से जव्र देप्पो की यह व्रातें आ
३० पऊंयीं जाने की वुह नीकट है अनथात दुवानों पन। मैं तुमहें
सत कहता ऊं कीं यह पीढ़ी व्रीत न जायगी जव्र लों यह सानी
३१ व्रातें न होलें। सनग ओान पीनथीवी टल जायेंगी पनंतु मेने
व्रयन न टलेंगे।

३२ पनंतु उस दीन ओान उस घड़ी के व्रीप्पय्र को कोइ मनुप्प
नहीं जानता हां न सनगीय दुत न पुतन केवल पीता।
३३ तुम सैांयेत नहो ओान पनानघना कनो कयोंकी तुम नहीं
३४ जानते की समय कव्र है। जैसे प्रेक मनुप्प ने दुन की जातना
कनते ऊप्रे अपने घन को छोड़ा ओान अपने सेवकों को पना-
कनम दीया ओान हन प्रेक मनुप्प को उस का कानज ओान
३५ दुवान पाल को यैाकस होने की अगया दी। इस लीये यैाकस
नहो कयोंकी तुम नहीं जानते की घन का सामी कव्र आवेगा
सांझ को अथवा आघी नात को अथवा कुकुट व्रोलते ऊप्रे
३६ अथवा व्रीहान को। न होवे की वुह अयानक आके तुमहें
३७ सोते पावे। ओान जो मैं तुमहें कहता ऊं सो सव्र से कहता ऊं
की यैाकस नहो।

१४ चौदहवां परब्ब।

यीसु के बधन करने के लीये याजकों और अधापकों का परामरस १—२ एक इसतीरी परभु पर सुगंध डालती है ३—९ परभु को पकड़वाने के लीये यहूदा मोल करता है १०—११ परब्ब का सीध करना १२—१६ परभु अपने पकड़वैया को बताता है १७—२१ परभु की बीयारी को ठहराना २२—२५ सीष्यों के छोड़ जाने की और पतरस के मुकरने की भवीसदबानी २६—३१ बाटीका में परभु की पीड़ा और परारथना ३२—४२ परभु का पकड़वाया जाना ४३—५२ कायफा के आगे सौंपा जाना और उसकी दुरदसा होनी ५३—६५ पतरस उस से तीन बार मुकरता है ६६—७२।

१ दो दीन के पीछे अखमीरी रोटी का बीत जाना हुआ और परधान याजक और अधापक जुगत कर रहे थे की उसे कीस २ भांत छल से पकड़ लेवें और मार डालें। परंतु उनहों ने कहा ३ की परब्ब में नहीं न हो की लोगों में हुलर होवे। और वुह बैतहना में कोढ़ी समउन के घर में होते हुए जयों भोजन पर बैठा था एक इसतीरी बहुत मोल का सुगंध तेल सेत पथर की डीबीया में लाइ और उसने उस डीबीया को तोड़ा और ४ उसके सीर पर ढाल दीया। और वहां कीतने थे जो अपने मन में करोधीत होके बोले की इस सुगंध तेल का बीरथ ५ उठान कीस लीये हुआ?। कयोंकी वुह तीन सौ सुकी से अधीक को बेचा जाता और कंगालों को दीया जाता और वे ६ उस पर कुड़कुड़ाने लगे। पर यीसु ने कहा की उसे रहने दो उसे कयों छेड़ते हो उसने मुझ पर उतम कारज कीया।

७ है। कङ्गालों को सर्वदा अपने संग पाओगे और जब कभी चाहो उन पर भला कर सकोगे परंतु मुझे सर्वदा
८ न पाओगे। जो कुछ वुह कर सकी सो की, उसने मेरे गाड़ने
९ के लीये आगे से आके मेरे देह पर सुगंध तेल लगाया। मैं तुम्हें सत कहता हूं की सारे जगत में जहां कहीं यह मंगल समाचार परचारा जायगा यह भी जो इसने कीया है इसके
१० समरन के लीये कहा जायगा। तब उन बारह में से एक यहूदा असकरयूती उसे उन्हें पकड़वा देने के लीये परधान
११ याजकों के पास गया। और जब उन्हों ने सुना वे आनंदीत हुए और उसे रोकड़ देने को ठहराये तब वुह सोचने लगा
१२ की उसे कीस परकार से दांव में पकड़वा दे। और अख़-मीरी रोटी के पहीले दीन, जब वे बीत जाना बल करते थे उसके सीष्यों ने उसे कहा की आप कहां चाहते हैं की हम
१३ जाके सीच करें जीसतें आप बीतजाना खायें। उसने अपने सीष्यों में से दो को भेजा और उन्हें कहा की नगर में जाओ और वहां तुम्हें एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये हुए मीलेगा
१४ उसके पीछे पीछे जाइयो। और जहां कहीं वुह भीतर जाय उस घर के सामी से कहीयो की गुरु ने कहा है की वुह पाहुन साला कहां है जहां मैं अपने सीष्यन के संग बीतजाना खाउं ?।
१५ और वुह एक बड़ी उपरौटी कोठरी संवारी सुधारी तुम्हें
१६ दीखावेगा वहां हमारे लीये सीध करो। तब उसके सीष्य चले गये और नगर में जाके जैसा उसने कहा था वैसाही पाया
१७ और उन्हों ने बीतजान सीध कीया। और सांझ को वुह उन
१८ बारह के संग आया। और जब वे बैठके खाने लगे यसु ने कहा की मैं तुम्हें सत कहता हूं की तुम में से एक, जो मेरे
१९ संग खाता है मुझे पकड़वावेगा। तब वे कुढ़नेलगे और एक एक करके उसे कहने लगा की मैं हूं? और दूसरा बोला
२० क्या मैं हूं?। उसने उत्तर देके उन्हें कहा की बारह में

२१ से ऐक जो मेने संग थाली में हाथ व्रोनता है। जैसा उसक व्रीष्पय़ में लीप्पा है मनुप्प का पुतन जाता है ठीक पनंतु हाय़ उस मनुप्प पन जीस से मनुप्प का पुतन पकड़वाय़ा जाय़ उस मनुप्प के लीये भला होता की वुह कभी उतपंन न होता।

२२ औान जव्र वे प्पाते थे य़सु ने नोटी को लीय़ा औान धनव्राद कनके तोड़ा औान य़ह कहके उनहें दीय़ा की लेओ प्पाओ य़ह

२३ मेना देह है। फेन उसने कटोना लीय़ा औान धंमान के

२४ उनहें दीय़ा औान उन सभों ने उस से पीय़ा। तव्र उसने उनहें कहा की य़ह नये नय़म का मेना लोऊ है जो व्रऊतों के लीय़े

२५ व्रहाय़ा जाता है। मैं तुम्हें सत कहता ऊं की मैं दाप्प का नस फेन न पीउंगा जव्र लों मैं ईसन के नाज में उसे नय़ा पीउं।

२६ औान जव्र वे ऐक भजन गा चुके वे यलपाइ के पहाड़ पन

२७ गये। तव्र य़सु ने उनहें कहा की आज नात तुम सव्र मेने कानन ठोकन प्पाओगे कय़ोंकी लीप्पा है की मैं गड़ेनीये को

२८ मानुंगा औान भेड़ें छींन भींन हो जाय़ेंगी। पनंतु जी उठने के

२९ पीछे मैं तुम से आगे जलील को जाउंगा। पतनस ने उसे

३० कहा की य़दपी सव्र ठोकन प्पाय़ें तथापी मैं नहीं। य़सु ने उसे कहा की मैं तुझ से सत कहता ऊं की आज के दीन अनथात इसी नात को कुकुट के सव्रद कनने से आगे तु तीन व्रान मुझ

३१ से मुकन जाय़गा। पनंत वुह औान अती धुन से कहने लगा की य़दी आप के संग मेना मनना होवे मैं कीसी भांत आप से

३२ न मुकनुंगा उन सभों ने भी इसी नीत से कहा। तव्र वे ऐक सथान में, जीस का नाम जंसमन था, आय़े औान उसने अपने सीप्पन से कहा की जव्र लों मैं पनानथना कनुं तुम य़हां व्रैठो।

३३ तव्र वुह अपने संग पतनस औान य़ाकुव्र औान य़ुहना को ले कन

३४ व्रऊत धव्रनाने औान अती कुड़ने लगा। औान उनहें कहा की मेना पनान मनने लों अती दुप्पीत है तुम य़हां ठहनो औान

३५ जागते नहो। तब वुह थोड़ा आगे बढ़के भुम पन गीना
और पनाथना की, की यदी होनहान होय तो यह घड़ी
३६ मुझ से टल जाय। और कहा की हे बावा पीता सब कुछ तेने
बस में है यह कटोना मुझ से टाल दे तोभ पन भी मेनी याह
३७ नहीं पनंतु जो तु याहता है। तब वुह आया और उनहें
सोते पाया और पतनस से कहा की हे समउन तु सोता है?
३८ कया तु ऐक घड़ी न जाग सका?। जागते नहो और पनाथना कनो न हो की पनीछा में पड़ो, आतमा तो सोघ है ठीक
३९ पनंतु सनीन नीनबल। और वुह फीन गया और पनाथना
४० में वही बयन बोला। और जब वुह फीन आया उसने उनहें
फीन सोते पाया (कयोंकी उनकी आंखें भानी थीं) और वे
४१ न जानते थे की उसे कया उतन देवें। फीन वुह तीसने बान
आके उनसे बोला की अब सोते नहो और बीसनाम कनो बस
है घड़ी आ पहुंयी देखो मनुष्य का पुतन पापीयों के हाथ में
४२ पकड़वाया जाता है। उठो हम जायें देखो जो मुझे पकड़वाता
४३ है सो नीकट है। और तुनंत जब वुह कह नहा था उन
बानह में से ऐक यहुदा और उसके संग पनधान याजकों और
अधापकों और पनायीनों की ओन से ऐक बड़ी मंडली खड़ग
४४ और लाठीयां लेके आइ। और जीसने उसे पकड़वाया था
उसने उनहें यह कह के पता दीया की जीस कीसी को मैं युमु
४५ वुह वही है उसे पकड़ लेओ और यौकसी से ले जाओ। और
जोंहीं वुह आ पहुंया वुह तुनंत उसके पास जाके बोला की
४६ हे गुनु, हे गुनु, और उसका युमा लीया। तब उनहों ने उस
४७ पन हाथ घन के पकड़ लीया। और उन में से ऐक ने, जो
वहां खड़े थे, खड़ग खींय के पनधान याजकों के ऐक सेवक
४८ को माना और उसका कान उड़ा दीया। तब यसु ने उतन
देके उनहें कहा की जैसा योन के लीये खड़ग और लाठीयां
४९ लेके मुझे पकड़ने को नीकले हो?। मैं तो पनतीदीन तुमहाने

संग मंदीन में उपदेस कनता था श्रीन तुम ने मुझे न पकड़ा
५० पनंतु अवेस है की लीप्पा ज्ञआ पुना होवे। तव सव के सव
५१ उसे छोड़ के भाग गये। पनंतु वहां प्रेक तनुन मनुप्प उसके
पीछे यला जाता था जो सुती वसतन से नंगाइ को ढापे था श्रीन
५२ तनुनें ने उसे पकड़ लीया। श्रीन वुह सुती वसतन को छोड़
५३ के उन से नंगा भागा। तव वे यसु को पनघान याजक कने
ले गये श्रीन उसके संग समसत पनचान याजक श्रीन पनायीन
५४ श्रीन अघापक प्रेकठे थे। श्रीन पतनस पनचान याजक के घन
लें दुन से उसके पीछे पीछे गया श्रीन वुह सेवकों के संग वैठ के
५५ आग तापता था। तव पनघान याजक श्रीन सानी सभा यसु
५६ पन साप्पी ढुंढ़ते थे को उसे मान डालें पनंतु न पाये। कयोंकी
वज्ञतेनें ने उस पन झुठी साप्पी दी तथापी उनकी साप्पी प्रेक
५७ सां न मीली। श्रीन कइ प्रेक उठे श्रीन यह कहके उस पन
५८ झुठी साप्पी देने लगे। को हम ने उसे कहते सुना है की मैं
इस मंदीन को, जो हाथों से वनाया गया है, ढाउंगा श्रीन
५९ तीन दीन में प्रेक दुसना वीना हाथ से वनाउंगा। पनंतु तीस
६० पन भी उनकी साप्पी न मीली। तव पनचान याजक मघ में
प्पड़ा ज्ञआ श्रीन यह कहके यसु को पुछा को तु कुछ उतन
६१ नहीं देता ? ये तुझ पन कया कया साप्पी देते हैं ?। पनंतु
वुह युपका नहा श्रीन उतन न दीया पनघान याजक ने उसे
फेन पुछा श्रीन कहा की तु मसीह उस आनंदीत का पुतन है ?।
६२ तव यसु ने कहा की मैं ज्ञं श्रीन तुम मनुप्प के पुतन को पनाकनम
की दहीनी श्रीन वैठे श्रीन आकास के मेघों पन आते देप्पोगे।
६३ तव पनचान याजक ने अपने वसतनें को फाड़ा श्रीन कहा
६४ की अव हमें श्रीन साप्पीश्रों का कया पनयोजन है ?। तुम
ने यह पाप्पंडता सुनी कया सोयते हो ? उन सभों ने उस पन
६५ मान डालने के जोग अपनाघ ठहनाया। तव कीतने उस पन
थुकने श्रीन उसका मुंह ढांपने श्रीन उसे घुंसा मानने लगे श्रीन

उसे कहने लगे की भवीस कह और सेवकों ने उसे थपेड़े मारे।
६६ और जब पतरस नीचे सदन में था प्रधान याजक की दासीयों
६७ में से एक आई। और जब उसने पतरस को तापते देखा उस पर द्रीसट कर के बोली की तु भी यसु नासरी के संग था।
६८ परंतु यह कहके वुह मुकर गया की मैं नहीं जानता और नहीं बुझता की तु क्या कहती है तब वुह बाहर ओसारे में
६९ गया और कुकुट ने सब्द कीया। और एक दासी फेर उसे देख के उनसे, जो खड़े थे, कहने लगी की यह उन में से है।
७० और वुह फेर मुकर गया और तनीक पीछे फेर उन्हों ने, जो वहां खड़े थे, पतरस को कहा की सच मुच तु उन में से है
७१ क्योंकी तु जलीली है और तेरी बोली मीलती है। परंतु वुह स्राप देने और कीरीया खाने लगा की मैं इस मनुष्य
७२ को, जीसकी तुम कहते हो, नहीं जानता। और दुसरे बार कुकुट ने सब्द कीया तब पतरस ने उस बचन को, जो यसु ने उसे कहा था, समरन कीया की कुकुट के दो बार सब्द करने से आगे तु तीन बार मुझ से मुकर जायगा तब वुह उसका सोच करके रोने लगा।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब।

यसु का बांधा जाना और पीलातुस को सौंपा जाना १—५ बरब्बास का छुटना और क्रुस पर मारे जाने को यसु का सौंपा जाना ६—१५ मसीह के सीर पर कांटों का मुकुट रखना और बचन करने को ले जाना १६—२४ दो चोर के बीच में क्रुस पर खींचा जाना २५—३२ सुरज का अंधीयारा होना और यसु का प्रान तयागना

११—१७ मंदीन के घुंघट का फटना श्रौन सत पती का व्रोसवास ३८—३९ कीतनी इसतीनीयां यसु के कष्ट को देष्पती हैं ४०—४१ यसुफ के लोथ का मांगना श्रौन ग्रपनी समाध में गाड़ना ४२—४७।

१ श्रौन जोंहीं व्रीहान ऋश्रा पनधान य़ाजक पनायीनों श्रौन साने ग्रधापकों श्रौन सभा के पनधानों के संग पनामनस कनके
२ यसु को व्रांध के ले गये श्रौन पीलातुस को सौंप दीया। श्रौन पीलातुस ने उसे पुछा की तु यहूदीयों का नाजा है? उसने
३ उतन देके उसे कहा की तुहीं कहता है। तव्र पनधान य़ाजक उस पन व्रहुत से दोष्प देने लगे पनंतु उसने कुछ उतन न दीया।
४ तव्र पीलातुस ने यह कहके फेन उसे पुछा की तु कुछ उतन नहीं देता? देष्प वे कीतनी कुछ साष्पी तुझ पन देते हैं।
५ पनंतु तोभी यसु ने कुछ उतन न दीया यहां लों की पीलातुस
६ ने ग्रासयनज माना। ग्रव्र पनव्र में ऐक व्रंधुश्रा को, जीसे वे
७ याहते थे वुह छोड़ देता था। श्रौन व्रनव्रास नाम का ऐक जन था जो उनके संग, व्रंधन में था जीनहों ने उसके साथ
८ ऋलन कीया था श्रौन उस ऋलन में हतया की थी। तव्र जैसा वुह उनके लीये सदा कनता था मंडली यीला के वही उस से
९ मांगने लगी। पनंतु पीलातुस ने उतन में उनहें कहा की तुम याहते हो की मैं यहूदीयों के नाजा को तुमहाने लीये छोड़
१० देउं?। कयोंकी वुह जानता था की पनधान य़ाजकों ने उसे
११ डाह से सौंप दीया था। पनंतु पनधान य़ाजकों ने लोगों को
१२ उसकाया की वुह उनके लीये व्रनव्रास ही को छोड़ देवे। तव्र पीलातुस ने फेन उतन देके उनहें कहा की जीसे तुम यहूदीयों
१३ का नाजा कहते हो मैं उसे कया कनुं?। वे फेन यीला के
१४ व्रोले की उसे कुनुस पन मान। तव्र पीलातुस ने उनहें कहा

की कौस लीये उसने कया वुराइ की है? वे औन अतयंत
१५ यीलाये की उसे कुरुस पन मान। औन लोगों को शांत
कनने के लीये पीलातुस ने उनके लीये व्रनव्रास को छोड़ दीया
औन यसु को छड़ी मान के सैांप दीया की कुरुस पन माना
१६ जाय। तव्र जोधा उसे भीतन पनेतोनीयम नाम व्रैठक में ले
१७ गये औन उनहों ने सानी जथा को येकठे व्रुलाया। औन उसे
व्रैंगनी व्रसतन पहीनाया औन कांटों का मुकुट सजके सीन पन
१८ नष्पा। औन उसे नमसकान कनने लगे की हे यहुदीयों के
१९ नाजा पननाम। औन उनहों ने उसके सीन पन ननकट से
माना औन उस पन थुका औन घुठने टेक के उसे पननाम कीया।
२० औन उनहों ने उसे यौढ़ाके उस व्रैंगनी को उस पन से उताना
औन उसी का व्रसतन उसे पहीनाया औन कुरुस पन मानने
२१ के लीये उसे व्राहन ले यले। औन उनहों ने समउन कुनीनी
से व्रनव्रस उसका कुरुस उठवाया वुह सीकंदन औन नुफस
२२ का पीता था औन व्राहन से आके उधन से जाता था। औन वे
उसे जलजता व्रथान में लाये जीसका अनथ ष्पोपड़ी का सथान
२३ है। औन उनहों ने दाष्पनस सुन मीला के उसे पीने को दीया
२४ पनंतु उसने न लीया। औन उनहों ने उसे कुरुस पन ष्पोंय
के उसके व्रसतनों का भाग कीया औन उन पन योठी डाली
२५ की हन येक मनुष्प कौनसा लेवे। औन तीसनी घड़ी थी जव्र
२६ उनहों ने उसे कुरुस पन ष्पींया था। औन उसके लीये यह
२७ दोष्प पतन उपन लीष्पा की यहुदीयों का नाजा। औन उन-
हों ने उसके संग दो योनों को, येक को दहीनी औन दुसने
२८ को व्राइं औन कुरुस पन ष्पींया। तव्र वुह लीष्पा हुआ जो
२९ कहता है की वुह पापीयों में गीना गया पुना हुआ। औन
जो उधन से जाते थे उनहों ने उस पन ठठा कीया औन सीन
घुन घुन कहने लगे की "तु जो मंदीन को ढाता है औन तीन
३० दीन में व्रनाता है। आप को व्रया औन कुरुस से उतन आ।"।

११ इसी भांती से पनधान याजकों ने भी आपुस में अधापकों के संग ठठा करते कहा की "उसने औनों को व्रयाया आप को
१२ नहीं व्रया सकता। अव्र मसीह इसनाइल का नाजा कुनुस से उतन आवे की हम देप्पें औन व्रीसवास लावें" औन उनहों ने,
१३ जो उसके संग कुनुस पन प्पींचे गये, थे उसे दुनव्रयन कहा। औन छठवीं घड़ी से नवइं घड़ी लों साने देस में अंधीयाना छा गया।
१४ औन नवइं घड़ी में यसु ने व्रड़े रुव्रद से कहा की "प्रेली प्रेली लामा सव्रकतनी"? जीसका यह अनथ है की हे मेने इसन
१५ हे मेने इसन तु ने मुहे कयों छोड़ा है?। तव्र कइ उन में से, जो पास प्पड़े थे यह सुन के व्रोले की देप्पो वुह इलीयास को
१६ व्रुलाता है। औन प्रेक ने दौड़ के व्रादल के टुकड़े को सीनक से भना औन ननकट पन घन के पीने को दीया औन कहा की
रहने दे हम देप्पें यदी इलीयास उसे उतानने को आवेगा
१७।१८ तव्र यसु ने व्रड़ा सव्रद कनके पनान तयागा। औन मंदीन
१९ का घुंघट उपन से नीचे लों फट गया। औन जव्र उस सतपती ने देप्पा, जो उसके संमुप्प प्पड़ा था, की उसने प्रैसा सव्रद कनके पनान तयागा तो उसने कहा की यह मनुप्प सयमुय
४० इसन का पुतन था। वहां इसतीनीयां भी दुन से देप्प नहीं थीं जीन में मनीयम मुजदली औन छोटे याकुव्र औन युसा
४१ की माता मनीयम औन सालुमी थीं। (जव्र वुह जलील में था वे भी उसके पीछे पीछे जाती थीं औन उसकी सेवा कनती थीं) औन व्रहुत सी औन इसतीनयां थीं जो उसके संग उपन
४२ यनोसलीम को आइं थीं। औन जव्र सांझ हुइ (इस कानन
४३ की व्रनावनी थी अनथात व्रीसनाम से पहीले दीन)। प्रेक पनतीसठत मंतनी, जो इसन के नाज का भी व्राट जोहता था अनथात अनमतीया का युसफ आया औन उसने हीयाव
४४ से पीलातुस पास जाके यसु की लोथ मांगी। तव्र पीलातुस व्रीसमीत हुआ की वुह प्रैसा सीघन मन गया औन उस सतपती

४५ को युसा के पुछा कय़ा उसे मने अवेन ऊइ?। तव्र उसने
४६ सतपती से वुह के लोथ युसफ़ के दी। और उसने हीना
व्रसतन मोल लीया और उसे उतान के कपड़े में लपेटा और
ऐक समाघ में, जो पथन में ष्पोदा गय़ा था नष्पा और समाघ
४७ के मुंह पन ऐक पथन ढुलका दीय़ा। और मनीय़म मुजदली
और युसा की माता मनीय़म ने देष्प नष्पा की वुह कहां धना
गय़ा था।

१६ सोलहवां पनव्र।

य़सु के जी उठने का संदेस दुत देता है १—८
वुह मनीय़म पन पनगट होता है ९—११ दो
सीष्पों के और परेन गय़ानह को दीष्पाइ देता
है और अगय़ा कनता है १२—१८ सनग को
जाता है १९ मंगल समा यान का पनयान
होना २०।

१ और जव्र व्रीसनाम व्रीत गय़ा मनीय़म मुजदली और
य़ाकुव्र की माता मनीय़म और सालमी ने सुघंघ दनव्र मोल
२ लीय़ा जोसते आके उस पन लगावें। और व्रड़े तड़के अतवान
के अठवारे के पहीले दीन सुनज उदय़ होते वे समाघ पन
३ आइं। और आपुस में कहने लगीं की हमाने कानन समाघ
४ के मुंह से पथन कौन ढुलकावेगा?। और जव्र उनहों ने
दीनीसट की तो कय़ा देष्पती हैं की पथन ढुलकाय़ा ऊआ
५ था कय़ोंकी वुह व्रऊत व्रड़ा था। और समाघ में पैठ के
उनहों ने ऐक तनुन मनुष्प को, उजला लंव्रा व्रसतन पहीने
६ दहीनी ओन व्रैठे ऊऐ देष्पा और डन गइं। तव्र उसने
उनहें कहा की मत डनो तुम य़सु नासनी को, जो कुनुस पन

माना गय़ा था, ढुंढतीय़ां हो वुह जी उठा है य़हां नहीं है
७ उस सथान में देष्पो जहां उनहों ने उसे नष्पा था। पनंतु
जाके उसके सीष्पों से ऐान पतनस से कहो की वुह तुमहाने
आगे जलील को जाता है जैसा उसने तुमहें कहा था तुम उसे
८ वहां देष्पोगे। ऐान वे तुनंत नीकल के समाघ से दैाड़ीं कय़ों-
की वे कंपीत ऐान व्रीसमीत थीं ऐान कीसी से कुछ न कहा
९ कय़ोंकी वे डनगइं थीं। अव्र तड़के अठवाने के पहीले जव्र
वुह उठा तो मनीय़म मुजदली को पहीले दीष्पाइ दीय़ा जीस
१० से उसने सात पीसाचों को दुन कीय़ा था। वुह जाके जो उस
के संग नहते थे ऐान शोक व्रीलाप कन नहे थे उसने उनहें
११ कहा। ऐान जव्र उनहों ने सुना की वुह जीता है ऐान
१२ उसे दीष्पाइ दीय़ा पनतीत न की। उसके पीछे वुह दुसने
नुप में उन में से दो को, जव्र वे व्राहन जाते थे दीष्पाइ दीय़ा।
१३ ऐान उनहों ने जाके नहे ऊऐां को कहा उनहों ने उनकी भी
पनतीत न की।

१४ उसके पीछे वुह उन गय़ानहों को, जव्र वे भोजन पन व्रैठे
थे दीष्पाइ दीय़ा ऐान उनके अव्रीसवास ऐान मन की कठोनता
पन ओलाना दीय़ा इस कानन की उनहों ने उनकी, पनतीत
१५ न की जीनहों ने उसे जी उठने के पीछे देष्पा था। तव्र उस
ने उनहें कहा की साने जगत में जाओ ऐान हन एक मनुष्प
१६ के पास मंगल समाचान पनचानो। जो व्रीसवास लाता है
ऐान सनान कीय़ा गय़ा है सो उघान पावेगा पनंतु जो व्रीस-
१७ वास नहीं लाता उस पन दंड की अगय़ा की जाय़ग। ऐान
वे जो व्रीसवास लाते हैं उन में य़ह लछन होंगे की वे मेने
नाम से पीसाचों को दुन कनेंगे ऐान नइ नइ भाष्पा व्रोलेंगे।
१८ वे सांपों को उठा लेंगे ऐान य़दी वे कोइ मानु व्रीष्प पीवेंगे
तो उनहें दुष्प न देगी वे नोगीय़ों पन हाथ नष्पेंगे ऐान वे
चंगे हो जाय़ेंगे।

१९ सो जब़ पनभु उनसे कह चुका वुह सनग पन उठाय़ा
२० गय़ा औन ईसन की दहीनी ओंन बैठा। तब़ उनहों ने
ब़ाहन नीकल के हन एक सथान में उपदेस कीय़ा औन पनभु
सहाय़ कनता था औन ब़चन को लछन से दीनढ कनता
था आमीन॥

मंगल समायान लुका नयीत।

---

१ पहीला पनब्र।

१ हे महामहीमन साउफलस जैसा की ब्रुऊतेनें ने कमन ब्रांधी की उन सयाइय़ों के समायान को जो हीनढ़ पनमानो से २ हम में सथीन कीय़ा गय़ा ब्रनन कनें। जैसा की उनहें ने जो आनंभ से ब्रयन के पनतछ साप्पी चैान सेवक थे हम को ३ सोंपा। आनंभ से उनका ठीक गय़ान नप्प के मुहे भी चछा ४ लगा की ब्रीघ से तुमहाने कानन लीप्पुं। की तु उन ब्रातें ५ के न:सयय़ को जोन में तु ने उपदेस पाय़ा है जाने। य़ऊदीय़: के नाजा हीनुदीस के समय़ में आब्रीय़ा की पानी से ज़कनीय़ा नाम एक य़ाजक था चैान उसकी पतनी हानुन की पुतनीय़ें ६ में से थी चैान उसका नाम अलीसब्रा था। चैान वे दोनें इसन के संमुप्प धनमी चैान पनभु की समसत अगय़ा चैान ७ नीत पन नीनदोप्प यलनेवाले थे। चैान उनके ब्रालक न था इस कानन की अलीसब्रा ब्रांह थी चैान वे दोनें हीनी थे। ८ चैान ऐसा ऊआ की जब्र वुह य़ाजक का कानज इसन के आगे ९ अपनी पानी की नीत पन कनता था। चैान य़ाजक की नीत के समान उसकी पानी पड़ी की पनभु के मंदीन में पनवेस १० कन के सुगंध जलावे। चैान लोगें की समसत मंडली सुगंध ११ जलाने के समय़ में ब्राहन पनानथना कनती थी। चैान इसन का दुत सुगंध ब्रेदी के दहीने चैान प्पड़ा ऊआ उसे दीप्पाइ

११ दीया। श्रौन जव़ ज़कनीया ने देष्पा वुह व्याकुल ऊश्रा
१२ श्रौन उसे डन लगा। पनंतु दुत ने उसको कहा की हे ज़कनीया
मत डन कयोंकी तेनी पनानथना सुनी गई श्रौन तेनी पतनी
श्रलीसवा तुझ से पुतन जनेगी श्रौन तु उसका नाम यूहीया
१४ नष्पना। श्रौन तुझे श्रानंद श्रौन मंगल होगा श्रौन वऊतेने
१५ उसके जनम के कानन से मगन होंगे। कयोंकी वुह पनभु
की दीनोसट में वड़ा होगा श्रौन दाष्प का नस श्रौन मदीना
न पीएगा श्रौन वुह श्रपनी माता के गनभ में से धनमातमा
१६ पुनन होगा। श्रौन वुह इसनाइल के संतानों से वऊतों को
१७ उनके पनभु इसन के श्रोन फेनेगा। श्रौन वुह उसके श्रागे
इलीयास के श्रातमा श्रौन सामनथ से चलेगा की पीता के मन
को पुतनों के श्रोन श्रौन श्रगया भंग कननेवालों को श्रधनमीयों
के सभाव के श्रोन फेन के पनभु के लीये एक लोग को ठीक
१८ कनके सुधाने। श्रौन ज़कनीया ने उस दुत से कहा की
मैं इस को कैसे जानुं कयोंकी मैं पुननीयां ऊं श्रौन मेनी पतनी
१९ भी दीनो है। तव़ दुत ने उतन देके उसको कहा मैं जव्न-
इल ऊं जो इसन के पास ष्पड़ा नहता ऊं श्रौन भेजा गया की
तुझे कऊं श्रौन यह मंगल समाचान तेने पास पऊंचाउं।
२० श्रौन देष्प तु गुंगा हो जायगा श्रौन जीस दीन लों ये सव
वातें पुनी न हों वोल न सकेगा इस कानन की तुने मेने वचन
२१ पन जो श्रपने समय में संपुनन होंगे वीसवास न कीया। श्रौन
लोग ज़कनीया के लीये ठहन नहे थे श्रौन श्रासचनज कनते
२२ थे की उसने मंदीन में वीलंव कीया। श्रौन वुह वाहन नीकल
के उनसे वोल न सका तव़ उनहों ने जाना की उसने मंदीन
में कुछ दनसन देष्पा कयोंकी वुह उनहें सैन कनता था श्रौन
२३ गुंगा नह गया। श्रौन ऐसा ऊश्रा की जव़ उसके सेवकाई के
२४ दीन पुन ऊए वुह श्रपने घन को चला गया। श्रौन इनही
दीनों के पीछे उसकी पतनी श्रलीसवा गनभनी ऊई श्रौन श्रपने

२५ को पांच महोंने लों यह कह के छीपाया। की जीन दीनो
में इसन ने मुहू पन दीनीसट की यूं वेवहान कीया की लोगों
२६ के आगे मेने अपमान का मीटावे। औान छठवें महीने जलील
२७ के एक नगन में जो नासन: कहावता था इसन के ओान से
जवनइल दुत एक कनया के पास भेजा गया जो दाउद के वंस
के एक पुनुष्य युसफ से वयनदता ऊड़ औान उस कनया का
२८ नाम मनीयम था। औान उस दुत ने भीतन आके उस को
कहा हे महा अनुगीनह की गइ पननाम पनभु तेने संग है
२९ इसतीनीयों में तु धंन है। तव वुह देष्प के उसके वयन से
वयाकुल ऊइ औान सोयने लगी की यह कैसा पननाम है।
३० तव दुत ने उसे कहा हे मनीयम मत डन कयांकी तुने इसन
३१ से अनुगीनह पाया। औान देष्प तु गनभनी होगी औान एक
३२ पुतन जनेगी औान उसका नाम यसु नष्पेगी। वुह महान होगा
औान अतयंत महान का पुतन कहावेगा औान पनभु इसन उसे
३३ उसके पीता दाउद का सींहासन देगा। औान वुह सनवदा
याकुव के घनाने पन नाज कनेगा औान उसके नाज का अंत न
३४ होगा। तव मनीयम ने दुत से कहा की यह कयोंकन होगा
३५ कयोंकी मैं पुनुष्य को नहीं जानती। तव दुत ने उतन देके
उसे कहा की घनमातमा तुहू पन उतनेगा औान अतयंत महान
के सामनथ की छाया तुहू पन पड़ेगी इस लीये वुह पवीतन वंस
३६ जो तुहू से उतपंन होगा इसन का पुतन कहावेगा। औान
देष्प तेने कुटुंव अलीसवा को भी वुढापे में पुतन का गनभ है
औान यह उस का जो वांझ कहावती थी छठवां महीना है।
३७।३८ कयोंकी इसन से कोइ वात अनहोनी नहीं है। तव
मनीयम वोली की देष्प इसन की दासी तेने वयन के समान
३९ मेने लीये होय तव दुत उस पास से जाता नहा। औान उनहीं
दीनों में मनीयम उतावली से उठके पनवत देस यहूदा के एक
४० नगन में गइ। औान जकनीया के घन में जाके अलीसवा को

४१ पननाम कीया। श्रीन ऐसा ऊश्रा की जव् श्रलीसवा ने
मनोयम का पननाम सुना वालक उसके पेट में उछला श्रीन
४२ श्रलीसवा घनमातमा से ज्ञन गइ। श्रीन वुह वड़े सवद से
वोली की तु इसतीनीयों में घंन श्रीन तेने गनभ का फल
४३ घंन। श्रीन मेने लीये यह केसे ऊश्रा की मेने पनभु की माता
४४ मेने पास श्राइ। देष्प जेउं तेने पननाम का सवद मेने कान
४५ लों पऊंया वालक मेने गनभ में श्रानंद के माने उछला। श्रीन
घंन वुह जो वीसवास लाइ को वे वातें जो इसन के श्रीन से
४६ उसे कही गइ हैं संपुनन होंगी। तव मनीयम ने कहा की
४७ मेना पनान इसन का महीमा कनता है। श्रीन मेना श्रातमा
४८ मेने मुकत दाता इसन से श्रानंद ऊश्रा। कयोंकी उसने श्रपनी
दासी की छोटाइ पन दीनीसट की, की देष्प इस समय से समसत
४९ लोग मुझे घंन कहेंगे। कयोंकी जो सामनथी है उसने मुझ पन
५० वड़ी कीनपा की। श्रीन उसका नाम पवीतन है श्रीन उसकी
५१ दया उन पन जो उसे डनते हैं पीढ़ी से पीढ़ी लों है। उसने
श्रपने वांह का वल दीष्पलाया श्रीन श्रहंकानीयों को उनके
५२ मन की भावना में छींन भींन कीया। उसने वलवंतों को
५३ श्रासनों से उतान दीया श्रीन छोटों को वढ़ाया। उसने
भुष्पों को श्रछी वसतु से संतुसट कीया श्रीन घनी को छुछे हाथ
५४ भेजा। उसने श्रपनी सनवदा की दया को समनन कनने को
५५ श्रपने दास इसनाइल पन सहाय कीया। जैसा उसने हमाने
५६ पीता इवनाहीम श्रीन उसके वंस को कहा। श्रीन मनीयम
महीना तीन एक उसके संग नही फेन श्रपने घन को श्राइ।
५७ श्रव श्रलीसवा के जंने के दीन पुने ऊये श्रीन वुह एक पुतन
५८ जनी। तव उसके पनोसीयां श्रीन उसके कुटुंवों ने सुना की
पनभु ने उसपन वड़ी कीनपा की श्रीन उनहों ने उसे वघाइ
दी श्रीन ऐसा ऊश्रा की वे श्राठवें दीन उस वालक का ष्पतनः
५९ कनने को श्राये। श्रीन वे उसका नाम जकनीया जो उसके

६० पीता का था नष्पने लगे। पनंतु उसकी माता ने उतन देके कहा
६१ की नहीं उसका नाम य़हीय़ा नष्पा जाय़। तव्र उनहों ने उसे
कहा की तेने घनाने में ऐसा कोइ नहीं जो इस नाम से कहावता
६२ है। तव्र उनहों ने उसके पीता कं श्रोन सैन कीय़ा की वुह
६३ उसका नाम कय़ा नष्पा याहत है। तव्र उसने पटीश्रा मंगा
के य़ह व्रात लीष्पी की उसका नाम य़हीय़ा है तव्र उन सभों ने
६४ श्रासयनज माना। श्रोन तुनंत उसका मुंह श्रोन जीभ भी
६५ प्पुल गइ श्रोन उसने व्रकता होके इसन की सतुत की। तव्र
उनपन जो उनके श्रास पास नहते थे डन पड़ा श्रोन इन सव्र
व्रातों की यनया य़हुदीय़ः के पनव्रत के समसत देस में हुइ।
६६ श्रोन सव्र जो सुनते थे श्रपने मन में सन्देह कनते थे की य़ह कौस
नीत का व्रालक होगा की पनभ़ का हाथ उस पन था।
६७ श्रोन उसका पीता ज़कनीय़ा घनमातमा से भन पुन हुश्रा
६८ श्रोन श्रागम से कहने लगा। की घंन पनमेसन को जो इस-
नाइल का इसन है कय़ोकी उसने श्रपने लोगों पन दीनीसट
६९ कनके नछा की। श्रोन हमाने कानन उघान की सींग श्रपने
७० दास दाउद के घनाने से उदय़ कीय़ा। जैसा की उसने श्रपने
सुघ श्रागम गय़ानीश्रों के मुंह से जो जगत के श्रानंभ से होते
७१ श्राय़े कहा। की हम श्रपने सतनुन से श्रोन सव्रके हाथ से जो
७२ हमसे व्रैन नष्पते हैं उघान पावें। की श्रपनी दय़ा को जो
हमाने पीतनों पन है संपुनन कने श्रोन श्रपने पवीतन व्राय्रा
७३ को समनन कने। उस कानीय़ा को जो उसने हमाने पीता
७४ इव्रनाहीम से की। की वुह हमें य़ह देगा की हम श्रपने
७५ सतनुन के हाथों से व्रयके। उसके श्रागे पवीतनताइ श्रोन
७६ सयाइ से श्रपने जीवन भन सेवा कनें। श्रोन हे व्रालक तु
श्रतय़ंत महान का श्रागम गय़ानी कहावेगा इस लाय़े की तु
७७ पनभ़ के श्रागे जाके उसके मानगों को सुघानगा। की पाप से
७८ छुटने के नीसतान का गय़ान उसके लोगों को देवे। य़ह

हमाने इसन की कोमल दया से है जीसके कानन उदय का
७९ पनकास उपन से हम पन पऊंया। की उनको जो अंधकान
औन मीनतु की छाया में बैठे हैं उंजीयाला कन की हमान
८० पांव को कुसल के मानग में ले जाय। औन वुह लड़का बढ़ता
गया औन आतमा में बल पाया औन बन में नहा कीया जास
दीन लों की इसनाइल को दीप्पाइ दीया।

२ दुसना पनब।

१ औन उनहीं दीनें में ऐसा ऊआ की कैसन अगसतुस की
अगया नीकली की समसत देस के लोगों के नाम लीप्पे जायें।
२ औन यह नाम लीप्पने का आनंभ तब ऊआ जब कनीनीयुस
३ सुनीया का अधछ था। तब सब अपने अपने नगन को नाम
४ लीप्पाने गये। औन जलील औन नासनः के नगन से यऊदीयः
में दाउद के नगन को जो बैतुलहम कहावता है युसफ भी गया
५ इस लीये की वुह दाउद के बंस औन घनाने से था। की
अपनी बयनदता इसतीनी मनीयम के संग जो गनभनी थी
६ नाम लीप्पावे। औन उनके वहां होते ऊए ऐसा ऊआ की
७ उसके जंने के दीन पुने ऊए। औन वुह अपना पहीलौंठा
पुतन जनी औन उसको बसतन में लपेट के यननी में नप्पा
८ इस कानन की उनकी समाइ सना में न थी। औन उसी
देस में गड़ेनीये प्पेत में नहते थे औन नात को अपने हुंड
९ की नप्पवाली कनते थे। औन देप्पो की इसन का दुत उन
पास आया औन इसन का तेज उनके यानों औन यमका
१० औन वे बऊत डन गये। तब दुतने उनहें कहा की मत डनो
इस लीये की देप्पो मैं तुमहाने पास मंगल समायान लाता
११ ऊं जो सब लोगों के कानन बड़ा आनंद होगा। कयोंकी आज
दाउद के नगन में तुमहाने लीये ऐक मुकतदाता उतपंन ऊआ

१२ जो मसीह पनभु है। औन तुमहाने लीये यही पता है की तुम उस वालक को वसतन में लपेटा औन यननी में पड़ा ऊआ
१३ पाओगे। औन तुनंत उस दुत के संग सनग के सेना की ऐक मंडली पनगट ऊइ औन यह कहके इसन की सतुत कनने
१४ लगी। की अतयंत उंचे पन इसन को घंन औन पीनथीवी पन कुसल औन मनुष्यन में मीलाप होवे।

१५ औन ऐसा ऊआ की जेउं दुत उनसे सनग पन जाते नहे गड़ेनीयों ने आपुस में कहा की आओ अव वैतुलहम को यलें औन इस वात को देष्यें जो ऊइ है जीसे इसन ने हम पन
१६ पनगट की है। तव उनहें ने उतावली से आके मनीयम औन युसफ को औन उस वालक को यननी में पड़ा ऊआ पाया।
१७ औन जव उनहें ने देष्या तो उन वातें को जो वालक के
१८ वीष्यय में उनसे कही गइ थीं परैलाने लगे। औन सवके सव जीनहें ने सुना था उन वातें से जो गड़ेनीयें ने उनहें कही
१९ थीं वीसमीत ऊऐ। पनंतु मनीयम इन सव वातें को अपने
२० मन में जोगाके सेयने लगी। औन उन सव वातें के कानन जो उनहें ने सुनीं औन वैसाही देष्यो थीं गड़नीये इसन का घंन मानते औन सतुत कनते ऊऐ उलटे परीने।

२१ औन वालक के ष्यतनः कनने के लीये जव आठ दीन पुने ऊऐ उसका नाम यसु नष्या गया जो दुत ने उसके गनभ में पड़ने
२२ से पहीले नष्या था। औन जव उनके पवीतन होने के दीन मुसा की वेवसथा के समान पुने ऊऐ वे उसको यनोसलीम में
२३ लाये की इसन के आगे घनें। जैसा की इसन की वेवसथा में लीया है की हन ऐक पहीलैांठा नन जो गनभ को ष्योलता है
२४ इसन को भेंट कीया जायगा। औन जैसा की इसन की वेवसथा में कहा गया है की घुघु के जोड़े अथवा कपोत के दो वये को
२५ वलीदान कनें। औन देष्यो की यनोसलीम में समउन नाम ऐक मनुष्य था वही सजन औन घनमी पुनुष्य था औन इसनाइल

के कुसल का कारन तक नहा या श्रान घनमातमा उसपन था।
२६ श्रान धनमातमा से उस पन पनगट ऊश्रा की वुह जव्र लां इसन
के श्रभीसेक कीच्ने गये का न देप्पले मीनतु का न देप्पेगा।
२७ श्रान वुह श्रातमा की सीप्पया से मंदीन में श्राया श्रान जव
माता पीता उस व्रालक यसु का भोतन लाते थे की उसके लीये
२८ व्रैवसथा के व्रेवहान के समान कनें। उसने उसका श्रपने हाथों
२९ में उठा लीया श्रान इसन की सतुत कनके कहा। की हे पनभु
श्रव तु श्रपने व्रयन के समान श्रपने दास का कुसल से व्रीदा
३० कीया याहता है। कयांकी मेनी श्रांप्पों ने तेनें नीसतान का
३१ देप्पा है। जीसे तुने सानें लागों के समुप्प सीच कीया है।
३२ प्रेक जात श्रंदेसीश्रों के उंजीश्राला कनने का श्रान तेने इसनाइल
३३ का व्रोभव। तव यूस ए श्रान उस ी माता में उन व्रातां से जो
३४ उसके व्रीप्पय में कही गइ थीं श्रासयनज माना। श्रान समउन
ने उनहें श्रासोस दीया श्रान उसकी माता मनीश्रम का कहा
की देप्प यही इसनाइल में व्रऊतेनां के गीनने श्रान फेन उठने
के कानन ठहनाया गया है श्रान व्रीनुधता का प्रेक यानह है।
३५ हां प्रेक भाला तेनें पन न में भी पनवेस कनेगा की व्रऊतेनों
३६ के मन की यींनता पनगट हा जाय। श्रान वहां हंना नाम
फानुइल की पुतनी जा श्रसन के व्रंस से थी श्रान श्रागम गयाननी
थी जा व्रऊत व्रीनध थी श्रान श्रपने कुंश्रांनपन से सात
३७ व्रनस लां प्रेक पती के संग नही थी। श्रान वुह यौनासी
व्रनस प्रेक की ोधवा थी जा मंदीन से नयाना न ऊइ पनंतु
३८ व्रनत श्रान पनानथना से नात दीन सेवा कनती थी। श्रान
उसने उसी समय श्राके इसन की सतुत की श्रान उन सभों का
जा यनासलीम में उधान की व्राट जाहते थे उसके व्रीप्पय में
३९ व्राल। श्रान जव वे पनभु की व्रैवसथा के समान समसत कानज
४० कन युके वे जलील में श्रपने नगन नासनः का फीने। श्रान
वुह व्रालक व्रढ़ता गया श्रान श्रातमा म व्रल पाया श्रान व्रुध

४१ से मन गया। और इसर का अनुगीरह उस पर था। अब उसके माता पीता बरस बरस बीत जाने के पर्व में यरोसलीम को ४२ जाते थे। और जब वुह बारह बरस का हुआ वे पर्व के ४३ बेवहार पर यरोसलीम को गये। और जब वे उन दीनों को पुरा करके फीरने लगे वुह बालक यसु यरोसलीम में ४४ रह गया और यूसफ और उसकी माता ने न जाना। परंतु उनहों ने समझा की वुह जथा में है एक दीन के मारग गये ४५ और उसे अपने कुटुंबों और चीनहारों में ढुंढा। और जब उनहों ने उसको न पाया वे यरोसलीम को फीर आके उसे ४६ ढुंढने लगे। और ऐसा हुआ की उनहों ने तीन दीन पीछे मंदीर में पंडीतों के मध में बैठे हुऐ उनकी सुनते और उनसे ४७ परसन करते उसे पाया। और सब जो उसकी सुनते थे ४८ उसकी समझ और उतरों से बीसमीत हुऐ। और जब उनहों ने उसे देष्या तो आसचरज माना और उसकी माता ने उसे कहा की हे पुतर कीस लीये तु ने हम से ऐसा कीया देष्य तेरा ४९ पीता और मैं कुढ़ते तुझे ढुंढ़ते थे। तब उसने उनहें कहा यह कीस कारन है की तुम मुझे ढुंढ़ते थे कया तुम न जानते ५० थे की मुझे अवस है की अपने पीता का कारज करुं। पर उनहों ने उस बचन को जो उसने उनहें कहा न समझा। ५१ और वुह उन के संग चलागया और नासरः में आया और उनके बस में रहा परंतु उसकी माता ने इन बातों को अपने ५२ मन में रष्या। और यसु बुध और डील में और इसर और मनुष्य की कीरपा में बढ़ता गया।

३ तीसरा बरब।

१ अब तीबरयुस कैसर के राज के पंदरहवें बरस जब पंतीयुस पीलातुस यहुदीयः का अधक्ष था और हीरुदीस

जलील के चैाथाइ का ग्रैान उसका भाइ फैलवुस ऐतुनीयः ग्रैान तनप्पुनीयः देस की चैाथाइ का ग्रैान लुसनीयः ग्रवी-
२ लीनीयः के चैाथाइ का ग्रघछ था। हंना ग्रैान काफा के पनधान याजक होते इसन का वयन जकनीया के पुतन
३ यहीया को वन में पझंया। ग्रैान वुह ग्रनदन के ग्रास पास के समसत देस में ग्राके पाप मोयन के कानन सनान के पसया-
४ ताप का उपदेस कनने लगा। जैसा की ग्रसीया ग्रागम गयानी के वयन के पुसतक में लीप्पा है की वन में ऐक पुकानने वाले का सवद है की तुम पनभु के मानग के सुधाना ग्रैान
५ उसके मानगों के सीधा कनो। हन ऐक नीयो भुन भनी जायगी ग्रैान समसत पनवत ग्रैान पहाड़ो नीया कीया जायगा ग्रैान टेढ़े सीघे कीये जायेंगे ग्रैान प्पड़वीड़ पंथ चैानस वनेंगे।
६।७ ग्रैान हन ऐक पनानी इसन के उधान को देप्पेगा। तव उसने उस मंडली को कहा जो उस से सनान पाने को नीकली की हे सनप वंसी तुमहें कीसने चेताया की ग्रावनहान कनोघ
८ से भागो। इस लीये पसयाताप के जोग का फल लाग्रो ग्रैान ग्रपने ग्रपने मन में मत समझो की हमाना पीता इवनाहीम है कयोंकी मैं तुम से कहता झं की इसन में सामनथ है की
९ इन पथनों से इवनाहीम के लीये वालक उतपंन कने। ग्रैान ग्रव वीनछों के जड़ पन कुलहाड़ी भी धनी है इस लीये हन ऐक वीनछ जो ग्रछा फल नहीं लाता काटा जाता ग्रैान ग्राग
१० में ड्ढोका जाता है। तव लोगों ने यह कहके उसको पुछा
११ की ग्रव हम कया कनें। उसने उतन दीया ग्रैान उनहें कहा जीसके पास दो वसतन हैं सो उस से जीसके पास कुछ नहीं
१२ है वांट लेवे ग्रैान जीस पास भोजन है वुह भी ऐसा कने। तव पटवानी भी सनान पावने को ग्राये ग्रैान उसको वाले की हे
१३ गुनु हम कया कनें। तव उसने उनहें कहा जो तुमहाने लीये
१४ ठहनाया गया है उस से ग्रधीक मत लेग्रो। फीन सीपाहीयों

ने भी ग्रह कहके उसको पुछा की हम कया कनें तव्र उसने उनहें कहा कीसी से पनव्रलता मत कनो मीथ्याप्वाद मत
१४ लगाओ ओान अपनी महोनवानी से संतोस कनो। ओान जव्र लोग दोपघा में थे ओान समसत जन अपने मन में ग्रहीया
१६ के व्र प्पग्र में व्रीयानने लगे की वुह मसीह है की नहीं। ग्रहीया ने उतन देके सभों को कहा ठीक मैं ते तुमहें जल से सनान देता ऊं पनंतु मुह से प्रेक अघीक सामनथी आता है जीसके जुता का व्रंद मैं प्पोलने के जोग नहीं वुह तुमहों को घनमातमा
१७ ओान अगीन से सनान देगा। उसके हाथ में सुप है ओान वुह अपने प्पलीहान को अछी नीत से छाड़ेगा ओान गोऊ को अपने प्पते में प्रेकठे कनेगा पनंतु भुसे को अव्रुह अगीन
१८ से जलाग्रेगा। ओान वुह अपने उपदेस में लोगों को ओान
१९ अनेक व्रसतु सीप्पाग्रा कनता था। पनंतु हीनुदीस ने जे चैाथाइ का अघछ था अपने भाइ फैलव्रुस की पतनी हीनुदीग्रास के कानन ओान अपनी समसत व्रनाइ के कानन जो हीनु-
२० दीस ने की थी उस से दोप्प पाग्रा था। उन सभों पन ग्रह अघीक कीग्रा की उसने ग्रहीग्रा को व्रंदीगीनह में डाला।

२१ ओान जव्र समसत लोग सनान पाग्रके प्रैसा ऊआ की ग्रसु ने भी सनान पाग्रा ओान पनानथना कनते ऊप्रे सनग प्पुलगग्रा।
२२ ओान घनमाता देही के सनुप कपोत के समान उस पन उतना ओान आकास व्रानी ऊइ जीसने कहा की तु मेना पीनग्र पुतन
२३ है तुह से मैं अती पनसंन ऊं। तव्र ग्रसु आपही व्रनस तीस प्रेक का होने लगा जैसा की समहा जाता था की वुह पुतन ग्रुसफ
२४ का था जो हेली का था। जो मतसा का था जो लुइ का था जो
२५ मलकी का था जो ग्राने का था जो ग्रुसफ का था। जो मतसीग्रास का था जो अमुस का था जो नाऊम का था जो हसली का था
२६ जो नागी का था। जो मात का था जो मतसीग्रास का था जो
२७ समी का था जो ग्रुसफ का था जो ग्रऊदा का था। जो ग्रुहाना

का था जो नौसा का था जो जोनवावुल का था जो सलासइल
२८ का था जो ननी का था। जो मलकी का था जो अद्दी का था
२९ जो कुसम का था जो अलमुद का था जो इन का था। जो युसा
का था जो इलीआजन का था जो युनम का था जो मतसा का
३० था जो लुइ का था। जो समउन का था जो यहूदा का था जो
३१ युसुफ का था जो युनान का था जो इलीयाकीम का था। जो
मलीया का था जो मानान का था जो मतसीयास का था जो
३२ नातन का था जो दाउद का था। जो यसी का था जो ओवेद का
था जो वोआज का था जो सलमुन का था जो नहसुन का था।
३३ जो अमीनादाव का था जो अनम का था जो असनुन का था
३४ जो फरानीज का था जो यहूदा का था। जो याकुव का था
जो इसहाक का था जो इवनाहीम का था जो तनह का था
३५ जो नाहून का था। जो सीनुग का था जो नीयु का था जो
३६ फरालीग का था जो होवन का था जो सलह का था। जो
कनीन का था जो अनफरकसद का था जो साम का था जो नुह
३७ का था जो लामप्प का था। जो मतुसलह का था जो प्पनुप्प
का था जो यानद का था जो महललीौल का था जो कीनान का
३८ था। जो अनुस का था जो सीस का था जो आदम का था जो
इसन का था।

४ चौथा पनव।

१ ओान यसु चनमातमा से ननपुन होके अनदन से फरीना ओान
२ आतमा की सीप्पया से वन में गया। ओान चालीस दीन लों
सैतान ने उसकी पनीछा की ओान उनहीं दीनों में उसने कुछ
३ न प्पाया ओान उनके वीत जाने के पीछे उसे भुप्प लगी। तव
सैतान ने उसको कहा को यदी तु इसन का पुतन है अगया
४ कन की ये पथन नोटी वन जायें। ओान यसु ने उतन

देके उसको कहा लीष्या है की मनुष्य केवल नोटी से नहीं
५ पन्तु इस्न की हन प्रेक व्रात से जीता नहेगा। तव्र सैतान ने
उसे प्रेक उंये पहाड़ पन ले जाके जगत का समसत नाज प्रेक
६ छन मन में दीष्याग्रा। औान सैतान ने उसको कहा की ग्रह
साना पनाकनम औान उनका प्रेसनग्र मैं तुहे देउंगा कय्रोंकी
ग्रह मुहे सोंपा गय्रा है औान जीस कीसी को मैं याङ्गं उसे देउं।
७ इस कानन ग्रदी तु मेनी पुजा कनें सव्र तेना हो जाय्रगा।
८ तव्र ग्रसु ने उतन दीय्रा औान उसको कहा की हे सैतान मेने
पीछे जा कय्रोंकी ग्रह लीष्या है की तु अपने पनभु इस्न
९ की पुजा कन औान केवल उसी की सेवा कन। तव्र वुह उसको
ग्रनोसलीम में लाय्रा औान मंदीन के प्रेक कलस पन ष्पड़ा कीय्रा
औान उसे व्रोला ग्रदी तु इस्न का पुतन है तो आप को ग्रहां
१० से नीये गीना। कय्रोंकी लीष्या है की वुह तेने कानन अपने
११ दुतों को अगय्रा कनेगा की तेनी नक्षा कनें। औान हाथों में वे
१२ तुहे उठालेंगे न हो की तेना पांव पथन पन लगने पावे। तव्र
ग्रसु ने उतन देके उसको कहा ग्रह कहा गय्रा है की तु अपने
१३ पनभु इस्न की पनीक्षा मत कन। औान जव्र सैतान समसत
१४ पनीक्षा कन युका वुह थोड़े समय्र लों उस से यला गय्रा। औान
ग्रसु आतमा के सामनथ से जलील को फीना औान उसकी
१५ कीनत समसत देस में याने‍ां औान फैल गइ। औान उसने
उनकी मंडलीय्रों में उपदेस कीय्रा औान सभों से सतुत पाइ।
१६ औान वुह नासनःम आय्रा जहां उसने पनतीपाल पाय्रा था औान
अपने व्रवहान पन व्रीसनाम के दीन मंडली में पनवेस कनके
१७ व्रांयने को ष्पड़ा हुआ। औान असीय्रा आगमगय्रानी का
गनंथ उसे दीय्रा गय्रा औान जव्र उसने गनंथ को ष्पोला उसने उस
१८ सथल को पाय्रा जहां लीष्या था। की पनभु का आतमा मुह पन
है इस कानन उसने मुहे अभीसेक कीय्रा की मंगल समायान
कंगालों को सुनाउं उसने मुहे भेजा की जीनके मन युन हैं उनहें

यंगा करुं और वंधुओं को छोड़ाने को और अंधें को फेर दीसीसट पाने का संदेस सुनाउं और टुटे मनें का नीसतार
१९ करुं। और परभु के गरहन कीये ऊऐ वरस का उपदेस
२० करुं। तव उसने गरंथ को वंद कीया और सेवक को सौंप कर वैठ गया और समसत मंडली की आंप्पें उसे तक रही थीं।
२१ तव उसने उनहें कहना आरंभ कीया की आज के दीन यही
२२ लीप्पा ऊआ तुमहारे कानें में संपुरन ऊआ। और सभों ने उसपर साप्पी दी और उसके अनुगीरह के वचन से जो उसके मुंह से नीकले थे वीसमीत हो रहे थे और वोले कया यह
२३ युसफ का पुतर नहीं। तव उसने उनहें कहा की तुम नीःसंदेह मुझे यह दीनीसटांत कहोगे की हे वैद अपने को चंगा कर जो कुछ हम सभों ने सुना है की कपरनाऊम में कया यहां अपने
२४ देस में भी कर। परंतु उसने कहा मैं तुमहों से सत कहता ऊं की कोइ आगम गयानी अपने देस में गरहन नहीं कीया
२५ जाता। परंतु मैं तुमसे सत कहता ऊं की इलीयास के दीनें में जव सरग तीन वरस छः महीने लों वंद था यहां लों की समसत देस में काल पड़ा था वऊतेरी वीधवा इसराइल में थीं।
२६ परंतु इलीयास उनमें से कीसी के पास न भेजा गया केवल
२७ सैदा के सरफता में ऐक वीधवा इसतीरी के पास। और अलीसा आगम गयानी के समय में इसराइल में वऊत से कोढ़ी थे परंतु उनमें से नाआमन सुरयानी को छोड़ कोइ पावन
२८ न ऊआ। तव सवके सव जीतने मंडली में थे इन वातें को
२९ सुनतेही करोध से भर गये। और उठ कर उसको नगर से वाहर नीकाल दीया और उस पहाड़ के छोर पर जीस पर उनका नगर वना था ले चले की उसको औंधे मुंह गीरा देवें।
३०।३१ परंतु वह उनके मधमें से नीकल के जाता रहा। और कपरनाऊम में आया जो जलील का ऐक नगर है और वीसराम
३२ के दीनें में उनहों को उपदेस दीया कीया। और उनहों ने

उसके उपदेस से आसयनज माना कयोंकी उसका व्रयन पना-
कनम के संग था ।

३३ और मंडली में एक मनुय था जीस में अपवीतन पीसाय का
३४ आतमा था उसने व्रड़े सव्रद से योला के। कहा की हे ग्रसु
नासनी नहने दे हम से तुह से कया काम कया तु हमें नाष
कनने आया है मैं तुहे जानता ऊं की तु कैान है इसन का
३५ घनमी। तव्र ग्रस ने उस पन हुंहुला के कहा की युप नह और
उस से नीकल आ और जव्र पीसाय ने उसको मघ में गीनाया
३६ वुह उसको व्रीना दुप्य दीये ऊपे नीकल आया। तव्र वे सव्र
व्रीसमीत होके आपुस में कहने लगे की यह कैसी व्रात है
कयोंकी वुह पनाकनम और सामनथ से अपवीतन आतमाओं
३७ को अगया कनता है और वे व्राहन नीकल आते हैं। और
उस की कीनत उस देस के समसत सथान में यानों ओन
फैलगइ।

३८ तव्र वुह मंडली में से उठा और समउन के घन में आया
और समउन की सास व्रड़े जन से पड़ी थी और उनहों ने उसके
३९ लीये उसकी व्रीनती की। तव्र वुह उसके सीनहाने प्पड़ा होके
जन पन हुहलाया और जन ने उसे छोड़ा और उसने तुरंत
४० उठके उनकी सेवा की। और जव्र सुनज असत होता था
वे सव्र जीन पास नाना पनकान के नोग से नोगी थे उनहें उसके
पास लाये और उसने उनमें से हन एक पन हाथ नप्पके उनको
४१ यंगा कीया। और व्रऊतेनों से पीसाय भी योला के व्राहन
नीकले और व्रोले की तु इसन का पुतन मसीह है और उसने
डांट के उनको व्रात कनने न दीया कयोंकी वे जानते थे की
वुह मसीह है।

४२ और जव्र दीन ऊआ वुह नीकल कन एक सुन सथान में
गया और लोग उसे ढुंढ़ने लगे और उसके पास आये और
४३ उसे नोका की वुह उनके पास से न जाय। तव्र उसने उनहें

कहा की मुझे अवेस है की औान नगनों में भी इसन के नाज का समायान सुनाउं कयोंकी मैं इसी कानन भेजा गया ऊं।
४४ औान वुह जलील की मंडलीयों में उपदेस कनता नहा।

५ पांयवां पनव।

१ औान ऐसा ऊआ की जव लोग उस पन गीने पड़ते थे की इसन
२ का वयन सुनें वुह जनेसनत के झील पन पड़ा ऊआ। औान झील पन दे। नावें लगी देष्पीं पनंतु मछुऐ उन पन से उतन के
३ अपने जालें को घो नहे थे। तव उसने उनमें से ऐक नाव पन जो समउन की थी यढ़के उस से याहा की तीन से थोड़ा ढुन ले जाय औान वुह वैठ कन लोगें को नाव पन से उपदेस कनने
४ लगा। औान जव वुह वानता कह युका वुह समउन को वोला की गहीने में ले जा औान वहाने के लीये अपने जाल को डाल।
५ तव समउन ने उतन देके उसको कहा हे गुनु हम ने नात भन पनीसनम कीया औान कुछ न पकड़ा तीस पन भी आप के कहने
६ से मैं जाल डालता ऊं। औान जव उनहें ने ऐसा कीया तो मछलीयों का वड़ा झुंड घेना औान उनका जाल फटने लगा।
७ तव उनहें ने अपने साझीयां को जो दुसनी नाव पन थे सैन कीया की आके हमाना सहाय कनो तव वे आये औान दोनें
८ नावें ऐसी भनीं की वे डुवने लगीं। तव समउन पतनस ने देष्पकन यसु के घुटनें पन गीनके कहा की हे पनभु मुझ से
९ पने नहीये कयोंका मैं पापी जन ऊं। कयोंकी वुह औान सव जो उसके संग थे औान जवदी के पुतन याकुव औान युहना भी
१० जो समउन के साझी थे उन मछलीयें के वहाव से जो उनहें ने पकड़ीं वीसमीत थे तव यसु ने समउन को कहा की मत
११ डन कयोंकी इस समय से तु मनुष्पन को पकड़ेगा। औान जव

वे अपनी नावें तीन पन लाये वे सव्र कुछ तयाग कनके उसके पीछे हो लीये।

१२ अैान जव्र वुह कीसी नगन में था ऐसा ऊआ की ऐक मनुष्य जो कोढ़ से भना ऊआ था य़सु को देष्पके अैांचा गीना अैान उसकी व्रीनती कनके व्रोला की हे पनभु यदी आप याहें तो मुझे

१३ पवीतन कन सकते हो। तव्र उसने हाथ व्रढ़ाय़ा अैान उसको यह कहके छूआ की मैं याहता ऊं तु पवीतन हो जा अैान

१४ उसका कोढ़ तुनंत जाता नहा। अैान उसने उसको अगय़ा की, की कीसा से मत कह पनंतु जा अैान आप को य़ाजक को दीष्पला अैान जैसा की मुसा ने अगय़ा की है अपने पवीतन

१५ होने के लीये भेंट दे की उनके लीये साष्पी होवे। पनंतु इतनी अधीक उसकी कीनत फैल गइ अैान व्रऊत सी मंडली ऐकठी ऊइ की सुनें अैान अपनी दुनव्रलता से उस से यंगे होवें।

१६। १७ अैान उसने व्रन में अलग होके पनानथना की। अैान ऐक दीन ऐसा ऊआ की जव्र वुह उपदेस कन नहा था की फनीसी अैान व्रैवसथा का गय़ाता जो जलील के हन ऐक नगन से अैान यऊदीय़ः अैान य़नोसलीम से आये थे वहां व्रैठे थे अैान उनहें

१८ यंगा कनने को इसन का सामनथ पनगट ऊआ। अैान देष्पो की लोग ऐक मनुष्य को जो अनधांगी था ष्पाट पन ले आये अैान याहा की उसको भीतन लावें अैान उसके आगे नष्पें।

१९ पनंतु जव्र मंडली के कानन उनहों ने अवसन न पाय़ा की उसे भीतन ले जायें वे कोठे पन यढ़गये अैान ष्पपनैल को अलग कनके उसको ष्पाट समेत मघ में य़सु के आगे उतान दीय़ा।

२० अैान उसने उनका व्रीसवास देष्पके उनहें कहा की हे मनुष्य

२१ तेने पाप छमा कीये गये। तव्र अधापक अैान फनीसी व्रीयान कनने लगे की यह कैान है जो इसनापनींदक व्रयन व्रोलता

२२ है इसन को छोड़ कैान पापों को छमा कन सकता है। तव्र य़सु ने उनके यींतों को जानके उतन दीय़ा अैान उनहें कहा

२३ की तुम सव्र अपने मन में कय़ा व्रीयान कनते हो। कय़ा कहना सहज है की तेने पाप क्षमा कीय़े गय़े अथवा कहना
२४ की उठ और यल। पनंत् जीसतें तुम जानो की मनुष्य के पुतन को पीनथीवी पन पनाक्रनम है की पापों को क्षमा कने उसने उस अनघांगी को कहा मैं तुझे कहता हूं की उठ और
२५ अपनी प्याट उठाके अपने घन को यला जा। और तुनंत वुह उनके आगे उठा और जीस पन वुह पड़ा था ले कन ईसन
२६ की सतुत कनते हुए अपने घन को यला गय़ा। तव्र वे सव्र के सव्र व्रीसमय़ से ईसन की सतुत कनने लगे और भय़ से भनके
२७ व्रोले की हम ने आज अनोप्पी व्रातें देप्पीं। और ईन व्रातों के पीछे वुह व्राहन गय़ा और ऐक पटवानी को जीसका नाम लोइ था कन लेने के सथान में व्रैठे देप्पा और उसने उसको कहा
२८ की मेने पीछे होले। तव्र वुह सव्र कुछ छोड़ कन उठ प्पड़ा
२९ हुआ और उसके पीछे हो लीय़ा। और लोइ ने उसके लीय़े अपने घन में व्रड़ा जेवनान कीय़ा और वहां व्रहुत से पटवानी
३० अनु और लोग थे जो उनके संग व्रैठ गय़े थे। पनंतु उनके अघापक और फरनीसी उसके सीप्पन पन कुड़कुड़ा के कहने लगे की तुम सव्र कीस कानन पटवानीय़ों और पापीय़ों के संग
३१ प्पाते पीते हो। तव्र य़सु ने उतन देके उनहें कहा जो नीनोगी हैं सो व्रैद का पनय़ोजन नहीं नप्पते पनंतु वे जो नोगी हैं।
३२ मैं घनमीय़ों को वुलाने नहीं आय़ा पनंतु पापीय़ों को की
३३ पसयाताप कनें। तव्र उनहों ने उसको कहा की य़होहा के सीप्प कय़ों व्रानंव्रान व्रनत और पनानथना कनते हैं और ईसी नीत से फरनीसीय़ों के भी कनते हैं पनंतु तेने प्पाते पीते हैं।
३४ तव्र उसने उनहें कहा की जव्र लों दुलहा व्रनातीय़ों के संग है
३५ कय़ा तुम उनहें व्रनत कनवा सकते हो। पनतु वे दीन आवेंगे की जव्र दुलहा उनसे अलग कीय़ा जाय़गा तव्र वे उनहीं दीनों
३६ में व्रनत कनेंगे। और उसने उनहें ऐक दीनीसटांत भी कहा

की कोइ मनुष्य नये थान का टुकड़ा पुराने वस्तर में नहीं लगाता नहीं तो वुह जो उस में लगाया गया है वस्तर से खींचता है और वुह टुकड़ा जो नये से लीया गया था पुराने
३७ में नहीं मीलता। और कोइ पुराने कुपे में नया दाख का रस नहीं भरता नहीं तो नये दाख का रस कुपों को फाड़ेगा और
३८ वुह जायगा और कुपे नस्ट हो जायंगे। परंतु अवेस है की नया दाख का रस नये कुपे में रखें की दोनों जतन से रहें।
३९ कोइ पुराने को भी पीके तुरंत नया नहीं चाहता क्योंकी वुह कहता है की पुराना अती भला है।

६ छटवां पत्र।

१ और पहीले से दुसरे वीस्राम दीन को युं हुआ की वुह खेतों में से जाने लगा और उसके सीख बालों को तोड़ तोड़
२ और हाथों से मल मल के खाने लगे। तव फरीसीयों में से कीतने उन्हें बोले तुम क्यों वुह काम करते हो जो वीस्राम
३ के दीनों में करना जोग नहीं। यसु ने उत्तर देके उन्हें कहा क्या तुम सभों ने इतना नहीं पढ़ा की दाउद ने जब वुह
४ भुखा था और उसके संगीयों ने क्या कीया। वुह क्योंकर इस्वर के मंदीर में गया और भेंट की रोटी ली और खाइ और उन्हें भी जो उसके संग थे दी जो उन्हें खाने को जोग
५ न थी परंतु केवल याजकों को। और उसने उन्हों को कहा
६ की मनुष्य का पुत्र वीस्राम का भी परभु है। अरु और एक वीस्राम दीन को भी ऐसा हुआ की उसने मंडली में जाके उपदेस कीया और वहां एक मनुष्य था जीसका दहीना
७ हाथ सुख गया था। तब अध्यापक और फरीसी उसे देख रहे थे की वुह वीस्राम के दीन में चंगा करेगा की नहीं जीसतें

८ वे उस पन दोप्प देने का कानन पावें। पनंतु उसने उनकी यींनता को जान के उस मनुप्प के कहा जीस का हाथ हुना गया था
९ की उठ औान मच में प्पड़ा हो तव वह उठ प्पड़ा ऊआ। फेन यसु ने उनहें कहा की मैं तुमहों से ऐक व त पुहता ऊं वीसनाम के दीनों में भला कनना जोग है की वुना कनना पनान को
१० वयाना की नास कनना। औान उन सभों पन यानों औान दीनीसट कन के उसने उस मनुप्प को कहा की अपना हाथ वढा तव उसने वैसा कीया औान उसका हाथ दुसने की नाइं यंगा
११ हो गया। तव वे सव वौाडाहपन से भनगये औान आपस में
१२ कहने लगे की यसु का कया कनें। औान उनहीं दीनों में ऐसा ऊआ की वुह ऐक पहाड़ पन पनानथना कनने को गया औान नात भन ईसन की पनानथना में नहा।

१३ औान जव दीन ऊआ उसने अपने सोप्पन को वुलाया औान उसने उन में से वानह को यून के पनेनीत नाम भी नप्पा।
१४ समउन जीसका नाम उसने पतनस भी नप्पा औान उसका भाइ अंदनयास याकुव औान युहना फैलवुस औान वनसुलमी।
१५ मती औान सुमा औान हलफा का पुतन याकुव औान समउन
१६ जो जलोत कहावता है। औान याकुव का भाइ यहुदा औान यहुदा असकनयुती जो उसका पकड़वाने वाला ऊआ।

१७ फेन वुह उनके संग उतन के यैगान पन प्पड़ा ऊआ औान उसके सीप्पन की मंडली औान लोगों की ऐक वड़ी भीड़ जो उसके सुनने औान अपने नोगों से यंगी होने को समसत यहुदीया औान यनोसलीम औान सुन औान सैदा के सीवाने से जो
१८ समुदन के तीन पन हैं आइ थीं। औान वे भी जो अपवीतन
१९ आतमाओं से दुप्पी थे यंगे कीये गये औान समसत मंडली याहती थीं की उसे छुवें कयोंकी सकत उस से नीकलती थी
२० औान सव को यंगा कनती थी। फेन उसने अपने सीप्पन के ओान देप्पके कहा की दनीदनो धंन हो कयोंकी ईसन का

२१ नाज तुमहाना है। धंन हो जो अब भुषे हो कयोंकी तुम
तीनीपत होगे धंन हो जो अब बीलाप कनते हो कयोंकी
२२ तुम हंसोगे। धंन हो तुम जब मनुष्य तुम से बैन कनें औन
जब वे तुम को अलग कनें औन धीकानें औन मनुष्य के पुतन
२३ के कानन तुमहाना नाम अधम के समान नीकालें। उस
दीन तुम आनंद होओ औन आनंद से उछलो इस लीये की
देषो तुमहाना पनतीफल सनग में बड़ा है कयोंकी उनके
२४ पीतनों ने आगम गयानीयों से ऐसाही कीया। पनंतु तुम पन
जो धनी हो सताप इस लीये की तुम अपनी सांत पायुके।
२५ तुम पन जो संतुसट हो संताप कयोंकी तुम भुषे होओगे तुम
पन जो अब हसते हो संताप कयोंकी तुम नोओगे औन बीलाप
२६ कनोग। तुम पन संताप जब सब लोग तुमहाने बीषय में
भला कहें कयोंकी उनके पीतन झूठे आगम गयानीयों से
२७ ऐसाही कनते थे। पनंतु जो सुनते हो मैं तुमहें कहता हूं
की अपने सतनुन पन पनेम कनो जो तुम से बैन कनते हैं
२८ उनका भला कनो। जो तुमको सनाप देवें उनहें आसीस देओ
औन उनके लीये जो तुमहानी दुनदसा कनें पनानथना कनो।
२९ औन यदी कोइ तेने गाल पन थपेड़ा माने दुसना भी फेन दे
औन जो कोइ तेना ओढ़ना लेवे अगा लेने से भी मत नोक।
३० जो कोइ तुझ से कुछ मांगे उसे दे औन उस से जो तेनी बसतु
३१ लेता है उस से फेन मत मांग औन जैसा तुम याहते हो की
३२ लोग तुम से कनें तुम भी उनसे वैसाही कनो। कयोंकी यदी
तुम उन पन जो तुम पन पनेम कनते हैं पनेम कनो तो तुम-
हानी कया बड़ाइ है कयोंकी पापी लोग भी अपने पनेमीयों
३३ पन पनेम कनते हैं। औन यदी तुम उनसे जो तुम से भलाइ
कनते हैं भलाइ कनो तो तुमहानी कया बड़ाइ है कयोंकी
३४ पापी लोग भी ऐसाही कनते हैं। औन यदी तुम फेन पाने
की आसा नषके कीसी को नीन देओ तो तुमहानी कया बड़ाइ

है कयोंकी पापी लोग भी पापीयों को रीन देते हैं की उतना
३५ फेर पावें। परंतु तुम अपने सतनुन पर परेम करो और
भला करो और फेर पाने की आसा छोड़ कर रीन देओ और
तुमहारा परल व्रड़ा होगा और तुम अतयंत महान के पुतर
होओगे कयोंकी वुह उन पर जो भलाइ नहीं मानते और
३६ अधमों पर करपाल है। इस कारन तुम दयाल होओ जैसा
३७ तुमहारा पीता दयाल है। कुवीयार न करो की तुमहारा
कुवीयार न कीया जाय दोष मत लगाओ और तुम पर दोष
न लगाया जायगा छमा करो और तुमहारा छमा कीया
३८ जायगा। देओ और तुमहें दीया जायगा अछा परीमान
दाव दाव के और ऐकठा हीला हीला के उव्रलते ऊए तुमहारी
गोद में लोग देंगे कयोंकी जीस नपने से तुम नापते हो उसी
३९ नपने से तुम नापा जाओगे। फेर उसने उनसे
ऐक दीरीसटांत कहा की कया अंधा अंधे का अगुआ हो
४० सकता है कया वे दोनों गड़हे में न गीरेंगे। सीष्य अपने गुरु
से व्रड़ा नहीं परंतु हर ऐक जो सुध है अपने गुरु के समान
४१ होगा। और तु उस कीनकारी को जो तेरे भाइ की आंष्य में
है कयों देष्यता है परंतु उस लठे को जो तेरी आंष्य में है नहीं
४२ देष्यता। अथवा कयोंकर तु अपने भाइ को कह सकता है
की हे भाइ वुह कीनकारा जो तेरी आंष्य में है ला मैं नीकाल
देउं जव्र तु उस लठे को जो तेरी आंष्य में है नहीं देष्यता है
कपटी पहीले उस लठे को अपनी आंष्य से नीकाल और तव्र
तु उस कीनकौरी को जो तेरे भाइ की आंष्य में है परनछाइ
४३ से देष्य कर नीकाल सकेगा। कयोंकी उतम व्रीरछ अधम
४४ फल नहीं लाता न अधम व्रीरछ उतम फल लाता है। कयों-
की हर ऐक व्रीरछ अपने फल से पहीयाना जाता है कयोंकी
लोग कटीलों से गुलर नहीं व्रटोरते और न झटकटैयों से
४५ दाष्य तोड़ते। उतम मनुष्य अपने मन के अछे भंडार से षकी

व़सतु व़ाहन नीकालता है श्रीन श्रचम मनुप्य श्रपने मन के
वुने भंडान से वुनी व़सतु व़ाहन नीकालता है कय़ोंकी उसका
४६ मुंह मनकी भनपुनी से व़लता है। श्रीन तुम मुझे कय़ों
पनभु पनभु कहते हो श्रीन जो मैं कहता ऊं नहीं कनते।
४७ जो कोइ मुझ पास श्राता है श्रीन मेनी व़ातें सुनता है श्रीन
उनहें मानता है मैं तुमहें व़ताउंगा की वुह कीसकी नाइं है।
४८ वुह उस मनुप्य के समान है जीसने घन व़नाते ऊप्रे गहीना
प्योदा श्रीन पतयन पन नेउं डाली श्रीन जव़ व़ाढ़ श्राय़े उस
घन पन व़ड़ी घाना लगी श्रीन उसे हीला न सकी कय़ोंकी वुह
४९ पतयन पन उठाय़ा गय़ा था। पनंतु वुह जो सुनकन नहीं मानता
उस मनुप्य के समान है जीसने भुम पन व़ीना नेउं का घन उठा
य़ा जीस पन घाना कनेन से लगी श्रीन वुह तुनंत गीनपड़ा उस
घन का व़ड़ा व़ीनास ऊश्रा।

७ सातवां पनव़।

१ श्रीन जव़ वुह लोगों को श्रपनी समसत व़ानता सुना युका
२ तो कफरननाऊम में पनवेस कीय़ा। श्रीन एक सेनापती का
३ दास जो उसका व़ऊत पीनय़ था नोग से मनने पन था। श्रीन
उसने य़सु का संदेस सुनके य़ऊदीय़ः के पनायीनों को उस पास
भेजकन उसकी व़ीनती की, की वुह श्रावे श्रीन उसके दास को
४ यंगा कने। श्रीन वे य़सु के पास श्राके व़ीनती कनके कहने
५ लगे की वुह जोग है की तु उस पन य़ह कने। कय़ोंकी वुह
हमाने लोगों पन पनेम कनता है श्रीन उसने हमाने कानन
६ एक मंदीन व़नाय़ा है। तव़ य़सु उनके संग गय़ा श्रीन जव़
वुह उसके घन से व़ऊत दुन न था उस सेनापती ने मीतनों
को उसके पास भेज कन कहा की हे पनभु श्राप को कलेस न

७ दीजीये कयोंकी मैं जोग नहीं की तु मेनी छत तले आवे। इस कानन मैं ने अपने को भी जोग न समझा की तेने पास आउं पनंतु व्रयन कहीये औान मेना दास यंगा हो जायगा।
८ कयोंकी मैं भी औान का आधीन मनुष्य ऊं सेना मेनी अगया में है औान मैं प्रेक को कहता ऊं की जा औान वुह जाता है औान दुसने को की आ औान वुह आता है औान अपने दास
९ को की यह कन औान वुह कनता है। जव्र यसु ने यह सव्र सुना उसने उस से आसयनज कीया औान पीछे फरीनके उस मंडली से कहा जो उसके पीछे आती थी की मैं तुमहों से कहता ऊं की मैं ने इसनाइल में भी प्रेसा व्रड़ा व्रीसवास न पाया।
१० औान उनहों ने जो भेजे गये थे घन में फरीन जा के उस दास को जो नोगी था यंगा पाया।
११ औान अगीले दीन प्रेसा ऊआ की वुह प्रेक नगन को जो नाइन कहावता था गया औान व्रऊतेने उसके सीष्यन में से
१२ औान व्रऊत लोग उसके संग थे। जव्र वुह नगन के फाटक के पास आया देष्यो की प्रेक मीनतक को व्राहन लीये जाते थे जो अपनी माता का प्रेकलौता पुतन था औान वुह नांड थी
१३ औान नगन के व्रऊत लोग उसके संग थे। औान पनभु ने उसको
१४ देष्यके उस पन दया की औान उसे कहा की मत नो। औान उसने आके नथी को छुआ तव्र उठने वाले ठहन गये औान उसने
१५ कहा की हे तनुन मैं तुझे कहता ऊं की उठ। औान वुह जो मना था उठ व्रैठा औान व्रोलने लगा औान उसने उसे उसकी
१६ माता को सैांप दीया। औान सभों पन भय पऊंया औान वे इसन की सतुत कनके कहने लगे की प्रेक व्रड़ा आगम गयानी हम में पनगट ऊआ औान की इसन ने अपने लोगों पन दीनीसट
१७ की। औान उसकी यह यनया सनव्रतन यऊदीयः में औान
१८ यानों औान के समसत देस में फैल गइ। यहीया के सीष्यन ने
१९ उसको इन सव्र व्रातों का संदेस पऊंयाया। तव्र यहीया ने

अपने सीष्पन में से दो को वुला के य़सु को कहला भेजा की वुह जो आनेवाला था तु है अथवा हम दुसने की व़ाट जोहें।
२० उन मनुप्पन ने उसके पास आके कहा की य़हीय़ा सनान कानक ने य़ह कहके आप के पास भेजा की वुह जो आनेवाला
२१ था तु है अथवा हम दुसने की व़ाट जोहें। और उसने उसी घड़ी व़ज़ुतों को दुनव़लता और मनी और दुसट आतमाओं
२२ से चंगा कीया और व़ज़ुत से अंधों को दीनीसट दी। तव़ य़सु ने उतन दीय़ा और उनहें कहा की जाओ और जो कुछ तुम ने देप्पा और सुना है य़हीय़ा से कहो की कीस नीत से अंधे देप्पते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी पवीतन होते हैं व़हीने सुनते हैं मीनतक जीलाय़े जाते हैं कंगालों को मंगल समाचान
२३ सुनाय़ा जाता है। और धंन वुह है जो कोइ मुझ से ठोकन न प्पावे।
२४ और जव़ य़हीय़ा के दुत चले गय़े वुह य़हीय़ा के व़ीष्पय़ में लोगों से कहने लगा की तुम लोग व़न में कय़ा देप्पने को
२५ गय़े कय़ा ऐेक ननकट पवन से होलता ऊआ। पनंतु तुम लोग कय़ा देप्पने को व़ाहन नीकले कय़ा ऐेक मनुप्प महीन व़सतन पहीने ऊऐ देप्पो वे जो भड़कीला व़सतन पहीनते हैं और
२६ सुकुआन से नहते हैं नाज भवनों में हैं। पन तुम लोग कय़ा देप्पने को गय़े कय़ा ऐेक आगम गय़ानी हां मैं तुमहों से
२७ कहता ऊं की ऐेक आगम गय़ानी से भी स्नेसठ। य़ही है जीसके व़ीष्पय़ में लीप्पा है की देप्प मैं अपने दुत को तेने आगे
२८ भेजता ऊं जो तेने मानग को तेने आगे सुधानेगा। कय़ोंकी मैं तुम से कहता ऊं उन में से जो इसतीनीय़ों से उतपंन ऊऐ हैं कोइ आगम गय़ानी य़हीय़ा सनान कानक से व़ड़ा नहीं है पनंतु वुह जो इसन के नाज में सव़ से छोटा है उस से व़ड़ा है।
२९ तव़ सव़ लोगों ने और पटवानीय़ों ने जीनहों ने य़हीय़ा से
३० सनान पाय़ा था य़ह सुनके इसन की व़ड़ाइ की। पनंतु फनीसी

औन वैवसथा के गयानीयों ने उस से सनान न पाके इसन के
३१ मत को अपने वीनोध से तयाग कीया। औन पनभु ने यह
भी कहा की मैं इस समय के लोगों को कीस से उपमा देउं
३२ औन वे कीसके समान हैं। वे वालकों के समान हैं जो हाट
में वैठ कन ऐक दुसने को पुकान के कहते हैं की हमने तुमहाने
कानन वांसली वजाइ औन तुम न नाये हमने तुमहाने लीये
३३ वीलाप कीया औन तुम न नोये। कयोंकी यहोया सनान
कानक न तो नोटी पाता न दाष्पनस पीता आया औन तुम
३४ कहते हो की उस पन पीसाय है। मनुष्य का पुतन ष्पाता
औन पीता आया है औन तुम कहते हो की देष्पो ऐक वड़ा
३५ ष्पाउ औन मदयप पटवानीयों औन पापीयों का मीतन। पनंतु
३६ वुध अपने समसत पुतनों से नीनदोष्प है। फरेन फनीसीयों
में से ऐक ने याहा की वुह उसके संग भोजन कने औन वुह
३७ उस फनीसी के घन में गया औन भोजन पन वैठा। औन
देष्पो की जव उस नगन की ऐक इसतीनी ने जो पापीन थी जाना
की यसु फनीसी के घन में भोजन पन वैठा है उजले पथन की
३८ डीवीआ में सुगंध तेल लाइ। औन उसके यनन पास पीछे
ष्पड़ी होके नोने लगी औन आंसुओं से उसका यनन धोने लगी
औन अपने सीन के वालों से पोंछा औन उसके यनन को युमा
३९ औन सुगंध तेल लगाया। औन जव उस फनीसी ने जीस ने
उसका नीसटायान कीया था देष्पा तो अपने मन में कहने लगा
की जदी यह पुनुष्प आगमगयानी होता तो जान जाता की यह
इसतीनी जो उसे छुती है कौन औन कीस भांत की है कयोंकी
४० वुह पापीन है। तव यसु ने उतन दीया औन उसको कहा की
हे समउन मैं तुझे कुछ कहा याहता हुं वुह वोला की हे गुनु
४१ कहीये। कोइ धनीक था जीसके दो उधानीक थे ऐक पांय
४२ सहसन का औन दुसना पयास का। औन जव उन पास कुछ
देने को न था उसने दोनों को छमा कीया अव मुझे कह की

४३ उन में से कौन उसको अधीक पीआन कनेगा। समउन ने उतन दीय़ा औान कहा मैं समहृता ह्रं की वुह जीसका उसने व्ऱ्हत छमा कीय़ा तव् उसने उसको कहा तु ने ठीक व्ीयान कीय़ा।
४४ फ्रेन उसने उस इसतीनो के औान फ्रीन के समउन को कहा तु इस इसतीनी को देप्पता है मैं तेने घन में आय़ा तुने मेने यनन के लीय़े जल न दीय़ा पनंतु उसने मेने यनन को आंसु
४५ ओं से घोय़ा औान अपने सीन के व्ालों से पोंछा। तुने मेना युमा न लीय़ा पनंतु जव् से मैं य़हां आय़ा य़ह मेने यनन
४६ युम नही है। तुने मेने सीन में तेल न लगाय़ा पनंतु इस
४७ इसतीनो ने मेने यनन पन सुगंघ तेल लगाय़ा। इस लीय़े मैं तुह्र से कहता ह्रं की उसके पाप जो व्ऱ्हत हैं छमा कीय़े गय़े कय़ोंकी उसका व्ड़ा पनेम है पनंतु जीसके थोड़े छमा कीय़े
४८ गय़े उसका थोड़ा पनेम है। फ्रेन उसने उसको कहा की तेने
४९ पाप छमा कीय़े गय़े। तव् वे जो उसके संग भोजन पन व्ैठे थे अपने अपने मन में कहने लगे की य़ह कौन है जो पापों को
५० भी छमा कनता है। औान उसने उस इसतीनी को कहा की तेने व्ीसवास ने तेना उधान कीय़ा कुसल से यली जा।

८ आठवां पनव्।

१ औान उसके पीछे युं ह्रआ की वुह नगन नगन औान गांव गांव से फ्रीनता ह्रआ उपदेस कनता औान इसन के नाज का
२ मंगल समायान सुनाता था औान वे व्ानह उसके संग थे। औान कीतनी इसतीनीय़ां जो दुसट आतमा औान दुनव्लता से यंगी ह्रइं थीं अनथात मनीय़म जो मजदली कहावती थी जीस पन
३ से सात पीसाय उताने गय़े थे। औान हीनुदीस का भंडानी कुज़ा की पतनी य़ुआनः औान सैासन अनु औान व्ऱ्हतेनी जो
४ अपने दनव् से उसको सेवा कनती थीं। औान जव् व्ऱ्हत लोग नगन नगन से ऐकठे होके उस पास आय़े उसने ऐक दीनीसटांत

५ में कहा। एक ब्रोवैया अपना ब्रीज ब्रोने को नीकला ओर ब्रोते ऊए कीतने डांड़े के ओर गीरे ओर लताड़े गये ओर
६ आकास के पंछीओं ने उनहें यग लीया। ओर कीतने पथर पर गीरे ओर वे उगके सुप्प गये कयोंकी सीमसीमाहट उनहें न
७ पऊंयी। ओर कीतने कांटों में गीरे ओर कांटों ने संग ब्रढ़के
८ उनहें घोंट डाला। अनु ओर उतम भुम पर गीरे ओर उगे ओर सोगुने फल लाये ओर इन ब्रातों को कहके उसने पुकारा
९ की जीसके कान सुनने के लीये हैं सो सुने। ओर उसके सीप्पन ने ग्रह कह के उसको पुछा की इस दीनीसटांत का कया अनथ
१० है। तब्र उसने कहा की इसन के राज के भेद का गयान तुमहें दीया गया है परंतु ओरों को दीनीसटांतों में की वे
११ देप्पते ऊए न देप्पें ओर सुनते ऊए न समहें। अब्र यह
१२ दीनीसटांत ऐसा है की ब्रीज इसन का ब्रयन है। डांड़े के ओर वे हैं जो सुनते हैं तब्र सैतान आता है ओर ब्रयन को उनके मन से ले जाता है न हो की वे ब्रीसवास लावें ओर उधार पावें।
१३ पथर पर के वे हैं जो ब्रयन को सुनके आनंद से गनहन करते हैं ओर जड़ नहीं रप्पते सो छन भर ब्रीसवास रप्पते हैं परंतु
१४ परीछा के समय में फीर जाते हैं। ओर जो कांटों में गीरे वे हैं की सुन के यल नीकलते हैं ओर यींता ओर धन ओर इस जीवन का सुप्प उनहें दब्रालेते हैं ओर पके फल नहीं लाते।
१५ परंतु उतम भुम के वे हैं जो ब्रयन को सुन के अछे ओर प्परे मन में धारन करते हैं ओर संतोप्प से फल लाते हैं।

१६ कोइ मनुप्प दीपक ब्रार के पातर से नहीं ढांपता अथवा प्पाट तले नहीं रप्पता परंतु दीअट पर रप्पता है की वे जो
१७ भीतर आते हैं उंजीयाला देप्पें। कयोंकी कुछ गुपत नहीं है जो परगट न की जाय ओर न छीपी जो जानी न जाय ओर
१८ परगट न हो। इस लीये सैायेत रहो की तुम कीस रीत से सुनते हो कयोंकी जीस कीसी का है उसको दीया जायगा ओर

जीसके कुछ नहीं उस से वुह भी जो वुह भावना से रख्ता है
फेर लीया जायगा।

१९ तब उसकी माता और भाइ आये और भीड़ के कारन उस
२० पास न आ सके। और उसको कहा गया की तेरी माता और
२१ तेरे भाइ बाहर खड़े तुझे देखने को चाहते हैं। तब उसने
उतर दीया और उनहें कहा की मेरी माता और मेरे भाइ
ये हैं जो इसर का बचन सुनके मानते हैं।

२२ और एक दीन ऐसा हुआ की वुह अपने सीख्य के संग एक
नाव पर चढ़ा और उनहें बोला की हम उस झील के पार चलें
२३ तब उनहों ने खोली। परंतु जब नाव चली जाती थी वुह
सो गया और झील में एक आंधी की बयार उठी और उनकी
२४ नाव भर गइ और वे भय में थे। तब वे उसके पास आये और
उसे जगा के बोले की हे गुरु हे गुरु हम नसट होते हैं तब उसने
उठकर आंधी और जलके तरंग को डांटा और वे थम गये
२५ और बड़ा चैन हो गया। और उसने उनहें कहा की तुमहारा
बीसवास कहां है और वे आसचरज से बोले की यह कीस रीत
का मनुष्य है की वुह पवन और जल को भी अगया करता है
और वे उसकी मानते हैं।

२६ फेर वे जदरीयों के देस में पहुंचे जो जलील के सनमुख है।
२७ और जब वुह भुम पर उतरा उस नगर का एक मनुष्य जीस
पर बहुत दीन से पीसाच था और बसतर नहीं पहीनता था
२८ और न घर में रहता था परंतु समाधीन में। वुह यसु को
देख के चीलाया और उसके आगे गीर पड़ा और बड़े सब्द से
बोला की हे अती महान इसर के पुतर यसु मुझे तुझ से कया
२९ काम है मैं तेरी बीनती करता हुं मुझे मत सता। कयोंकी
उसने उस अपवीतर आतमा को अगया की थी की उस मनुष्य
से बाहर नीकल जाय की वुह बारंबार उसको पकड़ता था
और वुह सीकरों और बेड़ीयों से बंधा हुआ था और उन

वंधनें। को तोड़ता था श्रीन पीसाय उसको वन में दौड़ाता था।
३० तव यसु ने उसको यह कहके पुछा की तेना नाम कया है वुह
वोला की लाजाउन इस कानन की वहुत से पीसाय उस में
३१ पैठे थे। फरेन उनहें ने उसकी वीनती की, की हमें गहीनाये
३२ में जाने की श्रगया मत कन। श्रीन वहां वहुत से सुश्रनें का
ऐक हुंड पहाड़ पन यनता था तव उनहें ने उसको वीनती की
की हमें जाने दे की उन में पनवेस कनें तव उसने उनहें जाने
३३ दीया। फरेन वे पीसाय उस मनुष्य से वाहन नीकल के सुश्रनें
में पैठे श्रीन वुह हुंड कड़ाने पन से हट हील में जा गीना श्रीन
३४ उनका सांस नुक गया। तव यनवाहे इन वातें को देष्य के
३५ भागे श्रीन नगन में श्रीन देस में जाके वोले। तव जो की
कीया गया था वे देष्यने को वाहन नीकले श्रीन यसु के पास
श्राये श्रीन उस मनुष्य को जीस पन से पीसाय नीकल गये थे
वसतन पहीने हुऐ यसु के यनन पास वैठा हुश्रा सगयान पाया
३६ श्रीन डन गये। श्रीन जीनहें ने देष्या भी था उनहें से वोले
३७ की वुह जीस पन पीसाय थे कीस नीत से यंगा हुश्रा। तव
जदनीयें के देस के श्रास पास की सानी मंडलीयें ने उसकी
वीनती की, की हमाने यहां से जा कयोंकी उन में वड़ा डन
३८ पैठ गया था श्रीन वुह नाव पन यढ़ के उलटा फरीना। श्रव
उस मनुष्य ने जीस पन से पीसाय वाहन नीकल गये थे उसकी
वीनती की, की मैं भी श्राप के संग नहूं पनतु यसु ने उसको
३९ यह कहके वीदा कीया। की श्रपने घन को फरीन जा श्रीन
दीष्या की इसन ने तेने लीये कैसे वड़े वड़े काम कीये तव वुह
गया श्रीन साने नगन में सुनाने लगा की यसु ने उसके लीये
४० ऐसे वड़े वड़े काम कीये। श्रीन ऐसा हुश्रा की जव यसु फरीन
श्राया तो लोगें ने उसको गनहन कीया कयोंकी वे सवके सव
४१ उसकी वाट जोहते थे। श्रीन देष्यो याइनस नाम ऐक मनुष्य
श्राया जो मंडली का पनधान था श्रीन यसु के यनन पन गीन

४२ के ब्रीनती की, की आप मेरे घर चलीये। कयोंकी उसकी एकलौती पुतरी बारह बरस एक की थी जो मरने पर पड़ी थी परंतु उसके जाते हुए लोगों ने उस पर भीड़ की।

४३ और एक इसतीरी ने जीसका बारह बरस से रकत गीरता था उस ने अपना समसत धन बैदों पर उठाया परंतु कीसी से

४४ चंगी न हो सकी। पीछे से आके उसके बसतर के छोंट को

४५ छुआ और तुरंत उसके रकत का बहना थम गया। सो यसु ने कहा की कीसने मुझे छुआ जब सब मुकर गये तो पतरस ने और उनहों ने जो उसके संग थे कहा की हे गुरु लोग तुझ पर ठेल मठेल करके भीड़ करते हैं और तु कहता है की मुझे

४६ कीसने छुआ। यसु ने कहा की मुझे कीसी ने छुआ है कयोंकी

४७ मैं जानता हुं की सकती मुझ से नीकली। और जब उस इसतीरी ने देखा की वुह छीप न सकी तो कांपती हुई आई और उसके आगे गीर के सब लोगों के आगे उस पर परगट कीया की मैं ने इस कारन से तुझे छुआ और कैसा तुरंत चंगी

४८ हो गई। तब उसने उसे कहा की हे पुतरी सुसथीर रहो

४९ तेरे बीसवास ने तुझे चंगा कीया कुसल से चली जा। जब वुह यह कह रहा था तो मंडली के परधान के यहां से एक ने आ कर उसको कहा की तेरी पुतरी मर गई गुरु को कलेस मत दे।

५० परंतु जब यसु ने सुना उसने उतर देके उसको कहा की मत डर

५१ केवल बीसवास रख और वुह चंगी हो जायगी। और जब वुह घर में आया तो केवल पतरस और याकुब और युहना और उस कनया के माता पीता को छोड़ कीसी को भीतर जाने

५२ न दीया। और सब उसके कारन बीलाप करके रो रहे थे परंतु उसने कहा की मत रोओ वुह मर नहीं गई परंतु नींद में

५३ है। तब वे यह जानके की वुह मर गई है उस पर नींदा

५४ करके हंसे। और उसने उन सभों को बाहर करके उसका

५५ हाथ लीया और पुकार के कहा की कनया उठ। तब उसका

पनान फीन आया और वुह तुर्त उठी और उसने अगया की
५६ की उसे पाने को दीया जाय। तव उसके माता पीता वीसमीत
हुए और उसने उनहें कहा की यह जो कीया गया है कीसी
से मत कहीयो।

९ नवां पनव।

१ फीन उसने अपने वानह सीष्पन को एकठे वुलाके उनहें
सारे पीसायों पन पनाकनम और नोगों को यंगा कनने को
२ सामनथ दीया। और उनहें भेजा की इसन के नाज का
३ उपदेस कनें और नोगीयों को यंगा कनें। और उनहें कहा
की जातना के लीये कुछ मत लेओ न लाठीयां न झोली न नोटी
४ न नोकड़ न मनुष्य पीछे दो वसतन। और जीस कीसी घन में
५ तुम पनवेस कनो वहीं नहो और वहां से सीघानो। और जो
कोइ तुमहाना आदन न कने जव तुम उस नगन से वाहन
नीकलो उनपन साष्पी के लीये अपने यनन की धुल झाड़ो।
६ तव वे यल नीकले और नगन नगन में से मंगल समायान
७ सुनाते और सनवतन यंगा कनते गये। अव यौथइ के अधक्ष
होनुदीस ने सव कुछ जो यस ने कीया था सुनके घवनाया इस
लीये का कीतने कहते थे की यहीया मीनतकों से जी उठा।
८ और कीतने की इलीयास पनगट हुआ और कीतने की एक
९ पनायीन आगम गयानीयों में से फीन उठा है। तव होनुदीस
वोला की यहीया का तो मैं ने सीन काटा पनतु यह कौन है
जीसको अवसथा में मैं ऐसी वातें सुनता हूं और याहा की
१० उसे देखे। तव पनेनीतों ने फीन आके सव कुछ जो उनहों ने
कीया था उसे कहा और वुह उनको लेके युपके से एकांत वैत
११ सैदा नगन के एक सुन सथान में गया। और जव लोगों ने
जाना वे उसके पीछे हो लीये और उसने उनहें गनहन कनके
उनसे इसन के नाज की वातें कीं और उनको जीनहें यंगा

१२ होने का पनव़ोजन या यंगा कीय़ा। और जव़ दीन ढलने
लगा उन व़ानहें ने आके उसको कहा की मंडली को व़ीदा
कनीय़े की वे नगनें में और यानें ओन की व़सतीय़ें में जा
नहें और भ्नोजन पावें कय़ोंकी हम य़हां सुन सथान में हैं।
१३ पनंतु उसने उनहें कहा की तुम उनहें प्याने को देओ वे व़ोले
की हम पांय नोटीय़ें और दे मछलीय़ें से अघीक कुछ नहीं
नप्पते जव़ लें हम जाके इन लोगें के लीय़े भ्नोजन मोल लेवें।
१४ कय़ोंकी वे अटकल में पांय सहसन पुनुप्प थे तव़ उसने अपने
सीप्पन से कहा की उनहें पयास पयास की जथा कनके व़ैठाओ।
१५।१६ उनहें ने वैसाही कीय़ा और सभ्नें को व़ैठाय़ा। तव़
उसने उन पांय नोटीय़ें और दे मछलीय़ें को उठाय़ा और
सनग पन दीनीसट कनके उनपन आसीस कीय़ा और तोड़ा
१७ और सीप्पन को दीय़ा की मंडली के आगे नप्पें। और उनहें
ने प्याय़ा और सव़के सव़ तीनीपत ऊऐ और उन टुन यान से
१८ जो उनसे व़य नहे थे व़ानह टोकनीय़ां भ्ननीं उठाइं। और
जव़ वुह अकेला पनानथना कनता था ऐसा ऊआ की उसके
सीप्प उसके संग थे तव़ उसने य़ह कहके उनहें पुछा की लोग
१९ मुझे कीसको कनके कहते हैं। वे उतन में व़ोले की य़हीय़ा
सनानकानक पनंतु कीतने की इलीय़ास अनु और की पुनाने
२० आगम गय़ानीय़ें में से ऐक फेन उठा। उस ने उनहें कहा पनंतु
तुम मुझे कीसको कनके कहते हो पतनस ने उतन देके कहा की
२१ इसन का वुह मसीह। तव़ उसने उनहें दीनढ़ता से येताय़ा
और य़ह कहके अगय़ा की, की य़ह व़ात कीसी से मत कहीय़ो।
२२ अवेस है की मनुप्प का पुतन व़ऊत कसट उठावे और पनायीनें
और पनधान य़ाजकें और अघापकें से तय़ाग कीय़ा जाय़
२३ और माना जाय़ और तीसने दीन फेन उठाय़ा जाय़। फेन
उसने सभ्नें से कहा की य़दी कोइ मेने पीछे आय़ा याहे तो
वुह अपनी इछा को तय़ाग कने और पनतीदीन अपना

२४ कुरुस उठावे औान मेने पीछे आवे। इस लीये की जो कोइ अपना पनान व्रयाया याहे उसे प्योवेगा पनंतु जो कोइ मेने
२५ कानन अपने पनान को प्योवेगा सोइ उसे व्रयावेगा। कयोंकी मनुष्य को कया लाभ ऊआ यदी वुह सानै जगत को कमावे
२६ औान अपने को प्योवे अथवा तयाग कीया जावे। कयोंकी जो कोइ मुझ से औान मेने व्रयन से लजायगा मनुष्य का पुतन भी उस से लजायगा जव वुह अपने औान अपने पीता के औान
२७ पवीतन दुतों के ऐसयनय में आवेगा। पनंतु मैं तुमहों से सत कहता ऊं की यहां कीतेक प्यड़े हैं जो मीनतु का सवाद
२८ न यीप्येंगे जव लों इसन के नाज को न देप्य लें। औान उन व्रातों से आठ दीन के पीछे ऐसा ऊआ की वुह पतनस औान युहना औान याकुव्र को लेके पहाड़ पन पनानथना कनने को
२९ गया। औान उसके पनानथना कनते ऊऐ उसके रुप का डोल
औानही हो गया औान उसका व्रसतन सेत औान यमकने लगा।
३० औान देप्यो की दो मनुष्य उस से व्रानता कनते थे जो मुसा औान
३१ इलीयास थे। वे तेज में दीप्याइ दीये औान उसके मीनतु की जीसको वुह यनोसलीम में संपुनन कनने पन था व्रानता कनते
३२ थे। तव्र पतनस औान वे जो उसके संग थे नींद से भानी थे औान जव्र वे जाग उठे उनहों ने उसके ऐसयनय को औान
३३ उन दोनों मनुष्यन को जो उसके संग प्यड़े थे देप्या। औान जव्र वे उस से अलग होने लगे ऐसा ऊआ की पतनस ने यसु को कहा की हे गुनु हमाने कानन अछा है की यहां नहें औान तीन तंव्रु व्रनावें ऐक तेने लीये औान ऐक मुसा के लीये औान ऐक
३४ इलीयास के लीये वुह न जानता था की कया कहता है। उसके यह कहते ऐक मेघ ने आके उन पन छाया की औान जव्र वे
३५ मेघ में पनवेस कनने लगे वे डन गये। औान यह कहते ऊऐ मेघ से ऐक सव्रद नीकला की यह मेना पीनीय पुतन है उसकी
३६ सुनो। औान जव्र सव्रद हो युका यसु अकेला पाया गया औान

वे यपके हो कन उन व़ातों में से जो उनहों ने देष्पी थीं उनहीं दीनों में कीसी से कुछ न कहा।

३७ और ऐसा ङआ की दुसने दीन जव़ वे पहाड़ पन से उतने ३८ व़ङत लोग उस से आ मीले। और देष्पो की ऐक मनुष्प ने उस मंडली से पुकान के कहा हे गुन मैं तेनी व़ीनती कनता ङं की मेने पुतन पन दोनीसट कन कयोंकी वुह मेना ऐकलैाता है।

३९ और देष्प उसको आतमा लेता है और वुह तुनंत यीलाता है और वह उसे ऐसा ऐंठता है की वुह फेन व़हाता है और ४० वुह उसको कुयल के कठीन से नीकल जाता है। और मैं ने तेने सीष्पन से व़ीनती की, कीं उसको दुन कनें और वे न सके।

४१ तव़ यसु ने उत्तन दे य़ा और कहा हे अव़ीस्वास और हठीली पीढ़ी कव़ लें मैं तुमहाने संग नङं और तुमहानी सङं अपने ४२ पुतन को इधन ला। और जव़ वुह आने लगा उस पीसाय ने उसको गीना दीय़ा और फाड़ा तव़ यसु ने उस अपवीतन आतमा को डांटा और व़ालक को यंगा कीय़ा और उसे उसके ४३ पीता को सैांप दीय़ा। और वे सव़ ईसन के व़ड़े पनाकनम से व़ीसमीत ङऐ पनंतु जव़ वे उन कानजों से जो य़सु ने कीय़े ४४ थे आसयनज में थे उसने अपने सीष्पन को कहा। ये व़ातें तुमहाने कान में पैठें की मनुष्प का पुतन लोगों के हाथ में सैांपा ४५ जाय़गा। पनंतु उनहों ने इस कहावत को न समझा और य़ह उनसे गुपत नहा की उनको सुझ न पड़ा और वे उस व़ात ४६ को उसे पुछने को डने। फेन उन में यनया उठी की हमों में ४७ सव़ से व़ड़ा कौन होगा। य़सु ने उनकें मन की यींता जान के ४८ ऐक व़ालक को लेकन अपने पास नष्पा। और उनहें कहा की जो कोई इस व़ालक को मेने नाम से गनहन कने मुझे गनहन कनता है और जो कोई मुझे गनहन कने उसको जीसने मुझे भेजा है गनहन कनता है कयोंकी वुह जो तुम सभों में ४९ अतयंत छोटा है वही व़ड़ा होगा। तव़ य़ुहना ने उत्तन दीय़ा

ऋौर कहा की हे गुरु हम ने ऐक को तेरे नाम से पीसाच को दुर करते देष्पा ऋौर उसे व्रनज दीया इस कारन की वुह
५० हमारे संग नहीं ऋाता। तव्र य़सु ने उसको कहा की मत व्रनज कय़ोंकी वुह जो हमारे व्रीरुघ नहीं महारा साथी है।
५१ ऋौर जव्र उसके उपर उठाय़े जाने का समय़ ऋाय़ा ऐसा ऊऋा की उसने ऋपनेमुंह को दीनढ़ कीय़ा की य़रोसलीम
५२ को जाय़। ऋौर ऋपने ऋागे दुतों को भेजा ऋौर उनहों ने जाके सामरीऋों के ऐक गांव में परवेस कीय़ा की उसके लीय़े
५३ सोच करें। ऋौर उनहों ने उसको गरहन न कीय़ा इस कारन
५४ की उसका रुष्प य़रोसलीम को जाने पर था। ऋौर जव्र उसके सीष्प य़ाकुव्र ऋौर य़हना ने देष्पा वे व्रोले की हे परभु तेरी इछा होय़ तो हम ऋगय़ा करें की सरग से ऋाग व्ररसे ऋौर
५५ उनहें भसम करे जैसा की इलीय़ासने कीय़ा था। परंतु वुह फीरके उनके दपट के व्रोला तुम नहीं जानते की तुमहारा
५६ कीस भांत का ऋातमा है। कय़ोंकी मनुष्प का पुतर लोगों का परान नास करने नहीं ऋाय़ा परंतु रछा करने को ऋाय़ा है
५७ फेर वे दुसरे गराम को गय़े। ऋौर ऐसा ऊऋा की जव्र वे मारग में चले जाते थे कोसी ने उसको कहा की हे परभु जहां
५८ कहीं तु जाय़ मैं तेरे पीछे चलुंगा। तव्र य़सु ने उसे कहा की लोमड़ीय़ों के लीय़े मांदें ऋौर ऋाकास के पंछीय़ों के लीय़े घोंसले हैं परंतु मनुष्प के पुतर के लीय़े सीर धरने का नहीं है।
५९ ऋौर उसने दुसरे को कहा की मेरे पीछे चल परंतु उसने कहा
६० हे परभु मुझे पहीले ऋपने पीता को गाड़ने दे। य़सु ने उसे कहा की मीरतक ऋपने मीरतक को गाड़ें परंतु तु जाके इसर
६१ के राज का संदेस दे। ऋौर दुसरे ने भी कहा हे परभु मैं तेरे पीछे चलुंगा परंतु पहीले मुझको जाने दे की ऋपने घर
६२ के लोगों से व्रीदा हो ऋाउं। तव्र य़सु ने उसको कहा की जो

मनुष्प अपने हाथ को हल पन नष्पके पोछे देष्पे इसन के नाज के जोग नहीं।

१० दसवां पनब्र।

१ इन व्रातों के पीछे पनभु ने औान सतन को भी ठहनाय़ा औान उनहें दो दो कनके अपने आगे जीस जीस नगन औान सथान में जीधन वुह आप जाय़ा याहता था भेजा। २ इस लीये उसने उनहें कहा की पकी ऊइ ष्पेती व्रऊत है ठीक पनंतु व्रनीहान थोड़े हैं सो ष्पेती के सामी की व्रीनती कनो की वुह अपनी पकी ष्पेती के लीये व्रनीहानों को भेजे। ३ जाओ देष्पो मैं तुमहें मेमना की नाइं ऊंड़ानों में भेजता ऊं। ४ न डोंड़ा न झोला न जुता लेओ औान मानग में कीसी को नमसकान मत कनो। ५ औान जीस कीसी घन में पनवेस कनो पहीले उस घन पन कलय़ान कहो। ६ औान य़दी वहां कलय़ान का पुतन होय़ तो तुमहाना कलय़ान उस पन ठहनेगा नहीं तो तुमहों पन फीन आवेगा। ७ औान उसी घन में नहो औान जो कुछ वे तुमहें देवें ष्पाओ पीओ कय़ोंकी व्रनीहान अपनी व्रनी के जोग है घन घन मत फीनो। ८ औान जीस कीसी व्रसती में पनवेस कनो औान वे तुमहाना आदन कनें जो कछ तुमहाने आगे नष्पा जाय़ भोजन कनो। ९ औान वहां के नोगीय़ों को यंगा कनो औान उनहें कहो की इसन का नाज तुमहाने पास पऊंया है। १० पनंतु जीस जीस नगन में तुम पनवेस कनो औान वे तुमहाना आदन न कनें वहां के मानगों मे जाके कहो। ११ की तुमहाने नगन की धुल लों जो हम पन पड़ी है हम तुम पन झाड़ यले तथापी इसे नीसयय़ जान नष्पो की इसन का नाज तुमहाने पास पऊंया है। १२ पनंतु मैं तुमहों से कहता ऊं की उसी दीन में उस नगन की दसा से सदुम के लीये अधीक सहज होगी। १३ हे कोनज़ीन तुझ पन हाय़ है हे व्रैतसैदा तुझ पन हाय़ है इस लीये की जो आसयनज कनम

तुम में दीष्पाये गये यदी सुर और सैदा में दीष्पाये जाते वे
टाट ओढ़ के और राष्प पर बैठ के कबके पसयाताप करचुकते।
१४ परंतु बीचार के दीन में तुमहारी दसा से सुर और सैदा के
१५ लीये अधीक सहज होगी। और हे कफरनाहुम जो सरग
१६ लों बढ़ाइ गइ है तु नीचे नास लों गीराइ जायगी। वुह जो
तुमहारी सुनता है मेरी सुनता है और वुह जो तुमहारा
अनादर करता है मेरा अनादर करता है और वुह जो मेरा
१७ अनादर करता है मेरे भेजने वाले का अनादर करता है। तब
वे सतर फेर आके आनंद से कहने लगे की हे परभु तेरे नाम
१८ से पीसाच भी हमारे बस में हैं। तब उसने उनहें कहा मैं ने
१९ देष्पा की सैतान बीजली की नाइं सरग से गीरा। देष्पो मैं
तुमहें सांपों और बीछुओं को और सतरु के समसत पराकरम
को लताड़ने का सामरथ देता हुं और कोइ बसतु तुमहें कीसी
२० रीत से दुष्प न देगी। तीस पर भी उस से आनंद मत करो
की आतमा तुमहारे बस में हैं परंतु पहीले इस लीये आनंद
करो की तुमहारे नाम सरग में लीष्पे हुए हैं।

२१ उसी घड़ी यसु ने आतमा में आनंदीत होके कहा की हे पीता
सरग और पीरथीवी के परभु मैं तेरी सतुत करता हुं की तु
ने इन बातों को गयानीयों और बुधमानों से छीपाया और
उनहें बालकों पर परगट कीया ऐसा होवे हे पीता कयोंकी
२२ तेरी दरीसट में यही अछा जाना गया। सब कुछ मेरे पीता
से मुझे सौंपा गया और कोइ नहीं जानता की पुतर कौन है
परंतु पीता और न कोइ की पीता कौन है परंतु पुतर और
२३ जीस पर पुतर परगट कीया चाहे। तब उसने सीष्पन के ओर
फीर के एकांत में कहा की जो जो बसत तुम देष्पते हो जो
२४ आंष्पें उनहें देष्पती हैं सो धंन हैं। की मैं तुमहें कहता हुं
की बहुतेरे आगम गयानीयों और राजाओं ने अभीलाष
कीया की यह जो तुम देष्पते हो देष्पें और न देष्पा और जो

२५ बातें तुम सुनते हो सुनें और न सुना। और देखो कीसी
ब्यवस्था के गयाता ने उठके उसकी परीछा करने को पुछा की
हे गुरु मैं कया करुं की अनंत जीवन का अधीकारी होउं।
२६ उसने उसको कहा की ब्यवस्था में कया लीखा है तु कैसे पढ़ता
२७ है। तब उसने उतर देके कहा की तु अपने परभु ईसर पर
अपने सारे अंतःकरन से और अपने सारे मन से और अपने
सारे बल से और अपनी सारी बुध से और अपने परोसी को
२८ अपने समान परेम कर। तब उसने उसको कहा की तु ने
२९ ठीक उतर दीया यही कर और तु जीयेगा। परंतु उसने
अपने को नीरदोष ठहराने की इछा करके यसु को कहा भला
३० मेरा परोसी कौन है। तब यसु ने उतर देके उसको कहा की
कोई यरोसलीम से अरीहो को जाता था और चोरों में पड़ा
जीनहों ने नंगा करके उसको घायल कीया और अधमुआ
३१ छोड़ के चले गये। तब संजोग से कोई याजक उस मारग से
आया जब उसने उसे देखा वुह दुसरे ओर से चला गया।
३२ और इसी रीत से ऐक लेवी ने उस सथान में पहुंच के उसे
३३ आ देखा और दुसरे ओर से चला गया। परंतु कोई सामरी
जाते जाते जहां वुह था वहां पहुंचा और वुह उसे देखके
३४ दयामान हुआ और जाके तेल और मदीरा लगा कर उसके
घावों को बांधा और अपने पसु पर बैठा के उसे सरा में लाया
३५ और उसकी सेवा करने लगा। तब दुसरे दीन सीधारते
हुए उसने दो सुकी नीकाल कर भठीहार को दी और उसको
कहा की उसकी टहल कर और जो कुछ तेरी अधीक उठार
३६ होगी मैं फीर आके तुझे भर देउंगा। अब तु कया बीचार
करता है सो जो चोरों में जा पड़ा उन तीनों में से कीस को
३७ उसका परोसी समझता है। उसने कहा उसको जीसने उस पर
दया की तब यसु ने उसे कहा जा तु भी ऐसाही कर।
३८ और यूं हुआ की जब वे जाते थे उसने कीसी गांव में

पनवेस कीया श्रौन ऐक इसतोनी ने जीसका नाम मनसा था
३९ उसको श्रपने घन में उताना। श्रौन मनीयम नाम उसकी ऐक
वहीन थी जो यसु के यनन पास वैठ के उसकी वानता भी
४० सुनती थी। तव मनसा वक्रत सेवा से वयाकुल ऊइ श्रौन उसके
पास श्राके वोली की हे पनभु कया तु नहीं यींता कनता की
मेनी वहीन ने मुझे श्रकेली पन सेवा छोड़ दी इस लीये उसे
४१ श्रगया कन की मेना सहाय कने। तव यसु ने उतन दीया
श्रौन उसको कहा की मनसा हे मनसा तु यीनतमान श्रौन
४२ वक्रत सी वसतु में वयाकुल है। पनंतु ऐकही वसतु का श्रावसक
है श्रौन मनीयम ने उस श्रच्छे भाग को युना है जो उस से लीया
न जायगा।

११ गयानहवां पनव।

१ श्रौन ऐसा ऊश्रा की जव वह कीसी सथान में पनानथना
कनता था श्रौन श्रवकास पाया उसके सीष्यन में से ऐक ने उसे
कहा की हे पनभु हम को पनानथना कनना सीष्या जैसा की
२ यहीया ने भी श्रपने सीष्यन को सीष्याया। उसने उनहें कहा
की जव तुम पनानथना कनो कहो हे हमाने पीता जो सनग में
है तेना नाम पवीतन होवे तेना नाज श्रावे तेनी इछा जैसी
३ सनग में है वैसी पीनथीवी पन हो जाय। हमाने दीन दीन
४ की नोटी पनतीदीन हमें दे। श्रौन हमाने पापों को छमा कन
कयोंकी हम भी हन ऐक को जो हमाना उघानीक है छमा
कनते हैं श्रौन हमें पनीछा में न डाल पनंतु दुसट से वया।
५ श्रौन उसने उनहें कहा तुम में से कौन है जीसका ऐक मीतन
होय श्रौन श्राधी नात को उस पास जाय श्रौन उसको कहे की
६ हे मीतन तीन नोटी मुझे उघान दे। कयोंकी मेना ऐक मीतन
जातना में मुझ पास श्राया है श्रौन मेने पास कुछ नहीं की उसके
७ श्रागे धनुं। श्रौन वुह भीतन से उतन देवे श्रौन कहे की मुझे

मत सता श्रब़ दुवान ब़ंद है श्रौन मेने ब़ालक मेने संग ब़ीछौने
८ पन हैं मैं उठ के तुहे दे नहीं सकता। मैं तुम से कहता ऊं
की य़दपी वुह उसके मीतन होने के कानन से उसे न देगा
तथापी उसके गोड़ गीड़ाने के लीय़े वुह उठेगा श्रौन जीतना उसे
९ श्रावेसक है देगा। सो मैं तुमहें कहता ऊं की मांगो श्रौन
तुमहें दीय़ा जाय़गा ढुंढो श्रौन तुम पाश्रोगे प्पटप्पटाश्रो श्रौन
१० तुमहाने लीय़े प्पोला जाय़गा। कय़ोंकी हन प्रेक जो मांगता
है लेता है श्रौन जो कोइ की ढुंढ़ता है पाता है श्रौन जो
११ प्पटप्पटता है उसके लीय़े प्पोला जाय़गा। य़दी पुतन तुम
में से जो पीता हो नोटी मांगे कय़ा वुह उसको पथन देगा श्रथवा
१२ य़दी मछली मांगे मछली की संती उसे सनप देगा। श्रथवा
१३ य़दी वुह श्रंडा मांगे कय़ा वुह उसे ब़ीछ देगा। सो य़दी तुम
ब़ुने होके श्रछे दान श्रपने ब़ालकों को देने जानते हो तो कीतना
श्रधीक तुमहाना सनग ब़ासी पीता तुमहें जो उस से मांगते हैं
१४ धनमातमा देगा। फेन वुह प्रेक पीसाच को जो गुंगा था
नीकालता था श्रौन प्रैसा ऊश्रा की जब़ वुह पीसाच नीकाला
गय़ा वुह गुंगा ब़ोलने लगा श्रौन लोगों ने श्रासचनज मान ।
१५ पनंतु उन में से कीतने ब़ोले की वुह पीसाचों के पनधान ब़ाल-
१६ जब़ुब के सहाय़ से पीसाचों को दुन कनता है। कीतनों ने
१७ पनीछा के लीय़े उस से सनग से प्रेक लछन चाहा। पनंतु उस
ने उनकी चींता जान के उनहें कहा की जो जो नाज श्रपने
ब़ीनोध से ब़ीभाग हो जाय़ उजाड़ होता है श्रौन घन घन से
१८ ब़ीनुध होके गीन जाता है। य़दी सैतान भी श्रपने ब़ीनोध
में ब़ीभाग होवे तो उसका नाज कैसे ठहनेगा इस कानन की
तुम कहते हो की मैं ब़ालजब़ुब के सहाय़ से पीसाचों को दुन
१९ कनता ऊं। श्रौन य़दी मैं ब़ालजब़ुब के सहाय़ से पीसाचों को
दुन कनुं तो तुमहाने पुतन कीसके सहाय़ से दुन कनते हैं इस
२० लीय़े वे तुमहाने नय़ाय़ी होंगे। पनंतु य़दी मैं इसन के सहाय़

से पीसाचों को दुर करता हुं तो नीसचय ईसवर का राज तुम
२१ पर आया है। जब बलवान मनुष्य हथीयार बांधे हुऐ अपने
घर की रष्यवाली करता है उसकी संपत कुसल से रहती है।
२२ परंतु जब उस से ऐक अधीक बलवान उसपर चढ़ आवे और
उसको बस में करे वुह उसके समसत हथीयार को जीस पर
उसका आसरा था ले लेता है और उसके लुट को बांट लेता है।
२३ वुह जो मेरा संगी नहीं सो मुझ से बीरुध है वुह जो मेरे संग
२४ ऐकठा नहीं करता बीथराता है। जब अपवीतर आतमा
मनुष्यों में से नीकल गया है वुह सुष्ये सथान में बीसराम ढुंढता
फीरता है और नहीं पाके वुह कहता है की मैं अपने घर में
२५ जहां से नीकला हुं फीर जाउंगा। और आके उसे झाड़ा
२६ बोहारा पाता है। तब वुह जाके और सात आतमा जो उस
से अधीक दुसट हैं लेता है और वे पैठ के वहीं रहते हैं
तब उस मनुष्य की पीछली दसा पहीली से भी अधीक बुरी
२७ होती है। और जब वुह यह बचन कह रहा था ऐसा हुआ
की उस मंडली में से ऐक इसतीरी ने पुकार के कहा धंन वुह
२८ गरभ जीस में तु पड़ा और वे सतन जीनहें तुने चुसा है। परंतु
उसने कहा की हां अती धंन वे हैं जो ईसर का बचन सुनते
२९ हैं और उसे मनन करते हैं। और जब बहुत लोग ऐकठे
होने लगे उसने कहना आरंभ कीया की इस समय के लोग
दुसट हैं वे चीनह ढुंढ़ते हैं परंतु युनस आगमगयानी के
३० चीनह से अधीक उनहें कोई चीनह न दीया जायगा। कयों-
की जीस रीत से युनस नीनीवी के लोगों पर ऐक चीनह था
वैसा मनुष्य का पुतर भी इस समय के लोगों के लीये होगा।
३१ दष्यीन की रानी बीचार के दीन में इस समय के मनुष्य के
संग उठेगी और उनहें दोष्यी ठहरावेगी कयोंकी वुह पीरथीवी
के सीवाने से सुलेमान का गयान सुनने को आई और देष्य
३२ की ऐक यहां सुलेमान से महान है। नीनीवी के लोग बीचार

के दीन में इस समय़ के लोगों के संग उठेंगे और उनहें दोष्पी ठहरावेंगे इस लीय़े की उनहों ने य़ुनस के उपदेस से पसचा-
३३ ताप कीय़ा और देष्पो की एेक य़हां य़ुनस से महान है। कोइ मनुष्प दीपक ब्रार के गुपत सथान में अथवा नांद के नीचे नहीं रष्पता परंतु दीअट पर की वे जो भीतर आवें उंजीय़ाला देष्पें।
३४ देह का उंजीय़ाला आंष्प है इस कारन जब़ तेरी आंष्प नीरमल है तेरा समसत देह भी उंजीय़ाले से पुरन है परंतु जब़ मलीन
३५ है तो तेरा समसत देह भी अंधकार से भरा है। इस लीय़े सैायेत रहो की वुह उंजीय़ाला जो तुझ में है अंधीय़ारा न
३६ हो जाय़। सो य़दी तेरा समसत देह उंजीय़ाले से भरा हो और कुछ अंधीय़ारा न हो तो समसत देह उंजीय़ाले से भरा होगा जैसा चतो परकास दीपक से तुझे उंजीय़ाला मीलता है।
३७ और जब़ वुह कह रहा था एेक फरीसी ने उस से ब्रीनती करके कहा की मेरे संग भोजन कीजीय़े और वुह भीतर जाके
३८ भोजन पर ब्रैठा। और जब़ उस फरीसी ने देष्पा की उसने
३९ भोजन से पहले न धोय़ा तो आसचरज माना। तब़ परभु ने उसको कहा हे फरीसीय़ो कटोरे और थाली को ब्राहर से सुध करते हो परंतु तुमहारे भीतर में कुरता और दुसटता
४० भरी ऊइ हैं। हे मुरष्पो कय़ा जीसने ब्राहर ब्रनाय़ा उसने
४१ भीतर भी नहीं ब्रनाय़ा। परंतु अपनी ब्रीसात के समान दान देओ और देष्पो की समसत ब्रसतें तुमहारे लीय़े पवीतर
४२ हैं। परंतु हे फरीसीय़ो तुमहों पर संताप है कय़ोंकी तुम पुदीना और जीरा और हर एेक रीत के साग पात का दसवां भाग देते हो और नय़ाय़ और इसर के परेम को उलंघन करते हो तुम को अवस था की इनहें करते और उनहें न
४३ छोड़ते। हे फरीसीय़ो तुम पर संताप है कय़ोंकी तुम सभा
४४ में स्रेसठ आसन और हाटों में नमसकार चाहते हो। हे कपटी अधापको और फरीसीय़ो तुम पर संताप है कय़ोंकी

तुम समाधीन की नाईं हो जो दीप्पाई नहीं देते श्रीन लेग
४५ जो उपन यलते हैं नहीं जानते। तव्र ग्रेक व्रैवसथा के गयाता
ने उतन दीया श्रीन उसको कहा की हे गुनु यह कहके तु
४६ हमानी भी नींदा कनता है। तव्र उसने कहा हे व्रैवसथा के
गयानीयो तुम पन भी संताप है कयोंकी तुम कठीन व्रोझ
मनुष्यन पन लादते हो श्रीन तुम श्राप उन व्रोझों को श्रपनी
४७ ग्रेक श्रंगुली से नहीं छुते। तुम पन संताप है कयोंकी तुम
श्रागमगयानीयों के समाधीन को व्रनाते हो श्रीन तुमहाने
४८ पीतनों ने उनहें मान डाला। ठीक तुम साप्पी देते हो की
श्रपने पीतनों के कनम को मान लेते हो कयोंकी उनहों ने तो
उनहें मान डाला श्रीन तुम उनके समाधीन को व्रनाते हो।
४९ इस लीये इसन के गयान ने भी कहा की मैं श्रागमगयानीयों
श्रीन पनेनीतों को उनके पास भेजुंगा श्रीन वे उन में से कीतनों
५० को मान डालेंगे श्रीन सतावंगे। की साने श्रागमगयानीयों का
लोऊ जो जगत के श्रानंभ से व्रहाया गया है इस समय के
५१ लोगों से लीया जाय। हावील के लऊ से लेके जकनीया के
लोऊ लों जो व्रेदी श्रीन मंदीन के मध में माना गया मैं तुमहों
५२ से कहता ऊं की इस समय के लोगों से लीया जायगा। हे
व्रैवसथा के गयानीयो तुम पन संताप है कयोंकी तुम ने व्रीदया
की कुंजी ले ली है तुम ने श्राप पनवेस नहीं कीया श्रीन जो
५३ पनवेस कनते थे उनहें व्रनजा। श्रीन जव्र वुह उनहें ये व्रातें
कह नहा था श्रधयापक श्रीन फनीसी उसे व्रऊत सी व्रातों से
५४ प्पीजाने श्रीन श्रतयंत उसकाने लगे। श्रीन उसके घात में
लगे श्रीन ढुंढते थे की उसके मुंह से कोई व्रयन पकड़ पावें की
वे उसे दोप्पी कनें।

१२ व्रानहवां पनव्र।

१ इतने में जव्र श्रगनीत लोगों की मंडली ग्रेकठी ऊई श्रीन

प्रेक दुसने को घताड़ता था उसने सब से पहले अपने सीष्यन
को कहना पानंभ कीया की तुम फनीसीयों के पमीन से जो
१ कपट है पने नहो। कयोंकी कोइ बसतु ढंपी नहीं जो पनगट
२ न होगी न छीपी जो जानी न जायेंगी। इस कानन जो कुछ
तुम ने अंधीयाने में कहा है उंजीयाले में सुना जायगा औन
जो कुछ तुम ने कोठनीयों में कान में कहा है कोठों पन
४ पनयान कीया जायगा। औन हे मीतनो मैं तुम से कहता हुं
की उनसे मत डनो जो देह को मानडालते हैं औन उसके पीछे
५ कुछ कन नहीं सकते। पनंतु मैं तुमहें यीताउंगा की तुम
कीस से डनो उस से डनो जो देह को मानके पीछे ननक में
डालने का सामनथ नष्पता है मैं तुम से कहता हुं की उसे डनते
६ नहो। कया दो दमड़ीयों पन पांय यीड़ीयां नहीं बीकतीं
७ औन उन में से इसन के आगे प्रेक भुली हुइ नहीं है। पनंतु
तुमहाने सीन के बाने बाल लों गीने हुप्रे हैं इस लीये मत
८ डनो की तुम बहुत सी यीड़ीयों से अधीक मोल के हो। मैं
प्रेभी तुम से कहता हुं की जो कोइ मनुष्यन के आगे मुझे
मान लेगा मनुष्य का पुतन भी उसे इसन के दुतों के आगे
९ मान लेगा। पनंतु जो कोइ मनुष्यन के आगे मुझ से मुकनेंगा
१० इसन के दुतों के आगे मुकना जायगा। औन जो कोइ मनुष्य
के पुतन के बीनोध में कहेगा वुह उसको छमा कीया जायगा
पनंतु जो धनमातमा के बीनोध में अपनींनदा कनता है उसको
११ छमा नहीं कीया जायगा। औन जब वे तुमहें मंडलीयों में
औन नयायी औन पनाकनमी के आगे ले जावें यीनता मत
कनो की तुम कैसे अथवा कया उतन देओगे अथवा कया कहोगे।
१२ कयोंकी जो तुमहें कहना है धनमातमा उसी घड़ी तुम को
सीष्पावेगा।

१३ तब उस मंडली में से प्रेक ने उसे कहा की हे गुनु मेने भाइ
१४ को कह की वुह अधीकान का भाग मुझे देवे। तब उसने उसे

कहा की हे मनुष्य कौस ने मुह्हे तुम पन नयायी अथवा भाग
१५ कानक कीया। तव उसने उनहें कहा सैांयेत नहे। औान लाभ
से पने नहे। कयोंकी कीसी का जीवन उसके घन की अघीकाइ
१६ से नहीं है। फरेन उसने उनहें प्रेक दोनीसटांत कहा की प्रेक
१७ घनमान की भुम में व्रऊत कुछ उपजने लगा। तव उसने अपने
मन में यह कह के वीयान कीया की मैं कया कनुं मेने सथान
१८ नहीं जहां मैं अपनी भूम की व्रढती नप्पुं। तव उसने कहा
मैं यह कनुंगा मैं अपने प्पते का ढाउंगा औान व्रड़े व्रनाउंगा
१९ औान अपनी व्रढती औान संपत वहीं प्रेकठा कनुंगा। औान
अपने पनान का कऊंगा की हे पनान तेने पास व्रनसों के लीये
व्रऊत सी संपत प्रेकठी घनी है यैनकन प्पा पी आनंद हो।
२० पनंतु इसन ने उसे कहा की हे मुनष्य इसी नात तुह्ह से तेना
पनान फरेन लीया जायगा तव वे व्रसतें जो तु ने व्रटोनी हैं
२१ कीसको होंगी। उसकी यह दसा है जो अपने लीये घन व्रटोनता
है औान इसन के औान घनी नहीं है।

२२ फरेन उसने अपने सीप्पन का कहा इस लीये मैं तुमहों से
कहता ऊं की अपने जीवन के लीये यीनता मत कनो की हम
कया प्पावेंगे औान न देह के लीये की हम कया पहीनेंगे।
२३ जीवन प्पाने से औान देह व्रसतन से अघीक है। कौवों का
देप्पो वे न व्राेते हैं न लवते हैं उनके न प्पलीहान न प्पते हैं
औान इसन उनका प्पीलाता है तुम पंछीयों से कीतने भले हो।
२५ औान कैान तुम में यीनता कनके अपने डील को हाथ भन
२६ व्रढ़ा सके। यदी तुम अती छोटे काम नहीं कनसकते तो औानों
२७ के लीये कयों यीनता कनते हो। सुदनसन पन दीनीसट कनो
वे कैसे व्रढ़ते हैं वे पनीसनम नहीं कनते न कातते हैं औान मैं
तुम से कहता ऊं की सुलेमान अपने समसत प्रेसनय में उन में
२८ से प्रेक के समान व्रीभुसीत न था। फरेन यदी इसन घास को
जो आज प्पेत में है औान कल भटे में होंकी जायगी यों पही-

नाता है तो तुमहें कीतना अधीक पहीनावेगा हे अलप ब्रीसवा-
२९ सीयो। और यीनता मत कनो की हम कया खायेंगे और
३० हम कया पीयेंगे न अपने मन में संदेह कनो। कयोंकी उन
सब्र ब्रसतुन की यीनता संसानीक लोग कनते हैं और तुमहाना
३१ पीता जानता है की तुमहें इन ब्रसतुन का आवसक है। पनंतु
पहीले इसन के नाज कोा ढूंढो और ये सब्र ब्रसतें तुमहाने लीये
३२ अधीक की जायगी। हे छोटे हुंड मत डन इस लीये की तुम-
३३ हाने पीता की पनसनता है की नाज तुमहें देवे। जो कुछ तुम-
हाने हों ब्रेंय के दान कनो और थैली जो पुनानी नहीं होती
और सनग में घन जो नहीं घटता जहां योन नहीं पहुंयता
३४ और कीड़े नास नहीं कनते अपने लीये सहेजो। कयोंकी
जहां तुमहाना घन है तहां तुमहाना मन भी लगा नहेगा।
३५ तुमहानी कमनें ब्रंधी नहें और तुमहाना दीपक ब्रनता नहे।
३६ और तुम तो उन लोगों के समान जो अपने पनभु को ब्राट जोह-
ते हों की वुह ब्रीवाह कनके कब्र फीने की जब्र वुह आवे और
३७ खटखटावे वे उसके लीये तुनंत खोलें। धंन वे दास जीनहें
पनभु आकन जागते पावे मैं तुम से सत कहता हुं की वुह कमन
ब्रांधेगा और उनहें भोजन पन ब्रैठावेगा और आके उनकी
३८ सेवा कनेगा। और यदी वुह दुसने पहन अथवा तीसने पहन
३९ में आवे और ऐसा पावे वे दास धंन हैं। और तुम तो जानते
हो की यदी घन का सामी जानता की योन कीस घड़ी आवेगा
तो वुह जागता नहता और अपने घन में संघ देने न देता।
४० सो तुम भी लैस नहो कयोंकी मनुष्य का पुतन ऐसे समय में
आवेगा जब्र तुम ब्राट न जोहते नहोगे।

४१ तब्र पतनस ने उसको कहा की हे पनभु यह दीस्टांत तु
४२ हम से अथवा सब्र से कहता है। पनभु ने कहा की वुह ब्रीस-
वासी और ब्रुघमान भंडानी कैान है जीसको पनभु अपने पनी
वानो पन पनघान कनेगा की उनहें ठीक समय में भोजन का

४३ भाग देवे। धंन वुह सेवक जीसे उसका परभु आके ऐसेही
४४ करते पावे। मैं तुम से सत कहता ऊं की वुह उसे अपनी
४५ समसत संपत पर परधान करेगा। परंतु यदी वुह सेवक
अपने मन में कहे की मेरा परभु आवने में वीलंब करता है
और दास और दासीयों को मारने और खाने पीने और
४६ मतवाले होने लगे। तो उस सेवक का परभु ऐसे दीन में
आवेगा जब वुह बाट न जोहता हो और ऐसी घड़ी में की जब
वुह अचेत हो और उसको दो टुकड़ा करेगा और उसका भाग
४७ अबीसवासीयों के संग ठहरावेगा। और वुह सेवक जो अपने
परभु की इछा जान के लैस न ऊआ न उसकी इछा के समान
४८ चला बऊत सा मार पावेगा। परंतु जीसने न जाना और
मार खाने का काम कीया वुह थोड़ा सा मार पावेगा कयोंकी
जीसको बऊत दीया गया है उस से बऊत मांगा जायगा और
जीसको लोगों ने बऊत सोंपा है उस से वे अधीक मांगेंगे।
४९ मैं पीरथीवी पर आग लगाने आया ऊं और मैं कैसाही चाहता
५० ऊं की अभी लग जाय। और मुझे ऐक सनान से सनान पावना है
५१ और मैं कैसे सकेत में ऊं जब लों वुह संपुरन न होले। तुम कया
समझते हो की मैं पीरथीवी पर कुसल देने आया ऊं मैं तुम से
५२ कहता ऊं की नहीं परंतु पहीले भाग करने को। कयोंकी
अबसे पांच ऐक घर में दो भाग होंगे तीन सतरु दो के दो
५३ सतरु तीन के। पीता पुतर के बीरोध में बीभाग होगा और
पुतर पीता के बीरोध में माता पुतरी के बीरोध में और पुतरी
माता के बीरोध में सास पतोह के बीरोध में और पतोह सास
५४ के बीरोध में। और उसने यह भी लोगों से कहा की जब
तुम घटा पछीम से उठती ऊई देखते हो तुरंत कहते हो की
५५ झड़ी आती है और ऐसाही होता है। और जब दखीन का
पवन चलता है तुम कहते हो की गरमी होगी और योंहीं
५६ होती है। हे कपटीयो तुम आकास और पीरथीवी के रुप

को व्रीयान कन सकते हो पन य़ह कैसे है की तुम इस समय़
५७ को नहीं व्रीयानते। हां वुह जो ठीक है आपही कय़ें नहीं
५८ व्रीयानते। जीस समय़ में तु अपने व्रैनी के संग नय़ाय़ी
के पास यला जाता है मानग में जतन कन की तु उस से छुट
जावे न हो की ऽुह तुहे नय़ाय़ी के समीप प्पींयवावे अैान
नय़ाय़ी तुहे दंडकानी को सैांपे अैान दंडकानी तुहे व्रंदीगीनह
५९ में डाल दे। मैं तुह से कहता ऊं की तु वहां से न नीकलेगा जव्र
लें तु पीछली दमड़ी लें न भन दे।

१३ तेनहवां पनव्र।

१ उस समय़ में कीतने वहां थे जो उन जलीलीय़ें के व्रीष्य़ में
उस से कहने लगे जीनका लोऊ पीलातुस ने उनके व्रलीदान
२ के संग मीलाय़ा। अैान य़सु ने उतन दीय़ा अैान उनहें कहा
तुम कय़ा समहते हो की य़े जलीली सव्र जलीलीय़ें से अधीक
३ पापी थे की उनहों ने अैसा अैसा कसट पाय़ा। मैं तुमहों से
कहता ऊं की नहीं पनंतु य़दी तुम पसयाताप न कनो तो उसी
४ नीत से तुम सव्र नसट होअेागे। अथवा वे अठानह जीन पन
सैलुहा में गुमट गीना अैान उनहें नसट कीय़ा कय़ा तुम समहते
५ हो की वे य़नोसलीम के सव्र व्रासीय़ें से अधीक पापी थे। मैं
तुमहों से कहता ऊं की नहीं पनंतु य़दी तुम पसयाताप न
६ कनो तो उसी नीत से तुम सव्र नसट होगे। उसने य़ह दीनीस-
टांत भी कहा की कीसी के दाप्प के प्पेत में गुलन का अेक
व्रीनछ लगाय़ा गय़ा था अैान उसने आके उस पन फल ढुंढा
७ अैान न पाय़ा। तव्र उसने अपने माली से कहा की देप्प तीन
व्रनस से मैं आके इस गुलन के व्रीनछ पन फल ढुंढता ऊं अैान
नहीं पाता उसको काट डाल उसने भुम को कीस लीय़े नोक
८ नप्पा है। उसने उतन देके उसको कहा हे पनभु इस व्रनस भी
उसे नहने दीजय़े जव्र लें मैं उसका थाला प्पोदुं अैान गोव्रन

९ भलुं। और यदी उस पन फल लगे तो भला नहीं तो पीछे
१० उसे काट डालीयो। और वुह ऐक मंडली में वीसनाम के
११ दीन उपदेस कनता था। और देष्पो वहां ऐक इसतीनी थी
जीसपन अठानह वनस से दुनवलता का आतमा था और
कुवड़ी हो गइ थी और कीसी नीत से सीधी न हो सकती थी।
१२ और यसु ने उसे देष्प के वुलाया और उसे कहा की हे इसतीनी
१३ तु अपनी दुनवलता से छुट गइ। और उसने हाथें को उसपन
धना और तुनंत वुह सीधी हो गइ और इसन की सतुत की।
१४ और इस कानन की यसु ने वीसनाम के दीन में यंगा कीया
मंडली के पनधान ने कनोधीत होके कहा की छः दीन हैं जीन
में मनुष्पन को कानज कनना उयीत है इस लीये तुम उनहीं
दीनें में आ कन यंगे होओ और वीसनाम के दीन में नहीं।
१५ तव पनभु ने उतन दीया और उसको कहा की हे कपटी
वीसनाम के दीन में कया तुम में से हन ऐक अपने वैल और
गदहे को थान से नहीं ष्पोलता और पानी पीलाने नहीं ले
१६ जाता। और कया उयीत न था की इवनाहीम की पतनी
होके यह इसतीनी जीसको देष्पो सयतान ने इन अठानह
वनसें से वांध नष्पा है वीसनाम के दीन में इस वंधन से ष्पोली
१७ जाय। और जव उसने ये वातें कहीं उसके सव वैनी लजीत
ऊऐ और सानी मंडली उन सव भले कानजें के लीये जो उसने
कीये थे आनंद ऊइ।
१८ फेन उसने कहा की इसन के नाज की उपमा कीस से है
१९ और मैं उसको कीस से उपमा देउं। वुह नाइ के वीज के
समान है जीसे ऐक पुनुष्प ने लेके अपने ष्पेत में वोया और वुह
उगा और वड़ा वीनछ ऊआ और आकास के पंछीयें ने उसकी
२० डालीयें पन आके वास कीया। फेन उसने कहा की मैं इसन
२१ के नाज को कीस से उपमा देउं। वुह ष्पमीन की नाइं है जीसे
ऐक इसतीनी ने लेके तीन पनीमान पीसान में छीपाया जव

२१ जो सव्र प्पमीन हो गया। फेन वुह नगन नगन ओन गांव गांव में फीनता ऊआ ओन उपदेस कनता ऊआ यनोसलीम के
२३ ओन यला जाता था। तव्र येक ने उसको कहा हे पनभु कया
२४ उधान थोड़े पाते हैं। उसने उनहें कहा सकेत दुवान से पैठने को पनीसनम कनो कयोंकी मैं तुम से सत कहता ऊं की वक्रतेने
२५ उस में पैठने को याहेंगे ओन न सकेंगे। जहां घन का सामी उठा ओन दुवान को व्रंद कीया तुम व्राहन प्पड़े होके ओन यह कहके दुवान प्पटप्पटाने लगोगे की हे पनभु हे पनभु हमाने लीये प्पोल तव्र वुह उतन देगा ओन तुमहें कहेगा मैं तुमहें
२६ नहीं जानता की तुम कहां के हो। तव्र तुम कहने लगोगे की हम ने तेने आगे प्पाया ओन पोया है ओन तुने हमाने
२७ मानगों में उपदेस कीया है। तव्र वुह कहेगा मैं तुमहें नहीं जानता तुम कहां के हो हे कुकनमीयो मुझ से दुन होओ।
२८ वहां नोना ओन दांत कीयकीयाना होगा जव्र तुम लोग इव्रना हीम ओन इसहाक ओन याकुव्र ओन सान आगमगयानीयों को ईसन के नाज में देप्पोगे ओन तुमहीं व्राहन नीकाले गये।
२९ ओन वे पुनव्र ओन पछीम ओन उतन ओन दप्पीन से आवेंगे
३० ओन ईसन के नाज में व्रैठेंगे। ओन देप्पो की कीतने पीछले हैं जो आगे होंगे ओन कीतने अगले हैं जो पीछे।

३१ उसी दीन फनीसीयों में से कइ येक ने आके उसे कहा की
३२ यहां से यला जा कयोंकी हीनुदीस तुझे मान डालेगा। तव्र उसने उनहें कहा की जाके उस लोमड़ी से कहो की देप्प मैं पीसायों को दुन कनता ऊं ओन आज ओन कल यंगा कनता ऊं
३३ ओन तीसने दीन सीघ ऊंगा। तीस पन भी अवेस है की मैं आज ओन कल ओन पनसों फीनुं इस लीये की यह नहीं हो सकता की आगम गयानी यनोसलीम के व्राहन घात कीये
३४ जावें। हे यनोसलीम यनोसलीम जो आगमगयानीयों को घात कनती है ओन उन पन जो तुझ पास भेजे गये हैं पथनवाह

कनती है कइ व्रान मैं ने याह्ना की तेने पुतनों को जीस नीत
से कुकुटी अपने यींगनों को पनों के नीये कनती है प्रेकठा कनुं
१५ पनंतु तुम ने न याहा। देप्पो तुमहाने लीझे तुमहाना घन
उजाड़ छोड़ा जाता है और मैं तुम से सत कहता ऊं की तुम
मुझे न देप्पोगे जव्र लों वुह समय न आवे की तुम कहोगे धंन
वुह जो पनभु के नाम से आता है।

१४ यौदहवां पनव्र।

१ और प्रैसा ऊआ की जव्र व्रीसनाम के दीन पनघान फरी-
सीओं में से प्रेक के घन नोटी प्पाने गया वे उस को अगोनने
२ लगे। और देप्पो की वहां उसके आगे प्रेक मनुप्प था जीसे
३ जलंधन था। तव्र यसु उतन देके व्रैवसथा के गयानीयों और
फरीसीओं से कहने लगा कया व्रीसनाम के दीन में यंगा
४ कनना जोग है। वे कुछ न व्रोले तव्र उसने उसको लीया और
५ यंगा कनके जाने दीया। और उनके ओन मुंह फरे के कहा
की तुमहों में कौन है जीस का प्रेक गदहा अथवा व्रैल गड़हे
में गीन पड़े और वुह तुनंत व्रीसनाम के दीन में उसे न
६ नीकाले। तव्र वे उसे उन व्रातों का पनतउतन न दे सके।
७ और जव्र उसने नेवतहनीओं को देप्पा की वे कयोंकन पनधान
सथानों को यनते हैं उसने उनहें यह कहके दीनीसटांत कहा।
८ जव्र तु कीसी के व्रीवाह में वुलाया जाय पनधान सथान पन
मत व्रैठ प्रैसा न हो की उसने तुझ से कीसी पनतीसठत मनुप्प को
९ नेवता दीया हो। और वुह जीसने उसका और तेना नेवता
कीया है आवे और तुझे कहे की यह सथान इस पुनुप्प को
१० दे और तु लजा से सव्र से नीय सथाम लेने लगे। पनंतु जव्र
तेना नेवता कीया जावे जाके सव्र से नीय सथान में व्रैठ की जव्र
वुह आवे जीसने तेना नेवता कीया है तो तुझे कहे की हे मीतन
और भी उंये पन जा तव्र तु उनके आगे जो तेने संग भोजन

११ पर बैठे हैं परतीसठा पावेगा। कयोंकी जो कोइ अपने को बढ़ाता है नीचा कीया जायगा और वह जो अपने को दीन
१२ करता है वही बढ़ाया जायगा। तब उसने अपने नेवता कारक से कहा की जब तु मधारह का भोजन अथवा बीआरी बनावे अपने मीतरों को और अपने भाइयों और अपने कुटुमबों और धरमान परोसीयों को मत बुला न हो की वे भी फेर
१३ तेरा नेवता करें और तेरा परतीफल होजाय। परंतु जब तु नेवता करे तो कंगालों को टुंडों को लंगड़ों को अंधों को
१४ बुला। और तु धंन होगा कयोंकी वे तुझे परतीफल नहीं दे सकते और तु धरमीयों के फेर जी उठने में परतीफल
१५ पावेगा। नेवतहरीयों में से एक ने यह बचन सुनके उसको
१६ कहा धंन वुह है जो ईसर के राज में भोजन करेगा। तब उसने उसको कहा कोसी मनुष्य ने बड़ी बीआरी बनाइ और
१७ बहुतों को नेवता दीया। और बीआरी के समय में अपने सेवक को भेजा की नेवतहरीयों से कहे की आओ कयोंकी अब
१८ सब बसतें सीध हैं। तब सबके सब एकता करके बनावट से कहने लगे पहीले ने उसे कहा की मैं ने कुछ भुम मोल ली है और मुझे अवेस है की जाउं और उसे देखुं मैं तेरी बीनती
१९ करता हुं की तु मुझे छमा करवा। दुसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लीये हैं और मैं उनहें परखने जाता हुं मैं
२० तेरी बीनती करता हुं तु मुझे छमा करवा तीसरे ने कहा
२१ मैं ने बीवाह कीया है इस लीये मैं नहीं आसकता। तब उस सेवक ने आके अपने परभु को ये बातें कहीं तब धर के सामी ने करोध से अपने सेवक को कहा की नगर के मारगों और गलीयों में तुरंत जा और कंगालों और टुंडों और
२२ लंगड़ों और अंधों को यहां ले आ। फेर सेवकने कहा हे परभु तेरी अगया के समान कीया गया और अब भी समाव
२३ है। तब सामी ने उस सेवक को कहा की मारग में और

व्राड़े के ओान जा ओान उनके पीछे पड़ की ओावें जोसतें मेना
२४ घन भनजाय़। कय़ोंकी मैं तुमछों से कहता ऊं कोइ उन
लोगें में से जीनका नेवता कीय़ा गय़ा या मेनी व्रीआनी यप्पने
न पावेंगे।
२५ अव्र व्रऊत सी मंडली उसके संग यली जाती थीं तव़ उसने
२६ परेन के उनछें कहा। य़दी कोइ मुछ पास आवे ओान अपने
पीता ओान माता ओान इसतोनी ओान व्रालकें ओान भाइय़ें
ओान व्रहीनें का हां अपने पनान का भी व्रैनी न छोवे वुह मेना
२७ सीप्प नहीं छो सकता। ओान जो कोइ अपने कुनुस कें नहीं
२८ उठाले के मेने पीछे आता है मेना सीप्प नहीं छो सकता। कय़ों-
की कैान है तुम में जो ऐक गुमट व्रनाने की इछा कनके पहीले
व्रैठके उठान का लेप्पा न कने को वुह उसे समापत कनसके।
२९ तो ऐसा न छो की वुह नेव डाल के उसे समापत न कनसके ओान
३० सव़ देप्पनेवाले उसे य़ह कहके योढ़ाने लगें। की इस पुनुप्प
३१ ने व्रनाना आनंभ कीय़ा पनंतु समापत न कन सका। अथवा
कैानसा नाजा दुसने नाजा से संगनाम कनने यले तो पहीले व्रैठ
के व्रीयान न कनले की वुह दस सहसन लेके सामनथी है की
उसका जो व्रीस सहसन से उसके संमुप्प आता है सामना कन
३२ सके। नहीं तो जव़ लों दुसना व्रऊत दुन छो वुह दुतें कें
३३ भेज कन मीलाप याछे। सो इसी नीत से जो कोइ तुम में से
अपना सव़ कुछ न छोड़े वुह मेना सीप्प छो नहीं सकता।
३४ लोन अछा है पनंतु य़दी लोन का सवाद व्रीगड़जाय़ तो कीस
३५ व्रसतु से सवादीत कीय़ा जाय़गा। वुह न पीनथीवी के ओान
न घुन के काम का है लोग उसे परेंक देते हैं जीस कीसी के
कान सुनने के लीय़े छों सो सुने।

१५ पंदनहवां पनव्र।

१ तव़ सव़ पटवानी ओान पापी उसके पास आय़े की उसकी सुनें।

२ तब फरीसी और अध्यापक कुड़कुड़ा के कहने लगे की यह पापीयों को ग्राह्य करता है और उनके संग भोजन करता है

३।४ तब उसने उनसे यह दृष्टांत कहा। की तुम में से कौन मनुष्य है जो सौ भेड़ रखता हो यदी वह उन में से एक को खोवे क्या वुह नीनानवे को बन में नहीं छोड़ता और जब लों उस
५ खोई हुई को नहीं पाता उसे ढुंढा करता है। और जब
६ वुह पाता है आनंद से अपने कंधे पर उठा लेता है। और घर में आकर मीतरों और परोसीयों को एकठे बुलाता है और उनहें कहता है की मेरे संग आनंद करो कयोंकी मैं ने अपनी
७ भेड़ जो खोई गई थी पाई है। मैं तुम से कहता हुं की इसी रीत से स्वर्ग में एक पापी के कारन जो पसयाताप करता है नीनानवे धरमीयों से जीनहें पसयाताप का प्रयोजन नहीं
८ अधीक आनंद होगा। अथवा कौन इसतीरी है जीस पास दस सुकी हों यदी वुह एक खोवे कया वुह दीपक को नहीं बारती और घर को नहीं झाड़ती है और जब लों नहीं पाती
९ ढुंढती फीरती है। और जब वुह पाती है वुह मीतरों और परोसीयों को बुलाके कहती है की मेरे संग आनंद करो कयों-
१० की मैं ने वुह सुकी जो खो गई थी पाई है। इसी रीत से मैं तुम से कहता हुं की ईसर के दूतों के बीच एक पापी के कारन जो पसयाताप करता है आनंद होता है।

११।१२ फेर उसने कहा की कीसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उन में से छुटके ने पीता से कहा की हे पीता संपत में से जो मेरा भाग
१३ होवे दीजीये तब उसने उनहें उपजीवन बांट दीया। और बहुत दीन न बीतने पाये छुटका पुत्र सब कुछ एकठा करके परदेस को चल नीकला और वहां कुकरम में अपनी समसत
१४ संपत नसट की। और जब वुह सब कुछ उठा चुका उस देस
१५ में बड़ा अकाल पड़ा और वुह दरीद्र होने लगा। तब वुह जाके उस देस की एक परजा का सेवक बना और उसने उसे

१६ अपने प्येतों में भेजा की सुअनों को चनावे। औन वुह लालसा
नप्पता था की उन छीलकों से जो सुअन प्याते थे अपना पेट
१७ भने औन कोइ उसे न देता था। औन जब वुह अपने चेत में
आया उसने कहा की मेने पीता के कीतने ब्रनीहान हैं जीनकी
१८ नोटी ब्रय नहती है औन मैं भुप्प से मनता ऊं। मैं उठुंगा
औन अपने पीता पास जाउंगा औन उसे कहुंगा की हे पीता
१९ मैं सनग के औन तेने आगे अपनाधी ऊं। औन अब मैं
जोग नहीं की तेना पुतन कहाउं मुझे अपने ब्रनीहानों में
२० से एक के समान ब्रनाइये। तब वुह उठके अपने पीता पास
आया पनंतु जब वुह दुनही था उसके पीता ने उसको देष्या
औन दयाल ऊआ औन दौड़ा औन उसके गले में गीनके उसे
२१ चुमने लगा। औन पुतन ने उसको कहा की हे पीता मैं ने
सनग का औन तेना अपनाध कीया है औन अब इस जोग
२२ नहीं की तेना पुतन कहाउं। तब पीता ने अपने सेवकों को
कहा की अच्छे से अच्छे ब्रसतन लाओ औन इसको पहीनाओ
औन उसके हाथ में अंगुठी औन पाओं में जुती पहीनाओ।
२३ औन वुह मोटा ब्रछड़ा इंघन लाओ औन मानो की हम प्यावें
२४ औन आनंद कनें। कयोंकी मेना यह पुतन मन गया था
औन फेन जीता है वुह प्योगया था औन मील गया है तब
२५ वे आनंद कनने लगे। अब उसका जेठा पुतन प्येत में था
औन जेउं वुह आया औन घनके पास पऊंचा तो ब्राजा औन
२६ नाच का सब्द सुना। औन सेवकों में से एक को बुला के
२७ पुछा की इन ब्रातों का कानन कया है। तब उसने उसे कहा
की तेना भाइ आया है औन तेने पीता ने मोटा ब्रछड़ा माना
२८ इस लीये की उसने उसको सुप्पी औन कुसल से पाया। उसने
कुनुघ होके न चाहा की भीतन जाय इस कानन उसके पीता
२९ ने ब्राहन नीकल के उसे मनाया। तब उसने उतन देके पीता
को कहा की देष्प मैं इतने ब्रनस से तेनी सेवा कनता ऊं औन

कघो भी मैं ने तेनी भ्रगया न टालो श्रौन तु ने मुहे ऐक मेमना भो कभो न दौय़ा की मैं श्रपने मीतनों के संग श्रानंद कनता।
१० पनंतु जव्र तेना य़ह पुतन श्राय़ा जोसने तेना उपजीवन व्रेसवा-श्रों के संग नसट कीय़ा तु ने उसके लोय़े मोटा व्रछड़ा माना।
११ तव्र उसने उसको कहा की पुतन तु सदा मेने संग है श्रौन जो
१२ कुछ की मेना है तेना है। पन श्रानंद श्रौन मगन होना उयौत था कय़ोंकी तेना य़ह भाइ मन गय़ा था श्रौन फीन के जीय़ा श्रौन षो गय़ा था फीन मीला है।

१६ सोलहवां पनव्र।

१ श्रौन उसने श्रपने सीष्यन से य़ह भी कहा की ऐक घनमान मनुष्य था जीसका ऐक भंडानी था उसी पन उसके श्रागे दोष्य
२ लगाय़ा गय़ा की वुह उसकी संपत नसट कनता है। तव्र उसने उसको वुला के कहा की य़ह कय़ा है की मैं तेने व्रीष्यय़ में सुनता हुं श्रपने भंडानपन का लेष्या दे की तु श्रागे को भंडानी
३ न नह सकेगा। तव्र भंडानी ने श्रपने मन में कहा की मैं कय़ा कनुं कय़ोंकी मेना पनभु भंडानपन मुहे से लेता है मैं षोद
४ नहीं सकता भीष्य मांगने में मुहे लाज श्राती है। मैं ने ठान नष्या है की कय़ा कनुं जीसतें जव्र मैं भंडानपन से छोड़ाय़ा जाउं
५ वे श्रपने घनों में मुहे गनाहु कनें। सो उसने श्रपने पनभु के हन ऐक उघाननीश्रों को वुलाय़ा श्रौन पहले को कहा की
६ तु मेने पनभु का कीतना घानता है। उसने कहा की तेल के सौ पनीमान फेन उसने उसे कहा की श्रपनी व्रही ले श्रौन तुनंत
७ व्रैठ कन पयास लीष्य। फेन उसने दुसने से कहा श्रौन तु कीतना घानता है उसने कहा की गोहुं के सौ पनीमान उसने
८ उसको कहा की श्रपनी व्रही ले श्रौन श्रसी लीष्य। तव्र पनभु ने उस श्रघनमी भंडनी को सनाहा इस लीय़े की उसने यतु-नाइ की कय़ोंकी इस संसान के संतान श्रपने व्रेवहान में पनकास

९ के पुतनों से अधीक बुधमान हैं। और मैं तुमहें से कहता हुं की असत धन से अपने लीये मीतनता कनो की जब तुम-हानी घटती होवे वे तुमहें अनंत नीवास मं गनहन कनें।
१० जो की थोड़े में सया है बहुत में भी सया है और जो की
११ थोड़े में अधनमी है बहुत में भी अधनमी है। इस लीये यदी तुम असत धन में सये न हो तो सया तुमहें कौन सोंपेगा।
१२ और यदी तुम औनों की बसतु में सयाइ नहीं कनते तो तुम-
१३ हाना तुमहें कौन देगा। कोइ सेवक दो सामीयों की सेवा नहीं कन सकता कयोंकी वुह अथवा ऐक से सतनुता नषेगा और दुसने से मीतनता अथवा वुह ऐक का पछ कनेगा और दुसने की नींनदा तुम इसन और धन की सेवा नहीं कन सकते।
१४ लोभी फनीसीयों ने भी सब बातें सुनके उसको ठठे में
१५ उड़ाया। तब उसने उनहें कहा तुम वे हो जो अपने को मनुष्यन के आगे धनमी दीष्पावते हो पनंतु इसन तुमहाने मन को जानता है कयोंकी जो बसतु मनुष्यन के आगे बहुत
१६ पीनीय है इसन की दीनीसट में घीनीत है। बेवसथा और आगमगयानी यहीया लों थे उसी समय से इसन के नाज का मंगल समाचान सुनाया जाता है और हन एक मनुष्य
१७ उस में पीला जाता है। और सनग और पीनथीवी का टल जाना उस से सहज है की ऐक बींदु बेवसथा में से घट जाय।
१८ जो कोइ अपनी इसतीनी को तयागे और दुसनी से बीवाह कनें बेभीचान कनता है और जो कोइ उस से जीसे उसके पती ने तयाग कीया है बीवाह कने बेभीचान कनता है।
१९ ऐक धनमान था जो लाल और महीन बसतन पहीनता
२० और पनतीदीन बड़े बीभव से नहता था। और लाजन नाम ऐक भीष्पानी था जोसे घाव से भना हुआ उसके दुवान पन
२१ डाल गये थे। और इच्छा नष्पता था की युन यान जो उस

धनमान के मंच से गीनते थे प्पावे श्रीन कुते न्नी श्राते थे श्रीन
२२ उसके घावों को याटते थे। ऐसा ऊश्रा की वुह भीप्पानी
ननगया श्रीन दुतों ने ले जाके उसको इव्रनाहीम के गोद में
२३ नाप्पा वुह धननान न्नो ननगया श्रीन गाड़ा गया। श्रीन उसने
ननक में श्रपनी श्राप्पें उठा के श्रपने को पीड़ा में पाया श्रीन
दुन से इव्रनाहीम को देप्पा श्रीन लाजन को उसकी गोद में।
२४ तव्र वुह यीला के व्रोला की हे पीता इव्रनाहीम सुह्न पन दया
कन श्रीन लाजन को भेज की वुह श्रपनी श्रंगुली की पोन को
जल में डुव्रो के मेनी जीभ को ठंढी कने कयोंकी मैं इस लवन
२५ में कलपता ऊं। पनंतु इव्रनाहीम ने कहा की पुतन येत कन
की तु ने श्रपने जीवन में श्रपने सुप्प की व्रसतु पाइ श्रीन लाजन
२६ ने कसट से वुह श्रव्र सांत पाता है श्रीन तु पीड़ा में है। श्रीन
इन सभों से श्रधीक हमाने श्रीन तुमहाने मध में ऐक व्रड़ा
गड़्हा है की वे जो इधन से तुमलों जाया याहें नहीं जा सकते
२७ न वे जो उधन हैं हम लों श्रा सकते हैं। तव्र उसने कहा की
हे पीता मैं तेनी व्रीनती कनता ऊं की उसको मेने पीता के
२८ घन भेज। कयोंकी मेने पांय भाइ हैं की वुह उनको यीतावे
२९ न हो की वे न्नी इस पीड़ा के सथान में श्रावें। इव्रनाहीम ने
उसको कहा की उन पास मुसा श्रीन श्रागम गयानी हैं याहीये
३० की वे उनकी सुनें। तव्र वुह व्रोला नहीं हे पीता इव्रनाहीम
पनंतु यदी मीनतकों में से कोइ उनके पास जाय तो वे पस-
३१ याताप कनेंगे। तव्र उसने उसे कहा यदी वे मुसा श्रीन श्रागम
गयानीयों की न सुनें तो यदपी ऐक मीनतकों से उठे तथापी
वे न मानेंगे।

१७. सतनहवां पत्र।

१ फरेन उसने सीप्पन से कहा की ठोकन का न श्राना श्रनहोना
२ है पनंतु जीसके कानन वे श्रावें उस पन संताप है। उसके

कारन यह अती भला होता की एक चकी का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वुह समुदर में फेंका जाता की वुह
३ इन छोटों में से एक को ठाकर खीलावे। अपने से चौकस रहो यदी तेरा भाइ तेरा अपराध करे उसे घुरक दे और
४ यदी वुह पस्चाताप करे उसको छमा कर। और यदी वुह एक दीन में सात वार तेरा अपराध करे और सात वार एक दीन में तेरे चोर फीरे और कहे की मैं पस्चाताप करता हुं
५ तु उसे छमा कर। तव परेरीतों ने परभु को कहा की हमारे
६ वीसवास को वढा। फेर परभु ने कहा यदी तुम में एक राइ के वीज के तुल वीसवास होता तो तुम इस गुलर के वीरछ को कहते की जड़ से उख्यड़ और समुदर में लग जा तो वुह तुम-
७ हारी मानता। परंतु तुम में कौन है जीसका एक सेवक हल जोतता अथवा ढोर चराता हो जोंहीं वुह खेत से आवे उसे
८ कहे को जा भोजन पर वैठ। और उसे पहीले न कहे की मेरे लीये वीआरी वना और अपनी कमर वांध और मेरी सेवा
९ कर जव लों मैं खा पी चुकुं और पीछे तु खा और पी। कया वुह उस दास का धंन मानता है इस कारन को उसने वे कारज
१० जो उसे कहे गये थे कीये मैं ऐसा नहीं वुझता। सो इसी रीत से तुम भी जव उन कारजों को जो तुमहें अगया कीये गये हैं करो तो कहो की हम नीसफल सेवक हैं जो हम को
११ करना उचीत था सो हमने कीया। और ऐसा हुआ की वुह यरोसलीम को जाते हुए सामरः और जलील के मध में से
१२ गया। और कीसी गांव में परवेस करते उसको दस कोढी
१३ मीले जो दुर खड़े थे। और वे चीलाके वोले की हे यसु गुरु
१४ हम पर दया कर। उसने देख के उनहें कहा की जाओ अपने को याजकों को दीखाओ और ऐसा हुआ की वे जाते हुए
१५ पवीतर हो गये। और उन में से जव एक ने देखा की वुह चंगा हुआ वड़े सवद से इसर की सतुत करता हुआ पीछे और

१६ आया। और उसका धंन मानते हुऐ उसके चरन पर औंधे
१७ मुंह गीरा और वुह ऐक सामरी था। तव यसु ने उतर देके
१८ कहा क्या दसों चंगे न हुऐ फेर वे नव कहां हैं। सो केवल
इस परदेसी के कोइ न पाया गया जो फीर के इसर की सतुत
१९ करे। तव उसने उसको कहा की उठके चला जा तेरे वीसवास
ने तुझे चंगा कीया।

२० और जव फरीसीयों ने उस से पुछा की इसर का राज कव
आवेगा उसने उन्हें उतर दीया और कहा की इसर का राज
२१ वाहरी दीषीसट से नहीं आता। वे न कहेंगे की देषो यहां
अथवा देषो वहां इस लीये की देषो इसर का राज तुमरे
२२ में है। और उस ने सीषन से कहा की वे दीन आवेंगे जव
तुम चाहोगे की मनुष्य के पुतर के दीनों में से ऐक को देषो
२३ और न देषोगे। और वे तुम को कहेंगे की देषो यहां अथवा
२४ देषो वहां उनके पीछे मत हुजीयो न जाइयो। इस लीये
जैसा की वीजली सरग के तले के ओर से चमक के सरग के
तले के दुसरे ओर लों चमकती है मनुष्य का पुतर भी अपने
२५ दीन में ऐसा होगा। परंतु पहीले अवस है की वुह वहुत दुष
२६ उठावे और इस समय के लोगों से तयाग कीया जाय। और
जैसा नुह के दीनों में था मनुष्य के पुतर के भी दीनों में वैसाही
२७ होगा। वे षाते थे पीते थे वीवाह करते थे वीवाह में दीये
जाते थे जीस दीन लों की नुह नाव पर चढ़ा और वाढ़ आया
२८ और उन सभों को नास कीया। और जीस रीत से लुत के
दीनों में था वे षाते थे पीते थे मोल लेते थे वेचते थे वोते थे
२९ घर वनाते थे। परंतु जीस दीन लुत सदुम से नीकल गया
सरग से आग और गंधक वरसा और उन सभों को नास
३० कीया। उस दीन में भी जव मनुष्य का पुतर दीषाइ देगा
३१ ऐसाही होगा। उसी दीन में वुह जो कोठे पर होवे और उस
की सामगरी घर में तो वुह उसे लेने को नीचे न आवे और

३२ उसी भांत से वुह जो प्येत में होवे उलटा न फीने। लुत की
३३ पतनी को समनन कने। जो कोइ अपना पनान व्रयाने को
याहेगा सो उसे गंवावेगा औान जो कोइ अपने पनान को गवां-
३४ वेगा उसे व्रयावेगा। मैं तुमसे कहता हूं की उस नात में दो प्रेक
३५ प्याट पन होंगे प्रेक पकड़ा जायगा दुसना छुट जायगा। दो
प्रेकठी यकी पीसतीयां होंगीं प्रेक पकड़ी जायगी औान दुसनी
३६ छुट जायगी। दो प्येत में होंगे प्रेक पकड़ा जायगा औान दुसना
३७ छुट जायगा। तव़ उनहों ने उतन दीया औान उसे कहा की
कहां हे पनभु उसने उनहें कहा की जहां कहीं लोथ तहां गीध
प्रेकठे होंगे।

१८ अठानहवां पनव़।

१ औीसतें मनुष्य नीत पनानथना कनें औान नीनवुल न होवें
२ उसने उनहें प्रेक दीनीसटांत कहा। की कीसी नगन में प्रेक
नयाय़ी था जो न इसन को डनता न मनुष्य को मानता था।
३ औान उसी नगन में प्रेक व़ीधवा थी जो उस पास कहती हुइ
४ आइ की मेने व़ैनी से मेना पलटा ले। औान उसने कुछ देन
न याहा पनंतु उसने पीछे अपने मन में कहा की य़दपी मैं
५ इसन से नहीं डनता न मनुष्य को मानता हूं। तथापी इस
लीये की यह व़ीधवा मुझे सताती है मैं उसका पलटा लेउंगा
६ न हो की वुह व़ानंव़ान आके मेना सीन सुखावे। फेन पनभुने
७ कहा की सुनो उस अधनमी नयाय़ी ने कया कहा। औान कया
इसन अपने युने हुओं का जो नात दीन उस पास नोते हैं
८ य़दपी वुह उनकी अव़ेन लों सहता है पलटा न लेगा। मैं
तुम से कहता हूं की वुह हट पट उनका पलटा लेगा तीसपन
भी जव़ मनुष्य का पुतन आवे कया वुह जगत में व़ीसवास
पावेगा।

९ फेन उसने कीतनों के लीये जो अपने में भनोसा नष्यते थे

की हम घनमी हैं ब्रैान ब्रैानों की नींदा कनते थे ग्रह दीनोस-
१० टांत कहा। दे। मनुप्प मंदीन में पनानथना कनने को गये
११ ग्रेक पनीसी ब्रैान दुसना पटवानी। पनीसी ने ब्रकेले प्पड़े
हे।के ग्रह पनानथना की, की हे इसन मैं तेनी सतुत कनता ऊं
की मैं ब्रैान मनुप्पन के समान लोयानी ब्रंनयाग्री पनइसतीनी
१२ गामी ब्रथवा इस पटवानी के समान नहीं ऊं। मैं ब्रठवाने में
दे। व्रान व्रनत कनता ऊं मैं हन ग्रेक व्रसतु का जो मेनी है
१३ दसवां माग देता ऊं। ब्रैान उस पटवानी ने दुन प्पड़ा हे।के
इतना मी न याहा की ब्रांप्पें उठाके सनग के ब्रैान देप्पे पनंतु
ग्रह कहके ब्रपनी छाती पीटता था की हे इसन मुह्ह पातकी
१४ पन दयाल हे। मैं तुम से कहता ऊं की ग्रह मनुप्प दुसने से
ब्रती घनमी ठहन के ब्रपने घन गया कयोंकी हन ग्रेक जो
ब्रपने को व्रढ़ाता है हेठा कीया जायगा ब्रैान वुह जो ब्रपने को
दीन कनता है व्रढ़ाया जायगा।

१५ फेन वे व्रालकों को मी उस पास लाये की वुह उनहें छुवे
१६ पनंतु सीप्पन ने देप्पके उनहें डांटा। तव्र ग्रसु ने उनहें वुलाके
कहा की छोटे व्रालकों को मेने पास ब्राने देब्रो ब्रैान उनहें मत
१७ व्रनजो कयोंकी इसन का नाज ग्रेसों हीं का है। मैं तुम से
सत कहता ऊं की जो कोइ व्रालक के समान इसन के नाज को
१८ गनहन न कने कीसी नीत से उस में पनवेस न कनेगा। ब्रैान
पनधानों में से ग्रेक ने उस से ग्रह कहके पुछा की हे उतम गुनु मैं
१९ कया कनुं की ब्रनंत जीवन का ब्रधीकानी हे।उं। ग्रसु ने
उसको कहा तु मुह्हे उतम कयों कहता है उतम कोइ नहीं
२० केवल इसन। तु ब्रगया जानता है की व्रेमीयान मत कन
हतया मत कन योनी मत कन ह्हुठी साप्पी मत दे ब्रपने माता
२१ पीता का सनमान कन। तव्र उसने कहा की मैं ने लड़काइ
२२ से इन सभों को माना है। ब्रैान जव्र ग्रसु ने ग्रह सुना उसने
उसको कहा ब्रव्र लों तुह्ह में ग्रेक व्रसतु नह गइ है जो कुछ तेना

है सव्र वे्च डाल ग्रीर कंगालों को व्रांट दे ग्रीर तु सरग पर
२३ घर पावेगा ग्रीर इघर ग्रा मेरे पीछे हो ले। वुह ग्रह सुनके
२४ ग्रती सोकीत ङग्रा कयोंकी वुह व्रड़ा घनी था। यसु ने उसे
ग्रती सोकीत देष्य के कहा की उनके लीये जो घनी हैं कीतना
२५ कठीन है की इसर के राज में परवेस करें। कयोंकी सुइ के
छेद से उंट का पैठना उस से सहज है की ग्रेक घनमान इसर के
२६ राज में परवेस करे। ग्रीर जीनहों ने सुना वे व्राले की फरेर
२७ कैान उघार पा सकता है। तव्र उसने कहा की जो व्रसतें
२८ मनुष्यन से ग्रनहोनी हैं इसर से होनहार हैं। तव्र पतरस ने
कहा देष्य हम ने सव्र कुछ छोड़ा ग्रीर तेरे पीछे हो लीये।
२९ उसने उनहें कहा मैं तुम से सत कहता ङं की ग्रैसा कोइ मनुष्य
नहीं जीसने घर ग्रथवा माता पीता ग्रथवा भाइ ग्रथवा इस-
३० तीरी ग्रथवा पुतरों को इसर के राज के लीये छोड़ा हो। जो
इस समय में कीतना ग्रघीक ग्रीर परलोक में ग्रनंत जीवन न
पावेगा।

३१ तव्र उसने व्रारहों को संग ले कर उनहें कहा की देष्यो हम
यरोसलीम को जाते हैं ग्रीर सव्र व्रातें जो मनुष्य के पुतर के
व्रीष्यय में ग्रागम गयानीयों से लीष्यी गइ हैं संपुरन होंगी।
३२ कयोंकी वुह ग्रंदेसीयों को सैांपा जायगा ग्रीर ठठे में उड़ाया
जायगा ग्रीर वे उसकी दुरदसा करेंगे ग्रीर उस पर थुकेंगे।
३३ ग्रीर वे उसको कोड़े मारके व्रघ करेंगे ग्रीर वुह तीसरे दीन
३४ फरीर उठेगा। ग्रीर उनहों ने उन व्रातों से कुछ न समझा
ग्रीर यह व्रचन उनसे गुपत रहा ग्रीर उनहों ने उन व्रातों
३५ को जो कही गइं थीं न जाना। सो ग्रैसा ङग्रा की जव्र वुह
ग्ररीहा के पास ग्राया ग्रेक ग्रंघा मनुष्य मारग के ग्रीर व्रैठा
३६ भीष्य मांगता था। ग्रीर मंडली को जाते सुन कर उसने पुछा
३७ की कया है। ग्रीर वे उसे व्राले की इसु नासरी चला जाता
३८ है। तव्र वुह यह कहके चीलाया की हे दाउद के पुतर यसु

३९ मुंह पर दया कर। और उनहों ने जो आगे चले जाते थे उसको डांटा की चुप रहे परंतु वुह और भी अधीक चीलाया
४० की हे दाबद के पुत्र मुझ पर दया कर। तब यसु खड़ा ऊआ और आग्या की, की उसको मेरे पास लाओ और जब वुह
४१ पास आया उसने इसको कहके पुछा। की तु कया चाहता है मैं तुझ से कया करुं वुह बोला हे परभु मैं अपनी दीनीसट
४२ पाउं। तब यसु ने उसको कहा की अपनी दीनीसट पा तेरे
४३ बीसवास ने तुझे बचाया। और उसने तुरत अपनी दीनीसट पाइ और ईसर की सतुत करता ऊआ उसके पीछे हो लीया और सब लोगों ने देख के ईसर की सतुत की।

१९ उनीसवां पर्व्व।

१ और वुह अरीहा में परवेस करके नीकल गया। और
२ देखो की जकी नाम एक मनुष्य जो पटवारीयों में परधान
३ और धनी भी था। उसने चाहा की यसु को देखे की वुह कौन है परंतु भीड़ के कारन देख न सका कयोंकी वुह नाटा
४ था। तब वुह आगे दौड़ के उसे देखने को एक गुलर के बीरछ
५ पर चढ़ गया कयोंकी उसको उधर से जाना था। और जब यसु उस सथान में आया उसने उपर दीनीसट करके उसको देखा और उसे कहा जकी सीघर उतर आ कयोंकी अवेस
६ है की मैं आज तेरे घर में रहुं। तब वुह तुरंत उतरा और
७ आनंद से उसको गरहन कीया। और जब उनहों ने देखा वे कुड़कुड़ा के कहने लगे की वुह एक पापी मनुष्य के घर में
८ पाऊन होने जाता है। और जकी ने खड़े होके परभु से कहा हे परभु देख मैं अपना आधा धन कंगालों को देता ऊं और यदी मैं ने कीसी पर झुटा दोष देके कुछ लीया है मैं
९ चौगुना फेर देता ऊं। तब यसु ने उसको कहा की आज

इस घर में मुक्त आइ इस लीये की यह भी इब्राहीम का
१० पुत्र है। क्योंकी मनुष्य का पुत्र आया है की खोये ऊओं
११ को ढुंढे और बचावे। और जब वे ये बातें सुन रहे थे
इस लीये की वुह यरोसलीम के नीकट था और इस कारन
की वे समझते थे की इस्वर का राज तुरंत दीखाइ देगा उसने
१२ यह दीरीसटांत भी कहा। इस लीये वुह बोला की कोइ
कुलीन मनुष्य दुर देस को गया की अपने लीये राज लावे
१३ और फीर आवे। तब उसने अपने दस सेवकों को बुलाया
और उनहें दस मोहर सौंपे और उनहें कहा की जब लों
१४ मैं आउं बैपार करो। परंतु उसको परजा उस से बैर रखती
थी सो उनहों ने उसके पीछे संदेस भेजा की हम नहीं चाहते
१५ की यह हम पर राज करे। और ऐसा ऊआ की जब वुह
राज लेके फीर आया उसने आगया करके उन सेवकों को
जीनहें धन सौंपा था बुलाया की जाने की हर एक ने क्या
१६ कमाया। तब पहीले ने आके कहा हे परभु तेरे मोहर ने
१७ दस मोहर कमाये। उसने उसको कहा धंन हे उतम सेवक
इस कारन की तु बऊत थोड़े में सचा नीकला तु दस नगर पर
१८ परधान हो। और दुसरे ने आके कहा हे परभु तेरे मोहर
१९ ने पांच मोहर कमाये। और उसने उसको भी कहा की तु
२० भी पांच नगर पर परभुता कर। और तीसरे ने आके कहा
हे परभु देख तेरा मोहर जीसे मैंने अंगछे में बांध रखा है।
२१ क्योंकी मैं तुझ से डरा इस कारन की तु कठोर मनुष्य है
जीसे तु ने नहीं रखा लेता है और जो तु ने नहीं बोया लवता
२२ है। तब उसने उसे कहा हे दुसट दास मैं तेरेही मुंह से तेरा
नयाय करुंगा तु जानता था की मैं कठोर मनुष्य था जो मैं
ने नहीं रखा लेता ऊं और जो मैं ने नहीं बोया लवता ऊं।
२३ फीर तु ने मेरा धन कोठी में क्यों न सौंपा की मैं आके अपना
२४ बीआज समेत लेता। फेर जो पास खड़े थे उसने उनहें कहा

की उस से वुह मोहन ले लो औान उसको जीस पास दस मोहन
१५ हैं देओ। तव्र उनहों ने उसको कहा हे पनभु उसके पास तो
१६ दस मोहन हैं। सो मैं तुम से कहता ऊं की जीस पास है उसे
दीया जायगा औान जीस पास कुछ नहीं उस से वुह भी जो
१७ वुह नप्पता है ले लीया जायगा। पनंतु मेने उन सतनुन को
जो नहीं याहते थे की मैं उनपन नाज कनुं इघन ले आओ
१८ औान मेने आगे मान डालो। औान जव्र वुह यूं कह युका तो
२९ वुह यनोसलीम के औान जाने लगा। औान ऐसा ऊआ की जव्र
वुह वैतफरजा औान वैतऐना के पास पहाड़ के समीप जो
जलपाइ का कहावता है पऊंया उसने अपने सीप्पन में से दो
३० को यह कहके भेजा। की उस गाव में जो संमुप्प है जाओ
तुम उस में पऊंयतेहो ऐक व्रया जीस पन अव्र लों कोइ न यढ़ा
३१ व्रंघा ऊआ पाओगे उसको प्पोल के ले आओ। औान यदी
कोइ तुम से पुछे की तुम कयों प्पोलते हो तुम उसे यूं कहीयो।
३२ इस कानन की पनभु को आवेसक है। औान उनहों ने जो
भेजे गये थे जाके जैसा उसने उनको कहा था वैसा पाया।
३३ औान जेउं वे उस व्रये को प्पोल नहे थे उसके सामीयों ने उनहें
३४ कहा की तुम इस व्रयेको कयों प्पोलते हो। वे व्रोले की
३५ पनभु को इस का आवेसक है। औान वे उसे यसु के पास
लाये औान अपने व्रसतनों को उस व्रये पन नप्पके यसु को उस
३६ पन व्रैठाया। औान जाते जाते उनहों ने अपने व्रसतनों को
३७ मानग में व्रीछाया। औान जव्र वुह जलपाइ के पहाड़ लों
पऊंया उसके सीप्पन की समसत मंडली उन सव्र आसयनज
कनम के कानन जो उनहों ने देप्पे थे आनंद ऊइ औान व्रड़े
३८ सव्रद से यह कहके इसन की सतुत कनने लगीं। की नाजा
को धंन जो पनभु के नाम से आता है सनग पन कुसल औान
३९ अती उंये पन महातम। तव्र मंडली में से कइ फनीसीयों
४० ने उसको कहा की हे गुनु अपने सीप्पन को घुनुक दे। तव्र

उसने उतन दीया ग्रैान उनहें कहा मैं तुमहों से कहता ऊं की यदी ये युप होवें तो पथन तुनंत पुकान उठेंगे।

४१ ग्रैान जव वुह पास ग्राया उसने उस नगन पन दीनीसट की
४० ग्रैान उस पन नोके कहा। तु हां यदी तु ग्रपने इसी दीन लों ग्रपने कुसल की वसतु को जानती पनंतु ग्रव वे तेनी ग्रांष्पों से
४३ गुपत हैं। कयोंकी तुह पन वे दीन ग्रावेंगे की तेने वैनी तेने ग्रास पास ष्पाइं ष्पोदेंगे ग्रैान तुहे घेनलेंगे ग्रैान हन एक ग्रोन
४४ तुहे नोकेंगे। ग्रैान तुहे तेने वालकों के संग जो तुह में हैं भुम से मीला देंगे ग्रैान वे तुह में एक पथन दुसने पन न छोड़ेंगे इस कानन की तु ने ग्रपनी कीनपा के समय को न जाना।

४५ तव वुह मंदीन में पनवेस कनके उनहें जो उस में कीनते
४६ ग्रैान वेयते थे यह कहके वाहन नीकालने लगा। यह लीष्पा है की मेना घन पनानथना का घन है पनंतु तुम ने उसे योनों
४७ की मांद वनाइ। ग्रैान वुह मंदीन में पनतीदीन उपदेस कनता था पनंतु पनधान याजकों ग्रैान ग्रधापकों ग्रैान लोगों
४८ के पनधानों ने उसको वधन कनने का सोय कीया। ग्रैान पावते न थे की कया कनें कयोंकी सव लोग उसकी सुनने को लवलीन थे।

२० वीसवां पनव।

१ ग्रैान उन में से एक दीन ऐसा ऊग्रा की जव वुह मंदीन में लोगों को सीष्पावता ग्रैान मंगलसमायान सुनाता था पनधान
२ याजक ग्रैान ग्रधापक पनायीनों के संग यढ़ ग्राये। ग्रैान उसको यह कहके पुछा की हम से कह की तु कीस पनाकनम से ये कानज कनता है ग्रथवा वुह कैान है जीसने तुहे यह
३ पनाकनम दीया है। तव उसने उतन दीया ग्रैान उनहें कहा
४ मैं भी तुम से एक वात पुछुंगा मुहे उतन देग्रो। यहीया का

५ पनान पनग से था अथवा मनुप्पन से। तव़ वे अपने मन में बीयानने लगे य़दी हम कहें पनग से तो वुह कहेगा परेन तुम
६ ने उसकी पनतीत कय़ों न की। पनंतु य़दी हम कहे मनुप्पन से तो सव़ लोग हम पन पथनवाह कनेंगे कय़ोंकी वे नीसयय़
७ जानते हैं की य़हीय़ा आगम गय़ानी था। तव़ उनहों ने
८ उतन दीय़ा की हम नहीं कह सकते की कहां से। परेन य़सु ने उनहें कहा मैं भी तुमहें नहीं कहता की मैं कीस पनाकनम से य़ह कानज कनता हूं।

९ तव़ वुह लोगों से य़ह दीनीसटांत कहने लगा की कीसी मनुप्प ने दाप्प की व़ानी लगाई और उसे मालीय़ों को सोंप
१० दीय़ा और व़ङ्गत दीन के लीय़े पनदेस को यला गय़ा। तव़ नीतु पन उसने येक सेवक को मालीय़ों के पास भेजा की वे दाप्प की व़ानी का परल उसको देवें पनंतु मालीय़ां ने उसे
११ मानके छुछे हाथ परीना दीय़ा। और परेन उसने दुसना सेवक भेजा और उनहों ने उसे भी माना और अपमान कनके छुछे
१२ हाथ परेन दीय़ा। और परेन उसने तीसने को भेजा और
१३ उनहों ने उसे भी घाय़ल कनके व़ाहन कीय़ा। तव़ दाप्प की व़ानी के सामी ने कहा की मैं कय़ा कनुं मैं अपने पीआने पुतन
१४ को भेजुंगा कय़ा जाने वे उसे देप्प के आदन कनें। पनंतु जव़ मालीय़ों ने उसे देप्पा वे आपुस में बीयानने लगे की य़ह अधीकानी है आओ इसे मान डालें जीसतें अधीकान हमाना
१५ हो जाय़। सो उनहों ने उसे दाप्प की व़ानी से व़ाहन नीकाल के मान डाला सो दाप्प की व़ानी का सामी उनको कय़ा कनेगा।
१६ वुह आवेगा और वुह उन मालीओं को पनान से मानेगा और दाप्प की व़ानी औनों को सोंपेगा उनहों ने सुन के कहा
१७ की ऐसा न होवे। तव़ उसने उनके ओन दीनीसट कनके कहा तो य़ह कय़ा लीप्पा है की जीस पथन को थवइय़ों ने नीकमा
१८ जाना वही कोने का सीना हुआ। जो कोई उस पथन पन

गीनेगा यकना युन होजायगा और जीस पन वुह गीनेगा उसे पीस डालेगा।

१९ तव़ पनघान य़ाजकों और अघापकों ने याहा की उसी घड़ी उस पन हाथ डालें पनंतु वे लोगों से डने कय़ोंकी जानते थे
२० की उसने य़ह द्रीष्टांत उनके व़ीष्पय़ में कहा था। फीन वे अगोनने लगे और भेदीय़ों को भेजा की अपने को छल से घनमी व़नावें जोसतें वे उसके व़यन को पकड़ें की इसी नीत
२१ से वे उसे अघछ के पनाकनम और व़स में सौंप देवें। फीन उनहों ने उसे य़ह कहके पुछा की हे गुनु हम जानते हैं की तु ठीक ठीक कहता और सीष्पावता है तु कीसी के पनगट पन द्रीष्ट नहीं कनता पनंतु सयाइ से इसन का मानग सीष्पा-
२२ वता है। हमाने कानन जोग है की कैसन को कन देवें अथवा
२३ नहीं। पनंतु उसने उनका कपट जानके उनसे कहा तुम कय़ों
२४ मुहे पनष्पते हो। एक सुकी मुहे दीष्पाओ उस पन कीसकी मुनत और कीसका सीका है वे उतन देके व़ोले की कैसन की।
२५ तव़ उसने उनहें कहा इस कानन जो व़सतु केसन की है कैसन
२६ को देओ और जो व़सतु इसन की है इसन को। और वे लोगों के आगे उसके व़यन को पकड़ न सके और उसके उतन से व़ीसमीत होके युप नह गय़े।

२७ तव़ सादुकीय़ों में से कीतने जो जी उठना नहीं मानते थे
२८ पास आय़े और य़ह कह के उस से पुछा। की हे गुनु मुसा ने हमाने लीय़े लीष्पा है की कीसी मनुष्य का भाइ पतनी को छोड़ के नीनव़ंस मन जाय़ तो उसका भाइ उसकी पतनी को लेवे
२९ और अपने भाइ के लीय़े संतान उतपंन कने। अव़ सात भाइ
३० थे और पहीला पतनी कनके नीनव़ंस मनगय़ा। और दुसने
३१ ने उसको अपनी पतनी की वुह भी नीनव़ंस मनगय़ा। और तीसने ने उसे लीय़ा और इसी नीत से सातों ने और वे नीनव़ंस
३२।३३ मन गय़े। सव़ से पीछे वुह इसतीनी भी मन गइ। सो

फेन जी उठने में वुह कीसको पतनी होगी कयोंकी वुह सातों
३४ की पतनी थी। तव् य्रसु ने उतन देके उनहें कहा की इस
जगत के संतान व्रीवाह कनते हैं ग्रोन व्रीवाह में दीये जाते हैं।
३५ पनंतु वे जो उस जगत के ग्रोन मीनतु से फेन उठने के जोग
जाने जायेंगे न व्रीवाह कनते हैं न व्रीवाह में दीये जाते हैं।
३६ न वे फेन मन सकते कयोंकी वे दुतों के समान हैं ग्रोन फेन
३७ जी उठने के संतान होकन इसन के पुतन हैं। ग्रव मीनतक
जो जी उठते हैं मुसा ने भी झाड़ी पन दीप्पाया जव उसने
पनभु को इव्नाहीम का इसन ग्रोन इसहाक का इसन ग्रोन
३८ याकुव का इसन कहा। कयोंकी वुह मीनतकों का इसन
३९ नहीं पनंतु जीवतों का कयोंकी सव उसके लीये जीवते हैं।
३९ तव ग्रधापकों में से कीतनों ने उतन देके उसे कहा की हे गुनु
४० तु ने ग्रच्छा कहा। ग्रोन उसके पीछे उनका हीयाव न ऊग्रा
४१ की वे उसे कुछ पुछें। ग्रोन उसने उनहें कहा वे कयोंकन
४२ कहते हैं की मसीह दाउद का पुतन है। ग्रोन दाउद ग्रापही
भजन के पुसतक में कहता है की पनमेसन ने मेने पनभु को
४३ कहा तु मेने दहीने हाथ वैठ। जव लों मैं तेने सतनुन को
४४ तेने चनन का पीढ़ा कनुं। सो दाउद ता उसको पनभु कहता
४५ है फेन वुह उसका पुतन कयोंकन है। तव सव लोगों के
४६ सुनते ऊए उसने ग्रपने सीष्यन से कहा। ग्रधापकों से चौकस
नहो जो लंवे वसतन से फीनने की इछा नष्पते हैं ग्रोन हाट
में नमसकान ग्रोन मंडलीयों में पनधान ग्रासन जेवनान में
४७ पनधान सथान के ग्रभीलासी हैं। वे नांडों के घन को नीगलते
हैं ग्रोन दीष्पाने के लीये लंवी पनानथना कनते हैं उन पन ग्रती
वड़ी व्रीपत होगी।

२१ ऐकीसवां पनव।

१ तव उसने दीनीसट उठाके देष्पा की धनी लोग भंडान में

२ अपना दान डालते हैं। श्रीर उसने ग्रेक कंगाल वीधवा को भी
३ उस में दो अधीयां डालते देष्या। तव उसने कहा मैं तुमहों
से सत कहता हुं की इस कंगाल वीधवा ने उन सभों से अधीक
४ डाला। कयोंकी इन सभों ने इसन के भेंट के लीये अपने
धन की अधीकाइ से डाला परंतु उसने अपनी कंगालपन से
५ अपनी समत जीवका डाली। श्रीर जव कीतने मंदीर के
वीष्यय में कहते थे की ग्रह कैसे सुनदन पथन श्रीर दान से
६ सींगान कीया गया है उसने कहा। जो वसतें तुम देष्यते हो वे
दीन श्रावेंगे जीन में ग्रेक पथन दुसने पन न छुटेगा जो गीनाया
७ न जायगा। तव उनहों ने उसे यह कहके पुछा की हे गुनु यह
सव कव होगा श्रीर इन सभों के होने का कया लछन है।
८ उसने कहा सींयेत नहो की तुम भनमाये न जाश्रो कयोंकी
वहुतेने मेने नाम से श्राके कहेंगे की मैं हुं श्रीर समय पास है
९ सो तुम उनके पीछे मत जाइयो। पनंतु जव तुम जुध श्रीन
दंगा की वातें सुनो मत घवनाइयो कयोंकी पहीले इन सभों
१० का होना अवेस है पन अभी अंत नहीं। फेन उसने उनहें
११ कहा की लोग पन लोग श्रीन नाज पन नाज यढेंगे। श्रीन
अनेक सथान में वड़े भुयाल श्रावेंगे श्रीन मनी श्रीन अकाल
पड़ेंगे श्रीन भयंकन दनसन श्रीन वड़े यीनह सनग से दीष्याइ
१२ देंगे पनंतु इन वसतुन से पहीले वे तुम पन हाथ डालेंगे श्रीन
ताड़ना कनके मंडली श्रीन वदीगीनह में सींप कन नाजा
१३ श्रीन अधछों के श्रागे मेने नाम के कानन ले जायेंगे। श्रीन
१४ यह तुमहाने लीये साष्यी ठहनेगी। अपने मन में ठहना
नष्यो की श्रागे से यींनता न कनो की हम कया उतन देवें।
१५ कयोंकी मैं तुमहें ग्रैसा मुंह श्रीन वुध देउंगा जो तुमहाने
१६ समसत सतनु वोलने अथवा सामना कनने न सकेंगे। श्रीन तुम
माता पीता श्रीन भाइयों श्रीन कुटमवों श्रीन मीतनों से
पकड़वाये जाश्रोगे श्रीन तुम में से कीतनों को मान डलवावेंगे।

१७।१८ और मेरे नाम के कारन सब तुम से बैर करेंगे। परंत
१९ तुम्हारे सीर का ऐक बाल नसट न होगा। अपने संतोष्य से
२० अपने परान को लीये रहो। और जब तुम देष्यो की यरोस-
लीम सैनाओं से घेरा हुआ है तब जानो की उसका उजाड़
२१ होना पास है। तब वे जो यहुदीयः में हैं पहाड़ों को भागें और
वे जो उसके मध में हों बाहर नीकल जावें और जो बाहर
२२ हों सो भीतर न पैठें। कयोंकी ये पलटा लेने के दीन और
२३ समसत लीष्ये हुओं के पुरा होने का समय है। परंतु हाय
उन पर जो उनहीं दीनों में गरभनी हों और उन पर जो
दुध पीलातीयां हों कयोंकी भुम पर बड़ी बीपत और इन
२४ लोगों पर कोप होगा। और वे ष्यडग के धार से मारे पड़ेंगे
और समसत लोगों में बंधुऐ होंगे और यरोसलीम अंनदेसीयों
से रौंदा जायगा जब लों अंनदेसीयों का समय पुरा न होवे।
२५ और सुरज और चंदरमा और तारों में लछन दीष्याइ देंगे
और पीरथीवी में लोगों पर कलेस के संग घबराहट होगी
२६ समुदर और लहरों का बड़ा सबद होगा। मनुष्यन के मन
मारे डरके और उन लछनों की जो भुम पर आते हैं बाट
जोहने से घट जायेंगे कयोंकी सरग की दीरढता हील जायेंगी।
२७ और उस समय में वे मनुष्य के पुतर को मेघ पर परभाव और
२८ बड़े तेज से आते देष्यंगे। और जब इन सभों का होना
आरंभ होय तो सीर उठाके उपर देष्यो कयोंकी तुमहारा
२९ उधार समीप है। और उसने उनहें ऐक दीसटांत कहा
३० की गुलर के बीरछ और समसत बीरछों को देष्यो। जब
उन में कोपलें नीकलती हैं तब तुम देष्य के आपही जानते हो
३१ की गरीसम अब नीकट है। सो इसी रीत से तुम भी जब
उन बसतुन को परगट होते देष्यो जानो की इसर का राज
३२ पास है। मैं तुम से सत कहता हुं की यह पीढ़ी बीत न जाय-
३३ गी जब लों समसत संपुरन न होवें। सरग और पीरथीवी

३४ टल जायेंगी पनंतु मेने व्रयन न टलेंगे। अपने से सैंयेत नहो न होवे की तुमहाने अंतःकनन कीसी संतुसटता ग्रैान मदप ने से ग्रैान इस जीवन की यीनता से भन जावें
३५ ग्रैान वुह दीन तुम पन अयानक ग्रा जाय। कयोंकी वुह फंदे की नाइं उन सभों पन जो पीनथीवी के उपन
३६ व्रसते हैं ग्रा जायगा। इस कानन यैाकस नहो ग्रैान नीत पनानथना कनते नहो की तुम उन सभों से जो होनहान है व्रयन के जोग ठहनो ग्रैान मनुष्य के पुतन के संमुष्य ष्पड़े होग्रो।

३७ ग्रैान दीन को वुह मंदीन में उपदेस कनता था ग्रैान नातनो को व्राहन जाता था ग्रैान उस पहाड़ पन जो जल-
३८ पाइ का कहावता है व्रास कनता था। ग्रैान पनातःकाल में तड़के सव्र लोग मंदीन में उसपास ग्राते थे की उसकी सुनें।

२२ व्राइसवां पनव्र।

१ अव्र व्रोन ष्पमीनी नोटी का पनव्र जो व्रीतजाना कहावता है पास
२ ग्राया। ग्रैान पनघान याजक ग्रैान ग्रघापक सोय में थे की उसको कीस नीत से मानडालें पनंतु वे लोगों से डनते थे।
३ तव्र सयतान यहूदा में जीसकी पदवी इसकनयती थी जो
४ उन व्रानह में गीना जाता था पैठा। ग्रैान उसने जाके पनघान याजकों ग्रैान सेनापतीन से व्रात यीत कीया की
५ वुह उसको कीस नीत से उनहें सैांप देवे। तव्र वे ग्रानंद
६ हुए ग्रैान उसे नुपए देने को ठहनाया। ग्रैान उसने व्राया

दीया और अवसर ढूंढता था की मंडली के ब्रीयोग में उसे उनहें सौंप देवे।

७ तव्र ब्रीन प्यमीनी नोटी का दोन जीस में ब्रीत जाना मानने का ८ आवेसक था आ पहुंया। और उसने पतनस और युहना को यह कहके भेजा की जाओ और हमारे कारन ब्रीतजाना सीघ ९ करो की हम प्यावें। उनहों ने उसको कहा की तु कहां याहता १० है की हम सीघ करें। उसने उनहें कहा की देप्यो जव्र तुम नगर में पहुंयोगे वहां एक मनुप्य जल का घड़ा उठाए तुम को मीलेगा जीस घर में वुह परवेस करे उसके पीछे पीछे यले ११ जाइयो। और उस घर के सामी से कहीयो की गुरु तुझे कहता है की वुह पाहुन साला जहां मैं अपने सीप्यन के संग १२ ब्रीतजाना प्याउं कहां है। वुह तुमहें एक ब्रड़ी उपनौटी १३ कोठनी सवांनी हुइ दीप्यावेगा वहां ब्रनाओ। और उनहों ने जाके जैसा उसने उनहें कहा था पाया और ब्रीत जाना सीघ १४ कीया। और जव्र समय पहुंया वुह ब्रानह पनेनीतों को अपने १५ संग लेके जा ब्रैठा। और उसने उनहें कहा की मैं ने मनहों से याहा की मैं संकट से आगे यह ब्रीत जाना तुमहारे संग १६ प्याउं। कयोंकी मैं तुम से कहता हुं की मैं उसे फेन कभी न प्याउंगा परंतु जव्र लों वुह ईसन के नाज में संपुरन न होवे। १७ तव्र उसने कटोना लीया और सतुत करके कहा की इसे लेओ १८ और आपस में ब्रांटो। की मैं तुम से कहता हुं की जव्र लों १९ ईसन का नाज न आवे मैं दाप्य का रस न पीउंगा। फेन उसने नोटी ली और सतुत करके तोड़ी और उनहें देके यह कहा की यह मेरा देह है जो तुमहारे लीये दीया जाता है २० मेरे समरन के कारन ऐसा कीया करो। इसी परकार से ब्रीआरी के पीछे कटोरा भी देके कहा की यह कटोरा मेरे लुघीन का नया नयम है जो तुमहारे कारन ब्रहाया जाता है।

२१ परंतु देष्पो उसका हाथ जो मुझे पकड़वाता है मेरे संग मंच
२२ पर है। और ठीक मनुष्य का पुतर जैसा की ठहराया गया
जाता है परंतु हाय उस मनुष्य पर जीस से वुह पकड़वाया
२३ जायगा। तब वे आपुस में पुछने लगे की हम में वुह जो यह
२४ करम करेगा कौन है। और उन में यह बीवाद भी हुआ की
२५ हम में कौन सब से बड़ा गीना जायगा। तब उसने उनहें
कहा की अंनदेसीयों के राजा उन पर परभुता करते हैं और
२६ वे जो उन पर अगया कारी हैं उपकारी कहावते हैं। पर
तुम यूं न होओ परंतु तुम में जो सब से बड़ा है छोटे के समान
२७ होय और वुह जो परधान है सेवक के तुल। इस लीये की
कौन है बड़ा वुह जो भोजन पर बैठता है अथवा वुह जो सेवा
करता है कया वुह नहीं जो बैठता है परंतु मैं तुमहारे संग
२८ सेवक के समान हुं। तुम वे हो जो मेरी परीछा में नीत मेरें
२९ संग रहे। और जीस रीत से मेरे पीता ने मेरे लीये राज
३० ठहराया है मैं तुमहारे लीये ठहराता हुं। की तुम मेरे
राज में मेरे मंच पर पाओ और पीओ और सींहासनों पर
३१ बैठ के इसराइल की बारह गोसठी का नयाय करो। और
परभु ने कहा समउन हे समउन देष्प सैतान ने याहा है की
३२ तुमको गोहुं के समान परटके। परंतु मैं ने तेरे कारन परार-
थना की है को तेरा बीसवास न टले और जब तु फीराया
३३ जाय अपने भाइयों को दीरढ़ कर। तब उसने उसे कहा हे
परभु मैं तेरे संग बंदीगीरह में और मीरतु में जाने को लैस
३४ हुं। उसने कहा की हे पतरस मैं तुझे कहता हुं की इसी दीन
कुकुट सबद न करेगा जब लों तु तीन बार मुझे जानने से न
३५ मुकरे। फीर उसने उनहें कहा की जब मैं ने तुमहें बीना
बटुआ और झोला और जुता भेजा था कया तुमहें कीसी
३६ बसतु की घटती हुइ थी वे बोले कीसी की नहीं। तब उसने
उनहें कहा परंतु अब जीस पास डोड़ा और झोला हो उसे

जो से चौ।न जीस पास प्पड़ग न हे। अपना वसतन वेचे चौान
१७ मोल ले। कयोंकी मैं तुम से कहता ऊं अवेस है की यह जो
लीप्पा है की वुह पापीयों में गीना गया मेने वीप्पय में संपुनन
१८ होय कयोंकी वे वसतें जो मेने लीये हैं अंत को पऊंयें। तव वे
वोले हे पनभु देप्प यहां दे। प्पड़ग हैं तव उसने उनहें
कहा वस है।

१९ परेन वुह वाहन नीकल के अपने वेवहान के समान जलपाइ
के पहाड़ पन गया चौान उसके सीप्प भी उसके पीछे हे। लीये।
४० जव वुह उस सथान में पऊंचा उसने उनहें कहा पनानथना
४१ कने। की पनीछा में न पड़े।। परेन उसने उनसे एक ढेला
परेकने के पनमान दुन जाके घुटने टेके चौान पनानथना कनके
४२ कहा। की हे पीता यदी तेनी इछा होय ते। इस कटोने को
मुह से टला दे तीस पन भी मेनी इछा नहीं पनंतु तेनी होवे।
४३ तव सनग से एक दुत ने दीप्पाइ देके उसके। वल दीया।
४४ चौान उसने संकट में पड़ के अघीक वीपत से पनानथना की
चौान उसका पसीना एेसा वहा जैसा लोऊ के वड़े वुंद जो भुम
४५ पन गीनते हैं। चौान जव वुह पनानथना से उठा अपने सीप्पन
४६ के पास आया उसने उनहें सोक से सोते पाया। तव उसने
उनहें कहा की तुम कयों सोते हो उठो चौान पनानथना कने।
४७ नहो की तुम पनीछा में पड़े।। चौान जव वुह कह नहा था
एक मंडली दीप्पाइ दी चौान उन वानह में से एक जो यऊदा
कहावता था उनके आगे आगे जाता था वहीं यसु का चुमा लेने
४८ को पास आया। पनंतु यसु ने उसको कहा हे यऊदा तु मनुप्प
४९ के पुतन को चुमा से पकड़वाता है। जव उनहों ने जो उसके
आस पास थे जो कुछ की होने पन था देप्पा ते। वोले हे पनभु
५० कया हम प्पड़ग से मानें। चौान उन में से एक ने पनघान
याजक के सेवक पन चलाया चौान उसका दहना कान उड़ा

५१ दीया। तव यसु ने उतन देके कहा की यहाँ लों धीनज धनो
५२ औन उसने उसके कान को छुआ औन उसे चंगा कीया। तव
यसु ने पनधान याजकों औन मंदीन के सेनापतीन औन पना-
चीनों को जो उस पास आए थे कहा की जैसे चोन पकड़ने को
५३ तुम ष्पड़ग औन लाठीयां लेके नीकले हो। जव मैं पनतीदीन
मंदीन में तुमहाने संग था तमहों ने मुझपन हाथ न वढ़ाया
पनंतु यह तुमहानी घड़ी औन अंधकान का पनाकनम है।
५४ तव उनहों ने उसे पकड़ के आगे कन लीया औन उसको पन-
धान याजकों के घन में लाए औन पतनस दुन से उसके पीछे
५५ पीछे चला गया। औन जव उनहों ने घन के मध में आग
५६ सुलगाई औन एकठे वैठे पतनस भी उन में वैठ गया। तव
एक दासी ने उसे आग के पास वैठे देष्पा औन धयान से उस पन
५७ दनीसट कनके कहा की यह मनुष्य भी उसके संग था। तव
वुह यह कहके मुकन गया की हे इसतीनी मैं उसे नहीं जानता।
५८ औन तनीक पीछे दुसने ने उसे देष्पा औन कहा की तु भी उन में
५९ से है तव पतनस ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हों। औन घड़ी एक
वीते औन एक ने नीसचय से कहा की सचमुच यह भी उसके
६० संग था कयोंकी यह जलीली है। तव पतनस ने कहा हे मनुष्य
मैं नहीं जानता तु कया कहता है औन यों कहतेही ततकाल
६१ कुकुट ने सवद कीया। तव पनभु ने घुम के पतनस पन दनीसट
की औन पतनस को पनभु का वचन चेत आया की उसने उसे
योंही कहा था की कुकुट के सवद कनने से आगे तु तीन वान
६२ मुझ से मुकन जायगा। तव पतनस वाहन गया औन वीलष्प
६३ वीलष्प के नोया। औन जोन मनुष्यन ने यसु को पकड़ा था
६४ उसे ठठे में उड़ाया औन माना। औन उसकी आंष्पों में पटी
वांध के उसके मुंह पन थपेड़ा माना औन यह कहके उस से
६५ पुछा की आगम कह कौन है जो थपेड़ा मानता है। अनु औन
६६ वहुतेनों ने इसन की अपनींदा से उसके वीष्पय में कहा। औन

दीन नीकलतेही लोगों के पनायीन औान पनधान य़ाजक औान अधापक एकठे आय़े औान उसे अपनी सभा में ले जाके
६७ वोले। की हम से कह कय़ा तु मसीह है औान उसने उनहें
६८ कहा य़दी मैं तुम से कहूं तुम पनतीत न कनोगे। औान य़दी मैं पुछुं भी तुम मुझे उतन न देओगे औान न
६९ छोड़ोगे। आगे को मनुष्य का पुतन इसन के पनाकनम
७० के दहीने औान वैठेगा। तव उन सभों ने कहा तो कय़ा तु इसन का पुतन है पनेन उसने उनहें कहा तुमहीं कहते
७१ हो की मैं हूं। पनेन उनहों ने कहा अव हमें औान साप्ष्मी का कय़ा पनजोजन है कय़ोंकी हम सभों ने आपही उसी मुंह से सुना है।

२३ तेइसवां पनव्र।

१ तव सानी मंडली उठके उसको पीलातुस पास ले गइ।
२ औान वे य़ह कहके उस पन दोष्य देने लगे की हम ने इसे लोगों को वोगाड़ते औान कैसन को कन देने से वनजते औान य़ह
३ कहते हुए पाय़ा की मैं आपही मसीह नाजा हूं। सो पीलातुस ने य़ह कहके उसे पुछा कय़ा तु य़हुदीय़ों का नाजा है
४ तव उसने उतन दीय़ा औान कहा तुही तो कहता है। तव पीलातुस ने पनधान य़ाजकों औान लोगों को कहा मैं इस
५ मनुष्य का कुछ दोष्य नहीं पाता। औान उनहों ने अधीक हुलन कनके कहा की वुह जलील से लेके य़हां लों साने य़हूदीय़ः में उपदेस कनके लोगों को उसकाता है। जव पीलातुस
७ ने जलील का सुना तो पुछा कय़ा वुह जलीली है। जव उसने जाना की वुह हीनुदीस के पनजा में से है उसने उसे हीनुदीस
८ के पास जो आपही य़नोसलीम में था भेजा। औान जव

हीनुदीस ने य़सु को देष्पा वुह व़ज्ञत आनंद ज्ञआ कय़ोंकी वुह व़ज्ञत दोन से उसके देष्पने की इछा नष्पता था इस लीय़े की उसने उसके व़ीष्पय़ में व़ज्ञत कुछ सुना था और याहता था की
९ उसके कीसी आसयनज को देष्पे। तव़ उसने उसे व़ज्ञत कुछ
१० पुछा पनंत उसने उसको कुछ उतन न दीय़ा। और पनघान
य़ाजकों और अघापकों ने ष्पड़े होके उस पन दीनढ़ता से
११ दोष्प दीय़ा। और हीनुदीस ने अपने जोघा लोगों के संग होके उसकी नींदा की और ठठे कीय़े और उसको झड़कीला
१२ व़सतन पहीना के पीलातुस पास फेन भेजा। और उसी दीन पीलातुस और हीनुदीस आपुस में मीतन ज्ञऐ की उस से
१३ पहीले उन में सतनुता थी। और जव़ पीलातुस ने पनघान
१४ य़ाजकों और लोगों के पनघानों को ऐकठे व़ुलाय़ा। उसने उनहें कहा की तुम लोग इस मनुष्प को य़ह कहते ज्ञऐ मेने पास लाय़े हो की लोगों को व़ीगाड़ता है और देष्पो मैं ने तुमहाने संमुष्प पनीछा की और इस मनुष्प पन उन दोष्पों
१५ के व़ीष्पय़ में जो तुम ने उस पन दीय़े कुछ न पाय़ा। और न हीनुदीस ने की मैं ने तुमहें उसके पास भेजा और देष्पो
१६ की उस पन मान डालने के जोग कुछ न ज्ञआ। सो उसको
१७ दंड देके छोड़ देता ज्ञं। अव़ उसे अवेस था की पनव़ में ऐक
१८ को उनके लीय़े छोड़ देवे। तव़ वे सव़ ऐकठे य़ह कहके यीलाऐ की इसको उठा डाल और व़नव़ास को हमाने लीय़े
१९ छोड़ दे। वुह कीसी दंगे के कानन जो नगन में कीय़ा गय़ा
२० था और हतय़ा के लीय़े व़ंदीगीनह में डाला गय़ा था। इस लीय़े पीलातुस य़सु के छोड़ने की इछा नष्पके उनसे फेन
२१ व़ोला। पनंतु वे यीला उठे की वुह कुनुस पन माना जाय़
२२ कुनुस पन माना जाय़। और उसने तीसनी व़ान उनहें कहा कय़ों उसने कय़ा अपनाघ कीय़ा है मैं ने उस पन मान डालने का कोइ कानन न पाय़ा इस लीय़े मैं उसको दंड देके छोड़

२३ देता हूं। परेन वे यीला के मांगने लगे की वुह कुरुस पर मारा जाय तव उनहों के और परधान याजकों के सब्द ठहर
२४ गये। परेन पीलातुस ने मान लीया की उनकी इछा पर
२५ रहे। और उसने उसको जो दंगा और हतया के कारन बंदीगीरह में डाला गया था छोड़ दीया परंतु यसु को उनकी
२६ इछा पर सौंप दीया। और जों वे उसको ले यले उनहों ने समउन कुरीनी को पकड़ा जो वाहर से आता था और उस पर
२७ कुरुस को रप्पा की इह उठा के यसु के पीछे ले यले। और ऐक वड़ी जथा और इसतीरी भी जो उसके लीये रोतीयां पीट-
२८ तीयां थीं उसके पीछे हो लीयां। यसु ने उनके ओर फीर के कहा की हे यरोसलीम की पुतरीयो मेरे लीये मत रोओ परंतु
२९ अपने और अपने वालकों के लीये रोओ। कयोंकी देप्पो वे दीन आते हैं जीन में वे कहेंगे की वांझ धंन और वे गरभ सथान जीन में धारन न हुआ और वे सतन जीनहों ने न
३० पीलाया। उस समय पहाड़ों को कहना आरंभ करेंगे की
३१ हम पर गीरो और पहाड़यों को की हमें ढांपो। कयोंकी यदी हरे वीरछ पर ऐसा करते हैं तो सुप्पे पर कया करेंगे।
३२ और दो मनुप्प को भी जो कुकरमी थे उसके संग मार डालने के लीये ले यले।

३३ और जव उस सथान में जो प्पोपड़ी का कहावता है आये वहां उनहों ने उसको और उन कुकरमीयों को ऐक को उसके दहीने और दुसरे को वायें कुरुस पर मारा।
३४ तव यसु ने कहा की हे पीता उन पर छमा कर कयोंकी वे नहीं जानते की कया करते हैं और उनहों ने यीठी डाल के
३५ उसके वसतर को वांट लीया। और लोग प्पड़े देप्प रहे थे और परधान भी उनके संग ठठे से कहते थे की उसने औरों को छुड़ाया यदी वुह मसीह इसर का युना हुआ है तो अपने

३६ को छुड़ावे। और जोधा लोग भी ठठा करते उसके पास आये
३७ और उसे सीरका दीया। और बोले की यदी तु यहूदीयों
३८ का राजा है तो अपने को छुड़ा। और युनानी और लाटीनी
और इब्रानी अक्षर में ऐक पतर पर लीष्प के उसके उपर
३९ लगाया की यह यहूदीयों का राजा है। और उन कुकरमीयों
में से ऐक ने जो फाँसी गये थे उसके बीष्पय में पाष्पंड कहा की
४० यदी तु मसीह है तो आप को और हम को छुड़ा। परंतु
दुसरे ने उतर दे कर उसको घुरुक के कहा की तु ईसर
४१ से नहीं डरता देष्प तु भी इसी दंड में संगी है। और
हम तो नयाय की रीत से कयोंकी हम अपने करम का
फल पा रहे हैं पर इस मनुष्प ने कुछ चुक न कीया।
४२ और उसने यसु को कहा हे परभु जब तु अपने राज
४३ में जा पहुंचे तो मुझे समरन कीजीये। यसु ने उसको
कहा मैं तुझे सत कहता हुं की आज तु मेरे संग सरग
लोक में होगा।

४४ और दो पहर के समय में समसत भुम पर अंधकार छाके
४५ तीसरे पहर लों रहा। और सुरज अंधकार हुआ और
४६ मंदीर का घुंघट मध में फट गया। फेर यसु बड़े सबद से
चीला के बोला की हे पीता मैं अपना आतमा तेरे हाथ में
सौंपता हुं और यह कहके अपने परान को सौंप दीया।
४७ तब जो की हुआ था सेनापती ने देष्प के ईसर की सतुत की
४८ और कहा की नीसचय यह मनुष्प धरमी था। और सब
लोग जो यह देष्पने को ऐकठे हुऐ थे उन बसतुन को जो
४९ बीत गया था देष्प के छातीयां पीटते हुऐ उलटे फीरे। और
उसके सब चीनहार और इसतीरी जो जलील से उसके पीछे
५० आई थीं दुर ष्पड़ी होके यह सब देष्प रही थीं। और
देष्पो की ऐक मनुष्प युसफ नाम मंतरी और सजन पुनुष्प

५१ और धर्मी था। और उनके परामर्स और कारज में
संगी न था यहूदीयों के एक नगर अरमतीया का वासी था
५२ और ईसर के राज की वाट भी जोहता था। उसने पीलातुस
५३ पास जाके यसु की लोथ मांगी। और उसने उसे उतार के
वसतर में लपेटा और एक समाध में जो पथर में खोदा गया
५४ था जीस में कभी कोइ रखा न गया था धरा। और वुह
बनाउनी का दीन था और बीसराम का दीन समीप था।
५५ और इसतीरी भी जो उसके संग जलील से आइ थीं पीछे
हो लीं और समाध को और उसकी लोथ को की कीस
५६ रीत से रखी गइ देख रखीं। और उनहों ने फीर के
सुगंध दरब और तेल तैयार कीया और आग्या के समान
बीसराम के दीन में चैन कीया।

२४ चौवीसवां पर्ब।

१ अब अठवारे के पहीले दीन बड़े तड़के वे उन सुगंध दरबों
को जो उनहों ने तैयार कीये लेके समाध पर आइं और
२ उनके संग कइ और भी आइं। उनहों ने उस पथर को
३ समाध से ढुलकाया हुआ पाया। और भीतर गइं और
४ परभु यसु के देह को न पाया। और ऐसा हुआ की जब
वे उस कारन से बहुत घबरा रही थीं तो देखो दो मनुष्य
५ चमकते बसतर पहीने हुए उनके पास खड़े हुए। और
जब वे डर गइं और अपने मुंह को भुम पर झुकाए हुए
थीं उनहों ने उनको कहा की तुम जीवते को मीरतकों में
६ कयों ढूंढतीयां हो। वुह यहां नहीं है परंतु जी उठा है चेत
७ करो की उसने जब जलील में था तुमहों से कया कहा। की
अवस है की मनुष्य का पुत्र पापीयों के हाथ में सौंपा जाए

८ औान कुनुस पन माना जाय औान तीसने दीन फोन उठे। तव
९ उनहों ने उसकी व्रातों का येत कीया। औान समाघ से
फोनीं औान उन व्रातों का समायान उन गयानह को अनु
१० औानों को सुनाया। मनीयम मजदली औान युआना औान
मनीयम याकुव की माता अनु औान उनके संग थीं जीनहों ने
११ ये व्रातें पनेनीतों से कहीं। औान उनकी व्रातें उनको व्रयनथ
कहानी के समान समह पड़ीं औान उनकी पनतीत न की।
१२ तव पतनस उठके समाघ के औान दौड़ा औान नीये हुक के
सुती वसतन ऐक औान पड़ा हुआ देप्पा औान उस व्रात से
१३ जो व्रीत गइ थी मन में आसयनज कनता यला गया। औान
देप्पो की उसी दीन दो उन में से अमाअस नाम ऐक गांव
को जो यनोसलीम से पौने यान कोस पन था जाते थे।
१४ औान आपुस में उन समसत व्रातों की जो व्रीत गइ थी यनया
१५ कनते थे। औान ऐसा हुआ की जव वे यनया औान पुह
पाह कन नहे थे यसु आप पास आ कन उनके संग हो लीया।
१६ पनंतु उनकी आंप्पें व्रंद हो गइं थीं यहां लों की उनहों ने
१७ उस को न पहीयाना। औान उसने उनहें कहा की यह कीस
नीत की व्रात यीत हैं जो तुम यलते हुऐ ऐक दुसने से कनते
१८ हो औान उदास हो। तव उन में से ऐक ने जीसका नाम
कुलुपास था उतन देके उसको कहा कया तु यनोसलीम में
केवल व्रीदेसी है औान इन व्रातों को जो इनहीं दीनों में
१९ व्रीती हैं नहीं जानता। उसने उन से पुहा की कैान सी व्रातें
फोन वे उसे व्रोले की यसु नासनी के व्रीप्पय में जो इसन
के औान समसत लोगों के आगे आगम गयानी था औान कानज
२० औान व्रयन में सामनथी था। औान कयोंकन पनघान याजकों
औान हमाने पनघानों ने उसे पकडवाके उसके मानडालने
२१ की अगया की औान उसको कुनुस पन माना। औान हमें
भनोसा था की यह वही इसनाइल का उघान कननेहान

था श्रौन उन सभों से अधीक आज तीसना दीन है जब्र
२२ सेग्रे ब्रातें ऊइं हैं। श्रौन हमानी जथा की कीतनी इस
तीनीय़ों ने भी हम ब्रीसमीत कन द्रीय़ा जो भोन को समाध
२३ पन थीं। श्रौन उसकी लोथ न पाके ग्रह कहती आइं की
हम ने दुतों का दनसन पाय़ा जो कहते थे पी वुह जीता
२४ है। श्रौन कइ उन में से जो हमाने संग थे समाध पन
गय़े श्रौन जैसा इसतीनीय़ों ने कहा था वैसाही पाय़ा पनंतु
२५ उनहों ने उसको न देष्पा। तब्र उसने उनहें कहा की हे
मुनष्प श्रौन आगम गय़ानीय़ों की कही ऊइ समसत ब्रातों
२६ में अलप ब्रीसवासीय़ो। कय़ा उचीत न था की मसीह ग्रे
२७ सब्र कसट उठा के अपने ऐसयनय़ में पनवेस कने। श्रौन
उसने मुसा से आनंभ कनके श्रौन समसत आगमगय़ानीय़ों
की वे ब्रातें जो समसत पुसतकों में उसके ब्रीष्पय़ में हैं उनके
२८ आगे ब्रननन कीं। फेन वे उस गांव के नीयन वे जाते थे
पास पऊंये श्रौन उसने ऐसा कीय़ा जैसा की वुह आगे को
२९ जाय़ा याहता है। पनंतु उनहों ने मना के उसे नोका श्रौन
कहा की हमाने संग नह कय़ांकी अब्र सांझ नीकट है श्रौन
दीन ब्रऊत ब्रीत गय़ा तब्र वुह भीतन गय़ा की उनके संग
३० नहे। श्रौन जब्र उनके संग भोजन पन ब्रैठा था ऐसा ऊआ
की उसने नोटी उठाके आसीनब्राद कीय़ा श्रौन तोड़ के उनहें
३१ दीं। तब्र उनहों की आंष्पें ष्पुल गइं श्रौन वे उसको जान
३२ गय़े श्रौन वुह उन की दीनीसट से श्रदीनीस ऊआ। तब्र
उनहों ने आपुस में कहा जब्र वुह हमाने संग मानग में ब्रात
कनता था श्रौन जब्र वुह गनंथों का अनथ कनता था कय़ा
३३ हमाने मन हम में न तपते थे। श्रौन वे उसी घड़ी उठे श्रौन
य्रुनोसलीम को फीने श्रौन उन गय़ानह को श्रौन उनहें
३४ जो उनके संग ऐकठे थे ग्रह कहते ऊऐ पाय़ा। की पनभु
३५ सयमुय जी उठा है श्रौन समउन को दीष्पाइ दीय़ा। श्रौन

उनहों ने मानग की व्रातें व्रननन कीं ग्रीन वुह कीस नीत
३६ से नोटी तोड़ने में पहीयाना गया। ग्रीन जव्र वे युं कह
नहे थे यसु ग्राप उनके मघ में ण्डा ङग्रा ग्रीन उनहें कहा
३७ की तुम पन कुसल। वे भय़ कनके डन गये ग्रीन समहा
३८ की हम ग्रातमा देष्पते हैं। ग्रीन उसने उनहें कहा तुम
कयों व्रयाकुल हो ग्रीन कयों तुमहाने मन में यीनता उठती
३९ है। मेने हाथों ग्रीन मेने पाग्रों को देष्पो की मैं ग्राप ही
ङं मुहे टटोलो ग्रीन देष्पो कयोंकी ग्रातमा में मांस ग्रीन
४० हाड़ नहीं होता जैसा की तुम मुह में देष्पते हो। ग्रीन
४१ यह कहके हाथ पांव उनहें दीष्पाये। ग्रीन जव्र वे ग्रव्र लों
ग्रानंद से पनतीत न कनते थे ग्रीन व्रीसमीत थे उसने उनहें
४२ कहा तुमहाने पास यहां कुछ भोजन है। तव्र उनहों ने उसे
४३ थोड़ी सी भुनी मछली ग्रीन मघ का छता दीया। उसने
४४ लेके उनके संमुष्प ष्पाया। ग्रीन उनहें कहा की ये व्रातें हैं
जो मैं ने तुमहाने संग नहते ङए तुम से कहीं की सव्र व्रातों
का जो मेने व्रीष्पय में मुसा की व्रैवसथा में ग्रीन ग्रागम
४५ गयानीयों ग्रीन भजन में हैं संपुनन होना ग्रवेस है। फरेन
४६ उसने उनकी वुघ को ष्पोला की वे गनंथों को समहें। ग्रीन
उनहें कहा की युंही लीष्पा है ग्रीन ऐसा ऐसा ग्रवेस था
की मसीह दुष्प उठावे ग्रीन तीसने दीन मीनतकों में से जी
४७ उठे। ग्रीन की यनोसलीम से लेके समसत लोगों में उसके
नाम से पसयाताप ग्रीन पापों के मोयन का उपदेस कीया
४८।४९ जाय। ग्रीन तुम सव्र इन व्रातों के साष्पी हो। ग्रीन
देष्पो की मैं ग्रपने पीता के व्रायाचा को तुम पन भेजता ङं
पनंतु जव्र लों तुम उपन से पनाकनम न पाग्रो यनोसलीम नगन
में व्रास कनो।

५० ग्रीन वुह उनहें व्रीतानीयां लों व्राहन ले गया ग्रीन ग्रपना

५१ हाथ उठा के उन्हें आसीस दीया। और ऐसा हुआ की वुह उन्हें आसीस देते हुए उन से अलग हुआ और स्वर्ग
५२ पर जाता रहा। तब वे उस को दंडवत करके बड़े आनंद
५३ से यरोसलीम को फीरे। और नीत मंदीर में ईस्वर की स्तुत और धंन मानते रहा कीये।

आमीन।

मंगल समाचान ग़ुहना नचीत।

---

१ पहीला पनव़।

मसीह का इसनत औान व़ोयवइ होने का पद औान अवतान लेना १—१८ मसीह पन ग़हीग़ा का साप्पी देना १९—२८ व़ताता है की वुह इसन का मेमना औान इसन का पुतन औान घनमातमा से सनान दायक २९—३४ ग़हीग़ा के सीप्प मसीह का पीछा कनते हैं ३५—३९ पतनस औान नासानाइल ग़सु पास पऊंचाये जाते हैं ४०—४५ ग़सु का नासानाइल पन साप्पी देना औान आपुस का संव़ाद ४६—५१।

१ आनंभ में सव़द था औान वुह सव़द इसन के संग था औान
२ वुह सव़द इसन था। वही आनंभ में इसन के संग था।
३ सव़ कुछ उस से नया गया औान नचीत में तनीक व़सतु उस
४ व़ोना नहीं नची गइ। उस में जीवन था औान वुह जीवन
५ मनुप्पन का उंजीग़ाला था। औान वुह उंजीग़ाला अंघीग़ाने
६ में यमकता है औान अंघीग़ाने ने उसे न वुझा। ग़हीग़ा नाम
७ का प्रेक जन इसन की ओान से भेजा गया था। वही साप्पी
के लीग़े आग़ा की उंजीग़ाले पन साप्पी देवे जीसतें उसके

९ परंतु उस उंजोयाले पर साप्पी देने को आया। सत उंजीयाला वुह था जो जगत में आके हर एक मनुष्य को उंजीयाला करता
१० है। वुह जगत में था और जगत उस से बया गया और
११ जगत ने उसे नहीं पहीयाना। वुह अपने नीजों पास आया
१२ और उसके नीजों ने उसे गरहन न कीया। परंत, जीतने उसे गरहन करके उसके नाम पर वीसवास लाये उसने उनहें
१३ इसर के पुतर होने का पद दीया। जो न तो लहु से और न सरीर की इछा से न मनुष्य की इछा से परंतु इसर से उतपंन
१४ हुए। और सब्द देही हुआ और कीरपा और सयाइ की भरपुरी से हम में वास कीया और हम ने उसकी महीमा
१५ को पीता के एकलौते की महीमा के समान देप्पा। यहीया ने उसके लीये साप्पी दी और पुकार के कहा की यह वुह है जीसके वीप्पय में मैं ने कहा की जो मेरे पीछे आता है सो
१६ मुझ से स्रेसठ है कयोंकी वुह मुझ से आगे था। और उसकी भर पुरी से हम ने पाया अरथात कीरपा पर कीरपा पाइ।
१७ कयोंकी बेवसथा मुसा से दी गइ कीरपा और सयाइ यसु
१८ मसीह से पहुंची। इसर को कीसी ने कभी नहीं देप्पा है एकलौते पुतर ने, जो पीता की गोद में है उसे परगट कीया।
१९ जब यहुदीयों ने याजकों और लावीयों को यरोसलीम से उसे पुछने को भेजा की तु कौन है यहीया की साप्पी यह थी,
२० उसने मान लीया और नाह न कीया परंतु मान लीया की मैं
२१ मसीह नहीं। और उनहों ने उसे पुछा तो कया तु इलीयास है? उसने कहा की नहीं तु वुह भवीसदबकता है? उसने
२२ उतर दीया की नहीं। तब उनहों ने उसे कहा की तु कौन है? जीसतें जीनहों ने हमें भेजा हम उनहें कुछ उतर देवें
२३ तु अपने वीप्पय में कया कहता है?। उसने कहा की मैं एक का सब्द हुं जो बन में पुकारता है की परमेसर के मारग
२४ को सीधा करो। जैसा असाया भवीसदबकता ने कहा। और

२५ जो भेजे गये सो फरीसीयों में से थे। उनहें ने उसे पुछा श्रीर कहा की जो तु मसीह अथवा इलीयास नहीं अथवा वुह
२६ भवीसदवकता नहीं तो फेर कयों सनान देता है?। यहीया ने उनहें उतर देके कहा की मैं जल से सनान देता ह्रं परंतु
२७ तुमहारे मध में एक खड़ा है जीसे तुम नहीं जानते। सो वुह है जो मेरे पीछे आके मुझ से स्रेसठ है जीस की जुती का
२८ बंद खोलने के मैं जोग नहीं। ये सब बैतअबरः में हुए जहां यहीया सनान देता था।

२९ दुसरे दीन यहीया ने यसु को अपनी श्रोर आते देख के कहा की देखो ईसर का मेमना जो जगत के पाप को ले जाता
३० है। यह वुह है जीस के बीषय में मैं ने कहा की एक मनुष्य मेरे पीछे आता है जो मुझ से स्रेसठ है कयोंकी वुह मुझसे
३१ आगे था। श्रोर मैं उसे न जानता था पर जीसतें वुह इस-
३२ राइल पर परगट होवे मैं जल से सनान देता आया ह्रं। श्रोर यहीया ने साखी देके कहा की मैं ने आतमा को कपोत की
३३ नाई सरग से उतरते श्रोर उस पर ठहरते देखा। श्रोर मैं उसे न जानता था परंतु जीसने मुझे जल से सनान देने को भेजा उसने मुझे कहा की जीस पर तु आतमा को उतरते श्रोर ठहरते देखे सो वुह है जो धरमातमा से सनान देता
३४ है। श्रोर मैं ने देखा श्रोर साखी देता ह्रं की यह ईसर का
३५ पुतर है। फेर दुसरे दीन यहीया श्रोर उसके सीखों में से
३६ दो खड़े थे। श्रोर यसु को चलते देख के उसने कहा की
३७ देखो ईसर का मेमना। श्रोर उन दो सीखों ने उसका बचन
३८ सुना श्रोर वे यसु के पीछे हो लीये। तब यसु ने पीछे फीर के उनहें आते देख के कहा की तुम कया ढुंढते हो? उनहें ने उसे कहा की हे रबी अरथात हे गुरु आप कहां रहते हैं?।
३९ उसने कहा की आश्रो, देखो, श्रोर जहां वुह रहता था उनहें

ने आके देप्पा ग्रैान उस दीन उसके संग नहे कोंकी दो
४० घंटे के अटकल दीन नहगया था। उन दोनों में से जो यहीया
की सुन के उस के पीछे गये एक समउन पतनस का भाइ
४१ अंदनयास था। उसने पहीले अपने सगे भाइ समउन को पाया
ग्रैान उसे कहा की हम ने मसीह को पाया जीसका अनथ
४२ अभीसीकत है। तव्र वुह उसे यसु पास लाया ग्रैान यसु ने
उसे देप्प के कहा की तु यनस का व्रेटा समउन है तु कीफास
४३ कहावेगा जीस का अनथ, पथन है। अगीले दीन यसु ने
जलील को जाने याहा ग्रैान फैलव्रुस को पाके उसे कहा की
४४ मेने पीछे हो ले। अव्र फैलव्रुस अंदनयास ग्रैान पतनस के
४५ नगन व्रैतीसैदा का था। फैलव्रुस ने नासानाइल को पाया
ग्रैान उसे कहा की हम ने उसे पाया जीसके व्रीप्पय में मुसा ने
व्रैवसथा में ग्रैान भवीसदव्रकतों ने लीप्पा है की यसफ का
४६ पुतन यसु नासनी। नासानाइल ने उसे कहा की कोइ अछी
व्रसतु नासन: से नीकल सकती है? फैलव्रुस ने उसे कहा की
४७ आ ग्रैान देप्प। यसु ने नासानाइल को अपनी ग्रोन आते
देप्पा ग्रैान उसके व्रीप्पय में कहा की देप्पो एक सया इस-
४८ नाइली जीस में कपट नहीं। नासानाइल ने उसे कहा की
आप मुहे कहां से जानते हैं? यसु ने उतन देके उसे कहा
की फैलव्रुस के व्रुलाने से आगे जव्र तु गुलन पेड़ तले था मैं
४९ ने तुहे देप्पा। नासानाइल ने उतन देके उसे कहा की हे
गुनु आप इसन के पुतन हैं आप इसनाइल के नाजा हैं।
५० यसु ने उतन देके उसे कहा की मैं ने तुहे गुलन पेड़ तले
देप्पा इस कहने के कानन तु व्रीसवास लाता है? तु इन से
५१ व्रड़े कानज देप्पेगा। फेन उसने उसे कहा की मैं तुमहें सत
सत कहता हुं की इसके पीछे तुम सनग को प्पुला ग्रैान
इसन के दुतों को उपन जाते ग्रैान मनुप्प के पुतन पन उतनते
देप्पोगे।

२ दुसना पनव।

युसु का जल को दाख्नस वानाना १—११ पनव में जाके मंदीन को पवीतन कनना ग्रैान ग्रपनी मीनतु ग्रैान जी उठने का ग्रवीस कहना। १२—२२ अपने तइं लोगों पन न छोड़ना २३—२५।

१ ग्रैान तीसने दीन जलील के काना में ग्रेक वीवाह ड्रुग्रा
२ ग्रैान युसु की माता वहीं थी। युसु ग्रैान उसके सीष्य भी उस
३ वीवाह में वुलाये गये थे। ग्रैान जव दाख्नस घोड़ा ड्रुग्रा
४ युसु की माता ने उसे कहा की उन पास दाख्नस नहीं। युसु ने उसे कहा की हे इसतीनी तुह से मुहे कया काम? मेना
५ समय ग्रव लों नहीं ग्राया। उसकी माता ने सेवकों से कहा की
६ जो कुछ वुह तुमहें कहे सो कीजीयो। ग्रैान वहां पथन के छः मटके युड़दीयों के पवीतन कनने को नीत के समान धने थे
७ हन ग्रेक में दो ग्रथवा तीन मन की समाइ थी। युसु ने उनहें कहा की मटकों में जल भनो सो उनहों ने मुंहेमुंह उनहें भना।
८ फेन उसने उनहें कहा की ग्रव नीकालो ग्रैान जेवनान के पन-
९ धान पास ले जाग्रो सो वे ले गये। जव जेवनान के पनधान ने उस दाख्नस को चीष्वा जो जल से वना था ग्रैान न जाना की वुह कहां से था पनंतु जीन सेवकों ने उस जल को नीकाला था
१० सो जानते थे उसने दुलहा को वुलाया। ग्रैान उसे कहा की हन ग्रेक मनुष्य ग्रानंभ में ग्रछा दाख्नस देता है ग्रैान जव लोग पीके छकते हैं तव वुह जो उस से घटती है, पन तु ने ग्रछा
११ दाख्नस ग्रव लों नख छोड़ा है। यह ग्रासचनजों का ग्रानंभ युसु ने जलील के काना में कीया ग्रैान ग्रपनी महीमा पनगट
१२ की ग्रैान उसके सीष्य उसपन वीसवास लाये। उसके पीछे वुह ग्रैान उसकी माता ग्रैान भाइ ग्रैान उसके सीष्य कपननाहुम में
१३ गये पन वे वहां वहुत दीन न ठहने। तव युड़दीयों का पान

१४ जाना पनव्र समीप आया और यसु यनोसलीम को गया। और वैल और भेड़ और कपोत के वेयवैयों को और प्पुनदीयों
१५ को मंदीन में बैठे ऊए पाया। तव्र उसने नसी का यावुक व्रनाके उन सभों को वैलों और भेड़ों समेत मंदीन से व्राहन नोकाल दीया और प्पुनदीयों के नोकड़ को व्रीथना दीया
१६ और मंयों को उलट दीया। और कपोत के वेयवैयों से कहा की इन वुसतुन को यहां से दुन कनो मेने पीता के घन
१७ को वैपान का घन मत व्रनाओ। और उसके सीप्पों ने इस लीप्पे ऊए व्रयन को, की तेने घन के ताप ने मुझे प्पा लीया है।

१८ तव्र यऊदीयों ने उतन दीया और उसे कहा की तु हमें कौनसा लछन दीप्पाता है जो यह कानज कनता है?।
१९ यसु ने उतन देके उनहं कहा की इस मंदीन को ढादो और
२० तीन दीन में इसे उठाउंगा। तव्र यऊदीयों ने कहा की इस मंदीन के व्रनने में छीयालीस व्रनस लगे और तु उसे तीन दीन
२१ में उठावेगा?। पनंतु उसने अपने देह के मंदीन के व्रीप्पय में
२२ कहा। इस लीये जव्र वुह मीनतकों में से जी उठा उसके सीप्पों ने येत कीया की उसने उनहें यह कहा था और वे लीप्पे ऊए पन और यसु के कहे ऊए व्रयन पन व्रीसवास लाये।

२३ और जव्र वुह पान जाना पनव्र में यनोसलीम में था व्रऊतेने उसके आसयनज कानजों को देप्प के उस पन व्रीसवास लाये।
२४ पनंतु यसु ने अपने तइं उन पन न छोड़ा कयोंकी वुह सव्र को
२५ जानता था। और उसे आवेसक न था की मनुप्प के व्रीप्पय में कोइ साप्पी देवे कयोंकी वुह जानता था की मनुप्प में कया था।

३ तीसना पनव्र।

मसीह के नये जनम की व्रानता कनना १—१३
मसीह के जगत में आने का कानन उसका कनुस

पर उठाया जाना और उसके वीसवासीयों की आनंदता १४—१७ अवीसवासीयों की दुसटता और दुरगती १८—२१ युसु के वीष्पय में यहीया की कथा २२—३९।

१ यहुदीयों का एक परधान नीकुदीमुस नाम का एक फरीसी था। २ जो रात को युसु पास आया और उसे कहा की हे गुरु हम जानते हैं की आप इसर की ओर से उपदेसक आये हैं कयोंकी कोइ मनुष्य यह आसयरज जो आप करते हैं नहीं कर सकता जब लों इसर उसके संग न हो। ३ युसु ने उतर देके उसे कहा की मैं तुझे सत सत कहता हुं की जब लों मनुष्य फेर के उतपंन न होवे वह इसर के राज को देष्प नहीं सकता। ४ नीकुदीमुस ने उसे कहा की जब मनुष्य बीरध हुआ वुह कयोंकर उतपंन हो सकता है? कया वुह दुसरी बार अपनी माता के कोष्प में जाके उतपंन हो सकता है?। ५ युसु ने उतर दीया की मैं तुझे सत सत कहता हुं की जब लों मनुष्य जल से और आतमा से उतपंन न होवे वुह इसर के राज में नहीं जा सकता। ६ जो देह से उतपंन हुआ है सो देह है और जो आतमा से उतपंन हुआ है सो आतमा है ७ आसयरज मत मान की मैं ने तुझे कहा की तुमहें फेर के उतपंन होना अवेस है। ८ पवन जीधर चाहता है उधर चलता है और तु उसका सबद सुनता है परंतु नहीं जानता की वुह कहां से आता है और कीधर को जाता है ऐसाही हर एक है जो आतमा से उतपंन हुआ है। ९ नीकुदीमुस ने उतर देके उसे कहा की ये बातें कयोंकर १० हो सकती हैं?। युसु ने उतर देके उसे कहा की तु इसराइल का उपदेसक होके ये बात नहीं जानता?। ११ मैं तुझे सत सत कहता हुं की जो हम जानते हैं सो कहते हैं और जो हमने देष्पा है उस पर साष्पी देते हैं परंतु तुम हमारी साष्पी नहीं

१२ मानते। जो मैं ने तुमहें संसानीक व़ातें कहीं श्रीन तुम पन-
तीत नहीं कनते तो जव़ मैं तुमहें सनगीय़ व़ातें कहूं तो
१३ कय़ोंकन पनतीत कनोगे?। कय़ोंकी कोइ मनुप्य सनग पन
नहीं उठ गय़ा पनंतु केवल वुह जो सनग से उतना अनथात
१४ मनुप्य का पुतन जो सनग में है। श्रीन जैसा मुसा ने व़न में
सांप को उपन उठाय़ा वैसाही अवेस है की मनुप्य का पुतन भी
१५ उठाय़ा जाय़। जीसतें जो कोइ उस पन व़ीसवास लावे सो
१६ नास न होवे पनंतु अनंत जीवन पावे। कय़ोंकी इसन ने जगत
पन ऐसी पनीत की, की उसने अपना एकलैाता पुतन दीय़ा
की जो कोइ उस पन व़ीसवास लावे सो नास न होवे पनंतु
१७ अनंत जीवन पावे। कय़ोंकी इसन ने अपने पुतन को जगत
में इस लीय़े नहीं भेजा की जगत को दोप्पी ठहनावे पनंतु
१८ जीसतें जगत उस से उधान पावे। जो उस पन व़ीसवास नप्पता
है सो दोप्पी नहीं पनंतु जो व़ीसवास नहीं नप्पता सो दोप्पी
हो युका इस लीय़े की वुह इसन के एकलैाते पुतन के नाम
१९ पन व़ीसवास न लाय़ा। श्रीन दोप्प य़ह है की उजीय़ाला
जगत में आय़ा श्रीन मनुप्यों ने अंधीय़ाने को उंजीय़ाले से
२० अधीक पनतीत की इस कानन की उनके कनम वुने थे। कय़ों
की जो कोइ व़ुनाइ कनता है सो उंजीय़ाले से व़ैन नप्पता है
श्रीन उंजीय़ाले के पास नहीं आता न हो की उसके कनम
२१ पनगट होवें। पनंतु जो सत को पालन कनता है सो उंजीय़ाले
के पास आता है जीसतें उसके कानज पनगट होवें की वे इसन
में कीय़े गय़े हैं।

२२ इन व़ातों के पीछे य़सु श्रीन उसके सीप्प य़हूदीय़ः की
भुम में आय़े श्रीन उसने वहां उनके संग कुछ दीन ठहन के
२३ सनान दीय़ा। श्रीन य़हीय़ा भी सालीम के पास ऐनुन में
सनान देता था इस कानन की वहां व़हुत जल था श्रीन लोग
२४ आ आके सनान पाते थे। कय़ोंकी य़हीय़ा अव़ लों व़ंदीगीनह

२५ में डाला न गया था। तव युहीया के सीष्यों में और यहुदीयों
२६ में पवीतर करने के वीष्य में वीवाद हुआ। और वे युहीया
के पास आये और उसे वाले की गुरुजी जो यरदन पार आप
पास था जीस पर आप ने साष्यी दी देष्पीये की वुह सनान देता
२७ है और सव उसके पास जाते हैं। युहीया ने उतर देके कहा
की जव लों मनुष्य को सरग से न दीया जाय वुह कुछ पा नहीं
२८ सकता। तुम आपही मुझ पर साष्यी हो की मैं ने कहा की
२९ मैं मसीह नहीं परंतु उसके आगे भेजा गया हुं। जीसकी
दुलहीन है सो दुलहा है परंतु दुलहा का हीत जो ष्पड़ा होके
उसकी सुनता है दुलहा के सवद से वड़ा आनंदीत होता है
३० इस लीये मेरा आनंद पुरा हुआ। अवेस है की वुह वढ़े और
३१ मैं घटुं। जो उपर से आता है सो सव से वड़ा है जो पीरथीवी
का है सो पारथीव है और पीरथीवी की कहता है जो सरग से
३२ आता है सो सव से वड़ा है। और जो कुछ उसने देष्पा और
सुना है उसकी साष्यी देता है और कोइ उसकी साष्यी गरहन
३३ नहीं करता। जीसने उसकी साष्यी गरहन की है उसने छाप
३४ कीया है की इसर सत है। कयोंकी जीसे इसर ने भेजा है सो
इसर की कहता है इस लीये इसर उसे आतमा परीमान से
३५ नहीं देता। पीता पुतर को पीआर करता है और सव कुछ
३६ उसके वस में कीया है। पुतर पर जो वीसवास रष्पता है सो
सो अनंत जीवन रष्पता है और पुतर पर जो वीसवास नहीं
रष्पता सो जीवन को न देष्पेगा परंतु इसर का कोप उस पर
घरा है।

४ चौथा परव।

यहुदीयः से इसा का सामरः में जाना १—९ सामरः
को इसतीरो से वारता करना ७—२७ उस इसतीरो
का परजु पर साष्यी देना २८—३० अपने सीष्यों से

ब्रानता करना १९—२८ सामनीओं का बीसवास लाना २९—४२ जलील में फीर जाके एक महत जन को चंगा करना ४३—५४

१ परन्तु जब प्रभु ने जान के की फरीसीयों ने यह सुना की यसु ने
२ युहीया से सनान दे दे के अधीक सीष्य कीया। (यदपी यसु
३ आप नहीं परंतु उसके सीष्य सनान देते थे)। तब वुह
४ यहूदीयः को छोड़ के जलील को फीर गया। और अवस था
५ की वुह सामनः में होके जाय। तब सैकन नाम सामनः के एक नगर में उस भुम के पास जो याकुब ने अपने बेटे युसफ
६ को दी थी वुह पाया। और याकुब का कुआ वहीं था सो यसु जातना से थका होके उस कुंए पर युंहीं बैठ गया, यह दो
७ पहर के लग भग था। सामनः की एक इसतीनी पानी भरने
८ को आई और यसु ने उसे कहा की मुझे पीने को दे। (कयों-
९ की उसके सीष्य भोजन मोल लेने नगर में गये थे)। सामनः की उस इसतीनी ने उसे कहा की यह कैसा है की यहुदी होके तु मुझ सामनः की इसतीनी से पीने को मांगता है? कयोंकी
१० यहुदी सामनीयों से ब्रेवहार नहीं रखते। यसु ने उतर देके उसे कहा की जो तु इसर के दान को और उसे जानती जो तुझे कहता है की मुझे पीने को दे तो तु उस से मांगती और
११ वुह तुझे अमीरत जल देता?। इसतीनी ने उसे कहा, महासय आप के पास खींचने को कुछ नहीं और कुंआ गहीरा है फेर
१२ आप पास यह अमीरत जल कहां से है। कया आप हमारे पीता याकुब से बड़े हैं जीसने यह कुंआ हमें दीया और उसने आप और उसके बालक ने और उसके पसुन ने उस से पीया?।
१३ यसु ने उतर देके उसे कहा की जो कोई यह जल पीता है
१४ सो फेर पीयासा होगा। परंतु जो वुह जल पीता है जो मैं उसे देउं सो कभी पीयासा न होगा परंतु जल जो मैं उसे देउंगा

सो उस में जल का सोता हो जायगा जो अनंत जीवन लों वहता
१५ रहेगा। इसतीनी ने उसे कहा की हे परभु यह जल मुझे
१६ देकी मैं पीयासी न हुं और यहां भरने को न आउं। यसु
ने उसे कहा की जा अपने पती को वुला और इधर आ।
१७ उस इसतीनी ने उतर देके कहा की मेरा पती नहीं है, यसु
ने उसे कहा की तु ने अछा कहा है की मेरा पती नहीं।
१८ कयोंकी तु पांच पती कर चुकी पर अव जो तेरा है सो तेरा
१९ पती नहीं तु ने इस में सत कहा। इसतीनी ने उसे कहा की
हे महासय मुझे सुझ पड़ता है की आप भवीसदवकता हैं।
२० हमारे पीतरों ने इस पहाड़ पर सेवा की और तुम लोग कहते
हो की वुह सथान यरोसलीम है जहां उचीत है की लोग सेवा
२१ करें। यसु ने उसे कहा की हे इसतीनी मेरी परतीत कर
की वुह समय आता है जव की तुम न तो इस पहाड़ में न
२२ यरोसलीम में पीता की सेवा करोगे। जीसे तुम नहीं जानते
उसकी सेवा करते हो हम जीसे जानते हैं उसकी सेवा करते
२३ हैं कयोंकी मुकत यहुदीयों में से है। परंतु समय आता है
और अव है की सचे पुजक आतमा से और सचाइ से पीता की
२४ पुजा करेंगे कयोंकी पीता ऐसे पुजकों को ढुंढ़ता है। इसर
आतमा है और जो उसकी सेवा करते हैं उनहें अवेसक है की
२५ आतमा से और सचाइ से सेवा करें। उस इसतीनी ने उसे
कहा की मैं जानती हुं की मसीह (जो खरीसीकत है) आता
२६ है जव वुह पहुंचेगा वुह हमें सव कुछ वतावेगा। यसु ने उसे
कहा की मैं जो तुझे कहता हुं वही हुं।

२७ इतने में उसके सीष्य आये और आसचरज माना की वुह
ऐक इसतीनी से वातता करता था परंतु कीसी ने न कहा
की आप कया मांगते हैं अथवा कीस लीये उस से वोलते हैं ?।
२८ तव इसतीनी ने अपने जल का घड़ा छोड़ के नगर में जाके
२९ लोगों से कहा। की आओ ऐक मनुष्य को देखो जीसने सव

३० जो मैं ने कीये मुझे कहा यह वुह मसीह नहीं?। तब वे नगर से नीकल के उस पास आये।
३१ इतने में उसके सीष्यों ने उसकी बीनती करके कहा की हे
३२ गुरु कुछ खाइये। परंतु उसने उनहें कहा की मेरे खाने को
३३ वुह भोजन है जो तुम नहीं जानते। इस लीये सीष्यों ने आपुस में कहा की कया कोइ उसके लीये भोजन लाया है?।
३४ यसु ने उनहें कहा की जीसने मुझे भेजा उसकी इछा पर चलूं
३५ और उसके काराज को पुरा करूं यही मेरा भोजन है। तुम नहीं कहते हो की चार मास के पीछे लवने का समय है? देखो मैं तमहें कहता हूं की अपनी आंखें उपर करो और
३६ खेतों को देखो की वे लवने के लीये पक चुके हैं। और जो लवता है सो बनी पाता है और अनंत जीवन के लीये फल बटोरता है जीसतें जो बोता है और जो लवता है मील के
३७ आनंद करें। और इस में यह बचन सत है की ऐक बोता
३८ और दुसरा लवता है। मैं ने तमहें उसे लवने को भेजा है जीस में तुम ने परीस्रम न कीया औरों ने परीस्रम कीया
३९ है और तुम ने उनके परीस्रम में परवेस कीया। और उस नगर के बहुत से उस सामरी इसतीरी के कहने से उस पर बीसवास लाये जीसने साखी दी की जो कुछ मैं ने कभी कीया
४० उसने मुझे कहा। और जब सामरीयों ने उस पास आके उसकी बीनती की, की हमारे संग ठहरीये सो वुह दो दीन वहां
४१ रहा। और बहुतेरे उसी के बचन के कारन बीसवास
४२ लाये। और उस इसतीरी को कहा की अब हम केवल तेरे कहे से बीसवास नहीं लाते कयोंकी हम ने आपही सुना और
४३ जानते हैं की यह ठीक जगत का मुकतदाता मसीह है। और
४४ दो दीन पीछे वुह वहां से सीघार के जलील को गया। कयों-की यसु ने आप साखी दी की भवीसदबकता अपनेही देस में
४५ आदर नहीं पाता। और जब वुह जलील में आया तो सभी

यौद्धों ने उसे गनहन कीया कयोंकी सब कुछ जो उसने युनोसलीम के व्रीय पनव्र में कीया था उनहों ने देप्पा था
४६ कयोंकी वे भी पनव्र में गये थे। श्रीन यसु फेन जलील के काना में आया, जहां उसने जल को दाप्पनस व्रनाया था श्रीन वहां येक पनतीसठत मनुप्प था जीसका व्रेटा कपननाहम में
४७ नोगी था। जव्र उसने सुना की यसु यहूदीय से जलील में आया वुह उस पास गया श्रीन उसकी व्रीनती की, की आके
४८ मेने व्रेटे को यंगा कीजीये कयोंकी वुह मनने पन है। यसु ने उसे कहा की जव्र लों तुम लछन श्रीन आसयनज न देप्पो
४९ तुम व्रीसवास न लाश्रोगे। उस पनतीसठत मनुप्प ने उसे कहा की हे महासय मेने लड़के के मनने के आगे उतन आइये।
५० यसु ने उसे कहा की जा तेना व्रेटा जीता है श्रीन उस मनुप्प ने उस व्रयन पन, जो यसु ने उसे कहा था नीसयय कीया श्रीन
५१ यला गया। वुह उतनताही था की उसके सेवक उसे मीले
५२ श्रीन कहा की आप का व्रेटा जीता है। तव्र उसने उनहें पुछा की वुह कीस घड़ी से यंगा होने लगा उनहों ने उसे कहा
५३ की कल सातवीं घड़ी से जन ने उसे छोड़ा। तव्र उसके पीता ने जाना की उसी घड़ी में यसु ने उसे कहा था की तेना व्रेटा जीता है तव्र वुह आप श्रीन उसका साना घन व्रीसवास लाया।
५४ यह फेन दुसना आसयनज है जो यसु ने यहूदीयः से आके जलील में कीया।

५ पांयवां पनव्र।

अठतीस व्रनस के लंगड़े को पनभु का यंगा कनना १—९ यहूदीयों का उस से व्रीव्राद कनना १०—१६ मसीह का अपना इसनत श्रीन व्रीयवड़ का पनाकनम व्रताना १७—२१ पनमान ला ला के अपनी व्रात का

दीउ करना १२—३९ यहूदीयों के अवीश्वास और
अहंकार के लीये उन पर दोष लगाना ४०—४७।

१ इस के पीछे यहूदीयों का एक पर्व्व हुआ और यसु यरो-
२ सलीम को गया। अब यरोसलीम में भेड़ हाट के लग एक कुंड
है जीस के पांच ओसारे हैं जो हीब्री भाषा में ब्रैतीहसदा
३ कहावता है। इस में दुर्ब्बल, अंधे, लंगड़े, और हुराये हुओं
की एक बड़ी मंडली जल के डोलने की आसा में पड़ी थी।
४ कयोंकी एक दुत कीसी समय में उस कुंड में उतर के जल को
डोलावता था और जल के डोलने के पीछे जो कोइ पहीले उस
५ में उतरता था सो अपने रोग से चंगा होता था। और वहां
६ एक मनुष्य था जो अठतीस ब्रस से रोगी था। यसु ने उसे
पड़े देष्य के जाना की वुह बहुत दीन से उस दसा में है तो
७ उसे कहा की तु चंगा होने चाहता है?। उस दुर्ब्बल मनुष्य
ने उसे उतर दीया की हे प्रभु मेरे पास कोइ मनुष्य नहीं की
जब जल डोले तो मुझे कुंड में डाल दे और जब लों मैं आता
८ हुं दुसरा मुझ से आगे उतर पड़ता है। यसु ने उसे कहा की
९ उठ अपना ब्रीछौना उठा और चला जा। और तुरंत वुह
चंगा हो गया और अपना ब्रीछौना उठाके चल नीकला और
१० वुह ब्रीस्राम का दीन था। इस लीये यहूदीयों ने उस चंगे
कीये गये मनुष्य को कहा की यह ब्रीस्राम है ब्रीछौना ले
११ जाना तुझे उचीत नहीं। उसने उन्हें उतर दीया की जीसने
मुझे चंगा कीया उसी ने मुझे कहा की अपना ब्रीछौना उठाके
१२ चला जा। तब उन्हों ने उसे पुछा की वुह कौन मनुष्य है
१३ जीसने तुझे कहा की अपना ब्रीछौना उठा के चला जा। अब
उसने जो चंगा हुआ था न जाना की वुह कौन था कयोंकी
उस सथान में एक भीड़ थी और यसु वहां से हट गया था।
१४ इसके पीछें यसु ने उसे मंदीर में पाया और उसे कहा की देष्य

तु यंगा कीया गया फरेन पाप न कनता न हो की तु अधीक
१५ वीपत में पड़े। उस मनुष्य ने जाके यहुदीयों से कहा की
१६ जीसने मुझे यंगा कीया सो यसु है। इस लीये यहुदीयां ने
यसु को सताया औान घात कनने को उसके पीछे पड़े कयोंकी
१७ उसने वीसनाम में यह कीया था। पनंतु यसुने उनहें उतन
दीया की मेना पीता अव लों कानज कनता है औान मैं कनता
१८ हुं। इस लीये यहुदीयां ने उसे घात कनने को अधीक याहा
कयोंकी उसने केवल वीसनाम को उलंघन न कीया पनंतु इसन
१९ को अपना पीता कहके आप को इसन के तुल कीया। तव
यसु ने उतन देके उनहें कहा की मैं तुमहें सत सत कहता हुं
की जो कुछ वुह पीता को कनते देख्यता है पुतन उसे छोड़ आप
से आप कुछ नहीं कन सकता है कयोंकी जो कुछ वुह कनता
२० है सोइ पुतन भी कनता है। इस लीये की पीता पुतन को
पीआन कनता है औान सव जो आप कनता है उसे देख्याता
है औान वुह उसको इनसे वड़े कानज दीख्यावेगा जीसतें तुम
२१ आसयनज मानो। कयोंकी जैसा पीता मीनतकों को उठाता
है औान जीलाता है वैसे ही पुतन भी जोनहें याहेगा जीलाता
२२ है। कयोंकी पीता कीसी मनुष्य का वीयान नहीं कनता
२३ पनंतु उसने सव वीयान पुतन को सौंप दीया है। जीसतें जैसा
सव पीता का आदन कनते हैं वैसा पुतन का भी आदन कनें
जो पुतन का आदन नहीं कनता सो पीता का जीसने उसे भेजा
२४ है आदन नहीं कनता। मैं तुमहें सत सत कहता हुं की जो
मेना वयन सुनता है औान जीसने मुझे भेजा है उस पन
वीसवास लाता है सो अनंत जीवन नख्यता है औान दोख्य में
२५ न पड़ेगा पनंतु मीनतु से छुट के जीवन को पहुंया है। मैं
तुमहें सत सत कहता हुं की समय आता है औान अव है की
मीनतक इसन के पुतन का सवद सुनेंगे औान सुन सुनके जीयेंगे।
२६ कयोंकी जैसा पीता आप में जीवन नख्यता है वैसा उसने पुतन

२७ को दीया है की आप में जीवन रक्खे। और उसने न्याय करने की सामर्थ भी दी है क्योंकी वुह मनुष्य का पुत्र है।
२८ इस से आश्चर्य मत मानो क्योंकी वुह समय आता है जीस
२९ में सब जो समाधीन में हैं उसका सब्द सुनेंगे। और निकल आवेंगे जीनहोंने भलाइ की है जीवन के लीये जी उठेंगे
३० और जीनहोंने बुराइ की है दंड के लीये जी उठेंगे। आप से आप मैं कुछ नहीं कर सकता जैसा मैं सुनता हुं तैसा बीचार करता हुं और मेरी आगया ठीक है क्योंकी मैं अपनी इछा
३१ नहीं ढुंढता परंतु पीता की इछा जीसने मुझे भेजा है। जो
३२ मैं अपने पर साक्षी देउं तो मेरी साक्षी ठीक नहीं। दुसरा है जो मुझ पर साक्षी देता है और मैं जानता हुं की जो साक्षी
३३ वुह मेरे लीये देता है सो सत है। तुम ने यहीया पास भेजा
३४ और उसने सचाइ पर साक्षी दी। परंतु मैं मनुष्य की साक्षी नहीं चाहता पर तुमहारी मुकती के लीये मैं ने ये बातें कहीं।
३५ वुह जलता और चमकता उजीयाला था और थोड़े दीन लों
३६ तुम उसके उंजीयाले में मगन होने चाहते थे। परंतु यहीया की से मैं एक बड़ी साक्षी रखता हुं क्योंकी जो कारज पीता ने मुझे पुरा करने को दीया है सोइ कारज जो मैं करता हुं मेरे
३७ लीये साक्षी देते हैं की पीता ने मुझे भेजा है। और पीता जीसने मुझे भेजा है उसने मेरे लीये आप साक्षी दी है तुम ने कभी उस का सब्द न सुना और न उस का सरुप देखा।
३८ और उस का बचन तुम में नहीं है इस लीये की जीसे उसने
३९ भेजा तुम उसका बीसवास नहीं करते। लीखे हुए में ढुंढो क्योंकी तुम समुझते हो की उनमें तुमहारे लीये अनंत जीवन
४० है और वेही मेरे लीये साक्षी देते हैं। और जीवन पाने के
४१ लीये तुम मुझ पास नहीं आने चाहते हो। मैं मनुष्यों से
४२ महीमा नहीं चाहता। परंतु मैं तुमहें जानता हुं की इसर
४३ का प्रेम तुम में नहीं है। मैं अपने पीता के नाम से आया हुं

और तुम मुझे गनहन नहीं करते जो दुसरा अपनेही नाम से
४४ आवे तो उसे गनहन करोगे। जो आपुस में एक दुसरेकी
परतीसठा गनहन करते हो और उस परतीसठा को जो केवल
इसर से है नहीं ढुंढ़ते तुम कय़ोंकर ब्रीसवास ला सकते?।
४५ मत समझो की मैं पीता के आगे तुम्हें दोष्प देउंगा एक मुसा
जीस पर तुम भरोसा रष्पते हो तुमहारा दोष्प दायक है।
४६ कय़ोंकी जो तुम लोग मुसा पर ब्रीसवास कीये होते तो तुम मुझ
पर भी ब्रीसवास करते इस लीये की उसने मेरे ब्रीष्पय में
४७ लीष्पा। परंतु जो तुम लोग उसके लीष्पे हुऐ पर ब्रीसवास न
करो तो मेरे ब्रचन पर कैसे ब्रीसवास करोगे।

६ छठवां परब्र।

परभु का पांच सहसर को संतुसट करना १—१४ परभु का जल पर चलना १५—२१ उसके लीये मंडली का पार जाना २२—२५ परभु का उनहें दपटना २६—२९ जीवन का भोजन आप को ठहराना ३०—५९ बहुत से लोग उस से उदास होके फीर जाते हैं ६०—६६ पतरस का ब्रीसवास और यहुदा का उसे पकड़वाने की भवीसब्रानी ६७—७१।

१ इन ब्रातों के पीछे य़सु तीब्रीनीय़ास के जलील के समुदर
२ पार गय़ा। और एक ब्रड़ी मंडली उसके पीछे हो ली कय़ोंकी
उनहों ने उसके आसचरजों को देष्पा जो उसने रोगीय़ों पर
३ कीय़ा था। फेर य़सु एक पहाड़ पर जाके अपने सीष्पों के
संग ब्रैठा और य़हुदीय़ों का पार जाना परब्र समीप हुआ।
४ य़सु ने आष्पें उपर करके देष्पा की ब्रड़ी मंडली मुझ पास आती
५ है। तब्र उसने फीलपुस को कहा की इनके ष्पाने के लीये
६ हम कहां से रोटी मोल लें। (उसने परष्पने के लीये य़ह

कहा था कयोंकी जो वुह कीया याहता था से आप जानता
७ था)। फीलवुस ने उतन दीया को उन में से हन ऐक को
टुकड़ा टुकड़ा दीया जाय तो दो सौ सुकी की नोटी उनके
८ लीये व्रस न होंगी। उसके सीष्पों में से ऐक समउन पतनस
९ के भाइ अंदनयास ने उसे कहा। की यहां ऐक छोकना है
जीस पास जव की पांय नोटी श्रौन दो मछलीयां हैं पनंतु
१० वे इतनों में कया हैं। यसु ने कहा की लोगों को वैठाश्रो अव
उस सथान में वुहुत घास थी सो गीनती में पांय सहसन के
११ लग भग वैठ गये। श्रौन यसु ने नोटीयों को लीया श्रौन
घन मान के सीष्पों को वांट दीया श्रौन सीष्पों ने वैठवैयों
१२ को दीया श्रौन मछलीयों से भी जीतना वे याहते थे। जव
वे तीनीपत हुऐ उसने अपने सीष्पों से कहा की वये हुऐ युन
१३ यान को वटोनो जीसतें कुछ ष्पो न जाय। सो उनहों ने
वटोना श्रौन जव की पांय नोटीयों के युन यान में से जो
उन जेवनहानीयों से वय नहे थे वानह टोकनीयां भनीं।
१४ तव उन मनुष्पों ने यसु का यह श्रासयनज कनम देष्पके
कहा की सय मुय यह वही भवीसदवकता है जो जगत में
१५ आने को था। जव यसु ने जाना की वे उसे आके वनवस
नाजा वनाने याहते हैं तो आप अकेला पहाड़ को फीन
१६ गया। श्रौन जव सांझ हुइ उसके सीष्प समुदन को गये।
१७ श्रौन नाव पन यढ़के समुदन के पान कपननाहुम को यले
उस समय अंघीयाना हो यला था श्रौन यसु उनके पास न
१८ आया था। श्रौन वड़ी आंधी के मानें समुदन लहनाने लगा।
१९ जव वे पयीस तीस नल के लग भग ष्पे युके तो उनहों ने यसु
को समुदन पन यलते श्रौन नाव पास आते देष्पा श्रौन डन
२०।२१ गये। तव यसु ने उनहें कहा की मैं हूं मत डनो। फेन
उनहों ने आनंद से उसे नाव पन ले लीया श्रौन तुनंत जीधन
२१ वे जाते थे तीधन नाव जा पहुंयी। दुसने दीन जव समुदन

बान के लोगें ने देष्या की उस नाव के। छोड़ जीस पन उसके
सीष्य गये थे कोइ नाव न थी श्रीन की यूसु अपने सेष्यों के
संग उस नाव पन न गया था पनंतु केवल उसके सीष्य गये थे।
२३ (तीस पन भी श्रीन नावें तीब्रीनयास से उस सयान के पास
जहां उनहों ने पनभु के धंन मानने के पीछे नोटी प्याइ थी
२४ श्राइं)। अब लोगें ने देष्या की यूसु अथवा उसके सीष्य वहां
नहीं हैं तो वे भी नाव पन यढ़के यूसु के। ढुंढ़ते कपननाऊम
२५ में श्राये। श्रीन उनहों ने उसे पान पाके कहा की गुनु जी
२६ श्राप यहां कब श्राये?। यूसु ने उनहें उतन देके कहा की
मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की श्रासयनज देष्पने के कानन
तुम लोग मुझे नहीं ढुंढ़ते हो पनंतु इस लीये की तुम लोग
२७ नोटीयें का प्याके तीनीपत ऊए। नासमान भोजन के लीये
पनीसनम मत कनो पनंतु उस भोजन के लीये जो श्रनंत जीवन
लों ठहनाता है जीसे मनुष्य का पुतन तुमहें देगा कयोंकी
२८ इसन पीता ने उस पन छाप कीया है। तब उनहें ने उसे
कहा की हम कया कनें जीसतें इसन के कानजकानी होवें।
२९ यूसु ने उतन देके उनहें कहा की इसन का कानज यह है की
३० जीसे उसने भेजा है उस पन ब्रीसवास लाश्रो। तब उनहों ने
उसे कहा पनेन तु कैान सा श्रासयनज दीष्पाता है जो हम
देष्प के तुझ पन ब्रीसवास लावें? तु कैान सा कानज कनता
३१ है?। हमाने पीतनों ने बन में मंन प्याया जैसा लीष्पा है
३२ की उसने उनहें सनग से नोटी प्याने के। दी। यूसु ने उनहें
कहा की मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की मुसा ने तुमहें सनग
से वुह नोटी नहीं दी पनंतु मेना पीता तुमहें सनग से सयी
३३ नोटी देता है। कयोंकी इसन की नोटी वुह है जो सनग से
३४ उतनती श्रीन जगत के। जीवन देती है। उनहों ने उसे कहा
३५ की हे पनभु हमें नीत नीत यह नोटी दीजये। यूसु ने उनहें
कहा की जीवन की नोटी मैं ऊं जो मेने पास श्राता है सो कभी

त्रुष्णा न होगा और जो मेरा व्रीसवास रप्पता है कभी पय्रासा
३६ न होगा। परंतु मैं ने तुमहें कहा की तुम लोग मुझे देप्पके
३७ भी व्रीसवास नहीं लाते। सव्र जो पीता ने मुझे दीय़ा है मुझ
पास आवेगा और जो मेरे पास आता है मैं उसे कोसी भांत
३८ से नीकाल न देउंगा। कय़ोंकी मैं सरग से इस लीय़े नहीं
उतरता की अपनीही इछा पालुं परंतु उसकी इछा जीसने
३९ मुझे भेजा है। और जीस पीता ने मुझे भेजा है वुह य़ह
चाहता है की सव्र में से जो उसने मुझे दीय़ा है मैं कुछ न
४० प्पोउं परंत उसे पीछले दीन में फेर उठाउं। और जीसने
मुझे भेजा है उसकी इछा य़ह है की हर एक जो पुतर को
देप्पता है और उस पर व्रीसवास लाता है अनंत जीवन पावे
४१ और मैं उसे अंत के दीन में उठाउंगा। तव्र य़हुदी उसपर
कुड़कुड़ाए इस कारन की उसने कहा जो रोटी सरग से उतरी
४२ सो मैं हुं। और उनहों ने कहा की कय़ा य़ह य़सु य़ुसफ
का पुतर नहीं है जीसके माता पीता को हम जानते हैं? फेर
४३ वुह कैसे कहता है की मैं सरग से उतरता हुं?। तव्र य़सु
४४ ने उतर देके उनहें कहा की आपुस में मत कुड़कुड़ाओ। जव्र
लों जीस पीता ने मुझे भेजा है मनुष्प को न प्पैंचे कोइ मुझ
पास आ नहीं सकता और मैं उसे अंत के दीन में उठाउंगा।
४५ भवीस व्रानी में लीप्पा है की वे सव्र इसर से उपदेस पावेंगे
इस लीय़े हर एक मनुष्प जीसने पीता से सुना और सीप्पा है
४६ मेरे पास आता है। य़ह नहीं की कीसी मनुष्प ने पीता को
देप्पा है केवल वुह जो इसर से है उसने पीता को देप्पा है।
४७ मैं तुमहें सत सत कहता हुं की जो मुझ पर व्रीसवास लाता
४८ है सो अनंत जीवन रप्पता है। जीवन की रोटी मैं हुं।
४९ तुमहारे पीतरों ने व्रन में मन प्पाय़ा और मर गय़े।
५० सरग से उतरती रोटी वुह है जीसे मनुष्प प्पाके न मरे।
५१ जो जीवती रोटी सरग से उतरी सो मैं हुं जो कोइ इस रोटी

से प्याय सो सदा जीवता नहेगा श्रीन वुह नोटी जो मैं देउंगा
सो मेना सनीन है जीसे मैं जगत के जीवन के लीये देउंगा।
५२ तव यहूदी श्रापुस में वीवाद कनने लगे की यह मनुष्य अपना
५३ सनीन हमें प्याने को कैसे दे सकता है। यसु ने उनहें कहा
की मैं तुमहें सत सत कहता हूं की जो तुम लोग मनुष्य के पुतन
का सनीन न प्याश्रो श्रीन उसका लोहू न पीश्रो तो तुम में
५४ जीवन नहीं है। जो मेना सनीन प्याता है श्रीन मेना लोहू
पीता है सो अनंत जीवन नप्यता है श्रीन मैं उसे श्रंत के दीन
५५ उठाउंगा। कयोंकी मेना सनीन ठीक भोजन है श्रीन मेना लोहू
५६ ठीक पान है। जो मेना सनीन प्याता है श्रीन मेना लोहू पीता
५७ है सो मुझ में नहता है श्रीन मैं उस में। जैसा की जीवत पीता
ने मुझे भेजा है श्रीन मैं पीता से जीता हूं वैसा जो मुझे प्याता
५८ है सो मुझ से जीयेगा। यह है वुह नोटी जो स्वनग से उतनी
जैसा तुमहाने पीतनों ने मंन प्याया श्रीन मन गये वैसा नहीं,
५९ जो इस नोटी से प्याता है सो सदा जीता नहेगा। उसने कपननाहूम में उपदेस कनते हुए कीसी मंडली में ये वातें कहीं।
६० तव उसके सीप्यों में से वहुतों ने सुनके कहा की यह कठीन
६१ वचन है उसे कैान सुन सकता?। यसु ने श्राप में जानके
की मेने सीप्य श्रापुस में मुझ से कुड़कुड़ाते हैं उसने उनहें कहा
६२ की कया यह तुमहें उदास कनती है?। पन जो तुम लोग
मनुष्य के पुतन को उपन जाते देप्याेगे जहां वुह श्रागे था तो
६३ कया होगा?। श्रातमा जीलाता है सनीन लाभ नहीं कनता
जो वातें मैं तुमहें कहता हूं सो श्रातमा श्रीन जीवन हैं।
६४ पनंतु तुम में कीतने हैं जो वीसवास नहीं लाते कयोंकी यसु
श्रानंभ से जानता था की वे कैान हैं जो वीसवास न कनते थे
६५ श्रीन कैान उसे पकड़ावेगा। उसने कहा इस लीये मैं ने
तुमहें कहा की जव लों कीसी मनुष्य को मेने पीता से दीया जाय
कोइ मुझ पास नहीं श्रा सकता।

६६ तभी से उसके सीप्यों में से व्रऊतेने उलटे फीन गये ग्रैान
६७ फेन उसके संग न गये । तव्र यसु ने उन व्रानह को कहा की
६८ कया तुम भी यले जाग्रोगे ? । समउन पतनस ने उसे उतन
दीया की हे पनभु हम कीस पास जायें ग्रनंत जीवन के व्रयन
६९ तो ग्राप पास हैं ? । ग्रैान हम नीसयय जानते हैं की ग्राप
७० जीवते इसन के पुतन मसीह हैं । यसु ने उनहें कहा की
कया मैं ने तुम व्रानह को नहीं युना तथापी तुम में ग्रेक भुत
७१ है । उसने समउन के व्रटे यऊदा ग्रसकनयुती के व्रीप्पय में
कहा कयोंकी व्रानह में से वुह ग्रेक था जो उसे पकड़वाया
याहता था ।

७ सातवां पनव्र ।

ग्रपने कुटुमव्रों के साथ पनभु का पनव्र में न जाना
१—९ ग्रेकांत में जाना १०—१३ ग्रैान पनव्र के मध
मंदीन में पनभु का उपदेस कनना १४—३६ ग्रैान
पापीयों को धनमातमा पाने के लीये नेउता देना
३७—३९ यऊदीयों का उस से व्रीव्राद कनना
४०—४४ उसके व्रीप्पय में फनीसीयों का व्रीव्राद
४५—५२ ।

१ इन व्रातों के पीछे यसु जलील में फीना कीया कयोंकी
उस ने न याहा की यऊदीयः में नहे कयोंकी यऊदी उसके
२ घात में लगे थे । ग्रव्र यऊदीयों के तंव्रुग्रों का पनव्र नीकट
३ ऊग्रा । इस लीये उसके भाइयों ने उसे कहा की यहां से
यऊदीय में जा जीसतें जो कानज तु कनता है सो तेने सीप्प
४ भी देप्पें । कयोंकी जो कोइ ग्राप को पनगट कनने याहता
है सो छीपके कुछ नहीं कनता सो यदी तु ये कानज कनता
५ है तो ग्राप को जगत पन पनगट कन । कयोंकी उसके भाइ
६ भी उस पन व्रीसवास न लाये । तव्र यसु ने उनहें कहा की

मेना समय अभी नहीं आया पनंतु तुमहाना समय सदा
७ घना है। जगत तुमहों से वैन नहीं कन सकता पनंतु मुह से
वैन कनता है कयोंकी मैं उस पन साष्पी देता हुं की उसके
८ कानज वुने हैं। तुम लाेग इस पनव में जाओ मैं अभी इस
पनव में न जाउंगा कयोंकी मेना समय अभी पुना नहीं हुआ।
९।१० वुह ये वातें कहके जलील में नहा। पनंतु जव उसके
भाइ गये वुह भी पनव में पनगट से नहीं पनंतु गुपत से गया।
११ तव यहुदी पनव में उसे ढुंढने औान कहने लगे की वुह कहां
१२ है?। औान लाेग उसके वीष्पय में वहुत वडवडाने लगे
कयोंकी कीतने कहते थे की वुह उतम मनुष्प है औान कीतने
१३ कहते थे की नहीं पनंतु वुह लाेगों के छल देता है। तीसपन
भी यहुदीयों के उनके माने कोइ मनुष्प उसके वीष्पय में
प्पोल के नहीं कहता था।
१४ औान पनव के मध में यसु ने मंदीन में जाके उपदेस कीया।
१५ तव यहुदी आसयनज से वोले की इस मनुष्प के वीना सीष्पे
१६ वीदीया कहां से है। यसु ने उनहें उतन देके कहा की मेना
१७ उपदेस मेना नहीं पनंतु उसका जीसने मुहे भेजा है। यदी
कोइ उसकी इछा पन यले ते इस उपदेस के जानेगा की
१८ इसन से है अथवा मैं आप से कहता हुं। जाे अपनी आेान से
कहता है साे अपनी वडाइ ढुंढता है पनंतु जाे अपने पनेनक
की वडाइ ढुंढता है साे सया है औान उसमें कुछ अधनम नहीं
१९ है। कया मुसा ने तुमहें वैवसथा नहीं दी औान कोइ
तुम में से वैवसथा के पालन नहीं कनता तुम लाेग मेने घात
२० में कयों लगे हाे?। लाेगों ने उतन देके कहा की तुह में
२१ भुत है कौन तेने घात में लगा है। यसु ने पनतउतन में
उनहें कहा की मैं ने एेक कानज कीया है औान तुम लाेग
२२ आसयनज मानते हाे। (मुसा ने तुम में ष्पतनः ठहनाया
२३ है यदपी वुह मुसा से नहीं पनंतु पीतनों से)। औान औीसनें

मुसा की ब्यैवस्था भंग न होय तुम लोग ब्यीस्नाम में मनुष्य
का ख़तनः करते यदी ब्यीस्नाम में मनुष्य का ख़तनः कीया
जाय तो तुम लोग इस लीये मुझ पर रीसीयाते हो की ब्यीस्नाम
२४ में मैं ने एक मनुष्य को नीरघार चंगा कीया। पाखीक ब्यीयार
२५ मत करो परंतु ख़रा ब्यीयार करो। तब कीतने यरोसलीमयों
ने कहा की कया यह वुह नहीं जीसे वे घात करने को ढुंढ़ते
२६ हैं ?। परंतु देखो वुह तो हीयाव से ब्योलता है और वे उसे
कुछ नहीं कहते कया प्ररधानों ने नीस्यय जान लीया है की
२७ ठीक यही मसीह है। परंतु यह जहां से है हम जानते हैं
पर जब मसीह आवेगा कोइ न जानेगा की वुह कहां से है।
२८ तब यसु ने मंदीर में उपदेस करते हुए यूं पुकारा की तुम
लोग मुझे पहीयानते और जानते हो की मैं कहां से हुं और
मैं आप से नहीं आया परंतु जीसने मुझे भेजा है सो सत है
२९ उसे तुम लोग नहीं जानते हो। परंतु मैं उसे जानता हुं
कयोंकी मैं उसकी ओर से हुं और उसने मुझे भेजा है।
३० तब उनहों ने उसे पकड़ने को याहा पर कीसी मनुष्य ने उसपर
हाथ न डाले कयोंकी उस का समय अब्लों न पहुंया था।
३१ और लोगों में से ब्यहुतेरे उस पर ब्यीस्वास लाये और ब्योले
की जब मसीह आवेगा तो जो यह करता है कया वुह इस से
३२ अधीक आसयरज करम करेगा। फरीसीयों ने सुना की
लोग उसके ब्यीख्यय में ऐसा ब्यड़ब्यड़ाते हैं तब उनहों ने और
३३ प्ररधान याजकों ने पयादों को भेजा की उसे पकड़ लें। तब
यसु ने उनहें कहा की अब थोड़ी ब्येर लों मैं तुमहारे संग
३४ हुं और जीसने मुझे भेजा है उस पास जाता हुं। तुम लोग
मुझे ढुंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं हुं तुम आ नहीं
३५ सकते। यहुदीयों ने आपुस में कहा की वुह कीधर जायगा
जो हम उसे न पावेंगे ? कया वुह ब्यीथरे हुए युनानीयों में
३६ जायगा और युनानीयों को उपदेस करेगा ?। यह कया

व़ात कहता है की तुम लोग मुझे ढुंढ़ोगे और न पाओगे और
३७ जहां मैं ज़ं तहां तुम लोग आ नहीं सकते। परब़ के पीछले
और ब़ड़े दीन में यसु प्पड़ा ज़आ और यह कहके पुकारा
३८ की जो पीय़ासा हो सो मुझ पास आवे और पीय़े। जैसा लीप्पा
ज़आ कहता है जो मुझ पर व़ीसवास रप्पता है उसके पेट से
३९ अमीरत जल की नदीय़ां ब़हेंगी। (उसने आतमा के व़ीसय़
में य़ह कही जो उसके व़ीसवासी पाने पर थे कय़ोंकी परमातमा
अब़ लों नहीं दीय़ा गय़ा इस कारन की इसा अब़ लों प्रैसनय़
४० मान न ज़आ था)। तब़ उन लोगों में से ब़ज़तेरों ने य़ह सुन
४१ के कहा की नीसचय़ य़ह वह भवीसदब़कता है। औरों ने
कहा की य़ही मसीह है परंतु कीतने ब़ोले की कय़ा मसीह
४२ जलील से नीकलेगा?। कय़ा लीप्पा ज़आ नहीं कहता है
की मसीह दाउद के ब़ंस से और ब़ैतलहम की ब़सती से आवेगा
४३ जहां दाउद था?। सो उसके व़ीप्पय़ में लोगों में व़ीभाग
४४ ज़आ। और कीतनों ने उसे पकड़ने को याहा परंतु कीसी
४५ ने उस पर हाथ न डाले। तब़ पीय़ादे परधान य़ाजकों और
फरीसीय़ों के पास फीर गय़े तब़ वे उनहें ब़ोले की तुम लोग
४६ उसे कय़ों न लाय़े। पीय़ादों ने कहा की इस जन के समान
४७ कीसी ने नहीं कहा। तब़ फरीसीय़ों ने उनहें उतर दीय़ा
४८ की कय़ा तुम लोग भी भरमाय़े गय़े?। कय़ा कोइ परधान
४९ अथवा फरीसीय़ों में से उस पर व़ीसवास लाय़ा?। परंतु
५० य़े लोग जो ब़ैवसथा को नहीं जानते सो सरापीत हैं। नीकुदी-
मुस ने, जो रात को य़सु पास आय़ा था और एक उनमें से
५१ था, उनहें कहा। की ब़ीन सुने और जाने की मनुप्प ने
कय़ा कीय़ा है कय़ा हमारी ब़ैवसथा कीसी को दोप्पी ठहराती
५२ है?। उनहों ने उतर देके उसे कहा की कय़ा तु भी जलील का
है? ढुंढ़ और देप्प कय़ोंकी जलील में से कोइ भवीसदब़कता
५३ नहीं नीकलता। फेर हर एक जन अपने अपने घर गय़ा।

८ आठवां पत्र।

मसीह के लीये अध्यापक और फरीसी का जाल फैलाना और उनका लजीत होना १—११ वीश्वासीयों से मसीह का वीनती करना १२—२० उनके नसट होने का संदेस देना २१—२७ अपना और उनका ठीक भेद वताना २८—५० उसके वीश्वासी का अनंत जीवन पाना और आप का अनादी काल से होना ५१—५९।

१।२ तव यसु जलपाइ के पहाड़ को गया। और वीहान को तड़के मंदीर में फेर आया और सारे लोग उस पास आये ३ और उसने वैठ के उनहें उपदेस कीया। तव वीभीचार में पकड़ी गइ ऐक इसतीरी को, अध्यापक और फरीसी उस ४ पास लाये और उसे मध में खड़ी करके। उसे वोले की हे ५ गुरु यह इसतीरी वीभीचार करतेही पकड़ी गइ। अव मुसा ने तो वैवसथा में हमें आगया की, की ऐसाही पथरवाह की ६ जाय परंतु आप कया कहते हैं?। उनहों ने उसे परखने के लीये यह कहा जीसतें वे उस पर दोख का कारन पावें परंतु यसु नीचे झुक के अंगुली से भुम पर लीखने लगा। ७ सो जव वे उसे पुछते गये उसने सीधे होकर उनहें कहा की ८ जो तुम में नीसपाप हो सो पहले उसे पथर मारे। और वह ९ फेर झुक के भुम पर लीखने लगा। और उनहों ने सुना वे मनहीं मन दोखी होके वीरध से लेके पीछले लों ऐक ऐक करके चले गये और यसु अकेला रहगया और वह इसतीरी १० मध में खड़ी रही। जव यसु ने उठ के इसतीरी को छोड़ कीसी को न देखा तो उसने उसे कहा की हे इसतीरी तेरे दोख दायक कहां हैं? कया कीसी ने तुझे दोखी न ठहराया?। ११ उसने कहा की हे परभु कीसी ने नहीं यसु ने उसे कहा की

मैं भी तुहे दोप्पी नहीं ठहनाता जा चैान फेन पाप मत कन।
१२ ग्रसु ने फेन उनहें कहा की मैं जगत का उंजीग्राला ऊं जो मेने पीछे ग्राता है सो ग्रंघीग्राने में न यलेगा पनंतु जीवन का
१३ उंजीग्राला पावेगा। इस लीग्रे फनीसीग्रों ने उसे कहा की
१४ तु ग्रपने लीग्रे साप्पी देता है तेनी साप्पी ठीक नहीं। ग्रसु ने उतन देके कहा की ग्रदपी मैं ग्रपने लीग्रे साप्पी देता ऊं मेनी साप्पी ठीक है कग्रोंकी मैं जानता ऊं की मैं कहां से ग्राग्रा चैान कीघन जाता ऊं पनंतु तुम लोग नहीं जानते की
१५ मैं कहां से ग्राग्रा चैान कीघन जाता ऊं। तुम सनीनीक
ब्रीयान कनते हो मैं कीसी मनुप्प पन ब्रीयान नहीं कनता।
१६ तथापी ग्रदी मैं ब्रीयान कनुं तो मेना ब्रीयान ठीक है कग्रोंकी मैं ग्रकेला नहीं ऊं पनंतु मैं चैान पीता जीसने मुहे भेजा।
१७ तुनहानी ब्रैवसथा में भी लीप्पा है की दो मनुप्प की साप्पी
१८ ठीक है। ग्रेक तो मैं ऊं जो ग्रपने लीग्रे साप्पी देता ऊं चैान ग्रेक पीता जीसने मुहे भेजा है मेने लीग्रे साप्पी देता है?।
१९ तब्र उनहों ने उसे कहा की तेना पीता कहां है? ग्रसु ने उतन दीग्रा की तुम लोग न मुहे न मेने पीता को जानते हो जो मुहे
२० जानते होते तो मेने पीता को भी जानते। ग्रसु ने मंदीन में उपदेस कनते ऊग्रे भंडान में ग्रे ब्रातें कहीं चैान कीसी ने उस पन हाथ न डाले कग्रोंकी उसका समग्र ग्रब्र लों नहीं ग्राग्रा
२१ था। तब्र ग्रसु ने फेन उनहें कहा की मैं तो जाता ऊं चैान तुम लोग मुहे ढूंढ़ोगे चैान ग्रपने पापों में मनोगे जीघन मैं
२२ जाता ऊं तुम लोग ग्रा नहीं सकते। तब्र ग्रऊदीग्रों ने कहा की कग्रा वुह ग्रपने को मान डालेगा? इस कानन की वुह कहता है की जीघन मैं जाता ऊं तुम लोग नहीं ग्रा सकते।
२३ फेन उसने उनहें कहा की तुम लोग तले से हो मैं उपन से
२४ ऊं तुम लोग इस लोक के हो मैं इस लोक का नहीं। इस लीग्रे मैं ने तुमहें कहा की तुम लोग ग्रपने पापों में मनोगे

कह्योकी ग्रदी व्रीसवास न लाओ की मैं ऊं तो तुम लोग अपने
२५ पापों में मनोगे। तव्र उन्हों ने उसे कहा की तु कौन है?
ग्रसु ने उनहें कहा की वही जो मैं ने तुमहें आनंभ से कहा।
२६ तुमहान व्रीप्पय्र में कहने को श्रौन व्रीयान कनने को मुह
पास व्रऊतसी व्रातें हैं पनंतु जीसने मुहे भेजा है वुह सत है
श्रौन मैं जगत को वे व्रातें कहता ऊं जो मैं ने उस से सुनी
२७ हैं। उनहों ने न समहा की उसने उनहें पीता के व्रीप्पय्र में
२८ कहा। फेन ग्रसु ने उनहें कहा की जव्र तुम लोग मनुप्प के
पुतन को उपन उठाओगे तव्र जानोगे की मैं ऊं श्रौन मैं श्राप
से कुछ नहीं कनता पनंतु जैसा मेने पीता ने मुहे सीप्पाय्रा
२९ है मैं ग्रे व्रातें कहता ऊं। श्रौन जीसने मुहे भेजा है सो मेने
संग है पीता ने मुहे अकेला न छोड़ा कह्योकी मैं सदा वही
३० कानज कनता ऊं जो उसे सुहाते हैं। जव्र वुह ग्रे व्रातें कहता
३१ था व्रऊतेने उस पन व्रीसवास लाय्रे। तव्र ग्रसु ने उन ग्रऊदीय्रों
से जो उस पन व्रीसवास लाय्रे थे कहा की जो तुम लोग मेने
३२ व्रयचन पन व्रने नहोगे तो मेने सीप्प ठीक होओगे। श्रौन
३३ सत को जानोगे श्रौन सत तुमहें नीनव्रंध कनेगा। उनहों ने
उसे उतन दीय्रा की हम इव्रनाहीम के व्रंस हैं श्रौन कधी
कीसी के व्रंधन में न थे तु कैसे कहता है की तुम नीनव्रंध
३४ कीय्रे जाओगे। ग्रसु ने उनहें उतन दीय्रा की मैं तुमहें सत
सत कहता ऊं की जो पाप कनता है सो पाप का दास है।
३५ श्रौन दास सदा घन में नहीं नहता पनंतु पुतन सदा नहता है।
३६ इस लीय्रे ग्रदी पुतन तुमहें नीनव्रंध कने तो ठीक नीनव्रंध
३७ होओगे। मैं जानता ऊं की तुम लोग इव्रनाहीम के संतान हो
पनंतु मुहे मान डालने याहते हो कह्योकी मेना व्रयचन तुम में
३८ नहीं है। जो मैं ने अपने पीता के पास देप्पा है सोइ कहता
ऊं श्रौन जो तुम लोगों ने अपने पीता के पास देप्पा है सो
३९ कनते हो। उनहों ने उतन देके उसे कहा की हमानां पीता

इब्रनाहीम है यसु ने उनहें कहा की यदी तुम लोग इब्रना-
४० हीम के संतान होते तो इब्रनाहीम के कानज कनते। पनंतु
अब तुम लोग मुझे मान डालने याहते हो औन मैं ऐक मनुष्य
हुं जीसने तुमहें वही सत कहा जो मैं ने इसन से सुना है
४१ इब्रनाहीम ने यह नहीं कीया। तुम लोग अपने पीता के
कानज कनते हो तब उनहों ने उसे कहा की हम लोग ब्रीभीयान
४२ से उतपंन नहीं हुऐ हमाना पीता ऐक इसन है। यसु ने उनहें
कहा की जो इसन तुमहाना पीता होता तो तुम लोग मुझे
पीयान कनते कयोंकी मैं इसन से नीकल आया हुं मैं आप
४३ से नहीं आया पनंतु उसने मुझे भेजा। तुम लोग मेनी बोली
कयों नहीं समझते ? इस कानन मेने बयन नहीं सुन सकते ?।
४४ तुम लोग अपने पीता भुत से हो औन अपने पीता की आंछा
कीया याहते हो वुह तो आनंभ से घातक था औन सत में
सथीन न नहा कयोंकी उस में सयाइ नहीं जब वुह झुठ कहता
है तो अपनेही का बोलता है कयोंकी वुह झुठा है औन
४५ झुठ का पीता है। पन इस कानन की मैं सत कहता हुं तुम
४६ लोग मेनी पनतीत नहीं कनते। तुम में कौन मुझ पन पाप
ठहनाता है ? औन जो मैं सत कहुं तो मेनी पनतीत कयों
४७ नहीं कनते ?। जो इसन से है सो इसन की बातें सुनता
है तुम लोग इस लीये नहीं सुनते की इसन के नहीं हो।
४८ तब यहुदीयों ने उतन दीया औन उसे कहा की हम अछा
४९ नहीं कहते की तु सामनी है औन तुझ में भुत है ?। यसु
ने उतन दीया की मुझ में भुत नहीं पनंतु मैं अपने पीता का
आदन कनता हुं औन तुम लोग मेना अनादन कनते हो।
५० औन मैं अपना महीमा नहीं ढुंढता ऐक है जो ढुंढता है औन
५१ बीयान कनता है। मैं तुमहें सत सत कहता हुं की यदी
मनुष्य मेना बयन पालन कने तो मीनतु को कभी न देखेगा।
५२ यहुदीयों ने उसे कहा की अब हम जानते हैं की तुझ में

भुत है, इव्रनाहीम भौान भवीसदव्रकता मनगये भौान तु
कहता है की यदी कोइ मेना वयन पालन कने तो कभी
५२ मोनतु का सवाद न यीष्येगा। कया तु हमाने पीता इव्रना-
हीम से, जो मनगया व्रड़ा है भौान भवीसदव्रकता मनगये
५३ तु आप को कया ठहनाता है?। यसु ने उतन दीया की
जो मैं अपना आदन कनु तो मेना आदन कुछ नहीं मेना
पीता मेना आदन कनता है जीसे तुम लोग कहते हो की
५५ हमाना इसन है। तुमहों ने उसे नहीं जाना पनंतु मैं उसे
जानता ऊं भौान यदी मैं कऊं की मैं उसे नहीं जानता तो
तुमहाने समान मैं झुठा होउंगा पनंतु मैं उसे जानता ऊं भौान
५६ उसका व्रयन पालन कनता ऊं। तुमहाना पीता इव्रनाहीम
मेना समय देष्पने को तनसता था सो वुह देष्प के आनंदीत
५७ ऊआ। यऊदीयों ने उसे कहा की तेना व्रय अव्र लों पयास
५८ व्रनस का नहीं भौान तु ने इव्रनाहीम को देष्पा?। यसु ने
उनहें कहा की मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की इव्रनाहीम
५९ के होने से आगे मैं ऊं। तव्र उनहों ने उसे मानने को
पथन उठाये पनंतु यसु ने आप को छीपा लीया भौान मंदीन
से व्राहन नीकल के उनके मघ में हो के यला गया।

९ नवां पनव्र।

पनभु का एक अंधे को आंष्प देना १—७ इसकी
यनया लोगों में होना ८—१२ उदास होके परनीसी
का उसे मंडली से व्राहन कनना १३—३४ मसीह
का उसे मीलना भौान परनोसीयों को उनकी दसा
व्रताना ३५—४१।

१ भौान जाते जाते उसने एक मनुष्प को देष्पा जो जनम का
२ अंधा था। भौान उसके सीष्पों ने यह कहके उसे पुछा की

"हे गुरु कीसने पाप कीया इस मनुष्य ने अथवा इसके माता
३ पीता ने की यह अंधा उतपंन हुआ?"। यसु ने उतर दीया,
न तो इस मनुष्य ने पाप कीया न इसके माता पीता ने परंतु
४ जीसतें इसन के कारज उसपन परगट होवें। जीसने मुझे
भेजा है, अवस है की जव लों दीन है मैं उसके कारज करुं
५ रात आती है जव कोइ कारज नहीं कर सकता। जव लों
६ मैं जगत में हुं जगत का उंजीयाला हुं। यु कहके उसने
भुमी पर थुका और थुक से मीटी गुंधी और उस मीटी से उस
७ अंधे की आंष्पों पर लगाइ। और उसे कहा की जा सीलोआम
में अरथात भेजे हुये कुंड में सनान कर वुह गया और सनान
कीया और देष्पते हुये आया।

८ तव जीनहों ने उसे आगे अंधा देष्पा था वे और परोसी वोले
९ की यह वुह नहीं जो वैठा भीष्प मांगता था?। कीतने वोले
की यह वही है औरों ने कहा की यह वैसाही है उसने कहा
१० की मैं वही हुं। फेर उनहों ने उसे कहा की तेरी आंष्पें
११ कयोंकर ष्पुल गइं?। उसने उतर देके कहा की ऐक मनुष्य
ने जो यसु कहावता है मीटी गुंधी और मेरी आंष्पों पर
लगाइ और मुझे कहा की सीलोआम के कुंड में जा और
सनान कर और मैं ने जाके सनान कीया और दीनीसट पाइ।
१२ उनहों ने उसे कहा की वुह कहां है? उसने कहा की मैं
नहीं जानता।

१३ जो आगे अंधा था लोग उसे फरीसीयों के पास लाये।
१४ और जव यसु ने मीटी गुंध के उसकी आंष्पें ष्पोलीं तव
१५ वीसराम था। फरीसीयों ने भी फेर उसे पुछा की तु ने
कयोंकर अपनी दीनीसट पाइ उसने उनहें कहा की उसने
मेरी आंष्पों पर गीली मीटी लगाइ और मैं ने नहाया और
१६ देष्पता हुं। तव फरीसीयों में से कीतनों ने कहा की यह
मनुष्य इसर की ओर से नहीं कयोंकी वुह वीसराम को नहीं

मानता थीनों ने कहा की पापी मनुष्य ऐसे आश्चर्य्य कैसे
१७ कर सकता है? और उनमें व्रीभाग ऊआ। उनहों ने उस
अंधे मनुष्य को फेर कहा तुझे दीनीसट देने के कीछे तु उसके
व्रीष्यय में कया कहता है? उसने कहा की वुह भवीसदवकता
१८ है। परंतु जव वो युऊदीयों ने उस मनुष्य के माता पीता
को, जीसने दीनीसट पाई थी न वुलाया उनहों ने परतीत
१९ न की वुह अंधा था। और उनहें पुछा की कया यह तुमहारा
व्रेटा है जीसे तुम कहते हो की अंधा उतपंन ऊआ था फेर
२० वुह अव कयोंकर देष्पता है?। उसके माता पीता ने उनहें
उतर देके कहा की हम जानते हैं की यह हमारा व्रेटा है
२१ और की वुह अंधा उतपंन ऊआ था। परंतु वुह अव कीस
कारन से देष्पता है हम नहीं जानते अथवा उसकी आंष्पें
कीसने ष्पोलीं हम नहीं जानते वुह सयाना है उसे पुछो वुह
२२ अपनी आप कहेगा। उसके माता पीता ने युऊदीयों के डरके
मारे कहा कयोंकी युऊदीयों ने ठहरा रष्पा था की यदी
कोई मान लेवे की वुह मसीह है तो मंडली से व्राहर नीकाला
२३ जाय। इस लीये उसके माता पीता ने कहा की वुह सयाना है
२४ उसी से पुछो। तव उनहों ने उस मनुष्य को, जो अंधा था
फेर वुलाके कहा की ईसर की सतुत कर हम जानते हैं की
२५ यह मनुष्य पापी है। उसने उतर देके कहा की यदी वुह
पापी होय मैं नहीं जानता ऐक व्रात मैं जानता ऊं की मैं
२६ आगे अंधा था अव देष्पता ऊं। तव उनहों ने उसे फेर
पुछा की उसने तुझे कया कीया? उसने कीस रीत से तेरी
२७ आंष्पें ष्पोलीं?। उसने उनहें उतर दीया की मैं तो तुम से
अभी कह चुका और तुमने न सुना कीस लीये फेर सुना
२८ चाहते हो? कया तुम लोग भी उसके सीष्प होओगे?। तव
वे उसे दुरवचन कहके व्रोले की तु उसका सीष्प है हम मुसा
२९ के सीष्प हैं। हम जानते हैं की ईसर ने मुसा से व्रातता की

३० फिन हम नहीं जानते की यह कहां का है। उस मनुष्य ने उतन देके उनहें कहा की उसने मेनी आंप्पें प्पोलीं है औान तुम लोग नहीं जानते की वुह कहा से है यह आश्चयनज की वात
३१ है। हम तो जानते हैं की ईसन पापीयों की नहीं सुनता पनंतु यदी कोइ ईसन का भकत होय औान उसकी इछा पन
३२ चलता होय तो वुह उसकी सुनता है। जगत के आनंभ से कभी सुंने में न आया था की कीसी ने ऐक की आंप्पें जो
३३ अंधा उतपंन हुआ प्पोलीं हो। जो यह मनुष्य ईसन की
३४ ओान से न होता तो कुछ न कन सकता। उनहों ने उतन देके उसे कहा की तु तो सनवथा पाप में उतपंन हुआ औान
३५ तु हमें सीप्पाता है औान उनहों ने उसे वाहन कीया। यसु ने सुना की उनहों ने उसे वाहन नीकाल दीया तव उसने उसे पाके कहा की तु ईसन के पुतन पन वीसवास नप्पता
३६ है?। उसने उतन देके कहा की हे पनभु वुह कौन है
३७ जीसतें मैं उस पन वीसवास लाओं?। यसु ने उसे कहा की तु ने उसे देप्पा है औान जो तुझ से वोलता है वही है।
३८ उसने कहा की हे पनभु मैं वीसवास लाता हुं औान उसने उसे दंडवत की।

३९ तव यसु ने कहा की मैं नयाय के लीये जगत में आया हुं की जो नहीं देप्पते हैं सो देप्पें औान जो देप्पते हैं सो अंधे
४० होवें। फनीसीयों में से कीतनों ने ये वातें सुनके उसे कहा
४१ की हम भी अंधे हैं?। यसु ने उनहें कहा की जो तुम अंधे होते तो तुम में पाप न होता पनंतु तुम लोग कहते हो की हम देप्पते हैं, ईस लीये तुमहाना पाप घना है।

१० दसवां पनव।

मसीह का आप को गडनीये का दीनीसटांत देना।
१—१८ उसके वीप्पय में यहुदी का वीभाग होना

चोर अपना दूसरत वताना १९—१८ यहूदीयों
के वीच से मसीह का अनादर पाके जाना १९—४२।

१ मैं तुमहें सत सत कहता हूं की जो दुवार से भेड़साला में नहीं जाता परंतु दुसरी ओर से चढ़ जाता है सो चोर और
२ बटमार है। परंतु जो दुवार से भीतर जाता है सो भेड़ों का
३ चरवाहा है। दुवारपाल उसके लीये खोलता है और भेड़ें उसका सब्द सुनती हैं और वुह अपनीही भेड़ों को नाम ले ले
४ बुलाता है और उनहें बाहर ले जाता है। और वुह अपनी भेड़ों को बाहर ले जाके उनके आगे आगे चलता है और भेड़ें उसके पीछे पीछे जाती हैं कयोंकी वे उसका सब्द पहीचा-
५ नती हैं। और वे उपरी के पीछे नहीं जातीं परंतु उस से भाग-
६ ती हैं कयोंकी वे उपरी का सब्द नहीं पहीचानतीं। यसु ने यह दीस्टांत उनहें कहा परंतु उनहों ने उसका कहना न
७ समझा तब यसु ने फेर उनहें कहा, मैं तुमहें सत सत कहता
८ हूं की भेड़ों का दुवार मैं हूं। जीतने मुझ से आगे आये सब चोर और बटमार हैं परंतु भेड़ों ने उनकी न सुनी।
९ दुवार मैं हूं यदी कोइ मेरी ओर से भीतर जाय वुह मुकत पावेगा और बाहर भीतर आया जाया करेगा और चराइ
१० पावेगा। चोर केवल चोरी और घात और नास करने को आता है मैं आया हूं जीसतें वे जीवन पावें और उसे अधीकाइ
११ से पावें। अछा चरवाहा मैं हूं अछा चरवाहा भेड़ों के लीये
१२ अपना प्रान देता है। परंतु जो बनीहार है और चरवाहा नहीं भेड़ें जीसकी अपनी नहीं हैं सो हूंडार को आते देखता है और भेड़ों को छोड़ भागता है और हूंड़ार उनहें पकड़ता
१३ है और भेड़ों को छींन भींन करता है। बनीहार इस लीये भागता है की वुह बनीहार है और भेड़ों के लीये चींतता
१४ नहीं करता। अछा चरवाहा मैं हूं और अपनी को पहीचानता

१५ ऊं श्रीन मेनी मुहे पहीयानती हैं। जैसा पीता मुहे जानता है तैसाही मैं पीता को जानता ऊं श्रीन मैं भेड़ों के
१६ लीये श्रपना पनान देता ऊं। मेनी श्रीन भी भेड़ें हैं जो इस हुंड की नहीं श्रवेस है की मैं उनहें भी लाउं श्रीन वे मेना सवद सुनेंगी श्रीन श्रेक हुंड श्रीन श्रेक यनवाहा होगा।
१७ पीता मुहे इस लीये पीश्रान कनता है की मैं श्रपना पनान
१८ देता ऊं जीसतें मैं उसे फेन लेउं। कोइ उसे मुह से नहीं लेता पनंतु मैं श्राप से उसे देता ऊं मुह में उसे देने की सामनथ है श्रीन उसे फेन लेने की भी सामनथ है ग्रहो श्रगया मैं ने
१९ श्रपने पीता से पाइ है। तव ग्रऊदीश्रों में इन वातों के कानन
२० फेन वीभाग ऊश्रा। श्रीन वऊतों ने उन में से कहा की उस में भुत है श्रीन वौड़हा है तुम उसकी कयों सुनते हो?।
२१ श्रीनों ने कहा की जीस में भुत है उसकी ये वातें नहीं हैं कया
२२ भुत श्रंधे की श्रांषें षोल सकता है?। श्रीन ग्रनोसलीम में
२३ सथापीत पनव ऊश्रा श्रीन जाड़े का समय था। श्रीन ग्रसु
२४ मंदीन में सुलेमान के श्रेसानें में फीनता था। उस समय ग्रऊदीश्रों ने उसे श्रा घेना श्रीन कहा की तु कव लों हमाने मन को श्रघन में नषेगा ग्रदी तु मसीह है तो हमें षोल के
२५ कह। ग्रसु ने उनहें उतन दीश्रा की मैं ने तो तुमहें कहा श्रीन तुम ने वीसवास न कीश्रा जो कानज मैं श्रपने पीता
२६ के नाम से कनता ऊं सो मुह पन साषी देते हैं। पनंतु तुम लोग वीसवास नहीं लाते कयोंकी जैसा मैं ने तुमहें कहा, तुम
२७ लोग मेनी भेड़ों में से नहीं। मेनी भेड़ें मेना सवद सुनती हैं श्रीन मैं उनहें जानता ऊं श्रीन वे मेने पीछे पीछे श्राती हैं।
२८ श्रीन मैं उनहें श्रनंत जीवन देता ऊं श्रीन वे कभी नास न
२९ होंगी श्रीन कोइ उनहें मेने हाथ से छीन न सकेगा। मेना पीता जीसने उनहें मुहे दीश्रा है सव से वड़ा है श्रीन कोइ
३० उनहें मेने पीता के हाथों से छीन नहीं सकता। मैं श्रीन

३१ पीता ऐक हैं। तव्र य़ग़दीय़ों ने उसे पथनवाने के लीय़े फरेन
३२ पथन उठाऐ। य़सु ने उनहें उतन दीय़ा की मैं ने अपने पीता के अनेक अछे कानज तुमहें दीप्याय़े हैं उन में से कौन से
३३ कानज के लीय़े मुहे पथनवाते हो ?। य़ऊदीय़ों ने उसे उतन देके कहा की हम तुहे अछे कानज के लीय़े नहीं पथनवाते हैं पनंतु पाप्पंडता के लीय़े औान इस लीय़े की मनुप्प होके तु आप
३४ को इसन ठहनाता है। य़सु ने उनहें उतन दीय़ा की तुमहानी व्रैवसथा में नहीं लीप्पा है की मैं ने कहा की तुम इसन हो ?।
३५ उसने तो जीनके पास इसन का व्रयन आय़ा उनहें इसन कहा
३६ औान लीप्पा ऊआ भंग नहीं हो सकता। तुम लोग उस पन पाप्पंड लाते हो जीसे इसन ने पवीतन कनके जगत में भेजा
३७ है कय़ोंकी मैं ने कहा की मैं इसन का पुतन ऊं ?। जो मैं अपने पीता के कानज न कनुं तो मेनी पनतीत मत कनो।
३८ पनंतु जो मैं कनुं तो य़दपी मेनी पनतीत न कनो तथापी कानजों की पनतीत कनो जीसतें जानो औान पनतीत कनो की
३९ पोता मुहृ में औान मैं उस में ऊं। तव्र उनहों ने फरेन उसे
४० पकड़ने याहा पनंतु वुह उनके हाथों से व्रय नीकला। औान अनदन पान उसी सथान में जहां य़हीय़ा पहीले सनान देता
४१ था फरेन गय़ा औान वहां नहा। व्रऊतेनों ने उस पास आके कहा की य़हीय़ा ने कोइ आसयनज न दीप्पाय़ा पनंतु सव्र
४२ व्रातें जो य़हीय़ा ने उसके व्रीप्पय़ में कहीं सत हैं। औान वहां व्रऊत से उस पन व्रीसवास लाय़े।

११ गय़ानहवां पनव्र।

लाजन का नोग औान मनना १—१६ यान दीन पीछे मसीह का उसे जीलाना १७—४४ य़ऊदीय़ों के व्रन से पनमु का अलग नीकल जाना ४५—५७।

१ अव्र मनीय़म औान उसकी व्रहीन मनसा के गांव व्रैतऐना का

२ कोइ लाज़न नोगी था। (वही मनीय़म जीसने पनभु पन
सुगंध तेल लगाय़ा ओान अपने व़ालों से उसके पांव को पोंछा
३ उसी का भाइ लाज़न नोगी था)। इस लीये उसकी व़हीनों
ने उसे कहला भेजा की हे पनभु देप्पीये जीस से आप से पनीत
४ है सो नोगी है। य़सु ने सुनके कहा की य़ह मौनत का नोग
नहीं पनंतु इसन की महीमा के लीये जीसतें उस से इसन के
५ पुतन की महीमा होवे। अव़ मनसा ओान उसकी व़हीन ओान
६ लाज़न से य़सु पनीत नप्पता था। य़ह सुनके की वुह नोगी
७ है जहां था तहां य़सु दो दीन नहा। उसके पीछे अपने सीप्पों
८ से कहा की यलो हम पान य़ऊदीय़ः में जायें। सीप्पों ने उसे
कहा की हे गुनु अभी तो य़ऊदीयों ने याहा था की आप को
९ पथनवावें ओान आप वहां फेन जाते हैं?। य़सु ने उतन
दीय़ा कय़ा दीन में व़ानह घड़ी नहीं है? य़दी कोइ मनुप्प
दीन को यले तो ठोकन नहीं प्पाता कय़ोंकी वुह इस जगत
१० का उंजीय़ाला देप्पता है। पनंतु य़दी कोइ मनुप्प नात को
यले तो ठोकन प्पाता है कय़ोंकी उस में उंजीय़ाला नहीं।
११ उसने य़े व़ातें कहीं ओान फेन उसने कहा की हमाना मीतन
१२ लाज़न नींद में है पनंतु मैं उसे जगाने को जाता ऊं। तव़ उसके
सीप्पों ने कहा, हे पनभु य़दी वुह नींद में है तो यंगा हो
१३ जाय़गा। य़सु ने तो उसकी मौनत की कही पनंतु उनहों ने
१४ समझा की उसने नींद के यैन की कही। तव़ य़सु ने उनहें
१५ प्पोल के कहा की लाज़न मनगय़ा। ओान वहां न होने से मैं
तुमहाने लीये आनंद ऊं जीसतें तुम लोग व़ीसवास लाओ तीस
१६ पन भी उसके पास यलें। तव़ तुमा ने, जो डीदीमस कहावता
है अपने गुनु भाइय़ों से कहा की यलो हम भी उसके संग मनें।
१७ सो जव़ य़सु आय़ा तो देप्पा की उसे समाधी में यान दीन हो
१८ युके। अव़ वैतप्पेना य़ीनोसलीम से कोस प्पेक के टपे पन था।
१९ ओान व़ऊत से य़ऊदीं मनसा ओान मनीय़म को उनके भाइ के

२० व्रीप्यग्र में सांत देने आये थे। जब मनसा ने सुना की य्रसु आता है तो उसको भेंट को गइ परंतु मनीय्रम घर में व्रैठी
२१ रही। तब मनसा ने य्रसु को कहा, हे परभु जो आप य्रहां
२२ होते तो मेरा भाइ न मरता। परंतु मैं जानती हूं की अब
२३ भी जो कुछ आप इसर से चाहेंगे इसर आप को देगा। य्रसु
२४ ने उसे कहा की तेरा भाइ फरेर उठेगा। मनसा ने उसे कहा की मैं जानती हूं की पुनरुतथान में अंत के दीन वुह फरेर उठेगा।
२५ य्रसु ने उसे कहा की पुनरुथान ओर जीवन मैं हूं जो मुझ पर
२६ व्रीसवास रप्पता है य्रदपी वुह मरे तथापी जीयेगा। ओर जो कोइ जीता है ओर मुझ पर व्रीसवास रप्पता है कभी न मरेगा
२७ तु इसे परतीत करती है?। उसने उसे कहा की हे परभु मैं परतीत करती हूं की आप मसीह इसर के पुतर हैं जीसे जगत
२८ में आना था। य्रह कहके चली गइ ओर चुपके से अपनी व्रहीन मनीय्रम को व्रुला के व्रोली, गुरुभी आये हैं ओर तुझे
२९ व्रुलाते हैं। य्रह सुनतेही मनसा उठी ओर उस पास आइ।
३० अवलों य्रसु व्रसती में न आय्रा था परंतु उसी सथान में था जहां
३१ मनसा ने उस से भेंट कीइ थी। जब उसके सांतदाय्रक य्रहूदीय्रों ने जो उसके घर में थे देप्पा की मनीय्रम हुप से उठी ओर व्राहर गइ तो य्रह कहके उसके पीछे पीछे गये की वुह समाध पर
३२ रोने को जाती है। ओर जहां य्रसु था मनीय्रम वहां आइ ओर उसे देप्पतेही उसके चरन पर गीरके व्रोली, हे परभु
३३ जो आप य्रहां होते तो मेरा भाइ न मरता। जब य्रसु ने उसे रोते ओर य्रहूदीय्रों को भी, जो उसके संग आये थे रोते देप्पा
३४ तो मन में व्य्राकुल होके हाय्र कीय्रा। ओर कहा की तुम ने उसे कहां धरा है? उनहों ने कहा की हे परभु आके देप्पीये।
३५।३६ य्रसु रोय्रा। तब य्रहूदीय्रों ने कहा की देप्पो वुह उस से
३७ कैसी परीत रप्पता था। उन में से कीतनों ने कहा की य्रह पुरुप्प जीसने अंधे की आंप्पें प्पोलीं न कर सका की य्रह मनुष्य भी न

३८ मनता? तव यसु अपने मन में फेन आह कनता ऊआ समाघ पन
३९ आया वृह ऐक गुहा थो औन उस पन ऐक पथन घना था। यसु
ने कहा की पथन के अलग कनो उस मीनतक की वृहीन
मनसा ने उसे कहा की हे पनभु वुह तो अव वसाता है कयोंकी
४० यह यैाथा दीन है। यसु ने उसे कहा कया मैं ने तुहे नहीं
कहा, जो तु वीसवास लावे तो इसन की महीमा देप्पेगी?।
४१ तव जहां वुह मीनतक पड़ा था वहां से पथन को उनहों ने
सनकाया औन यसु ने आंप्पें उपन कनके कहा की हे पीता
४२ मैं तेनी सतुत कनता ऊं की तु ने मेनी सुनी है। औन मैं ने
जाना की तु मेनी नीत सुनता है पन लोगों के कानन जो आस
पास प्पड़े हैं मैं ने यह कहा जोसतें वे वीसवास लावें की तु ने
४३ मुहे भेजा है। औन यह कहके वड़े सवद से पुकाना "हे
४४ लाज़न वाहन नीकल"। तव जो मना था सो समाघ के
वसतन समेत हाय पांव वंघे ऊऐ वाहन नीकल आया औन
उसका मुंह अंगाछे से लपेटा था यसु ने उनहें कहा की उसे
४५ प्पोलो औन जाने देओ। तव वऊतेने यऊदी, जो मनीअम
कने आये थे, औन ये कानज, जो यसु ने कीये थे देप्पते थे,
४६ उस पन वीसवास लाये। पनंतु उन में से कीतनों ने फनीसी
पास जाके जो जो कुछ यसु ने कीया था उनहें सुनाया।
४७ तव पनघान याजकों औन फनीसीयों ने सभा ऐकठी की
औन कहा की हम कया कनते हैं? कयोंकी यह मनुप्प वऊत
४८ आसयनज दीप्पावता है। जो हम उसे नहने देवें तो सव
उस पन वीसवास लावेंगे औन नुमी आवेंगे औन हमाने देस
४९ औन कुल को भी लेलेंगे। औन ऐक उन में से कायफास नाम,
जो उस वनस पनघान याजक था उनहें वोला की तुम लोग
५० कुछ नहीं जानते। औन यीनता नहीं कनते की लोगों की
संती ऐक पुनुप्प का मनना हमाने लीये भला है जीसतें साने
५१ देसी नास न होवें। उसने यह अपनी ओन से न कहा पनंतु

उस बरस प्रधान याजक होके यह भवीस कहा की यसु उस
५२ देसी के लीये मरेगा। और केवल उस देसी के लीये नहीं
परंतु जीसतें वुह ईस्वर के बालकों को जो छींन भींन थे ऐकठे
५३ करे। सो उसी दीन से उनहों ने उसे घात करने के लीये
५४ परामर्स कीया। इस लीये यसु ने यहूदीयों में प्रगट में
फीरना छोड़ दीया परंतु वहां से जाके बनके पास अफराईम
५५ नाम ऐक नगर में अपने सीष्यों के संग रहने लगा। यहूदीयों
का पार जाना पर्ब्ब नीकट हुआ और बहुतेरे पर्ब्ब के आगे
आप को पवीत्र करने को उस देस से यरोसलीम को गये।
५६ और यसु को ढुंढा और मंदीर में खड़े होके आपुस में कहने
५७ लगे की कया समझते हो? वुह पर्ब्ब में न आवेगा?।
प्रधान याजकों और फरीसीयों ने आ अगया की थी यदी
कोई जानता हो की वुह कहां है तो बता देवे जीसतें वे उसे
पकड़ लेवें।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

मरीयम का मसीह के चरन पर सुगंध लगाना
१—८ याजकों का उसके बधन करने की जुगत
करना ९—११ प्रभु का यरोसलीम में आना
और अपनी मीरतु का संदेस देना १२—३३
यहूदीयों को उपदेस करना उनका अपने मन को
कठोर करना और कीतनों का संसार के डर के मारे
उसे ग्रहन न करना ३४—४३ प्रभु का ईस्वर की
ओर से होना ४४—५०।

१ पार जाना पर्ब्ब से छः दीन आगे यसु बैतऐना में आया
जहां लाज़र रहता था जो मरा था और जीसे उसने जीलाया
२ था। वहां उनहों ने उस के लीये बीआरी बनाई और मरथा
सेवा करती थी परंतु उसके संग के जेवनहरीयों में लाज़र

३ ऐक था। तव़ मनीय़म ने आध सेन अती मोल का सुधंघ तेल लेके य़सु के यनन पन लगाय़ा और अपने व़ालों से उनहें
४ पोंछा और तेल के सुगंध से घन भन गय़ा। तव़ उसके सीष्यों में से ऐक य़ऊदा असकनय़ुती समउन का व़ेटा जो उसे
५ पकड़वाय़ा याहता था व़ोला। य़ह तेल तीन सै सुकी को
६ कय़ों न व़ेयके कंगालों को दीय़ा गय़ा?। उसने इस लीय़े नहीं कहा की कंगालों की यीनता कनता था पनंतु इस लीय़े की वुह योन था और डोंडा नष्पता था और जो कुछ उसमें
७ पड़ता था सो ले जाता था। तव़ य़सु ने कहा की उसे मत छेड़
८ उसने मेने गाडने के दीन के लीय़े य़ह नष्पा था। कय़ोंकी तुम लोग कंगालों को अपने संग नीत पाओगे पनंतु मुझे नीत
९ न पाओगे। य़ह जानके की वुह वहां है य़ऊदीय़ों की ऐक व़ड़ी मंडली आई केवल कुछ य़सु के लीय़े नहीं पनंतु जीसतें वे लाज़न को भी देष्पें जीसे उसने मीनतु से जीलाय़ा था।
१० पनंतु पनधान य़ाजकों ने पनामनस कीय़ा की लाज़न को भी
११ मान डालें। कय़ोंकी उसके कानन से व़ऊत य़ऊदी फीन गय़े
१२ और य़सु पन व़ीसवास लाय़े। दुसने दीन पनव़ में के आय़े ऊय़े व़ऊत लोग य़ह सुनके की य़सु य़नोसलीम में आता है।
१३ ष्पजून की डालीय़ां लेके उस से मीलने को नीकले और पुकाना की होसाना इसनाइल के नाजा को जो पनमेसन के नाम से
१४ आता है धंन। और य़सु ऐक तनुन गदहा पाके उस पन यढ़
१५ व़ैठा जैसा की लीष्पा है। हे सैऊन की पुतनी मत डन, देष्प
१६ तेना नाजा गदहे के व़छेने पन यढ़ा आता है। उसके सीष्यों ने आनंभ में ये व़ातें न समुझीं पनंतु जव़ य़सु ऐसनय़मान ऊआ तव़ उनहों ने समनन कीय़ा की ये व़ातें उसके व़ीष्पय़ में लीष्पी
१७ थीं और उनहों ने उस से ऐसा व़वहान कीय़ा। तव़ जो लोग वहां थे जव़ उसने लाज़न को समाध से व़ाहन वुलाय़ा और
१८ जीलाय़ा उनहों ने साष्पी दी। इस कानन भी मंडली उस से

मीलने को नीकली कयोंकी उनहों ने सना था की उसने यह
१९ आसयनज कीया था। परनीसीयों ने आपुस में कहा की तुम
लोग देप्पते हो की तुमहों से कुछ नहीं व्रन पड़ता? देप्पो
२० संसान उसके पीछे हो यला। और उन में जो पनव्र में सेवा
२१ को आये थे कीतने युनानी थे। वे जलीली व्रैतसैदा के फैलवुस
पास आये और उसकी व्रीनती की, की हे महासय हम यसु
२२ को देप्पने याहते हैं। फैलवुस ने आके अंदनयास से कहा
२३ और अंदनयास और फैलवुस ने यसु को सनाया। तव्र
यसु ने उतन देके कहा की घड़ी आ पड़ंयी है की मनुष्य का
२४ पुतन महीमा पावे। मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की जव्र लों
गेऊं का दाना भुम पन न गीने और मन न जाय तव्र लों
अकेला नहता है पनंतु जो वुह मने तो उस से व्रऊत दाने
२५ होते हैं। जो अपने पनान को पीआन कनता है सो उसे प्पोवेगा
और जो इस जगत में अपने पनान से व्रैन नप्पता है सो उसे
२६ अनंत जीवन लों नछा कनेगा। यदी कोइ मेनी सेवा कने तो मेने
पीछे यला आवे और जहां मैं ऊं तहां मेना सेवक भी होगा
यदी कोइ मेनी सेवा कने तो मेना पीता उसका आदन कनेगा।
२७ अव्र मेना पनान व्रयाकुल है और मैं कया कऊं? को हे पीता
सुझे इस घड़ी से छुड़ा? पनंतु मैं तो इसी लीये इस घड़ी लों
२८ आया ऊं। हे पीता अपने नाम की महेमा कन वहीं आकास
व्रानी ऊइ की मैं ने महीमा की है और फेन महीमा कनुंगा।
२९ तव्र आस पास के लोगों ने यह सुनके कहा की मेघ गनजा,
३० औनों ने कहा की दुत उस से व्रोला। यसु ने उतन देके कहा
३१ की यह सव्रद मेने लीये नहीं पनंतु तुमहाने लीये आया। अव्र
इस जगत का व्रीयान है अव्र इस जगत का नाजा दुन कीया
३२ जायगा। और जो मैं पीनथीवी पन से उपन उठाया जाऊं
३३ तो सव्रको अपनी ओन प्पींयुंगा। (उसने यह कहके पता
३४ दीया की आप कौस मीनतु से मनने पन था)। लोगों ने

उतन दीया की हम ने ब्रैवसथा में से सुना है की मसीह नीत नहता है परेन आप कैसे कहते हैं की मनुष्य के पुतन का उठाया जाना अवेस है? यह मनुष्य का पुतन कौम है?।
३५ यसु ने उनहें कहा की थोड़ी देन उंजीयाला तुमहाने पास है जव लों उंजीयाला तुमहाने पास है तव लों यलो न हो की अंघीयाना तुम पन आ पड़े कयोंकी जो अंघीयाने में यलता
३६ है सो नहीं जानता की कीघन जाता है। जव लों उंजीयाला तुमहाने पास है तव लों उंजीयाले पन व्रीसवास कनो जीसतें उंजीयाले के पुतन होओ यसु ने ये व्रातें कहीं औन जाके
३७ अपने को उनसे छीपाया। पनंतु यद्‌पी उसने उनके आगे इतने आसयनज कीये तथापी वे उस पन व्रीसवास न लाये।
३८ जीसतें असाया भवीसद्‌व्रकता का कहा ऊआ व्रयन पुना होवे की हे पनभु हमाने समायान पन कीसने पनतीत की है?
३९ औन पनमेसन की भुजा कीस पन पनगट ऊई है?। इस लीये वे व्रीसवास न ला सके कयोंकी असाया ने फेन कहा।
४० की उसने उनकी आंप्यें अंघी कीयां औन उनका मन कठोन, न होवे की आंप्यों से देप्यें औन मन से समझें औन फीन जायें
४१ औन मैं उनहें यंगा कनुं। जव असाया ने उसका पेसनज
४२ देप्या तव उसने उसके व्रीप्यै में ये व्रातें कहीं। तौसपन भी पनघानों में भी व्रऊतेने उस पन व्रीसवास लाये पनंतु फनीसीयों के उनके माने उनहों ने मान न लीया न हो की मंडली से
४३ नीकाले जायें। कयोंकी वे लोगों के आदन इसन के आदन
४४ से अघीक याहते थे। यसु ने पुकान के कहा की जो मुह पन व्रीसवास लाता है सो मुह पन नहीं पनंतु मेने पनेनक पन
४५ व्रीसवास लाता है। औन जो मुहे देप्यता है सो मेने पनेनक
४६ को देप्यता है। मैं जगत में उंजीयाला हो आया ऊं जीसतें
४७ जो कोइ मुह पन व्रीसवास लावे सो अंघीयाने में न नहे। औन यदी कोइ मनप्य मेना व्रयन सुने औन व्रीसवास न कने तो

मैं उसपन दोप्य नहीं ठहनाता कय़ोंकी मैं जगत के दोप्पी ठहनाने के नहीं आय़ा पनंतु इस लीय़े की जगत का उघान ४८ कनुं। जो कोइ मेनो नीनदा कनता है औान मेने व्रयन को नहीं मानता है प्रेक दोप्प दाय़क उसका है जो व्रयन मैं ने ४९ कहा है सोइ अंत के दीन में उसे दोप्पी ठहनावेगा। कय़ोंकी मैं ने ते अपनी ओान से नहीं कहा है पनंतु जीस पीता ने मुहे भेजा है उसने मुहें अगय़ा की है की मुहे कय़ा कहा औान कय़ा ५० व्रोला याहीय़े। औान मैं जानता ऊं की उसकी अगय़ा अनंत जीवन है इस लीय़े जो कुछ मैं कहता ऊं सो पीता के कहने के समान कहता ऊं।

१३ तेनहवां पनव्र।

पनभु का सीप्पों का पांव घोना १—१७ अपने पकड़ाउ का संदेस देना १८—३० अपने कसट का औान आपस के पनेम का उपदेस कनना ३१—३५ पतनस का उस से मुकनने का संदेस देना ३६—३८।

१ अव्र पान जाना पनव्र से आगे य़सु ने देप्पा की मेना समय़ आ पऊंया है कीं इस जगत को छोड़ के पीता पास जाउं सो जैसा वुह अपनेही को जो जगत में थे आगे पीआन कनता था २ वैसही उसने अंत लों उस पीआन को नीव्राह दीय़ा। औान जव्र व्रीआनी कनय़ुके ते (सैतान ने समउन के व्रेटे य़ऊदा असकन ३ य़ुती के मन में डाला की उसे पकड़वावे)। पीता ने सव्र कुछ मेने व्रस में कीय़ा औान मैं इसन से आय़ा औान इसन के पास ४ जाता ऊं य़सु ने य़ह व्रात जानके। व्रीआनी से उठा औान अपने व्रसतन को उतान नप्पा औान प्रेक अंगोछा लेके अपनी ५ कट व्रांघी। तव्र वुह प्रेक पातन में जल डाल के सीप्पों के

६ पांव धोने लगा औन कट के उस अंगोछे से पोछने लगा। तब्र
वुह समउन पतनस पास आया जीसने उसे कहा की हे पनभु
७ कया आप मेना पांव धोते हैं?। यसु ने उतन देके उसे कहा
जो मैं कनता ऊं सो तु अब्र नहीं जानता पनंतु आगे को जानेगा।
८ पतनस ने उसे कहा की आप मेना पांव कधी न धोइयेगा यसु
ने उसे उतन दीया की जो मैं तुझे न धोउं तो मेने संग तेना
९ भाग न होगा। समउन पतनस ने उसे कहा की हे पनभु
१० केवल मेने पांव नहीं पनंतु हाथ औन सीन भी। यसु ने उसे
कहा की जो धोया गया है पांव धोने से अधीक उसे आवसक
नहीं पनंतु नीनधान पवीतन है औन तुम लोग पवीतन हो
११ पनंतु सब्र नहीं। कयोंकी वुह जानता था की कौन उसे
पकड़वावेगा इसी लीये उसने कहा की तुम सब्र पवीतन नही हो।
१२ सो जब्र वुह उनके पांव धोचुका औन अपने ब्रसतन को लीया
फेन ब्रैठ के उनहें कहा की तुम लोग जानते हो मैं ने तुम से
१३ कया कीया?। तुम लोग मुझे गुनु औन पनभु कहते हो औन
१४ ठीक कहते हो कयोंकी मैं ऊं। सो पनभु औन गुनु होके यदी
मैं ने तुमहाने पांव धोये हैं तो तुमहें भी एक दुसने का पांव
१५ धोने को उचीत है। कयोंकी मैं ने तुमहें एक दीनीसटांत
दीया है की जैसा मैं ने तुम से कीया है तैसा तुम भी कनो।
१६ मैं तुमहों से सत सत कहता ऊं की सेवक अपने सामी से ब्रड़ा
१७ नहीं औन पनेनीत अपने पनेनक से ब्रड़ा नहीं है। यदी ये
ब्रातें जानते हो औन उनहें पालन कनते हो तो धंन हो।
१८ मैं तुम सभों के ब्रीष्पय में नहीं कहता, मैं जानता ऊं जीनहें
मैं ने चुना है पनंतु जीसतें लीष्पा ऊआ पुना होवे की जो मेने
१९ संग भोजन कनता है उसने मुझ पन लात उठाया है। अब्र मैं
तुमहें आगे से कहताऊं की जब्र यह पुना हो जाय तुम पनतीत
२० कनो की मैं ऊं। मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की जो मेने
पनेनीत को गनहन कनता है सो मुझे गनहन कनता है औन

जो मुहे गनहन कनता है सो मेने पनेनक को गनहन कनता है
२१ यूं कहके यसु मन में व्याकुल ऊआ ग्रोन साष्पी देके वोला,
मैं तुमहें सत सत कहता ऊं की तुम में से प्रेक मुहे पकड़वावेगा।
२२ तव्र सीष्पों ने प्रेक दुसने को देष्प देष्प सदेह कीया की उसने
२३ कीसके व्रीष्पय में कहा। अव्र उसके सीष्पों में से प्रेक जो यसु
२४ की छातो पन ग्रोठंगा था जो यसु का पीनीय था। इस लीये
समउन पतनस ने उसे पुछने को सैन कीया की उसने कीसके
२५ व्रीष्पय में कहा। तो यसु की छातो पन ग्रोठंगते ऊप्रे उसने
२६ उसे कहा की हे पनभु वुह कैान है ?। यसु ने उतन दीया की
जीसे मैं कैान युभोन के देता ऊं सोइ है ग्रोन उसने कैान
२७ युभोन के समउन के वेटे यऊदा असकनयुती को दीया। ग्रोन
कैान के पीछे सैतान उस में पैठा तव्र यसु ने उसे कहा की जो
२८ कुछ तु कनता है हट से कन। ग्रोन भोजन पन कीसी ने न
२९ जाना की उसने क्या समह के उसे यह कहा। क्योंकी कीत
नों ने समहा की डोंड़ा नष्पने के कानन यसु ने यऊदा से कहा
की जो हमें पनव्र के लीये ग्रावसक है सो मोल ले ग्रथवा की
३० तु कंगालों को कुछ दे। तव्र कैान पाके वुह तुनंत व्राहन गया
३१ ग्रोन नात थी। जव्र वुह यला गया यसु ने कहा की अव्र
मनुष्य के पतन ने महीमा पाइ ग्रोन उस से इसन ने महीमा
३२ पाइ। यदी इसन उस से महीमा पावे तो इसन उसे भी अपने
३३ से महीमा देगा ग्रोन उसे सीघन महीमा देगा। हे व्रालको
अव्र थोड़े लों मैं तमहाने संग ऊं तुम लोग मुहे ढुंढोगे ग्रोन
जैसा मैं ने यऊदीयों से कहा की जीचन मैं जाता ऊं तुम ग्रा
३४ नहीं सकते वैसा अव्र मैं तुमहें भी कहता ऊं। मैं तुमहें प्रेक
नइ अगया देता ऊं की तुम प्रेक दुसने से पनीत कनो जैसा मैं
ने तुम से पनीत की वैसा तुम भी प्रेक दुसने से पनीत कनो।
३५ यदी तुम लोग ग्रापुस में पनीत नष्पो तो इस से सव्र जानेंगे की
तुम मेने सीष्प हो

३६ समउन पतनस ने उसे कहा हे पनभु आप कीधन जाते हैं? युसु ने उसे उतन दीया जीधन मैं जाता ऊं तू अव मेने पीछे
३७ आ नहीं सकता पनंतु आगे को मेने पीछे आवेगा। पतनस ने उसे कहा की हे पनभु मैं आप के पीछे अव कयों नहीं आ
३८ सकता? मैं आप के लीये अपना पनान देउंगा। युसु ने उसे उतन दीया, कया तु मेने लीये अपना पनान देगा? मैं तुह से सय सय कहता ऊं की ककुट न वोलेगा जव लों तु तीन वान मुह से न सुकने।

१४ चैादहवां पनव।

पनभु का अपने सीप्पों को सांत का उपदेस कनना १—१४ घनमातमा देने की व्याया देना १५—२६ पनभु का सीप्पों को आगे से यीताना २७—३१।

१ तुमहाना मन वयाकुल न होने पावे तुम लोग इसन पन
२ वीसवास नप्पते हो मुह पन भी वीसवास नप्पो। मेने पीता के घन में वऊत से नीवास हैं नहीं तो मैं तुमहें कहता की मैं
३ जाता ऊं जीसतें तुमहाने लीये सथान ठीक कनुं। चैान जो मैं जाके तुनहाने लीये सथान ठीक कनुं तो फेन आउंगा चैान तुमहें अपने पास लेउंगा जीसतें जहां मैं ऊं तहां तुम
४ भी होचो। चैान जहां मैं जाता ऊं तुम लोग जानते हो
५ चैान मानग भी जानते हो। सुमा ने उसे कहा की हे पनभु हम नहीं जानते की आप कीधन जाते हैं चैान हम मानग
६ को कयोंकन जानें?। युसु ने उसे कहा, मानग चैान सत चैान जीवन मैं ऊं मुहे छोड़ के पीता पास कोइ नहीं आ सकता।
७ जो तुम लोग मुहे जानते तो मेने पीता को भी जानते चैान
८ अव से उसे जानते हो चैान उसे देप्पा है। फीलवुस ने उसे कहा हे पनभु पीता को हमें दोप्पाइये जीसतें हमाना वाच

९ होते। यसु ने उसे कहा हे फरैलबुस कया इतने दीन से मैं तुमहारे संग हुं और तु ने अबलों मुझे न जाना? जीसने मुझे देष्पा है उसने पीता को देष्पा है और तु कयोंकर कहता है
१० की पीता को हमें दीष्पा?। कया तुझे परतीत नहीं की मैं पीता में और पीता मुझ में? ये बातें जो मैं तुमहें कहता हुं मैं आप से नहीं कहता परंतु पीता जो मुझ में रहता है वही
११ ये कारज करता है। परतीत करो की मैं पीता में और पीता मुझ में अथवा कारजों के लीये मेरी परतीत करो।
१२ मैं तुमहें सत सत कहता हुं की जो मुझ पर बीसवास रष्पता है जो कारज मैं करता हुं सो भी करेगा और उन से बड़ा करेगा
१३ कयोंकी मैं अपने पीता पास जाता हुं। और जो कुछ तुम लोग मेरे नाम से मांगोगे मैं वही करुंगा जीसतें पीता पुतर
१४ में महीमा पावे। यदी मेरे नाम से कुछ मांगोगे तो मैं करुंगा।
१५ जो मुझ में परीत रष्पते हो तो मेरी अगया को पालन करो।
१६ और मैं अपने पीता से परारथना करुंगा और वुह तुमहें
१७ दुसरा सांत दायक देगा जो सदा तुमहारे संग रहेगा। अरथात सच्चाइ का आतमा जीसे जगत गरहन नहीं कर सकता कयोंकी उसे नहीं देष्पता और न उसे जानता है परंतु तुम लोग उसे जानते हो कयोंकी वुह तुमहारे संग रहता है और तुमहों
१८ में होवेगा। मैं तुमहें अनाथ न छोडुंगा मैं तुमहारे पास
१९ आउंगा। अब थोड़े लों जगत मुझे फेर न देष्पेगा परंतु तुम लोग मुझे देष्पते हो और इस लीये की मैं जीता हुं तुम
२० भी जीओगे। उस दीन तुम लोग जानोगे की मैं पीता में और
२१ तुम लोग मुझ में और मैं तुमहों में हुं। जो मेरी अगया रष्पता है और उनहें पालन करता है सोइ मुझ से परीत रष्पता है और जो मुझ से परीत रष्पता है सो मेरे पीता का पीरय होगा और मैं उस से परीत रष्पुंगा और आप
२२ को उस पर परगट करुंगा। असकरयुती को छोड़ दुसरे

यहूदा ने उसे कहा की हे परभु यह कैसा है की आप अपने
२३ को हम पर परगट करेंगे और जगत पर नहीं?। यसु ने
उतर देके उसे कहा यदी कोइ मुझ से परीत रष्पेगा तो मेरे
वयन को पालेगा और मेरा पीता उस से परीत रष्पेगा और
२४ हम उस पास आवेंगे और उसके संग वास करेंगे। जो मुझ से
परीत नहीं रष्पता सो मेरे वयन को पालन नहीं करता
और जो वयन तुम लोग सुनते हो सो मेरा नहीं परंतु पीता
२५ का जीसने मुझे भेजा। तुमहारे संग होते हुए मैं ने ये वातें
२६ तुम से कहीं। परंतु सांत दायक धरमातमा जीसे पीता मेरे
नाम से भेजेगा वुह तुमहें सव वातें सीष्पावेगा और सव वात
२७ जो कुछ मैं ने तमहें कहीं हैं तुमहें समरन करावेगा। कुसल
तुमहें छोड़ जाता हुं अपना कुसल मैं तुमहें देता हुं जगत के
देने के समान मैं तुमहें नहीं देता हुं अपने मन को वयाकुल
२८ मत होने देओ और डरने मत देओ। तुम ने सुना है की
मैं ने तुम से कैसा कहा है की मैं जाता हुं और तुमहारे पास
फेर आउंगा जो तुम लोग मुझ से परीत रष्पते तो इस कारन
आनंदीत होते की मैं ने कहा की पीता पास जाता हुं कयोंकी
२९ मेरा पीता मुझ से वड़ा है। और अव मैं ने तुमहें उसके होने
३० से आगे कहा जीसतें जव वुह हो यके तुम परतीत करो। आगे
को मैं तुम से वहुत न वोलुंगा कीयोंकी इस संसार का राजा
आता है और मुझ में उसका कुछ नहीं परंतु जीसतें संसार जाने
की मैं पीता से परीत रष्पता हुं जैसा पीता ने मुझे आगया दी
वैसाही मैं करता हुं उठो यहां से यलें।

१५ पंदरहवां परव।

मसीह का आप को दाष्प की लता से द्रीसटांत
देना १—७ परेम की अगया करना ८—१७ धरम
आतमा के देने की वाया करना १८—२७।

१ दाष्प की सची लता मैं ऊं श्रोन मेना पीता कीसान है।
२ हन प्रेक साष्पा जो मुह में नहीं फरलती वुह उसे अलग कनता है श्रोन हन प्रेक जो फरलती है वुह उसे सुच कनता है जीसतें
३ वुह श्रधीक फरले। अव्र व्रयन के कानन जो मैं ने तुमहें कहा
४ है तुम पवीतन हो। मुह में व्रने नहो श्रोन मैं तुम में जैसे साष्पा श्राप से श्राप नहीं फरल सकती जव्र लें वुह लता में लगी न हो वैसा तव्र लों मुह में व्रने न नहो तुम भी नहीं फरल सकते।
५ दाष्प की लता मैं ऊं तुम लोग साष्पा हो जो मुह में व्रना नहता है श्रोन मैं उस में सो व्रऊत फरलता है कयोंकी मुह से अलग
६ तुम कुछ नहीं कन सकते। यदी मनुष्प मुह में व्रना न नहे तो वुह हुनाइ ऊइ साष्पा की नाइं फेंका गया है श्रोन लोग
७ उनहें समेट के श्राग में फोंकते हैं श्रोन वे जलती हैं। यदी तुम लोग मुह में व्रने नहो श्रोन मेने व्रयन तुम में तो जो
८ याहोगे सो मांगोगे श्रोन तुमहाने लीये हो जायगा। तुमहाने व्रऊत फरल लाने में मेने पीता की महीमा है श्रोन तुम मेने सीष्प
९ होश्रोगे। जैसी पीता ने मुह से पनीत की है वैसी मैं ने तुमहों
१० से पनीत की है तुम मेनी पनीत में व्रने नहो। यदी तुम मेनी अगया को पालन कनोगे तो मेनी पनीत में व्रने नहोगे जैसा मैं ने श्रपने पीता की अगया को पालन कीया है श्रोन उसकी
११ पनीत में व्रना ऊं। मैं ने ये व्रातें तुमहें कहीं जीसतें मेना श्रानंद तुम में घना नहे श्रोन तुमहाना श्रानंद भन जाय।
१२ मेनी यही अगया है की जैसी पनीत मैं ने तुम से की है तुम
१३ प्रेक दुसने से पनीत कनो। इस से व्रडी पनीत कोइ नहीं नष्पता
१४ की श्रपना पनान श्रपने मीतनों के लीये देवे। जो तुम लोग
१५ मेनी अगयाश्रों को मानो तो मेने मीतन हो। अव्र से मैं तुमहें सेवक न कऊंगा कयोंकी सामी जो कनता है सो सेवक नहीं जानता पनंतु मैं ने तुमहें मीतन कहा है कयोंकी सव्र व्रातें जो मैं ने श्रपने पीता से सुनी हैं सो मैं ने तुम पन पनगट

१६ की हैं। तुम ने मुझे नहीं युना है परंतु मैं ने तुमहें युना है और जाके फल लाने को तुमहें ठहनाया है और तुमहाना फल वना नहे की जो कछ तुम लोग मेने नाम से पीता से मांगो
१७ वुह तुमहें देवे। ऐक दुसने से पनीत नष्पने की मैं तुमहें श्रगया
१८ कनता हूं। यदी संसान तुमहों से वैन कने तो जानते हो
१९ की तुमहों से आगे उसने मुझ से वैन कीया। जो तुम लोग संसान के होते तो संसान अपने ही से पनीत नष्पता पनंतु मैं ने जो तुमहें संसान से युन लीया है और तुम संसान के नहीं हो
२० इस लीये संसान तुम से वैन नष्पता है। मैने तुमहें जो कहा उसे येत कनो की सेवक अपने सामी से वड़ा नहीं जो उनहों ने मुझे सताया तो तुमहें भी सतावेंगे जो उनहों ने मेना वयन
२१ पाला है तो तुमहाना भी पालेंगे। पनंतु मेने नाम के लीये वे तुमहों से यह वेवहान कनेंगे कयोंकी वे मेने पनेनक को नहीं
२२ जानते। जो मैं आके उनसे न कहता तो उनका पाप न होता
२३ पनंतु अव उनके पाप का आड़ नहीं। जो मुझ से वैन नष्पता
२४ है सो मेने पीता से भी वैन नष्पता है। जो मैं उन में ऐसे कानज न कीये होता जो कीसी मनुष्य ने नहीं कीये तो उनका पाप न होता पन अव तो उनहों ने उनहें देष्पा तथापी मुझ से
२५ और मेने पीता से वैन भी कीया। पनंतु जीसतें उनकी वेवसथा का वयन पुना होवे उनहों ने मुझ से अकानथ वैन कीया।
२६ पनंतु जव वुह सांत दायक आवे जीसे मैं तुमहाने पास पीता की ओन से भेजुंगा अनथात सयाई का आतमा जो पीता से
२७ नीकलता है तो मुझ पन साष्पी देगा। और तुम लोग भी साष्पी देओगे कयोंकी आनंभ से मेने संग नहते हो।

१६ सोलहवां पनव।

अपने सीष्पों के सताये जाने का संदेस देना १—६ धनमआतमा देने का वयन कहना ७—१५ अपने

परेन आने का संदेस देना १८—२१ अपने नाम से पनानथना कनने की अगय़ा देना २१—३१।

१।१ मैं ने ये व्रातें तुमहें कहीं जौसतें ठोकन न प्याओ। वे तुमहें मंडलीय़ों से व्राहन कनेंगे हां वुह समय़ आता है की जो कोइ तुमहें घात कनेगा से समहेगा की मैं इसन की सेवा ३ कनता ऊं। औान इस कानन वे तुम से य़ह व्रेवहान कनेंगे ४ की उनहों ने न पीता को न मुहे जाना है। औान मैं ने ये व्रातें तुमहें कहां की जव्र समय़ आवे ते। येत कनो की मैं ने उनको तुमहें कहीं मैं ने आनंभ में ये व्रातें तुमहें न कहीं इस ५ कानन की मैं तुमहाने संग था। पन अव्र मैं अपने पनेनक पास जाता ऊं औान तुम में कोइ मुहे से नहीं पुछता की तु ६ कहां जाता है। पनंतु मेनी इन व्रातों के कहने के कानन तुम सोक से भन गये।

७ तौसपन भी मैं तुमहें सत कहता ऊं की मेना जाना तुमहानो भलाइ के लीये है कय़ोंकी जो मैं न जाउं तो सांत दाय़क तुमहाने पास न आवेगा पनंतु जो मैं जाउं तो उसे तुम पास ८ भेजंगा। औान जव्र वुह आवेगा तो संसान को पाप का औान ९ धनम का औान व्रीयान का व्रीप्पय़ जतावेगा। पाप का इस १० लीये की वे मुहे पन व्रीसवास न लाये। धनम का इस लीये की मैं अपने पीता पास जाता ऊं औान तुम मुहे परेन न देप्पोगे। ११ व्रीयान का इस लीये की इस संसान के नाजा का व्रीयान १२ कीय़ा गय़ा है। तुमहें कहने को अव्र भी मुहे पास व्रऊतसी १३ व्रातें हैं पनंतु अव्र तुम उनहें सह नहीं सकते। पन जव्र वुह सत का आतमा आवेगा वुह तुमहें सानी सचाइ में पऊंचावेगा कय़ोंकी वुह अपनी न कहेगा पनंतु जो कुछ वुह सुनेगा सो कहेगा १४ औान वुह तुमहें आगे का भेद व्रतावेगा। वुह मेनी महीमा कनेगा कय़ोंकी वुह मेनी में से पावेगा औान तुमहें व्रतावेगा

१५ पीता का सब्र कुछ मेना है इस लीये मैं ने कहा की वुह मेनी
१६ में से लेके तुमहें दीप्प वेगा। तनीक श्रीन तम मुहे न देप्पोगे
श्रीन फेन तनीक तुम मुहे देप्पोगे कयोंकी मैं पीता पास जाता
१७ ऊं। तब उसके कीतने सीप्पों ने आपुस में कहा की यह कया
है जो वुह हमें कहता है की तनीक श्रीन तुम मुहे न देप्पोगे
श्रीन फेन तनीक श्रीन तुम मुहे देप्पोगे इस कानन की मैं
१८ पीता पास जाता ऊं?। यह कया है जो वुह कहता है की
१९ तनीक श्रीन हम नहीं जानते वुह कया कहता है?। यह
जानके की उनहों ने उस से पुछने याहा यसु ने उनहें कहा की
मैं ने जो कहा की तनीक श्रीन तुम मुहे न देप्पोगे श्रीन फेन
तनीक श्रीन तम मुहे देप्पोगे उसे आपुस में पुछ पाछ कनते
२० हो। मै तुमहें सत सत कहता ऊं की तुम नोश्रोगे श्रीन वीलाप
कनोगे पनंतु संसान आनंद कनेगा तुम लोग दुप्पी होश्रोगे
२१ पनंतु तुमहाना दुप्प सुप्प हो जायगा। जब इसतीनी पीडीत
होती है अपना समय पऊंयने के कानन वुह दुप्पी होती है
पनंतु जोंहीं वुह पुतन जनी तो श्रेक पुनुप्प के उतपन होने के
२२ आनंद के माने उस पीड़ा को येत नहीं कनती। सो अब तुम
लोग दुप्पी हो पनंतु मैं तुमहें फेन देप्पुंगा श्रीन तुमहाना मन
आनंदीत होगा श्रीन तुमहाना आनंद तुम से कोइ न लेगा।
२३ तुम उस दीन मुहे से कुछ न पुछोगे मैं तुम से सय सय कहता
ऊं की मेने नाम से जो कुछ तुम पीता से मांगोगे वुह तुमहें
२४ देगा। अब लों तुम ने मेने नाम से कुछ नहीं मांगा, मांगो
२५ श्रीन तुम पाश्रोगे जीसतें तुमहाना आनंद पुना होवे। मैं ने
ये बातें तुमहें दीनीसटांतों में कहीं पनंतु समय आता है अब
मैं तुमहें दीनीसटांतों में फेन न कऊंगा पन मैं पीता के बीप्पय
२६ म तुमहें प्पोल के देप्पाउंगा। उस दीन तुम मेने नाम से मां-
गोगे श्रीन मैं तुमहें नहीं कहता की मैं तुमहाने कानन पीता से
२७ पनानथना कनुंगा। कयोंकी पीता आपही इस कानन तुमहें

पीत्रान कनता है की तुम ने मुझे पीत्रान कीया है श्रीन व्रीस-
२८ वास लाये हे। की मैं ईसन से नीकला ऊं। मैं पीता से नीकल
के जगत में आया ऊं फेन जगत को छोड़ के पीता पास जाता
२९ ऊं। उसके सीष्यों ने उसे कहा, लो अव्र आप व्रीन दीनीसटांत
३० ष्योल के कहते हैं। अव्र हमें नीसयय है की आप सव्र कुछ
जानते हैं श्रीन अधीन नहीं की कोइ आप से पुछे इस से हमें
३१ नीसयय ऊआ की आप ईसन से नीकल आये हैं। यसु ने उनहें
३२ उतन दीया, कया तुम लोग अव पनतीत कनते हो?। देष्यो घड़ी
आती है हां अव्र पऊंयी है की तुम में से हन एक छीन भीन
होके अपना अपना मानग पकड़ेगा श्रीन मुझे अकेला छोड़ेगा
३३ तथापी मैं अकेला नहीं कयोंकी पीता मेने संग है। मैं ने ये
व्रातें तुमहें कहीं हैं जीसतें मुझ में कुसल पाओ जगत में तुम
लोग दुष्य पाओगे पनंतु नीसयींत नहो मैं ने जगत को जीता है।

१७ सतनहवां पनव्र।

मसीह का अपने लीये पनानथना कनना १—५ श्रीन
अपने सीष्यों के लीये ६—१० उनकी नछा के श्रीन
पवीतन कनने के लीये पनानथना कनना ११—२६।

१ यसु ने यह कथा समापत कनके सनग की श्रोन अपनी आंष्य
उठा के कहा, हे पीता घड़ी पऊंयी है अपने पुतन को महीमा
२ दे जीसतें तेना पुतन भी तुझे महीमा देवे। जैसा तु ने उसे
सकल पनानी पन पनाकनम दीया है की वुह उन सभों को
३ जीन्हें तु ने उसे दीया है अनंत जीवन देवे। श्रीन अनंत
जीवन यह है की तुझे अकेला सया ईसन श्रीन यसु मसीह को
४ जीसे तु ने भेजा है जानें। मैं ने पीनथीवी पन तेनी महीमा
की है जो कानज तु ने मुझे कनने को दीया है मैं उसे कन युका
५ ऊं। श्रीन अव्र हे पीता तु मुझे अपने संग उस महीमा से महीमा
दे जो जगत के होने से आगे मैं तेने पास नष्यता था।

६ जीनहें तु ने जगत में से मुझे दीया है मैं ने तेरे नाम को उन
पर परगट कीया है वे तेरे थे और तु ने उनहें मुझे दीया है और
७ उनहों ने तेरे ब्रचन को पालन कीया है। अब उनहों ने जाना
है की सब कुछ जो तु ने मुझे दीया है सो तेरी ओर से हैं।
८ कयोंकी जो ब्रातें तु ने मुझे दी हैं मैं ने उनहें दी हैं और उनहों ने
गरहन कीया और नीसचय माना है की मैं तुझ से नीकला और
९ वे ब्रीसवास लाये हैं की तु ने मुझे भेजा। मैं उनके लीये परार-
थना करता हुं मैं संसार के लीये नहीं परंतु उन के लीये जीनहें
तु ने मुझे दीया है परारथना करता हुं कयोंकी वे तेरे हैं।
१० और मेरे सब तेरे हैं और तेरे मेरे हैं और मैं ने उन से
११ महीमा पाइ है। मैं जगत में आगे न रहुंगा परंतु ये जगत
में हैं और मैं तेरे पास आता हुं हे पवीतर पीता जीनहें तु ने
मुझे दीया है अपने नाम से उनको रछा कर जीसतें वे हमारी
१२ नाइं एक होवें। जब लों मैं उन के संग जगत में था तेरे नाम
से मैं उनकी रछा करता था जीनहें तु ने मुझे दीया मैं ने
उनकी रछा की है और उन में से नास के पुतर को छोड़
१३ कोइ नसट न हुआ जीसतें लीख्या हुआ पुरा होवे। परंतु
अब मैं तेरे पास आता हुं और ये ब्रातें जगत में कहता हुं
१४ जीसतें मेरा आनंद उन में पुरा होवे। मैं ने तेरा ब्रचन
उनहें दीया है और जगत ने उनसे ब्रैर कीया है कयोंकी वे
१५ जगत के नहीं हैं जैसा मैं जगत का नहीं हुं। मैं उनहें जगत
से उठा लेने के लीये परारथना नहीं करता परंतु उनहें दुसट
१६ से ब्रचा रखने को। जैसा मैं जगत का नहीं तैसा वे जगत के
१७ नहीं। उनहें अपनी सचाइ से पवीतर कर तेरा ब्रचन
१८ सचाइ है। जैसा तु ने मुझे जगत में भेजा है तैसा मैं ने भी
१९ उनहें जगत में भेजा है। उनके लीये मैं आप को पवीतर
२० करता हुं जीसतें वे भी सचाइ से पवीतर हों। केवल उनके
लीये मैं परारथना नहीं करता परंतु उनहों के लीये भी जो

२१ उनके उपदेस से मुझ पर बीसवास लावेंगे। जीसतें वे सब ऐक होवें जैसा की हे पीता तु मुझ में और मैं तुझ में वे भी हम में ऐक होवें जीसतें संसार बीसवास लावे की तु ने मुझे भेजा है।
२२ और वुह महीमा जो तु ने मुझे दी है मैं ने उनहें दी है की
२३ जैसा हम ऐक हैं तैसा वे ऐक होवें। मैं उन में और तु मुझ में की वे ऐक में सीध होवें और जीसतें संसार जाने की तु ने मुझे भेजा है और जैसा तु ने मुझे पीआर कीया है तैसा उनहें
२४ भी पीआर कीया है। हे पीता मैं चाहता हुं की जीनहें तु ने मुझे दीया है जहां मैं हुं वे भी मेरे संग होवें जीसतें वे मेरी महीमा को, जो तु ने मुझे दी है देखें कयोंकी तु ने मुझ पर
२५ जगत की उतपती से आगे परेम कीया है। हे धारमीक पीता संसार ने तुझे नहीं जाना है परंतु मैं ने तझे जाना है और
२६ इनहों ने जाना है की तु ने मुझे भेजा है। और मैं ने तेरा नाम उन पर परगट कीया है और परगट करुंगा की जीस परेम से तु ने मुझ पर परेम कीया है वुह परेम उन में हो और मैं उन में।

१८ अठारहवां पर्व।

मसीह का पकड़वाया जाना १—१२ परधान याजक के आगे उसकी दुरदसा होनी और पतरस का उस से मुकरना १३—१७ पीलातुस के आगे उस पर दोष लगाया जाना २८—३७ यहुदीयों का बरबास बचीक और बटमार को परभु से अधीक चाहना ३८—४०।

यसु ये बातें कहके अपने सीष्यों के संग कदरुन नाले पार गया जहां ऐक बारी थी जीस में वुह और उसके सीष्य गये। और उसका छलदायक यहुदा भी वुह सथान जानता था कयोंकी यसु बारंबार अपने सीष्यों के संग यहां जाया करता

३ था। तब प्रधान याजकों और फरीसीयों से एक जथा और पीयादे पलीता और दीपक और हथीयार सहीत लेके ४ यहूदा वहां आया। पर युसु ने सब कुछ, जो उस पर बीतना था जान के बाहर नीकल के उनहें कहा की तुम लोग कीसे ५ ढुंढ़ते हो?। उनहों ने उतर दीया की युसु नासरी को युसु ने उनहें कहा की मैं हूं उस समय उसका छलदायक यहूदा ६ भी उनके संग खड़ा था। जयोंही उसने उनहें कहा की मैं ७ हूं वे पीछे हट के भुम पर गीर पड़े। तब उसने उनसे फेर पुछा की तुम लोग कीसे ढुंढ़ते हो वे बोले की युसु नासरी को। ८ युसु ने उतर दीया की मैं ने तो तुमहें कहा की मैं हूं सो यदी ९ तुम लोग मुझे ढुंढ़ते हो तो इनहें जाने देओ। जीसतें उसका कहा हुआ बचन पुरा होवे की जीनहें तु ने मुझे दीया है मैं ने उन में से एक को न खोया।

१० तब समउन पतरस ने अपना खडग खींचा और प्रधान याजक के सेवक पर चलाया और उसका दहीना कान उड़ा ११ दीया उस सेवक का नाम मलकुस था। तब युसु ने पतरस से कहा की अपना खडग काठी में कर जो कटोरा मेरे पीता ने १२ मुझे दीया है कया मैं उसे न पीऊं?। तब जथा और सेना पती और यहूदीयों के पीयादों ने युसु को पकड़ के बांधा। १३ और उसे पहीले अंनास पास लेगये कयोंकी वुह कयाफा का १४ ससुर था जो उस बरस प्रधान याजक था। यह वही कयाफा था जीसने यहूदीयों को मंतर दीया की लोगों के लीये एक १५ मनुष्य का मरना आवसक है। तब समउन पतरस दुसरे सीष्य के संग होके युसु के पीछे हो लीया वुह सीष्य प्रधान याजक का जाना हुआ था और युसु के साथ प्रधान याजक १६ के आंगन में गया। परंतु पतरस दुवार पर बाहर खड़ा रहा तब वुह दुसरा सीष्य, जो प्रधान याजक का जाना हुआ था, बाहर गया और दुवार पाली को कहके पतरस को भीतर

१७ लाया। तव् दुवार पाली दासी ने पतरस को कहा "तु भी इस मनुष्य के सीष्यों में से नहीं ?" वुह व्रोला की मैं नहीं ऊं।
१८ अव् सेवक और पीआदे कोइलों की आग सलगा के जाड़े के मारे ष्पड़े ऊए तापते थे और पतरस उनके संग ष्पड़ा ताप रहा
१९ था। तव् परधान ग्राजक ने ग्रसु से उसके साष्यों के और
२० उसकी सीष्या के व्रीष्यग्र में पुछा। ग्रसु ने उसे उतर दीग्रा की मैं ने संसार को ष्पोल के कहा मैं ने सदा मंडली में और मंदीर में जहां ग्रऊदी नीत ऐकठे होते हैं सीष्याग्रा और गुपत
२१ में मैं ने कुछ न कहा। तु मुझे कय़ों पुछता है ? जीनहों ने मुझ से सुना उनसे पुछ की मैं ने उनहें कय़ा कहा देष्प जो मैं ने
२२ कहा सो वे जानते हैं। जव् उसने य़ुं कहा तव् पास के ष्पड़े ऊए पीआदों में से ऐक ने ग्रसु को थपेड़ा मार के कहा की तु
२३ परधान ग्राजक को ऐसा उतर देता है ?। ग्रसु ने उसे उतर दीग्रा की जो मैं ने व्रुरा कहा तो व्रुराइ की साष्पी दे परंतु
२४ जो अछा तो तु मुझे कय़ों मारता है ?। और अंनास ने उसे
२५ व्रांधा ऊआ कय़ाफा परधान ग्राजक पास भेजा। तव् समउन पतरस ष्पड़ा ताप रहा था सो उनहों ने उसे कहा, की "तु भी उसके सीष्यों में से है"? उसने नाह करके कहा की मैं नहीं
२६ ऊं। परधान ग्राजक के सेवकों में से ऐक ने कहा, जीस के कुटुंव् का कान पतरस ने काटा था, कय़ा मैं ने तुझे उसके संग
२७ व्रारी में नहीं देष्पा ?। तव् पतरस ने फेर नाह कय़ा और
२८ तुरंत ककुट व्रोला। तव् वे ग्रसु को कय़ाफा करने से व्रीयाय सथान में लाये और अव् व्रीहान ऊआ परंतु वे आप व्रीयाय सथान में न गय़े जीसतें असुच न हों परंतु जीसतें ने पार जाना
२९ ष्पायें। इस लीय़े पीलातुस उन पास नीकल आय़ा और व्रोला
३० की तुम लोग इस मनुष्य पर कय़ा अपव्राद लगाते हो ?। उनहों ने उतर देके कहा की जो य़ह अपराधी न होता तो हम उसे
३१ आप को न सौंपते। पीलातुस ने उनहें कहा की तुम उसे ले

जाओ और अपनी ब्वैवसथा के समान उसका नयाय करो इस
बीये यहूदीयों ने उसे कहा की हमें उचीत नहीं की कीसी
३२ को घात करें। यूं यसु का कहा हुआ बयन पुरा हुआ की
३३ वुह कीस रीत से मरेगा। तब्र पीलातुस ब्रीयानसथान में फेर
गया और यसु को बुला के कहा कया "तु यहूदीयों का राजा
३४ है"?। यसु ने उसे उतर दीया की आप यह बात आप से
कहते हैं अथवा औरों ने मेरे ब्रीषय में आप से कही?।
३५ पीलातुस ने उतर दीया कया मैं यहूदी हुं? तेरेही लोगों ने
और परधान याजकों ने तुझे मेरे पास सौंप दीया तु ने कया
३६ कीया है?। यसु ने उतर दीया की मेरा राज इस जगत का
नहीं है यदी मेरा राज इस जगत का होता तो मेरे सेवक
लड़ते की मैं यहूदीयों को सौंप न जाता पर मेरा राज तो यहां
३७ का नहीं। तब्र पीलातुस ने उसे कहा की "तु राजा है?"
यसु ने उतर दीया की आपही कहते हैं की मैं राजा हुं मैं
इसी लीये उतपंन हुआ और इसी कारन मैं जगत में आया
की सयाइ पर साख्वी देउं जो कोइ सत से है सो मेरी सुनता
३८ है। पीलातुस ने उसे कहा की सयाइ कया है? और यह
कहके वुह फेर यहूदीयों के पास गया और उनहें बोला की
३९ मैं उस पर कुछ दोष्व नहीं पाता। परंतु तुमहारा एक ब्वैवहार
है की मैं तुमहारे लीये पारजाना परब्र में एक को छोड़ देउं,
तुम याहते हो की मैं तुमहारे लीये यहूदीयों के राजा को छोड़
४० देउं?। उन सभों ने फेर यीला के कहा की इस मनुष्य को नहीं
परंतु ब्ररब्रास को और ब्ररब्रास ब्रटमार था।

१९ उनीसवां परब्र।

पीलातुस के आगे परभु का ब्रीयार कीया जाना
योरों के बीच में करुस पर ख्वींया जाना १—१८

मसीह का दोप्प पतन श्रोन उसके ब्रसतण का भाग होना १९—२४ श्रपनी माता का ग्रहना को सोंपना २५—२७ उसे सीनका देना श्रोन उसका मनना २८—३० उसका पंजन गोदा जाना ३१—३७ समाघ में नग्या जाना ३८—४१।

१।२ तब्र पीलातुस ने ग्रसु को कोड़ा माना। श्रोन जोघाश्रों ने कांटों का मुकुट गुंथ के उसके सीन पन नप्पा श्रोन उसे ब्रैंजनी ३ ब्रसतन पहीना के कहा। की ग्रऊदीग्रों के नाजा पननाम ४ श्रोन उनहों ने उसे थपेड़े माने। तब्र पीलातस ने फेन ब्राहन जाके उनहें कहा की देप्पो मैं उसे तुमहाने पास ब्राहन लाता ऊं जीसतें तुम जानो की मैं उसका कुछ दोप्प नहीं पाता। ५ तब्र ग्रसु कांटो का मुकुट श्रोन ब्रैंजनी ब्रसतन पहीने ऊए ब्राहन श्राग्रा श्रोन पीलातुस ने उनहें कहा की इस मनुप्प को देप्पो। ६ जब्र पनघान ग्राजकों श्रोन पीश्रादों ने उसे देप्पा तो चीला के ब्रोले की "कुनुस पन मान" कुनस पन मान, पीलातुस ने उनहें कहा तुम उसे लेश्रो श्रोन कुनुस पन माना कग्रोंकी मैं उस पन ७ कुछ दोप्प नहीं पाता। ग्रऊदीग्रों ने उसे उतन दीग्रा की हम ब्रैवसथा नप्पते हैं श्रोन हमानी ब्रैवसथा की नात से वुह घात के जोग है कग्रांकी उसने श्रपने को इसन का पुतन ठहनाग्रा। ८ जब्र पीलातुस ने ग्रह ब्रचन सुना वुह श्रघीक डन गग्रा। ९ श्रोन ब्रीचान सथान में फेन जाके ग्रसु से कहा की तु कहां १० का है? पनंतु ग्रसु ने उसे कुछ उतन न दीग्रा। तब्र पीलातुस ने उसे कहा कग्रा तु मुझ से नहीं ब्रोलता? तु नहीं जानता की मैं पनाकनम नप्पता ऊं याऊं तुझे कुनुस पन मानुं याऊं ११ तुझे छोड़ देउं। ग्रसु ने उतन दीग्रा की ग्रदी श्राप का उपन से दीग्रा न जाता तो मुझ पन श्राप का कुछ पनाकनम न होता सो जीसने श्राप को मुझे सोंप दीग्रा उसका श्रघीक पाप है।

१२ उस समय से पीलातुस ने उसे छोड़ देने चाहा परन्तु यहूदीयों ने चीलाके कहा की जो आप इस मनुष्य को छोड़ें तो आप कैसर के मीतर नहीं जो अपने का राजा ठहराता है सो कैसर
१३ के वीरुध कहता है। पीलातुस यह बात सुनके यसु को बाहर लाया और वीचार के आसन पर उस सथान में जो चबूतरा
१४ कहावत है बैठा परंतु इबरी भाषा में गबाथा है। और अब पार जाना की बनाउरी थी और छठवीं घड़ी के नीकट था और उसने यहूदीयों को कहा की अपने राजा को देखो।
१५ तब वे चीलाये की "लेजा लेजा उसे कुरुस पर मार" पीलातुस ने कहा की मैं तुमहारे राजा को कुरुस पर मारुं? परधान याजकों ने उतर दीया की कैसर को छोड़ हमारा कोइ राजा
१६ नहीं। उसने इस लीये उसके तइं कुरुस पर मारे जाने को उनहें सौंप दीया और उनहों ने यसु को पकड़ा और ले गये।
१७ और अपना कुरुस उठाये हुए वह उस सथान को गया जो खोपड़ी का कहावता है जो इबरी में गलगता कहावता है।
१८ वहां उनहों ने उसे और उसके संग और दो को इधर उधर और यसु को बीच में कुरुस पर मारा।

१९ और पीलातुस ने एक नामपतर लीख के कुरुस पर लगा दीया वुह लीखा हुआ यह था की "यसु नासरी यहूदीयों
२० का राजा"। इस नाम पतर को बहुतेरे यहूदीयों ने पढ़ा कयोंकी जीस सथान में यसु कुरुस पर खींचा गया था सो नगर के नीकट था और वुह इबरी और युनानी और लातीनी में
२१ लीखा था। तब यहूदीयों के परधान याजकों ने पीलातुस से कहा की यहूदीयों का राजा मत लीख परंतु की उसने कहा
२२ की मैं यहूदीयों का राजा हुं। पीलातुस ने उतर दीया की
२३ मैं ने जो लीखा सो लीखा। फेर जब जोधाओं ने यसु को कुरुस पर टांगा उसके बसतरों को लीया और चार भाग कीये हर जोधा को एक और उसके बागे को भी लीया और

२४ व़ागा व़ीन सीआ उपन से नीये लों वुना ऊआ था। इस लीये वे आपुस में व़ोले की हम इसे न फराड़ें पनंतु उस पन याठी डालें की य़ह कीसे पड़ंयता है जोसतें लीप्पा ऊआ पुन होवे जो कहता है की उनहों ने आपुस में मेन व़सतन को व़ांट लीय़ा ग्रीन मेनें व़ाग के लीये यीठी डाला से जोधाश्रों ने ऐसाही कीय़ा।

२५ अव़ य़सु के कुनुस के पास उसकी माता ग्रीन उसकी माता की वहीन कलेओपास की मनीय़म ग्रीन मनीय़म मजदलीय़:

२६ प्पड़ी थीं। य़सु ने अपनी माता को ग्रीन अपने पीनीय़ सीप्प को पास प्पड़े ऊए देप्प के अपनी माता को कहा की हे इसतीनी

२७ अपने पुतन को देप्प। फरेन उसने उस सीप्प को कहा की अपनी माता को देप्प ग्रीन उसी घड़ी से वुह सीप्प उसे अपने

२८ घन ले गय़ा। इसके पीछे य़सु ने जाना की अव़ सव़ कुछ हो युका जीसतें लीप्पा ऊआ पुना होवे उसने कहा की मैं पीआसा

२९ ऊं। अव़ वहां ऐक पातन सीनके से भना ऊआ धना था उनहों ने व़ादल के टुकड़े को सीनके में भीगा के जुफा में

३० लपेट के नल पन नप्पा ग्रीन उसके मुंह पन लगाय़ा। इस लीये जव़ य़सु ने सीनके को यीप्पा तो कहा की हो युका ग्रीन

३१ सीन झुका के पनान सैांप दीय़ा। ग्रीन इस लीये की वुह व़नाउनी का समय़ था य़ऊदीय़ों ने पीलातुस से याहा की उनकी टांगें तोड़ी जायें ग्रीन उतान ले जांय़े की लाथ व़ीसनाम में कुनुस पन न नहने पावे कय़ोंकी वुह व़ीसनाम व़ड़ा दीन था।

३२ तव़ जोधाश्रों ने आके पहीले ग्रीन दुसने की टागें तोड़ीं जो

३३ उसके साथ कनुस पन प्पींये गय़े थे। पनंतु जव़ उनहों ने य़सु पास आके देप्पा की वुह मन युका है तो उनहों ने उसकी टांगें

३४ न तोड़ीं। पनंतु जोधाश्रों में से ऐक ने भाले से उसका पंजन

३५ गोदा ग्रीन तुनंत उस से लोऊ ग्रीन पानी नीकला। ग्रीन जीसने य़ह देप्पा उसने साप्पी दी ग्रीन उसकी साप्पी सत है

और वुह जानता है की सत कहता है जीसतें तुम लोग वीसवास
३६ लाओ। ये वातें इस लीये ऊइं की लीप्पा ऊआ पुना होवे
३७ की उसकी कोइ हडी तोडी न जायगी। और फेर लीप्पा
ऊआ कहता है कीवे उस पर जीसे उनहों ने गोदा दीनीसट
३८ करेंगे। और इसके पीछे अरमतीया के युसफ ने जो युसु
का सीप्प था परंतु युऊदीयों के डरके मारे छीप के था आके
युसु की लोथ ले जाने को पीलातुस से अगया याही पीलातुस
ने लेने दीया सो वुह आया और युसु की लोथ को लीया।
३९ और नीकुदीमुस भी, जो पहीले युसु के पास रात को गया था
आया और पयास सेर के लगभग गंधरस और ऐलुवा मीला
४० के लाया। तव उनहों ने युसु की लोथ को ले के युऊदीयों
के गाड़ने की रीत के समान सुती कपड़े में सुगंध के संग लपेटा।
४१ और वहां जीस सथान में उसे कुरुस पर खींचा था ऐक वारी
थी और उस वारी में ऐक नइ समाध जीस में कोइ धरा
४२ न गया था। सो उनहों ने युसु को युऊदीयों की वनाउनी के
लीये वहीं रख्खा कयोंकी वुह समाध समीप थी।

२० वीसवां परब।

मसीह का जी उठना। १—१० दुतों का संदेस देना ११—१३ मसीह का मरीयम पर परगट होना १४—१८ परेरीतों पर परगट होना १९—२५ फेर परगट होके थुमा को अपना घाव दीख्खाना २६—३१।

१ अठवारे के आरंभ में मरीयम मजदलीयः तडके अंधीयारा रहतेही समाध पर आइ और पथर को समाध से टाला
२ ऊआ देख्खा। तव वुह समउन पतरस और उस दुसरे सीप्प के पास, जीसे युसु पीआर करता था, दौड़ी आइ और उनहें

ब्रोली की कोइ पनभ्रु को समाध में से ले गया और हम नहीं
२ जानते की उनहों ने उसे कहां नप्पा है। इस लीये पतनस
दुसने सीप्प के संग होके नीकला और समाधी की ओन जाने
४ लगा। सो वे दोनों ओकठे दौड़े पनंत दुसना सीप्प पतनस से
५ आगे व्रढ़ गया और समाध पन पहीले पहुंया। उसने हुक
६ के सुती कपड़े पड़े देप्पे पन भीतन न गया। फेन समउन
पतनस उसके पीछे पहुंया और समाध में पैठ के सुती कपड़ों
७ को पड़ा देप्पा। और उसके सीन पन का अंगोछा कपड़े के
संग नहीं, पनंतु लपेटा हुआ ओक सथान में अलग पड़ा देप्पा।
८ तव्र दुसना सीप्प भी, जो समाध पन पहीले आया था, भीतन
९ गया और देप्पके पनतीत की। कयोंकी वे अव्र लों लीप्पे हुओे
को न जानते थे की वृह मीनतकों में से अवस जी उठेगा।
१०।११ तव्र सीप्प अपने अपने घन गये। पनंतु मनायम समाध
के पास व्राहन नोती प्पड़ी नही और नोती हुइ जेउं समाध
१२ में देप्पने को हुकी। तो दो दुतों को सेत व्रसतन में ओक
को सीनहाने और दुसने को, पैताने में व्रैठे देप्पा जहां ग्रसु
१३ की लोथ नप्पी गइ थी। उनहों ने उसे कहा को हे इसतीनी
तु कयों नोती है? उसने उनहें कहा इस लीये की वे मेने
पनभ्र को ले गये और मैं नहीं जानती की उनहो ने उसे कहां
१४ नप्पा है। और उसने यु कहके पीछे फीन के ग्रसु को प्पड़े
१५ देप्पा पन न जाना की वृह ग्रसु है। ग्रसु ने उसे कहा की हे
इसतीनी तु कयों नोती है? कीसे ढुंढती है? उसने उसे माली
समहु के कहा की हे महासय जो आपने उसे यहां से उठाया
हो तो मुहु से कहीये की आप ने उसे कहां नप्पा है और मैं
१६ उसे लेजाउंगी। ग्रसु ने उसे कहा की मनीयम उसने फीनके
१७ उसे कहा की नव्रुनी अनथात हे गुनु। ग्रसु ने उसे कहा की
मुहे मत छु कयोंकी मैं अव्र लों अपने पीता पास उपन नहीं
गया पनंतु मेने भाइयों के पास जाके उनहें कह की मैं अपने

पीता और तुमहारे पीता और अपने इसन और तुमहारे
१८ इसन पास उठ जाता हुं। मरीयम मजदलीयः ने आके सीष्यों
से कहा का मैं ने परभु को देष्या और उस ने ये वातें मुझे
१९ कहीं। फरेन उसी दीन जो अठवारे का पहीला था संघया के
समय में जव उस सथान के दुवार, जहां सव सीष्य एकठे थे
यहुदीयों के डर के मारे वंद थे यसु आया और मघ में प्पड़ा
२० हुआ और उनहें वोला की तुम पर कुसल। और यु कहके
अपना हाथ और पंजर उनहें दीष्याया तय सीष्य परभु को
२१ देष के आनंद हुए। और यसु ने फरेन उनहें कहा की तुम
पर कुसल जैसा पीता ने मुझे भेजा है तैसाही मैं तुमहें भेजता
२२ हुं। उसने यह कहके उन पर फुंका और कहा की घरमातमा
२३ को लेओ। जीनके पापों को तुम छोड़ते हो उनके लीये छोड़े
जाते हैं और जीनके तुम घरते हो उनके घरे हैं।

२४ परंतु उन वारह में से एक थुमा जीसकी पदवी डीदीमस
२५ थी यसु के आने में उनके संग न था। इस लीये और सीष्यों
ने उसे कहा की हम ने परभु को देष्या है परंतु उसने उनहें कहा
की जव लों मैं उसके हाथों में कीलों के चीनह न देष्युं और
कीलों के चीनह में अपनी अंगुली न करुं और अपने हाथ
२६ उसके पंजर में न डालुं मैं परतीत न करुंगा। आठ दीन के
पीछे जव उसके सीष्य फरेन भीतर थे और थुमा उनके संग था
दुवार वंद होते हुए यसु आया और वीच में प्पड़ा होके वोला
२७ की तुम पर कुसल। तव उसने थुमा को कहा की अपनी
अंगुली इघर वढ़ा और मेरे हाथों को देष्य और अपना हाथ
इघर वढा और उसे मेरे पंजर में डाल और अपरतीत मत
२८ हो परंतु परतीत मान। थुमा ने उतर देके उसे कहा की हे
२९ मेरे परभु और हे मेरे इसन। यसु ने उसे कहा की थुमा तु
इस लीये परतीत लाया है की तु ने मुझे देष्या है, घन वे हैं
जीनहों ने नहीं देष्या और परतीत करेंगे।

३० और व्रहुतेरे और लछन ग्रसु ने अपने सीष्पों के आग
३१ दीष्पाये जो इस पुसतक में नहीं लीष्पे हैं। पनंतु ये लीष्पे गये जीसतें तुम ब्रीसवास लाओ की ग्रसु वुह मसीह इसन का पुतन है और पनतीत कनके उसके नाम से अनंत जीवन पाओ।

२१ एकीसवां पनव्र।

समुद्र तीन मसीह का आप को सीष्पों पन पनगट कनना १—१४ पतनस से पनसन कनना और उसे आगया कनना और उस का मीनतु का संदेस देना १५—१९ पतनस को नोकना और मसीह के आसयनव कनम का व्रताना २०—२५।

१ इन व्रातों के पीछे ग्रसु फेन आप को तीव्रीनीयास के समुद्र के पास सीष्पों को दीष्पाइ दीया और इस नीत से पनगट
२ ऊआ। की समउन पतनस और सुमा जो डीदीमस कहावता है और काना के जलील का नासानाइल और जव्रदी के व्रेटे
३ और उसके सीष्पों में से और दो एकठे थे। समउन पतनस ने उनहें कहा की मैं मछली पकड़ने को जाता ऊं उनहों ने उसे कहा की हम भी तेने संग यलेंगे और नीकल के तुनंत नाव
४ पन यढ़े और उस नात कुछ न पकड़ा। पनंतु जव्र व्रीहान ऊआ ग्रसु तीन पन ष्पड़ा था पनंतु सीष्पों ने न जाना की वुह
५ ग्रसु है। तव्र ग्रसु ने उनहें कहा की हे लड़को तुमहाने पास
६ कुछ भोजन है? उनहों ने उसे उतन दीया की नहीं। उसने कहा की नाव की दहीनी ओन जाल डालो और पाओगे सो उनहों ने डाला तव्र मछलीयों की व्रऊताइ के मारे वे उसे
७ ष्पींय न सके। इस लीये उस सीष्प ने, जीसे ग्रसु पीआन कनता था, पतनस को कहा की वुह पनभु है सो जव्र समउन

पतनस ने सुना की वुह पनभु है उसने अपने मछुऐ का वसतन कट पन लपेटा (कयोंकी वुह नंगा था) औान आप समुदन में
८ कुद पड़ा। पनंतु औान सीप्प नाव पन जाल को मछलीयों समेत प्पींयते आये कयोंकी वे तीन से दुन न थे पनंतु जैसा की
९ दो सै हाथ के। जेउं वे तीन पन आये उनहों ने वहां कोइलों की आग औान उस पन मछली नप्पी ऊइ औान नोटी देप्पी।
१० युसु ने उनहें कहा की उन मछलीयों में से जो तुम ने अभी
११ पकड़ी हैं लाओ। समउन पतनस ने जाके जाल को ऐक सै तीनपन वड़ी मछलीयों से भना ऊआ प्पींया यदपी इतनी
१२ वऊत थीं तथापी जाल न फटा। युसु ने उनहें कहा की आओ भोजन कनें यह जानके की वुह पनभु है सीप्पों में से कीसी का
१३ हीयाव न ऊआ की उसे पुछे की तु कौन है ?। तव युसु ने आके नोटी ली औान उनहें दी औान मछलीयां भी दीं।
१४ यह तीसने वान है की युसु ने जी उठके अपने तईं सीप्पों
१५ को दीप्पाया। सो जव वे भोजन कन युके युसु ने समउन पतनस को कहा की युना के पुतन समउन कया तु इनसे मुझे अधीक पनीत नप्पता है ? उसने उसे कहा हां हे पनभु आप जानते हैं की मैं आप से पनीत नप्पता ऊं उसने उसे कहा मेने
१६ मेमनों को यना। उसने दुसन वान उसे फेन कहा की युना के पुतन समउन तु मुझ से पनीत नप्पता है ? उसने उसे कहा की हां हे पनभु आप जानते हैं की मैं आप से पनीत नप्पता ऊं
१७ उसने उसे कहा की मेना भेड़ें यना। उसने उसे तीसने वान कहा की युना के पुतन समउन तु मुझ से पनीत नप्पता है ? तव पतनस उदास ऊआ कयोंकी उसने उसे तीसने वान कहा की तु मुझ से पनीत नप्पता है तव उसने उसे कहा हे पनभु आप तो सव कुछ जानते हैं आप जानते हैं की मैं आप से पनीत
१८ नप्पता ऊं युसु ने उसे कहा की मेनी भेड़ें यना। मैं तुझ से सत सत कहता ऊं की जव लों तु तनुन था तु अपनी कट

व्रांचता था ख्रौन जहां कहीं याहता था जाता था पनंतु जव्र तु व्रीनध होगा तु ख्रपने हथों को फरैलावेगा ख्रौन दुसना तेनी
१९ कट व्रांचेगा ख्रौन जहां तु न याहे तहां ले जायगा। उसने यह कहके पता दीय़ा की वुह कौस मौनतु से इसन की महीमा पनगट कनेगा ख्रौन उसने यूं कहके उसे कहा की मेने पीछे हो
२० ले। तव्र पतनस ने फीन के उस सीष्प को पीछे ख्राते देष्पा जीस से य़सु पनीत नष्पता था (जीसने व्रीख्रानी के समय़ उसकी छाती पन ख्रोठंग के पुछा की हे पनभु जो तुहे पकड़वाता है सो
२१ कौन है ?)। पतनस ने उसे देष्प के य़सु से कहा की हे पनभु
२२ इस मनुष्प का कय़ा होगा ?। य़सु ने उसे कहा की जो मैं याहुं की जव्र लो मैं ख्राउं वुह यहीं ठहने तो तुहे कय़ा तु मेने
२३ पीछे यला ख्रा। तव्र भाइय़ों में यह व्रात फरैल गइ की वुह सीष्प न मनेगा पनंतु य़सु ने उसे नहीं कहा की वुह न मनेगा पनंतु यह कहा की जो मैं याहुं की मेने ख्राने
२४ लों वुह ठहने तो तुहे कय़ा ?। यह वुह सीष्प है जीसने इन व्रातों की साष्पी दी है ख्रौन इनहें लीष्पा ख्रौन हमें नीसयय़
२५ है की उसकी साष्पी सत है। ख्रौन भी व्रहुत से कानज हैं जो य़सु ने कीय़े जो वे ख्रलग ख्रलग लीष्पे जाते तो मैं समुहता हुं की उन गनंथों को, जो लीष्पे जाते जगत में भी समाइ न होती ख्रामीन।

पनेनीतों की कीनीय़ा ।

---

१ पहीला पनव्र ।

मसीह के जी उठने का समाय़ान औान सनग पन जाना १—११ सीप्पों का य्रीनोसलीम में फीन आना औान पनानथना में लवलीन होना १२—१४ य्रऊदा का नसट औान मतसैय्रास का पनेनीत होना १५—२६ ।

१ हे साओफलुस जो कुछ ग्रसु उस दीन लों कनता औान सीप्पा-
२ वता नहा । जव्र वुह घनमातमा के दुवाना से अपने युने ऊए पनेनीतों को अगय़ा देके उपन उठाय़ा गय़ा मैं उनहें अगीली
३ पुसतक में व्रननन कन युका । अपने कसट के पीछे वुह उन में व्रऊत पनमानों से जीवता पनगट ऊआ औान याालीस दीन लों उनहें दीप्पाइ दे दे के इसन के नाज की व्रातें कहता नहा ।
४ औान उनहें ऐकठे कनके अगय़ा की, की य्रीनोसलीम से व्राहन मत जाओ पनंतु पीता की व्राय़ा क लीय़े व्रा ट जोहो जो मुझ से सुन
५ युके हो । कय़ोंकी य़हीय़ा ने तो जल से सनान दीय़ा पनंतु
६ थोड़े दीन के पीछे तुम लोग घनमातमा से सनान पाओगे । सो जव्र वे ऐकठे ऊए उनहों ने य़ह कहके उसे पुछा की हे पनभ्र
७ कय़ा आप इसी समय़ इसनाइल को फेन नाज देंगे । उसने उनहें कहा की तुमहाना काम नहीं की उन समय़ों अथवा

नीतुन को जाने जीनहें पीता ने अपनेही ब्रस में नप्प छोड़ा है।
८ पनंतु जब्र घनमातमा तुम पन आवेगा तब्र तुम लोग सामनथ
पाओगे औान ग्रीनोसलीम में औान सानें ग्रऊदीग्रः औान सामनः
९ में औान पीनथीवी क अतग्रंत लों मेने साप्पी होओगे। औान
इन ब्रातों को कहके उन के देप्पते देप्पते वुह उपन उठाग्रा गग्रा
१० औान मेघ ने उसे उनकी दोनीसट से आड़ कन लीग्रा। औान
जब्र वे उसे उपन जाते आकास की औान तक नहे थे देप्पो
११ दो मनुप्प उजला ब्रसतन पहींने उनके पास प्पड़े ऊप्रे। औान
कहने लगे की हे जलीली लोगो तुम लोग प्पड़े उपन सनग की
औान कग्रों ताक नहे हो ग्रही ग्रसु जो तुम से सनग पन उठाग्रा
गग्रा है जीस नीत से तुम ने उसे सनग पन जाते देप्पा उसी
१२ नीत से आवेगा। तब्र वे उस पहाड़ से, जो जलपाइ का कहा-
वता है, औान ग्रीनोसलीम से प्रेक ब्रीसनाम दीन के टपे पन है,
१३ ग्रनोसलीम को फीने। औानवे भीतन आके प्रेक उपनौटी कोठनी
में गग्रे जहां पतनस औान ग्राकुब्र औान ग्रुहना औान अंदनग्रास
औान फीलवुस औान थुमा औान ब्रानतुलमा औान मती औान
हलफ़ा का ब्रेटा ग्राकुब्र औान समउन जलन औान ग्राकुब्र का
१४ भाइ ग्रऊदा नहते थे। ग्रे सब्र इसतीनीग्रों सहीत औान ग्रसु
की माता मनीग्रम के औान उसके भाइग्रों के संग मन लगा के
१५ पनानथना औान ब्रीनती कन नहे थे। औान उनहीं दीनो में
सीप्पों के मघ में, जो गीनती में प्रेक सौ ब्रीस के लग भग थे
१६ पतनस प्पड़ा होके ब्रोला। हे मनुप्प भाइग्रो उस लीप्पे ऊप्रे
का पुना होना अवस था जो घनमातमा ने दाउद के दुवाना
ग्रऊदा के ब्रीप्पग्र में आगे से कहा था जो ग्रसु के पकड़ाउओं
१७ का अगुआ ऊआ। कग्रोंकी वुह हम में गीना जाता था औान
१८ उसने इस सेवकाइ का भाग पाग्रा। अब्र इस मनुप्प ने ब्रुनाइ
के दाम से प्रेक प्पेत मोल लीग्रा औान औंघे मुंह गीन के उस
का पेट फट गग्रा औान उसकी सानी अतड़ीग्रां नीकल पड़ी

१९ औान यह वात यनोसलोम के साने वासीयों पन जानी गई यहां लों की वुह प्येत उनकी भाप्पा में हकलदमा कहावता है
२० अनथात लोहु का प्येत। कयोंकी भजन की पुसतक में लीप्पा है की उसका घन उजाड़ होवे औान उस में कोई न वसे औान
२१ उसका पद दुसना लेवे। सो जो लोग उस समय से हमाने संग सदा यलते थे अनथात जव से पनभु यसु हम में आया जाया
२२ कनता था। यहोया के सनान से आनंभ कनके उस दीन लों की वुह हम में से उठाया गया उन में से उयोत है की ऐक जन जो उसके फनेन उठने की साप्पी हो हमाने संग ठहनाया जाय।
२३ तव उनहों ने दो को ठहनाया ऐक यसफ जो वानसवास कहावता है जीसकी पदवी जसतस हैं औान दुसना मतसैयास।
२४ औान वे पनानथना में वोले, हे पनभु जो सव का अंतनजामी
२५ है दीप्पा की इन दोनों में से तु ने कीस को युना है। जीसतें वुह इस सेवकाई औान पनेनीताई का भाग लेवे जीस से यहुदा पाप कनके भनीसट हुआ जीसतें अपनेही सथान को जाय।
२६ औान उनहों ने यीठी डाली औान यीठी मतसैयास के नाम पन नीकली तव वुह गयानह सीप्पों में गीना गया।

२ दुसना पनव।

पनेनीतों पन धनमातमा का पड़ना १—४ मंडली का आसयनज मानना ५—१३ पतनस का वननन कनना १४—३६ तीन सहसन का वीसवास लाना ३७—४१ सीप्पों की याल ४२—४७।

१ औान जव पयासवां दीन संपुनन हो पहुंया वे सव ऐक मत
२ हो के ऐक सथान में ऐकठे थे। तव आकसमात सनग से वहुत वड़ी आंधी के सवद के समान ऐक सवद हुआ औान उस से
३ साना घन, जहां वे वैठे थे भन गया। औान उनहें आग की

सी जोभ्र अलग अलग दीष्पाइ दीं श्रोन उन में से हन प्रेक पन
४ पड़ीं। तव्र सव्रके सव्र घनमातना से भ्रन गये ग्रनु आन आन
भ्राप्पा से कहने लगे जैसा की आतमा ने उनसे कहवाया था।
५ श्रोन कीतने भ्रकत य्रऊदी सनग के तले के हन प्रक देस से
६ य्रनोसलीम में आ नहे घे। श्रोन जव्र य्रह व्रात फैल गइ तव्र
मंडली प्रेकठी होके व्रयाकल ऊइ कयोंकी हन प्रेक ने उनहें
७ अपनी अपनी भ्राप्पा में व्रोलते सुना। श्रोन सव्र आसयनजीत
श्रोन व्रीसमीत हो आपुस में कहने लगे की देप्पो कया ये सव्र
८ जो व्रोलते हैं जलीली नहीं?। सो कैसा है की हन प्रेक
९ हम में से अपने अपने देस की व्रोली में सुनता है। फरानसी
श्रोन माज़ी श्रोन प्रेलामी श्रोन इनाकीअजम के व्रासी श्रोन
य्रऊदीयः श्रोन कपादुकीयः श्रोन पनतस श्रोन आसीया के।
१० श्रोन फरनजीयः श्रोन पंफुलीयः श्रोन मीसन श्रोन लीव्रीया
के उस सीवाने के व्रासी जो कनीनी के आस पास है श्रोन नुम
११ के पनदेसी श्रोन य्रऊदी श्रोन नये य्रऊदी। कनीती श्रोन
अनव्री सुनते हैं की वे हमानी भ्राप्पा में इसन की सुनदन व्रातें
१२ कहते हैं। श्रोन उन सभों ने आसयनज माना श्रोन संदेह
१३ में होके प्रेक दुसने को कहने लगा की कया होगा?। कीतनों
ने ठठा कनके कहा की ये लोग नइ मदीना के अमल में हैं।
१४ तव्र पतनस ने उन गयानह के संग प्पड़ा होके उनहें व्रड़े सबद
से कहा की हे य्रऊदी मनुप्पो श्रोन य्रनोसलीम के साने व्रासीयो
तुम पन य्रह जाना जाय श्रोन मेना व्रयन कान लगाके सुनो।
१५ कयोंकी ये जन जैसा तुम लोग समझते हो मदके अमल में
१६ नहीं हैं इस लीये की य्रह दीन की तीसनी घड़ी है। पनंतु
य्रह वुह है जो जोइल भ्रवीसदव्रकता की श्रोन से कहा गया।
१७ इसन कहता है की अंत समय में प्रेसा होगा की मैं हन प्रक
जन पन अपना आतमा व्रहाउंगा श्रोन तुमहाने व्रेटे श्रोन
तुमहानी व्रेटीयां भ्रवीस कहेंगी श्रोन तुमहाने तनुन दनसन

१८ देष्पेंगे श्रोन तुमहाने व्रीनघ सपन देष्पेंगे। मैं उन दीनें में अपने दास श्रोन अपनी दासीयें पन अपना आतमा व्रहाउंगा
१९ श्रोन वे न्नवीस कहेंगे। श्रोन मैं उपन सनग में अयनज श्रोन नीये पीनथीवी पन लछन दीष्पाउंगा अनथात लोक्र श्रोन आग
२० श्रोन धुंएे के उठान। पनभु के उस व्रड़े श्रोन पनसीघ दीन के
२१ पहीले सुनज अंधीयाना श्रोन यंदन लोक्र हो जायगा। श्रोन ऐसा होगा की जो कोइ पनभु के नाम की दोहाइ देगा सो
२२ उघान पावेगा। हे इसनाइली लोगो ये व्रातें सुनो यसु नासनी एक मनुष्य था जीसका इसन की श्रोन से होना उन पनाक्रनमें श्रोन आसयनजें श्रोन लछनें से तुम में ठहन गया जो इसन ने उसके दुवाना से तुमहाने मघ में दीष्पाया जीनहें तुम भी
२३ जानते हो। इसन के ठहनाये गये मत श्रोन पुनव्र गयान से सेंापे ऊए को तुमहें ने पकड़ा श्रोन पापीयें के हाथें से कील
२४ गाड़ के कुनुस पन टांग कन घात कीया। जीसे इसन ने मीनतु के व्रंघन को ष्पोल के फेन उठाया कयोंकी यह अनहोना था
२५ की वुह उसके व्रस में पड़ा नहे। कयोंकी दाउद उसके व्रीष्पय में कहता है की मैं ने पनभु को आगे से सनव्रदा अपने आगे देष्पा की वुह मेनी दहीनी श्रोन है न हो की मैं टल जाउं।
२६ इस लीये मेना मन मगन है श्रोन मेनी जीभ आनंद मेना
२७ सनीन भी आसा में में येन से नहेगा। कयोंकी तु मेने पनान
२८ को पनलोक में न छोड़ेगा न अपने धनमी को सड़ने देगा। तु ने मुहे जीवन के मानग का पहीयान दीया है श्रोन तु अपने
२९ सनुप से मुहे आनंद से भन देगा। हे मनुष्य भाइयो मैं पीतनाधछ दाउद के व्रीष्पय में तुमहें मन ष्पोल के कऊं वुह तो मन गया श्रोन गाड़ा भी गया श्रोन आज लों उसकी समाघ
३० हम में है। सो वुह न्नवीसदव्रकता होके जानता था की इसन ने उस से कीनीया ष्पाके कहा की मैं मसीह को सनीन के व्रीष्पय में तेने व्रस में से उठाउंगा जीसतें तेने सींहासन पन

३१ व़ैठे। इसे षागे देष्प के उसने मसीह के जी उठने की कही की उसका पनान पनलोक में छोड़ा न जाग्रगा न उसका देह सड़ने
३२ पावेगा। इस य़सु को इसन ने उठाय़ा है जीस व़ात के हम सव़
३३ साप्पी हैं। सो इसन की दहीनी ओ़ान व़ढाय़ा जाके ओ़ान पीता से व़ाया पाके उसने य़ह व़हाय़ा जो तुम लोग अव़ देष्पते
३४ ओ़ान सुनते हो। कय़ोंकी दाउद सनग पन नहीं गय़ा पनंतु
३५ उसने कहा की पनभु ने मेने पनभु से कहा। जव़ लो मैं तेने व़ैनीय़ों का तेने पांव की पीढ़ी कनुं तु मेनी दहीनी ओ़ान व़ैठ।
३६ सो इसनाइल का सानाा घनाना नीसयय़ जाने की इसन ने उसी य़सु का जीसे तुम लोगों ने कुनुस पन टांगा पनभु ओ़ान मसीह कीय़ा।
३७ जव़ उनहों ने य़ह सुना तो उनके मन व़ेघ गय़े ओ़ान पतनस अनु ओ़ान पनेनीतों को व़ाेले की हे मनुष्प भाइय़ो हम कय़ा
३८ कनें?। तव़ पतनस ने उनहें कहा की पछताओ़ा ओ़ान तुम में से हन ऐेक पाप मोयन के कानन य़सु मसीह के नाम से सनान
३९ पाओ़ा ओ़ान तुम लोग घनमातमा दान पाओ़ागे। कय़ोंकी य़ह व़ाया तुम से ओ़ान तुमहाने व़ालकों से है ओ़ान उन सभों से
४० जो दुन हैं जीतनी को हमाना पनभु इसन व़ुलावेगा। ओ़ान उसने व़हुतेने ओ़ान व़यन से साप्पी दा दा के ओ़ान उपदेस कन
४१ कनके कहा की आप को इस हठीली पीढ़ी से व़याओ़ा। तव़ जीनहों ने उसका व़यन आनंद से गनहन कीय़ा उनहों ने सनान पाय़ा ओ़ान उसी दीन तीन सहसन पनानी के लगभग
४२ उन में मील गय़े। ओ़ान वे पनेनीतों के उपदेस ओ़ान संगत ओ़ान नोटी तोड़ने ओ़ान पनानथना कनने में नीत व़ने नहे।
४३ ओ़ान हन ऐेक पनानी पन डन पड़ी ओ़ान व़हुत से आसयनज
४४ ओ़ान लछन पनेनीतों से दीष्पाय़े गय़े। ओ़ान सव़ जो व़ीसवास
४५ लाय़े ऐेकठे थे ओ़ान सव़ व़सतें सव़ की थीं। ओ़ान अपनी अपनी संपत ओ़ान सामगनी को व़ेय व़ेय के हन ऐेक के आवसक के

४६ समान सभों को ब्रांटते थे। श्रीन वे ग्रेक मता होके पनती दीन मंदीन में नहते थे श्रीन घन घन नोटी तोड़ के पनसंनता
४७ श्रीन मन की सुघाइ से प्पाते थे। श्रीन इसन की सतुत कनते श्रीन सानें लोगें में श्रादन पाते थे श्रीन पनभु मंडली में उचा-नीतें का पनत दीन श्रधीक कनता था।

३ तीसना पनव्र।

पतनस श्रीन य्रुहना का ग्रेक लंगड़े को यंगा कनना १—११ मसीह के पनाकनम श्रीन लोगें के पाप को पतनस का व्रननन कनना १२—१८ पतनस का उपदेस १९—२६।

१ फेन पतनस श्रीन य्रुहना ग्रेक साथ पनानथना की ज़्न नवइं
२ घड़ीं मंदीन में जाने लगे। श्रीन लोग जनम के ग्रेक लंगड़े को लेके पनती दीन मंदीन के दुवान पन, जीसका नाम सुनदन
३ है नप्पते थे की उनसे जो मंदीन में जाते थे भीप्प मांगे। जव्र उसने पतनस श्रीन य्रुहना को मंदीन में जाते देप्पा तो उनसे
४ भीप्प मांगी। तव्र पतनस ने य्रुहना सहीत उसे टक लगा के
५ देप्प के कहा की हमें ताक नप्प। श्रीन वुह उन से कुछ पावने
६ की श्रासा से उनहें तक नहा। तव्र पतनस ने कहा की सोना यांदी मेने पास नहीं पनंतु जो मेने पास है मैं तुहे देता इं य्रसु
७ मसीह नासनी के नाम से उठ श्रीन यल। श्रीन उसने उसका दहीना हाथ पकड़ के उठाया श्रीन तनंत उसके पाश्रो श्रीन
८ घुटीयां व्रल पा गइं। श्रीन कुद के वुह उठ प्पड़ा इश्रा श्रीन यलता फीनता श्रीन उछलता कुदता श्रीन इसन की सतुत
९ कनता इश्रा उनके संग मंदीन में गया। श्रीन सव्र लोगें ने
१० उसे यलते फीनते श्रीन इसन की सतुत कनते देप्पा। श्रीन यीनहा की य्रह वही है जो मंदीन के सुंदन दुवान पन भीप्प

मांगते वैठता था श्रौनं जो उस पन व्रीत गया था वे उस से
११ नीपट श्रासयनज कनक व्रीसमीत ङुप्रे। श्रौन जौं वह यंगा
कीया गया लंगड़ा पतनस श्रौन युहना को लपटा जाता था
सानें लोग श्रोसाने में, जो सुलेमान का कहावता था व्रडे श्रास
१२ यनज से उसकी श्रोन दौड़े श्राये। तव्र पतनस ने देष्प के
मंडली से कहा, हे इसनाइली मनुष्यों तुम लोग इस से कयों
श्रासयनज कनते हो? श्रथवा कयों हमें देष्प नहे हो जैसा की
हम ने श्रपने पनाकनम श्रथवा भकती से इस मनुष्य को यला-
१३ या। इव्रनाहीम श्रौन इसहाक श्रौन याकुव्र के इसन ने
हमाने पीतनों के इसन ने श्रपने पुतन यसु को प्रेसनयमान
कीया जीसे तुमहों ने सौंप दीया श्रौन पीलातुस के श्रागे उस से
१४ मुकन गये जव्र उसने उसे छुड़ाने को ठहनाया था। पनंतु तुम
उस पवीतन श्रौन धनम मय से मुकन गये श्रौन प्रेक व्रधीक को
१५ याहा की तुमहाने लीये छोड़ा जाय। श्रौन जोवन के श्रयक्ष
को मान डाला जीसे इसन ने मीनतकों में से उठाया श्रौन
१६ उस व्रात के हम साष्पी हैं। श्रौन उसके नाम पन व्रीसवास
लाने के दुवाना से उसने इस मनुष्य को, जीसे तुम लोग देष्पते
श्रौन जानते हो दीनढ़ कीया हां उसका नाम श्रौन व्रीसवास
जो उस से है तुम सव्र के समसुष्प उसे प्रैसा ठीक यंगा कीया।
१७ श्रौन श्रव्र हे भाइश्रो मैं जानता ङुं की तुम लोग श्रौन तुमहाने
१८ पनधानों ने भी श्रन जाने यह कीया। पनंतु जो कुछ इसन ने
श्रपने समसत भवीसदव्रकतों के दुवाना से श्रागे कहा था की
१९ मसीह कसट पावेगा इसी नीत से उसने पुना कीया। सो श्रव्र
पछताश्रो श्रौन फीनो जीसतें तुमहाने पाप मीटाप्रे जायें श्रौन
२० पनभु के पास से सांत होने की समय श्रावे। श्रौन वुह यसु
मसीह को भेजेगा जीसका समायान तुमहें श्रागे से दीया गया
२१ है। कयोंकी जव्रलों सानी व्रातें, जो इसन ने श्रपने समसत
पवीतन भवीसदव्रकतों के दुवना श्राद से कहा पुनी न हों

२२ अवेस है की मनग उसे छोड़े नहे। कयोंकी मुसा ने पीतरों से ठीक कहा था की परभु जो तुमहारा इसन है तुमहारे भाइयों में से तुमहारे लीये प्रेक अवीसदव्रकता को मेरे समान उठावेगा तुम सारी व्रातों में, जो वुह तुमहें कहे उसे मानयो।
२३ और प्रेसा होगा की हर प्रेक परानी जो उस अवीसदव्रकता
२४ को न सुनेगा सो लोगों में से नीकाल दीया जायगा। हां और समसत अवीसदव्रकतों ने, समुइल से लेके और वे जो उसके पीछे आये हैं जीतनो ने कहा है इन दीनों का भी संदेस दीया
२५ है। तुम लोग उन अवीसदव्रकतों के संतान हो और उस नीयम के जो इसर ने हमारे पीतरों स करके इव्रराहीम से कहा की तेरे व्रस से पीरथवी के सारे घराने आसीस पावेंगे।
२६ इसर ने अपने पुतर यसु को उठाके तुम में से हर प्रेक को उसकी वुराइयों से फीरा के पहीले तुमहें आसीस देने को भेजा।

४ चौथा परव्र।

पतरस और युहना का सताया जाना और पांच सहसर का व्रीसवास लाना १—४ नीडर्ज्ञ से पतरस और युहना का व्रनरन करना ५—१२ परघानों का उनहें घमकी देके छोड़ देना १३—२२ सीष्यों का परारथना करना और इसर से उतर पाना २३—३१ उनका प्रेक मता और परेम में रहना ३२—३७।

१ और जव्र वे लोगों से कह रहे थे याजक और मंदीर के
२ परधान और जादुकी। लोगों को सीष्याने से और यसु से मीरतक का जी उठना परचारने से उदास होके उन पर
३ चढ़ आये। उनहों ने उन पर हाथ डाले और दुसरे दीन

४ जो वंदीगीनह में नष्पा कय़ोंकी अव़ सांह ऊइ थी। तद भी जीनहों ने व़यन सुना उन में से व़ऊतेने व़ीसवास लाय़े चौान
५ उनकी गीनती पांय सहसन के गल भग ऊइ। चौान दुसने
६ दीन उनके पनघान चौान पनायीन चौान चघापक। चौान पनघान य़ाजक हंना चौान कय़ाफा चौान य़ुहना चौान सीकंदन चौान जीतने पनघान य़ाजक के कुटुंव़ थ य़नासलोम में एकठे
७ ऊए। चौान उनहें व़ीय में प्पड़ा कनके पुछा की तुम ने कोस
८ पनाकनम चौान कौस नाम से य़ह कीय़ा?। तव़ पतनस न घनमातमा से भन पुन होके उनहें कहा की हे लोगो के
९ पनघानों चौान इसनाइल के पनायीनो। जो उस चछे कानज के व़ीष्पय़ में जो इस नोगी मनुष्प पन कीय़ा गय़ा है हम से
१० चाज पुछा जाता है की वुह कय़ोंकन यंगा ऊचा। तो तुमहें चौान इसनाइल के लोगों को जाना जाय़ की य़सु मसीह नासनी के नाम से जीसे तुम लोगों ने कुनुस पन माना उसे इसन ने मीनतक में से जीलाय़ा उसी से य़ह मनुष्प तुमहाने चागे यंगा
११ प्पड़ा है। य़ह दुह पथन है जीसे तुम थवइय़ों ने नीकमा
१२ ठहनाय़ा जो कोने का सीना ऊचा है। चौान कीसी दुसने में सुकत नहीं कय़ोंकी सनग के तले कोइ दुसना नाम मनुष्पों को नहीं दीय़ा गय़ा है जीस से हम लोग उघान पा सकें।
१३ चौान जव़ उनहों ने पतनस चौान य़ुहना का होय़ाव देप्पा चौान समझा की वे चपढ़े चौान एसे वैसे हैं वे व़ीसमीत ऊए चौान
१४ जान गय़े की वे य़सु के संग थे। चौान उस यंगा कीय़ा गय़ा
१५ मनुष्प को उनके संग प्पड़ा देप्प के नीनुतन ऊए। पनंतु उनहें
१६ सभा से व़ाहन कनके चापुस में व़ीयानने लगे। की हम इन मनुष्पों को कय़ा कनें कय़ोंकी य़ह य़नोसलाम के सानें व़ासीय़ों पन पनगट है की उनहों ने एक व़ड़ा चासयनज दीप्पाय़ा
१७ चौान हम लोग उसे नाह नहीं कन सकते। पनंतु जीसतें य़ह व़ात लोगों में चधीक न फैले चाचो हम उनहें व़ऊत घमकावें

१८ की वे इस नाम को यनया फरेन कीसी से न करें। ग्रीन उनहें वुलाके योता दीग्रा को यसु के नाम से फरेन मत कहो १९ ग्रीन मत सीष्पाग्रो। तव पतनस ग्रीन यहुना ने उतन देके उहें कहा इसन के ग्रागे कया ठीक है हम तुमहें ग्रथवा इसन २० को ग्रधीक मानें तुमहीं वीयाने। कयोंकी यह ग्रनहोना है की हम उन वातों को, जोनहें हम ने देष्पा ग्रीन सुना है २१ न कहें। ग्रीन लोगों के उन के मारे उनहें दंड देने का कानन कुछ न पाके फरेन घमका के उनहें छोड़ दीग्रा कयोंकी उस २२ कानज क लीये सव इसन की सतुत कनते थे। ग्रीन जीस पन यंगा होने का ग्रासयनज ऊग्रा वुह याालीस वनस से उपन का २३ था। ग्रीन वीदा होके वे ग्रपने संगीयों के पास गये ग्रीन सव कुछ जो पनधान याजको ग्रीन पनायीनों ने कहा था उनहें २४ कह सुनाये। ग्रीन वे सुनके ऐक साथ इसन की ग्रोन वड़े सवद से वोले की हे पनभु तु वुह इसन है जीसने सनग ग्रीन पीनथीवी ग्रीन समुदन ग्रीन सव कुछ जो उन में हैं वनाया। २५ तु ने ग्रपने दास दाउद के दुवाना से कहा की ग्रनदेसी कयों २६ गुनाते हैं ग्रीन लोग कयों वीनथा सोयते हैं?। पीनथीवी २७ के नाजा लैस ऊऐ ग्रीन पनधान। पनभु के ग्रीन मसीह के २८ वीनोध में ऐकठे ऊऐ। कयोंकी सयसुय तेने धनमी पुतन यसु के वीनोध में जीसे तु ने ग्रभीसीकत कीया जो कुछ तेने हाथ ग्रीन तेने मंतन ने पहीले ठहना नष्पा था उसे हीनुदीस ग्रीन पंतयुस पीलातुस ग्रनदेसीयों ग्रीन इसनाइली लोगों के २९ संग कनने का ज़कत वांधी है। ग्रीन हे पनभु ग्रव उनकी धमकीयों को वृह ग्रीन ग्रपने दासों को ग्रपने वयन नीनभै ३० से कहने को वन दे। ग्रीन ग्रव इस लीये ग्रपना हाथ यंगा कनने को वढ़ा की तेने पवीतन पुतन यसु के नाम से लछन ३१ ग्रीन ग्रासयनज पनगट होवें। ग्रीन उनके पनानथना कनते ऊऐ जीस सथान में वे ऐकठे थे सो हील गया ग्रीन वे सव

घनमातमा से भन गये औान इसन का व्रयन नीनझै से व्रोले।
३२ औान व्रीसवासीओं की मंडली ओेक मन औान ओेक जीव थी औान कीसी ने अपनी कीसी संपत को अपनी न समझा पनंत सानी
३३ व्रसतु सव्र की थी। औान पनेनीतों ने व्रड़े पनाकनम से पनभु य्रसु के फरेन उठने पन साष्पी दी औान उन सभों पन व्रड़ा
३४ अनुगीनह ऊआ। औान उन में कोइ कंगाल न था कयोंकी जीतने भुम अथवा घन नप्पते थे उनहें व्रेंय व्रेंय के उनके
३५ दाम को लाते थे। औान पनेनीतो के यनन पन घनते थे औान हन ओेक के आवेसक के समान भाग दीय्रा जाता था।
३६ औान य्रुसस ने, जीस को पनेनीतों ने व्रननव्रास कनके कहा
३७ अनथात सांत का पुतन जो ओेक लावी औान कव्रनसी था। सो अपने अघीकान को व्रेंय के नोकड को ले पनेनीतो के यनन पन नप्पा।

५ पांयवां पनव्र।

पाप के माने हनानीय्रा औान सफीना का आकसमात माना जाना १—११ पनेनीतों का आसयनज कनम १२—१६ औान उनका व्रंघन में पड़ना औान दुतों के दुवाना से छुड़ाय्रा जाना १७—२५ फरेन सभा के आगे नीनभय्र से मसीह का व्रननन कनना २६—३३ ताड़ना पाके छुट जाना ३४—४० कसट में अनंदीत होना औान पनभु का उपदेस कनना ४१—४२

१ पनंतु हनानीय्रा नाम ओेक मनुष्प ने अपनी पतनी सफीना
२ के संग ओेक संपत व्रेंयी। औान मोल में से कुछ नप्प छोड़ा उसकी पतनी भी जानती थी औान कुछ लाके पनेनीतों के यनन
३ पन नप्पा। तव्र पतनस ने कहा, हे हनानीय्रा कय्रों तेने मन में सय्रतान समा गय्रा? तु घनमातमा के आगे झुठा ऊआ औान

४ भुम के मोल में से कुछ नप्प छोड़ा ?। जव् लों ग्रह घनी थीं कग्रा तेनी न थी ? श्रैान जव् वॅंयी गइ तो कग्रा तेने व्वस मे न नहीं ? तु ने अपने मन में इस व्वात को कग्रों श्राने दीग्र ? तु
५ मनुष्य के श्रागे नहीं पनंतु इसन के श्रागे झुठा ऊश्रा। श्रैान हननीग्रा ग्रे व्वातें सुनते ही गीनपड़ा श्रैान मन गग्रा तव्
६ जीनहों ने ग्रे व्वातें सुनीं उन पन व्वड़ी डन पड़ी। तव् तनुनों ने श्राके उसे व्वसतन में लपेट व्वाहन ले जाके गाड़ दीग्रा।
७ श्रैान पहन भन के श्रटकल व्वीते उसकी इसतीनी उस व्वात को
८ श्रजाने ऊप्रे श्राइ। तव् पतनस ने उसे कहा, मुहे व्वतला तु
९ ने इतने को वॅंयी वुह व्वाली हां इतने को। फेन पतनस ने उसे कहा की ग्रह कैसा है की तुम ने इसन के श्रातमा को पनप्पने का जुकत कीग्रा देप्प जीनहों ने तेने पती का गाड़ा
१० उनके पांव दुवान पन हैं श्रैान तुहे भी ले जाग्रेंगे। तव् तुनंत वुह उसके यनन पन गीन के मन गइ श्रैान तनुनों ने श्राके उसे मनी ऊइ पाग्रा श्रैान व्वाहन ले जा उसके पती के लग गाड़ा।
११ तव् सानी मंडली पन श्रैान इन व्वातों के साने सुनवैग्रों पन
१२ व्वड़ी डन पड़ी। श्रैान लोगों में पनेनीतों के हाथों से व्वऊत से श्रासयनज श्रैान लछन दीप्पाग्रे गग्रे श्रैान वे प्रेक मता हो
१३ सुलेमान के श्रोसाने में नहते थे। श्रैान नहे ऊप्रे लोगों में से कीसी को उन में मीलने को साहस न ऊश्रा पनंतु मंडली ने
१४ उनकी पनतीसठा की। तव् पुनुप्प श्रैान इसतीनी मंडली की मंडली व्वीसवास लाते ऊप्रे पनभु में श्रानंद से मीलते गग्रे।
१५ ग्रहां लों की लोग नोगीग्रों को मानगों में ला ला के व्वीछैाने श्रैान प्पाटों पन नप्पते थे जीसतें यलते ऊप्रे पतनस की पनछाइं
१६ उन में से कीसी पन पड़े। श्रैान व्वऊत से लोग यानों श्रोन के नगनों के भी नोगीग्रों को श्रैान श्रपवीतन श्रातमा से गनसतों को ग्रनोसलीम में लाते थे श्रैान सव् यंगे होते थे।
१७ तव् पनघान ग्राजक श्रैान उसके साने संगी जो ज़ादुकीग्रों के

१८ मत के थे जलोत हो। पनेनोतों पन हाथ डाले श्चैान उनहें
१९ समान ब्रंदीगीनह में ब्रंद कीया। पनंतु पनभु के ग्रेक दुत ने
नात को ब्रंदीगीनह के दुवानों को प्पोला श्चैान उनहें ब्राहन
२० ले जा के कहा। जाश्चो मंदीन में प्पड़े होके इस जीवन के साने
२१ ब्रयन लोगों से कहो। यह सुन वे ब्रड़े तड़के मंदीन में जाके
उपदेस कनने लगे पनंतु पनघान याजक श्चैान उसके संगीयों
ने श्चाके सभा को श्चैान इसनाइल के संतानों के साने पनाय्यीनों
को ग्रेकठे ब्रुलाया श्चैान ब्रंदीगीनह में भेज के उनहें मंगाया।
२२ पनंतु पीश्चादों ने श्चाके उनहें ब्रंदीगीनह में न पाया तब्र लैाट
२३ के उनहें संदेस दीया। की हम ने तो ब्रड़ी यैाकसी से ब्रंदी-
गीनह को ब्रंद श्चैान पहनों को दुवानों के श्चागे प्पड़ा पाया
२४ पनंतु प्पोल के कीसी को भीतन न पाया। सो जब्र सनेसट
याजक श्चैान मंदीन के पनघान श्चैान पनघान याजकों ने ये
ब्रातें सुनीं तो उनके ब्रीप्पे में संदेह में पड़े की यह कया होगा।
२५ पनंतु ग्रेक ने श्चाके उनसे कहा, देप्पो जीन मनुप्पों को तुम हों ने
ब्रंदीगीनह में डाला था मंदीन में प्पड़े ऊग्रे लोगों को उपदेस
२६ कनते हैं। तब्र पीश्चादों को लेके पनघान गया श्चैान उन पन
ब्रीना उपदनव कीये ऊग्रे ले श्चाया कयोंकी वे लोगों से डन
२७ ग्रैसा न हो कहीं पथनाये जायें। श्चैान उनहें लाके सभा के
२८ श्चागे प्पड़ा कीया श्चैान पनघान याजक ने उनसे पुछा। की
हम ने तुमहें दीनढ़ता से न यीताया की इस नाम से उपदेस
मत कनो श्चैान देप्पो तुम लोगों ने यनोसलीम को श्चपने उपदेस
से भन दीया है श्चैान याहते हो की इस मनुप्प का लोऊ हम
२९ पन घनो। तब्र पतनस श्चैान नहे ऊग्रे पनेनातों ने उतन देके
कहा, हमें उयीत है की इसन को मनुप्प से पहीले मानें।
३० हमाने पीतनों के इसन ने यसु को उठाया जीसे तुम लोगों ने
३१ पेड़ पन टांग के घात कीया। उसे इसन ने श्चगुश्चा श्चैान मुकत-
दाता कनके श्चपनी दहीनी श्चोन ब्रढ़ाया जीसतें इसनाइल को

३२ पसयातापकनवाके पापों से छुड़ावे। और इन व्रातों के हम लोग साप्यो हैं और घनमातमा भी जीसे इसन ने उनहें दीया
३३ है जो उसे मानते हैं। यह सुनके वे उन पन दांत कीयकीयाने
३४ लगे और उन सभों को घात कनने को पनामनस कीया। तव जमलइल नाम ऐक फनीसी ने, जो वैवसथा गोआता और सव लोगों में घादनमान था उठके पनेनीतों को तनीक व्राहन कनने
३५ की अगया की। और उनहें कहा हे इसनाइली मनुष्यों तुम लोग जो कुछ उन मनुष्यों को कीया याहते हो उस से यैाकस
३६ नहो। कयोंकी इन दीनों से आगे सुदास ने उठके आप को काइ महामनुष्य ठहनाके गीनती में यान सहसन जन के लग भग उस से मील गये वुह माना गया और जीतनों ने उसे मान
३७ लीया था सव के सव छींन भींन होके मीट गये। उसके पीछे यहुदा जलीली कन लेने के दीनों में उठा और अपने पीछे व्रहुत से लोगों को खींय लाया वुह भी नसट हुआ और जीतनों ने
३८ उसे माना था वे सव व्रीथन गये। सो अव्र मैं तुमहों से कहता हुं की इन मनुष्यों से नुके नहो और उनहें नहने देओ कयोंकी जो यह मंतन अथवा यह कानज मनुष्य से है तो मीट जायगा।
३९ पनंतु जो यह इसन से है तो तुम लोग उसे मीटा नहीं सकते,
४० न हो की इसन के व्रनुध संगनामी ठहनो। और उनहों ने उसे माना और पनेनीतों को व्रुलाके माना और येता दीया
४१ की यसु के नाम से कछ न व्रोलें और उनहें छोड़ दीया। सो वे सभा के आगे से आनंद कनते यले गये की हम उसके नाम
४२ के लीये सताये जाने के जोग गीने गये। और वे पनती दीन मंदीन में और घन घन में उपदेस कनने से और यसु मसीह को पनयानने से अलग न नहे।

६ छठवां पनव्र।

सीप्यों के व्रीवाद के माने सात सेवक का ठहनाया

जाना १—६ व्रहुतें का व्रीसवास लाना ओर मसीह के लीय़े इसतीफान का पकड़ा जाना ६—१५।

१ ओर उन दीनें में जव्र सीष्यन की व्रढ़ती होने लगीं य़ुनानी इव्रनानीय़ों के व्रीनुध कुड़कुड़ाने लगे कय़ोंकी पनती दीन की
२ सेवा में उनकी व्रीधवा छोड़ी जाती थीं। तव्र उन व्रानह ने सीष्यें की मंडली को वुला के कहा, य़ह उयीत नहीं की हम
३ इसन के व्रयन को छोड़ के ष्याने पीने की धंधा में नहें। सो हे भाइय़ो अपने में से सात पनष्ये ऊए मनुष्य को युनो जो धनमातमा ओर वुध से भने ऊए हों जीनहें हम इस कानज
४ पन ठहनावें। ओर हम आप पनानथना में ओर व्रयन की
५ सेवा में नीत लवलीन नहेंगे। सो उस व्रयन से सानी मंडली पनसंन ऊइ ओर उनहों ने इसतीफान को, जो व्रीसवास ओर धनमातमा से भना ऊआ था ओर फीलव्रुस ओर पनकनस ओर नीकानुन ओर तीमुन ओर पानमनास ओर अंताकी
६ नय़ा य़हूदी नीकलावस को युन लीय़ा। उनहें जीनहों ने पनेनीतें के आगे धना ओर वे पनानथना कनके उन पन हाथ
७ नष्ये। ओर इसन का व्रयन व्रढ़ा ओर य़नोसलीम में सीष्यें की गीनती व्रऊत व्रढ़गइ ओर य़ाजकें की व्रड़ी मंडली भी
८ व्रीसवास के अधीन ऊइ। ओर इसतीफान अनुगीनह ओर सामनथ से पुनन होके व्रड़े व्रड़े आसयनज ओर लछन लोगें
९ को दीष्याय़ा कीय़ा। तव्र लीव्रनतीय़ों ओर कननीय़ों ओर सीकंदनीय़ों ओर कलकीय़ा ओर आसीय़ा के लोगें की मंडली
१० में से कीतने उठके इसतीफान से व्रीव्राद कनने लगे। ओर वे उस के गय़ान ओर आतमा की व्रानता के सामने ठहन न सके।
११ तव्र वे लोगें को उभाड़ के वुलवाय़े की हम ने उसे मुसा ओर
१२ इसन के व्रीष्यय़ में पाष्यंड व्रकते सुना है। ओर उनहों ने लोगें को ओर पनायीनें ओर अधापकें को उसकाय़ा ओर

१३ लपक के उसे पकड़ा और सभा में प्लींच ले गये। और झुठी साप्पी प्पड़े कीझे जीनहों ने कहा की यह मनुप्प इस पवीतन सथान के और व्रैवसथा के व्रीप्पय में पाप्पंडता व्रकना नहीं
१४ छोड़ता है। कय़ोंकी हम ने उसे कहते सुना है की यह यसु नासनी इस सथान को नास कनेगा और उन व्रेवहानों को,
१५ जो मुसा ने हम सभों को सैंपा पलट डालेगा। और सभा के साने व्रैठवैयों ने उस पन टक लगाके दीनीस्ट की और उसके नुप को देप्पा की दुत के समान ऊआ।

७ सातवां पनव्र।

यऊदीयों का समायान इव्रनाहीम के समय से इसतीफ़ान का व्रननन कनना १—५० सुनवैयों पन दोप्प लगाना ५१—५३ उनका कनोघीत होना और इसतीफ़ान को घात कनना ५४—६०।

१ तव्र पनघान याजक ने पुछा की ये व्रातें योंहीं हैं ?।
२ वुह व्रोला की हे मनुप्प भाइयो और हे पीतनो सुनो प्पनान में व्रसने से पहीले जव्र हमाना पीता इव्रनाहीम इनमनहन में
३ था तेजोमय इसन उस पन पनगट ऊआ। और उसे कहा की अपने देस और अपने कुटुंव्र में से नीकल जा और जो देस मैं
४ तुझे दीप्पाउंगा उस में यला आ। तव्र उसने कलदीयों के देस से नीकल के प्पनान में व्रास कीया और जव्र उसका पीता मन गया वुह वहां से इस देस में उठ आया जीस में अव्र तुम
५ लोग व्रसते हो। और उसने उसे वहां कुछ अघीकान पैनभन भुम लों न दी पन उसने व्रयन दीया की मैं इसे तेने और तेने पीछे तेने व्रंस के व्रस में देउंगा और तव्र उसका कोइ पुतन न
६ था। और इसन ने उसे युं कहा की तेना व्रंस पनदेस में जा नहेगा और वे उनहें व्रंघुआ कनेंगे और यान सै। व्रनस लों

७ उनकी दुनदसा कनेंगे। श्रौन इसन ने कहा की जीन लोगों
के वे दास होगे मैं उनका नयाय़ कनुंगा श्रौन उसके पीछे वे
८ व्राहन श्रावेंगे श्रौन इस सथान में मेनी सेवा कनेंगे। श्रौन
उसने उसे प्पतनः का नीय़म दीय़ा श्रौन उस से इसहाक़ उतपंन
ज्ञ्श्रा श्रौन श्राठवें दीन उसका प्पतनः कीय़ा श्रौन इसहाक़ से
य़ाकुव़ श्रौन य़ाकुव़ से घनाने के व्रानह पीतनाघक्क उतपंन ज्ञ्पे।
९ श्रौन पीतनाघक्को ने डाहके माने य़ुसफ़ को मीसन में व्रेंया
१० पनंतु इश्वन उसके संग था। श्रौन उसने उसको साने कसट से
छुड़ाय़ा श्रौन मीसन के नाजा फ़नउन के श्रागे उसे श्रनुगीनह
श्रौन वुघ दी श्रौन उसने उसे मीसन का श्रौन श्रपने साने घन
११ का श्रघक्क कीय़ा। श्रव़ मीसन के साने देस श्रौन कौनान में
श्रकाल पड़ा श्रौन व्रड़ा कलेस ज्ञ्श्रा श्रौन हमाने पीतनों को कुछ
१२ जीवका न मीलती थी। पनंतु जव़ य़ाकुव़ ने सुना की मीसन
१३ में श्रंन है उसने पहीले हमाने पीतनों को भ्रेजा। श्रौन दुसने
व्रेन य़ुसफ़ ने श्राप को श्रपने भ्राइय़ों पन पनगट कीय़ा श्रौन
१४ य़ुसफ़ का घनाना फ़नउन को जाना गय़ा। तव़ य़ुसफ़ ने
भ्रेज कन श्रपने पीता य़ाकुव़ श्रौन श्रपने साने घनाने को जो
१५ पयहतन पनानी थे व्रुलवाय़ा। सो य़ाकुव़ मीसन को उतन
१६ गय़ा श्रौन वुह श्रौन हमाने पीतन मन गय़े। श्रौन उनहें
सप्पीम में ले गय़े श्रौन उस समाघ में गाड़ा जीसे इव्रनाहीम
ने कुछ दाम देके हमुन के व्रेटे सप्पीम के पीता से मोल लीय़ा
१७ था। पनंत जव़ उस व्रयन का समय़ नकट पज्ञ्ंया जीस पन
इसन ने इव्रनाहीम से कीनीय़ा प्पाइ थी तव़ लोग श्रघीक ज्ञ्पे
१८ श्रौन मीसन में व्रढ़ गय़े। जव़ लो दुसना नाजा ज्ञ्श्रा जो
१९ य़ुसफ़ को न जानता था। उसने हमानीं जात पांत से छल
कनके हमाने पीतनों से वुना व्रेवहान कीय़ा इहां लों की उनके
व्रंस को नसट कनने को उसने उनके व्रालकों को भ्रा व्राहन
२० नीकलवा दीय़ा। उसीं समय़ में मुसा उतपंन ज्ञ्श्रा जो व्रज्ञ्न

सुनदन था श्रैान तीन मास लें अपने पीता के घन में पाला गया।
२१ श्रैान जव वुह नीकला गया ता फनजुन की पुतनी ने उसे लेके
२२ अपना ही पुतन कनके पाला। श्रैान मुसा ने मीसनीयों की
२३ सानो वीदया पढ़ा श्रैान वुह वोलयाल में नीपुन था। श्रैान
जव पुने याजोस वनस का ऊश्रा ता उसके मन में आया की
२४ अपने भाइ वंद इसनाइल के सनतानों से भेंट कने। श्रैान
उन में से ष्रेक को सताया ऊश्रा देष्प के उसने सहाय की श्रैान
उस मीसनी को घात कनके उसका पनतीफल लीया जीस पन
२५ उपदनव ऊश्रा था। कयोंकी उसने समहा था की उसके भाइ
वंद जान जायेंगे की इसन उनहें उसके हाथ से उघान देगा
२६ पनंतु उनहों ने न समहा। फेन दुसने दीन जव वे हगड़ नहे
थे वुह उन पास आया श्रैान याहा की उनहें मीला देवे श्रैान
वोला की हे मनुष्यो तुम तो भाइ हो तुम ष्रेक दुसने को कयों
२७ सताते हो?। पनंतु जीसने अपने पनोसी को सताया था उसे
हटा के कहा की तुहे कीसने हम पन अयक्ष श्रैान अगयाकानी
२८ कीया है?। कया जैसा तु ने कल मीसनी को घात कीया मुहे
२९ भी घात कनेगा?। उस कहने पन मुसा भागा श्रैान मदीयुन
३० देस में जा नहा जहां उस से दो वेटे उतपंन ऊष्रे। श्रैान जव
याजीस वनस वीत गये तव पनभु का दुत सीना पनवत के वन
में ष्रेक हाड़ी में आग की लवन में उस पन पनगट ऊश्रा।
१ उसे देष्पतेही मुसा उस दनसन से वीसमीत ऊश्रा श्रैान जव
वुह नीकट गया की उसे अछी नीत से देष्पे ता पनभु का सवद
२ यह कहते ऊष्रे उस पास आया। की मैं तेने पीतनां का इसन
इवनाहीम का इसन इसहाक का इसन याकुव का इसन ऊं
तव मुसा कांप गया श्रैान उसे देष्पने को हीयाव न ऊश्रा।
३३ तव पनभु ने उसे कहा की जुती अपने पाश्रों से उतान कयोंकी
३४ जीस सथान पन तु ष्पड़ा है सो पवीतन भुम है। अपने लोगों की
दुनदसा जो मीसन में हैं नीसचय मैं देष्प नहा ऊं श्रैान मैं ने

उन का व्रीलाप सुना और उनहें छुड़ाने को उतना हुं अव्र
३५ तु इधर आ मैं तुहे मीसर में भेजुंगा। यह मुसा जीसे उनहें
ने मुकर के कहा की कीस ने तुहे हम पर परधान और नयाइ
कीया? उसी को उस दुत की ओर से, जो झाड़ी में उस पर
दीष्याइ दीया इसर ने परधान और उधारक करके भेजा।
३६ वही मीसर के देस में और लाल समुदर में और व्रन में
यालीस व्ररस आसयरज और लछन दीष्या के उनहें व्राहर
३७ नीकाल लाया। यही है वुह मुसा जीसने इसराइल के संतान
को कहा की परभु इसर तुमहारे भाइयों में से मेरे समान एक
भवीसदव्रकता को तुमहारे लीये उदय करेगा तुम उसकी
३८ सुनयो। यह वुह है जो मंडली के व्रीय व्रन में उस दुत और
हमारे पीतरों के संग, जो सीना परव्रत में उस से व्रोला उसी ने
३९ हमें देने को जीवत व्रयन पाया। हमारे पीतर उसे मानने
को न याहते थे परंतु अपने पास से दुर कीया और अपने
४० मन से मीसर को फीर गये। और हारुन को कहा की हमारे
लीये ऐसे देव व्रनाओ जो हमारे आगे आगे यलें कयोंकी लीस
मुसा ने हमें मीसर की भुम से व्राहर नीकाला हम नहीं जानते
४१ की वुह कया हुआ। और उन दीनों में उनहें ने एक व्रछड़ा
व्रनाया और मुरत के लीये व्रल यढ़ाया और अपने हाथ के
४२ कारजों से मगन हुए। तव्र इसर ने फीरके आकास के सेना
की पुजा करने को उनहें छोड़ दीया जैसा की भवीसदव्रकतों
की पुसतक में लीष्या है की हे इसराइल के घराने तुमहीं
लोगों ने यालीस व्ररस व्रन में मुहे भेंट और व्रलदान यढ़ाये।
४३ हां तुम सभों ने मलुक के तंव्रु को और अपने देव रंफान की
तारा को, अरथात उन मुरतीन को उठाया जो तुम लोगों ने
पुजा करने को व्रनाई इस लीये मैं तुमहें व्राव्रुल से परे ले
४४ जाउंगा। हमारे पीतरों के साथ साष्या का तंव्रु व्रन में था
जैसा उसने ठहराया था जीसने मुसा से व्रातें कीं, की जैसा तु ने

४५ देप्पा था उसी डौल का प्रेक व्रना। उसे हमाने व्राप दादे पाके ग़सुअ के संग अदेसीग़ें के देस में लाग़े जीनहें हमाने पीतनें के आगे से दाउद के समग़ लें इसन दुन कनता नहा।
४६ उसने इसन के आगे अनगीनह पाके याहा की ग़ाकुव्र के इसन
४७ के लीग़े प्रेक तंव्रु व्रनावे। पनंतु सुलेमान ने उसके लीग़े मंदीन
४८ व्रनाग़ा। तथापी हाथ के व्रनाग़े ऊप्रे मंदीनें में अती महान
४९ नहीं नहता जैसा की भवीसदव्रकता कहता है। की सनग मेना सींहासन औन पीनथीवी मेने पांव की पीढ़ी है पनभु कहता है तुम लोग मेने लीग़े कैानसा घन व्रनाओगे? अथवा मेने
५० व्रीसनाम का कैानसा सथान है?। कग़ा मेने हाथ ने ग़े सानी
५१ व्रसतें नहीं व्रनाइं?। हे कठोन गले औन मन औन कान के अप्पतनः तुमलोग अपने अपने पीतनें के समान नीत घनमा-
५२ तमा का बीनोघ कनते हो। कैान से भवीसदव्रकतें को तुमहाने पीतनें ने न सताग़ा? औन उनहों ने उनहें मान डाला जीनहों ने उस घनमी के आने के आगे से संदेस दीग़ा औन तुम लोग अव्र उसके पकड़ाउ औन व्रधीक ऊप्रे हो।
५३ तुमहों ने व्रैवसथा की दुतें की ओान से पाग़ा औन न माना।
५४ ग़े व्रातें सुनतेही वे अपने मन में कट गग़े औन उस पन दांत
५५ कीचकीचाने लगे। पनतु घनमातमा से पुनन होके उसने सनग की ओान घग़ान से देप्पा औन इसन के प्रेसनग़ को
५६ औन ग़सु को इसन के दहीने हाथ प्पड़ा देप्पा। औन कहा की देप्पो मैं सनगें को प्पुला औन मनुप्प के पुतन को इसन के
५७ दहीने हाथ प्पड़े देप्पता ऊं। तव्र उनहों ने व्रड़े सव्रद से चीला के अपने कान को मुंद लीग़ा औन प्रेक साथ उस पन लपके।
५८ औन नगन से व्रहान नीकाल के उस पन पथनवाह कीग़ा औन साप्पीग़ों ने अपने कपड़े को सुलुस नाम प्रेक तनुन के पांव पास
५९ नप्प दीग़ा। औन इसतीफान को ग़ह कहके पनानथना कनते की हे पनभु ग़सु मेने पनान को गनहन कन उनहों ने पथनवाह

६० कीआ। और वह घटने टेकके व्रड़े सव्रद से पुकान के व्रोला की हे पनभु व्रह पाप उन पन मत घन और व्रह कहके सो गया।

८ आठवां पनव्र।

पनभु के सीष्यों का सताया जाना १—३ मत का फैलना ४—१३ पतनस और युहना का सीष्यों को दीनढ़ कनना १४—२५ फैलवुस के दुवाना से हवसी पनघान का सनान पाना २६—३८ फैलवुस का मंगल समाचान का उपदेस कनना ३९—४०।

१ और सुलस भी उसके घात से पनसंन था और उस समय में यनोसलीम की मंडली पन व्रड़ा उपदनव हुआ और पनेनीतों को छोड़ सव्रके सव्र यहूदीआ: और सामन: के देस में व्रीथन
२ गये। और भकतों ने इसतीफान को गाड़ा और उसके लीये
३ व्रड़ा व्रीलाप कीया। और सुलस घन घन घुसके मंडली को सतयानास कीया कनता था और पुनुष्यों और इसतीनीयों
४ को घींच घींच व्रंदीगीनह में डालता था। पन जो छीन भीन हुए थे सो हन एक सथान में जा जा के व्रयन को पनचानते
५ गये। तव्र फैलवुस ने सामन: के नगन में जा के मसीह का
६ उपदेस कीया। और लोगों ने उन लछन को, जो फैलवुस दीखावता थ, सुनके और देखके एक मत हो उसकी व्रातें चीत
७ लगा के सुनी। कयोंकी अपवीतन आतमा व्रहुतेने गनसतों से व्रड़े सव्रद से चीला के नीकले और व्रहुतेने अनधांगी और
८ लंगड़े चंगे हुए। और उस नगन में व्रड़ा आनंद हुआ।
९ पनंत उसी नगन में उस से पहीले समउन नाम एक मनुष्य था जीसने टोना से सामन: के लोगों को मोह लीया था और कहता
१० था की मैं व्रड़ा कोइ हुं। और छोटे से व्रड़े लों सव्र उसकी

पनतीत कनके कहते थे की यह मनुष्य ईसन का व्रड़ा पनाकनम
११ है। और उसके टोना से उनहें मोह लेने के कानन वे उसके
१२ व्रीसवासी हो नहे थे। पनंतु जव्र उनहों ने ईसन का नाज और
यसु मसीह के नाम के व्रीष्यै में फ़ैलवुस को पनचानते सुना
तो कया पुनुष्य कया ईसतीनी व्रीसवास ला ला के सनान पावने
१३ लगे। तव्र समउन आप भी व्रीसवास लाया और सनान पाके
फ़ैलवुस के संग नहा कीया और आसयनज कनम और व्रड़े
१४ लछन, जो पनगट ऊए थे देष्य के व्रीसमीत ऊआ। जव्र
यनोसलीम में के पनेनीतों ने सुना की सामनीयों ने ईसन के
व्रचन को गनहन कीया उनहों ने पतनस और युहना को उन
१५ पास भेजा। उनहों ने वहां जाके उनके लीये पनानथना की
१६ कीसतें वे घनमातमा को पावें। (कयोंकी अव्र लों वुह उन में
से कासी पन न पड़ा था केवल उनहों ने पनभु यसु के नाम से
१७ सनान पाया था)। तव्र उनहों ने उन पन हाथ घने और
१८ उनहों ने घनमातमा को पाया। और जव्र समउन ने देष्या
की पनेनीतों के हाथ घनने से घनमातमा दीया जाता है तो
१९ वुह उनहें नोकड़ देने लगा। की मुझे भी यही पनाकनम देओ
२० की जीस पन मैं अपना हाथ घनुं वुह घनमातमा पावे। तव्र
पतनस ने उसे कहा की तेना नोकड़ तेने संग नसट होय ईस
लीये की तु ने समझा की ईसन का दान नोकड़ से मोल लीया
२१ जाता है। ईस व्रसतु में तेना भाग अथवा अघीकान नहीं
२२ है कयोंकी ईसन को दानीसट में तेना मन षना नहीं। ईस
लीये अपनी ईस दुसटता से पसयाताप कन और ईसन से
पनानथना कन कया जाने तेने मन की यीनता छमा की जाय।
२३ कयोंकी मैं देष्यता ऊं की तु कड़ुआहट के पीते में और पाप के
२४ व्रंघन में है। तव्र समउन ने उतन देके कहा की तुम मेने
लीये पनभु से पनानथना कनो की उन व्रसतुन में से जो तुम
२५ ने कही हैं कुछ मुझ पन न पड़े। और वे साष्यी देके और

परभु का बचन परचार के यरोसलीम को फीरे और सामरी-
२६ यों के बहुत से गांवों में मंगल समाचार परचारा। और
परभु का दुत फीलबुस को यह कहके बोला की उठ और
दखीन की ओर उस मारग में जा जो यरोसलीम से गजः को
२७ जाता है और बन है। वुह उठ के चला गया और देखा की
एक हबसी खोजा, जो हबस की रानी कंदाकी का एक बड़ा
परधान और उसके सारे घर का भंडारी था और यरोसलीम
२८ में सेवा के लीये आया था। वुह फीरा चला जाता था और
अपने रथ पर बैठा हुआ असीया भवीसदबकता के बचन को
२९ पढ़ता था। तब आतमा ने फीलबुस को कहा की पास जा
३० और अपने को इस रथ से मीला। तब फीलबुस ने उधर
दौड़ के उसे असीया भवीसदबकता का पढ़ते सुना और उसे
३१ कहा की जो आप पढ़ते हैं सो समझते हैं?। वुह बोला की
बीना कीसी के बताये मैं कयोंकर समझ सकुं और उसने
३२ फीलबुस को उपर बुलाके अपने पास बैठाया। और उस लीखे
हुए का सथल जो वुह पढ़ता था यह था की वह उस भेड़ की
नाईं घात के लीये पहुंचाया गया और मेमना की नाईं अपने
कतरवैया के आगे चुप चाप है सो उसने अपना मुंह नहीं
३३ खोला। उसकी दीनताई से उस का बीचार न होने पाया
और उसकी पीढ़ी के लोगों की चरचा कौन करेगा? कयोंकी
३४ उसका जीवन पीरथीवी से उठाया गया। और उस खोजे ने
फीलबुस को उतर देके कहा की मैं बीनती करता हुं की
भवीसदबकता कीसके बीखै में यह कहता है? अपने अथवा
३५ दुसरे मनुष्य के?। तब फीलबुस अपना मुंह खोल के उसी
३६ बचन से यसु का भेद परचारने लगा। और जाते जाते वे
कीसी जल के पास पहुंचे तब खोजे ने कहा देखीये जल, अब
३७ मुझे सनान पावने से कौनसी बात रोकती है?। फीलबुस ने
कहा की जो आप सारे अंतःकरन से बीसवास लाये हैं तो जोग

है उसने उतन देके कहा की मैं वीसवास लाता ऊं की ईस
१८ मसीह ईसन का पुतन है। तव उसने नथ पड़ा कनने को
आगआ की और फरैलवुस और पोजा दोनों जल में उतने
१९ और उसने उसे सनान दीआ। और जव वे जल से वाहन
नीकले पनभु के आतमा ने फरैलवुस को उठा लीआ और पोजे
ने उसे फेन न देखा और वुह आनंद से अपने मानग यला
४० गआ। पनंतु फरैलवुस आजोतुस में दीखाई दीआ और
उसने जाते ऊए सानें नगनों में कैसनीआ में पऊंयने लों
उपदेस कीआ।

९ नवां पनव।

साउल का वैन कनना और आकास वानी से फीना-
आ जाना १—९ हनानीआ का उसे सनान देना
१०—१९ साउल का मसीह की पनयानना और
आऊदीओं का उसके घात में नहना २०—२५ साउल
का अनोसलीम में सीखों में आना और अऊदीओं
के वैन से भाग नीकलना २६—३१ पतनस का एक
अनघांगी को यंगा कनना और एक मीनतक को
जीलाना ३२—४३।

१ और अव लों सुलुस पनभु के सीखों के वीनोघ में धमकी
और घात कनने पन जी यलाके पनधान आजक के पास गआ।
२ और उस से दमीसक की मंडलीओं के लीए ईस नीत की पतनी
मांगी की जो मैं कीसी को ईस मत में पाउं कआ ईसतीनी कआ
३ पुनुष्प तो उनहें वांघ के अनोसलीम में लाउं। और जव वुह
यला जाता था और दमीसक के पास आआ ऐसा ऊआ की
४ आकसमात एक जोत सनग से उसके यानों ओन यमकी। तव
वुह भुम पन गीन पड़ा और अह कहते ऊए एक सवद सुना की

५ सुलुस सुलुस तु मुझे कयों सताता है ?। उसने पुछा की हे पनभु तु कौन है ? पनभु ने कहा की मैं यसु हुं जीसे तु सताता
६ है पनइयों पन लात चलाने में तेने लीये कठीन है। वुह कंपीत और वीसमीत होके बोला, हे पनभु तेना इछा से मैं कया कनुं ? पनभु ने उसे कहा की उठ और नगन में जा और
७ जो कछ तुझे कनना उचीत है सो कहा जायगा। और उसके संग के जातनीक वीसमीत खड़े नह गये कयोंकी सबद को तो
८ सुनते थे पनंतु कीसी को न देखते थे। तब सुलुस भुम पन से उठा और आखें खोलते हुऐ उसे कुछ सुझ न पड़ा पनंतु वे
९ उसका हाथ पकड़ के दमीसक में लाये। और वुह तीन दीन
१० लों बीना दीनीसट नहा और न खाया न पीया। और दमीसक में हनानीया नाम ऐक सीख था जीसे पनभु ने दनसन में कहा की हे हनानीया वुह बोला, हे पनभु देख मैं हुं।
११ पनभु ने उसे कहा की उठके उस मानग को जा जो सीधा कहावता है और सुलुस नाम ऐक तनसी मनुष्य को यहुदा के घन में
१२ ढुंढ कयोंकी देख वुह पनानथना कनता है। और जीसनें वुह अपनी दीनीसट फेन पावे उसने दनसन में हनानीया नाम ऐक जन को भीतन आते और अपने उपन हाथ धनते देखा।
१३ तब हनानीया ने उतन दीया की हे पनभु मैं ने बहुतों से उस मनुष्य के बीषे में सुना है की उसने यनोसलीम में तेने सीधों
१४ के संग बहुत बुनाइ की है। और सब जो तेना नाम लेते हैं उनहें बांधने को यहां भी पनधान याजकों की ओन से पना
१५ कनम नखता है। पनंतु पनभु ने उसे कहा की चला जा कयोंकी अंनदेसीयों के और नाजा के और इसनाइल के संतानों के आगे मेना नाम पहुंचाने को वुह मेने लीये चुना
१६ हुआ पातन है। कयोंकी मेने नाम के लीये उसे कैसा बड़ा
१७ दुख उठाना अवस है मैं उसे दीखाउंगा। तब हनानीया नीकल के उस घन में गया और अपना हाथ उस पन नख के

कहा है भाइ सुलुस पनभु य़सु ने, जो तझे उस मानग में, जीस
से तू आया है दनसन दीय़ा मुझे भेजा है जीसतें तु अपनी
१८ दीनीसट पाके घनमातमा से भन जाय़। और तुनंत उसकी
आंप्पों से कुछ छीलक से गीने और उसने ततकाल अपनी
१९ दीनीसट फेन पाइ और उठके सनान पाय़ा। और कुछ
भोजन कनके वल पाय़ा फेन सुलुस कइ दीन दमीसक में
२० सीप्पों के संग नहा। और तुनंत मंडलीय़ों में वुह पनयानने
२१ लगा की मसीह इसन का पुतन है। पनंतु सव जो सुनते थे
वीसमीत होके वोले कया य़ह वुह नहीं जीसने य़नोसलीम में
उन पन उपदनव कीय़ा जो इस नाम को लेते थे और य़हां इस
लीये आय़ा की उनहें वांघ के पनधान य़ाजकों के पास ले
२२ जाय़। पनंतु सुलुस ने और भी दीनढ़ता की और दमीसक
के वासी य़हूदीय़ों को पनमान ला ला के घवनाय़ा की वही
नीसयय़ मसीह है।
२३ और वहुत दीन के वीतने में य़हूदीय़ो ने उसे घात कनने को
२४ पनामनस कीय़ा। पनंतु उनका मनसा सुलुस को जान पड़ा
और उसे घात कनने को उनहों ने नात दीन फाटकों की
२५ चौकसी की। तव सीप्पों ने नात को उसे लाय़ा और भीत पन
२६ से टोकने में उतान दीय़ा। और सुलुस ने य़नोसलीम में
आके चाहा की सीप्पो में मीले पनंतु उसका सीप्प होना पनतीत
२७ न कनके वे उस से डन गय़े। तव वननवास ने उसे लेके पनेनीतों
पास पहुंचाय़ा और जीस नीत से उसने पनभु को मानग में
देप्पा था और उस से वातें की और जीस नीत से दमीसक
में य़सु के नाम को साहस से पनयाना उन से वननन कीय़ा।
२८ और वुह य़नोसलीम में उनके संग आता जाता था।
२९ और पनभु य़सु के नाम के हाय़ाव से पनयानता था और य़ूना-
नीय़ों से वीवाद कनता था पनंतु वे उसके घात में लगे। य़ह
३० जानके भाइय़ों ने उसे कैसनीय़ा में पहुंचाय़ा और तनसस को

३१ ओान व़ीदा कीय़ा। तव़ सानी य़ऋदीय़: कौ ओान जलील कौ ओान सामन: कौ मंडलीय़ों ने येन पाय़ा ओान सुधन गय़े ओान पनभु के भय़ में ओान धनमातमा की सांत में यल यल के व़ढ़ गय़े।
३२ ओान ऐसा ऊआ की पतनस सनव़तन फीनते लदा में के साधुन
३३ पास आय़ा। ओान वहां अनीय़ास नाम ऐक मनुष्य को पाय़ा
३४ जो अनधांगी होके आठ व़नस से ष्पाट पन पड़ा था। पतनस ने उसे कहा की अनीय़ास य़सु मसीह तुहे यगा कनता है
३५ उठ अपना व़ीछौना सुधान ओान वुह तुनंत उठा। तव़ लदा ओान सानुन के व़ासी उसे देष्प के पनभु का ओान फीने।

३६ अव़ य़ाफा में ताव़ीता नाम ऐक सीष्पा थी जीसका अनथ
३७ दनकास है वुह सुनम ओान दान से भनपुन थी। ऐसा ऊआ की वुह उन दीनों में नोगी होके मनगई ओान उसे नहला के
३८ ऐक उपनौटी कोठनी में नष्पा। ओान जैसा की लदा य़ाफा से नीकट था सीष्पों ने पतनस का वहां होना सुनके दो मनष्प को भेज के उसको व़ीनती की, की हमाने पास आवने में व़ीलंव़
३९ न कीजीय़े। तव़ पतनस उठके उनके संग हो लीय़ा जव़ वुह पऊंया वे उसे उपनाटी कोठनी में लाय़े ओान सानी नाड़ें उस पास ष्पड़ी होके नोती, कुढ़ती ओान ओाढ़ने दीष्पाती थीं जो
४० दनकास ने उनके संग नहते ऊऐ व़नाय़े थे। तव़ पतनस ने उन सभा को व़ाहन कीय़ा ओान घुटना टेक के पनानथना की ओान लोथ का ओान फीन के कहा की ताव़ीता उठ तव़ उसने
४१ अपनी आंष्पें ष्पोलीं ओान पतनस को देष्प के उठ व़ैठी। ओान उसने हाथ देके उसे उठाय़ा ओान साधुन को ओान नाड़ों को
४२ व़ुलाके उसे जीवती उनहें सौंप दीय़ा। तव़ य़ह सानी य़ाफा
४३ में फैल गई ओान व़ऊतेने पनभु पन व़ीसवास लाय़े। ओान वुह व़ऊत दीन लों समउन नाम ऐक यनमकान के संग य़ाफा में नहा कीय़ा।

१० दसवां पनब्र।

एक दुत का कननीलीयुस पन पनगट होना औन पतनस का बुलवाना १—८ पतनस का दनसन पाना ९—१६ आतमा की अगाया से कननीलीयुस के दुतों के संग जाना १७—२३ पतनस से भेंट कनना औन सब बातें उस पन पनगट कननी २४—३३ पतनस का उपदेस कनना ३४—४३ धनमातमा का उतनना औन लोगों का सनान पाना ४४—४८।

१ कैसनीया: में कननीलीयुस नाम एक मनुष्य था जो अतालौ-
२ की नाम जथा का एक सतपती था। वुह भकत जन था औन
अपने साने घनाने समेत ईसन से डनता था औन लोगों को
बहुत दान भी देता था औन नीत ईसन की पनानथना कनता
३ था। उसने दीन की नवईं घड़ी क अटकल में दनसन में ईसन
के दुत को अपने पास आते देष्पा जीसने उसे कहा की कननी
४ लीयुस। वुह उसे देष्प के डन गया औन कहा की हे पनभु
कया है? उसने उसे कहा तेनी पनानथना औन तेने दान
५ समनन के लीये ईसन के आगे पहुंचे। अब यापरा में लोगों
६ को भेज औन समउन को जीसका नाम पतनस है बुला। वुह
एक समउन चनमकान के संग नहता है जीसका घन सागन
७ तीन है जो कुछ तुझे कनना उचीत है वुह तुझे कहेगा। औन
जब वुह दुत कननीलीयुस से कहके चला गया तो उसने अपने
सेवकों में से दो को औन उन में से जो नीत उसके पास नहते
८ थे एक जोधा भकत को बुलाया। औन सब बातें उनहें कह
९ के यापरा में भेजा। अगीले दीन जाते जाते जयों वे नगन के
पास पहुंचे तो पतनस छटवीं घड़ी के अटकल में कोठे पन
१० पनानथना कनने को चढ़ा। औन उसे बड़ी भुष्प लगी औन
कुछ ष्पाने चाहा पनंतु जब वे बना नहे थे वुह बेसुध हुआ।

११ श्रीन सनग को प्पुला श्रीन यान प्पुंट ब्रंधी ऊई प्रेक ब्रड़ी यादन की नाई अपने पास उतनते भुम लों पऊंयते ऊप्रे कुछ
१२ देप्पा। जीसमें पौनधीदी के सारे पनऊान के यौपाप्रे श्रीन
१३ ब्रनैले पसु श्रीन नेंगवैये श्रीन आकास के पंछी थे। श्रीन प्रेक
१४ सब्रद उस पास आया की उठ पतनस मान श्रीन प्पा। तब्र पतनस ब्रोला की हे पनभु प्रैसा नहीं कयोंकी मैं ने कधी कोई
१५ सामान अथवा असुघ ब्रसतु नहीं प्पाई। तब्र दुसने ब्रेन उस पास फेन सब्रद आया की जो ईसन ने पवीतन कीया है तु
१६ सामान मत कह। यह तीन ब्रान ऊआ श्रीन वुह पातन फेन
१७ सनग पन उठाया गया। सो जब्र लों पतनस मन में संदेह कन नहा था जो दनसन मैं ने देप्पा उसका कया अनथ है देप्पो कननीलीयुस के भेजे ऊप्र मनुप्प समउन का घन पुछके दुवान
१८ पन प्पड़े ऊप्रे। श्रीन पुकान के पुछा, कया समउन जो पतनस
१९ कहावता है यहां नहता है?। जब्र पतनस उस दनसन को सोय नहा था तो आतमा ने उसे कहा की देप्प तीन मनुप्प
२० तुहे ढुंढ़ते हैं। ईस लीये उठ श्रीन उतन के नीसंदेह उनके
२१ संग यला जा कयोंकी मैं ने उनहें भेजा है। तब्र पतनस ने उन मनुप्पों के पास, जो कननीलीयुस के भेजे ऊप्रे थे उतन जाके कहा की देप्पो वुह जीसे तुम लोग ढुंढ़ते हो मैं ऊं कया
२२ कानन है कीस लीये आये हो?। वे ब्रोले की कननीलीयुस सतपती को, जो घनमी मनुप्प श्रीन ईसन से डनता है श्रीन यऊदीयों के सारे लोगों में सुभ नाम ईसन की श्रोन तें प्रेक पवीतन दुत से सौप्पाया गया की तुहे अपने घन ब्रुलावे श्रीन
२३ तुह से ब्रानता सुने। तब्र उसने उनहें भीतन ब्रुला के उनका सीसटायान कीया श्रीन दुसन दीन पतनस उनके संग गया श्रीन
२४ याफा में के कई भाई उसके संग हो लीये। श्रीन दुसने दीन वे कैसनीयः में पऊंये श्रीन कननीलीयुस अपने कुटुमब्र श्रीन
२५ पनमहीतों को प्रेकठे कनके उनकी ब्राट जोहता था। पतनस

के भीतर जाते जाते कर्नीलीयुस ने उस से भेंट कर उसके
२६ चरन पर गीर दंडवत की। परंतु पतरस ने उसे उठा के कहा की
२७ खड़ा हो मैं आप भी मनुष्य हूं। और वुह उस से वातता
करता हुआ भीतर गया और बहुत से लेगों को एकठे पाया।
२८ और उन्हें कहा की तुम लेग जानते हो की यहूदी को
अनुचीत है की अनदेसी से संगत करें अथवा उसके यहां
जायें परंतु ईस्वर ने मुझे दीखाया है की मैं कीसी मनुष्य को
२९ साम न अथवा असुध न कहूं। ईसी लीये मैं जो बुलाया गया
नीसंदेह आया सा मैं पुछता हुं की तुमहों ने मुझे कीस लीये
३० बुलाया है? कर्नीलीयुस ने कहा, चार दीन बीते मैं ईस
घड़ी लों व्रत करता और नवईं घड़ी में अपने घर में प्रार्-
थना करता था और कया देखता हुं की एक मनुष्य झलकते
३१ बसतर में मेरे सनमुख खड़ा है। और बोला की हे कर्नी-
लीयुस तेरी प्रार्थना सुनी गई और तेरे दान ईस्वर के आगे
३२ समरन कीये गये। सो याफा में भेज और समउन को,
जो पतरस कहावता है यहां बुला वुह सागर तीर समउन
चरमकार के घर में टीका है वह जब आवेगा तुझे कहेगा।
३३ ईस लीये तुरंत मैं ने आप पास भेजा और आने में आपने अच्छा
कीया सो अब हम सब यहां ईस्वर के आगे बैठे हैं जीसतें
३४ सब बातें जो आप से ईस्वर ने कहीं हैं सुनें। तब पतरस ने
मुंह खोल के कहा की मुझे ठीक समझ पड़ता है की ईस्वर
३५ मनुष्यों में भीन भाव नहीं करता। परंतु हर एक जात में
जो उस से डरता है और धरम का कारज करता है सो उसको
३६ गराह्य है। यह वही सदेस है जो ईस्वर ने यसु मसीह के
दुवारे से कुसल प्रचारते हुए ईसराईल के संतानों को कहला
३७ भेजा वुह सब का प्रभु है। तुम यस का वुह समाचार जानते
हो जो यहाया के सनान के प्रचारने के पीछे जलील से
३८ आरंभ होके सारे यहूदीयः में होता रहा। की ईस्वर ने

केस नीत से उसे धनमातमा से श्रौन पनाकनम से अभीसेक कीय़ा जो भला कनता फीना कीय़ा श्रौन भूत से सताए ड्डए लोगों को च्चंगा कनता नहा कय़ोंकी ड्डसन उसके संग था।
३९ श्रौन हम लोग उन सव्र व्रातों के साप्पी हैं जो उसने य़ड्डदीय़ों के देस में श्रौन य़नसलीम में कीय़ जीसे उनहों ने लकड़े पन
४० टांग के मान डाला। पनतु ड्डसन ने उसे तीसने दीन उठाय़ा
४१ श्रौन उसे प्पोल के दोप्पाय़ा। पन सव्र लोगों को नहीं पनंतु साप्पीय़ों को श्रनथात हम लोगों को जो पहीले से ड्डसन के चुने ड्डए थे जीनहों ने उसके जी उठने के पीछे उसके संग प्पाय़ा
४२ पीय़ा। श्रौन उसने लोगों में पनच्चानने श्रौन साप्पी देने को हमें श्रगय़ा की, का जीवतों श्रौन मीनतकों का नय़ाइ होने
४३ को ड्डसन ने मुहे ठहनाय़ा है। उस पन साने भवीसद्व्रकता साप्पी देते हैं की जो कोइ उस पन व्रीस्वास लावेगा उसके नाम
४४ से पाप का मोच्चन पावेगा। जव्र पतनस य़े व्रातें कह नहा था
४५ तो साने सुनवैय़ों पन धनमातमा पड़ा। श्रौन प्पतनः कीय़े गय़े व्रीस्वासी जो, पतनस के संग श्राय़े थे व्रीसमीत ड्डए की
४६ श्रंनदेसीय़ों पन भी धनमातमा का दान व्रहाय़ा गय़ा। कय़ोंकी उनहों ने उनहें भांत भांत की व्रोली व्रोलते श्रौन ड्डसन की
४७ सतुत कनते सुना। तव्र पतनस ने उतन दीय़ा की कोइ जल को नोक सकता है जीसतें य़े लोग सनान न पावें? जीनहों ने
४८ हमानी नाइं धननातमा को पाय़ा है। तव उसने उनहें पनभु के नाम से सन न देने की श्रगय़ा की फेन उनहों ने कइ दीन श्रपने य़हां नहने को उसकी व्रीनती की।

११ गय़ानहवां पनव्र।

श्रंनदेसीय़ों में जाने का पतनस का दोप्प पाना श्रौन उस का उतन देना १—१९ व्रननव्रास का

अनतीयुक में भेजा जाना और साउल के संग उपदेस करना २०—२९ वरनवास और सुलुस के दुवारा से यहूदीयः के भाइ पास सहाय भेजनी २७—३०।

१ अव पनेनीतें और यहूदीयः में के भाइयों ने सुना की अंन-
२ देसीयों ने भी इसन का वचन गरहन कीया। और जव पतरस यरोसलीम में आया तो षतनः कीये गये लोगें ने उस
३ से वीवाद करके कहा। की तु अष्पतनें के पास गया और
४ उनके संग ष्याया है। तव पतरस ने आरंभ से उस वात को दोहराया और उनके आगे ढव से वरनन करके कहने लगा।
५ की मैं याफ़रा के नगर में पराथना करता था और वे सुध हो के मैं ने सरग से उतरते हुऐ चारों षूंट वंधे हुऐ ऐक
६ चदर की नाइं अपने पास आते ऐक दरसन देष्पा। धयान से ताकते हुऐ मैं ने भुम के चैापाऐ और वन पसु और कीड़े
७ मकोड़े और आकास के पंछीयों को देष्पा। और मुझ से कहते
८ हुऐ मैं ने ऐक सवद सुना की उठ पतरस मार और ष्पा। तव मैं वोला की ऐसा नहीं हे परभु कयोंकी कोइ सामान अथवा
९ अपवीतर वसतु मेरे मुंह में कधो नहीं पड़ी। और सरग से उतर में मुझे फेर सवद आया की जो कुछ इसर ने पवीतर
१० कीया है उसे तु सामान मत कह। यह तीन वार हुआ तव
११ सव सरग में फेर षींच गये। और कहा देष्पता हुं की ततकाल उस घर में जहां मैं था कैसरीया से भेजे हुऐ तीन
१२ मनुष्य मेरे पास पहुंचे। और आतमा ने नीसचीनत उनके संग जाने को मुझे अगया की और ये छः भाइ भी मेरे संग
१३ हुऐ और हम उस मनुष्य के घर में गये। तव उस ने हमें कहा की कीस रीत से मैं ने अपने घर में दुत को मुझे यह कहते हुऐ षड़े देष्पा की लोगों को याफ़रा में भेज और समउन को

१४ जो पतरस कहावता है बुला। वुह तुझे ऐसी बातें बता देगा
१५ जीन से तु अपने सारे घराने समेत मुकत पावेगा। और
जयों मैं ने कहना आरंभ कीया तो जोस रीत से आरंभ में
१६ धरमातमा हम सब पर पड़ा था तैसा उन पर भी पड़ा। तब
मैं ने परभु का बचन चेत कीया की उसने कैसा कहा था की
यहीया ने तो जल से सनान दीया परंत तुम लोग धरमातमा
१७ से सनान पाओगे। सो जैसा की ईसर ने उनहें वही दान
दीया जो हमें दीया जब की हम परभु यसु मसीह पर बीसवास
१८ लाये मैं कौन था जो ईसर को रोक सकता?। और जब
उनहों ने ये बातें सुनीं तो मान लीया और यह कहके ईसर
की सतुत की, तो ईसर ने अंनदेसीयों को भी जीवन के लीये
१९ पसयाताप दीया। अब जो उस बीपतके कारन छींन भींन
हुए थे जो ईसतीफ़ान के समय में पड़ी थी उनहों ने फ़ुनीकी
और कुबरस और अनताकीयः लों चले जाके यहुदीयों को
२० छोड़ कीस को बचन का उपदेस न कीया। परंतु उन में से
कीतने कुबरस और कुरोनः के बासी थे जीनहों ने अनताकीयः
में जाके युनानीयों से परभु यसु का उपदेस करके बातें कीं।
२१ और परभु उनका सहायक था और बहुत से लोग बीसवास
२२ लाके परभुकी ओर फीरे। तब उन बातों का समाचार
यरोसलीम की मंडली के कान लों पहुंचा और उनहों ने
२३ बरनबास को भेजा की अंताकीयः लों जाय। वुह आके ईसर
के अनुगीरह को देख के आनंद हुआ और उनहें उभाड़ा की
२४ मन की पुरी दीरढ़ता से परभु से मीलये रहें। कयोंकी वुह
उतम मनुष्य और धरमातमा और बीसवास से भरा हुआ था
२५ और बहुत लोग परभु की ओर बढ़ गये। तब बरनबास सुलुस
२६ का ढुंढ़ने का तरसुस को चला गया। और उसे पाके अनता-
कीयः में लाया और ऐसा हुआ की वे बरस भर मंडली में
एकठे रहे और बहुत से लोगों को उपदेस कीया और सीष्य

२७ लोग यहीले अनताकीयः में कीरीसटीआन कहलाये। और इनहीं दीनों में नबोमदवक्ता यीरोसलीम से अनताकीयः में
२८ आये। और उन में से अजवुम नाम एक ने उठ के आतमा की ओर से वतलाया की सारे देस में वड़ा अकाल पड़ेगा जो
२९ कलादीयुस कैसर के दीनों में पड़ा हुआ। उस समय सीष्यों में से हर ऐक ने अपनी वीसात के समान याहा की यहुदीयः
३० में के भाइयों के लीये कुछ भेजें। सो उनहों ने कीया और वरनवास और सुलुस के हाथ से पराचीनों के पास भेजा।

१२ वारहवां पनव।

हीरुदीस राजा का याकुव को घात करना और पतरस को वंदीगीरह में डालना १—४ दुत से छुड़ाया जाना ५—१७ हीरुदीस का पहरुओं को घात करना और कैसरायः में जाना और अहंकार के मारे मारा जाना १८—२३ इसन के वयन का फैलना और वरनवास और सुलुस का अनताकीयः में फीर आना २४—२५।

१ और उसी समय में हीरुदीस राजा ने मंडली में के कीतनों
२ को सताने के लीये हाथ डाला। और युहना के भाइ याकुव
३ को तलवार से मार डाला। और जव उसने देखा की यह यहुदीयों को अच्छा लगा तो उस से अधीक करके पतरस को
४ भी अपमीरी रोटी के दीनों में पकड़ लीया। और उसने उसे पकड़ के वंदीगीरह में डाला और उसकी चौकसी के लीये जोधाओं के चार पहरे को इस इच्छा से सौंपा की पारजाना
५ पनव के पीछे उसे लोगों करने पहुंचावे। सो वंदीगीरह में पतरस पड़ा था परंतु मंडली में उसके लीये नीरंतर इसन की पनानथना हो नही थी।

६ और जब हीरदीस ने उसे वाहर नीकालने चाहा उसी रात दे। जोधा मों के मध में पतरस दे। सीकरों से जकड़ा हुआ सोता था और पहरु वंदीगीरह के दुवार के सामने चैाकसी
७ करते थे। और देष्पा की ईस्वर का दुत दीष्पाई दीया और उस घर में एक उंजीयाला चमका और उसने पतरस के पंजर पर मारा और उसे यह कहके जगाया की तुरत उठ, और
८ उसके हाथों से सीकरें गीर पड़ीं। और दुत ने उसे कहा की कट वांध और अपनी पहीन ले और उसने वैसाही कीया तव
९ उसे कहा की अपना ओढ़ना ओढ़के मेरे पीछे हो ले। वुह नीकल के उसके पीछे हो लीया और न जाना की यह जो दुत
१० ने कीया सत है परंतु कुछ देष्पा सा समझा। जव वे पहीले और दुसरे पहरे में से नीकल गये ते। नगर में जाने का लोहे के फाटक पर पहुंचे वुह आपसे आप उनके लीये ष्पुल गया और नीकलके वे सड़क में होके चले गये और उसी घड़ी
११ दुत उस पास से जाता रहा। तव पतरस ने चेत में आके कहा अव मैं ठीक जानता हुं की ईस्वर ने अपने दुत को भेजा और हीरुदीस के हाथ से और यहुदी लागों की सारी आसा से
१२ मुझे छुड़ाया। और सोच के यूहन्ना अरथात मरकस की माता मरीयम के घर आया जहां वहुत से एकठे हे। परारथना कर
१३ रहे थे। और जवों पतरस ने दुवार के वाहरी फाटक को ष्पटष्पटाया तो रुदा नाम एक कंनया वुझने को गई की वुह
१४ कौन है। और पतरस का सवद पहीचान के उसने मारे आनंद के फाटक न ष्पोला परंतु भीतर दौड़ के उनहें कहा
१५ की पतरस फाटक पर ष्पड़ा है। वे वाेले की तु वैडही है उसने नीसचय से कहा की युंहीं है तव वे वाले की उसका दुत
१६ है। परंतु पतरस ष्पटष्पटाता गया और जव उनहों ने ष्पोल
१७ के उसे देष्पा ते। अचंभीत भये। और उसने उनहें चुप कराने के। हाथ से सैन करके कहा और वरनन कीया की

पनन्तु मुहे व्रंदीगीनह से इस इस नीत से नीकाल लाया और कहा की इन व्रातें को याकुव्र को और भाइयें को जनाओ
१८ फेन वुह नीकलके कीसी और सथान में गया। और जव्र दीन ऊआ तो जोधाओं में व्रडी घव्रड़ाहट ऊइ की पतनस
१९ कया ऊआ। और हीनुदीस ने उस का खोज कीया पन जव्र न पाया तो पहनुओं को जांच के उनहें घात कनने की आगया
२० दी और वुह यऊदीयः से कैसनीया में जा नहा। और हीनुदीस सुन और सैदा के लोगें से नीपट कोपीत था पनंतु वे एक मता होके उस पास आये और उनहें ने नाजा के सयन सथान के अधक्ष अनथात व्रीलासतुस को अपना और कनके मीलाप चाहा इस कानन की उनके देस का पनतोपाल
२१ नाजा के देस से होता था। और ठहनाए ऊए दीन में हीनुदीस ने नाज व्रसतन पहीनके सींहासन पन व्रैठ कन उनसे व्रातता
२२ कीं। तव्र लोग पुकानके व्रोले की यह तो देव सव्रद का है मनुष्य
२३ का नहीं। पनंतु इसन के दुत ने उसे माना कयोंकी उसने इसन की महीमा न की और वुह कीड़ों से खाया जाके मन
२४ गया। और इसन का व्रचन व्रढ़ा और व्रऊत ऊआ।
२५ और व्रननव्रास और सुलस अपनी सेवकाइ को पुनी कनके युहना को, जीस की पदवी मनकुस थी अपने संग लीये ऊए यनोसलीम से फीने।

१३ तेनहवां पनव्र।

व्रननव्रास और सलुस का घनमातमा का भेजा ऊआ उपदेस के लीये जाना १—४ उनके व्रैन कनने से इलीमास टोनहे का अंधा होना ५—१२ उनका अंताकीयः में जाके उपदेस कनना १३—४१ सानै नगन का व्रचन सुनने को भीड़ कनना और

य़ऊदीय़ों के पाप्पंड औार व़ैर से पुलुस औार व़रनव़ास का प्येदा जाना ४२—५२।

१ अव़ अंताकीय़ः की मंडली में कीतने भवीसद्व़कता औार उपदेसक थे नीज करके व़रनव़ास औार समउन जो नीजार कहावता था औार लुकीय़ुस कुरीनी औार मनाय़न जो यीथाइ
२ के सामी हीरुदीस का दुध भाइ था औार सलुस। जव़ वे परभु के लीय़े मंडली में परारथना औार व़रत करते थे धरमातमा ने कहा की मेरे लीय़े व़रनव़ास औार सलुस को उस कारज के नीमीत अलग करो जीसके लीय़े मैं ने उनहें
३ वुलाय़ा है। तव़ उनहों ने व़रत औार परारथना करके हाथ
४ उन पर रप्प के उनहें व़ीदा कीय़ा। सो वे धरमातमा के भेजे हुऐ सलुकीय़ः को गय़े औार वहां से प्पोल के क़व़रस
५ को यले। औार सालामीस में पहुंयके य़ऊदीय़ों की मंडली में इसर के व़यन का उपदेस कीय़ा औार य़ुहना उनका साथी
६ था। औार उस टापु में पपरस लों सरव़तर फीर के उनहों ने व़ारीसु नाम ऐक य़ऊदी को पाय़ा जो टोनहा औार झुठा
७ भवीसद्व़कता था। जो उस देस के अधक्क सरजय़ुस पुलुस परतीसठीत ऐक मनुप्प के संग था उसने व़रनव़ास औार सुलुस
८ को व़ुला के इसर का व़यन सुनने याहा। परंतु टोनहा अलमास ने, जीसके नाम का य़ही अरथ है इस इछा से उस का
९ सामना कीय़ा की अधक्क को व़ीसवास से फेरे। तव़ सुलुस, अरथात पुलुस ने धरमातमा से पुरन होके धय़ान से देप्प के
१० कहा। अरे तु जो सारे कपट औार सारी दुसटता से भरा है सैतान के पुतर औार सारे धरम के व़ैरी तु इसर के सीधे
११ मारग को टेढ़ा करने से अलग न रहेगा?। औार अव़ देप्प परभु का हाथ तुझ पर पड़ा है औार तु अंधा होजाय़गा औार कीतने दीन लों सुरज को न देप्पेगा औार तुरंत उस पर क़ुहीरा

ओान अंधकान पड़ा ओान वृह ढुंढ़ता फीना की कोइ उसका
१२ हाथ पकड़ के ले जाय़। इस व्रात का देष्प के अघक्ष पनभु के
१३ उपदेस से व्रीसमीत होके व्रासवास लाय़ा। तव्र पफस से
प्पोल के पुलुस ओान उसके साथी पंफलीय़ः के पनजा में आय़े
पनंतु य़हना उनसे अलग होके य़नोसलीम का फीन गय़ा।
१४ तथापी वे पनजा से होके फसदीय़ः के अंताकीय़ः में आय़े ओान
१५ व्रीसनाम दीन मंडली में जा व्रैठे। ओान व्रैवसथा ओान भवीस
व्रयन के पढ़ने के पीछे मंडली के पनधानें ने उनहें कहला
भेजा की हे मनुष्प भाइय़ो य़दी लोगों के कानन कोइ उपदेस
१६ का व्रयन तुमहाने पास होवे ता कहो। तव्र पुलुस प्पड़ा ऊआ
ओान हाथ से सैन कनके व्रोला की हे इसनाइली मनुष्पो ओान
१७ जो इस्वन से डनते हो सुनो। इसनाइल के इन लोगों के इसन
ने हमाने पीतनों का युन लीय़ा ओान जव्र की वे मीसन देस
में पनदेसी थे लोगों को उभाना ओान हाथ व्रढ़ा के उनहें वहां
१८ से नीकाल लाय़ा। ओान याली स व्रनस लों वृह व्रन में उनकी
१९ याल सहता था। ओान जव्र उसने कीनान के देस में सात नाज
गनों को प्पेद दीय़ा उसने उनके देस को अधीकान के लीय़े व्रांट
२० दीय़ा। ओान उन व्रातों के पीछे जीन में साढ़े यान सै व्रनस
के लग भग व्रीत गय़े उसने समुइल भवीसदव्रक्ता लों नय़ाइ
२१ दीय़े। ओान तव्र से उनहें ने एक नाजा याहा ओान इसन ने
याली स व्रनस लों व्रनीय़ामीन की गोसट का एक जन अनथात
२२ कीस के व्रेटे साउल को उनहें दीय़ा। ओान उसे अलग कनके
उनका नाजा होने को दाउद को उदय़ कीय़ा ओान उसके
लीय़े य़ह साप्पो दी की मैं ने य़ससी के व्रेटे दाउद को अपना
२३ मनोनीत पाय़ा जो मेनी सानी इछा को पुना कनेगा। इसी
मनुष्प के व्रंस से इसन ने अपनी व्राया के समान इसनाइल के
२४ लीय़े एक मुकतदाय़क य़सु को उदय़ कीय़ा। ओान उसके
आने से आगे य़होय़ा ने इसनाइल के साने लोगों को पछताव

२५ के सतान का उपदेस दीया। और जब यहीया अपनी दौर को पुरा करने पर था तब वुह बोला की तुम लोग मुझे कया समझते हो मैं वुह नहीं हुं परंतु देखो मेरे पीछे एक आता है
२६ जीसके पांव की जुती खोलने के जोग मैं नहीं हुं। हे मनुष्य भाइयो इब्राहीम के संतान और हे लोगो जो इस्वर से डरते
२७ हो तुमहारे पास मुकत का यह बचन भेजा गया है। कयोंकी यरोसलीम बासीयों ने और उनके सरदारों ने न तो उसको और न भवीसदबकतों की उन बातों को जाना जो हर बीसराम दीन में पढ़ी जाती हैं उसे दोखी ठहरा के उनहें
२८ पुरा कीया। और यदपी उनहों ने उस पर मीरतु का कारन
२९ न पाया। तथापी उनहों ने पीलातुस से याहा की वुह घात कीया जाय और जब उनहों ने सब कुछ जो उसके बीखय में लीखा था पुरा कीया तो उसे कुरुस पर से उतार के समाध
३० में रखा। परंतु इस्वर ने उसे मीरतकों में से जीलाया।
३१ और जो उसके संग जलील से यरोसलीम में आये थे वुह उनहें बहुत दीन लों दीखाइ दीया जो लोगों के आगे उसके
३२ साखी हैं। और हम तुमहें मंगल समाचार सुनाते हैं की
३३ जो बाचा पीतरों से की गइ थी। उसे इस्वर ने यसु को फेर जीलाने से उनके संतान हमारे लीये पुरा कीया है जैसा दुसरे भजन में भी लीखा है की तु मेरा पुतर है आज तु मुझ से
३४ उतपंन हुआ। और इस कारन से उसे जीलाया की वह सड़ न जाय उसने यूं कहा की मैं तुमहें दाउद की ठीक दया देउंगा।
३५ इस लीये उसने दुसरे सथल में भी यूं कहा की तु अपने धारमीक
३६ को सड़ने न देगा। दाउद तो अपने समय को पुरा करके इस्वर की इछा पर सो गया और अपने पीतरों में बटुर गया
३७ और सड़ गया। परंतु जीसे इस्वर ने उठाया सो सड़ न गया।
३८ इस लीये हे मनुष्य भाइयो तुमहें जानाजाय की पापों से उधार उसी के दुवारा से तुम सभों के लीये पाप मोचन का

३९ उपदेस कीआ जाता है। और हम एक वीसवासी उसी की ओर से सारे वसतुन से नीरदोष है जीनसे तुम लोग मुसा
४० की वेवसथा से नीरदोष नहीं हो सकते थे इस लीये चैाकस होओ न होवे की जो नवीसदवकता की पुसतकों में कहा गया
४१ है सो तुमहों पर आ पड़े। की देखो हे नींदको और आसचरज करो और नास हो जाओ की मैं तुमहारे समय में एक ऐसा कारज करता ऊं की यदपी कोइ तुमहें सुनावे
४२ तुम लोग उसकी परतीत न करोगे। परंतु जब यऊदी मंडली से नीकल जाते थे अदेसीओं ने याहा की ये बचन दुसरे
४३ वीसराम में हम सभों से कहे जायें। और जब भीड़ हट गइ बऊत से यऊदी और नये भकत पुलुस और बरनबास के पीछे हो लीये और उनहों ने उनसे बात चीत करके उपदेस कीआ की तुम लोग इसर के अनुग्रीनह में थीरे रहो।
४४ और अगीले वीसराम में सारे नगर के लगभग इसर का
४५ बचन सुनने को एकठे आये। परंतु यऊदी मंडलीओं को देख के डाह से भर गये और वीरोध करते और पाखंड
४६ बकते पुलुस के बचन के वीरुध कहा। तब पुलुस और बरनबास ने नर भंता कहा अवेस था की इसर का बचन पहीले तुमहें कहा जाता परंतु जैसा की तुम लोग उसे टाल देते हो और अपने को अनंत जीवन के अजोग ठहराते हो देखो हम
४७ अंनदेसीओं की ओर जाते हैं। कयोंकी परभु ने हमें ऐसी अगया की, की मैं ने तुझे अंनदेसीओं का उंजीयाला कर रखा है जीसतें तु पीरथीवी के अंत लों मुकत का कारन होवे।
४८ और अंनदेसी यह सुनतेही आनंद ऊए और परभु के बचन की सतुत की और जीतने की अनंत जीवन के लीये ठहराये
४९ गये थे बीसवास लाये। और परभु का बचन उस सारे देस
५० में फैल गया। परंतु यऊदीयों ने परतीसठीत भकतीन इसतीरीयों को और नगर के परधानों को उसकाया और पुलुस

और बरनबास पर उपद्रव कीया और अपने सीवानों में से
५१ खेद दीया। परंतु वे अपने पांव की धुल उनके बीरुध झाड़
५२ के इकुनीयः को आये। परंतु सीष्य आनंद से और धरमातमा
से भर गये।

१४ चौदहवां पर्व्व।

पुलुस और बरनबास का अकुनीया में उपदेस करना और वहां से खेदा जाके लसतरा में जाना १—७ एक लंगड़े को चंगा करना और लोगों का उन्हें बलचढ़ाने को सीध होना ८—१८ इहूदीयों के बैर से पुलुस का पथरवाया जाना वहां से फीर के मंडलीयों को दीढ़ करना और अनताकीया में आना १९—२८

१ और इकुनीयः में ऐसा ज्ञआ की वे इहूदीयों की मंडली में एक साथ गये और ऐसी कथा कही की इहूदीयों की और
२ युनानीयों की भी बड़ी मंडली बीसवास लाई। परंतु अबी-सवासी इहूदीयों ने अनदेसीयों के मन को भड़काया और
३ भाइयों के बीरुध उन्हें बैर से भर दीया। सो वे बज्जत दीन लों रहके परभु के बीष्य में हीयाव से कहते रहे और वुह अपने अनुगरह के बचन पर साष्पी देता और कीरपा करके लछन और आसचरज उनके हाथों से परगट करता रहा।
४ परंतु नगर की मंडली बीभाग ज्जई कुछ तो इहूदीयों के संग
५ रहे और कुछ परेरीतों के। परंतु जब अंनदेसीयों ने और इहूदीयों ने परधानों के साथी होके उन्हें सताने को और
६ पथरवाने को हला कीया। वे उस से सैचेत होके लकउनीया के नगर लसतरा और दरबा में और उस सीवाने के देस में
७। ८ भाग गये। और वहां मंगल समाचार परचारा। और

लसतना का ग्रेक मनप्प पाओं का दुनव्रल व्रैठा था जो अपनी
९ माता के गनभ से लंगड़ा था ओान कभी न यला था। उसी
ने पुलुस को व्रानता कनते सुना जीसने उस पन टकटकी लगा के
१० देप्पा की उसको यंगा होने का व्रीसवास है। उसने व्रड़े सव्रद
से कहा की अपने पाओं पन सीधा प्पड़ा हो वुह तुनंत उछला
११ ओान यलने लगा। ओान जव्र की लागों ने पुलुस का कीआ
ऊआ देप्पा ता लकउनीआ की भाप्पा में यीला के कहने लगे
१२ की देव मनुप्प के भेस में हम पास उतन आये हैं। ओान
उनहों ने व्रननव्रास का नाम व्रीनहसपती ओान पुलुस का व्रुघ
१३ नप्पा कओंकी व्रोलने में वुह अगुआ था। ओान वे व्रीनहस-
पती को अपने नगन का उपकानी जानते थे ओान उसके पुनाहीत
ने मंडली समेत व्रैल ओान फूलों के हान दुवानों पन लाके
१४ याहा की व्रल यढ़ावें। पनंतु व्रननव्रास ओान पुलुस दोनों
पनेनीत सुन के अपने ओढ़ने फाड़के मंडलीओं में दौड़ गये
१५ ओान यीला के व्रोले। की हे मनुप्पो तुम लोग ये सव्र कओं
कनते हो? तुम सनीके हम भी दुनव्रल मनुप्प हैं ओान तुमहें
मंगल समायान का उपदेस कनते हैं जीसतें इन व्रयनथ
भावनन को छोड़ के जीवते ईसन की ओान फीनो जीसने सनग
ओान पीनथीवी ओान समुद्रन ओान सव्र कुछ जो उन में हैं
१६ व्रनाया। उसने अगीले समयों में अपने अपने मानगों में
१७ सान जातगनों को यलने दीआ। तथापी उसने भलाई कन
के सनग से व्रीनसट ओान फलवंत नीतुन को हमें देके हमाने
अनतःकनन को भोजन से भनके संतुसट कीआ उसने अपने
१८ को व्रीना साप्पी न छोड़ा। ओान इन व्राती को कहके उनहों ने
लोगों को व्रड़े कठीन से व्रल कनने से नोक नप्पा।
१९ पनंतु कीतने यहूदीओं ने अनताकीआ ओान यकुनीआ से
आके मंडली को व्रहका के पुलुस को पथनवाह कनके ओान व्रह
२० जान के की वुह मनगया नगन के व्राहन प्पींयवाया। पनंतु

अव्र सीप्प उसके आस पास ऐकठे ऊए वुह उठके नगन में आया और दुसने दीन व्रननव्रास के संग दनवा को यला गया।
२१ और उस नगन में मंगल समायान पनयान के और वऊतें को सीप्प कनके उनहें ने लसतना और व्रकुनीया और अंताकीया
२२ में फीन आते ऊए। सीप्पों के मन को दीनढ़ कनके उनहें व्रीसवास पन सथीन नहने को उपदेस कीया और साप्पी दी की हमें अवेस है की व्रऊत पनीसनम से इसन के नाज में पनवेस
२३ कनें। और उनहें ने हन ऐक मंडली के लीये पनायीन ठहनाये और व्रनत और पनानथना कनके उनहें पनभु को
२४ सैंप दीया जीस पन वे व्रीसवास लाये थे। और फसदीय: से
२५ होके पंफुलीय: में आये। और व्रनजा में व्रयन का उपदेस कन
२६ के अतालीय: में उतन आये। और वहां से प्पोल के अनताकीया को गये जहां से वे उस कानज के कानन इसन के अनुगीनह से
२७ सैांपे गये थे जीसे उनहें ने संपुनन कीया था। और आके मंडली को ऐकठे कनके जो की इसन ने उनकी ओन से कीया था और की उसने कीस नीत से अंनदेसीयों के लीये व्रीसवास का
२८ दुवान प्पोला व्रननन कीया। और वे व्रऊत दीन लें सीप्पों के संग वहां नहे।

१५ पंदनहवां पनव्र।

प्पतन: के व्रीव्राद के लीये पुलुस और व्रननव्रास का यनोसलीम में जाना १—२१ पनेनीतें का उस व्रात का नीनुआन कनना १२—२१ उस व्रीप्पय में पतनयां लीप्पनी और लोगों के आनंद का कानन होना २२—३५ मनकस के व्रीप्पय में पुलुस और व्रननव्रास का नयाना होना और अलग अलग उपदेस को जाना ३६—४१।

१ और कीतनें ने यऊदीय: से आके भाइयों को सीष्याया की जो तुम सव मुसा की नीत के समान ष्पतन: न कनाओ तो
२ उधान नहीं पासक्ते। इस लीये जव पुलुस और व्रननवास से और उनसे हगड़ा और व्रादानुव्राद हूआ तव उनहों ने ठहनाया की पुलुस और व्रननवास और उस में से कइ एक यनोसलीम को पनेनीतें और पनायीनें कने इस पनसन के
३ कानन जावें। सो वे मंडली के लोगें से आगे व्रढ़ाये जाके फ़ुनीकी और सामन: से होके अंनदेसीयों के मन के फीनने का संदेस देते यले गये और वे भाइयों के अती मगन के कानन
४ हूए। और जव वे यनोसलीम में आये तो मंडली के लोग और पनेनातें और पनायीनें ने उनहें गनहन कीया और उनहों ने सव कुछ जो इसन ने उनके दुवाना से कीया था कह
५ सुनाया। पनंतु फ़नीसीयों के मत के कीतने व्रीसवासी उठके कहने लगे की उनका ष्पतन: कनवाना और मुसा की व्रैवसथा
६ यलने की उनहें अगया कननी उयीत है। तव पनेनीत और पनायीन इस व्रात के व्रीष्पय में व्रीयान कनने को एकठे हूए।
७ और व्रहूत व्रादानुव्राद के पीछे पतनस ष्पड़ा होके उनसे व्रोला की हे मनुष्प भाइयो तुम लोग जानते हो की व्रहूत दीन व्रीते इसन ने हम में से युना की अंनदेसी मेने मुंह से मंगल समायान
८ के व्रयन को सुनके व्रीसवास लावें। और अनतनजामी इसन ने उनके लीये साष्पी दी जैसा उसने हमें घनमातमा दीया वैसा
९ उनहें भी दीया। और उनके अंत:कनन को व्रीसवास से
१० पवीतन कनके हम में और उन में कुछ भेद न नष्पा। सो अव्र तुम लोग कयों इसन को पनष्पते हो और सीष्पों के गले पन जूआ नष्पते हो जीसे न हम न हमाने पीतन सह
११ सकते थे ?। और हमें नीसयय है की हम पनभु यसु मसीह
१२ के अनुगीनह से उनके समान मुकत पावेंगे। तव सानी मंडली युप ऊइ और व्रननवास और पुलुस से उन साने लछन और

सामयनज का व्रननन सुनने लगे इूसन ने उनकी थ्रोन से
१३ अनदेसीओां में टीप्पलाओे। और जव्र वे यप नहे याकुव्र ने
१४ उतन में कहा की हे मनुष्य भाइओ मेनी सुने। समउन ने
व्रननन कीया है की इूसन ने पहीले अंनदेसोओां पन कीस नीत
से टीनीसट की, की उन में से अपने नाम के लीओे ऐक मंडली
१५ यन ले। और भवीसदव्रकतों के व्रयन उस से मीलते हैं
१६ जैसा की लीप्पा है। इसके पीछे मैं फीन आउंगा और दाउद
के गीने ऊऐ तंव्र को फेन के व्रनाउंगा और उसके उजाड़ों को
१७ फेन व्रनाउंगा और उसे फेन प्पड़ा कनुंगा। की जो लोग
नह गये हैं अनथात सानेअंनदेसी जो मेने नाम के हैं पनभु
को ढुंढें यह पनमेसन की कही ऊइ है जो इन व्रसतुन को
१८ पुना कनता है। इूसन के साने कानज सनातन से जाने ऊऐ
१९ हैं। सो मेना व्रीयान यह है की जो अंनदेसीओां में से इूसन
२० की थ्रोन फीने हैं वे असथीन न कीओे जायें। पनंतु हम उनके
पास लीप्पें जीसतें वे मुनतीन की अपवीतनता से और व्रैभी-
यान से और गला घुटेऊओां से और लोऊ से पने नहें।
२१ कयोंकी पनायीन पीढ़ीओां से हन ऐक नगन में मुसा के पनयानक
हैं और मंडलीओां में हन व्रीसनाम के दीन में पढ़ा जाता है।
२२ तव्र पनेनीत और पनायीन और सानी मंडली को अछा लगा
की पुलुस और व्रननव्रास के साथ अपने में से युने ऊऐ मनुष्यों
को अनथात यऊदा को जीसकी पदवी व्रनसाव्रास थी और
सीलास का जो भाइओ में सनेसट गीने जाते थे अनताकीया
को भेजें।
२३ और उनके दुवाना से यह लीप्प भेजा की भाइओ को जो
अनताकीया और साम और कीलकीया में हैं और आगे अंन-
देसीओां में के थे पनेनीतों और पनायीनें और भाइओ का
२४ नमसकान। जैसा की हम ने सुना है की हम में से कीतनें ने
नीकल के तुमहों को व्रातें कहके व्रयाकुल कीया और तुमहाने

मन को ग्रह बाह के यंयल कीया को प्पतनः बगवाने को चैान ग्रैवसथा पन यलने को तुमहें अवेस है जीनहें हमने आगया न
२५ दी। सो हम सव ने प्रेक मता होके उयीत जाना की युने ड्रूप्रे मनुप्यन को अपने पीनीय ग्रननव्रास चैान सुवुस के संग
२६ तुमहाने पास भेजें। जीनहों ने अपने पनान को हमाने पनभु
२७ यसु मसीह के नाम के बाग्रे सैांप दीया। सो हमों ने यग्रुदा
२८ चैान सीलास को भेजा है वे मुंह से भी ग्रे व्रातें कहेंगे। कग्रोंकी घनमातमा को चैान हमें चक्षा लगा की केवल उन कानजों
२९ के जो अवेस हैं तुम सभों पन अधीक भान न डालें। की तुम लोग मुनत पन के व्रलदान से चैान लोङ्ग से चैान गला घुंठे ड्रूग्रों से चैान व्रैभीयान से पने नहो उनसे अपने को अलग नप्पने में भला कनोगे तुमहाना भला होय।
३० सो वे व्रीदा होके अनताकीया में आप्रे चैान मंडली को
३१ प्रेकठे कनके पतनी पड्रंयाइ। वे उस कुसल की पतनी को
३२ पढ़के आनंदीत ड्रूप्रे। चैान यग्रूदा चैान सीलास ने जो आप भी नवीसदव्रकता थे व्रड्रतसी व्रातों से उपदेस कनके भाइग्रों
३३ को दीनढ़ कीया। चैान कुछ दीन नहके वे कुसल से भाइग्रों
३४ से व्रीदा होके पनेरीतों की चैान गग्रे। पनंतु सीलास को वहां
३५ नहना अच्छा लगा। पुलुस चैान व्रननव्रास भी चैान व्रड्रतों के संग पनभु का व्रयन उपदेस कनते चैान सीप्पावतें अनता-
३६ कीया में नह गग्रे। चैान कुछ दीन के पीछे पुलुस ने व्रननव्रास से कहा आचो हम अपने भाइग्रों से हन प्रेक नगन में जहां हम ने पनभु के व्रयन का उपदेस दीया है फीन के भेंट कनें
३७ चैान देप्पें उनकी कया दसा है। चैान व्रननव्रास ने यूहना को, जीसको पदवी मनकुस थी अपने संग ले जाने को याहा।
३८ पनंतु पुलुस ने उस जन को अपने सग लेना ठीक न समझा जो पंफ्रुलाग्रः में उनसे अलग हो गग्रा था चैान कानज के कानन
३९ उनके संग न गग्रा। चैान उन में प्रेसा व्रडा ग्रीवाद ड्रूआ की

प्रेक दुसने से अलग हो गया ग्रीन ब्रननब्रास मनकस को संग
३० लेके कब्रनस को नाव पन यला गया। पनंतु पुलुस ने सीलास
को युना ग्रीन भाइयों से इसन के ग्रनुगीनह को सौंपा जाके
४१ व्रौदा ऊग्रा। ग्रीन वुह साम ग्रीन कीलकीग्रः से मंडलीग्रों
को दीनढ़ कनता ऊग्रा यला गया।

१६ सोलहवां पनब्र।

पुलुस ग्रीन सीलास का नगन नगन उपदेस कनना १—१२ भुत का दुन कनना ग्रीन पुलुस ग्रीन सीलास का माना जाना ग्रीन ब्रंदीगीनह में पड़ना १३—२४ उनका भजन कनना ग्रीन भुइंडोल से दुवानों का प्पुल जाना ग्रीन ब्रंदीगीनह के सामी का मन फीनना २५—३४ उनका ब्रंदीगीनह से युट जाना ग्रीन वहां से व्रौदा होना ३५—४०।

१ फेन वुह दनब्रा ग्रीन लसतना में पऊंया ग्रीन देप्पो वहां
तीमताउस नाम प्रेक ब्रीसवासीनी यज़ूदनी का पुतन था पनंतु
२ उसका पीता यूनानी था। लसतना ग्रीन यकुनीया के भाइ
३ लोग जीसकी सुयाल के जानकान थे। उसको पुलुस ने ग्रपने
संग ले जाने को याहा सो उधन के यज़ूदीयों के लीये उसने
उसे लेके प्पतनः कनाया कयोंकी वे सब्र जानते थे की उसका
४ पीता यूनानी था। ग्रीन नगनों में होके जाते ऊप्रे उनहों ने
यनोसलीम में के पनेरीतों ग्रीन पनायीनों की ठहनाइ ऊइ
५ ग्रगयाग्रों को उनहें सौंपी। इस लीये मंडलीयां ब्रीसवास में
६ दीनढ़ ऊइ ग्रीन पनत दीन गीनती में ब्रढ़ती गइ। ग्रीन वे
फरनजः ग्रीन गलतीग्रः के देस में होके नीकल गये ग्रीन ग्रासीया
७ में ब्रयन पनयानने को धनमातमा ने उनहें ब्रनजा। जब्र वे
मुसीग्रः में ग्राये तो ब्रतुनीग्रः को जाने याहा पनंतु ग्रातमा ने

८ उनहें जाने न दीया। सो वे मुसीयः से होके तनवास में उतन
९ पड़े। श्रोन नात को पुलुस पन दनसन ऊश्रा की कोइ मकदुनी
ग्रह कहके उसकी ब्रीनती कन नहा है की मकदुनीयः में पान
१० श्रा श्रोन हमाना उपकान कन। श्रोन जयों उसने ग्रह दनसन
पाया तुनंत हमने मकदुनीयः में जाने को मन कीया ग्रह
नीसयय जान के की पनभु ने उन में मंगल समायान पनयानने
११ को हमें वुलाया। हम तनवास से थ्योल के सोधे सामुतनाकी
१२ को आये श्रोन दुसने दीन नेयापुलस को। श्रोन वहां से
फरीलीप्पी में आये जो मकदुनीयः के उघन के नगनों में ब्रड़ा
नगन श्रोन पनदेसीयों का नीवास है उसी नगन में कुछ दीन
१३ नहे। श्रोन व्रीसनाम के दीन हम लोग उस नगन से नीकल
के नदी के तीन पन गये जहां पनानथना की जाती थी श्रोन
१४ ब्रैठ के उन इसतीनीयों से ब्रातें कीं जो वहां ब्रटुनीं थीं। श्रोन
सुश्रातीनः के नगन की ब्रैजनी की ब्रैपानीनी लुदीयः नाम
प्रेक इसतीनी थी जो इसन को भजती थी हमानी सुनी जीसके
१५ मन को पनुस के ब्रयन सुनने को इसन ने थ्योला। श्रोन जब्र
उसने श्रपने पनीवान समेत सनान पाया तो हमानी ब्रीनती
कनने लगी की यदी मुझे पनभु की ब्रीसवासनी जानते हो तो
१६ यल के मेने घन उतनये श्रोन वुह हमें ब्रनब्रस ले गइ। श्रोन
जब्र हम पनानथना को यले तो प्रैसा ऊश्रा की प्रेक कंनया
हमको मीली जो गुपत गयानी भूत से गनसत थी श्रोन भवीस
कह कहके श्रपने सामीयों को ब्रऊत कुछ कमवा देती थी।
१७ वुह पुलुस के श्रोन हमाने पीछे पीछे यली श्रोन यीला के कहने
लगी की ये मनुष्य श्रतीमहान इसन के सेवक हैं श्रोन हमें
१८ मुकत का मानग दीखावते हैं। श्रोन वुह कइ दीन लों ग्रह
कनती नही पनंतु पुलुस उदास होके फीना श्रोन उस भूत को
कहा मैं ग्रसु मसीह के नाम से तुझे श्रगया देता ऊं उस पन
१९ से उतन वुह उसी घड़ी उस पन से उतन गया। पनंतु जब्र

उसके स्वामीयों ने देष्पा की लाभ की आसा जाती नही तो पुलुस और सीलास को पकड़ा और हाट में ष्पैंचे ऊए साधकों
२० कने ले चले। और उन्हें पनधानें पास लाके व्रोले की ये
२१ मनुष्य यऊदी होके हमारे नगन को नीपट सताते हैं। और गनहन करने और पालन करने को व्रेवहार सीष्पाते हैं जो
२२ हम नुमीयों के लीये अनुचीत हैं। तव्र लोग उनके व्रीनोध में येकठे उठे और पनधानें ने उनके कपड़े पराड़े और उन्हें
२३ छड़ीयों से मारने की अगया की। और उन्हें व्रऊत सा मारके व्रंदीगीनह में डाला और वहां के पनधान को अगया
२४ की, की उन्हें व्रऊत चौकसी से रष्पो। उसने यह दीनढ़ अगया पाके उन्हें भीतन के व्रंदीगीनह में ढकेला और उनके पाओं
२५ को काठ में डाला। पनंतु आधी नात को पुलुस और सीलास पनानथना में ईसन की भजन गाने लगे और व्रंधुऐ सुनते थे।
२६ और आकसमात येक व्रड़ा भूईंडोल ऊआ यहां लों की व्रंदी-गीनह की नेवें हील गईं और तुनत सारे दुवार ष्पुल गये और
२७ सभों के व्रंधन ष्पुल गये। तव्र व्रंदीगीनह का नक्षक नींद से उठा और व्रंदीगीनह के दुवार ष्पुले देष्प के समझा की व्रंधुऐ भाग गये और तलवान ष्पींच के अपने तईं घात करने जाता
२८ था। इतने में पुलुस ने व्रड़े सव्रद से पुकार के कहा की अपने
२९ का दुष्प न दे कयोंकी हम सव्र यहीं हैं। तव्र वुह दीया मंगवा के भीतन लपका और थरथराता ऊआ पुलुस और
३० सीलास के आगे गीन पड़ा। और उन्हें व्राहन लाके कहा की हे महासय मुकत के लीये मुझे कया करना आवेसक है?।
३१ वे व्रोले की पनभु यसु मसीह पन व्रीसवास लाव तव्र तु और
३२ तेरा घनाना मुकत पावेगा। तव्र उन्हों ने उसे और उसके
३३ घन के सारे लोगों को पनभु का व्रचन सुनाया। और उन्हें नात को उसी घड़ी लेके उसने उनके घावों को धोया और वहीं
३४ उसने और उसके सभों ने सनान पाया। और उन्हें अपने

घर लाके उसने उनके आगे भोजन रक्खा और अपने सारे घर समेत ईसर पर बीसवास लाके मगन हुआ।

३५ और जब दीन हुआ उनहें छोड़ देने को सासकों ने पीयादों
३६ को ओर से कहला भेजा। और बंदीगीरह के रछक ने ये बातें पुलुस को कहीं की सासकों ने तुमहें छोड़ देने को कहला
३७ भेजा है सो अब नीकल के कुसल से जाइये। परंतु पुलुस ने उनहें कहा की हम रुमीयों को बीन दोष्षी ठहराए परगट में मारा और बंदीगीरह में डाला है और अब वे हमें चुपके से नीकाल देते हैं कधी न होगा परंतु वे आप आके हमें बाहर
३८ पहुंचावें। तब पीयादों ने जाके ये बातें सासकों को सुनाईं
३९ और जब उनहों ने सुना की वे रुमी हैं तो डर गये। और आके उनहें सांत दी और बाहर पहुंचा के उनकी बीनती
४० की, की नगर से चले जाइये। सो वे बंदीगीरह से नीकल के लुदीया के गये और भाइयों को देख के उनहें सांत दी और बीदा हुए।

१७ सतरहवां परब।

पुलुस का तसलुनीकी में उपदेस करना यहूदीयों का बैर और पुलुस और सीलास का बरीया में भेजा जाना १—१० वहां के लोगों का बीसवास लाना यहूदीयों का बैर करना और पुलुस का आसीना में पहुंचाया जाना ११—१५ उनकी मूरत पूजा को देख के पुलुस का उनसे बीवाद करना और उपदेस करना १६—३४।

१ तब वे अंफीपुलस और अपलुनीया से होके तसलुनीकी
२ में आये जहां यहूदीयों की एक मंडली थी। और पुलुस अपने बेवहार पर उन में जाके तीन बीसरामों में धरम

३ पुसतकों से उपदेस कनता नहा। श्रौन ष्पोल ष्पोल के श्रौन पनमान ला ला के कहता था की मसीह को दुष्प उठाना श्रौन जी उठना उचीत था श्रौन की ग्रह ग्रसु जीसका मैं तुमहें सुनाता
४ ऊं मसीह है। तव्र उनमें से कीतने व्रीसवास लाग्ने श्रौन पलुस श्रौन सीलास से मील गये श्रौन भकत ग्रुनानीयों में से व्रऊत
५ श्रौन व्रीसेष्प इसतीनीयां में से थोड़ी नहीं। पनंतु श्रव्रीसवासी ग्रऊदीग्नां ने डाह से भनके कीतने नीच श्रौन लपट जनें को एकठे लीग्ना श्रौन भोड़ कीग्ना श्रौन व्रटुन के नगन में हे ना मयाग्रा श्रौन ग्रासुन के घन पन हला कीग्ना श्रौन उनहें लोगों
६ के पास लाने याहा। पनंतु उनहें न पाके ग्रासुन को कीतने भाइग्रों के संग नगन के पनघानों के पास ष्पींच ले गग्ने श्रौन यीलाते जाते थे की इन लोगों ने जगत को उलट दीग्ना श्रौन
७ ग्रहां भी श्राग्ने हैं। उनको ग्रासुन ने गनहन कीग्ना श्रौन ग्ने सव्र कैसन की श्रगग्ना व्रीनुध कहते हैं की दुसना नाजा कोइ
८ ग्रसु है। सो उनहें ने मंडली को श्रौन नगन के सासकों को
९ ग्रे सुनाकन व्रग्राकुल कीग्ना। तव्र उनहें ने ग्रासुन से श्रनु
१० श्रौनों से व्रीयवइ लेके छोड़ दीग्ना। पनंत भाइग्रों ने तुनंत पलुस श्रौन सीलास को नाते नात व्रनीग्ना को व्रीदा कीग्ना श्रौन
११ वे वहां श्राके ग्रऊदीग्नों की मंडली में गग्ने। ग्रहां के लोग तसलुनी की के लोगों से श्रध क पनतीसठीत थे कग्नोंकी उनहें ने व्रचन को व्रड़े श्रानंद से मान लीग्ना श्रौन पनतदीन धनम लीष्पे ऊग्ने में ढुंढ़ते नहे की ग्ने ॱातें ग्रांहीं हैं श्रथवा नहीं।
१२ इस लीग्ने व्रऊत उन में से श्रौन ग्रुनानी उतम इसतीनीश्रन
१३ में से भी श्रौन पुनुष्पन में से व्रऊतेने व्रीसवास लाग्ने। पनंतु जव्र तसलुनीकी के ग्रऊदीग्नों ने जाना की पलुस व्रनीग्ना में भी इसन के व्रचन पनचानता है तो उनहें ने वहां भी श्राके लोगों
१४ में हैना मयाग्रा। श्रौन भाइग्रों ने उसी समग्र पलुस को व्रीदा कीग्ना जैसा की वुह समुदन से जाता है पनंतु सीलास

१५ श्रीर तीमताउस वहीं रहे। श्रीर जो पुलुस को पहुंचाने गये
सो उसे श्रसीनः लों लाये श्रीर सीलास श्रीर तीमताउस के लीये
श्रगया लेके यल रोकले की सीघर जैसे हो सके उस पास श्रावें।
१६ सो जब पुलुस श्रसीनः में उनकी बाट जोह रहा था श्रीर नगर
को देवपुजा के बस में देष्या तो उसका मन भीतर से उभड़ा।
१७ इस लीये वुह यहुदीयों से श्रीर भकतों से, जो उनके साथ
सेवा में रहते थे मंडली में श्रीर पनतीदीन जो उसे हाटों
१८ में मीलते थे बीवाद करता था। तब अपरकुरी श्रीर सतुइकी
के पंडीतों में से कइ एक उसके सनमुष्य हुए श्रीर कीतनों ने
कहा की यह बकवादी कया कहेगा? श्रीर कीतने बोले की
यह उपरी देवों का परचारक दीष्याइ देता है कयोंकी वुह
१९ उनहें यसु का श्रीर जीउठने का संदेस देता था। सो उनहों
ने उसे लेके मीरीष्य के पहाड़ पर लाके कहा की जो नइ सीष्या
२० तु सुनाता है हम लोग उसे जान सकते हैं? कयोंकी तु अनोष्यी
बातें हमें सुनाता है हम लोग उन बसतुन का भेद जानने
२१ चाहते हैं?। कयोंकी सारे श्रसीनी श्रीर उन में के परदेस
बासी केवल नइ नइ बात कहने अथवा सुनने के अपना समय
२२ श्रीर बात में न काटते थे। तब पुलुस मीरीष्य के पहाड़ के
मध में ष्यड़ा होके बोला की हे श्रसीनः के मनुष्यो मैं तुमहें
२३ अदीनीस पराक्रमों का अत पुजेरी देष्यता हुं। कयोंकी
जाते हुए मैं ने तुमहारे पुजयों में एक बेदी पर यह लीष्या
हुआ पाया की अजाना हुआ इस्वर के लीये सो जीसे तुम सब
अजाने हुए पुजते हो मैं तुमहें उसी का संदेस देता हुं।
२४ इस्वर जीसने संसार श्रीर उस में के सब कुछ उतपंन कीया
आकास श्रीर पीरथीवी का परभु होके हाथों के मंदीरों में बास
२५ नहीं करता। श्रीर वुह इस लीये मनुष्य के हाथों से सेवा नहीं
करवाता की वुह कीसी बसतु का अधीन नहीं है कयोंकी उसी
२६ ने सब को जीवन श्रीर सास श्रीर सब कुछ दीया। श्रीर उसने

प्रेकही लोऊ से मनुष्पों के साने जात गनों को सानी पीनथीवी में व्रसने को व्रनाय़ा है श्रोन उनके नीवास के सीवानों को श्रोन
२७ हन प्रेक समय़ को ठहनाय़ा है। जीसतें पनम्नु को ढ़ूंढ़ें कय़ा उसे टटोल कन पाय़ें य़दपी वुह हम में से कीसी से दुन नहीं।
२८ कय़ोंकी हम लोग उसी से जीते यलते फीनते श्रोन सथीन हैं जैसा की तुमहाने हा कीतने कव्रीतों ने म्नी कहा है की हम ता
२९ उसी के व्रंस हैं। सो जो हम इसन के व्रंस हैं तो हमें समझ़ने को उयीत नहीं की इसन सोने अथवा नुपे अथवा पथन के
३० समान है जो मनुष्य के मनन श्रोन व्रनावट से है। कय़ोंकी य़दपी इसन ने अगय़ानता के समय़ों को टाल दीय़ा तथापी अव्र अगय़ा कनता है की हन प्रेक मनुष्य जो जहां है सो
३१ पसयाताप कने। इस कानन की उसने प्रेक दीन ठहनाय़ा है जीस में वुह घनम से उस मनुष्य के दुवाना से जीसे उसने सथापीत कीय़ा है संसान का नय़ाय़ कनेगा श्रोन उसके व्रीष्पै
३२ में सव्र को उसे फीन जीलाने से नीसयय़ कीय़ा। श्रोन जव्र उनहों ने मीनतकों के जी उठने की सुनी कीतनों ने ठठा कीय़ा पनंतु श्रोनों ने कहा की हम तुझ से इस व्रात
३३ के व्रीष्पै में फीन सुनेंगे। सो पुलुस उन में से जाता नहा।
३४ तथापी कीतने लोग उस से मील के व्रीसवास लाय़े जीन में देय़ुनसय़ुस मंतनी था श्रोन प्रेक इसतीनी दमनस नाम की अनु उनके संग श्रोन कीतने थे।

१८ अठानहवां पनव्र।

पुलुस का कनंतस में जाना श्रोन य़हूदीय़ों के व्रैन के माने अनदेसीय़ों को उपदेस कनना १—११ अयह्य के आगे पकड़वाय़ा जाना श्रोन छुट जाना १२—१७ पुलुस का अ़नोसखीम में जाना श्रोन

वहां से अंतयुक को मंडलीयों से भेंट करना १८—२३ अपलुस का अफसस में उपदेस करना २४—२८।

१ इन बातों के पीछे पुलुस असीने से जाके करंतुस में आया।
२ और पंतस देसी अकला नाम कोसी युहुदी को पाया जो थोड़े दीन हुऐ अपनी इसतीरी परसकला के संग ईतालीया से आया था इस लीये की कलादीयुस कैसर ने सारे युहुदीयों को रुम से नीकल जाने की आगया की थी सो वुह उनके पास
३ आया। और इस लीये की वुह उनका सा उदमी था उनके संग रहा और कारज कीया कयोंकी उन का कारज तंबु
४ बनाने का था। और उसने हर बीसराम में मंडली में बीवाद
५ कीया और युहुदीयों और युनानीयों को मना लाया। और जयों हीं सीलास और तीमताउस मकदुनीया से आये मन के उभड़ने से पुलुस ने युहुदीयों के आगे साछी दी की यसु वही
६ मसीह है। परंतु जब वे बीरोध करके इसनीय नींदा बयानने लगे उसने अपने बसतर को झाड़ के उनहें कहा की तुमहारा लोहु तुमहारे सीर पर मैं नीरदोष हुं सो अब से
७ मैं अनदेसीयों की ओर जाता हुं। और वहां से होके वुह युसतुस नाम इसर के एक भकत के घर गया जीसका घर
८ मंडली से मीला हुआ था। परंतु मंडली का परधान क्रीसपस अपने सारे घर समेत परभु पर बीसवास लाया और सुनके
९ बहुत से करंती बीसवास लाये और सनान पाया। परंतु परभु ने रात के दरसन के दुवारा पुलुस को कहा की मत डर
१० परंतु कहे जा और चुपका मत रह। कयोंकी मैं तेरे संग हुं तुझे सताने को कोइ तुझ पर न पड़ेगा कयोंकी इस नगर
११ में मेरे बहुत लोग हैं। सो वुह डेढ़ बरस वहां रहके इसर
१२ का बचन उन में उपदेस करता रहा। परंतु जब जलयुन

अप्पाय़ा का अधछ ऊआ य़ऊदीय़ों ने ऐक मन से पुलुस पन
१३ चढ़ा कन के उसे व़ीयान सथान में लाके कहा। की य़ह जन
ईसवन की व़ीनुध ईसन की सेवा कनने को लोगों को उभाड़ता
१४ है। औन जव़ पुलुस ने व़ानता कनने याहा तो जलय़ुन ने
य़ऊदीय़ों से कहा की हे य़ऊदीय़ो जो य़ह कुछ अंधेन अथवा
उपद्नव की व़ात होती तो तुमहानी सहाय़ कनने में उयीत
१५ होता। पनंतु जो य़ह व़यन के औन नाम के औन तुमहाने
सासतन के व़ीष्पै का व़ीवाद है तो तुमहीं जानो कय़ोंकी मैं
१६ ईन व़ातों का व़ीयानी न ऊंगा। औन उसने व़ीयान सथान
१७ से उनहें हांक दीय़ा। तव़ सान्ने य़ुनानीय़ों ने मंडली के
पनधान ससतनीस को पकड़ के उसे व़ीयान सथान के आगे
१८ माना पनंतु जलय़ुन ने उन व़ातन को कुछ न समझा। औन
पुलुस औन भी व़ऊत दीन लों वहां नहा तव़ भाईय़ों से व़ीदा
होके कनकनाय़ा में मनौती के लीय़े अपना सीन मुंड़ाके
पनसकला औन अकला के संग सीनीय़ा की औन यल नीकला।
१९ औन उसने अफसस में आके वहां उनहें छोड़ा पनंतु आप
२० मंडली में जाके य़ऊदीय़ों से ययना की। य़दपी उनहों ने
कुछ दीन अपने य़हां ठहनने को उस से व़ीनती की तथापी
२१ उसने न माना। पनंतु उनसे य़ह कहके व़ीदा ऊआ की
अवैस्य पनव़ में मुझे य़नोसलीम में होना अवेस है पनंतु ईसवन
याहे तो मैं तुमहाने पास फीन आउंगा औन वह अफसस
२२ से खोल यला। औन कैसनीय़ा में उतन के यढ़ गय़ा औन
२३ मंडली को नमसकान कनके अनताकीय़ः में उतन पड़ा। औन
वहां कुछ दीन नहके यला गय़ा औन सानै सीष्पों को दीनढ़
कनता ऊआ नीत से गलतीय़ः के देस औन व़नजीय़ः में सनव़तन
२४ फीना। अव़ असकनदनीय़ानी ऐक य़ऊदी अपलुस नाम जो
सुव़कता औन धनम पुसतक में व़ड़ा नीपुन था अफसस में
२५ आय़ा। ईस जन ने पनभु के मत की सीष्पा पाई थी औन मन

के तेज से पनभु की व्रातें कहता श्रोन ठीक नीत से सीप्पाता
२६ था पनंतु केवल य़हीय़ा के सनान का जानकान था। उसने
साहस से मंडली में कहना आनंभ कीय़ा श्रोन अकला श्रोन
पनसकला उसे सुनके अपने घन लाय़े श्रोन इसन का मत अती
२७ अछी नीत से उस पन प्पोला। श्रोन जव्र उसने अप्पाय़ः में
पान जाने याहा तो उसे गनहन कनने को भाइय़ों ने सीप्पों
पास लीप्पा श्रोन पडुंयके जो अनुगीनह के दुवाना से व्रीसवास
२८ लाय़े थे उसने उनकी व्रड़ी सहाय़ कौ। कय़ोंकी उसने व्रड़ी
हीनढ़ता से घनम पुसतकों से दीप्पा दीप्पाके की य़सु वही
मसीह है य़ऊदीय़ों से संवाद कीय़ा।

१९ उनीसवां पनव्र।

पुलुस का अफसस में आके सीप्पों को सनान देना
श्रोन घनमातामा का उतनना १—७ उस नगन में
उपदेस कनना श्रोन आसयनज कनम दीप्पाना
श्रोन व्रऊतों का व्रीसवास लाना ८—१० अफसस
में उस पन उपदनव होना नगन में घुम मयनी श्रोन
कठीन से लोगोंका घीनज पाना २१—४१।

१ श्रोन जव्र अपलुस कननतीस में था तो ऐसा ऊआ की पुलुस
उपन के सोवाने से फीनके अफसस में आय़ा श्रोन कीतने सीप्पों
२ को पाके। उनहें कहा की जव्र से तम लोग व्रीसवास लाय़े
तुमहों ने घनमातमा को पाय़ा है उनहों ने उतन दीय़ा की
३ हमों ने तो घनमातमा का होना नहीं सुना। उसने उनहें
कहा तो तुमहों ने कीस व्रात का सनान पाय़ा? वे व्रोले की
४ हम ने य़हीय़ा का सनान पाय़ा। तव्र पुलुस ने कहा की
य़हीय़ा ने नीसयय़ पसयाताप का सनान देते ऊऐ लोगों को
य़ुं कहा की तुम लोग उस पन व्रीसवास लाअेा जो मेन पीछे

५ आता है अरथात इसु मसीह पर। उन्हों ने यह सुन के
६ परभु यसु के नाम से सनान पाया। और पुलुस के उन पर
हाथ धरतेही धरमातामा उन पर उतरा और वे भांत भांत
७ की भाष्या बोले और अबोस कहने लगे। और वे सब मनुष्य
८ बारह ऐक थे। और मंडली में जाके वुह तीन मास लों
साहस से इसर के राज के बीष्यै में बीवाद करता और समझाता
९ रहा। परंतु जयों कीतने कठोर और अबीसवासी होके इस
मत को मंडली के आगे बुरा कहने लगे वुह उनसे अलग हो
सीष्यों को ऐकांत में लेके तरनस की पाठसाला में परतदीन
१० बीवाद करने लगा। और दो बरस लों यही हुआ कीया यहां
लों की आसीया के नीवासीयों ने कया यहूदी कया युनानी
११ सभों ने परभु यसु का बचन सुना। और पुलुस के हाथों से
१२ इसर परम आसचरज करता रहा। यहां लों की अंगोछा
और बसतर उसके अंग से रोगीयों पर ले जाते थे और उनका
रोग जाता रहता था और कुआतमा उन पर से उतर जाते
१३ थे। तब बहेतु और मंतर जापक यहूदीयों में से कीतने
परभु यसु का नाम लेके कुआतमा गरसतों को कहने लगे की
जीस यसु का परचारक पुलुस है हम तुमहें उसकी कीरीया
१४ देते हैं। और सुकवा यहूदी परधान याजक के सात बेटे
१५ यही करते थे। तब कुआतमा ने उतर देके कहा की यसु को
मैं जानता हुं और पुलुस का जानकार हुं परंतु तुम लोग कौन
१६ हो?। और कुआतमा गरसत मनुष्य उनपर लपका और
उनपर परबल होके उनहें बस में कीया यहां लों की वे घर
१७ से नंगे और घायल नीकल भागे। और यह बात अफसस
बासी सारे यहूदीयों और युनानीयों को जान पड़ी और उन
सभों पर डर पड़ी और परभु यसु के नाम की महीमा हुई।
१८ और बहुतेरे बीसवासीयों ने आ आ के मान लीया और
१९ अपने अपने करम को परगट कीया। और बहुतेरे इंद्र-

जादु करनी अपनी पुसतकों को ऐकठे लाये और सब के आगे फुंक दीये और उनहों ने उनके मोल का जो लेप्पा कीया तो
२० पचास सहसर टुकड़े चांदी हुऐ। ऐसे परमेशर से इसन ा
२१ बचन बढ़ा और परबल हुआ। जब ये बातें हो चुकीं तब पुलुस ने मकदुनीया और अप्पाया: से हो यरोसलीम में याह कहके जाने को मन में ठाना की वहां होके मुझे नुम को भी
२२ देप्पना अवेस है। और अपनी सेवाकारीयों में से दो को अरथात तीमताउस और आरासतस को मकदुनीया को भेजा
२३ और आप आसीया में कुछ दीन नहा। और उस समय उस
२४ मत के बीप्पे में वहां बड़ा हौरा हुआ। कयांकी दीमीतर-युस नाम ऐक सुनार था जो अरतमस के चांदी के सरुप बना
२५ बना कारजकारीयों को बहुत कमवाता था। उसने ऐसे कारज कारीयों के संग उनहें ऐकठे बटोर के कहा की मनुष्पो तुम
२६ लोग जानते हो की हमारी जीवीका इसी उदम से है। और देप्पते और सुनते हो की केवल अफसस में नहीं परंतु सारे आसीया में इस पुलुस ने बहुत से लोगों को मना मना के भट-काया है और कहता है की जो हाथों से बने हैं सो देव नहीं
२७ होते। सो केवल यही तो प्पटका नहीं की हमारे उदम का नीरादर होजाय परंतु महेसरी अरतमस का मंदीर भी नींदीत होजायगा और जीसकी पुजा सारे आसीया और संसार
२८ करते हैं उसकी महीमा जाती रहेगी। यह सुन के वे कोप से भर गये और चीला उठे की अफसीयों की अरतमस महान
२९ है। तब सारा नगर बड़ी घबराहट से भरगया और जायुस और अरसतप्परस मकदुनी को जो पुलुस के संगी जातीरीक थे
३० घसीट के ऐकमन से कीरीड़ा सथान को दौड़गये। और जब
३१ पुलुस ने लोगों में जाने चाहा तब सीप्पों ने उसे न छोड़ा। और आसीया के सरेसट परधानों में से भी उसके हीतकारी होके कीतनों ने कहला भेजा की तु कीरीड़ा सथान में जाने से परे

३२ नह। तव़ कीतने कुछ यीलाये श्रीन कीतने कुछ क्य़ोंकी मंडली गडव़ड़ा गइ श्रीन व़ङ्गतेने न जनते थे की हम कीस
३३ लीय़े एकठे ङ्गए हैं। श्रीन य़ङ्गदीय़ों ने श्रसकनदन को श्रागे धकीय़ाय़ा श्रीन लोगों ने मंडली में से उसे व़ढ़ा दीय़ा श्रीन श्रसकनदन ने हाथ से सैन कनके लोगों के श्रागे व़यान
३४ की व़ात कनने याहा। पनंतु जव़ उनहों ने जाना की वुह य़ङ्गदी है तो सव़ के सव़ दो घड़ी लों एक साथ यीलाय़े की
३५ श्रफसीय़ों की श्रनतमस महान है। पनंतु श्रधापक ने मंडली को सांत कनके कहा की हे श्रफसी मनुष्यो कौन मनुष्य नहीं जानता की श्रफसस का नगन महेसनी श्रनतमस का श्रीन उस
३६ मुनत का पुजेनी है जो व़ीनहसपती से गीनी है?। श्रव़ जैसा की य़े व़ातें श्रप्पंडीत हैं तुमहें उयीत है की युपके नहो श्रीन
३७ उतावली से कुछ न कनो। क्य़ोंकी तुम लोग इन मनुष्यों को य़हां लाय़े हो जो न तो मंदीन के योन श्रीन न तमहानी
३८ देव़ी के नींदक हैं। इस लीय़े य़दी दमीतनय़ुस श्रीन उसके संगी कानज कानी कीसी पन श्रपव़ाद नप्पते हों तो नय़ाय़
३९ हो नहा है श्रीन श्रधक्ष हें एक दुसने से व़ीवाद कनें। पनंतु य़दी तुम लोग श्रान श्रान व़ात के प्योजी हो तो वुह व़ीयान
४० सभा में नीननय़ कीय़ा जाय़गा। क्य़ोंकी श्राज के दंगा के लीय़े हम लोग लेष्पा देने के प्पटके में हैं की हमाने पास कोइ ऐसा कानन नहीं जो इस भीड़ का कुछ उतन हो सके।
४१ श्रीन इन व़ातों को कहके उस ने उस सभा को व़ीदा कीय़ा।

२० व़ीसवां पनव़।

पुलुस की य़ातना कननी श्रीन तनवास में फीन जाना १—६ उपदेस के समय़ य़ुतप्पुस का गीन के मन जाना श्रीन पुलुस से जीलाय़ा जाना ७—१२

पुलुस का मीत्रोतस में जना और अफ्सस के पनायीनों को वुलाना। १२—१७ उनहें उपदेस कनना और पनानथात कन के उन से अलग होना।

१ जव़ दंगा घीमा ऊआ तो पुलुस सीष्यों को वुला के और २ उन से मील मकदुनीय़ः को और यल नीकला। और उधन के सथानों में से हो और उनहें व़ऊत कहके उपदेस कनके ३ य़ुनान में आय़ा। और वहां तीन मास नहके जव़ वह सुनीय़ा के लीय़े जहाज़ पन यढ़ने पन था तव़ य़ऊदीय़ों के उसके ढुके में नहने के कानन से उसने उयीत जाना की मकदुनीय़ः से ४ फीने। और वुनाइ का सुपतनस और अनसतनष्पुस और सकुनदस तसलुनीकी और जाय़ुस दनव़ी और तीमताउस और आसीय़ा का तकीकस और तनफनस उसके संग ५ आसीय़ा लों गय़े। ये आगे जाके तनवास में हमाने लीय़े ६ ठहने। और अष्पमीनी नोटी के दीनों के पीछे फ़लीपी से हमने ष्पोली और पांय दीन में तनवास में उन पास पऊंये ७ और वहां सात दीन नहे। और अठवाने के पहीले दीन जव़ सीष्प लोग नोटी तोड़ने के लीय़े एकठे ऊए वीहान को व़ीदा होने के लीय़े पुलुस उनहें उपदेस कनने लगा और कथा को ८ आधी नात लों व़ढ़ाय़ा। और उपन के सथान में जीस में वे एकठे थे व़ऊत से दीपक थे वहां एक तनुन य़ुतष्पुस नाम का ९ ष्पुली ष्पीड़की पन व़ैठा सो गय़ा। और जैसा की पुलुस ने अपनी कथा अव़ेन लों व़ढाइ वुह नींद के व़स में होके तीसनी १० अंटानी से गीन पड़ा और मीनतक उठाय़ा गय़ा। तव़ पुलुस उनन के उसे लपट गय़ा और गोद में उठाके कहा, मत ११ घव़ेनाओ कय़ांकी उसका पनान उस में है। तव़ उपन आके और नोटी तोड़ और ष्पाके अव़ेन अनथात भोन लों व़ातें १२ कनता नहा तव़ व़ीदा ऊआ। और वे उस तनुन को जीता

१३ आये और व्रहुत सांत हुए। पनंतु हम आगे जहाज़ पन जाके असस को यले जहां पुलुस को यढ़ालेना था क्योंकी आप
१४ पैदल जाने की इछा कनके ऐसा ठहनाया था। और जव्र वुह हमें असस में मीला हम उसे यढ़ा के मतलीनी में आये।
१५ और वहां से प्योल के दुसने दीन ष्यूस के सामने आये और दुसने दीन सामस में हो तनजलीयुन में ठहन के अगीले दीन
१६ मीलीतस में आये। क्योंकी पुलुस ने अफ़सस से होके जाने को ठहनाया था जीसतें आसीया में कुछ समय नहने न पड़े
इस लीये उसने व्रहुत सा उपाय कीया था की जो हो सके तो
१७ पयासवें दीन का पनव्र यनोसलीम में होवे। पनंतु उसने मीलीतस से अफ़सस को और संदेस भेजवाके मंडली के पनधानों
१८ को व्रुलाया। और जव्र वे उस पास आये तो उनहें कहा तुम लोग जानते हो की पहीले दीन से मैं क्योंकन आसीया
१९ में आया और तुमहों में यला कीया था। और अतयंत दीनताइ से व्रहुत से आंसु व्रहा व्रहा के उन पनीछों में पनभु
की सेवा कनता था जो यहुदीयों के घात में नहने से मुझ पन
२० पड़ा था। और क्योंकन मैं ने कोइ लाभ की व्रात न नष्य छोड़ी और तुमहें उपदेस कनके मंडली मंडली और घन घन
२१ सीष्लाया कीया। और यहुदीयों और युनानीयों के आगे साष्पी दी की इसन के आगे पछता के हमाने पनभु यसु मसीह
२२ पन व्रीसवास लाओ। और अव्र देष्यो मैं आतमा में व्रंधा हुआ यनोसलीम को जाता हुं और नहीं जानता की वहां मुझ
२३ पन क्या क्या व्रीतेगा। पनंतु इतना की धनमातमा हन एक व्रसती में यह कह के साष्पी देता है की सीकनें और कसट मेने
२४ लीये धने हैं। पन मैं इन व्रातों को कुछ नहीं व्रुझता और न मैं आप अपने पनान को पीनीय जानता हुं जीसतें मैं अपने
दौड़ को और उस सेवा को आनंद से पुना कनुं जो मैं ने पनभु यसु से पाया है की इसन के अनुगीनह के मंगल समायान की

२५ साप्पी देउं। श्रीन अव्र देप्पो मुहे नीसयय्र है की तुम में से जीन में मैं इसन के नाज को पनयाना श्रीन फीना ऊं कोइ
२६ मेना मुंह फीन न देप्पेगा। इस लीये मैं आज तुमहाने आगे
२७ साप्पी देता ऊं की हन ग्रेक के लोऊ से मैं नीनदोप्प ऊं। कयों-की मैं तुमहाने आगे इसन की सानी मता व्रननन कनने से
२८ अलग न नहा। अव्र अपने लीये श्रीन साने हुंड के लीये जीस पन घनमातमा ने तुमहें नप्पवाल कीया सैांयेत होके इसन की मंडली को यनाश्रो जीसे उसने अपने लोऊ से छुड़ाया है।
२९ कयोंकी मैं ग्रह जानता ऊं की मेने जाने के पीछे फाडनीहान
३० ऊंडान तुमहों में पैठ के हुंड पन दया न कनेंगे। हां तुमहीं में से कीतने मनुष्य उठेंगे जो सोप्पों को अपनी श्रीन प्पींयने
३१ को हठीली व्रातें कहेंगे। इस लीये यौकस नहो श्रीन समनन कनो की मैं तीन व्रनस लो नात दीन आंसु व्रहा व्रहा के हन
३२ ग्रेक को नीत यीताता नहा। श्रीन अव्र हे भाइयो मैं तुमहें इसन को श्रीन उसके अनुगीनह के व्रयन को सैांपता ऊं जो तुमहें सुधान सकता है श्रीन सभों में जो पवीतन कीये गये हैं
३३ तुमहें अधीकान दे सकता है। मैं ने कीसी के सोने यांदी
३४ अथवा व्रसतन का लोभ न कीया। हां तुमहीं लोग जानते हो की इनहीं हाथों ने मेने श्रीन मेने संगीयों की आवेसक सेवा
३५ की। मैं ने तुमहें सव्र कुछ व्रता दीया है की कयोंकन तुमहें उयीत है की पनीसनम कनके दुनव्रलों का पनतीपाल कनो श्रीन पनभु ग्रसु के व्रयन का समनन कनो कयोंकी उसने आपही
३६ कहा है की देना, लेने से अधीक घन है। श्रीन उसने ग्रुं
३७ कह घुटने टेके श्रीन उन सभों के संग पनानथना की। श्रीन वे सव्र नीपट नोये श्रीन पलुस के गले पन गीन गीन उसे युमा।
३८ व्रीसेप्प उस व्रात के लीये जो उसने कही की तुम सव्र मेना मुंह फीन न देप्पोगे व्रऊत उदासीन ऊए श्रीन जहाज लों उसे पऊंयाया।

२१ प्रेकीसवां पनव्र।

पुलुस का सुन में आके सीप्पों को पाना और पनानथना कनके यल नीकलना १—६ उसका कैसनीय़ा में जाना और अपने वृंधन के व्रीप्पै में भवीष व्रानी सुननी ७—१६ उसका य़नोसलीम में आना और उस पन उपद्नव होना १७—४० ।

१ और क्य़ों हम लोग उनसे अलग ऊप्रे और यल नीकले तो सीघे कीस में आय़े और दुसने दीन नुदस को और वहां से
२ पतनः को गय़े। और प्रेक जहाज़ को पान फ़ुनीकी को जाते
३ पाके हम लोग उस पन यढ़ वैठे और यल नीकले। और कुव्रनस को देप्प व्रांय़े हाथ छोड़ सुनीय़ा को यले और सुन में
४ उतन पड़े क्य़ोंकी वहां नाव की व्रोझाइ उताननी थी। और सीप्पों को पाके सात दीन ठहने और उनहों ने आतमा की
५ पनेनना से पुलुस को कहा की य़नोसलीम को मत जा। पनंतु उन दीनों को पुना कनके हम यल नीकले और व्रीदा हो अपना मानग पकड़ा और इसतीनय़ों और व्रालकों समेत वे सव्र नगन के व्राहन लों हमाने संग आय़े और हमने नदी के
६ तीन घुठने टेक के पनानथना की। और आपुस में मील व्रीदा होके जहाज़ पन यढ़ वैठे और वे अपने अपने घन को
७ फीने। और अपनी दौड़ पुनी कनके हम सुन से तलमाउस में आय़े और भाइय़ों से मील के प्रेक दीन उनके संग नहे।
८ और व्रीहान को पुलुस और उसके संगी व्रीदा होके कैसनीय़ा में आय़े और फ़ैलवुस मंगल समायान पनयानक के य़हां,
९ जो उन सात में से था उतनके उस कने टीके। अव्र उस मनुप्प
१० का यान कुआंनी पुतनी थीं जो भवीसदव्रकतनी थीं। और हमाने वहां व्रऊत दीन होते ऊप्रे य़ऊदीय़ों से अजव्रस नाम
११ का प्रेक भवीसदव्रकता उतन आय़ा। उसने हमाने पास

अ क पुलुस का पटुका उठा लीया औान अपने हाथ पांव व्रांधके कहा की धनमातमा य्रुं कहता है की य्रनोसलीम में य्रङ्दी उस मनुष्य को, जीसका य्रह पटुका है य्रुं व्रांधेंगे औान अनदेसीय्रों
१२ के हाथ सैांपेंगे। जव्र हम ने य्रे व्रातें सुनी ता हम लोगों ने औान वहां के व्रासीय्रों ने य्रनोसलीम को न जाने के लीय्रे
१३ उसकी व्रीनती की। पनंतु पुलुस ने उतन दीय्रा की कय्रों व्रीलाप कनके मेने मन को तोड़ते हो? कय्रोंकी मैं ता केवल व्रांधे जाने को नहीं पनंतु य्रनोसलीम में पनभु य्रसु के नाम के
१४ लीये मनने को भी तैस ऊं। औान जव्र उसने न माना ता हम
१५ य्रुं कहके युप ऊय्रे की पनभु की इछा होवे। औान उन दीनों
१६ के पीछे हम अपनी सामगनी लेके य्रनोसलीम को यले। तव्र हमाने संग कैसनीय्रा में के कीतने सीष्य भी गय्रे औान हमें य्रेक मनसुन कव्रनसी पुनाने सीष्य के घन पऊंयाय्रा जीसके साथ
१७ हमें टीकना था। औान जव्र हम लोग य्रनोसलीम में पऊंये ता
१८ भाइ लोग आनंद से हमें आगे से आ मीले। औान दुसने दीन पुलुस हमाने संग य्राकुव्र कने आय्रा औान साने पनायीन भी
१९ य्रेकठे थे। औान उनसे मीलके सव्र कानजन को जो इसन ने अनदेसीय्रों में उसकी सेवा की औान से कीय्रे थे अलग अलग
२० व्रननन कीय्रा। उनहों ने सुन के पनभु की सतुत की औान उसे कहा की भाइ तु देष्यता है की कीतने सहसन व्रीसवासी
२१ य्रङ्दी हैं औान सव्रके सव्र व्रैवसथा के लीय्रे जलीत हें। उनहों ने तेने व्रीष्ये में सुना है जो तु अनदेसीय्रों में के साने य्रङ्दीय्रों को मुसा से फीन जाने को सीष्याता है औान कहता है की अपने पुतनों का ष्यतनः कनने को औान व्रेवहान पन यलने को उयीत
२२ नहीं। सो य्रह कय्रा है? मंडली नोसंदेह व्रटुनेगी कय्रोंकी
२३ तेने आने का सुनेंगे। सो हमाने कहने के समान कन हमाने
२४ पास यान मनुष्य हैं जीनकी मनाती है। उनहें लेके आप को उनके संग पवीतन कन औान उनके साहे में कुछ उठान कन

जीसतें वे अपना सीर मुंडावें और सब जान जांयगे की जो बातें हम लोगों ने उसके बीष्पै में सुनी थीं सो कुछ नहीं परंतु वुह भी ब्यवसथा को पालन करके उसकी रीत पर चलता है।
२५ और बीसवासी अंनदेसीओं के बीष्पै में हम ने लीष्प के ठहराया है की वे इन बातों को न मानें परंतु केवल इतना करें की मुरतीन के परसाद से और लोहु से और गला घुंटी हुइ
२६ बसतु के ष्पाने से और बयभीचार से परे रहें। तब पुलुस ने उन मनुष्पों को लेके दुसरे दीन उनके संग अपने को पवीतर करके मंदीर में गया और कह दीया की जब जो उन में से हर ऐक का बलदान चढ़ाया जाय पवीतर करने का समय पुरा
२७ हो जायगा। परंतु जब वे सात दीन बीतने पर आये आसीया के यहुदीयों ने उसे मंदीर में देष्प कर सारी मंडलीयों को
२८ उभाड़ा और उस पर हाथ डालके चीलाये। की हे इसराइली मनुष्पो सहाय करो यह वुह मनुष्प है जो हर सथान में लोगों और ब्यवसथा के और इस सथान के बीरोध में सब का सरबतर सीष्पाता है और युनानीयों को भी मंदीर में लाया
२९ और इस पवीतर सथान को असुध कीया। इस लीये की उनहों ने आगे नगर में तरफमस अफसी को देष्पा और
३० समझा था की पुलुस उसे मंदीर में लाया। तब सारा नगर चंचल हुआ और लोगों की भीड़ हुइ और पुलुस को पकड़के मंदीर में से बाहर घसीटा और झट दुवार बंद कीये गये।
३१ और जब वे उसे घात करने पर हुऐ तो परधान सेनापती
३२ को संदेस पहुंचा की सारे यरोसलीम में हैारा हुआ है। तब वुह तुरंत जोधा और सतपतीन को लेके उन पर दौड़ पड़ा और वे परधान और जोधाओं को देष्पके पुलुस को मारने से
३३ अलग रहे। तब परधान ने पास आके उसे पकड़ा और दो सीकरों से बांधने की अगया की और पुछा की यह कौन है
३४ और इसने कया कीया है ?। तब कीतने कुछ बड़बड़ाऐ और

कीतने कुछ और जब वुह कोलाहल के मारे ठीक न जान सका
३५ तो उसे गड़ में ले जाने की अगझा की। पनंतु जब वुह सीढ़ी
पन पड़ुंचा तो ऐसा ड़ुआ की लोगों के कानन जोधाओं ने
३६ उसे उठाझा। कझोंकी लोगों की एक बड़ी मंडली यीलाती
आती थी की उसे उठा डालो।
३७ पनंतु जब पुलुस को गढ़ में ले जाने लगे तो उसने पनधान ा
कहा की मैं आप से कुछ कड़ुं वुह बोला कझा तु युनानी बोल
३८ सकता है?। तु वुह मीसनी नहीं जीसने इन दीनों से आगे
दंगा मयाझा और याप सहसन हतझानें को बन में ले गझा?।
३९ पनंतु पुलुस ने कहा की मैं तो कीलकीझः के तनसस का एक
ग्रड़ुदी ड़ुं जो ऐसा हलुक नगन नहीं और मैं बीनती कनता
४० ड़ुं की मुझे लोगों से बोलने दीजझे। उस ने उस से छुटी
पाके सीढ़ी पन खड़े होके लोगों को हाथ से सैन कीझा और
जब वे युप याप ड़ुऐ तब वुह इब्रानी भाष्षा में झह कह
के बोला।

२२ बाइसवां पनब्र।

पुलुस का लोगों के आगे अपना सभा याल बननन
कनना १—२१ ग्रड़ुदीझों का कोपीत होना और
पुलुस का सभा के आगे पड़ुंयाझा जाना २२—३०।

१ हे मनुष्य भाइझो और हे पीतनो मेने बयाव की बात सुनो
२ जो अब तुमहों से कहा जाती है। जब उनहों ने उसे इब्रानी
३ भाष्षा में बातता कनते सुना तो वे तनीक न बोले। तब उसने
कहा की मैं ग्रड़ुदी मनुष्य ड़ुं जो कीलकीझः के तनसस में
उतपंन ड़ुआ पनंतु इस नगन में जमलइल के यनन पास बीदझा
पाइ और पीतनों की ब्रझवसथा में ठीक उपदेस पाझा और
इसन के लीझे ऐसा जलीत था जैसा तुम लोग आज के दीन

४ हो। और मैं इस पंथ के लोगों को मौनतु लों सताता कीया और क्या पुरुष क्या इसतीनो को बंदीगीनह में सौंपा कीया।
५ जैसा की परधान याजक और सारे परचीन मेरे साषी हैं उनसे मैं भाइयों के लीये पतरी पाके दमीसक को जाता था जीसतें वहां के लोगों को ताड़ना कराने के लीये बांधके यरो-
६ सलीम में लाउं और जाते जाते जब मैं दमीसक पास पहुंचा दो पहर के अटकल में ऐसा हुआ की मेरी चारों ओर आकस-
७ मात सरग से बड़ी जोत का परकास हुआ। और मैं भुम पर गीर पड़ा और मुझ से कहते हुऐ मैं ने ऐक सबद सुना की
८ साउल साउल तु मुझे क्यों सताता है?। तब मैं ने उतर देके कहा हे परभु तु कौन है? उसने मुझे कहा की मैं यसु नासरी
९ हुं जीसे तु सताता है। और मेरे संगीयों ने उस जोत को तो देष्पा ठीक और डर गये परंतु जीसने मुझ से कहा
१० उनहों ने उसका सबद न सुना। तब मैं ने कहा की हे परभु मैं क्या करुं? परभु ने मुझे कहा की उठके दमीसक में जा और वहां सारी बातें जो तेरे करने के लीये ठहराई गई हैं
११ तुझे कही जायंगी। और जैसा की उस जोत के तेज के मारे मैं देष्प न सका तो अपने संगीयों का हाथ धरे हुऐ दमीसक
१२ में आया। और ब्यवसथा की रीत का ऐक भकत जन,
१३ हनानीया, जीसकी भलाई को सारे यहुदी मानते थे। मेरे पास आया और ष्पड़ा होके मुझे कहा, हे भाई साउल उपर
१४ देष्प और उसी घड़ी मैंने उसे देष्पा। उसने कहा की हमारे पीतरों के इसर ने अपनी इछा जानने को और उस धरमी को देष्पने को और उसके मुंह का सबद सुनने को तुझे ठहरा
१५ रष्पा है। सो उन बसतुन के लीये जो तु ने देष्पीं और सुनीं
१६ हैं तु सब लोगों के आगे साष्पी होगा। और अब बीलंब क्यों करता है? उठके सनान पा और परभु का नाम लेके अपने
१७ पापों को धो डाल। और जब मैं यरोसलीम में फीर गया

श्रौन मंदौन में पनानथना कनने लगा यूं क्रुआ की मैं वेसुध
१८ हो गया। श्रौन मैं ने मुझ से यह कहते उसे देष्पा की सौघन
कनके यनोसलौम से नौकल जा इस लौये की मेने वीषै में
१९ वे तेनी साष्पी न मानेंगे। तव मैं ने कहा हे पनमु वे जानते
हैं कौ मैं तेने वीसवासौयों के। वंदौगौनह में डालता नहा
२० श्रौन हन ऐक मंडली में उनहें माना कौया। श्रौन जव तेने
साष्पी इसतौपरान का लोहु वहाया गया मैं भी वहां था श्रौन
उसके मान डालने में संगी था श्रौन उसके वधौकों के वसतन
२१ कौनष्पवाली कनता था। तव उसने मुझे कहा की यला जा
कयोंकी मैं तुझे अंदेसौयों के पास दुन भेजुंगा।
२२ श्रौन उनहों ने इस वात लों उसकी सुनी तव वे यौला के
वोले की ऐसे के। भुम पन से उठा डाल कयोंकी इसका जीना
२३ जोग नहीं। श्रौन जव वे यौला के श्रपने कपड़े पराड़ के
२४ धुल उड़ाने लगे। तव श्रघक्ष ने उसे गढ़ में लाने की श्रगया
की श्रौन कहा की उसे कोड़े मानके ताड़ें जौसतें जानें की वे
२५ कयों उसके वीनोघ में यूं यौलाये श्रौन जव वे उसे यमोटी से
वांघते थे पुलुस ने पास ष्पड़े हुऐ सत पती को कहा कया
तुमहाने लौये जोग है की ऐक नुमी मनुष्प के। वीन दोष्पी
२६ ठहनाऐ ताड़ना कनो। सतपती सुनके श्रघक्ष से जा वोला की
जो श्राप कौया याहते हैं जो सोयें की यह मनुष्प तो नुमी
२७ है। तव श्रघक्ष ने पास श्राके उसे कहा की मुझ से कह कया
२८ तु नुमी है उसने कहा की हां। तव श्रघक्ष ने कहा की मैं ने
वहुत सा नोकड़ देके इस नौनवंघता को पाया पुलुस वोला
२९ पनंतु मैं नौनवंघ उतपंन हुश्रा। तव जो उसे ताड़ा याहते
थे उनहों ने उस से हाथ उठाये श्रौन श्रघक्ष भी उसे नुमी जान
३० के श्रौन की मैं ने उसे वांघा डन गये। यहुदीयों ने जौस
वात के लौये उसपन दोष्प लगाये उसे नौसयय जानने को
दुसने दौन मैं ने उसे वंघन से ष्पोला श्रौन पनघान याजकों

ऋौन उनकी सानी सम्राऋों को प्रेकठे होने की ऋगया की ऋौन पुलुस को नीकाल के उन के ऋागे प्पड़ा कीया।

२३ तेइसवां पनव्न।

पुलुस का व्रयाव की व्रात कहनी यहूदीयों का कोपीत होना ऋौन पुलुस का व्रयना १—११ उसके घात में यालीस यहूदीयों का नहना कैसनीया में पहुंयया जाके पुलुस का उनके हाथ से व्रयना १२—३५।

१ तव्र पुलुस ने सम्रा को घयान से देप्प के कहा की हे मनुप्प भाइयो मैं मन की सानी भलाइ से ऋाज लों इसन के ऋागे २ यला। तव्र पनघान याजक हनानीया ने उनहें, जो उस पास ३ प्पड़े थे उसे थपड़ाने की ऋगया की। पुलुस ने उसे कहा की हे उजलीत भीत इसन तुहे थपड़ावेगा कयों कि व्रैवसथा की नीत पन तु मुझे नयाय के लीये व्रैठा है ऋौन व्रैवसथा व्रीनुघ मुहे ४ थपड़ाने की ऋगया कनता है। तव्र ऋास पास के लोग व्रोल उठे की कया तु इसन के पनघान याजक को वुना कहता है। ५ पुलुस ने कहा हे भाइयो मैं न जानता था की यह पनघान याजक है कयोंकी लीप्पा है की तु ऋपने लोगों के पनघान ६ को वुना मत कह। ऋौन जव्र पुलुस ने देप्पा की उन में प्रेक भाग सादुकी ऋौन दुसने भाग फनीसी हैं तो सम्रा में पुकाना की हे मनुप्प भाइयो मैं फनीसी ऋौन फनीसी का व्रेटा हुं मीनतु से जी उठने की ऋासा के लीये मैं व्रीयान सथान में ७ पहुंयाया गया। उस के यूं कहते ही फनीसीयों ऋौन सादुकीयों ८ में व्रीवाद हुऋा ऋौन मंडली के दो भाग हो गये। कयोंकी सादुकी कहते हैं की न जी उठना ऋौन न दुत ऋौन न ऋातमा ९ है पनंतु फनीसी सव्र को मानते हैं। तव्र व्रड़ा हौना मया

औार फरीसीयों की ओार के अध्यापक उठे औार युध करके कहने लगे की हम लोग इस मनुष्य में कुछ बुराइ नहीं पाते परंतु जो कीसी आतमा अथवा दुत ने उस से कहा है तो हम
१० लोग इसन से लड़ाइ न करे। औार जब बड़ा झगड़ा ऊआ तो उनसे पुलुस का टुकड़ा टुकड़ा कीये जाने के डर के मारे सेना के अध्यक्ष ने जोधाओं को जाने को औार उनके मध में
११ से उसे परबलता से लेके गढ़ में लाने को अगया की। अगली रात को परभु ने उस पास खड़ा होके कहा हे पुलुस धीरज धर कयोंकी जैसा तु ने मेरे बीषै में यरोसलीम में साक्षी दी
१२ है तैसा रुम में भी साक्षी देना तुझे अवेस है। औार जब दीन ऊआ यहुदीयों में से कीतनों ने यह कहके जुकत बांधी की हम पर धीकार है जब लों पुलुस को घात न करें हम न
१३ खायेंगे न पीयेंगे। औार जीनहों ने यह ऐका कीया था सो
१४ चालीस से उपर थे। औार उनहों ने परधान याजकों औार पराचीनों के पास आके कहा की हमों ने अपने पर सराप लीया है की जब लों पुलुस को घात न करें हम लोग कुछ न
१५ चीख्खेंगे। जैसा की तुम लोग चाहते हो की उसके समाचार को अछी रीत से बुझें अब इस लीये सभा के संग होके सेना के अध्यक्ष को कहीओ की कल उसे हमारे पास उतार लावे औार तुमहारे पास न पऊंचतेही हम लोग उसे घात करने को
१६ सीध हो रहेंगे। परंतु पुलुस का भांजा ढुके की सुनके गया
१७ औार गढ़ में आके पुलुस को कहा। तब पुलुस ने सतपतीन में से ऐक को बुलाके कहा की इस तरुन को सेना के अध्यक्ष
१८ पास ले जा कयोंकी उस से कुछ कहना है। वुह उसे लेगया औार सेना के परधान कने लाके कहा की पुलुस बंधुआ ने मुझे बुलाके चाहा की इस तरुन को आप के पास लाउं जो आप
१९ से कुछ कहा चाहता है। तब सेना के अध्यक्ष ने उसका हाथ पकड़ के ऐकांत में ले जाके पुछा की तु मुझे कया कहा चाहता

२० है ?। उसने कहा की जैसा वे लोग उसके व्रीप्पै में अछी नीत से व्रीयान कीय़ा याहते हैं यीऊदीय़ों ने प्रका कीया है की
२१ आप से पुछके पलुस के कल सभा में उतार लावें। परंतु आप उनकी व्रात न मानय़े कयोंकी उन में यालीस से उपर जो उसके ढुके में हैं जीनहों ने आपस में कीरीय़ा प्पाइ है की जवलों उसे घात न करें न प्पायेंगे न पीयेंगे ग्रोर अव्र वे लैस
२२ होके आप की अगय़ा की व्राट जोह रहे हैं। तव्र सेना के अघक्ष ने उस तरुन के व्रीदा करके योताय़ा की देप्प कोइ
२३ न जाने की तुने ये व्रातें मुझ से कहीं। ग्रोर उसने सतपतीन में से दो के व्रुलाके कहा की कैसरीय़ा के जाने के लीय़े दो सै जोघा ग्रोर सतर घोड़ यढे ग्रोर दो सै भलइत पहर
२४ रात लों लैस कर रप्पो। ग्रोर व्राहन सहेजो जीसतें वे पुलुस
२५ के यढ़ा के फ़ीलकस अघक्ष पास पहुंयावें। ग्रोर उसने इस
२६ प्रकार की रीतीत पतरी लीप्पी। फ़ीलकस महामहीमन
२७ अघक्ष को कलाडीय़ुस लीसीय़ास का नमसकार। इस मनुप्प को यीऊदीय़ों ने पकड़ा ग्रोर उनके हाथ से मारे जाने पर था तव्र य़ह समझ के की वुह रुमी है मैं ने जोघाग्रों को लेके उसे
२८ जा छुड़ाय़ा। ग्रोर उस पर उनके अपराघ का दोप्प जानने
२९ को मैं उसे उनकी सभा में ले गय़ा। ग्रोर मैं ने उनकी व्रैवसथा के परसन के व्रीप्पै में उस पर दोप्प लगाते पाय़ा परंतु उसे घात करने अथवा व्रंघन में डालने को मैं ने कोइ
३० व्रात न पाइ। परंतु जव्र यीऊदीय़ों क उसके ढके में लगने का संदेस मुझे पहुंया मैं ने तुरंत उसे आप पास भेजा ग्रोर उसके दोप्प दाय़कों को भी अगय़ा की, की जो उस पर अपव्राद
३१ रप्पते हों सो आप के आगे व्ररनन करें कुसल होवे। जोघाग्रों ने अगय़ा के समान पुलुस को लेके राते रात अंतपतरस में
३२ लाय़े। ग्रोर दुसरे दीन घोड़ यढ़ों का उसके साथी छोड़के
३३ वे गढ़ को फ़रे। सो कैसरीय़ा में आके पतरी अघक्ष को दी

२४ श्रीन पुलुस को भी उसके आगे कीया। अयछ ने पतनी पढ़के पछा की वह कीस पनदेस का है श्रीन उसे कीलकीया: का वूह
२५ के। उसने कहा की जव तेने दोप्प दायक भी आवेंगे तव मैं तेनी सुनुंगा श्रीन उसे हीनुदीस के बीयान सथान में नष्पने की अगया की।

२४ यौवीसवां पनव्र।

यहूदीयों का पुलुस पन दोप्प लगाना श्रीन उसका उतन देना १—२१ फ्रीलकस अयछ का उस पन कीनपा कननी श्रीन घुस न पाके पुलुस को वंधन में छोड़ जाना २२—२७।

१ पांय दीन पीछे पनधान याजक हनानीया पनायीनें के श्रीन ततलस नाम एक सु वकता के संग उतन आया श्रीन वे
२ अयछ के आगे पुलुस के वीनुघ जा प्पड़े कूए। श्रीन जव वुह वुलाया गया ततलस ने यूं कहके उसे दोप्प देना आनंभ कीया की हे महानाज फ्रीलकस हम सव पना घन मान के हन समय
३ श्रीन हन सथान में वड़े कुसल से नहते हैं। कयोंकी हमलोग आप के कानन से वड़ा यैन पाते हैं श्रीन आप की पनवीनता से
४ इन लोगों को वकृत से लाभ हैं। तथापी जीसतें मैं आप को अधीक कलेस न देउं मैं आप की वीनती कनता कुं की कीनपा
५ कनके हमानी थोड़ी वातें सुनीये। कयोंकी हमों ने इस मनुष्प को सव यहूदीयों में जो जगत में हैं वीगाडु श्रीन दंगइत पाया
६ श्रीन नसनानीयों के पंथ का अगुआ है। उसने मंदीन को भी अपवीतन कनने याहा उसे हम ने पकड़ा श्रीन अपनी वैवसथा
७ की नीत पन उसका नयाय कनने याहा। पनंतु ससीयास अयछ वड़ी सेना लेके हम पन यढ़ आया श्रीन उसे हमाने हाथ से
८ छुड़ा लेके। उसके दोप्प दायकों को आप पास आने की अगया

को, जीसतें आप उसे जांच के हमारे दोष्प लगाने की व्रातों को
९ व्रुह्हे। श्रैार य़ह़ूदीय़ों ने भी य़ह कहके मान लीय़ा की य़े व्रातें
१० य़ोंहीं हैं। फरेन जव्र अचक्ष ने पुलुस को सैन कीय़ा तव्र उसने
उतर दीय़ा की हे फरीलक्स जैसा मैं जानता ह़ूं की आप व्रनसों
से इन लोगों के नय़ाय़ी हैं मैं अधीक सुय़ाताइ से अपना उतर
११ देता ह़ूं। आप समझ सकते हैं की व्रारह दीन से अधीक
नहीं ह़ूए जव्र से मैं सेवा के लीय़े य़रूसलीम में गय़ा था।
१२ श्रैार उनहों ने मुझे कीसी के संग मंदीर में व्रीवाद करते
अथवा लोगों को भडकाते न पाय़ा न तो मंडली में न नगर
१३ में। श्रैार न वे उन व्रातों को ठहरा सकते हैं जीनके व्रीष्पै
१४ में वे मुझ पर दोष्प लगाते हैं। परंतु मैं आप के आगे य़ह
व्रात मान लेता ह़ूं की उस मत के समान जीसे वे उपद्रव कहते
हैं मैं अपने पीतरों के इसर की सेवा करता ह़ूं श्रैार सव्र व्रातों
का जो व्यैवस्था श्रैार भवीसव्रानाय़ों में लीष्पी है व्रीसवास
१५ रष्पता ह़ूं। श्रैार इसर से य़ह आसा रष्पता ह़ूं की मीरतकों
का जी उठना होगा क्या धरमी का क्या अधरमी का जीसे वे
१६ आप भी मानते हैं। श्रैार इसी व्रात के लीय़े मैं इसर के
श्रैार मनुष्पों के आगे नीरदोष्प मन रष्पने को साधन करता
१७ ह़ूं। अव्र व्रह़ूत व्ररसों के पीछे मैं दान श्रैार भेंट अपने लोगों
१८ के लीय़े लाय़ा। इस में आसीय़ा के कीतने य़ह़ूदाय़ों ने मुझे
न मंडली से न दंगा से मंदीर में पवीतर कीय़ा ह़ूआ पाय़ा।
१९ श्रैार य़दी उनका मुझ पर कुछ अपव्राद होता तो उचीत था
२० की वे आप के आगे आके मुझ पर दोष्प लगाते। अथवा जव्र
मैं सभा के आगे ष्पड़ा था तव्र य़दी इनहों ने मुझ में कुछ अपराध
२१ पाय़ा हो तो कहें। केवल इस एक व्रात के व्रीष्पै के लीय़े की
मैं उन में ष्पड़े ह़ूए पुकारा की मीरतकों के जी उठने के कारन
से आज मैं तुमहों से पुछा जाता ह़ूं।

२२ श्रैार जव्र फरीलक्स ने य़े व्रातें सुनीं तो य़ह कहके उनहें

टाल दीया की जव़ लसीयास सेना का अधछ आवेगा मैं तुमहा-
२१ नी व़ात अछी नीत से व़ुझुंगा। फेन उसने पुलुस को दीनोसट
में नप्पने को श्रोन उसे छुटी देने को श्रोन उसके मीतनें को
उस पास आमे जाने को श्रोन सहाय़ कनने को प्रेक सतपती को
२४ अगय़ा की। श्रोन कीतने दीनें के पीछे फेलिकस अपनी पतनी
दनुसलः यऊदनी के संग आय़ा श्रोन पुलुस को व़ुलाके मसीह
२५ के व़ीसवास के व़ीप्पे में उस से सुना। श्रोन जव़ वुह घनम
के श्रोन संजम के श्रोन आवेय़ा नय़ाय़ के व़ीप्पे में कह नहा था
फेलिकस ने कांपते ऊप्रे उतन दीया की अव़ तो तु जा मैं
२६ अवकास पाके फेन तुझे व़ुला भेजुंगा। उसे य़ह आसा भी थी
की पुलुस से कुछ नोकड़ पावे जीसतें उसे छोड़ देवे इस लीय़े वुह
२७ उसे व़ानंव़ान व़ुला के उस से व़ानता कनता था। श्रोन दो
व़नस पीछे पनकय़ुस फेसतस फेलिकस की सनती आय़ा श्रोन
फेलिकस ने य़ऊदीय़ें की पनसनता के लीय़े पुलुस को व़ंधुआइ
में छोड़ा।

२५ पचीसवां पनव़।

यऊदीय़ें का पुलुस पन दोप्प लगाना श्रोन पुलुस का
उतन श्रोन दोहाइ देनी १—१२ अगनपा नाजा का
पुलुस का समाधान सुनना १३—२७।

१ इस लीय़ें जव़ फेसतस उस पनदेस में पऊंचा तो तीन दीन
२ पीछे कैसनीय़ा से य़नोसलीम को गय़ा। तव़ पनधान य़ाजक
श्रोन य़ऊदीय़ें के मुप्पीय़ें ने उस के आगे हो पुलुस के व़ीनोध
३ में उस से व़ीनती कनके इतना अनुगीनह चाहा। की वुह
उसे य़नोसलीम में मंगवावे श्रोन उसे मानग में घात कनने को
४ ढुके में ऊप्रे। पनंतु फेसतस ने उतन देके कहा की पुलुस कैसनीय़ा
५ में नहे श्रोन मैं आप भी सीघन वहां जाने पन ऊं। श्रोन

तुममें से जो मेरे संग जासकें सो चलें और यदी उस में कुछ
६ अपराध होय तो उस पर दोष्य लगावें। सो उन में दस दीन
से उपर रहके वुह कैसरीया को गया और दुसरे दीन व्रीचार
७ आसन पर व्रैठा और पुलुस को लाने की अगया की। और
जव्र वुह सनमुष्य हुआ तो यरोसलीम से आये हुऐ यहुदीयों
ने चारों ओर प्पड़े होके पुलुस पर व्रहुत भारी भारी दोष्य
८ लगाये जो ठहरा न सके। तव्र उसने अपने व्रीष्पै में उतर
दीया की मैं ने कोइ अपराध न तो यहुदीयों की व्रैवसथों
९ के न मंदीर के और न कैसर के व्रीरोघ में कीया। तव्र
फरसतस ने यहुदीयों का मन रप्पने के लीये पुलुस को उतर
देके कहा कया तु इन व्रातों के व्रीष्पै में मेरे नीयाय के लीये
१० यरोसलीम को जायगा ?। परंतु पुलुस ने कहा की मैं कैसर
के नीयाय सथान में प्पड़ा हुं उचीत है की मेरा व्रीचार यहीं
कीया जाय यहुदीयों का मैं ने कुछ अपराध न कीया जो आप
११ भी अछी रीत से जानते हैं। कयोंकी यदी मैं ने अपराध अथवा
मारे जाने के जोग कुछ कीया है तो मैं मारे जाने से नाह नहीं
करता परंतु जो उन दोष्यों में से जो ये मुझ पर लगाते
हैं कुछ नहीं है तो कोइ मुझ को उनहें सौंप नहीं सकता
१२ मैं कैसर की दोहाइ देता हुं। तव्र फरसतस ने सभा से व्रात
चीत करके उतर में कहा की तु कैसर की दोहाइ देता है तु
कैसरही के पास भेजा जायगा।

१३ और कीतने दीनों के पीछे अगरपा राजा और व्ररनीकी
फरसतस को नमसकार करने के लीये कैसरीया में आये।
१४ और उनके वहां व्रहुत दीन होते हुऐ फरसतस ने पुलुस का
समाचार राजा से कहा की यहां ऐक मनुष्य है जीसे फीलकस
१५ व्रंघन में छोड़ गया। जव्र मैं यरोसलीम में था परघान
याजकों और यहुदीयों के पुरनीयों ने उसके व्रीष्पै में संदेस
१६ देके चाहा की उस पर दंड की अगया करुं। मैं ने उनहें

उतन दीया की नमीयों का यह व्रेवहान नहीं की कीसी को नास होने को सौंपें जव्र लों दोष्पी अपने दोष्प दायकों के
१७ सनमुष्प न होवे और व्रयाव की व्रात कनने न पावे। इस पीछे जव्र वे यहां एकठे आये मैं ने व्रीना व्रीलंव्र व्रीहानदीं को व्रीयान आसन पन व्रैठ के उस मनुष्प को लाने की अगया की।
१८ और जव्र उसके दोष्पदायकों ने ष्पड़े होके उन दोष्पों में से जो
१९ मैं समझता था कोइ दोष्प न लाये। पनंतु वे अपने मत की और कीसी यसु के व्रीष्पै में, जो मन गया जासे पुलुस कहता है
२० की जीता है कुछ अपव्राद उस पन कनते थे। पनंतु जैसा की उसके व्रीष्पै की व्रात में मुझे संदेह था मैं ने उसे कहा यदी तू याहे तो यनोसलीम को यल और वहां इन व्रातों के व्रीष्पै में
२१ तेना व्रीयान कीया जाय। पनंतु जव्र पुलुस ने दोहाइ दी की मेना नीयाय महानाज के व्रीयान पन छोड़ा जाय तव्र मैं ने उसे नष्प छोड़ने की अगया की जव्र लों उसे कैसन कने भेजुं।
२२ तव्र अगनपा ने परसतस से कहा की मैं भी उस मनुष्प की सुनने
२३ याहता हुं वुह व्रोला की कल उसे सुनयेगा। सो दुसने दीन जव्र अगनपा और व्रननीकी व्रड़े व्रीभव से परधान सेनापतीन और नगन के सनेसठों के संग व्रीयान सथान में आये परसतस
२४ की अगया से पुलुस आगे पहुंयाया गया। तव्र परसतस ने कहा की हे नाजा अगनपा और हे साने लोगो जो यहां हो तुम लोग इस मनुष्प को देष्पते हो जीसके व्रीष्पै में यहुदीयों की सानी मंडली यनोसलीम से लेके यहां लों मेन पीछे पड़ी हैं और यीलाते हैं की आगे को यह जीने के जोग नहीं है।
२५ पनंतु मैं ने उस में मान डालने के जोग कोइ अपनाध न पाया तथापी जैसा उसने महानाज की दोहाइ दी है मैं ने उसे भेजने
२६ को ठहनाया है। मुझे उसके व्रीष्पै में कीसी व्रात का नीसयय नहीं जो मैं अपने महानाज को लीष्पुं इस कानन मैं उसे तुमहाने आगे और नीज कनके हे नाजा अगनपा आप के आगे

२७ बाया हूं जीसतें मैं नायने के पीछे कुछ बीप्य सकुं। कयोंकी बीन अपनाघ बननन कीये हुऐ बंघुऐ को भेजना मुहे बनुयीत समह पड़ता है।

२६ छब्बीसवां पब्ब।

नाज सभा में पुलुस का अपना समायान बननन कनना १—२३ उसके बीप्यै में फरसतस की समह अगनपा का मन फीनना और पुलुस को नीनदोप्य ठहनाना २४—३२।

१ तब अगनपा ने पुलुस कों कहा की अपने बयाव की बात कनने को तुहे छुटी है तब पुलुस ने हाथ बढ़ा के अपने बयाव

२ की बात कहो। कीं हे नाजा अगनपा मैं जो आज के दीन आपके आगे उन सब बातों क बीप्यै में, जो यहुदी मुह पन दोप्य लगाते हैं अपने बयाव की बात कनुं यह मेनी समह

३ में मेना बड़ा भाग है। नीज कनके की आप यहुदीयों के साने बेवहानों और पनसनों के जानकान हैं इस कानन मैं आप

४ की बीनती कनता हूं का घीनज से मेनी सुनीये। तननाइ से जैसी कुछ मेनी यलन थी, जो पहीले से यनोसलीम में

५ अपने लोगों में थी साने यहुदी जानते हैं। जो वे साप्यी दीया याहें तो मेना समायान पहीले से जानते हैं की मैं उन के मतके

६ अतयायान के समान ऐक फरीसी हो नहा था। और अब मैं उस बाया की आसा के लीये जो इसन ने हमाने पीतनों

७ को दी बीयान सयान में ष्पड़ा कीया गया हूं। और हमानी बानह गोसटी उस बाया लों पहुंयने को नात दीन बड़े अभीलास से पनानथना कनने में आसा नप्पती हैं हे नाजा अगनपा इसी आसा के बीप्यै में यहुदी मुह पन दोप्य लगाते

८ हैं। यह कया आप की समह में बीसवास के जोग नहीं का

९ इसन मोनतकों को जोलावे ?। मैं न्नी नोसयद्म समझता था
को मुझ पन उयोत है को ग्रसु नासनी के नाम के वीनोघ में
१० वकत कुछ कनुं। सो मैं ने ग्रनोसलोम में ग्रहो कोया ग्रौन
पनघान ग्राजकों से पनाकनम पाके वकतेने सोघों को वदो-
गोनह में डाला ग्रौन जव वे घात कोये जाते थे मैं उनके
११ वीनुघ कहता था। ग्रौन मैं ने वानंवान सानी मडली में उनहें
ताड़ना दी ग्रौन उनसे ग्रपनोंदा कनवाइ ग्रौन उनके वैन में
ग्रतयंत वौड़ाहपन से मैं उपनी नगन लों उनहें सताग्रा कोग्रा।
१२ इस वात के लोये जव मैं पनघान ग्राजकों से पनाकनम ग्रौन
१३ ग्रगया पाके दमीसक को यला जाता था। मघग्रान को मानग
में हे।ते ऊए हे नाजा मैं ने सनग से एक जोत सुनज से न्नी
ग्रघोक तेजोमग्र देप्पो जो मेने ग्रौन मेने संगो जातनोकों को
१४ यानों ग्रोन यमको। ग्रौन जव हम सव भुमं पन गोन पड़े
तो मैं ने इवनानो न्नाप्पा में मुझे युं कहते एक सवद सुना को
साउल साउल तु मुझे कयों सताता है ग्रनइ पन लात मानना
१५ तेने लोये कठोन है। तव मैं ने कहा, हे पनन्नु तु कौन है ?
१६ वुह वोला को मैं इसु ऊं जोसे तु सताता है। पनंतु उठ प्पड़ा
हो कयोंको तुझे उन वसतुन का, जो तु ने देप्पों हैं ग्रौन उनका
जो मैं तुझे दीप्पाउंगा सेवक ग्रौन साप्पी वनाने के लोये तुझे
१७ दनसन दोया है। तुझे लोगों से ग्रौन ग्रंनदेसोग्रों से वयाते
ऊए जोन पास उनको ग्रांप्पें प्पालने को ग्रव मैं तुझे न्नेजता ऊं।
१८ जोसतें वे ग्रघयाने से उंजोयाले को ग्रोन ग्रौन सैतान के वस से
इसन की ग्रोन फोनें ग्रौन पाप मोयन ग्रौन उन में ग्रघोकान
१९ पावें जो मेने वासवास के दुवाना से पवोतन ऊए। तव से हे
नाजा ग्रगनपा मैं ने सनग के दनसन का वोनुघ न कोग्रा।
२० पनंतु पहोले दमोसक में ग्रौन ग्रनोसलोम में ग्रौन ग्रऊदोग्रः
देस के साने लोगों को ग्रौन ग्रंनदेसोग्रों को कहा को पसयाताप
कनो ग्रौन पसयाताप के जोग काम कनके इसन की ग्रोन

२१ फरीसे। इन ब्रातों के लीये यहूदी मुझे मंदीन में पकड़ के
२१ घात करने को लैस ऊए। से इसन के उपकान पाके मैं आज
लों छोटे ब्रड़े के आगे साप्पी देता ऊं और उन ब्रातों को छोड़,
कुछ न कहता था जीनके होने का संदेस भवीसदब्रकतों ने
२३ और मुसा ने दीया। की मसीह कसट उठा के मीनतकों में
से पहीले जी उठके लोगों और अंनदेसीयों के आगे जोत को
२४ पनगट कनेगा। और जब्र वुह अपने ब्रयाव की ब्रात कन नहा
था फरसतस ने पुकान के कहा की हे पुलुस तु आप में नहीं है
२५ ब्रीदया की ब्रहूताइ ने तुहे सीनी कीया। पनतु उसने उतन
दीया की हे महा महीमन फरसतस मैं सीनी नहीं पनंतु घनम
२६ की और सगयान की ब्रातें उयानता ऊं। कयोंकी नाजा भी
ये ब्रातें जानते हैं जो मैं भी प्पोल के कहता ऊं कयोंकी मुहे
नीसचय है की इन में से कोइ ब्रसतु उस पन छीपी नहीं कयों-
२७ की यह ब्रात कोने में न ऊइ। हे नाजा अगनपा कया आप
भवीसदब्रकतों के ब्रीसवासी हैं मैं जानता ऊं की आप ब्रीसवासी
२८ हैं। तब्र अगनपा ने पुलुस से कहा, तनीक है की तु मुहे
२९ मना के कीनीसटान ब्रना डाले। पुलुस ब्रोला मैं तो इसन
से याहता ऊं की केवल आप नहीं पनंतु सब्रक सब्र भी जो
आज मेनी सुनते हैं तनीक कया उन सीकनों को छोड़ पुने मेने
३० समान होवें। और जब्र उसने युं कहा तो नाजा और अघह
३१ और ब्रननीकी और उनके संगी उठे। और वे अलग होके
आपुस में कहने लगे की इस मनुप्प ने मान डालने के अथवा
३२ ब्रंधन के जोग कुछ नहीं कीया। तब्र अगनपा ने फरसतस से
कहा, जो यह मनुप्प कैसन की दोहाइ न देता तो छुड़ाया
जा सकता।

२७ सताइसवां पनब्र।

पुलुस का नुम को भेजा जाना और ब्रड़ी ब्रड़ी

व्रीपत में पड़ना १—२६ उसके दरसन का पुरा होना २७—४४।

१ और जैसा की जहाज पर एतलीयः का हमारा जाना ठहराया गया उनहों ने पुलुस को कीतने बंधुओं के संग अगसतुसी
२ सेना में के युलीयुस नाम सतपती को सौंप दीया। और हमने अदरमतीनी जहाज पर यढ़के आसीया के तीर तीर होके जाने का मन कर के लंगर उठाया और तसलुनी का एक
३ मकदुनी अरसतरख्स हमारे संग था। दुसरे दीन हम सैदा लों पहुंये और युलीयुस ने पुलुस पर दया करके उसे अपने
४ मीतरों के पास जाके यैन करने दीया। वहां से लंगर उठाके हम कपरस के नीचे होके पहुंये क्योंकी बयार सनमुख्य की
५ थी। और कीलकीयः और पंफुलीयः के सनमुख्य के समुदर
६ में से हम लुकीयः के मीरा में आये। वहां उस सतपती ने एसकंदरीयः को जाते हुए एक असकंदरानी जहाज पाके हमें
७ उसपर यढाया। और जब हम बहुत दीन लों धीरे धीरे यले गये और बयार के रोकने से कठीन से कंदस के सनमुख्य
८ आके क्रीत के तले सलमुनी के सनमुख्य यले। और सकेती से वहां से आगे बढ़के एक सथान में, जो सुनदर घाट कहावता
९ है आये और लसीया का नगर उसके परोस था। और जब समय बहुत बीत गया और यले जाने में जोख्यीम था, क्योंकी ब्रत का समय बीत गया था पुलुस ने उनहें यीता के कहा,
१० हे महासय मैं देख्यता हुं की इस जातरा में दुख्य और बहुत टुटी होगी केवल जहाज और बोहाइ को नहीं परंतु हमारे
११ परान की भी। परंतु पुलुस के कहने से सतपती को मांझी का
१२ और जहाज पती का अधीक मान था। और जैसा की वुह घाट जाड़ा काटने को फैलाव न था बहुतेरों ने वहां से यल नीकलने को कहा जीसतें जो हो सके तो फुनीकी लों पहुंय

के जाड़ा काटें वुह कीनत का घाट दप्पीन पछीम श्रौान उतन
१३ पछीम की श्रोान को था। श्रौान जब दप्पीन की व्रयान नसाइन
नसाइन व्रहने लगी उनहों ने अपने अभीलास को पुना ह्रुआ
१४ समझ के लंगन उठाया श्रौान कीनत के पास से यले गये। पनंतु
तनीक पीछे उसके सनमुप्प एक आंघी की व्रयान उठी जो
१५ युनकलीदुन कहावती है। श्रौान जयों जहाज़ उड़ाइ यली
गइ श्रौान व्रयान के सनमुप्प न ठहन सकी हमने हाथ उठाया।
१६ श्रौान कलादी नाम कीसी टापु के तले जाते जाते व्रड़े कठीन
१७ से ड़ोंगी को व्रस में कीया। सो जब उनहों ने उसे प्पींय लीया
तव्र जतन कन कन जहाज़ को व्रांघ के येन व्रालु में परसने की
१८ डन के मानें पाल गीना दीया श्रौान यु उड़ाये गये। श्रौान
आंघी से नीपट संताये जाके दुसने दीन उनहों ने जहाज़ को
१९ हलुक कीया। श्रौान तीसने दीन हमने अपने हाथों से जहाज़
२० का सामगनी को फेंक दीया। श्रौान जब व्रह्रुत दीन लों सुनज
श्रौान तानें दीप्पाइ न दीये श्रौान आंघी भी न थंमी अंनत को
२१ व्रयने की सानी आसा हम से जात नही। श्रौान व्रह्रुत से
उपवास के पीछे पुलुस उनके मघ में प्पड़ा होके व्रोला की हे
महासय तुमहें मेनी सुनने को उयीत था श्रौान कीनत से न
२२ प्पोलते जीसतें दुप्प श्रौान टुटी न उठाते। तथापी अब्र भी मैं
तुमहानी व्रीनती कनता ह्रुं की घीनज घनो कयोंकी तुम में से
कीसी के पनान का नास न होगा पनंतु केवल जहाज़ का।
२३ कयोंकी जीस इसन का मैं ह्रुं श्रौान जीसकी सेवा कनता ह्रुं उसके
२४ दुत ने नात को मुझे दनसन देके। कहा की हे पुलुस मत डन
तुझे कैसन के आगे प्पड़ा होना अवस है श्रौान देप्प इसन ने
२५ इन सभों को, जो तेने संग हैं तुझे दीया। इस कानन हे
महासय घीनज घनो कयोंकी मैं इसन पन भनोसा नप्पता ह्रुं
२६ की जैसा मुझे कहा गया तैसाही होगा। पनंतु कीसी टापु
२७ में हम अवस जा पड़ेंगे। श्रौान जब यौदहवीं नात ह्रुइ श्रौान

हम अद्रीया के समुद्र में मारे फीरे आधी रात के समय में डांड़ीयों ने अटकल से जाना की कीसी देस के नीकट पहुंचे।
२८ और थाह लेते उनहों ने बीस पुरसे पाये और थोड़ा आगे
२९ जाके फेर थाह भी तो पंद्रह पुरसे पाये। तब पथरैले तीर पर पड़ने की डर के मारे उनहों ने पतवार की ओर से चार
३० लंगर डाले और बीहान होने की आसा में रहे। परंतु जब डांड़ीयों ने जहाज़ पर से भागने की ज़ुगत की और गलही से
३१ लंगर डालने के छल से डोंगी उतारी। पुलुस ने सतपती और जोधाओं को कहा की जब लों ये जहाज़ में न बने रहें तुम
३२ लोग बच नहीं सकते। तब जोधाओं ने डोंगी की रसीयों को
३३ काट के उसे गीरा दीया। और जयों दीन होने लगा यह कहके पुलुस ने उनहें कुछ खाने को बीनती की, की तुम लोग चौदह दीन से तकते हो और उपवास कर रहे हो और कुछ
३४ नहीं खाये हो। अब मैं तुमहारी बीनती करता हूं की कुछ खालो की इस में तुमहारा बचाव है कयोंकी तुम में से कीसी के
३५ सीर का एक बाल न गीरेगा। उसने युं कहके रोटी ली और सभों के आगे ईसर का धन माना और तोड़ के खाने लगा।
३६।२७ और मन में धीरज पाके सभों ने रोटी खाई। और हम
३८ सबके सब जहाज़ पर दो सौ छीहत्तर प्रानी थे। और भोजन से तीरीपत होके उनहों ने अंन को समुद्र में डाल के जहाज़
३९ को हलुक कीया। और जब दीन हुआ उनहों ने उस भूम को न पहीचाना परंतु एक कोल देखी जीसकी तीर था जीस में उनहों ने चाहा की जों हो सके तो जहाज़ को उसमें घुसा देवें।
४० और जब उनहों ने लंगर उठाये तो तुरंत पतवार की रसी खोल के समुद्र में छोड़ी और बयार के रुख पर बड़ी पाल
४१ चढ़ा के तीर की ओर चले। परंतु एक सथान में जहां दो समुद्र का संगम था पहुंच के जहाज़ को तीर पर दौड़ा दीया तब गलही फंस गई और रुक गई और लहरों के बल से

४२ माने पतवान की ओन टुट गइ। तव्र जोघाओं का मंतन ऊआ
की व्रंधूओं को मान डालें न हो की उन में से कोइ पंवन कू
४३ यल दें। पनंतु पुलुस को व्रयाने की इक्का से सतपती ने उनक
ठहनाये ऊए से उनहें नोक नप्पा औन जो पंवन सकते थे
पहीले उनहें समुदन में कुद के तीन पन जाने को अगया की।
४४ अनु औन कीतनी सोलीयां पन औन कीतने जहाव़ के टुकड़ों
पन औन य़ों हीं ऊआ की वे सव़ के सव्र भुम पन कुसल से
पऊंय गये।

२८ अठाइसवां पनव्र।

पुलुस पन सनप का लपटना १—६ व्रनैले लोगों की
कीनपा औन पुलुस का नोगीयों को यंगा कनना
७—१० उनका नुम में जाना ११—१६ य़ऊदीयों
के आगे पुलुस का अपना समाचान व्रनणन कनना
१७—२६ पुलुस का भाड़े के घन में नहना औन दो
व्रनस लों उपदेस कनना ३०—३१।

१ औन उन के व्रयने के पीछे वे जान गये की उस टापु का नाम
२ मलीता था। औन वहां के व्रनैले लोगों ने हम सभों पन व्रड़ा
अनुगनह कीया कयोंकी मेंह की ह्नुड़ी औन जाड़े के माने उनहों
३ ने आग सुलगा के हम सभों को पास व्रुलाया। औन जव्र पुलुस
ने लकड़ीयां की आंटी एकठी कनके आग पन नप्पी एक नाग
४ ताप पाके नीकला औन उसके हाथ पन लपट गया। तव्र उन
व्रनैले लोगों ने उस जंतु को उसके हाथ पन लटकते देष्प के
आपुस में कहा की नीसयय य़ह मनुष्प हतयाना है य़दपी य़ह
समुनदन से व्रय नीकला तथापी दंड दायक उसे जीने नहीं
५ देता। पनंतु उसने उस जंतु को आग में ह्नटक के कुछ दुष्प न
६ पाया। औन वे देष्पते नहे की वुह सुज जायगा अथवा अकस-

मात गीन के मनजायगा पनंतु जव उनहों ने वडो वेन लों अ-
गाना। अेान उस पन कुछ दुष्प पड़ते न देष्पा तव कुछ अेान हो
७ समझ के वोले की यह देव है। अेान इस सावाने में उस टापु
के ठाकुन का अघीकान था जीसका नाम पवलयुस था उसने हम
लोगों को घन लेजाके तीन दीन लों हमाना सीसटायान कीया।
८ अेान युं ऊआ की पवलयुस का पीता जन से अेान आंवलोऊ
से नोगी पड़ा था पुलुस ने उस पास जाके पनानथना की अेान
९ अपने हाथ उस पन नष्प के उसे यंगा कीया। सो जव यह
ऊआ तो अेान भी जो उस टापु में नोगी थे आये अेान यंगे
१० ऊये। उनहों ने भी वऊत आदन से हमाना सनमान कीया
अेान जव हम लोग यलने लगे तो जो जो हमें आवसक था सो
११ सो उनहों ने लाद दीया। अेान तीन मास पीछे हम लोग अेक
असकंदनीयः जहाज पन यलनीकले जीसने उस टापु में जाड़ा
१२ काटा था जीसके यीनह दो देव वये थे। अेान सीना कोसी में
१३ पऊंय के तीन दीन नहे। फेन वहां से तीन तीन तीन घुम
के नीजयुम के सनमुष्प आये अेान अेक दीन पीछे दष्पीन की
१४ वयान यली तव हम लोग दो दीन में पतयुली में पऊंये। वहां
हमलोग भाइयों को पाके उनकी वानती से सात दीन ठहने
१५ अेान नुम को यले गये। वहां से भाइयों ने हमाना संदेस सुन
के अपीफोनम अेान तीन सना लों हमानी भेंट को आये पुलुस
१६ ने उनहें देष्प के इसन की सतुत की अेान जीव पाया। अेान
जव हम नुम में आये सतपती ने वंघुअेां को नीज सेना के पन
घान को सोंप दीया पनतु पुलुस अपने नष्पवाल जोघा के साथ
१७ अकेला अपनेही घन मे नहने पाया। अेान अेसा ऊआ की
तीन दीन पीछे पुलुस ने सनेसठ यऊदीयों को वुलाया अेान
जव वे अेकठे आये उनहें कहा, हे भाइयो यदपी मैं ने कोइ
कनम लोगों के वेवहान का अथवा पीतनों का उलटा न कीया
तथापी मैं वंघुआ होके यीनोसलीम से नुमीयों के हाथ में सोंपा

१८ गया। उनहों ने मुहे जांच के छोड़ देने याहा इसलीये की
१९ मुहृ में माने जाने का कोइ कानन न था। पन जव्र य़हूदीयो
ने व्रीनोध कीय़ा तो मैं ने सकेती से कैसन की दोहाइ दी इस
लीय़े नहीं की मैं अपने लोगों पन कीसी व्रात का दोष्प देउ।
२० सो इसी कानन से मैं ने तुमहें देष्पने को चैान व्रात यीत कनने
को व्रीनती की कय़ोंकी इसनाइल की आसा के लीय़े मैं इस
२१ सीकन से व्रंधा हुं। उनहों ने उसे कहा की हम सभों ने तेने
व्रीष्पै में य़हूदीय़ः से पतनी न पाइ चैान न कीसी ने भाइय़ों म
से आके कुछ संदेस दीय़ा अथवा कुछ तेने व्रीष्पै में व्रुनी कहा।
२२ पनंतु जो तु समहृता है हम तुही से सुनने याहते हैं कय़ाकी
हम जानते हैं की हनएक सथान में इस मत के व्रीष्पै में नीनदा
२३ की जाती है। चैान वे उसके लीय़े एक दीन ठहनाके उसके
टीकाव में व्रहुताइ से आय़े उनके आगे वुह व्रननन कनके मुसा
की व्रैवसथा से चैान भवीसदव्रानीय़ों से व्रीहान से लेके सांहृ
लों इसन के नाज पन साष्पी देता चैान य़सु के मत पन पनमान
२४ लाता था। तव्र कीतनों ने उन व्रातों पन जो कही जाती
२५ थीं व्रीसवास कीय़ा चैान कीतनों ने न कीय़ा। जव्र वे आपुस में
एक मता न हुए उस से पहीले की वे यलेजाय़ें पुलुस ने उनहें
य़ह व्रयन कहा की धनमातमा ने हमाने पीतनों से आसीय़ा
२६ भवीसदव्रकता के दुवाना से ठीक कहा। की इन लोगों के पास
जा चैान कह की सुनते हुए सुनोगे चैान न समुहोगे देष्पते
२७ हुए देष्पेगे चैान न सुहेगा। कय़ोंकी इन लोगों का मन मोटा
हुआ चैान उन के कान सुनने में भानी हुए हैं चैान उनहों ने
अपनी आंष्पें मुंद लीय़ा है न हो की वे आंष्पों से देष्पें चैान
कानों से सुनें चैान मन में समहें चैान फीन जांय़ चैान मैं
२८ उनहें यंगा कनुं। सो य़ह तुमहें जाना जाय़ की इसन की
२९ मुकत अंनदेसीय़ों के पास भेजी गइ चैान वे सुनलेंगे। जव्र
वुह य़े व्रातें कह युका तो य़हूदी आपुस में व्रहुत व्रीव द कनते

३० ऊपे यले गय्र। पनंतु दो व्रनस भन के पुलुस अपने ही भाड़े के घन में नहा कीया औन सभों को जो उस पास आते थे
३१ गनहन कन के। व्राना नोक से व्रयन प्याल प्याल दूसन के नाज का उपदेस कनता नहा औन पनभु ग्रसु मसीह के व्रीप्पै की व्रातें सीप्पाता नहा।

पुलुस की पतनी नुमीयों को

---

१ पहीला पतव्र।

१ यसु मसीह का सेवक पुलुस वुलाया ऊआ ऐक पनेनीत ग्रौन
२ ईसन के मंगल समायान के लीये अलग कीया गया। जो उसने
अपने आगमगयानीयों के द्वान से पवीतन पुसतकों में पनन
३ कीया। अपने पुतन हमाने पनभु यसु मसीह के वीष्यै में जो
४ सनीन के संवंध से दाउद के वंस से ऊआ। पनंतु पवीतनता
के आतमा के संवंध से ईसन का पुतन है जैसा की उसके जी
५ उठने के चीनह पनमान से ठहन गया। जीस से हमों ने
अनुगीनह ग्रौन पनेनीतत पाया की समसत लोग आधीनता
६ के लीये उसके नाम पन वीसवास लावें। जीनहों में तुम लोग
७ भी यसु मसीह के वुलाये ऊऐ हो। उन सव नुमीयों को जो
ईसन के पीआने ग्रौन वुलाये ऊऐ सीध हैं नोम में पीता ईसन
ग्रौन पनभु यसु मसीह से अनुगीनह ग्रौन कुसल तुमहों पन
८ होवे। पहीले मैं यसु मसीह के द्वान से तुमहाने लीये अपने
ईसन का धन मानता ऊं की तुमहाना वीसवास समसत जगत
९ में कहा जाता है। कयोंकी ईसन मेना साख्खी है जीसकी सेवा

मैं अपने आतमा उसके पुतन के मंगल समायान में करता
१० हूं की मैं कैसे नमहारो वारना नीरंतर करता हूं। और
सदा अपनी परारथना में बीनती करता हूं की जो अब इसर
की इछा से मेरी यातर कुसल से कुसल होय तो तुमहारे पास
११ आउं। कयोंकी मैं तुमहों से भेंट करने की नीपट लालसा
रखता हूं की मैं तुमहें कोइ आतमीक दान पहुंयाउं की तुम
१२ लोग दीनढ़ हो जाओ। अरथात की मैं तुमहों में मीलके उस
बीसवास के कारन जो तुमहों में और मुझ में है आपुस में सांत
१३ पाउं। और हे भाइयो मैं याहता हूं की तुम लोग उस से
अगयान न रहो की मैं ने तुमहारे पास आवने को बारंबार
मन कीया की जैसा मुझ को आन आन लोगों से फल मीला
वैसाही कुछ तुमहों से भी पाउं परंतु आज लों रुका रहा।
१४ कयोंकी मैं युनानीयों और सुरखो और गयानीयों और
१५ अगयानीयों का रीनी हूं। सो मैं तुमहों को भी जो रुम में हो
सामरथ भर मंगल समायान का संदेस देने को सीध हूं।
१६ कयोंकी मैं मसीह के मंगल समायान से लजीत नहीं हूं इस
लीये की वुह हर एक बीसवासी का उधार करने के लीये
इसर का सामरथ है पहीले यहूदी का फेर युनानी का।
१७ कयोंकी उस में इसर का धरम परगट हुआ है जो नीरकेवल
बीसवास से है जैसा लीख्या है की धरमी बीसवास से जीवेगा।
१८ कयोंकी इसर का करोध मनुष्यन की समसत अधरमता और
असतता पर सरग से परगट हुआ जो सत को असतता से बंद
१९ करते हैं। इस लीये की इसर का बीष्ये जो कुछ जाना जा
सकता है उन पर परगट है कयोंकी इसर ने उन पर परगट
२० कीया है। इस लीये की उसके गुन जो जगत की उतपती से
अदीरीस हैं अरथात उसका अनंत पराकरम और इसरत
सीरीसट पर दीरीसट करने से पहीयाना जाता है यहां लों
२१ की वे नीरुतर हैं। कयोंकी उनहों ने इसर को यीनह के

उसकी महीमा उसके इसनत के जोग न कीया औन न उसका
धन माना पनंतु अपनी भावना से व्रहक गये औन उनके
२१ अंतः कनन अगयानता से अंधयाने हुए। वे अपने को गयानी
२२ ठहना के मुनष्य व्रन गये। औन उनहों ने अव्रीनासी इसन
की महामा को व्रीनास मान मनुष्य की औन पंछीअन औन
२४ पसुन औन नेंगनीहान जंतुन के सनुप से व्रदल डाला। इस
कानन इसन ने भी उनहें तयाग कीया की अपने अपने मन की
कामना के समान अपवीतनता में नहें औन आपुस में अपने
२५ सनीनों का नीनादन कनें। उनहों ने इसन की सयाइ की
संती हूठ को सथापन कीया औन सीनजी हुइ व्रसतु की पुजा
औन सेवा की औन सीनजनहान को छोड़ दीया जो सनव्रदा
२६ सतुत के जोग है आमीन। इस कानन इसन ने उनहें नीय
अभीलासों में नहने दीया कयोंकी उनकी इसतीनीयों ने भी
अपनी पनकीनत के कानज को उस से जो पनकीनत से व्रीनुध
२७ है व्रदल डाला। औन उसी नीत से उन के पुनुष्य भी
इसतीनीयों से पनकीनत व्रेवहान को छोड़ कन आपुस में अपनी
कामना में जल गये पुनुष्यों ने पुनुष्यों के संग लजा के कनम
कीये औन वुह पनतीफल जो उनकी युक के जोग था अपने
२८ में पाया। औन जैसा की उनहों ने इसन को अपने गयान में
नष्पने न याहा इसन ने भी उनहें मुढ व्रुध में छोड़ दीया की
२९ वे अजोग कनम कनें। औन समसत असतता औन व्रेभीयान
औन व्रुनाइ औन लोभ औ न छल औन कुटीलता से भन पुन
३० होवें औन फुसफुसहा। औन यवाइ इसन के व्रैनी हगड़ालु
अहंकानी गालफटाक व्रुनाइयों के उतपादक माता पीता के अप-
३१ मानी। नीनव्रुध औन व्राया के तोड़वेया मयानहीत नीसपनेम
३२ नीनदय होवें। औन यदपी वे इसन की अगया को जानते हैं
की ऐसे कानज कननीहान मान डालने के जोग हैं केवल आप
ही नहीं कनते पनंतु कननोहानों से भी पनसंन होते हैं।

२ दुसरा पर्व।

१ सो हे जन जो दोष्प लगावता है कोइ न हो तु नीरुतर है क्योंकी जीस वात में तु दुसरे पर दोष्प लगावता है अपने पर दोष्प ठहरावता है इस कारन की तु जो दोष्प लगावता है वही २ करता है। परंतु हम नीसचय जानते हैं की ऐसे करम करनीहारें पर इसर की ओर से दंड की अगया सवेस होगी। ३ सो हे मनुष्प तु जो ऐसे करम करनीहारें पर दोष्प लगावता है और वही कीया करता है कया तु यह समझता है की तु ४ इसर के नयाय से वचनीकलेगा। अथवा तु उसकी अतयंत कीरपा और धीरज और संतोष्प की नींदा करता है और नहीं जानता की इसर की कीरपा तो तेरे पसयाताप के लीये ५ है। परंतु तु कठोरता करके और मन में कड़ाइ रष्पके अपने लीये करोध को संगरह करता है जो करोध के और ६ इसर के सत नयाय के दीन में परगट होगा। वुह हर ऐक ७ को उसके करम के समान परतीफल देगा। उनहों को जो संतोष्प से नीत भलाइ करने में महीमा और आदर और ८ अमीरत की ष्पोज करते हैं अनंत जीवन देगा। परंतु उनके लीये जो झगड़ालु हैं और सत को नहीं मानते परंतु असत को ९ मानते हैं जलजलाहट और करोध होगा। और हर ऐक मनुष्प के परान पर जो वुराइ करता है वीपत और कसट १० होगा पहीले यहुदी पर फेर युनानी पर। परंतु हर ऐक जन को जो भलाइ करता है महीमा और आदर और कुसल ११ मीलेगा पहीले यहुदी को फेर युनानी को। इस लीये की इसर कीसी का परगट दसा पर दीसटी नहीं करता। १२ कयोंकी जीतनों ने वीना वेवसथा पाप कीया है वीना वेवसथा नास भी होगे और जीतनों ने वेवसथा पाके पाप कीया है १३ उनका नयाय वेवसथा से कीया जाएगा। कयोंकी वेवसथा

के सुननेहान इसन के आगे घनमी नहीं हैं पनंतु व्रैवसथा
१४ के पालनोहान घनमी ठहनाए जायेंगे। कयोंकी जव्र अंनदेसी
जीनहों को व्रैवसथा नहीं मोली अपने सभाव से व्रैवसथा का
कानज कनते हैं वे व्रैवसथा हीन होके आपही अपनी व्रैवसथा
१५ हैं। वे व्रैवसथा का कानज अपने अंत:कनन में लीप्पा ऊआ
दीप्पावते हैं की उनके मन साप्पी देते हैं औान उनके यींतन
१६ आपुस में दोप्पी अथवा नीनदोप्पी ठहनावते हैं। उस दीन में
जव्र इसन मेने मंगलसमायान के समान ग्रसु मसीह के दुवाना
१७ से मनुप्पन के गुपत कानज का नयाय कनेगा। देप्प तु यऊदी
कहावता है औान व्रैवसथा पन आसा नप्पता है औान इसन
१८ की व्रडाइ कनता है। औान उसकी इछा जानता है औान
व्रैवसथा का उपदेस पाके व्रीनुघ व्रसतुन का व्रेवहान जानता है।
१९ औान अपने को नीसयय जानता है की मैं अंघो का अगुआ
२० औान उनका जो अंघकान में हैं पनकास ऊं। औान सुनप्पों का
उपदेसक औान व्रालकों का सीप्पावनीहान ऊं औान गयान का
२१ औान सयाइ का ढव्र मेने लीप्पे व्रैवसथा में है। सो तु जो
दुसने को सीप्पावता है अपने को नहीं सीप्पावता तु जो उपदेस
कनता है की योनी मत कन कया आपही योनी कनता है।
२२ तु जो कहता है की पनइसतीनी गमन मत कन कया आपही
पनइसतीनी गमन कनता है तु जो मुनतीन से घीन कनता है
२३ कया आपही मंदीन को लुटता है। तु जो व्रैवसथा की व्रडाइ
कनता है तुही व्रैवसथा से उलटा कनके इसन का अपमान
२४ कनता है। कयोंकी जैसा लीप्पा है की इसन का नाम अंन-
देसीयों के व्रीय तुमहाने कानन पाप्पंडता से कहा जाता है।
२५ कयोंकी प्पतनः से तो लाभ है जो तु व्रैवसथा पन यले पनंतु
जो तु व्रैवसथा से उलटा कने तो तेना प्पतनः अप्पतनः है।
२६ सो जो अप्पतनः व्रैवसथा के व्रेवहानों पन यले तो कया उसका
२७ अप्पतनः प्पतनः में न गीना जाएगा। औान जो अपने सभाव

से अप्पतनः है चैान वैवसथा के समान यले कया वुह तुझे दोप्प न देगा जो अछन चैान प्पतनः की वैवसथा से उलटा यलता
२८ है। कयोंकी जो वाहन से यहूदी है यहूदी नहीं है न वुह
२९ प्पतनः जो मांस में वाहन से है प्पतनः है। पनंतु वही यहूदी है जो भीतन से यहूदी है चैान प्पतनः वुह है जो अंतःकनन में चैान मन में है न की अछन में जीसकी वड़ाइ मनुप्पन से नहीं पनंतु इसन से है।

३ तीसना पनव।

१ सो कया यहूदी को कुछ लाभ चैान प्पतनः का कुछ परल
२ नहीं। समसत पनकान से वहुत है नीज कनके यह की उनहें
३ इसन की वानी सैांपी गइ। चैान यदपी कइ ऐक वीसवास न लाये तो कया झआ कया उनकी अवीसवासता इसन के
४ वीसवास को वयनथ कन सकती है। ऐसा न होवे इसन सया यदपी हन ऐक मनुप्प झुठा होय जैसा लीप्पा है की तु अपने वयन में नीनदोप्पी नीकले चैान जव तेना नयाय कीया जाय
५ तु जय पावे। पनंतु जो हमाना अधनम इसन के धनम को पनगट कनता है तो हम कया कहें की इसन अनयायी है जो
६ दंड देता है मैं तो मनुप्प की नाइं वोलता झं। ऐसा न होवे
७ नहीं तो इसन कयोंकन जगत का नयाय कनेगा। कयोंकी जो मेने झुठ के कानन से इसन की सयाइ पनगट झइ चैान उस से उसकी महीमा अधीक झइ फेन कीस लीये मैं पापी
८ की नाइं धनम सभा में पकड़ा जाता झं। चैान कयों न कहें जैसा हमों पन कलक लगाया जाता है चैान कीतने वोलते हैं की हम लोग कहते हैं की आचो वुनाइ कनें जीसतें भलाइ
९ नीकले उन पन दंड की अगया ठीक है। पन कया हम लोग उनसे भले हैं कधी नहीं हम तो पहीले वनन्न कन युके की
१० यहूदी चैान अंनदेसी सव के सव पाप के तले हैं। जैसा लीप्पा

१९ है की कोइ धरमी नहीं एक भी नहीं। कोइ बुद्धीवान नहीं
११ कोइ इसर को ढुंढ़नेहारा नहीं। सब भटके हुऐ हैं सब के सब
१२ नीकमें हैं कोइ भला करनीहार नहीं एक भी नहीं। उनकी
नरटी खुली हुइ समाध है उन्हों ने जीभ से छल बल कीया
१३ है उनके होठों के नीचे संपोलीयों का वीष है। उन्हों के
१४ मुंह सराप और कड़वाहट से भरे हुऐ हैं। उनके पांव लहु बहाने
१५ १६ बह वने के लीये चपल हैं। बीनास और कलेस उनके मारगों
१७ में हैं। और उन्हों ने कुसल का मारग नहीं जाना।
१८।१९ उनकी आंखों के आगे इसर का भय नहीं। अब हम
जानते हैं की बैवसथा जो कुछ कहती है उन्हों को कहती है
जो बैवसथा के बस में हैं जीसतें हर एक का मुंह बंद होवे और
२० समसत जगत इसर के आगे पापी ठहरे। इस लीये कोइ
मनुष्य बैवसथा के करम से उसके आगे नीरदोष ठहर नहीं
२१ सकता क्योंकी बैवसथा से पाप का गयान हुआ। परंतु अब
इसर का धरम परगट हुआ है जो बैवसथा से बाहर है जीसपर
२२ बैवसथा और आगम गयानीयों ने साखी दी है। अरथात
इसर का वुह धरम जो यसु मसीह पर बीसवास लावने से
मीलता है और उन सब के लीये और उन सभों में है जो
२३ बीसवास लावते हैं की उन में कुछ बीच नहीं। इस कारन
की सभों ने पाप कीया है और इसर की महीमा लों न पहुंचे।
२४ सो उसके अनुग्रह से उस मुकत के कारन जो यसु मसीह में
२५ है सेंत से धरमी गीने जाते हैं। जीसको इसर ने उसके लोहु
के बीसवास के दुवारा से परायसचीत ठहराया की अपने
धरम को पीछले पापों के मीटन के लीये इसर के संतोष
२६ के समान परगट करे। की इस समय में अपने धरम को दीखावे
जीसतें वुह धरमी रहे और उसको जो यसु मसीह पर बीसवास
२७ लावते हैं धरमी जाने। अब अहंकार करना कहां रहा दुर
तो हो गया कीस रीत से क्या करनी से नहीं परंतु बीसवास

२८ की नीत से। सो हम यह सीधांत नीकालते हैं की मनुष्य वीना
२९ कनम सासतन वीसवास से धनमी गीना जाता है। कया वुह
केवल यहूदीयों का इसन है और अनदेसीयों का नहीं नीसचय
३० वुह अनदेसीयों का भी है। कयोंकी ऐक ही इसन है जो
खतनः कीये गयेन को वीसवास के कानन से और अखतनः
१ लोगों को भी वीसवासही की नीत से धनमी जानेगा। कया
हम वैवसथा को वीसवास से वयनथ कनते हैं ऐसा न होवे हम
तो वैवसथा को सथापीत कनते हैं।

४ चौथा पनव।

१ सो हम कया कहें की इवनाहीम ने जो सनीन के संबंध से
२ हम सभों का पीता है कुछ पाया। कयोंकी जो इवनाहीम
कननी से नीनदोष्पी गीना जाता तो उसकी बड़ाइ का वीष्पै
३ था पनंतु इसन के आगे नहीं। कयोंकी गनंथ कया कहता
है की इवनाहीम इसन पन वीसवास लाया और वुह उसके
४ लीये धनम ठहना। अव वनीहान को वनी देना दान नहीं
५ है पनंतु नीन का है। कीतु वुह जो कननी नहीं कनता पनंतु
उस पन वीसवास लावता है जो अधनमीयों को नीनदोष्पी
६ ठहनावता है उसी का वीसवास धनम में गीना जाता है। और
जैसा की दाउद भी उस मनुष्य की धंनयाता का वनन्न कनता
है जीसके ओन इसन वीना कननी से धनम गीनता है।
७ की धंन वे हैं जीनके अपनाध छमा कीये गये और जीन के
८ पाप ढांपे गये। धंन वुह है जीसके ओन पनभु पाप नहीं
९ गीनता। सो कया यह धंनता केवल खतनः कीये गयेन की है
अथवा अखतनः लोगों की भी हम तो कहते हैं की इवनाहीम
१० का वीसवास धनम में गीना गया। सो वह कव गीना गया
कया उसके खतनः कीये गये अथवा अखतनः के समय में
११ खतनः कीये गये में नहीं पनंतु अखतनः में। और उसने

प्पतन: यीनत के लीये पाया की वुह उसके वीसवास के धनम पन छाप होय जो अप्पतन: में मीला था जीसतें वुह उन सभों का जो अप्पतन: में वीसवास लावते हैं पीता होय की उनके
१२ और भी धनम गीना जाय। और प्पतन: कीये गये का भी पीता होय न केवल उनका जो प्पतन: कीये गये हैं पनंतु उनका भी जो हमाने पीता इब्राहीम के वीसवास पन यलते हैं जो
१३ अप्पतन: में था। कयोंकी यह वाचा जो इब्राहीम से और उसके वंस से हुआ की तु जगत का अधीकानी होगा वैवसथा के कानन से नहीं पनंतु वीसवास के धनम के कानन से कीया
१४ गया। कयोंकी जो वे जो वैवसथा के हैं अधीकानी होवें
१५ तो बीसवास वेअनथ और वाचा नीसफल हुआ। कयोंकी वैवसथा कनोध का कानन होती है कयोंकी जहां कहीं वैवसथा
१६ नहीं तहां उलंघन भी नहीं। सो इस लीये वीसवास के कानन से कीया गया की वुह अनुगनह से ठहने जीसतें समसत वंस के लीये सथीन होय केवल उनके कानन नहीं जो वैवसथा नखते हैं पनंतु उनके कानन भी जो हम सभों के पीता इब्रा-
१७ हीम के वीसवास पन यलते हैं। जीसके आगे वुह वीसवास लाया अनथात इसन के जो मीनतकन को जीलावता है और नासती वसतुन को असती के समान बुलावता है जैसा लीप्पा
१८ है की मैं ने तुझे बहुत से लोगों का पीता बनाया। वुह नीनासा के सथान में आसा से वीसवास लाया जीसतें वुह बहुत से लोगों का पीता होय उस लीप्पे गये के समान की तेना वंस
१९ ऐसाही होगा। और जैसा की उसने वीसवास में दुनबल न होके अपने सनीन को मीनतक न जाना यदपी उसका वय सौ बनस के नीकट था और साना के गनभ के मुनझाने को
२० भी न सोया। और अवीसवासी नया की इसन के वाचा पन संदेह कनता पनंतु वीसवास की दीनढ़ताई से इसन का जस
२१ मानता था। और नीसयय काया की जो कुछ उसने वाचा

२२ कीया है उसको पना भी कन सकता है। इस कानन उसके
२३ अैन घन गीना गया। अैान यह व्रात केवल उसी के लीये
२४ नहीं लीप्पी गइ की वुह उस के अैन गीना गया। पनंतु हमाने
लीये भी गीना गया जो हम उस पन व्रीसवास लावें जीसने
२५ हमाने पनभु यसु को मीनतकन में से जीलाया। जो हमाने
अपनाधों के कानन पकड़ा गया अैान हमों को नीनदोप्प
ठहनाने के लीये फेन के जीलाया गया।

५ पांयवां पनव्र।

१ सो जव्र की हम व्रीसवास लाके नीनदोप्पी ठहने तो हमाने
पनभु यसु मसीह के कानन से इसें में अैान इसन में मीलाप
२ है। अैान उसी के कानन से हम व्रीसवास लाके उस अनुगीनह
में पहुंयते हैं जीस पन हम सथीन हैं अैान इसन के प्रेसनीय
३ की आसा में आनंद कनते हैं। अैान केवल प्रेसा नहीं पनंतु
व्रीपत में भी आनंद कनते हैं यह जानके की व्रीपत से
४ संतोप्प। अैान संतोप्प से पनीक्षा अैान पनीक्षा से आसा
५ उतपंन होती है। अैान आसा लजीत नहीं कनती कयोंकी
घनमातमा हमें दीया गया जीसके अैान से हमाने मन में इसन
६ का पनेम व्रहाया गया। कयोंकी जव्र हम नीनव्रल थे तव्र
७ अघनमीयों के कानन ठीक समय में मसीह मुआ। अव्र प्रैसा
कोइ है जो कीसी घनमी के लीये पनान देवे अैान कया
जानें कीसी में यह दीनढ़ता होय की कीसी उतम मनुप्प के
८ लीये पनान देवे। पनंतु इसन ने अपने पनेम को हम सभों
पन प्रैसा पनगट कीया की जव्र हम लोग पाप कनते यले जाते
९ थे मसीह हमाने कानन मुआ। सो उसके लोहू से नीनदोप्पी
ठहन के कीतना अघीक उसके कानन से कनोघ से व्रय जायेंगे।
१० कयोंकी जो सतनु होके हमलोग उसके पुतन की मीनतु से
इसन में मीलाये गये तो कीतना अघीक मीलाया जाके उसके

११ जीवन से बच जायेंगे। और केवल ऐसाही नहीं परंतु हम अपने प्रभु यसू मसीह के कारन से ईश्वर में बड़ाई करते हैं
१२ जिसके कारन से अब हम लोग मिलाये गये हैं। सो जैसा कि एक मनुष्य के कारन से पाप ने जगत में प्रवेस किया और पाप के कारन से मीनतु ने और इसी रीत से मीनतु समस्त
१३ मनुष्यन पर फैलगया क्योंकि सभों ने पाप किया। क्योंकि व्यवस्था के प्रगट होने लों पाप जगत में था परंतु जहां
१४ व्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं गीना जाता। तिसपर भी मीनतु ने आदम से लेके मुसा लों उनहों पर भी राज कीया जीनहों ने आदम के अपराध के तुल पाप न कीया वुह उस
१५ आवनीहार का चीनह था। तथापी जैसा अपराध था वैसा अनुग्रीनह नहीं है क्योंकी जो एकही के अपराध से बहुत मर गये तो कीतना अधीक ईश्वर का अनुग्रीनह और दान जो अनुग्रीनह से है एक मनुष्य अर्थात यसु मसीह से
१६ बहुतों पर अधीक हुआ। और दान ऐसा नहीं है जैसा एक से पाप हुआ क्योंकी एक से दंड के लाये वीचार कीया गया परंतु दान बहुतेरे अपराधों से नीरदोष्य ठहरावता है की
१७ धरमी ठहरें। सो जो एक मनुष्य के अपराध से मीनतु ने एकही के और से राज कीया तो वे जो बहुत से अनुग्रीनह और धरम के अधीक दान को पावते हैं एक के अर्थात यसु मसीह के कारन से कयोंकर जीवन में राज न करेंगे।
१८ सो जैसा की एक अपराध से समस्त मनुष्यन पर दंड की आगया हुई वैसाही एक धरम के कारन से समस्त मनुष्य जीवन
१९ के लाये नीरदोष्यी ठहरे। कयोंकी जैसा एक मनुष्य के आगया भंग करने से बहुत से लोग पापी ठहराये गये वैसाही एक के आगया पालन करने से बहुत से लोग धरमी ठहराये जायेंगे।
२० और इस से अधीक व्यवस्था आई की अपराध बहुत होवे परंतु जहां पाप बहुत बढ़ा तहां अनुग्रीनह भी उसके परीमान

२१ से वृद्धत अधीक ज्ञआ। की जैसा पाप ने मौनत लों नाज कीया वैसाही अनुगीनह धनम से इहां लों नाज कने की हमाने पनभु यसु मसीह की सहायता से अनंत जीवन लों पहुंचावे।

६ छठवां पनव।

१ सो अव हम कया कनें कया हम पाप कीया कनें की अनुग नह
२ अधीक होवे। प्रेसा न होवे हम जो पाप के ओन से मने हैं
३ फेन कीस नीत से आगे को उस में जीयेंगे। कया तुम लोग नहीं जानते की हम में से जीतनों ने यसु मसीह का सनान
४ पाया उसके मौनतु का सनान पाया। इस लाये हम लोग मौनतु के सनान के कानन से उसके संग गाड़े गये की जीस नीत से पीता की महीमा से मसीह मनके उठाया गया हम सव
५ भी जीवन की नवानता में यलें। कयोंकी जो हम लोग उसके मौनतु की समानता में वोये गये तो उसके जी उठने में भी
६ समान होंगे। यह जानके की हमानी पुनानी मनुप्यता उसके संग कुनुस पन प्यैंची गइ की पाप का सनीन नसट होय जीसतें
७ हम लोग आगे को पाप की सेवा न कनें। कयोंकी जो मनगया
८ सो पाप से छुटा। सो जो हम लोग मसीह के संग मने हैं तो
९ नीसयय जानते हैं की उसके संग जायेंगे। यह जानके की मसीह मौनतु से उठाया जाके फेन नहीं मनता मौनतु का
१० नाज उसपन आैन नहीं है। कयोंकी वुह जो मना तो पाप के लीये प्रेक वान मना पनंतु वुह जो जीवता है सो इसन के
११ लीये जीवता है। इसी नीत से तुम लोग भी अपने को पाप के ओन से मौनतक जानो पनंतु इसन के ओन से हमाने पनभु
१२ यसु मसीह में जीवता समझो। सो पाप तुमहाने मननीहान सनीन में नाज न कनने पावे की तुम लोग उसकी कामना के वस
१३ में होओ। आैन अपने अंगन का पाप को न सोंपो की अधनम

के हथीआर बनें परंतु अपने को ऐसा इसर को सौंपो जैसा
मयमुय मनके जी उठे हो और अपने अंगन को इसर को
१४ सौंपो की धरम के हथीआर हो जायें। कयांकी पाप तुमहों
पर राज न पावेगा कयोंकी तुम लोग बैवसथा के बस में नहीं
१५ परंतु अनुगीरह के बस में हो। सो इस कोये को हम लोग
बैवसथा के बस में नहीं हैं परंतु अनुगीरह में हैं तो कया पाप
१६ करें ऐसा न होवे। कया तुम लोग नहीं मानते की जीस
कीसी को तुमहों ने अपने को अगया मानने के लीये दास के
समान सौंपा उसके दास होओ जीसको तुमलोग मानते हो याहे
पाप के जीस का अंत मीरतु है अथवा अधीनता के जीसका
१७ अंत धरम है। परंतु धंन इसर का की तुम लोग जो आगे
पाप के सेवक थे साप्पा के सांचा में सौंपा जाके अंतःकरन से
१८ आधीन हुए। और पाप से मोच्छ पाके धरम के दास हुए।
१९ मैं तुमारे सरीर की दुरबलता पर दीसट करके मनुष्य की
नाई कहता हुं कयांकी जैसा तुमहों ने अपने अंगन को अप-
वीतरता को और बुराइ करने को सौंपा था की उनके सेवक
होवें वैसाही अब अपने अंगन को धरम की सेवकाइ करने के
२० लीये सौंपो की पवीतर होयें। कयोंकी जब तुम लोग पाप
२१ के दास थे तब धरम से नयारे थे। और जीन कारजन से तुम
लोग लजीत हो उनसे तुमहों ने कया फल पाया कयोंकी उन
२२ बसतुन का अंत मीरतु है। परंतु अब पाप से छुट के और
इसर के दास बनके पवीतरता के लाये फल लावते हो जीस
२३ का अंत अनंत जीवन है। कयोंकी पाप का फल मीरतु है
परंतु इसर का दान अनंत जीवन है जो हमारे परभु यसु
मसीह के कारन से है

७ सातवां पत्र।

१ हे भाइयो कया तुम लोग नहीं जानते कयोंकी मैं बैवसथा

के गयानीयों से कहता ऊं की जव लें मनुष्य जीवता है व्रैवसथा के
२ व्रस में है। कयोंकी व्रवहीता इसतोनी पती जीवने लें व्रैवसथा
से व्रंघी ऊइ है पनत जो उसका पती मन जाय तो वुह अपने
३ पती को व्रैवसथा से छूट गइ। सो जो अपने पती के जीते जी
वुह दुसने मनुष्य की होा जाय तो व्रैभीयाननी कहावेगी पन
जो उसका पती मन जाय तो वुह उस व्रैवसथा से छुट गइ सो
वुह व्रैभीयाननी नही है यद्पी दुसने मनुष्य से व्रावाह कने।
४ सो हे भाइयो तुम लोग भी मसहके सनीन से व्रैवसथा के
श्रोन से मन गये जीसतें तुमहाना व्रावाह दुसने से होय
अनथात उस से जो मन के जी उठा की हम लोग इसन के लीये
५ परल लावें। कयोंकी जव्र हम लोग सनीन में थे तव्र पापों को
इछा जो व्रैवसथा के कानन से थीं हमाने अंग अग में युं पनवेस
६ कनती थीं की मीनतु के लीये परल लावें। पनंतु अव्र हम
लोग व्रैवसथा से छुट गये कयोंकी जीस में व्रंघे थे वह मनगया
की हम लोग आतमा की नवीनता से सेवा कनें श्रोन अछन
७ की पनायीनता से नहीं। सो हम कया कहें की व्रैवसथा पाप
है ऐसा न होवे मैं तो व्रैवसथा व्रीना पाप को न जानता कयोंकी
मैं कामना को न जानता जो व्रैवसथा न कहती की तु लालय
८ मत कन। पनंतु पाप ने अगया के कानन से अवसन पाके
मुझ में समसत नीत की लालस उतपंन की कयोंकी व्रैवसथा
९ व्रीना पाप मीनतक था। इस लीये का व्रीना व्रैवसथा आगे
मैं जीवता था पनंत जव्र अगया आइ तव्र पाप जी उठा श्रोन मैं
१० मन गया श्रोन वुह अगया जो जीवन के लीये था मैं ने मीनतु
११ के लीये पाइ। कयोंकी पाप ने अगया के कानन से अवसन
१२ पाके मुझे ठगा श्रोन उसी के कानन से मुझे मान डाला। सो
व्रैवसथा पवीतन है श्रोन अगया पवीतन श्रोन ठीक श्रोन भली
१३ है। सो कया जो वसतु भली है वहा मेने लीये मीनतु ठहनी
ऐसा न होवे पनंतु पाप ने, की उसका पाप होना पनगट होवे

इको वृसत् के कानन से मौनत् के मुह में उतपंन कीया की
१४ अगया ... वुनाइ ... होवे। कयोंकी
हम जानते हैं की व्रैवसथा आतमीक है पनंत् मैं सनीनीक औान
१५ पाप के हाथ में व्रीक गया ङं। कयोंकी जो कनता ङं सो
मुहे नहीं भावता कयोंकी जो मैं याहता ङं सो नहीं कनता
१६ पनंतु जीस से घीन कनता ङं वही कनता ङं। सो जो वुह कनुं
जो नहीं कीया याहता ङं तो मै व्रैवसथा की भलाइ का मान-
१७ नोहान ङं। सो अव् उसका कननीहान मैं नहीं पनंतु पाप
१८ जो मुह में वृसता है। कयोंकी मैं जानता ङं को मुह में
अनथात मेने सनीन में कोइ भला वृसतु नहीं वृसती कयोंकी
१९ इका तो मुह में है पनंत् भला कनने नहीं पावता ङं। कयोंकी
जो भलाइ याहता ङं सो नहीं कनता पनंतु जो वुनाइ नहीं
२० याहता ङं सो कनता ङं। अव् जो मैं वुह कनुं जीसे नहीं
याहता तो उसका कननीहान मैं नहीं ङं पनंतु पाप जो मुह
२१ मे वृसता है। सो मैं प्रेक व्रैवसथा पावता ङं की जव् मैं भला
२२ कीया याहता ङं तव् वुनाइ मेने पास घनी है। कयोंकी
अंत:कनन की मनुष्यता से मैं इसन की व्रैवसथा से पनसंन ङं।
२३ पनंत् दुसनी व्रैवसथा को अपने अंग अंग में देष्पता ङं जो मेने
मन की व्रैवसथा से युघ कनती है औान मुहे पाप की व्रैवसथा
२४ के वंधन में लावती है जो मेने अंग अंग में है। आह दुनगत
मनुष्य जो मैं ङ कौान मुहे इस सनीन की मौनत् से नीसतान
२५ कनेगा। हमाने पनभ् युसु मसीह के दुवाना से मैं इसन का
घंनवाद कनता ङं सो मैं अपने मन से तो इसन की व्रैवसथा की
सेवा कनता ङं पनंतु सनीन से पाप की व्रैवसथा का दास ङं।

८ आठवां पनव्र।

१　सो जो लोग युसु मसीह में हैं उनकी याल सनीन के व्रेवहान
पन नहीं पनंतु आतमा के व्रेवहान पन है उन पन कोइ दंड

२ की अगया नहीं। कयोंकी जीवन के आतमा की ब्रैवसथा ने जो यसु मसीह में है मुझे पाप और मीनतु की ब्रैवसथा से
३ छुड़ाया है। कयोंकी ब्रैवसथा से जीस ब्रात का अनहोना था इस लीये की सनीन के कानन से नीनब्रल थी इसन ने अपनेही पुतन को पाप के सनीन के सनुप में भेज कन पाप को पाप के
४ लीये सनीन में नसट कीया। की ब्रैवसथा का घनम हमों में संपुनन होवे जो सनीन के ब्रैवहान पन नहीं पनंतु आतमा के
५ ब्रैवहान पन चलते हैं। कयोंकी जो सनीन के ब्रस में हैं उनका सभाव भी सनीनीक है पनंतु जो आतमा के ब्रस में
६ हैं उनका सभाव आतमीक है। कयोंकी सनीनीक सभाव होना मीनतु है पनंतु आतमीक सभाव होना जीवन और कुसल
७ है। इस कानन की सनीनीक सभाव इसन से सतनुता है कयोंकी वुह इसन की ब्रैवसथा के ब्रस में नहीं है और न हो
८ सकता है। सो जो सनीन में हैं इसन को पनसंन नहीं कन
९ सकते। पन तुम लोग सनीन में नहीं हो पनंतु आतमा में हो जो ऐसा होय की इसन का आतमा तुमहों में ब्रसे और जीस में
१० मसीह का आतमा नहीं है वुह उसका नहीं है। और जो मसीह तुमहों में होय तो देह पाप के कानन से मीनतक
११ है पनंतु आतमा घनम के कानन से जीवता है। और जो उस का आतमा जीसने यसु को मीनतकन में से जीलाया तुमहों में ब्रास कने तो मसीह का जीलावनीहान तुमहाने मीनतक सनीनों को अपने उस आतमा के सहाय से जीलावेगा
१२ जो तुमहों में ब्रसता है। सो हे भाइयो हम लोग सनीन के
१३ नीनी नहीं हैं की सनीन के ब्रैवहान पन चलें। इस लीये की जो तुम लोग सनीन के ब्रैवहान पन चलो तो मनोगे पनंतु जो आतमा की सहायता से सनीन की ब्रात को मानो तो
१४ जीओगे। कयोंकी जीतने लोग इसन के आतमा की सीछा
१५ पावते हैं वे इसन के पुतन हैं। इस लीये की तुमहें ब्रंधन का

आतमा नहीं मीला की फेन के डनो पनंतु तुमहों ने लेपालक
का आतमा पाया है जीस से हम लोग आवा पीता कनके
१६ पुकानते हैं। वुह आतमा आपही हमाने आतमा के संग साप्पी
१७ देता है की हम लोग इसन के पुतन हैं। श्रोन जो पुतन ऊए
तो अधीकानी ठहने इसन के अधकानी श्रोन अधीकान में
मसीह के साझी हैं जो ऐसा होय की हम लोग उसके संग दुप्प
१८ उठावें जीसतें उसके संग वीभव भी पावें। कयोंकी मेने
अंटकल में इस समय के दुप्पों को जोग नहीं की उस महीमा
१९ से जो हमों पन पनकास होगी तुल कनें। कयोंकी सनीसट
का अतयंत अभीलास इसन के पुतनन के पनगट होने की
२० आसा से है। कयोंकी सीनीसट वयनथ के वस में ऊइ अपनी
इछा से नहीं पनंतु उसकी जीसने उसे वस में कन दीया।
२१ श्रोन आसा से है की नास के वंघन से छुट के इसन के पतनन
२२ की पनमसुकत में पनवेस कनें। कयोंकी हम जानते हैं की समसत
सीनीसट मीलके अब लों यीप्पें मानती है श्रोन पीन उठावती
२३ है। श्रोन केवल वहीं नहीं पनंतु हम लोग भी जीनहों ने
आतमा का पहीला फल पाया अनथात हम लोग आप अपने
अंतःकनन में यीप्पें मानते हैं श्रोन अपने सनीन के उधान की
२४ वाट जोहते हैं जो हमाना लेपालक होना है। कयोंकी हम
लोग आसा से वच गये हैं पनंतु जो आसा देप्पी जाती है सो
आसा नहीं है इस कानन की जीसे कोइ देप्पता है कयोंकन
२५ उसकी आसा कनता है। पनंतु जीसे हम लोग नहीं देप्पते जो
२६ उसकी आसा कनें तो संतोप्प से उसकी वाट जोहते हैं। इसी
नीत से वुह आतमा भी हमानी दुनवलता में उपकान कनता
है कयोंकी जैसा पनानथना कनने को हमें उचीत है हम
नहीं जानते पनंतु वुह आतमा आपही ऐसी आहें कनके
• जीनका वननन नहीं हो सकता हमाने श्रोन से वीनती कनता
२७ है। श्रोन वुह जो अंतःकनन की पनीछा कनता है जानना

है की घ तमा का कया अभीपनाय है इस लीये की वुह इसन
२८ की इक्का के समान साध के और न वीनती कनता है। और
हम जानते हैं की जो लोग इसन को पीअ न कनते हैं उनकी
भलाइ के लीये समसत वसतं मल के कानज वनती हैं ये वे
२९ हैं ना उस के ठहनाप उपे के समान वुलाप गये हैं। कयोंकी
जीन हैं उसने आगे से जाना उन के लीये ठहनाया भी की उसके
पुतन के सनुप के समान होवें जीसतें वुह वहुत से भाइयों में
३० पहोलौंठा होवे। और ज नहे उसने ठहनाया उसने उनको
वुलाया और जीनहें उसने वुलाया उनको घनमी कीया और
३१ जीनहें उसने घनमी कीया उनको महीमा भी दी। सो हम
लोग कया कहें जो इसन हमाने ओन होय तो कौन हमाना
३२ वीनोधी होगा। वुह जीस ने अपने पुतन को भी न छोड़ा
पनंतु उसको हमानी संती दीया तो वुह उसके संग सव वसतें
३३ कयोंकन न देगा। इसन के चुने हुपे लोगों पन कौन अपवाद
३४ कनेगा इसन उनहें घनमी ठहनाता है। कौन दंड की आगया
देगा मसीह मनगया हां जी भी उठा ओन वुह इसन के दहोने
३५ ओन है ओन हमाने लीये वीनती कनता है। कौन हमको
मसीह के पनेम से अलग कनेगा कया कलेस अथवा कसट अथवा
ताड़ना अथवा अकाल अथवा नंगापन अथवा संकट अथवा
३६ पडग। जैसा लीखा है की हम लोग तेने लीये दीन भन
वध कीये जाते हैं ओन पैसे गीने गये हैं जैसे भेड़ें जो वध के
३७ लीये हैं। हां हम लोग उन सव वसतुन में उसके कानन से
जीसने हमों से पनेम कीया हन पेक जयमान पन जयमान हैं।
३८ कयोंकी मुझे ठीक नीसचय है की न मीनतु न जीवन न दुत
न नाज न पनाकनम न वनतमान की वसतें न भवीस की वसतें।
३९ ओन न उंचाइ न नीचाइ न कोइ ओन वसतु हम सभों को
इसन के उस पनेम से जो हमाने पनभु मसीह यसु में है अलग
कनसकेगी।

९ नवां पनव्र।

१ मैं मसीह में सय व्रोलता ऊं हुठ नहीं कहता श्रौर मेरा
२ मन भी धनमातमा से मेरी साप्षी देता है। की मुहे व्रड़ा
३ सोक है श्रौर मेरे मन में नीत उदासी है। कयोंकी मैं
याह सकता की मैं श्रपने भाइयों की संती जो सरीर के सव्रध
४ से मेरे नाते गोते हैं मसीह के तुल सरापीत होउं। वे
इसराइली हैं श्रौर लेपालक होना श्रौर महीमा श्रौर नीय्रम
श्रौर व्रैवसथा का पावना श्रौर सेवा श्रौर परन करना उनका
५ भाग है। श्रौर पीतर लोग उनहीं में के हैं श्रौर सरीर के
संव्रंध से मसीह भी उनहीं में से नीकला जो सव्र का परधान
६ नीतयानंद इसर है श्रामीन। परंतु ऐसा नहीं की इसर
का व्राया व्ययरथ ऊश्रा है इस लीये की सव्र इसराइल नहीं
७ जो इसर इल से हैं। श्रौर न इस कारन की वे इव्रराहीम
के व्रंस हैं सव्र संतान हैं परंतु इसहाक से तेरा व्रंस कहा जा-
८ यगा। श्रनथात वे नहीं जो केवल सरीर के संतान हैं इसर
के संतान हैं परंतु व्राया का संतान व्रंस के लीये गीना गया
९ है। कयोंकी व्राया की व्रात यही है की मैं उसी समय में
१० श्राउंगा श्रौर सारा एक पुतर जनेगी। श्रौर केवल इतना
नहीं परंतु रव्रका भी एक से श्रनथात हमारे पीता इसहाक
११ से गरभवती ऊई। श्रौर लड़कों के उतपंन होने से पहीले
१२ जव्र वे भले व्रुरे के करता न थे। उस से कहा गया की जेसठ
कनीसठ की सेवा करेगा जीसतें इसर की इछा परं जो उसके मन
के समान है सधीन होवे करनी से नहीं परंतु उस से जो व्रुलाव-
१३ नीहार है। जैसा लीष्पा है की मैं ने याकुव्र से परेम कीया
१४ श्रौर श्रसु से व्रैर रष्पा। सो हम कया कहें की इसर के पास
१५ श्रधरम है ऐसा न होवे। कयोंकी वुह मुसा से कहता है की
मैं जीसपर दया करने याऊंगा उस पर दया करूंगा श्रौर

जीस पर अनुग्रीनह करने याऊंगा उस पर अनुग्रीनह करुंगा।
१६ सो इछा करनीहार पर नहीं ग्रैार न दैाड़नीहार पर परंतु
१७ ईसर पर जो दया करता है। ग्रैार ग्रंथ फरऊन से कहता
है की मैं ने तुहे इस लीये वढ़ाया की अपना पराक्रम तुह में
परगट करुं ग्रैार जीसतें मेरा नाम समसत पीरथवी में वीदीत
१८ होवे। सो वुह जीस पर याहता है दया करता है ग्रैार जीसे
१९ याहता है कठोर करता है। सो तु यह मुह से कहेगा फेर
वुह कयों दोष्प देता है कीस ने उसकी इछा को रोका है।
२० हे मनुष्प तु कैान है जो ईसर से वीवाद करता है कया वनाइ
हुइ वसतु वनावनीहार को कह सकती है की तु ने मुहे ऐसा
२१ कयों वनाया। ग्रैार कया कुमहार मीटी पर पराकरम नहीं
रष्पता की ऐकही पींड से ऐक पातर परतीसठीत ग्रैार दुसरा
२२ अपरतीसठीत वनावे। जो ईसर ने इस इछा से की अपने
करोघ को जनावे ग्रैार अपने पराकरम को परगट करे करोघ
के पातरन पर संतोष्प कीया जो नसट होने के लीये तयार थे।
२३ ग्रैार जीसतें वुह अपनी महीमा की अघीकाइ को दया के
पातरन पर परगट करे जीनहें उसने आगे से महीमा के लीये
२४ सीघ कीया था। अरथात हमों को जीनहें उसने वुलाया
केवल यहुदीयों में से नहीं परंतु ग्रंनदेसीयों में से भी।
२५ जैसा की वुह होसग्रा के ग्रंथ से कहता है की मैं पराये लोगों
को अपना लोग कहुंगा ग्रैार जो पीरीय न था उसे पीरय
२६ कहुंगा। ग्रैार यु होगा की उस सथान में जहां उनसे कहा
गया की तुम मेरे लोग नहीं हो वे जीवते ईसर के पुतर
२७ कहावेंगे। ग्रैार असीया इसराइल के वीष्पै में पुकारता है
की यदपी इसराइल के वंस गीनती में समुदर के वालु की
२८ नाइ होयें तथापी थोड़े वयाये जायगे। कयोंकी परभु लेष्पा
ऐकठा करता है ग्रैार संछेप से घरम में समापत करता है
इस कारन की परभु पीरथीवी पर संछेप से लेष्पा करेगा।

२९ औान जैसा असीय़ा ने आगे कहा की जो सेनन का पनभु हमाने लीय़े व्रीज न छोड़ जाता ते हम लोग सदुम के समान औान
१० गमन: के तुल होते। सो अव्र हम कय़ा कहें की अनदेसीय़ों ने जो घनम के प्पाेज में न थे घनम को पनापत कीय़ा अनथात
११ उस घनम को जो व्रीसवास से है। पनंतु इसनाइल घनम की व्रैवसथा का पीछा कनके घनम की व्रैवसथा लों नहीं पऊंया है।
१२ कीस लीय़े इस लीय़े की उनहों ने उसका पीछा व्रीसवास से न कीय़ा पनंतु व्रैवसथा के कनम क समान कय़ोंकी उनहों ने उस
१३ ठोकन प्पीलावनीहान पथन से ठोकन प्पाय़ा। जैसा लीप्पा है की देप्पो मैं सीऊन में चका देनहानी यटान औान ठोकन प्पीलाव-नीहान पथन नप्पता ऊं औान जो कोइ उस पन व्रीसवास लावता है सो लजीत न होगा।

१० दसवां पनव्र।

१ हे भाइय़ो मेने मन का अभीलास औान मेनी पनानथना
२ इसन से इसनाइल के लीय़े है की वे तनान पावें। कय़ोंकी मैं उनके कानन साप्पी देता ऊं की वे इसन के लीय़े जलीत हैं
३ पनंतु गय़ान की नीत से नहीं। कय़ोंकी वे इसन के घनम से अगय़ान होके औान अपने घनम के ठहनावने की इछा नप्पके
४ इसन के घनम के आघीन न ऊए। कय़ोंकी हन एक व्रीसवासी
५ के घनम के लीय़े मसीह व्रैवसथा का अभीपनाय़ है। इस लीय़े की वुह घनम जो सासतन का है मुसा उसका व्रनतन कनता है की जो मनुप्प उन कानजन को कनता है उनसे
६ जीवता नहेगा। पनंतु घनम जो व्रीसवास का है युं कहता है की तु अपने मन में मत कह की सनग पन कैान यढ़ेगा अनथात
७ की मसीह को नीचे लावे। अथवा गहीनापे में कैान पैठेगा
८ अनथात की मसीह को मीनतकन में से फेन लावे। पनंतु वुह कय़ा कहता है य़ह की व्रयन तेने नीकट तेने मुंह में औान

तेरे अंतःकरन में है अरथात व्रीसवास का व्रयन जो हम लोग
९ सुनवते हैं। कयोंकी जो तु अपने मुंह से परभु यसु को मान
लेवे और अपने अंतःकरन से व्रीसवास लावे की इसर ने उसे
१० मरेन के जीलाया तो तु व्रयाया जायगा। कयोंकी घरम के
लीये अंतःकरन से मनुय व्रीसवास लादता है और तरान के
११ लीये मुंह से माना जाता है। कयोंकी गरंथ यों कहता है
की जो कोइ उस पर व्रीसवास लावता है सो लजीत न होगा।
१२ कयोंकी यहुदीयों और युनानीयों में कुछ भेद नहीं कयोंकी
वुह जो सव का परभु है सव के लीये जो उसका नाम लेते हैं
१३ धनी है। कयोंकी जो कोइ परभु का नाम लेगा सोइ तरान
१४ पावेगा। सो जीस पर वे व्रीसवास नहीं लाये उसका नाम कयों-
कर लेवें और जीसका संदेस उनहों ने नहीं सुना उस पर कयों-
१५ कर व्रीसवास लावें और उपदेसक व्रीना कयोंकर सुनें। और जो
भेजे न जावें तो कयोंकर उपदेस करें जैसा लीख्या है की जो कुसल
का और उतम व्रसतु का समाचार देते हैं उनके कया सुनदर
१६ चरन है। परंतु सभों ने मंगल समाचार को न माना कयोंकी
असीया कहता है का हे परभु कौन हमारे उपदेस पर व्रीसवास
१७ लाया। सो व्रीसवास सुन लेने से और सुन लेना इसर के व्रयन
१८ से आवता है। परंतु मैं कहता हुं कया उनहों ने नहीं सुना
नीसचय उनका सवद तो समसत परथीवी में फैल गया और उन
१९ की बातें जगत के सीवाने लों पहुंची। परंतु मैं कहता हुं कया
इसराइल ने न जाना मुसा ने पहीले कहा की मैं तुमहें पराये
लोगों से डाह दीलाउंगा और मुरख लोगों से कोपीत कराउंगा।
२० और असीया व्रड़े साहस से कहता है की जीनहों ने मेरी खोज
न की मुझे पागये जीनहों ने मुझे न चाहा मैं उनपर परगट
२१ हुआ। परंतु इसराइल को युं कहता है की मैं एक लोग के
लीये जो अगया भंग करनीहार और व्रीवादी हैं अपने हाथ
दीन भर व्रढ़ाये हुए हुं।

११ गम्रानहवां पनत्र।

१ सो कय़ा मैं कहता ऊं की इसन ने अपने लोगों को तय़ाग कीय़ा ऐसा न होवे कय़ोंकी मैं भी इसनाइली ऊं इब्रनाहीम २ के वृंस से वृंनय़ामीन के घनाने से ऊ। इसन ने अपने लोगों को जीनहें उसने आगे से जाना तय़ाग नहीं कीय़ा कय़ा तुम लोग नहीं जानते की इलीय़ास के वृाप्पे में गनंथ कय़ा कहता है वुह कय़ोंकन इसन से इसनाइल पन अपवृाद कनके कहता ३ है। की हे पनभु उनहों ने तेने आगमगय़ानीय़ों को मान डाला अैान तेनी जग वेदीन को ढा दीय़ा अैान मैं अकेला ४ वृय नहा ऊं अैान वे मेने पनान के प्पोजी हैं। पनंतु इसन की वृानी उसको कय़ा कहती है की मैं ने अपने लीय़े सात सहसन मनुप्प अलग कीय़े हैं जीनहों ने वृआल के आगे घटने ५ नहीं टेके। सो ऐसा इस समय़ में भी अनुगीनह से ऐक मंडली ६ चुनी ऊइ होके वृय नही है। अैान जो अनुगीनह से है तो कननी से नहीं नहीं तो अनुगीनह अनुगीनह न नहेगा पनंतु जो कननी से है तो अनुगीनह फीन कुछ नहीं नहीं ७ तो कननी कननी न नहेगी। सो कय़ा है इसनाइल ने जीस वृसत् को ढुंढ़ा वुह उसे नहीं मीली पनंतु चुने ऊऐ लोगों को ८ मीली अनु अैान लोग अंघे हो गय़े। जैसा लीप्पा है की इसन ने उनहें उंघनीहान आतमा अैान अंघी आंप्पें अैान वृहीने ९ कान इस दीन लों दाय़े हैं। अैान दाउद कहता है की उनका मंय जल अैान फंदा अैान ठोकन प्पीलावनीहान पघन उनके १० लीय़े पनतीफल होवे। अैान उनकी आंप्पें अंघीय़ानी हो जावें की वे न देप्प सकें अैान उनकी पीठ को सदा झुका नप।

११ सो मैं कहता ऊं की कय़ा उनहों ने ऐसा ठोकन प्पाय़ा है की गीन पड़ें ऐसा न होवे पनंतु उनके गीनने से अनदेसीय़ों १२ को उघान मीला की उनहें पनुनतीलाकनें। पन जो उनका

गीनना जगत के लीये धन है और उनकी घटती अंनदेसीयों के लीये व्रढ़ती है तो उनकी पुननता कीतनी अधीक होगी।
१३ कयोंकी मैं अंनदेसीयों का पनेनंत हो कन तुम अंनदेसीयों
१४ से बोलता हुं और अपने पद की व्रड़ाइ कनता हुं। जीसतें मैं अपने कटुंव्रों को परुनतीला कनुं और उन में से कीतनों
१५ को व्रयाउं। कयोंकी जो उनका तयाग कीया जाना जगत के लीलाये जाने का कानन है तो उनका मीलाया जाना जैसा
१६ मीनतु से जीं उठना होगा। कयोंकी जो पहीला परल पवीतन होय तो पींड भी ऐसा है और जो जड़ पवीतन होय तो
१७ डालें भी ऐसी हैं। सो जो डालों में से कइ ऐक तोड़ी गइं और तु जंगली जलपाइ होके उन में पेवंद हुआ और जलपाइ
१८ की जड़ और नस में भगी हुआ। तो डालों पन अभीमान मत कन और जो अभीमान कने तो तु जड़ का आधान नहीं
१९ पनंतु जड़ तेना आधान है। सो तु कहेगा की डालं इस लीये
२० तोड़ी गइं की मैं पेवंद होउं। अछा वे अव्रीसवास के कानन तोड़ी गइं और तु अव्रीसवास से सथीन है अभीमान मत
२१ कन पनंतु डन। कयोंकी जो इसन ने पनकीनत के डालों को
२२ न छोड़ा न हो की तुहे भी न छोड़े। सो इसन की कोमलता और कठोनता को देष्प उन पन जो काटी गइ कठोनता और तुह पन कोमलता जो तु भलाइ पन सथान नहे और नहीं
२३ तो तु भी काटा जायगा। और जो वे भी अव्रीसवास में न नहें तो वेवंद कीये जायेंगे कयोंकी इसन उनहे फेन के पेवंद
२४ कन सकता है। इस लीये की जव्र तु उस जलपाइ के व्रीनछ से जीसकी पनकीनत जगली है काटा गया और पनकीनत से उलटा अछे जलपाइ के व्रीनछ में पेवंद कीया गया तो वे जो पनकीनत की हें अपने ही जलपाइ के व्रीनछ में कयोंकन जोड़ी
२५ न जायेंगी। हे भाइयो मैं नहीं चाहता की तुम लोग इस गुपत भेद से अगयान नहो न हो की तुम लोग अपने को

सनेसठ समहो की कुछ अंचापन इसनाइल के व्रंस पन श्रान
१९ पड़ी जव्र लें अंनदेसीय़ें की सन पुनी न हो ले। श्रोन यूं
समसत इसनाइल व्रयाय़ा जाय़गा जैसा लीष्या है की सीड़न
से मुकतदाता नीकलेगा श्रोन य़ाकुव्र से अचनमता को दुन
२७ कनेगा। श्रोन मेना य़ह नीय़म उनके संग होगा जव्र मैं उनके
२८ पपों को छमा कनुंगा। वे मगल समाच्यान के व्रीष्पै में तुमहाने
२९ कानन सतनु हैं पनंतु चुने ज़ुए की नीत से पोनीय़ हैं। कय़ोंकी
३० इसन का दान श्रोन वुलावा पछतावा से नहीत है। कय़ोंकी
जैसा तुम लोग श्रागे इसन पन व्रीसवास नहीं लाय़े पनंतु अव्र
३१ उनक अव्रीसवास के कानन से दय़ा पाए हो। वैसाही तुमहानी
दय़ा पावने के कानन से व्रीसवास नहीं लाय़े की उन पन भी
३२ दय़ा की जाय़। इस लीय़े की इसन ने उन सभों को अव्रीस-
३३ वासता में व्रंद कीय़ा जीसतें व्रह सभों पन दय़ा कने। वाह
इसन के गय़ान श्रोन वुध की गहीनाइ उसका व्रीयान कैसाही
३४ श्रोज से व्राहन है श्रोन उसका मानग श्रपान है। कय़ोंकी
कीसने इसन की इछा को जाना है अथवा कैान उसका मंतनी
३५ था। अथवा कीसने उसे पहीले कुछ दीय़ा है की उसे फेन
३६ दीय़ा जाय़गा। कय़ोंकी उसी से श्रोन उसी के कानन श्रोन
उसी के लाय़े समसत व्रसतें ज़ुइ हैं सनव्रदा सतुत उसी के लीय़े
है श्रामीन।

१२ व्रानहवां पनव्र।

१ सो हे भाइय़ो मैं इसन की दय़ा का कानन देके तुमहों से
व्रीनती कनता ज़ुं की तुम लोग अपने सनीन इसन को समनपन
कने की जीवता श्रोन पवीतन श्रोन गनाह्य व्रलीदान होय़ की
२ य़ह तुमहानी उचीत सेवा है। श्रोन इस जगत के समान मत
होश्रो पनंतु अपने मन की नव्रीनता में व्रदल जाश्रो जीसतें तुम
लोग इसन की इछा को नीसचय़ से जानो की वुह भली श्रोन

३ गराहृ और सीघ है। और मैं उस अनुगरह से जो मुझे दीया गया है तुमहों में से हर एक को कहता ऊं की अपने माहतमा से अपने को वड़ा मत समुझो परंतु समानता से वाहर न जाके ऐसा सभाव रख्यो जैसा ईसर ने हर एक मनुष्य को परीमान
४ से वीसवास दीया। कयोंकी जैसा हमारे एक सरीर में वऊत
५ से अंग ऐार हर अंग का कारज भीन भीन है। सो हमलोग जो वऊत से हैं मसीह के मसीह का एक सरीर ऊए हैं और हर
६ एक आपुस में अंग हैं। सो हमों ने उस अनुगरह के समान जो हमें दीया गया अलग अलग दान पाया सो जो वुह आगम की
७ वात है तो वीसवास के परीमान के समान कहें। अथवा सेवा है तो सेवा में रहें अथवा सीष्यावनीहार तो सीष्यावने में।
८ अथवा उपदेसक तो उपदेस में सथीर रहे दानी रीत से देवे और अधछ परीसरम से जो दया करता है आनंद से करे।
९ परेम नीसकपट होय वुराइ से घीन करो भलाइ से मीले रहो।
१० भाइ की सी पीरीत से आपुस में दया रख्यो आदर की रीत
११ से एक दुसरे को परतीसठा देओ। काम काज में आलस न करो आतमा में फुरतीला होओ परभु की सेवा में रहो।
१२ आसा में मगन होओ वीपत में संतोष्यी परारथना में नीत रहो।
१३ सीधों की दरीदरता को वांट लेओ अतीथ की सेवा करो।
१४ उनके लीये जो तुमहें संतावते हैं वर मांगो भला मनाओ सराप
१५ न देओ। आनंद करनीहारों के संग आनंद करो और रोदन
१६ करनीहारों के संग रोदन करो। आपुस में एकसा सभाव रख्यो अभीमानी मत होओ परंतु दीनों के संग दीन होओ
१७ अपने को वुधमान मत समझो। वुराइ की संती कीसी से वुराइ मत करो उन कारजन पर जो समसत मनुष्यन की
१८ दीसट में भले हैं आगे से चींता करो। जो हो सके अपने
१९ सामरथ भर हर एक मनुष्य के संग मीले रहो। हे पीरीय अपना पलटा मत लेओ परंतु करोध का मारग छोड़ देओ

क्योंकि यह लीख्या है कि परभु कहता है कि पलटा लेना मेरा
२० काम मैं हीं दंड देउंगा। सो जो तेरा सत्रु भुख्या होय तो
उसको खीला दे जो पीआसा होय तो उसे पीने को दे क्योंकि
तु यूं करके उसके सीर पर आग के अंगारों की ढेर करेगा।
२१ बुराई के बस में मत होओ परंतु बुराई को भलाई से जीतो।

१३ तेरहवां पत्र।

१ हर ऐक प्राणी बड़े पराक्रम के बस में रहे क्योंकि ऐसा
कोई पराक्रम नहीं जो ईस्वर के और से न हो जीतने पराक्रम
२ हैं सो ईस्वर के ठहराए हुए हैं। सो जो कोई पराक्रम का
सामना करता है सो ईस्वर के ठहराए हुए का सामना करता
है और वे जो सामना करते हैं सो अपने दंड को पावेंगे।
३ क्योंकि पराक्रमी भले कारज को नहीं डरावते परंतु बुरे
को सो जो तु चाहे की पराक्रम से न डरे तो भला कर और
४ तु उस से बखान पावेगा। क्योंकि वुह ईस्वर का सेवक तेरी
भलाई के लीये है परंतु जो तु बुरा करे तो डर की वुह खडग
बिरथ नहीं पकड़ता क्योंकि वुह ईस्वर का सेवक बुराई
५ करनीहारों के लीये क्रोध का दंडदाता है। सो तुम लोग
केवल क्रोध के भय से नहीं परंतु बीवेक से भी मानो।
६ ईस लीये तुम लोग कर भी देओ की वे उसी कारज के लीये
७ ईस्वर के सेवक हैं। सो सभका जो आवता हो भर देओ जीसको
कर चाहीये कर और जीसे सुलक चाहीये सुलक देओ और
जीस से डरना चाहीये डरो और जीस का प्रतीसठा चाहीये
८ प्रतीसठा देओ। पीआर को छोड़ कीसी को कुछ मत धरो
क्योंकी वुह जो औरों को पीआर करता है उसने बेवसथा को
९ पुरा कीआ है। क्योंकी यह की तु परसतीरी गमन मत कर
हतया मत कर चोरी मत कर झूठी साख्यी मत दे लालच मत
कर परु और सभआ जो ईनहों से अधीक हैं सो संक्षेप से

इसी में हैं अरथात अपने परोसी को ऐसा पीआर कर जैसा
१० आपको करता है। पीआर अपने परोसी से बुराइ नहीं
११ करता इस कारन पीआर ब्रेवसथा का संपरन करना है। और
समय को पहीयान के की नींद से जागने का समय अब आन
पहुंया है कयोंकी जीस समय से हम लोग बीसवास लये तब
१२ से अब हमारी मुकत समीप है। रात बहुत बीत गइ और
दीनमान हो यला सो हम अंधीयारे के कारजन को तयाग
१३ करें और परकास का हीलम पहीन लेवें। और जैसा की दीन
का ब्रेवहार है संवर के यलें ऊलर और मतवालपन में नहीं
ब्रेभीयार और लुयपन में नहीं झगड़ा और डाह में नहीं।
१४ परंतु परभु यसु मसीह को पहीन लेओ और सरीर की कामना
को पालने के लीये यींता न करो।

१४ यौदहवां परब।

१ जो बीसवास में नीरबल है उसको गरहन करो परंतु संदेह
२ अरथन के बीवाद के लीये नहीं। ऐक बीसवास करता है की
हर ऐक बसतु खा सकता है परंतु जो नीरबल है केवल साग
३ पात खाता है। सो वुह जो खाता है उसको जो नहीं खाता
नींदा न करे और जो नहीं खाता सो खानेवाले का बीयार
४ न करे कयोंकी इसर ने उसे गरहन कीया है। तु कौन
है जो दुसरे के सेवक पर बीयार करता है वुह तो अपने परभु
के आगे खड़ा है अथवा पड़ा है हां वुह खड़ा कीया जायगा
५ कयोंकी इसर उसे खड़ा कर सकता है। कोइ मनुष्य ऐक
दीन को दुसरे दीन से स्रेसठ मानता है और कोइ हर ऐक
दीन को समान मानता है हर ऐक मनुष्य को यहीये की
६ अपने मन में पुरी परतीत रखे। और वुह जो दीन की यींता
करता है सो परभु के कारन यींता करता है और जो दीन
की यींता नहीं करता सो परभु के कारन नहीं करता जो

ष्याता है सो परम् के कारन ष्याता है कयोंकी वुह ईश्वर की स्तुत करता है ग्रीर जे नहीं ष्याता से परम् के लीये नहीं
७ ष्याता ग्रीर ईश्वर की सतुत करता है। कयोंकी कोइ हम में से अपने कारन नहीं जीता ग्रीर कोइ अपने लीये नहीं मरता।
८ जो हम जीते हैं तो परम् के कारन जीते हैं ग्रीर जो मरते हैं तो परम् के कारन मरते हैं इस लीये जो हम जीवें अथवा
९ मरें से परम् ही के हैं। कयोंकी मसीह इसी बात के लीये मरा ग्रीर उठा ग्रीर जीग्रा कि मीरतकों ग्रीर जीवतों का
१० परम् होवे। परंतु तु कीस लीये अपने भाइ पर अगया करता है अथवा तु कीस लीये अपने भाइ को कुछ नहीं समुझता कयोंकी हम लोग मसीह के सींहासन के आगे ष्पड़े कीये जायंगे।
११ कयोंकी लीष्पा है परम् कहता है की अपने जीवन की सों हर एक घुठना मेरे आगे झुकेगा ग्रीर हरएक जीभ ईश्वर के आगे
१२ मान लेगी। सो हर एक हम में से ईश्वर के आगे अपना अपना
१३ लेष्पा देगा। इसीलीये यहीये की हम एक दुसरे पर अगया न करें परंतु पहीले यह ठहरावें की वुह वसतु जो ठोकर ष्पीलाने के अथवा गीरपड़ने के कारन होवे अपने भाइ के आगे न
१४ रष्पें। मैं जानता ह्नं ग्रीर परम् यसु मसीह से परबोघ पाया हुं की कोइ वसतु आपही असुघ नहीं है परंतु जो कीसी वसतु
१५ को असुघ समुझता है वुह उसके लीये असुघ है। जो तेरा भाइ तेरे भोजन से उदास होवे तो तु परेम की रीत पर नहीं चलता जीस के कारन मसीह मरा अपने भोजन से उसका नास मत
१६।१७ कर। यहीये की तेरी भलाइ बुरी न कही जाय। कयोंकी ईश्वर का राज ष्पाने अथवा पीने में नहीं है परंतु घरमातमा
१८ में घरम ग्रीर कुसल ग्रीर आनंद है। ग्रीर जो कोइ इनहीं बातों में मसीह की सेवा करता है सोइ ईश्वर का भाया ग्रीर
१९ मनुष्पों का सराहा ह्नआ है। इसी लीये आग्रो ऐसे कारजों का पीछा करें जो कुसल के कारन होय ग्रीर जीस से एक दुसरे

२० को वृढ़ा सके। और भोजन के लीये इसर का कारज मत वीगाड़ो समसत वसतें तो पवीतर हैं परंत वुह उस मनुष्य के
२१ लीये जो भोजन करके ठोकर प्पोलावता है वुरा है। भला यह है की मांस न प्पाना मदीरा न पीना और ऐसा करम न करना जीस से तेरा भाइ घका अथवा ठोकर प्पाय अथवा
२२ नीरवल होजाय। तेरा वीसवास जो ठीक है तो उसे इसर के आगे अपने लीये रप्प छोड़ घर वुह जो अपने को उस कारज
२३ में जो उसे भावता है दोप्प नहीं देता। परंतु वुह जो संदेह रप्पके प्पाता है दोप्पी है इस कारन की वीसवास से नहीं है कयोंकी जो कुछ वीसवास से बाहर है सो पाप है।

१५ पंद्रहवां पत्र।

१ सो हम लोगों को जो वली हैं याहीये की नीरवलों की
२ दुरवलता को सहें और अपना सवारथ न करें। हर एक हम में से भलाइ के लीये अपने परोसी का सवारथ करे की
३ वुह सवर जाय। कयोंकी मसीह ने भी अपनी इछा न की पर जैसा लीप्पा है की तेरे नींदकों की नींदा मुझ पर आपड़ी।
४ कयोंकी जो कुछ आगे लप्पा गया सो हमारी सीछा के लीये लीप्पा गया की हम लोग संतोप्प से और गरथों के सांत से
५ भरोसा पावें। अब संतोप्प और सांतन का इसर तुमहों को यह देवे की मसीह यसु के समान आपुस में एक मन हो
६ रहो। जीसतें एक मन और एक वोली होके हमारे परभु
७ यसु मसीह के पीता इसर की महीमा करो। इस कारन हर एक तुमहों में से दुसरे का मीला लेवे जैसा की मसीह ने भी
८ हमों को इसर की महीमा में मीला लीया। अब मैं कहता हुं की यसु मसीह प्पतनः कीये गयों का सेवक इसर की सचाइ के लीये हुआ की उन परतीगयाओं को जो पीतरों से की गइ
९ पुरी करे। जीसतें परदेसी भी दया के कारन से इसर की

महीमा करें जैसा लीख्या है की इस कारन मैं अंनदेसीयों के मध में तुझे मान लेउंगा और तेरे नाम की सतुत गाउंगा।
१० और वुह फेर कहता है की हे अंनदेसीयो उसके लोगों के संग
११ आनंद करो। और फेर की हे समसत अंनदेसीयो परभु की
१२ सतुत करो और हे लोगो उसकी सतुत करो। और फेर असीया कहता है की यसी का एक मुल होगा और अंनदेसीयों पर राज करने को एक उदय होगा और अंनदेसी उस पर
१३ आसा रख्खेंगे। अब आसा का इसर तुमहों को बीसवास लावने से समसत आनंद और सांत से भरपुर करे की तुम लोग
१४ धरमातमा के सामरथ से आसा में बढ़ते चले जाओ। और हे मेरे भाइयो मेरा तो तुमहारे बीषे में यह बीसवास है की तुम लोग भलाइ से भर पुर और नाना परकार के गयान
१५ से भरे हो और एक दुसरे को समझा सकते हो। सो हे भाइयो मैं ने नीडर से चेत दीलाने की रीत से कुछ थोड़ा सा तुमहें लीख्य भेजा कयोंकी इसर ने मुझ पर इस लीये अनुगरेह
१६ कीया। की मैं यसु मसीह का सेवक अनदेसीयों के लीये होके इसर के मंगल समाचार की सेवकाइ करुं जीसतें अन-देसीयों की भेंट धरमातमा से पवीतर होके गरहन की जाय।
१७ सो मैं यसु मसीह के कारन उन कारजन में जो इसर के हैं
१८ बड़ाइ कर सकता हूं। कयोंकी मेरा इतना हीयाव नहीं की उन कारजन को छोड़ जो मसीह ने मुझ से करवाया बरनन करुं की अनदेसीयों को बचन में और करनी में आधीन करे।
१९ बड़े बड़े लछन और आसचरजन से और इसर के आतमा के पराकरम से यहां लों की मैं ने यरोसलीम से फीरते फीरते इलुरकुम लों मसीह के मंगल समाचार का पुरा उपदेस कीया।
२० सो मैं उस परतीसठा का अभीलासी था की जहां जहां मसीह का नाम नहीं लीया गया तहां तहां मगल समाचार पहुंचाउं
२१ न हो की मैं दुसरे की नेउ पर घर रख्खुं। परंतु जैसा लीख्या

है की जीनहों का उसका संदेस नहीं पऊंया वे देष्पेंगे ग्रोन
२२ जीनहों ने नहीं सुना समझेंगे। इसी कानन से मैं तमहाने
२३ पास आवने से वुऊत नोका गया। पनंतु अव इन देसों में
कोइ सथान वुय न नहा। ग्रोन तुमहों से भेंट कनने को वुऊत
२४ वुनस से अभीलासी ऊं। जव मैं असपनीयः को यातना कनुंगा
तुमहाने पास भी आजाउंगा मैं आसा नष्पता ऊं की जाते जाते
तुमहों का देष्पुं ग्रोन तुमहानी भेंट से संतुसट होके तुमहीं
२५ से उचनी को वुढायाजाउं। पनंतु अव मैं सीघों की सेवा
२६ कनने के लीये यनोसलीम का जाता ऊं। कयांकी मकदुनीयः
ग्रोन अष्पाइयः के वासीयों की इछा युं है की यनोसलीम के
२७ दनीदन सीघों के लीये कछ भेजें। यह उनकी इछा ऊइ
ग्रोन वे उनहों के नीनी भी हैं कयोंकी जव अंनदेसी आतमीक
वुसतुन में उनके भागी ऊए हैं तो उचीत है की वे सनीनीक
२८ वुसतुन में उनहों की सेवा कनें। सो मैं इस कानज को पुना
कनके ग्रोन यह फल उन के हाथ में देके तुमहाने पास से हो कन
२९ असपनीयः को जाउंगा। ग्रोन मैं जानता ऊं की मेना आवना
तुमहाने पास मसीह के मंगल समायान की भनपुनी से होगा।
३० ग्रोन हे भाइयो मैं तुमहों से अपने पनभु यसु मसीह के ग्रोन
आतमा के पनेम का कानन देके वीनती कनता ऊं की तुम लोग
मेने लीये मेने संग इसन की पनानथना कनने में पनीसनम
३१ कनो। जीसतें मैं यऊदीयः के अवीसवासीयों से वुय जाउं
ग्रोन मेनी वुह सेवा जो यनोसलीम के लीये है सो सीघन को
३२ गनाह्य होय। की मैं इसन की इछा से तुमहाने पास आनंद से
३३ आउं ग्रोन तुमहाने संग येन पाउं। अव सांत का इसनी
तुम सभों के संग नहे आमीन।

१६ सोलहवां पनव।

१ मैं तुम सभों से फीवी का सनाहना कनता ऊं जो हमानी

२ व्हीन है और कंकनीय़ः नगर की मंडली की दासी है। की तुम लोग उसको परभु में ग्रहण करो जैसा सीधों को जोग है और जो जो कारज में वुह तुमहों से परीयोजन रख्ती होय़ उसका उपकार करो कय़ोंकी वुह व्हुतों की और मेरी भी
३ उपकारनी थी। परसकला और अकला को जो मसीह य़सु
४ में मेरे उपकारक हैं मेरा नमसकार कहो। उनहों ने मेरे पराण के लीय़े अपनाही गला धर दीय़ा उनका केवल मैं नहीं परंतु अनदेसीय़ों की समसत मंडली भी धंन मानती हैं।
५ और मंडली को जो उनके घर में हैं नमसकार कहो और मेरे पीरीय़ अपीनतस को जो अख्याय़ः का मसीही पहीला फल है
६ नमसकार कहो। और मरीय़म को जीसने हमारे लीय़े व्हुत
७ परीसरम कीय़ा नमसकार कहो। और अंदरनीकस और य़ुनीय़ः को जो मेरे कुटुंव हैं और व्दीगीरह में मेरे साथी थे और परेरीतों में परसीध हैं और मुझ से पहीले मसीह
८ में भी थे नमसकार कहो। अंपलीय़ास को जो परभु में मेरा
९ पीरीय़ है नमसकार कहो। और मसीह में मेरे संगी सेवक अरव़ानुस को और मेरे पीआरे सतकीस को नमसकार कहो।
१० और अपलीस को जो मसीह में परखा हुआ है नमसकार
११ कहो और अरसतवुलस के लोगों को नमसकार कहो। मेरे कुटुंव हीरुदीय़ुन को नमसकार कहो और नारकीसस के
१२ लोगों को जो परभु में हैं नमसकार कहो। और तरीफ़ीना और तरीफ़ुसा को जीनहों ने परभु में परीसरम कीय़ा है और पीआरे परसस को जीसने परभु के लीय़े व्हुत परीसरम
१३ कीय़ा है नमसकार कहो। और रुफ़स को जो परभु में चुना हुआ है और उसको जो उसकी और मेरी माता है नमसकार
१४ कहो। और असनकरतस और फ़लगुन और हरमास और पतरवास और हरमीस और भाइय़ों को जो उनके संग हैं
१५ नमसकार कहो। और फ़लुलुगस और य़ुलीय़ा और नीरीय़ुस

और उसकी बहान को और उलंपास और समसत संतन को
१६ जो उनके संग हैं नमसकार कहो। और पवीतर चुमा से
एक दुसरे को नमसकार कहो मसीह की समसत मंडली तुमहें
१७ नमसकार कहती हैं। अब हे भाइयो मैं तुमहों से बीनती
करता हुं की उन लोगों को जो इस उपदेस से उलटा चलते हैं
और बीगाड़ के और ठोकर प्पीलावने के कारन हैं चीनह
१८ रप्पो और उनसे परे रहो। कयोंकी जो ऐसे हैं सो हमारे
परभु यसु मसीह की नहीं परंतु अपने उदर की सेवा करते हैं
और सुबचन और ललोपतो की बातों से सुधे लोगों को
१९ ठगते हैं। कयोंकी तुमहारी अधीनता सभों लों पहुंची है
इसकारन मैं तुमहों से आनंदीत हुं परंतु मैं यह चाहता हुं
की तुमलोग भलाइ में चतुर और बुराइ में भोला होओ।
२० और कुसल का इसर सयतान को तुमहारे पाओं तले सीघर
लताड़ेगा हमारे परभु यसु मसीह का अनुग्रह तुमहारे संग
२१ होवे आमीन। मेरे संग का परीसरमी तीमताउस और मेरा
कुटुंब लुकयुस और यासुन और सुपतरस तुमहें नमसकार
२२ कहते हैं। मैं तरतयुस जो इस पतरी का लेप्पक हुं तुमहों को
२३ परभु में नमसकार कहता हुं। गायुस जो मेरा और सारी
मंडली का आतीथय करनीहार है तुम्हें नमसकार कहता है
आरासतस जो नगर का भंडारी है और भाइ कारतस तुमहों
२४ को नमसकार कहते हैं। हमारे परभु यसु मसीह का अनुग्रह
२५ तुम सभों पर होवे आमीन। अब वुह जो तुमहों को मेरे
मंगल समाचार के और यसु मसीह के उपदेस के समान सथीर
कर सकता है अरथात परगट कीए हुए भेद के समान जो जगत
२६ के आरंभ से गुपत था। परंतु अब आगमगयानीओं के गरंथों से
अनंत इसर की अगया के समान समसत लोगों पर परगट कीया
२७ गया की आधीनता के लीये बीसवास लावें। अद्वैत बुधमान इसर
को यसु मसीह के दवारा से सरबदा महीमा पहुंची करे आमीन।

पुलुस की पहीली पतनी कनंतीय़ों को

---

१ पहीला पनब्र ।

१ पुलुस जो इसन की इच्छा से य़सु मसीह का वुलाय़ा ज्ञआ
२ पनेनीत औान भाइ सुसतनीस से। इसन की मंडली को जो
कनंनतस में है उनको जो य़सु मसीह में होके पवीतन कीय़े
गय़े हैं औान साधु कहाए हैं उन सब्र समेत जो हन ऐक सथान
में य़सु मसीह का नाम जो हमाना औान उनका पनभु है लीय़ा
३ कनते हैं। हमाने पीता इसन के औान पनभु य़सु मसीह के
४ औान से अनुगीनह औान कुसल तुमहाने लीय़े होवे। मैं
तुमहाने लीय़ नीत अपने इसन का घन मानता ज्ञं की इसन का
५ अनुगीनह य़सु मसीह में तमहों को दीय़ा गय़ा। की हन ऐक
व्रसतु में औान समसत उय़ानन औान समसत गय़ान में उसी के
६ कानन से तम लोग घनी कीय़े गय़े हो। जैसा की मसीह की
७ साष्पी तुमहों में ठहनाइ गइ। य़हां लों की तुम लोग कीसी
अनुगीनह में घाट नहीं हो औान हमाने पनभु य़सु मसीह के
८ पनगट होने की व्राट जोहते हो। वही तुमहें अत लों सथीन
नष्पेगा जीसतें तुम लोग हमाने पनभु य़सु मसीह के दीन में
९ नीनदोष्प ठहनो। इसन घनमी है जीस से तुम लोग उसके
पुतन हमाने पनभु य़सु मसीह की संगत में वुलाय़े गय़े हो।
१० अव्र हे भाइय़ो मैं पनभु य़सु मसीह के नाम के कानन तुमहानी
व्रीनती कनता ज्ञं की तुम लोग ऐकही व्रात व्रोलो औान व्रीभाग

तुमहों में न होवे पर्नतु ऐक ही मन श्रैान ऐकही गय़ान में
११ मीले जुले नहो। कय़ोंकी हे भाइय़ो मुहे कलाइ के लोगों से
१२ कहा गय़ा है की तुमहों में झगड़े हैं। से मैं कहता ऊं की
तुमहों में हन ऐक कहता है की मैं पुलुस का मैं श्रपलुस का
१३ मैं कापरा का मैं मसीह का ऊं। तो कय़ा मसीह व़ीभाग
होगय़ा कय़ा पुलुस तुमहाने कानन कुनुस पन प्पींय़ा गय़ा
१४ श्रथवा तमहों ने पुलुस के नाम से सनान पाय़ा। मैं तो इसन
का घन मानता ऊं की मैं ने कनसपस श्रैान गायुस को छोड़
१५ तुमहों में कीसी को सनान न दीय़ा। न होवे की कोइ कहे
१६ की उसने श्रपने नाम से सनान दीय़ा। श्रैान मैं ने इसतीफान
के घनाने को भी सनान दीय़ा श्रैान उन से श्रघीक मैं नहीं
१७ जानता की मैं ने कीसी श्रैान को सनान दीय़ा। कय़ोंकी
मसीह ने मुहे सनान देने को नहीं पनतु मगल समायान का
उपदेस कनने को भेजा व़यन के गय़ान से नहीं न होवे की
१८ मसीह का कुनुस नीनथ हो जाय़। कय़ोंकी कुनुस का उपदेस
उनके लीय़े जो नसट होते हैं मुनप्पता है पनंतु हम ने लीय़े
१९ जो व़याय़े गय़े हैं इसन का सामनथ है। कय़ोंकी लीप्पा है
की मैं गय़ानीय़ों के गय़ान को नस कनुंगा श्रैान वुघमानों
२० की वुघ को मीटा डालुंगा। कहां गय़ानी कहां श्रघापक कहां
इस जगत के व़ीवादी कय़ा इसन ने इस जगत के गय़ान को
२१ मुनप्प न कीय़ा। इस लीय़े की जव इसन के गय़ान से
य़ुं ऊश्रा की जगत ने श्रपने गय़ान से इसन को न पहीयाना
तो इसन की य़ह इछा ऊइ की मंगलसमायान की मुनप्पता
२२ से व़ीसवासीय़ों को व़यावे। कय़ोंकी य़ऊदी कोइ लछन
२३ याहते हैं श्रैान य़ुनानी गय़ान ढुंढ़ते हैं। पनंतु हम मसीह
का जो कुनुस पन माना गय़ा संदेस देते हैं वुह य़ऊदीय़ों के
लीय़े ठोकन का व़प्पै है श्रैान य़ुनानीय़ों के लीय़े मुनप्पता
२४ है। पन मसीह उनके लीय़े जो वुलाय़े गय़े हैं कय़ा य़ऊदी

कया यनानी इसन का सामनथ ग्रैान इसन का गयान है।
२५ कयोंकी इसन की मुनष्पता मनुष्पन से अधीक गयानी है ग्रैान
२६ इसन की दुनवलता मनुष्प से वलवंत है। हे भाइयो अपने वलाए ऊए पन दीनीसट कनो की वऊत से सनीनीक गयानी ग्रैान वऊत पना कनमी ग्रैान वऊत से पनतीसठीत नहीं हैं।
२७ पनंतु इसन ने जगत की सनप्प वसतुन को युन लीया की गयानीयों का अपमान कने ग्रैान इसन ने जगत की दुनवल
२८ वसतुन को युन लीया की वलवंत को लजीत कने। ग्रैान जगत की नीय वसतुन का ग्रैान नींदीत वसतुन को ग्रैान वसतुन को जो नहीं हैं इसन ने युन लीया की उन वसतुन को
२९ जो हैं मोटा डाले। जीसतें कोइ सनीन उसके आगे वड़ाइ
३० न कने। पनंतु तुमलोग उसी से मसीह यसु में हो जो इसन से हमाने लीये गयान ग्रैान धनम ग्रैान पवीतनता ग्रैान मुकत
३१ ऊआ है। की जेसा लीप्पा है की जो वड़ाइ कने सो पनभु पन वड़ाइ कने।

२ दुसना पनत्र।

१ ग्रैान हे भाइयो जब मैं तुमहाने पास आया तब वयन की उतमता अथवा गयान से इसन की साप्पी देता ऊआ नहीं
२ आया। कयोंकी मैंने ठहनाया की तुमहों में कुछ न जानुं केवल यसु मसीह को ग्रैान उसके कुनुस पन माने जाने को।
३ ग्रैान मैं दुनवलता में ग्रैान भय में ग्रैान नीपट थनथनाता ऊआ
४ तुमहाने पास था। ग्रैान मेनी भासा ग्रैान मेना उपदेस मनुष्प के गयान के फुसलाने की वातें न थीं पनंतु आतमा के सामनथ
५ ग्रैान पनतछ पनमान के संग थीं। जीसतें तुमहाना वीसवास मनुष्प के गयान में नहीं पनंतु इसन के सामनथ पन ठहने।
६ तीसपन भी हम उनके आगे जो सीध हैं गयान की वातें वोलते हैं तथापी इस लोक का ग्रैान इस नासमान लोक के अधकन

७ का गयान नहीं बोलते। परंतु हम इसन का नीगुढ़ गयान बोलते हैं वहां गुपत गयान जीसे इसन ने जगत से पहीले
८ हमारे महातम के कारन ठहराया। जीसे कीसी ने इस जगत के अधकन में से न जाना कयोंकी जो वे जानते होते तो
९ महातम के परभु को कुरुस पर न मारते। परंतु जेसा की लीष्पा है की इसन ने आपने परमीयों के लीये उन वसतुन को सीध कीया है जीनहें आष्पा ने न देष्पा आर न कानों ने सुना
१० आर न मनुष्पन के अतःकरन में परवेस ऊई। परंतु इसन ने उनको अपनें आतमा के आर से हम सभ पर परगट कीया कयोंकी आतमा समसत वसतुन को हां इसन के गंभीर वसतुन
११ को भी वीयारन करता है। कयेकी कौन मनुष्प मनुष्प के आतमा को छोड़ जो उस में है मनुष्प का भेद जानता है इसी रीत से इसन के आतमा को छोड़ इसन का भेद कोइ नहीं
१२ जानता। अब हमों ने जगत के आतमा का नहीं परंतु उस आतमा को पाया जो इसन के आर से है ज सतें हम उन वसतुन को जानें
१३ जो इसन ने हमें दीं। जो हम कहते हैं मनुष्प की बुध के सीष्पावने के बचन में नहीं परंतु परमातमा की सीष्प इ ऊइ आत-
१४ मीक वसतुन को आतमीक से मीलावते हैं। परंतु सारीरीक मनुष्प इसन के आतमा को वसतुन को गरहन नहीं करता को वे उसके आगे मुरष्पता हैं आर न वुह जान सकता है कयोंकी वे
१५ आतमीक रीत पर बुझी जाती हैं। परंतु वुह जो आतम क है सो सब बातों को समझता है पर वुह आप कीसी से नहीं समझा
१६ जाता। कयोंकी परभु के मन को कीसने जाना है की उसका मंतरी होवे परंतु मसीह का मन हमों में है।

३ तीसरा परब।

१ आर हे भाइयो मैं तुम हों से ऐसा न कह सका जैसा आतमीकों से परंतु ऐसा जैसा सरीरीकों से अरथात जैसा उनके जो

२ मसीह में बालक हैं। मैं ने तुमहें दुध पीलाया और मांस न पीलाया कयोंकी तुम लोग असकत थे और अब लों भी तुमहों ३ में सकती नहीं। कयोंकी तुम लोग अबलों सानीनीक हो इस लीये जब की तुमहों में डाह और ह्गड़ा करना और बीभाग होना है तो कया तुम लोग सानीनीक नहीं हो और मनुष्यन ४ के बेवहान पन नहीं चलते हो। कयोंकी जब प्रेक कहता है की मैं पुलुस का हुं और दुसना की मैं अपलुस का तो कया ५ तुम सानीनीक नहीं। पुलुस कौन और अपलुस कौन है केवल सेवक जीन के द्वान से तुम लोग बीसवास लाये सो भी इतना ६ जीतना पनभु ने हन प्रेक को दीया। मैं ने बीनछ लगाया ७ और अपलुस ने सींया पनंतु इसन ने बढ़ाया। सो लगाव- नीहान कुछ नहीं और न सींयनीहान पनंतु इसन जो बढ़ाव- ८ नीहान है। सो लगावनीहान और सींयनीहान दोनों प्रेक हैं और हन प्रेक अपने पनीसनम के समान फल पावेगा। ९ कयोंकी हम लोग इसन के बनीहान हैं और तुम लोग इसन १० की खेती और इसन के बसाव हो। मैं ने इसन के अनुगीनह की नीत पन जो मुझे दीया गया बुधमान थवइ के समान नेउं डाली और दुसना उस पन थन धनता है सो हन प्रेक सोयेती कने की वुह कीस नीत से उस पन थन धनता है। ११ कयोंकी उस नेउं को छोड़ जो डाली गइ है कोइ दुसनी नेउं १२ डाल नहीं सकता वुह यसु मसीह है। पनंतु जो कोइ इस नेउं पन सोने नुपे अत मोल के पथन लकड़ी घास भुसे का १३ थन नखे। तो हन प्रेक का कानज पनगट होगा की वुह दीन उसको पनगट कन देगा की प्रेसे कानज आग से पनखे जायेंगे १४ और हन प्रेक का कानज जैसा है आग ठहनावेगी। जो १५ कीसी का कानज सथीन नहे वुह फल पावेगा। और जो कीसी का कानज जल जाय वुह टुटी उठावेगा तथापी आप तो बच जायगा पनंतु प्रेसा जैसा कोइ आग से बच नीकलता है।

१६ कया तुम लोग नहीं जानते की तुम इसर के मंदीर हो और
१७ इसर का आतमा तुमहों में वसता है। जो कोइ इसर के
मंदीर को वीगाड़े तो इसर उसको वीगाड़ेगा कयोंकी इसर
१८ का मंदीर पवीतर है और वुह तुम लोग हो। कोइ मनुष्य
अपने को छल न देवे जो कोइ तुमहारे वीच्चे अपने को जगत
१९ में गयानवान जाने तो मुरष्य वने की गयानी होवे। कयोंकी
लौकीक गयान इसर के आगे मुरष्यता है जैसा की लीष्पा है
२० की वुह गयानीओं को उनकी यतुराइयों में फंसाता है। और
यह की परमु गयानीओं की यींतो को जानता है की वे वयरथ
२१ हैं। इस लीये कोइ मनुष्य मनुष्य पर वड़ाइ न करे कयोंकी
२२ समसत वसतें तुमहारी हैं। कया पुलुस कया अपलुस कया
कायरा कया जगत कया जीवन कया मरन कया वरतमान
२३ की वसत कया भवीस की सव तुमहारी हैं। और तुम मसीह
के हो और मसीह इसर का है।

४ यौथा परव।

१ मनुष्य हमों को ऐसा जाने जैसे मसीह के सेवक और इसर
२ के भेद के भंडारी। और भंडारी में इस वात की प्योज की
३ जाती है की वुह धरमी पाया जाय। परंतु मुझ को उसकी
कुछ यींता नहीं की तुमहों से मेरा वीयार कीया जाय अथवा
कीसी मनुष्य के वीयार करने से हां मैं आप भी अपना
४ वीयार नहीं करता। कयोंकी मेरा मन कीसी वात में मुझे
दोष्प नहीं देता तथापी मैं उस से कुछ धरमी नहीं ठहरता
५ परंतु मेरा वीयार करनीहारा परमु है। इस कारन जव लों
परमु न आवे तुम लोग समय से पहीले वीयार मत करो वुह
अंधकार के गुपत भेदों को परकासीत करेगा और मन के
परारथनस को परगट करेगा और तव हर एक जन इसर से
६ वड़ाइ पावेगा। और हे भाइयो मैं ने इन वातों में तुमहारे

कारन अपना और अपलुस का व्रनन दीनीसटांत की रीत पर कीया की तुम लोग हमारे ओर से सीप्पो की लीप्पे ऊए से अधीक न समझो न होवे की तुम लोग ऐक से दुसरे की
७ अधीक व्रड़ाइ करके फुलो। कयोंकी कैान तुझे दुसरे से व्रीभेद करता है और तुझ पास कया है जो तु ने नहीं पाया सो जो तु ने पाया तो कयों व्रड़ाइ करता है जैसा की तु ने
८ नहीं पाया। सो अव्र तुम लोग संतुसट और घनमान हो और हमारे व्रीना तुमहों ने राजाओं के समान राज कीया और मैं याहता ऊं की तुम लोग राज करते की हम लोग भी
९ तुमहारे संग राज करते। कयोंकी मेरी व्रुध में इसर ने हमें का जो पीछले परेरीत हैं ऐसा परगट कीया जैसा की हमारे मार डालने पर आगया की गइ है की हम जगत के और
१० दुतों के और मनुप्पन के लीये ऐक सवांग ऊए हैं। हम मसीह के कारन से मुरप्प हैं परंतु तुम लोग मसीह में गयानी हो हम दुरव्रल तुम व्रलवान हो तुम परतीसठीत हम नींदीत
११ हैं। हां हम इस घड़ी लों भुप्पे और पीयासे और नंगे हैं
१२ और घैाल प्पाते हैं और मारे फीरते हैं। और अपने हाथों से परीसरम करते हैं नींदीत होके हम भला मनाते हैं सांतपे
१३ जाके हम सहते हैं। वे अपव्राद लगावते हैं हम व्रीनती करते हैं और हम जगत के कुड़े की और समसत व्रसतुन की मैल
१४ के समान आज लों हैं। मैं ये व्रातें नहीं लीप्पता ऊं की तुमहें लजीत करुं परंतु अपने पीरीय पुतरों के समान मैं यतावता हों।
१५ कयोंकी यदपी मसीह में तुमहारे दस सहसर उपदेसक ऊं तथापी तुमहारे पीता व्रऊत से नहीं इस लीये की मैं अकेला मंगल समायार के दुवारा से मसीह यसु में तुमहारा पीता
१६ ऊआ। सो मैं तुमहारी यह व्रीनती करता ऊं की मेरे पीछे
१७ यलनीहार होओ। इस कारन मैं ने तीमताउस का जो मेरा पीरीय पुतर है और परभु में व्रीसवासी है तुमहारे पास भेजा

की वुह मेने यतन को जो मसीह में हैं जैसा मैं हन एक सथान
१८ हन मंडली में सीप्पावता ऊं तुमहें समनन कनावे। कीतने
यह समझ के फुलते हैं की मैं तुमहाने पास नहीं आवने का।
१९ पनंत जो पनभु याहे तो मैं तुमहाने पास सीघन आउंगा औान
अभीमानीओं की व्रातों को नहीं पनंतु उनके पनाकनम के मन
२० को व्रुझुंगा। कयोंकी ईसन का नाज व्रयन में नहीं पनंतु पना-
२१ कनम में है। तुम लोग कया याहतेहो की मैं तुमहाने पास
छड़ी लेके आउं अथवा पनेम औान आतमा की कोमलता से।

५ पांयवां पनव्र।

१ यह सनव्रतन सुनाया जाता है की तुमहाने व्रीय्ये व्रीभीयान
है औान ऐसा व्रीभीयान जीस का नाम अंनदेसीओं में भी नहीं
२ की मनुष्प अपने पीता की ईसतीनी को नष्पे। औान तुम लोग
फुलते हो व्रीलाप नहीं कनते जो उयीत था की जीसने यह
३ कनम कीया तुमहों से नीकाला जाय। कयोंकी मैं तो सनीन
में अलग ऊं पनंतु आतमा में ऐसा समीप ऊं जैसा समयमुय
समीप था उस पन जीसने ऐसा कीया यह अगया कन युका।
४ की हमाने पनभु यसु मसीह के नाम में जव्र तुम लोग औान
हमाना आतमा हमाने पनभु यसु मसीह के पनाकनम के संग
५ एकठे हो। तो ऐसे मनुष्प को सनीन में कसट प्योयने के
लीये सैतान को सोंप देओ जीसतें हमाने पनभु यसु के दीन
६ में आतमा व्रय जाय। तुमहाना घमंड कनना ठीक नहीं कया
तुम लोग नहीं जानते की थोड़ा सा प्पमीन साने पींडे को प्पमीन
७ कन डालता है। सो पुनाने प्पमीन को नीकाल फेंको जीसतें
तुमलोग नया पींड व्रनो जैसा की तुम अप्पमीन हो कयोंकी
हमाना फसह अनयात मसीह हमाने लीये व्रलीदान कीया गया।
८ ईस लीये हम लोग पुनाने प्पमीन से नहीं औान न व्रुनाई औान
दुसटता के प्पमीन से पनंतु नीनमलता औान सयाई के प्पमीन

९ से पत्र कर्नें। मैं ने पत्री में तुमरों का लोप्पा की व्रैभीयाचीओं
१० को संगत मत करो। परंतु केवल इस जगत के व्रैभीयाचीओं की
नहीं अथवा लोभीओं की अथवा नीयोनीओं की अथवा देव
पुजकों की नहीं तव्र ता तुम्हें जगत से नीकल जाना अवेय
११ होता। पर मैं ने अव्र तुम्हें लोप्पा है की जो कोइ भाइ कहा
के व्रैभीयाची अथवा लोभी अथवा देवपुजक अथवा नींदक
अथवा मदप अथवा नीयोनी होय्र ता तुम लोग ऐसे की संगत
१२ न करना हां ऐसे के संग भोजन भो न प्पाना। क्योंकी मुझे
कया काम है की उन पर जो व्राहर हैं अगया करुं कया तुम
१३ लोग उन पर जो भीतर हैं अगया नहीं करते। परंतु उन पर
जो व्राहर हैं इश्वर अगया करता है सो इस कारन तुम लोग
उस दुसट मनुप्प को अपने व्रीच में से व्राहर करो।

६ छठवां पत्र।

१ कया तुम्हों में कीसी का यह हीयाव है की दुसरे से व्रीवाद
२ रप्पके अधर्मीयों के पास जावे और सीचर करे नहीं। कया
तुम लोग नहीं जानते की साधु लोग जगत का व्रीचार करेंगे जो
तुमरों से जगत का व्रीचार कीया जाय्र तो कया तुम लोग सहज
३ व्रीवादों के व्रीचार करने के अजोग हो। कया तुम नहीं
जानते की हम लोग दुतों का व्रीचार करेंगे तो कीतना अधीक
४ इस जीवन के व्रसतुन के व्रीप्पै में। सो जो तुम्हों में इस जीवन
की व्रसतुन के व्रीप्पै में व्रीवाद होय्र तो मंडली के उन लोगों को
५ जो छोटे हैं ्य मानो। मैं तुम्हारी लाज के लीये कहता हुं
कया तुम्हारे व्रीप्पै ऐक व्रुधमान भी नहीं जो अपने भाइओं
६ के व्रीप्पै में नयाय्र से चुका सके। परंतु भाइ भाइ से व्राद
७ करता है और सो अव्रीसवासीयों के आगे। सो यह सरव्रथा
तुम्हारा दोप्प है की तुम आपुस में झगड़ा करते हो तुम लोग
कयों नहीं अंधेर सहते और तुम लोग कयों नहीं अपनी घटी

८ सहते। परंतु तुम लोग आपही एक तो अंधेर और वुरवुसती
९ करते हो और दुसरे भाइयों पर। कया तुम लोग नहीं
जानते की अधरमी इसर के राज के अधीकारी न होंगे छल
न खाओ न वैभीचारी न देवपुजक न पर इसतीरी गामी न
१० जुमेहरे न पुरुष गामी। न चोर न लालची न मदयप न
११ नींदीक न लीटेरे इसर के राज के अधीकारी होंगे। और
कीतने तुमहों में ऐसे थे परंतु परभु इसु के नाम से और हमारे
इसर के आतमा से सनान पाये और पवीतर ऊए और धरमी
१२ भी ठहरे। समसत वुसतें मेरे लीये जोग हैं परंतु सव वुसतें
अछेस नहीं हैं यदपी सव वुसतें मेरे वुस में हैं पर मैं कीसी के
१३ वुस में न ऊंगा। भोजन पेट के लीये और पेट भोजन के
लीये परंतु इसर उसको और उनको नसट करेगा परंतु देह
वैभीचार के लीये नहीं परंतु परभु के लीये और परभु देह
१४ के लीये। और इसर ने परभु को उठाया है और हमों को
१५ भी अपनेही सामरथ से उठावेगा। कया तुम लोग नहीं जानते
की तुमहारे सरीर मसीह के अंग हैं सो कया मैं मसीह के
१६ अंगन को ले कर वेसया का अंग वुनाउं। ऐसा न होवे कया
तुम लोग नहीं जानते की जो कोइ वेसया से संजुकत है एक
देह ऊआ कयोंकी कहा गया है की ऐसे दोनों एक देह होंगे।
१७ परंतु वुह जो परभु से मीला ऊआ है सो एक परान ऊआ है।
१८ वैभीचार से भागो जो पाप मनुष्य करता है देह से वाहर है
परंतु वुह जो वैभीचार करता है अपनेहो सरीर के वीरुध
१९ पाप करता है। कया तुम लोग इस से अगयान हो की
तुमहारा देह धरमातमा का मंदीर जो तुमहों में है जीसको
तुमहों ने इसर से पाया है और तुम लोग अपने ही नहीं
२० हो। कयोंकी मोल लीये गये हो सो तुम लोग अपने
तन से और अपने मन से जो इसर के हैं इसर की सतुत
करो।

७ सातवां पत्र।

१ अब उन बसतुन के बीषै में जो तुमहों ने मुझे लीष्पा है
२ भला यह है की मनुष्य इसतीनी को न छुवे। तीस पन भी
बीभीचान से बयने को हन प्रेक मनुष्य अपनी पतनी औन हन
३ प्रेक सीतनी अपना पती नष्पे। पती अपनी पतनी पन प्रेसा
सील नष्पे जैसा जोग है औन प्रेसाहो पतनी अपने पती पन भी।
४ पतनी का सनीन अपने बस में नहीं पनंतु पती के इसी नीत से
५ पती का सनीन भी अपने बस में नहीं पनंतु पतनी के। तुम
प्रेक दुसने से अलग न नहो पन थोड़े दीन क लीये आपुस की
पनसनता से जीसतें तुम लोग बनत औन पनानथना कनने
के कानन अवकास पाओ औन फेन प्रेकठे होओ न हो की
सैतान तुमहाने इंदनीयन के अबस के कानन तुमहानी
६ पनीछा कने। पनंतु मैं छुटी की नीत पन यह कहता ऊं अगया
७ नहीं कनता। कयोंकी मैं याहता ऊं की जैसा मैं ऊं वैसा ही
सब होते पन सभों ने अपना अपना दान इसन से पाया प्रेक ने
८ इस नीत से दुसने ने उस नीत से। सो मैं अनबीयाहे मनुष्यों
औन बीधवों से कहता ऊं की भला है की वे प्रेसे नहें जैसा मैं
९ ऊं। पनंतु जो सह न सकें तो बीवाह कनें कयोंकी बीवाह कनना
१० जलने से अती भला है। पनंतु मैं उनको जीनका बीवाह ऊआ
है अगया कनता ऊं मैं नहीं पनंतु पनभु की पतनी पती को न
११ छाड़े। औन जो छोड़े तो वुह अनबीयाही नहे अथवा पती से
१२ फेन मीलाप कने औन पती पतनी को तयाग न कने। सो जो
कुछ नह गया है पनभु नहीं मैं कहता ऊं की जो कीसी भाइ
की पतनी अबीसवासीनी होय औन उसके संग नहने पन
१३ पनसंन होय तो वुह उसे न छोड़े। औन जो कीसी इसतीनी का
पती अबीसवासी होय औन वुह उसके संग नहने को याहे तो
१४ वुह उसको न छोड़े। कयोंकी अबीसवासी पती पतनी के कानन

से पवीतर है और अवीसवासनी पतनी पती के कारन से पवीतर है नहीं तो तुमहारे संतान अपवीतर होते परंतु अव
१५ पवीतर हैं। पर जो अवीसवासी आप को अलग करे तो करे इसारे भाइ अथवा वहीन ऐसी वातों के वंघन में नहीं और
१६ इसर ने हमों को मीलाप में वुलाया है। हे पतनी कया जाने तु पती को वचावे अथवा हे पुरुष कया जाने तु पतनी को
१७ वचावे। परंतु जैसा इसर ने हर ऐक को भाग्या दीया और जीस परकार से परभु ने हर ऐक को वुलाया वुह वैसाही
१८ रहे और मैं सारी मंडलीयों में ऐसाही ठहरावता हुं। जो कोइ षतनः कीया गया होकर वुलाया गया होय तो वुह अषतनःन होवे जो कोइ अषतनःही में वुलाया गया होय तो
१९ षतनः न करवावे। षतनः कुछ नहीं और अषतनः भी कुछ
२० नहीं परंतु इसर की अग्या पर चलना है। जो जीस उदम
२१ में वुलाया गया वुह उसी में रहे। जो तु दासता में वुलाया गया होय तु चींता न कर परंतु जो तु छुटकारा पासके तो
२२ पहीले गरहन कर। कयोंकी जीस दास को परभु ने वुलाया वुह इसर का नीरवंघ पुरुष है और इसी रीत से जो नीरवंघ
२३ में वुलाया गया सो मसीह का दास है। तुम लोग दाम से
२४ मोल लीये गये हो सो मनुष्यों के दास न होओ। हे भाइयो जो जीस दसा में वुलाया गया सो उसी दसा में इसर के संग
२५ रहे। पर कुंआरीयों के वीषे में परभु की कोइ अग्या मुझ पास नहीं परंतु जैसा मैं परभु से दया पाके घरमी वना हुं
२६ वैसा हो संमत देता हुं। सो मैं समुझता हुं की वरतमान कसट के लीये यह भला है की मनुष्य के लीये अतयंत अछा है की
२७ जैसा है वैसा रहे। जो तु पतनी के वंद में है तो छुटकरा मत
२८ ढुंढ जो तु पतनी से छुटा है पतनी को मत ढुंढ। परंतु जो तु वीवाह करे तो पाप नहीं करता और जो कुंआरी वीयाही जावे तो वुह पाप नहीं करती तथापी ऐसे लोग सरीर में दुष पावेंगे

२९ पर मैं तुमसों पर क्षमा करता हूं। परंतु हे भाइयो मैं तुमसों से यह कहता हूं की समय सकेत है इस कारन चाहीये की
३० जो पतनी युकत हैं ऐसे होवें जैसा की उनको नहीं हैं। और रोदनकरनीहार ऐसे जैसा की नहीं रोते और आनंद करनी हार ऐसे जैसा की आनंद नहीं करते और कीननीहार ऐसे
३१ जैसा को अधीकारी नहीं। और जगत के ब्रेवहारी ऐसे होवें की उनका काम अधीकाइ को न पहुंचे कयोंकी जगत का
३२ ब्रेवहार बीता चलाजाता है। सो मैं चाहता हूं की तुम लोग नीसचींत रहो वुह जो अनबीयाहा है परभु के बसतुन के लीये
३३ चींता करता है की वुह कयोंकर परभु को परसन करे। परंतु वुह जो बीयाहा है सो जगत के लीये चींता करता है की वुह
३४ कयोंकर पतनी को परसन करे। पतनी और कुआरी में भेद है की अनबीयाही परभु के लीये चींता करती है की वुह देह और आतमा में पवीतर होय परंतु वुह जो बीयाही है जगत के लीये चींता करती है की कीस रीत से पती को परसन करे।
३५ पर मैं तुमहारेही लाभ के लीये यह कहता हूं तुमसों पर जाल फेंकने को नहीं परंतु सोभा के लीये जीसतें तुम लोग परभु
३६ की सेवा पर सुचीत से सधीन रहो। परंतु जो कोइ समझे की अपनी कुंआरी के बीषै में अजोग ब्रेवहार करता हूं जो वुह तरुनाइ से बीतजाय और ऐसाही अवेस जाने तो जो चाहे
३७ सो करे वुह पाप नहीं करता बीवाह करे। पर जो कोइ अवेस न समझ के अपने मन में दीढ़ रहे और अपनी ही इछा पर सामरथ रखता हो और अपने मन में ठाने होय की मैं
३८ अपनी कुंआरी को रख छोडुंगा वुह भला करता है। सो वुह जो बीयाह देता है भला करता है परंतु जो बीयाह नहीं देता
३९ सो और भी भला करता है। पतनी ब्रेवसथा से बंधी है जबलों उसका पती जीवता है परंतु जो उसका पती मर जाय तो वुह
४० छुट गइ जीस से चाहे बीवाह करे केवल परभु में। परंतु

जो वुह ऐसीही नहे तो वुह मेने वीयाह में अती सुखी है और मैं जानता ऊं की इसन का आतमा मुझ में है।

८ आठवां पनव।

१ अब उन वसतुन के वीष्ये में जो मुनतीन को वलीदान की जाती हैं हम जानते हैं की हम लोग गयान नखते हैं
२ गयान फुलावता है पनंतु पनेम सुधानता है। और जो कोइ जाने की मैं कुछ जानता ऊं तो वुह अब लों जैसा याहीये
३ की जाने नहीं जानता। पनंतु जो कोइ मनुष्य इसन को
४ पीआन कने वुह उस से जाना गया है। सो उन वसतुन के भोजन कनने के वीष्ये में जो मुनतीन को वल की जाती हैं हम जानते हैं को सुनत जगत में कुछ नहीं और कोइ इसन
५ नहीं पनंतु ऐक। कयोंकी यदपी सनग में अथवा पीनथीवी में वऊत से इसन कहावते हैं जैसा को वऊतेने इसन और
६ वऊतेने पनभु हैं। तथापी हमाना ऐक इसन है जो पीता है जीस से समसत वसतें ऊइ हैं और हम उसके लीये हैं और ऐक पनभु यसु मसीह जीस से समसत वसतें हैं और हम उससे
७ हैं। पनंतु सब में यह गयान नहीं कयोंकी कीतने मुनत पन नीसयय कनके मुनतीन पन की भेंट यह समझ के की मुनत की है आज लों खाते हैं और उनके मन जो नीनवल हैं असुच
८ होते हैं। पनंतु भोजन हमें इसन के आगे नहीं सनाहता कयोंकी जो खावें तो हमें वढ़ती नहीं और जो न खावें तो
९ कुछ घटी नहीं। पनंतु सैायेत नहो न होवे की जो तुमहाने लीये जोग है कहीं दुनवलों के लीये ठोकन खीलावने का
१० कानन होवे। कयोंकी जो कोइ तुझ गयानी को मुनत के मंदीन में वैठा ऊआ देखे कया उसका मन जो दुनवल है
११ मुनतीम की भेंट खाने पन नीनभय न होगा। और तेना वुह नीनवल भाइ जीसके लीयें मसीह मुआ तेने गयान से नसट

१२ होगा। परंतु जब तुम लोग भाइयों का यूं अपराध करते हो और उनके नीरबल मन को घायल करते हो तो तुम मसीह
१३ का अपराध करते हो। इस लीये यदी भोजन मेरे भाइ के ठोकर खाने का कारन होवे मैं तो कधी मांस न खाउंगा न होवे की मैं अपने भाइ के ठोकर का कारन होउं।

९ नवां पत्र।

१ क्या मैं परेरीत नहीं और नीरबंध नहीं हुं क्या मैं ने हमारे परभु यसु मसीह को नहीं देखा तुम लोग परभु में मेरे
२ कारज नहीं हो। यदपी मैं औरों का परेरीत नहीं तथापी तुमहारा तो नीसंदेह हुं क्योंकी तुम सभों का परभु में होना
३ मेरे परेरीतत पर छाप है। जो मुझे परखते हैं उनके लीये
४ मेरा यह उतर है। क्या खाने पीने को हमारा बस नहीं।
५ क्या हमारे बस में नहीं की कीसी बहीन को पतनी करके अपने संग लीये फीरें जैसा आर आर परेरत और परभु के
६ भाइ और कफा करते हैं। अथवा केवल मेरा और बरन-
७ बास का बस नहीं की परीसरम न करें। कौन अपनी उठान करके जुध करता है कौन दाख की बारी लगावता है और उसका फल नहीं खाता अथवा कौन झुंड को चरावता है जो
८ उस झुंड का कुछ दुध नहीं पीता। क्या मैं मनुष्य की नाइं
९ ये बातें बोलता हुं और बेवसथा भी यूं नहीं कहती। क्योंकी मुसा की बेवसथा में लीखा है की तू बैल का जो दावता है
१० मुंह मत बांध क्या इसर को बैल की चींता है। अथवा बीसेख करके यह हमारे कारन कहता है हां नीसंदेह हमारे कारन लीखा है की जोतनीहार आसा से जोते और वुह
११ जो आसा से दावता है अपनी आसा का भाग पावे। जो हम ने तुमहारे लीये आतमीक बसतें बोइ हैं क्या बड़ी बात है
१२ की हम तुमहारी सरीरीक बसतें काटें। जो और लोगों का

सामनथ तुमहों पन होय्‌ तो कीतना अधीक हमारा पनंतु इस सामनथ को पनगट न कीया पन सानी बातें सहते हैं न
१२ होवे की हम मसीह के मंगल समाचान को नोकें। कया तुम लोग नहीं जानते की जो पवीतन वसतुन की सेवा कनते हैं सो मंदीन में से खाते हैं और जो वेदी के सेवक हैं सो वेदी
१४ में से भाग लेते हैं। और पनभु ने भी यूं ठहनाया है की जो मंगल समाचान का उपदेस कनते हैं मंगल समाचान से
१५ उपजीवन पावें। पन मैं आप इन वसतुन में से कीसी को वेवहान में न लाया और न इस इछा से लीखा की मेने लीये यूं होय क्योंकी मुझे मनना अत भला है की कोइ मेनी
१६ बड़ाइ बयनथ कने। क्योंकी जो मैं केवल मंगल समाचान का उपदेस कनुं तो मेनी कुछ बड़ाइ नहीं क्योंकी मुझे अवेस आन पड़ा है और मुझ पन संताप है जो मैं मंगल समाचान
१७ का उपदेस न कनुं। जो मैं यह पसनता से कनुं तो फल पाउंगा पनंत जो अपनसनता से कनुं तो भी भंडानपन मुझे
१८ सौंपा गया है। तो मेना फल कया है नीसचय यह की जब मैं मसीह के मंगल समाचान का उपदेस कनुं मैं मंगलसमाचान को वीन दाम ठहनाउं की मैं अपने सामनथ को जो मंगल
१९ समाचान में है अननीत से न कनुं। क्योंकी सब से नीनबंध होके मैं ने अपने को सब का सेवक कीया जीसतें मैं अधीक को
२० लाभ में पाउं। और मैं यहूदीयों में यहूदी की नाइं हुआ की मैं यहूदीयों को पनापत कनुं उन में जो वेवसथा के बस में थे जैसा वेवसथा के बस की मैं वेवसथा बसी लोगों को पनापत
२१ कनुं। और वेवसथा हीनों में मैं वेवसथा हीन की नाइं हुआ तथापी मैं इसन के समीप वेवसथा हीन नहीं हुआ पनंतु मसीह के लीये वेवसथा के बस में था की मैं वेवसथा हीनों को
२२ पनापत कनुं। नीनबलों में नीनबल की नाइं हुआ जीसतें मैं नीनबलों को पनापत कनुं मैं समसत मनुष्यन के कानन सब

२३ कुछ व्रना की मैं कीसी पनकान से कीतनें। के बयाउं। और मैं य्रह मंगलसमाचान के कानन कनता ढूं जीसतें मैं उस में
२४ भागी हो जाउं। तुम लोग नहीं जानते की दौड़नी में जो दौड़ते हैं सव्र तो दौड़ते हैं पनंतु दांव ऐकही पाता है ऐसा
२५ दौड़ो की तुम लोग पनापत कनो। और हन ऐक जो इस में होसका कनता है सव्र व्रातों में मधम है वे तो नास मान
२६ मुकुट के लीये कनते हैं पनंतु हम अव्रीनासी के लीये। सो मैं दौड़ना ढूं संदेह कननेहानों के समान नहीं मैं लड़ता ढूं
२७ न उसके समान जो पवन को मानता है। पनंतु मैं अपने सनीन को पीसे डालता ढूं और आधीन कनता ढूं न होवे की औनों को उपदेस कनके मैं आप तय्रकत होउं।

१० दसवां पनव्र।

१ सो हे भाइये। मैं नहीं याहता की तुम लोग इस से अगयान नहो की हमाने समसत पीतन मेघ के नीचे थे और ससुदन
२ में से होके सव्र नीकल गये। और सभों ने उस मेघ और
३ समुदन से मुसाइ सनान पाया। और सभों ने ऐकही पनकान
४ का आतमीक भोजन प्याया। और सभों ने ऐकही पनकान का आतमीक पान पीया कयोंकी उनहों ने उस आतमीक पहाड़ी से जो उनके पीछे पीछे यली गइ पीया और वुह पहाड़ी
५ मसीह था। तथापी उन में से इसन व्रहुतों से पनसन न था
६ इस लीये वे व्रन में माने पड़े। सो ये व्रातें हमाने येतावने के लीये थीं की हम वुनाइ की लालसा न कनें जैसा उनहों ने
७ लालसा की। और तुम लोग उन में से कीतनें। के समान देव पुजक मत होओ जैसा लीख्या है की लोग ख्याने पीने व्रैठे
८ और लीला कनने उठे। और हम व्रैभीयान न कनें जैसा की उनमें से कीतनें ने कीया और दीन भन में तेइस सहसन माने
९ पड़े। और हम मसीह की पनीछा न कनें जैसा की उन में से

१० कीतनों ने भी की ग्रीन सांपों से नसट ऊए। ग्रीन मत कुड़-
कुड़ाग्रो जैसा उन में से कीतने कुड़कुड़ाये ग्रीन नासक से
११ नसट ऊए। ये सव्र जो उन पन पड़े यतावने के लीये ऊए
ग्रीन ये हमाने सीख्यावने के लीये लीख्ये गये जीन पन पीछला
१२ समय ग्रान पड़ा। सो जो कोइ अपने को दीनढ व्रुझता है
१३ सो सैायेत नहे ऐसा न होवे की गीन पड़े। तुम लोग कीसी
नीत की पनीछा में नहीं पड़े हो पनंतु केवल वैसी जैसी मनुष्यन
से की जाती है ग्रीन इसन धनमी है जो तुमहों को तुमहाने
व्रुता से अधीक पनीछा में पड़ने न देगा पनंतु पनीछा के संग
नीकल ने का भी पंथ ठहनायेगा की तुम लोग सह सको।
१४ इस कानन हे मेने पीनीय तुम लोग देव पुजा से भागो।
१५ मैं जैसे गयान नानों से व्रोलता ऊं जो की मैं कहता ऊं व्रीयान
१६ कनो। कया ग्रासीस का कटोना जीसे हम ग्रासीस देते हैं
मसीह के लोऊ का भागी होना नहीं नोटी जो हम तोड़ते हैं
१७ मसीह के अंग का भागी होना नहीं। कयोंकी हम व्रऊत
होके ऐक नोटी ग्रीन ऐक देह हैं कयोंकी हम लोग ऐकही
१८ नोटी के भागी हैं। जो सनीन की नीत से इसनाइल हैं उन
पन दीनीसट कनो कया जो व्रलीदान से खाते हैं वे व्रेदी से
१९ भागी नहीं। सो मैं कया कऊं की मुनत अथवा मुनतीन का
२० व्रलीदान कुछ व्रसतु है। पनंतु अंनदेसी जो व्रलीदान कनते
हैं देवों के कानन कनते हैं इसन के लीये नहीं ग्रीन मैं नहीं
२१ चाहता की तुम लोग देवों के संग भागी होग्रो। तुम लोग
पनभु का ग्रीन देवों का कटोना नहीं पी सकते ग्रीन पनभु के
२२ ग्रीन देवों के मंच से भागी नहीं हो सकते कया हम पनभु
को डाह दीलावते हैं कया हम उस से अधीक व्रलवान हैं।
२३ सव्र व्रसतें मेने लीये कनतव्र हैं पनंतु सव्र व्रसतें जोग नहीं सव्र
व्रसतें मेने लीये कनतव्र हैं पनंतु समसत व्रसतें सुधानती
२४ नहीं। कोइ अपना सवानथ न ढुंढ़े पनंतु हन ऐक दुसने

२५ की भलाइ याहे। से जो कुछ कसाइ की हाट में व्रीकता है
२६ उसे प्याओ ओान व्रीवेक के लीये कुछ पुछो मत। कयोंकी
२७ पीनथीवी ओान उसकी भन पुनी पनभु की है। ओान जो कोइ
अव्रीसवासीयों में से तुमहाना नेवता कने ओान जाने को तुम-
हाना मन होय तो जो कुछ तुमहाने आगे घना जाय उसे प्याओ
२८ ओान व्रीवेक के लीये कुछ पुछो मत। पनंतु जो कोइ तुमहें
कहे की यह मुनतीन को व्रलीदान कीया गया है तो उसके
लीये जीसने कहा है ओान व्रीवेक के लीये न प्याओ कयोंकी
२९ पीनथीवी ओान उसकी भनपुनी पनभु की है। व्रीवेक मैं कहता
हुं तेनाही नहीं पनंतु दुसने का कयोंकी मेना नीनव्रंध होना
३० कीस लीये दुसने के व्रीवेक से व्रीयान कीया जाय। कयोंकी
अनुगीनह से जो मैं भागी हुआ तो जीस व्रसतु के लीये मैं
घंन मानता हुं उसके कानन कीस लीये मेनी नींदा होती है।
३१ इस लीये प्याओ अथवा पीओ अथवा जो कुछ कनो सव्र कुछ
३२ इसन के महातम के लीये कनो। न यहुदीयों को न
युनानीयों को न इसन की मंडली को ठोकन प्पीलाओ।
३३ जैसा की मैं सव्र व्रातों में सव्र को नीझावता हुं ओान अपना
लाभ नहीं ढुंढता पनंतु व्रहुतेनों का जीसतें वे उधान
पावें।

११ गयानहवां पनव्र।

१ तुम लोग मेना पीछा कनो जैसा मैं भी मसीह का कनता हुं।
२ ओान हे भाइयो मैं तुमहानी व्रडाइ कनता हुं की तुम लोग
समसत व्रातों में मुझे समनन कनते हो ओान उन व्रसतुन को
३ ऐसा धानन कनते हो जैसा मैंने तुमहें सौंपा है। पनंतु मैं
याहता हुं की तुम लोग जानो की हन ऐक पुनुष्प का सीन
मसीह है ओान इसतीनी का सीन पुनुष्प है ओान मसीह का
४ सीन इसन। हन ऐक पुनुष्प जो पनानथना कनते अथवा

उपदेस करते अपने सीर को ढांपता है अपने सोर का अपमान
५ करता है। और वुह इसतीरी जो नंगे सीर परारथना करती
अथवा उपदेस करती है अपने सीर का अपमान करती है
६ कयोंकी वुह ऐसी है जैसा की वुह मुंड़ाइ गइ है। सो यदी
इसतीरी ओढ़नी न ओढ़े तो वुह मुंडाइ भी जाय और जो
इसतीरी का चोटी कटने से अथवा सीर मुंडाने से अपमान
७ होत है तो ओढ़नी ओढ़े। कयोंकी पुरुष्प को तो न चाहोये
की अपना सीर ढांपे कयोंकी वुह इसर की मुरत और उसकी
८ सोभा है परंतु इसतीरी पुरुष्प की सोभा। कयोंकी पुरुष्प
९ इसतारी से नहीं परंतु इसतीरी पुरुष्प से है। और पुरुष्प
इसतीरी के लीये नहीं सीरजा गया परंतु इसतीरी पुरुष्प
१० के लीये। सो दुतों के कारन इसतीरी को चहीये की अपने
११ सीर को वस में रष्पे। तोसपर भी परभु में न पुरुष्प इसतीरी
१२ से अलग न इसतीरी पुरुष्प से अलग है। कयोंकी जैसा
इसतीरी पुरुष्प से है वैसाही पुरुष्प भी इसतरी से है परंतु
१३ सब कुछ इसर से है। तुम लोग आपही बीचार करो कया
उचीत है की इसतरी बीना ओढ़नी ओढ़के इसर की परारथना
१४ करे। कया परकीरत तुम लोगों को नहीं सीष्पावती की जो
१५ पुरुष्प लंबा बाल रष्पे तो उसके लीये लजा है। परंत जो
इसतीरी का लंबा बाल होय वुह उसकी सोभा है कयोंकी
१६ उसका बाल ढांपने के कारन उसे दीया गया है। परंतु यदी
कोइ झगड़ालु दीष्पाइ देवे तो हम रष्पे की न हमारा न इसर
१७ की मंडलीयों का कोइ ऐसा बेवहार है। और मैं तुमहें ये
कहता हुं और तुमहरी बड़ाइ नहीं करता की तुम लोग एकठे
होके आते हो कुछ उस में तुमहारी भलाइ नहीं परंतु अधीक
१८ बुराइ है। कयोंकी मैं सुनता हुं की पहीले जब तुम लोग
मंडली में एकठे होके आते हो तो तुमहों में बीभाग होते हैं
१९ और मैं उसे कुछ बीसवास करता हुं। कयोंकी अवेस है की

तुमहों में वीगाड़ भी होवे की वे जो गनहन कीये गये हैं पनगट
२० हो जायं। इस लीये जव तुम लोग ऐक ही सथान में ऐकठे होके
आते हो यह तो पनभु की वीयानी खाने के लीये नहीं है।
२१ कयोंकी हन ऐक जन पहीले अपनी वीयानी प्या लेता है ओन
२२ ऐक भुप्पा ओन दुसना मतवाला होता है। कया तुम लोग
प्याने पीने के लीये घन नहीं नप्पते अथवा इसन की मंडली की
अवगया कनते हो ओन कंगालों को लजीत कनते हो अव मैं
तुमहों से कया कहुं कया मैं तुमहानी वड़ाइ कनुं मैं इस वात
२३ में तुमहानी वड़ाइ नहीं कनने का। कयोंकी मैं ने पनभु से
पाया ओन तुमहें भी सौंपा की पनभु यसु ने जीस नात को
२४ पकड़वाया गया नोटी ली। ओन धंनमान के तोड़ी ओन
कहा की लेओ प्याओ यह मेना देह है जो तुमहाने लीये तोड़ा
२५ जाता है तुम लोग मेने समनन के लीये यह कीया कनो। ओन
उसी नीत से उसने वीयानी के पीछे कटोना भी लीया ओन
कहा की यह कटोना मेने लोहु में नया नीयम है जव जव तुम
२६ लोग पीओ मेने समनन के लीये यों कनो। कयोंकी जव जव
तुम लोग यह नोटी प्याओ ओन यह कटोना पीओ तव तव
पनभु के मीनतु को पनगट कनते हो जव लों वुह न आ ले।
२७ इस कानन जो कोइ अनुचीत नीत से यह नोटी प्यावे अथवा
पनभु का कटोना पीवे वुह पनभु के देह ओन लोहु का अपनाधी
२८ होगा। सो मनुप्प पहीले अपने को जांचे ओन इसी नीत से
२९ नोटी प्यावे ओन कटोना पीवे। कयोंकी जो अनुचीत नीत से
प्याता ओन पीता है सो पनभु के देह को सोच न कनके अपना
३० दंड प्याता ओन पीता है। इसी कानन से तुमहों में वहुतेने
३१ नीनवल ओन नोगी हैं ओन कीतने सो गये हैं। कयोंकी जो
हम लोग अपने को वीचानते तो हमाना वीचान न कीया
३२ जाता। पनंतु जव हम लोगों का वीचान कीया जाता है तव
पनभु से ताड़ना पावते हैं जीसतें जगत के संग हम पन दंड की

३३ अगय़ा न की जाय़। से हे मेने भाइय़ो जव़ तुम लोग प्याने
३४ को प्रेकठे आ्रो ते प्रेक दुसने के लीय़े ठहनो। औान जो कीसी
को भुप्प लगे तो वुह अपने घन में प्यावे जीसतें तुम लोग दंड
पावने को प्रेकठे न आ्रो औान जो जो व़ातें नह गइ हैं मैं
आके सुधानुंगा।

१२ व़ानहवां पनव़।

१ हे भाइय़ो मैं नहीं याहता की तुम लोग आतमीक दान के
२ व़ीष्पै में अगय़ान नहो। तुम लोग जानते हो की तुम सव़
अंनदेसी थे औान गुंगी सुनतन के पीछे जैसे यलाय़े गय़े वैसे
३ यलते थे। से मैं तुमहें जनावता ऊं की कोइ इसन के आतमा
के औान से कहते ऊप्रे य़सु को सनापीत नहीं कहता औान व़ीना
धनमातमा के औान से कोइ य़सु को पनभु नहीं कह सकता।
४ अव़ नाना पनकान के दान हैं पनंतु आतमा प्रेकही।
५ औान सेवकाइ के अनेक पनकान हैं पनंतु पनभु प्रेकही।
६ औान नाना पनकान की कीनय़ा हैं पनंतु इसन प्रेकही जो सव़
७ में सव़ कुछ कनता है। पनंत आतमा का पनकास हन प्रेक
८ के लाभ के लीय़े दीय़ा जाता है। कय़ोंकी प्रेक को आतमा
से गय़ान की व़ात दी गइ है औान दुसने को उसी आतमा से
९ व़ीदय़ा की व़ात। औान को व़ीसवास दुसने को यंगा कनने
१० का सामनथ। औान को आसयनज कनम दुसने को आगम
कहना औान को आतमा का पहीयाननना दुसने को भांत भांत
११ की भाप्पा औान को भाप्पाओं का अनथ कनना। पनंतु वुह
प्रेकही आतमा इन सभों का कनता है जैसा याहता है हन
१२ प्रक को व़ांटा कनता है। कय़ोंकी जैसे देह प्रेक होके अंग
व़ऊत नप्पता है औान उसी देह में इतने अंग मील के प्रेक देह
१३ हैं मसीह भी प्रैसा है। कय़ोंकी हमों ने कय़ा य़ऊदी कय़ा
य़ुनानी कय़ा दास कय़ा नीनव़ंध प्रेकही आतमा से प्रेक देह

१४ में स्नान पाया और एक आतमा में हम सब पीलाये गये।
१५ देह एक अंग नहीं परंतु बहुत हैं। यदी पांव कहे की मैं
१६ हाथ नहीं तो कया वुह इस कारन से देह का नहीं। और
यदी कान कहे की मैं आंष्य नहीं इस कारन मैं देह का नहीं
१७ तो कया वुह देह का नहीं है। जो सारा देह आंष्य होता
तो स्रवन कहां होता और यदी समसत देह स्रवन होता
१८ तो सुंघना कहां होता। परंतु अब इसर ने हर एक अंग को
१९ देह में अपनी इछा के समान रष्या। पर जो सब एकही
२० अंग होते तो देह कहां होता। परंतु अब बहुत से अंग हैं
२१ तथापी देह एकही है। और आंष्य हाथ से नहीं कह सकती
की मैं तेरा परयोजन नहीं रष्यती और सीर भी पांव को
नहीं कह सकता की मैं तुमहारा परयोजन नहीं रष्यता।
२२ परंतु देह में वे अंग जो दुरबल समझ पड़ते हैं सब से अधीक
२३ अवस हैं। और हम जीन अंगो को औरों के तुल अपरतीस-
ठीत जानते हैं उनहीं को अधीक परतीसठा देते हैं और
२४ हमारे बेडौल अधीक सुडौल हो जाते हैं। परंतु हमारे
सुडौल अंगों को परयोजन नहीं पर इसर ने हीन अंगों को
२५ बहुत अधीक परतीसठा देके देह को मीलाया। की बीभाग
देह में न होवे परंतु की समसत अंग एक दुसरे के लीये समान
२६ चींता करे। और जो एक अंग पीड़ा पावे तो समसत अंग
उसके संग पीड़ा पावते हैं अथवा जो एक अंग परतीसठा पावे
२७ तो समसत अंग उसके संग आनंद करते हैं। सो तुम लोग
२८ मसीह के देह हो और भींन भींन अंग हो। और मंडली
में इसर ने कीतनों को ठहराया पहीले परेरीतों को और
दुसरे आगमगयानीयों को और तीसरे उपदेसकों को उसके
पीछे आसचरज करम तब चंगा करने के सामरथ फेर उपकार
२९ और परधानता और नाना परकार की भाषा दीं। कया सकल
परेरीत हैं सकल आगमगयानी हैं सकल उपदेसक हैं सकल

१० आसयनज कनम कननीहान हैं। कय़ा सव़ को यंगा कनने का सामनथ है कय़ा सव़ कोइ भांत भांत की भाप्पा व़ोलते
११ हैं कय़ा सव़ अनथ कनते हैं। अक्के अक्के दानें की लालसा कनो मैं एक मानग जो उनहों से कीतना अक्का है तुमहें व़तावता ऊं।

१३ तेनहवां पनव़।

१ जो मैं मनुप्प अथवा दुतें को भाप्पा व़ोलुं पनंतु पनेम न
२ नप्पुं तो मैं ठंठनाता पीतल अथवा ठंठनाता ढाह ऊं। अैान जो मैं आगम का व़ात कह सकुं अैान गुपत की सानी व़ातें अैान सानी व़ीदय़ा को जानुं अैान मेना व़ीसवास पुना होय़ इहां लों की मैं पहाड़ों को यलाउं पनंतु पनेम न नप्पुं तो मैं
३ कुछ नहीं ऊं। अैान जो मैं अपनी समसत संपत भीप्प में दे डालुं अथवा जो मैं अपना देह देउं की जलाय़ा जाय़ पनंतु
४ पनेम न नप्पुं तो मुह कुछ लाभ नहीं। पनेम संतोप्प कनता है दय़ाल है पनेम डाह नहीं कनता पनेम अपनी गालफटाकी
५ नहीं कनता अभीमानी नहीं। कुयाल नहीं यलता अपना सवानथ नहीं ढुंढता जलजलाहट नहीं व़ुनी यींता नहीं
६ कनता। कुकनम से पनसंन नहीं पनंतु सयाइ से पनसंन है।
७ सव़ व़ातों को ढांपता है सव़ कुछ पनतीत कनता है समसत
८ व़सतुन की आसा नप्पता है सव़ का संतोप्प कनता है। पनेम कभी अलग नहीं होता पनंतु जो आगम की व़ातें हैं तो नास हो जाय़ेंगी जो भाप्पा है तो व़ंद हो जाय़ेगी जो व़ीदय़ा है तो
९ लोप हो जाय़गी। कहांकी हमाना गय़ान अलप है अैान
१० हमाना आगम कहना अलप है। पनंतु जव़ वुह जो संपुनन
११ है आवेगा तो वुह जो अलप है नसट हो जाय़गा। जव़ मैं व़ालक था तव़ मेनी व़ोली व़ालक की नाइ थी अैान मेना सभाव व़ालक की नाइ था अैान मेनी समह व़ालक की नाइ

थी परंतु जब मैं तरुन हुआ तब मैं ने बालक पन से हाथ
१२ उठाया। अब हम लोग दरपन में धुंधला सा देखते हैं परंतु
उस समय आमने सामने देखेंगे अब मेरी बीदया अलप है
१३ परंतु तब मैं ऐसा जानुंगा जैसा की मैं भी जान गया हूं। सो
अब ये तीन रही हैं बीसवास और आसा और परेम परंतु इन
में परेम सब से बड़ा है।

१४ चौदहवां पत्र।

१ परेम का पीछा करो और आतमीक दान की लालसा रक्खो
२ नीज करके आगम कहने की। कयोंकी जो कोइ भाखा बोलता
है सो मनुख्यन से नहीं परंतु इसर से बोलता है कयोंकी कोइ
नहीं समझता यदपी वुह आतमा में गुपत भेद बोलता है।
३ और जो कोइ आगम की बातें कहता है सो बातों से मनुख्यन
४ को सुधारता और बोध करता और संतोख्य देता है। और
जो कोइ कीसी भाखा में बारता करता है सो अपने को सुधारता
है परंतु जो कोइ आगम की बातें कहता है मंडली को सुधारता
५ है। मैं चाहता हूं की तुम लोग सब के सब बोलीयां बोलो
परंतु नीज करके की आगम की बातें कहो कयोंकी जो बोलीयां
बोलता है यदी वुह मंडली के सुधारने के लीये अरथ न करे
६ तो वुह जो आगम की बातें कहता है उस से बड़ा है। अब
हे भाइयो जो मैं तुमहारे पास बोलयां बोलते हुए आवता
और तुमहों से खोल के अथवा समझा के अथवा आगम की
बातें कहके अथवा उपदेस से न बोलता तो मुझ से तुमहें
७ कया लाभ होता। सो ऐसी नीरजीव बसतें जीन से सबद
नीकलते हैं जैसे तूरही अथवा बीन जो उनके सबद बेवरा के
संग न होवें तो कयोंकर जाना जायगा की कया फुंका अथवा
८ कया बजाया जाता है। और जो नरसींघा अनरथ सबद करे
९ तो युध के लीये कौन लैस होगा। सो वैसे ही जो तुम लोग

भी जीभा से जैसे व्रयन जो सहज से समझे जायें उयानन न करो तो कयोंकन जाना जायगा की कया कहा गया कयोंकी
१० तुम लोग व्रयान से व्रानता करोगे। जगत में नाना परकार
११ की भाप्पा हैं और कोइ उन में से अनथ हीन नहीं। तथापी जो वुह भाप्पा मुझे न आती हो तो व्रकता के आगे मैं मुढ
१२ रहुंगा और व्रकता मेरे आगे मुढ़। सो तुम लोग भी जैसा की आतमीक दान के अभीलासी हो तो मंडली के सुधारने के
१३ लीये ढुंढ़ो को तुमहें अधीक व्रढ़ती होय। इस कारन जो कोइ अनजान भाप्पा में व्रोलता है सो परारथना करे की अनथ भी
१४ कर सके। कयोंकी जो मैं कीसी अनजान भाप्पा में परारथना करुं तो मेरा आतमा परारथना करता है परंतु मेरी व्रुध
१५ नीसफल है। सो कया है आतमा से परारथना करुंगा और व्रुध से भी परारथना करुंगा और आतमा से भजन गाउंगा
१६ और व्रुध से भी गाउंगा। और जो तु आतमा से आसीस कहे तो वुह जो अलप पद रप्पता है तेरे धंनव्राद में आमीन
कीस रीत से कहेगा कयोंकी जो कुछ तु कहता है वुह नहीं
१७ समझता। कयोंकी तु अछी रीत से धंन कहता है ठीक परंतु
१८ दुसरा नहीं सुधारा जाता। मैं अपने इसर का धंन मानता
१९ हुं की मैं तुम सभों से अधीक भाप्पा व्रोलता हुं। परंतु मैं मंडली में पांच व्रातें अपनी व्रुध से व्रोलने को अधीक याहता हुं जीसतें औरों को सीप्पाउं की दस सहसर व्रातें कीसी
२० अनजान भाप्पा में व्रोलुं। हे भाइयो व्रुध में व्रालक न व्रनो
२१ परंतु व्रुराइ में व्रालक व्रनो पर व्रुध में तरुन होओ। व्रैवसथा में लीप्पा है की मैं आन व्रोली और आन होठों से इन लोगों से व्रोलुंगा तथापी परभु कहता है की वे मेरा न सुनेंगे।
२२ सो व्रोलीयां व्रीसवासीयों के लीये नहीं परंत अव्रीसवासीयों के लीये चीनह हैं परंतु आगम कहना अव्रीसवासीयों के लीये
२३ नहीं परंतु व्रीसवासीयों के लीये है। सो जो समसत मंडली

एकठे होके एक सथान में आवें और सब के सब भाष्पा बोलें और अपढ़ा अथवा अबीसवासी उन में आवें तो कया वे न
२४ कहेंगे की तुम लोग बौड़हे हो। परंतु जो सब उपदेस करें और कोइ अबीसवासी अथवा अपढ़ा भीतर आ जाय तो वुह हर एक से परबोध कीया जायगा और वुह हर एक से बीयार
२५ कीया जायगा। और यूं उसके मन के भेद परगट होंगे तब वुह औंधा गीर के इसर को दंडवत करेगा और कहेगा की
२६ इसर सच मुच तुमहारे मध में है। सो हे भाइयो कया है की जब तुम लोग एकठा आवते हो हर एक तुमहों में भजन अथवा कोइ उपदेस अथवा कोइ भाष्पा अथवा परकासीत अथवा कोइ अरथ रप्पता है सो याहीये की हरएक बसतु सुधारने
२७ के लीये होवे। जो कोइ कीसी भाष्पा में बोले तो दो और अतयंत तीन एक एक करके बोले और एक जन अरथ करे।
२८ पर यदी कोइ अरथ करनीहार न होवे तो वुह मंडली में
२९ युपका रहे और अपने इसर के संग बोले। सो दो अथवा
३० तीन आगमगयानी बोलें अरु और लोग बीयार करें। परंतु यदी दुसरे पर जो बैठा है कुछ प्पुल जावे तो पहीला युपका
३१ रहे। कयोंकी तुम सबके सब एक एक करके आगम की बात
३२ कह सको की सब सीप्पें और सब सांत पावें। कयोंकी आगम
३३ गयानीयों के आतमा आगमगयानीयों के बस में हैं। इसर गड़ बड़ से परसंन नहीं परंतु मीलाप से परसंन है जैसा की
३४ संतन की समसत मंडलीयों में है। तुमहारी इसतीरी लोग मंडली में युप याप रहें कयोंकी उनहें बोलने की अगया नहीं
३५ परंतु आधीन रहने की अगया की गइ है। और जो वे सीप्पा याहें तो घर में अपने पती से पुछें कयोंकी लाज है की इसतीरी
३६ मंडली में बोलें। कया इसर की बात तुमहों में से नीकली
३७ अथवा केवल तुमहीं लों पहुंयी। जो कोइ अपने को आगम गयानी अथवा आतमीक जाने तो वुह उन बसतुन को जो मैं

३८ तुमहें सौप्पता ऊं मान लेवे की पनभु की अगग्रा हैं। पनंतु
३९ जो कोइ अगग्रान होय्र तो होने दे। सो हे भाइयो आगम
की वात कहने की लालसा नप्पो पनंतु भाप्पा वोलने से मत
४० वनजो। औान सानी वातें सुडौल औान वौंच से होवें।

१५ पंद्नहवां पनव।

१ अव हे भाइयो मैं तुमहें उस मंगल समायान को जनावता
ऊं जो मैं ने तुमहें उपदेस कीया था तुमहों ने पाया भी औान
२ जीन में ठहने हो। जीन से तुम लोग वय भी गये हो यदी
तुम लोग मेने कीये ऊप्रे उपदेस को समनन कनो जो तुमहाना
३ वौसवास लावना वयनथ न होवे। कयोंकी मैं ने तुमहें पहीले
सोंपा जो मैं ने भी पाया की मसीह लीप्पे ऊप्रे के समान हमाने
४ पापों के लीये मुआ। औान की गाडा गया औान की तीसने
५ दीन लीप्पे ऊप्रे के समान जी उठा। औान की काफ़ा से फेन
६ उन वानहों से देप्पा गया। उसके पीछे जो पांय सौ भाइ से
अयीक थे प्रेक साथ उनसे देप्पा गया जीन में अयीक भाग
७ अव लों हैं पनंतु कइ प्रेक सो गये। फेन वुह याकुव से देप्पा
८ गया फेन समसत पनेनीतों से। औान सवके सव पीछे मुह से
९ भी देप्पा गया जो असमय में उतपंन ऊआ। कयोंकी मैं
समसत पनेनीतों में अतयंत छोटा ऊं औान जोग नहीं ऊं की
पनेनीत कहाउं इस कानन की मैं ने इसन की मंडली को संताया।
१० पनंतु इसन के अनुगीनह से ऊं जो ऊं औान उसका अनुगीनह
जो मुह पन ऊआ सो अकानथ न ऊआ पनंतु मैं ने उन सभों
से अयीक पनीसनम कीया तथापी मैं ने नहीं पनंतु इसन के
११ अनुगीनह ने जो मेने संग था। सो कया मैं कया वे प्रैसा उपदेस
१२ कनते हैं औान तुम लोग वैसाही वीसवास लाये हो। पनंतु
जो उपदेस कीया गया है की मसीह मीनतकन में से जी उठा तो
तुमहों में कीतने कयों कहते हैं की मीनतकन का पुनुतथान

१३ नहीं है। कय़ोंकी जो मीनतकन का पुननुतथान नहीं है
१४ तो मसीह भी फेन नहीं उठा। औान जो मसीह नहीं उठा
तो हमाना उपदेस व्य़नथ है औान तुमहाना व्रीसवास भी
१५ व्य़नथ। हां हम इसन के झूठे साप्पी ठहने कय़ोंकी हम ने
इसन के वीय़े साप्पी दी है की उसने मसीह को उठाय़ा है जो
१६ मीनतक नहीं उठते तो उसने उस का भी नहीं उठाय़ा। कय़ों-
की जो मीनतक नहीं उठते तो मसी भी नहीं उठाय़ा गय़ा।
१७ औान जो मसीह न उठाय़ा गय़ा तो तुमहाना व्रीसवास मीथय़ा
१८ औान तुम लोग अव्र लों अपने पाप में पड़े हो। तव्र वे भी जो
१९ मसीह में होके सो गय़े हैं नसट ऊए। जो हम लोग केवल इसी
जगत में मसीह से आसा नप्पें तो समसत मनुप्पन से अधीक
२० हमाना दुनभाग है। पनंतु अव्र मसीह तो मीनतकन में से
२१ उठा है औान उन में जो सो गय़े हैं पहीला फल ऊआ। कय़ोंकी
जव्र मनुप्प से मीनतु है तो मनुप्प ही से मीनतकन का पुननुतथान
२२ भी है। कय़ोंकी जैसा आदम में सव्र कोइ मनते हैं वैसाही
२३ मसीह में सव्र कोइ जीलाय़े जाय़ेंगे। पनंतु हन एक अपनी
अपनी दसा में पहीला फल मसीह फेन वे जो मसीह के हैं
२४ उसके आय़े पन। तव्र अंत होगा जव्र वुह नाज इसन को जो
पीता है सौंप देगा जव्र सानी पनभुता औान समसत पनाकनम
२५ औान सामनथ को नास कनेगा। कय़ोंकी जव्र लों वुह समसत
सतनुन को अपने पांव के तले न कने अवेस है की वुह नाज
२६ कने। मीनतु भी जो पीछला सतनु है नसट होगा।
२७ कय़ोंकी उसने समसत व्रसतें उसके पांव तले कीय़ां औान जव्र वुह
कहता है की समसत व्रसतें उसके व्रस में ऊइं तो पनगट है
की एक वही नहगय़ा जीसने सव्र कुछ उसके व्रस में कन दीय़ा।
२८ औान जव्र सव्र कुछ उसके व्रस में कीय़ा जाय़गा तव्र पुतन आप
उसके जीसने समसत व्रसतें उसके व्रस में कीय़ां व्रस में होगा
२९ की इसन सव्र में सव्र होवे। नहीं तो वे जो मीनतकन को

संतो सनान पावते हैं क्या करेंगे जो मीनतक न उठे तो क्यों
३० मीनतकन की संतो सनान पावते हैं। श्रीन परंन हम सब
३१ क्यों हन घडी जीजोप्पीम में हैं। मुझे अपनी उस बड़ाइ की
सें जो हमारे पनभु मसीह यसु में है मैं पनती दीन मनता
३२ ऊं। जो मनुप्यन की नाइं मैं ч ‡ सस में वनैले पसुन के संग
लड़ा तो मुझे क्या परल है जो मीनतक न उठें आओ प्पावें
३३ पीवें की कलके दीन मरेंगे। छल न प्पाओ वुनी संगत अच्छे
३४ सभाव को वीगाड़ती है। घरम के लीये जागो श्रीन पाप न
करो क्योंकी कीतनों में इसन का गयान नहीं मैं यह तुमानी
३५ लज्जा के लीये कहता ऊं। पनंतु कोइ कहे की मीनतक कीस
३६ नीत से उठते हैं श्रीन कीस देह से आवते हैं। हे वेसमुझ
जो तु वोता है यदी वुह न मरे तो कभी जीलाइ न जायगी।
३७ श्रीन जो कुछ तु वोता है वुह देह नहीं वोता जो होयेगा
पनंतु नीना प्रेक वीज है याहे गोऊं अथवा श्रीन कुछ होवे।
३८ पनंतु इसन अपनी इच्छा के समान उसको प्रेक देह देता है
३९ श्रीन हन प्रेक वीज को अपना नीज देह। समसत सनीन
प्रेकही नीत का नहीं है पनंतु मनुप्पन का सनीन भींन है पसुन
४० का भींन मछलीयों का भींन है पंछीयों का भींन। सनगीय
के भी सनीन हैं श्रीन पानथीव के भी हैं पनंतु सनगीय का तेज
४१ श्रीय है श्रीन पानथीव का तेज श्रीन। सुनज का तेज श्रीन
है यंदनमा का तेज श्रीन तानों का तेज श्रीन है क्योंकी तानों
४२ के तेज भींन भींन हैं। सो मीनतकन का पुननुतथान प्रैसाही
है वुह सड़ाहट में वोया जाता है श्रीन असड़ाहट में उठाया
४३ जाता है। अनादनता में वोया जाता है श्रीन प्रैसनय में
उठाया जाता है नीनवलता में वोया जाता है पनाकनम में
४४ उठाया जाता है। जंतु का देह वोया जाता है श्रीन आतमीक
देह उठाता जाता है प्रेक जंतु का देह है श्रीन प्रेक आतमीक
४५ देह। श्रीन यु लीप्पा है की पहीला पुनुप्प आदम जीवता

४६ पनानो ऊआ और पीछला आदम जीव दाता आतमा। तथापी आतमीक पहीले न था पनंतु वुह जो जंतु का है और उसके
४७ पीछे आतमीक। पहीला मनुष्य पीनथीवी से पानथीव ऊआ
४८ दुसना मनष्य सनग से पनभु है। जैसे पानथीव वैसे वे भी जो पानथीव हैं और जैसा सनगीय़ वैसे वे भी जो सनगीय़ हैं।
४९ और जैसा की हमों ने पानथीव का सनुप पाय़ा है सनगीय़ का
५० भी सनुप पावेंगे। हे भाइओ मैं य़ह कहता ऊं की देह और नुधीन इसन के नाज के अधीकानी नहीं हो सकते और न
५१ सड़ाहट असड़ाहट का अधीकानी हो सकता है। देष्पो मैं तुमहें गुपत की एक व्रात कहता ऊं की हम सव्रके सव्र न सोवेंगे
५२ पनंतु सव्रके सव्र व्रदले जाय़ेंगे। एक पल में एक पलक में पीछला सुन फुंकते ऊए सुन फुंका जाय़गा और मीनतक असड़नीहान उठाय़े जाय़ेंगे और हम लोग व्रदले जाय़ेंगे।
५३ कय़ोंकी याहीय़े की य़ह सड़नीहान असड़ाहट को पहीन ले
५४ और य़ह मननीहान अमीनत को पहीन ले। सो जव्र य़ह सड़नीहान असड़नीहान को और य़ह मननीहान अमीनत को पहीन चुकेगा तव्र वुह व्रात जो लीष्पी है पुनी होगी की जै ने
५५ मीनतु को नींगल लीय़ा। हे मीनतु तेना डंक कहां है और हे
५६ समाध तेना जै कहां नहा। मीनतु का डंक पाप है और
५७ पाप का व्रल व्रैवसथा है। पनंतु धंन इसन को जो हमें हमाने
५८ पनभु य़सु मसीह के कानन से जै देता है। सो हे मेने पय़ाने भाइय़ो तुम लोग सथीन और अचल होओ और इसन के कानज में सदा लवलीन नहो कय़ोंकी तुम जानते हो की तुमहाना पनीसनम पनभु में अकानथ नहीं है।

१६ सोलहवां पनव्र।

१ अव्र व्रेहनी के कानन जो संतन के लीय़े है जैसा मैं ने गलतीय़ः की मंडलीय़ों को अगय़ा की है वैसाही तुमलोग कनो।

२ हर अठवारे के पहीले दीन तुमहों में हर ऐक अपने परापत के समान ऐकठा करके अपने पास रष्प छोड़े की जव्र मैं आउं
३ ते। व्रेहरी में अव्रेर न होवे। और मैं आके उनहीं के। ओर से जीन के। तुम लोग अपनी पतरी से ठहराओगे तुमहारे दान
४ य्रुरोसलीम में पञ्जयावने को भेजुंगा। और जो मेरा भी
५ जाना उयीत होय्र ते। वे मेरे संग जाय्रेंगे। कय्रोंकी मैं मकदुनीय्रः में होके नीकलुंगा कय्रोंकी मैं मकदुनीय्रः में होके
६ जाउंगा तव्र मैं तुमहारे पास आउंगा। कय्रा जानें मैं तुमहारे पास कुछ दीन ठहरुं हां जाड़ा भी काटुं की तुम लोग मुझे
७ आगे के। व्रीदा करो जीधर मैं जाने याहुं। कय्रोंकी मैं अव्रकी जाते ज्ञऐ तुमहों को न देष्पुंगा परंतु जो इसर याहे
८ ते। आसा रष्पता ज्ञं की कुछ दीन तुमहारे संग रज्ञं। और मैं
९ पयासवें के परव्र लों अफसस में रज्ञंगा। कय्रोंकी ऐक व्रड़ा दुवार जो गुनकारी है मेरे लीये ष्पुला है और व्रैरी व्रज्ञत से
१० हैं। और जो तीमताउस आवे ते। देष्पो की वुह तुमहारे पास नीरभय्र से रहे कय्रोंकी वुह मेरे समान परभु का कारज
११ करता है। कोइ उसकी अवगय्रा न करे परंतु उसको कुसल से इधर के। व्रीदा कीजीय्रो की मेरे पास आवे कय्रोंकी मैं उसकी
१२ व्राट जोहता ज्ञं की भाइय्रों के संग आवे। रहा भाइ अपलुस सो मैं ने उसकी व्रज्ञत व्रीनती की, की तुमहारे पास भाइय्रों के संग जाय्र तथापी उसकी इछा तनीक न थी की अव्रकी जाय्र
१३ परंतु जो अवकास होगा ते। वुह आ नीकलेगा। जागते रहो
१४ व्रीसवास में सथीर रहो पुरुष्पारथ करो व्रलवान होओ। और
१५ तुमहारे समसत कारज परेम के संग होय्रें। अव्र हे भाइय्रो तुम लोग ते। इसतीफानस के घराने को जानते हो की वुह अष्पाइय्रः का पहीला फल है और वे सव्र संतन की सेवा करने
१६ को सीध रहे हैं। मैं तुमहारी व्रीनती करता ज्ञं की तुमलोग ऐसों के और हर ऐक के जो कारज कररीहार है आधीन

१७ होओ। और मैं इसतीफानास फरनतुनातुस और अप्पायकस के आवने से आनंद ऊं कयोंकी उनहों ने तुमहानी घटती को
१८ भन दीया। कयोंकी उनहों ने मेने और तमहाने आतमा
१९ को संतुसट कीया इस लीये तुम लोग ऐसों को मानो। और आसीया की समसत मंडली तुमहें नमसकान कहती हैं अकला और पनसकला उस मंडली समेत जो उनके घन में हैं तुमहें
२० पनभु में बऊत बऊत नमसकान कहते हैं। समसत भाइ तमहें नमसकान कहते हैं सो तुम लोग पवीतन चुमा से आपुस
२१ में नमसकान कनो। अय पुलुस का नमसकान अपनेही
२२ हाथ से। जो कोइ जन पनभु यसु मसीह पन पनेम न नख्खे
२३ वुह सनापीत होवे पनभु आता है। पनभु यसु मसीह का
२४ अनुगीनह तुमहों पन होवे। मेना पनेम तुमहाने संग यसु मसीह में होवे आमीन।

पुलुस की दुसनी पतनी कनंतीग्रों को

---

१ पहीला पनब्र।

१ पुलुस के जो इसन की इछा से ग्रसु मसीह का पनेनीत है ग्रोन ज्ञाइ तीमताउस के ग्रोन से इसन की मंडली को जो कनोंतस में है ग्रोन समसत संतन को जो समसत ग्रप्पाग्र: में

२ हैं। ग्रनुगीनह ग्रोन सांत हमाने पीता इसन ग्रोन पनभु

३ ग्रसु मसीह के ग्रोन से होवे। घंन इसन ग्रोन हमाने पनभु ग्रसु मसीह के पीता को जो दग्रा का पीता ग्रोन समसत सांत

४ का इसन है। वुह हमाने समसत कलेस में हमें धीनज देता है की हम उनहों को जो कीसी कलेस में हैं उसी धीनज के कानन से जो हम ग्राप इसन से धीनज पावते हैं धीनज दे

५ सकें। कग्रोंकी जैसे मसीह का दुप्प हम में व्रढ़ता है वैसा

६ हमाना सांत ज्ञी मसीह के कानन से व्रढ़ता है। कग्रोंकी जो हम लोग दुप्प पावते हैं तो तुमहाने सांत ग्रोन उघान के कानन जो हमाने उनहों दुप्पों को जो हम पावते हैं संतोप्प से सहने से सीघ होता है ग्रथवा जो हम सांत पावते हैं तो तुमहाने

७ सांत ग्रोन उघान के लीग्रे। ग्रोन हमानी ग्रासा तुमहाने व्रोप्पै में दीनढ़ है ग्रह जानके की जैसा तुम लोग कसटों में

८ साहीी हो वैसाही सांत में ज्ञी होग्रोगे। हे ज्ञाइग्रो हम नहीं चाहते की तुम लोग उस कलेस से जो ग्रासीग्रा में हमों पन

पड़ा अगयान नहो की हम वे पतीमान दव गये यहां लों की
९ हम जीवन से भी नीनास ऊपे। पतंतु हमों ने अपने ही
में मीनतु की अगया पाइ जीसतें हम लोग अपने ही भनोसा
१० न नप्यें पतंतु इसन का जो मीनतकन को जीलावता है। उसने
हमको ऐसी महा मीनतु से व्रयाया औान व्रयावता है उस पन
११ हमाना भनोसा है की वुह आगे को भी व्रयावेगा। तुमलोग
भी मीलके पनानथना से हमाने सहायक ऊपे की वुह दान जो
व्रऊत से लोगो के कानन से हमों को मीला व्रऊत से लोगों से
१२ हमाने लीये सतुत की जाय। कयोंकी हमाने मन की साप्पी
हमाना आनद कनना है की हमने सीधाइ से औान इसन की
सयाइ से न की सानीनीक वुध से पतंतु इसन के अनुगीनह से
जगत में औान नोज कनके तुमहाने समीप अपना नीनवाह
१३ कीया। कयोंकी हम दुसनी व्रातें नहीं पतंतु वही व्रातें तुमहें
लीप्पते हैं जीनहें तुम लोग जानते हो औान मानते हो औान
१४ मैं आसा नप्पता ऊं की अंत लों मानोगे। जैसा की तुमहों ने
हमें थोड़ा सा माना है की हम पनभु यसु के दीन तुमहाना
१५ आनंद कनना हैं जैसा तुम सव्र भी हमाने हो। औान मैं ने
इसी भनोसा से इछा की, की मैं पहीले तुमहाने पास आउं की
१६ तुम लोग दुसना पदानथ पाओ। औान तुमहों में होके मकदु-
नीयः को जाउं औान मकदुनीयः से फेन तुमहाने पास आउं
औान अपनी यातना में तुमहों से व्रऊदीयः को औान पऊंयाया
१७ जाउं। सो जव्र मैं ने यह इछा की तो कया मैं ने हलुकापन
की अथवा की जो इछा मैं कनता ऊं कया मैं सनीन की नीत
१८ पन कनता ऊं की मुह से हां हां औान नहीं नहीं होवे। सये
इसन की सों हमानी व्रात तुमहों से हां औान नहीं न थी।
१९ कयोंकी इसन का पुतन यसु मसीह जो हमों से अनथात मुह से
औान सलवानीस से औान तीमताउस से तुमहों में उपदेस
कीया गया सो हां औान नहीं न था पतंतु उस में हां था।

२० कय़ोंकी इुसन की समसत पनतीगय़ा उस में हां ग्रैान उस में
२१ ग्रामीन हैं की हमों से इुसन को व़डाइु की जाय़। ग्रव़ वुह
जो हम को तुमहाने संग मसीह में सथीन कनता है ग्रैान
२२ हमको ग्रभीसेक कीय़ा इुसन है। जीसने हमों पन छाप भी
कीय़ा है ग्रैान ग्रातमा को हमाने ग्रंत: कनन में व़य़ाना दीय़ा।
२३ पनंतु मैं इुसन को ग्रपने ग्रातमा पन साप्पी लावता ङं की मैं
तुमहों पन छमा कनने को ग्रव़ लों कनंतीस में नहीं ग्राय़ा।
२४ इुस कानन नहीं की हम तुमहाने व़ीसवास पन कुछ पनभुता
नप्पते हैं पनंतु तुमहाने ग्रानंद के सहाय़क हैं कय़ोंकी व़ीसवास
से तुम लोग प्पड़े हो।

२ दुसना पनव़।

१ पनंतु मैं ने ग्रपने मन में य़ह ठाना की मैं तुमहाने पास
२ फीन के उदासीन न ग्राउं। कय़ोंकी जो मैं तुमहें उदासीन
कनुं तो कोन है जो मुझे हनसीत कनता है पनंतु वही जो
३ मुझ से उदास कीय़ा गय़ा। ग्रैान मैं ने तुमहों को य़ुं लीप्पा न
हो की जव़ मैं ग्राउं मैं उनहों के कानन उदासी पाउं जीस से
उयीत है की हनसीत होउं तुम सभों के व़ीप्पै में नीसयय़
४ नप्प के की मेना हनस तुम सभों का है। कय़ोंकी मैं ने व़ड़े
कसट ग्रैान मन के सोक से व़ङत से ग्रांसु व़हा व़हा के तुमहें
लीप्पा न इुस लीय़े की तुम लोग उदास कीय़े जाग्रो पनंतु की
तुम लोग मेने उस पनेम की व़ढ़ती को जानो जो मुझे तुमहों
५ से है। ग्रैान जो कीसी ने उदास कनाय़ा तो उसने केवल मुझी
को थोड़ा उदास कीय़ा की मैं तुम सभों को ग्रधीक व़ाझ न
६ देउ। ग्रैसे मनुप्प के लीय़े य़ही दणट जो व़ङतों से कीय़ा गय़ा
७ व़स है। सो ग्रव़ उस से उलटा लीज कनके उस पन छमा कनो
ग्रैान सांत देग्रो ग्रैसा न होवे की ग्रैसे जन ग्रतय़ंत सोक से
८ नीगले जाय़ें। इुस कानन मैं तुमहों से य़ह व़ीनती कनता ङं

९ बी तुम बोग उस पन अपने पनेम बो सथीन कनो। कय़्रोंकी मैं ने इस कानन लीप्या है की मैं तुमहानी पनीछा पाउं की
१० तुम बोग सानी व्रातों में अघीन हो की नहीं। जीस बो तुम बोग कुछ छमा कनो मैं भी कनता ऊं चैान जो मैं कीसी बो कुछ छमा कनुं कोइ न हो तो तुमहाने कानन से मसीह की
११ संती होकन छमा कनता ऊं। न होवे की सैतान हम से कुछ वाना पावे कय़्रोंकी हम उसकी जुगतों से अगय़्रान नहीं हैं।
१२ चैान जव्र मैं मसीह का मंगल समाय़्रान देने को तनवास में आय़्रा चैान पनभु के चोन से प्रेक दुवान मेने लीय़्रे प्पुल गय़्रा।
१३ मेने मन में चैन न था इस कानन की मैं ने अपने भाइ तीतस बो वहां न पाय़्रा पनंतु उनहों से व्रीदा होकन वहां से मकदु-
१४ नीय़्रः बो गय़्रा। अव्र घंन इसन बो जो मसीह में हम बो सव्रनदा जै देता है चैान अपने गय़्रान के गंघ बो हम से हन
१५ प्रेक सथान में पनगट कनता है। कय़्रोंकी हम इसन के आगे उनके लीय़्रे जो व्रयाय़्रे जाते हैं चैान उनके लीय़्रे जो नसट
१६ होते हैं मसीह के सुगंघ हैं। कीतनों बो मीनतु के लीय़्रे मीनतु के गंघ हैं चैान कीतनों बो जीवन के लीय़्रे जीवन के
१७ चैान कैान इन व्रातों के जोग है। कय़्रोंकी हम व्रऊतों के समान इसन के व्रयन में मीलैानी नहीं कनते पनंतु सयाइ से पनंतु जैसे इसन की दीनीसट में मसीह में व्रोलते हैं।

३ तीसना पनव्र।

१ कय़्रा हम ने अपनी सनाहना कनवाना फेन आनंभ कीय़्रा है चैान कय़्रा हम कइ प्रेक के समान चाघीन हैं की सनाहने का पतन तुमहाने पास लावें अथवा तुमहाने सनाहने का पतन ले
२ जावें। तुम बोग हमाने पतन हो जो हमाने अंतःकननों में लीप्पे गय़्रे हो चैान समसत मनुप्पन से जाने गय़्रे चोन पढ़े गय़्रे
३ हो। की पनगट काय़्रे गय़्रे मसीह के पतन हो जो हमानी

2 Karantion ko.

सेवकाइ से है जो मस से नहीं पर्नतु जीवते इसन के आतमा
से पथन की पटनीयों पन नहीं पनंतु अंनतःकनन के मांस की
४ पटनीयों पन लीप्पा है। औान हम मसीह के औान से इसन
५ पन ऐसा भनोसा नप्पते हैं। न की हम आप से सामनथी
हैं की आप से कीसी वसतु का सोय कनें पनंतु हमाना सामनथ
६ इसन से है। उसने हमको नये नयम का सामनथी सेवक भी
वनाया अक्छन का नहीं पनंतु आतमा का कयोंकी अक्छन वधन
७ कनता है आतमा जीलावता है। कयोंकी जो मीननु की सेवा
पथनों पन ल्पीदे ह्ऐ अनुनों में तेजमय थी यहां लों की
इसनाइल के संतान मुसा के सनुप पन उस वोन्नव के कानन से
८ जो उसके मुंह पन था औान नासमान था ताक न सके। तो
आतमा की सेवा कीतना अधीक कयोंकन तेजमय न होगी।
९ औान जो दोप्प दायक सेवा तेजमय है तो धनम की सेवा का
१० तेज कीतना अधीक होगा। कयोंकी वुह जो तेजमय ह्आ
इस लगाव से तेज न नप्पता था उस तेज के कानन से जो
११ अधीक था। औान जो लोप होनहानी वसतु तेजमय थी तो
१२ वुह जो सथीन है कीतना अधीक तेजमय है। सो हम ऐसी
१३ आसा नप्पके वऋत प्पोलके वोलते हैं। औान मुसा के समान
नहीं जीसने अपने मुंह पन घुंघट डाला की इसनाइल के संतान
१४ उस लोप होनीहानी वात के अंत को न देप्पें। पनंत उनकी वुध
अंधी हो गइ कयोंकी अव लों वुह घुंघट पुनाने नीयम के पढ़ने
१५ में अलग न कीया गया वुह मसीह में अलग कीया गया। पन
आजके दीन लों जव मुसा पढ़ा जाता है वुह घुंघट उनके मन
१६ पन पड़ा नहता है। पनंतु जव वुह पनभु के औान फीनेगा तव
१७ वुह घुंघट अलग कीया जायगा। अव पनभु वही आतमा है
१८ औान जहां कहीं पनभु का आतमा है वहीं मोप्प है। औान हम
सव वीन घुंघट पनभु के तेज को दनपन में देप्प देप्प के उसके
नुप में तेज से तेज में वदलते जाते हैं जैसा पनभु के आतमा से।

४ चौथा पतर।

१ सो हम उस की दया से यह सेवकाई पाके उदास नहीं
२ होते। परंतु हम ने लाज के गुपत कारजन को तयाग कीया
और छल के ब्रेवहार पर नहीं चलते और ईसर के बचन में
कपट नहीं करते परंत सचाई को परगट करके हर एक मनुष्य
३ के मन में ईसर के सनमुख्य अपने को सराहते हैं। परंतु जो
हमारा मंगल समाचार गुपत होवे तो उनहीं के लीये जो
४ नसट होते हैं गुपत है। की इस जगत के ईसर ने उनकी बुध
को जो अबीसवासी हैं अंधी कर दीया है न होवे की मसीह
के जो ईसर की मुरत है तेजमय मंगल समाचार का परकास
५ उनहों पर चमके। कयोंकी हम अपना उपदेस नहीं करते
परंतु मसीह यसु परभु का और हम आप यसु के लीये
६ तुमहारे सेवक हैं। कयोंकी ईसर जीसने परकास को अगया
की, की अंधकार से चमके हमारे अंतःकरन में परकास हुआ
की ईसर के उस तेज को जो यसु मसीह के रुप में है गयान का
७ उंजीआला देवे। कयोंकी हम यह धन मीटी के पातरों में
रख्यते हैं की सामरथ की उतमा ईसर से न की हम से होवे।
८ हम समसत परकार से कसटीत हैं तथापी जंजाल में नहीं
९ घबराहट में हैं परंतु नीरास नहीं। सताए जाते हैं पर
१० अकेले नहीं छोड़े गए गीराए गए पर नसट नहीं हुए। की
हम परभु यसु के मरन को अपने देह में नीत लीये फीरते
११ हैं की यसु का जीवन भी हमारे देह में परगट होय। कयोंकी
हम जो जीते हैं यसु के लीये मीरतु को नीत सौंपे जाते हैं
की यसु का जीवन भी हमारे नासमान देह में परगट होवे।
१२ सो मीरतु हमों में और जीवन तुमहों में परवेस करता है।
१३ हम वही बीसवास का आतमा रख्यते हैं जैसा लीख्या है की मैं
बीसवास लाया और इस लीये मैं बोला हम भी बीसवास लाते

१४ हैं और इसी कारन ब्रोलते हैं। हम जानते हैं की जीसने परभु यसु को जीलाया सो हम को भी यसु से जीलायेगा और
१५ तुमहारे संग अपने संमुष्प करेगा। कयोंकी समसत ब्रसतें तुमहारे कारन है की अनुगरीह उभरता ङआ ब्रङतेरों के धन मानने से इसर के महातम की बधीकाइ के कारन
१६ होय। इस लीये हम उदास नहीं होते परंतु यदपी हमारी ब्राहरी मनुष्पता नास होती है तथापी मानसीक मनुष्पता
१७ परती दीन नवीन होती है। की हमारा हलुक दुष्प जो छन भर के लीये है हमारे लीये कीतना अधीक अनंत महीमा
१८ के भार को उतपंन करता है। जब्र लों हम दीरीस ब्रसत को नहीं देष्पते परंतु उनहों को जो अदीरीस हैं कयोंकी जो ब्रसतें दीरीस हैं थोड़े दीन की हैं परंतु वे जो अदीरीस हैं अनंत हैं।

५ पांचवां परब्र।

१ हम जानते हैं की जो हमारे मीटी के घर का मंदीर उजड़ जावे तो हम इसर का ब्रनाया ङआ एक घर रष्पते हैं जो
२ हाथों से नहीं ब्रना सरब्रदा सरगों में है। कयोंकी हम इस में रहके आहें ष्पींयते हैं और अभीलासी हैं की अपने घर को
३ पहीनलें जो सरग से है। की ऐसे पहीनाए जाके हम नंगे
४ न पाये जायें। कयोंकी जब्र लों हम तंब्रु के मंदीर में हैं ब्रोझीत होके आहें ष्पींयते हैं तौसपर भी अपहीनाए जाने को नहीं याहते हैं परंतु याहते हैं की पहीनाए जायें की मीरतुता
५ जीवन से नींगली जाय। सो जीसने हमको इस कारज के लीये सोच कीया इसर है जीसने हम सभों को अपने आतमा
६ का ब्रयाना भी दीया। इस लीये सरब्रदा साहस रष्पते हैं यह जानके की जब्र लों हम देह में जातरा करते हैं हम परभु
७ से ब्रीयोगी हैं। कयोंकी हम ब्रीसवास से न की दीरीसट से

८ चलते हैं। हम साहस रखते हैं और अधीक चाहते हैं की
९ देह से बीयोगी होवें और परभु के संग साख्यात होवें। इस
कारन हम बड़ी धुन से करते हैं की क्या साख्यात में क्या
१० बीयोग में हम उस से भाये जावें। क्योंकी हम सब को अवेस
है की मसीह के बीयान सथान के आगे खड़े कीये जायें की
हर एक अपने देह में कीये के समान पावे क्या भला क्या
११ बुरा। इस कारन परभु के भय को जान कर हम मनुख्यन
को समझाते हैं परंतु हम इसर पर परगट कीये गये हैं और
मैं आसा भी रखता हूं की तुमहारे मन पर भी परगट कीये
१२ गये हैं। क्योंकी फेर अपनी सराहना तुमहों से नहीं करते
हैं पर तुमहें कारन देते हैं को हमारे कारन से बड़ाइ करो
की तुम लोग उनको उतर दे सको जो परगट में बड़ाइ करते
१३ हैं और अंतः करन में नहीं। क्योंकी जो हम अपने से परे
हैं तो इसर के लीये हैं अथवा जो सगयान हैं तो तुमहारे
१४ कारन हैं। क्योंकी मसीह का परेम हम को खींचे जाता है
जब लों हम यूं बीयान करते हैं की जो एक सब के कारन मुआ
१५ तो सब के सब मरे थे। और वुह सब के कारन मुआ की जो
जीते हैं सो आगे को अपने लीये नहीं जीवें परंतु उसके लीये
१६ जो उनके कारन मुआ और फेर उठा। सो अब से हम कीसी
को सरीर की रीत पर नहीं पहीचानते हैं और यदपी हमने
मसीह को सरीर की रीत पर पहीचाना है तथापी आगे को
१७ यूं नहीं जानते हैं। सो जो कोइ मसीह में है तो वुह नइ
सोरीसट है पुरानी बसतें बीतगइं और देखो सारी बसतें
१८ नइ हुइं। और समसत बसतें इसर से हैं जीसने यसु मसीह
के कारन से हमों को अपने से मीला लीया और मीलाप की
१९ सेवकाइ हमको दी। अरथात की इसर मसीह में होके जगत
को अपने से मीलाप करवाता था की उसने उन के अपराधों
को उन पर न ठहराया और हमों को मीलाप का बचन सौंपा।

२० इस लीये हम मसीह के श्रोर से दूत हैं जैसा की ईसर हमारे श्रोर से तुमहों से बीनती करता है सो हम तुमहों से मसीह की संती बीनती करते हैं की तुम लोग ईसर से मीलाए जाश्रो।
२१ क्योंकी उसने उसको जो पाप को न जानता था हमारी संती पाप ठहराया की हम उसमें ईसर के धरम बनें।

६ छठवां परब।

१ हम संगी सेवक तुमहारी बीनती करते हैं की तुम ईसर के
२ श्रनुग्रीरह को अकारथ न लेश्रो। क्योंकी वुह कहता है की मैं ने ग्रहन कीए ऊए समय में तेरी सुनी श्रोर उधार के दीन में तेरा सहाय कीया देखो ग्रहन करने का समय श्रब
३ है श्रोर देखो उधार का दीन श्रब है। हम कीसी बात में
४ ठोकर नहीं देते की सेवा दोखी न जाय। परंतु आप को हर एक बात में ऐसा सराहते हैं जैसे ईसर के सेवक बक्त संतोख
५ में दुखों में सकेतीयों में जंजालों में। कोड़ों में बंधन में ऊलर
६ में परीस्रमों में जागने में उपवास में। पवीतरता में गयान में संतोख में कोमलता में धरमातमा में नीसकपट परेम में।
७ सयाई की बारी में ईसर के सामरथ में दहीने बाएं धरम के
८ हथीयार से। मान श्रोर अपमान में होके श्रोर सुख्यात श्रोर
९ कुख्यात में होके छलीयों के समान तथापी सया। जैसा अनजाना ऊश्रा तथापी अछी रीत से जाना ऊश्रा जैसा मरते ऊए तथापी देखो हम जीते हैं जैसा ताड़ीत होके तथापी मारे
१० न गये। जैसा उदासीन तथापी सदा आनंद करते हैं जैसा कंगाल तथापी बक्तेरों को धनी करते हैं जैसा बसतु हीन
११ तथापी समसत बसतु रखते हैं। हे करंतीयो हमारे मुंह
१२ तुमहारे लीये खुले हमारे अंतःकरन बढ़ाए गए हैं। तुम लोग हमों में सकेती में नहीं हो परंतु अपनेही मन में सकेती
१३ में हो। इस कारन उसके परतीफल में मैं तुमहों से जैसा

१४ बालकों से कहता हूं तुम भी बढ़ जाओ। अबीसवासीयों के संग असमान नीत से एक जूए में मत जोते जाओ क्योंकी धरम और अधरम से कौनसा मेल है और परकास को
१५ अंधकार से कौनसा मेल है। और मसीह को बलीआल के संग कौनसा मेल है और बीसवासी वा अबीसवासी के संग
१६ कौनसा भाग है। और ईसर के मंदीर को मुरतीन से कौनसा संयोग है क्योंकी तुम लोग जीवते ईसर के मंदीर हो जैसा की ईसर ने कहा है की मैं उनमें रहुंगा और उस में फीरुंगा और मैं उनका ईसर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे।
१७ इस कारन परभु यह कहता है की उनके बीच से नीकल आओ और अलग होओ और अपवीतर बसतु को मत छुओ और मैं
१८ तुम को गरहन करुंगा। और मैं तुमहारा पीता हूंगा और तुम लोग मेरे पुतर और पुतरीयां होगे यह सरब सकतीमान परभु कहाता है।

७ सातवां पत्र।

१ सो हे पीरीय ऐसी परतीगयाओं को पाके आओ अपने को समसत परकार की सरीरीक और आतमीक असुधता से पवीतर
२ करके ईसर के भय से पवीतरता को संपुरन करें। हम को गरहन कर लेओ हमने कीसी पर अंधेर न कीया कीसी को
३ न बीगाड़ा कीसी को न छला। मैं दोष देने के कारन यह नहीं कहता मैं तो आगे कह चुका हूं की तुम लोग हमारे
४ अंतःकरन में हो की तुमहारेही संग जीयें और मरें। बड़े नीरभय की बोली से तुमहों से कहता हूं और तुमहारे बीषै में नीपट बड़ाई करता हूं सांत से भरा हुआ हूं अपने समसत
५ कसटन में मैं अतयंत आनंदीत हूं। क्योंकी जब हम मकदु-नीयः में आये हमारे सरीर को कुछ चैन न था परंतु हम
६ सरबतर दुष पावते थे बाहर लड़ाईयां भीतर भय। परंतु

इसन ने जो उदासीनें का सांत दाता है तीतस के आवने से
७ हमें सांत दी। और केवल उसी के आजाने से नहीं परंतु उस
सांतवन से जीस से उस ने तुमहों से सांत पाइ जब उसने तुमहारी
बड़ी लालसा तुमहारा बीलाप तुमहारा जलन जो मेरे कारन
था हमारे आगे बरनन कीया यहां लों की मैं ने अधीक आनंद
८ कीया। कयोंकी यदपी मैं ने पतरी से तुमहें सोकीत कीया
मैं पछताता नहीं यदपी मैं पछताया कयोंकी मैं देखता ऊं की
९ उसी पतरी ने थोड़े समय लों तुमहें सोकीत कीया। सो अब
मैं आनंद करता ऊं न इस लीये का तुम लोग सोकीत ऊए
परंतु इस लीये की तुम लोग पसयाताप के लीये सोकात ऊए
कयोंकी इसन के लाये सोकीत ऊए सो तुमहों ने हमसे कुछ
१० घटी न उठाइ। कयोंकी इसन के लाये सोक करना उधार
के कारन पसयाताप उतपंन करता है की पछताया न जावे
परंतु जगत के लाये सोक करना मीरतु को उतपंन करता है।
११ कयोंकी देखो इसी बात ने अरथात इसन के लीये तुमहारा
सोकीत होना तुम में कयाही यातनाकी उतपंन की कयाही
बीनती कयाही जलजलाहट कयाहा भय कयाही बड़ी बांछा
कयाही तापीत कीया है कयाही दंड लेना उतपंन कीया है
समसत रीत से तुमहों ने अपने को इसी बात में नीरदोखी
१२ ठहराया। सो जो मैं ने तुमहें लीख्या न उसके कारन जीसने
अंधेर कीया और न उसके कारन जीस पर अंधेर ऊआ परंतु
इस लीये की हमारी चींता तुमहारे लीये इसन के संमुख
१३ तुमहों पर परगट होवे। इस लीये हम ने तुमहारे सांतन से
सांत पाइ और तीतस के आनंद से अतयंत आनंद कीया इस
१४ कारन की उसके आतमा तुम सभों से संतुसट ऊए। सो जो
मैं ने उसके आगे कुछ बड़ाइ की हो मैं लजीत नहीं ऊं परंतु
जैसा सारी बातें हम ने तुमहों से संचाइ से कहीं वैसाही
हमारा बड़ाइ करना जो तीतस के आगे था ठहराया गया।

१५ यहां लों की उसके मन की दया तुमहों पर अतयंत है जब कभी वुह तुम सभों का अगया मानना समरन करता है की तुमहों ने कैसे डरते श्रौर थरथराते उसे गरहन कीया।
१६ इस लीये मैं आनंद करता हूं की हर एक बात में तुमहों पर मेरा भरोसा है।

८ श्राठवां पत्र।

१ श्रौर हे भाइयो हम ईसर के उस अनुग्रीरह को जो मकदुनीय: की मंडलीयों पर कीया गया है तुमहों को जताते हैं।
२ कयोंकर बड़ी परीछा के कलेस में उनके श्रानंद की अधीकाइ ने श्रौर उनके अतयंत कंगालपन ने उनके पुज की बहुताइ
३ को अधीक परगट कीया। यहां लों की मैं साछी देता हूं की सामरथ भर हां सामरथ से अधीक आपही इछा रखते थे।
४ उनहों ने बहुत सी बीनती करके याहा की हम उस दान को
५ लेवें श्रौर संतन की सेवा में संगी होवें। श्रौर यह उनहों ने हमारी श्रासा के समान न कीया परंतु पहीले अपने तइं परभु
६ को सौंपा श्रौर ईसर की इछा से हमों को। यहां लों की हमने तीतस से याहा की जैसा उसने आरंभ कीया था वैसा
७ इस अनुग्रीरह को भी तुमहों में पूरा करे। इस लीये जैसा तुम लोग हर एक में अरथात बीसवास में बयारन में श्रौर गयान में श्रौर समसत जतन में श्रौर हमारे परेम में भरपुर हो वैसाही तुम लोग इस अनुग्रीरह में भी संपुरन होश्रो।
८ मैं अगया से नहीं कहता परंतु श्रौरों के जतन के कारन से
९ जीसतें तुमहारे परेम की सचाइ परगट हो जाय। कयोंकी तुम लोग हमारे परभु यसु मसीह के अनुग्रीरह को जानते हो की यदपी वुह धनी था तथापी वुह तुमहारे कारन कंगाल
१० हुआ की तुमलोग उसके कंगालपन से धनी हो जाश्रो। श्रौर मैं इस बात में मंतर देता हूं कयोंकी यही तुमहारे कारन

जोग है की तुमहों ने केवल कुछ करना आरंभ नहीं कीया
११ परंतु एक वरस आगे से जतन कीया। से अब कारज को
भी संपुरन करो की जैसा तुम लोग इछा करने को लेस थे
१२ वैसाही अपने वीसात के समान संपुरन भी करो। कयोंकी
जो मन की तीयारी पहीले होय तो मनुष्य अपने वीसात के
समान गरहन कीया गया न उसके समान जो उसकी नहीं है।
१३ यह नहीं की औरों पर सुष्य और तुमहों पर दुष्य होवे।
१४ परंतु समता की रीत पर की इस समय में तुमहारी अधीकाइ
उनकी घटती को पुरा करे की उनकी अधीकाइ भी तुमहारी
१५ घटती को पुरा करे जीसतें समता होवे। जैसा लीष्या है की
जीसने बहुत बटोरा उसका कुछ न बढ़ा और जीसने थोड़ा
१६ बटोरा उसका कुछ न घटा। परंतु ईश्वर इसर को जीसने
तुमहारे लीये इस बड़े जतन को तीतस के मन में डाला।
१७ कयोंकी उसने उस बुलाहट को तो गरहन कीया परंतु बहुत
यटक होकर आप अपने मन से तुमहारे पास नीकल गया।
१८ और हमने उसके संग उस भाइ को भेजा जीसकी बड़ाइ मंगल
१९ समाचार में समसत मंडलीयों में है। और केवल इतनाही
नहीं परंतु वुह मंडलीयों से भी ठहराया गया की कृपा में इस
अनुगीरह के साथ हमारे संग रहे जीसकी हमों से उसी परभु
की महीमा के लीये और तुमहारे तीयार मन के लीये सेवा
२० की गइ है। इस से बचके की कोइ इस बहुताइ के लीये
२१ जीसकी सेवा हम से की गइ हम को दोष्य न देवे। हम उन
बसतुन के लीये जो न केवल परभु के आगे परंतु मनुष्यन के
२२ आगे भी भली हैं चींता करते हैं। और हम ने उसके संग
अपने उस भाइ को भेजा जीसे हम ने बहुत सी बातों में
बारंबार परीछा करके परतीत पाया पर अब उस बड़े
बीसवास के कारन से जो तुमहों पर है कीतना अधीक
२३ परतीत पाया। जो कोइ तीतस की पुछे तो वुह मेरा साथी

और तुम्हारे विषय में संगी सेवक है अथवा हमारे और भाइयों के तो वे मंडलीयों के दूत और मसीही के महीमा
१४ हैं। इस कारन तुम लोग अपने प्रेम और हमारी बड़ाइ के प्रमान को जो तुम्हारे कारन है उनको और मंडलीयों को दीखाओ।

९ नवां पत्र।

१ सो अब संतन की सेवा के विषय में मुझे तुम्हें लीखना अवेस
२ नहीं। कयोंकी मैं तुम्हारी तीयारी को जानता हूं जीसके विषय में तुम्हारी बड़ाइ मकदुनीयों के आगे करता हूं की अख्याय: एक बरस आगे लेस था और तुम्हारे तेज ने बहुतेरों
३ को उसकाया। तथापी मैं ने भाइयों को भेजा न होवे की हमारी बड़ाइ तुम्हारे विषय में बयरथ होवे की जैसा मैं ने
४ कहा है तुम सीध हो रहो। कहीं ऐसा न होवे की जो मकदुनी लोग मेरे संग आवें और तुम्हें असीध पावें तुम तो रहे हम
५ इस नसीसयीत बड़ाइ करने से लजीत हो जावें। इस कारन मैं ने भाइयों से बीनती करना अवेस समझा की वे तुम्हारे पास आगे से जावें और तुम्हारे पुन को जो तुम्हें आगे जनाया गया सीध कर रख्खें जीसतें वुह पुन के समान न की कंजुसी के
६ समान होवे। पर यह येत रहे की जो थोड़ा बोता है सो थोड़ा काटेगा और जो बहुताइ से बोता हैं बहुताइ
७ से काटेगा। हर एक अपने मन की इछा के समान करे पछताके अथवा आवेसक से नहीं कयोंकी आनंद से देनहार
८ को इसर पीआर करता है। और इसर तुमहों पर समसत परकार का अनुगीरह बढ़ा सकता है की तुम लोग कीसी बात में कधी घटी न रख्के हर एक भली करनी में बढ जाओ।
९ जैसा लीख्या है की उसने बीथराया है उसने दीनीदनों को
१० दीया है और उसका धरम सरबदा धरा है। सो जो बोवन-

हार को बीज और भोजन के लीये रोटी देता है तुमहारे बोने को देवे और बढ़ावे और तुमहारे धरम का फल अधीक
११ करे। की हर एक बात में धनी होके समसत दानसीलता के
१२ लीये हमारे कारन से ईसर का धंनबाद होता है। कयोंकी सेवा की कीरया केवल संतों के आवेसक को पुरा नहीं करती है परंतु बहुतेरों के ओर से ईसर के लीये धंनबादों में भी
१३ अधीकाई देती है। वे इस सेवा की परीछा के परमान से और इस लीये की तुम लोग मसीह के मंगल समाचार के आधीन हो और तुमहारी दातापन के लीये जो उनहों पर
१४ और सभों पर है ईसर की महीमा करते हैं। और ईसर के उस अतयंत अनुग्रीह के लीये जो तुमहों पर है तुमहारे
१५ लीये बड़ी चाह से पराथना करते हैं। ईसर के अकथ दान के लीये उसका धंनबाद होय।

१० दसवां परब्र।

१ अब मैं पुलुस आपही मसीह की कोमलता और नमरता के कारन से तुमहारी बीनती करता हूं जो साछात में तुमहों में
२ दीन हूं परंतु बीयोग में तुमारे लीये नीडर हूं। परंतु मैं तुमहारी बीनती करता हूं की जब मैं साछात में होउं उस भरोसे से नीडर न होउं जैसा मैं उनहों पर नीडर होने को
३ समझता हूं जो हमारी चाल को सरीरीक समझते हैं। कयोंकी यदपी हम सरीर में चलते हैं तथापी हम सरीर की रीत
४ पर नहीं लड़ते हैं। कयोंकी हमारे जुध के हथीयार सरीरीक नहीं परंतु ईसर के कारन से कोटन के ढाने पर
५ सामरथी हैं। की बीचारों को और हर एक उंची बसतु को जो अपने को ईसर की पहीचान के बीरोध से बढ़ाते हैं ढा देते हैं और हर एक सोच को बंधन में करके मसीह के
६ अगया के बस में लावते हैं। और जब तुमहारा अगया

मानना संपुनन हो जाय़ हम समसत अगय़ा भंग कनने का
७ पलटा लेने को सोघ हैं। कय़ा तुम लोग व्रसतुन की व्राहनी व्राहन को देष्पते हो जो कोसी मनुष्प को नीसयय़ है की वुह आप मसीह का है तो वुह य़ह भी आप से व्रीयान कने की
८ जैसे वुह मसीह का वैसे हम भी मसीह के हैं। कय़ोंकी जो मैं उस पनाकनम के कानन जो पनभु ने हमें सुधानने के लीय़े न तुमहें नसट कनने के लीय़े दीय़ा है कुछ व्रडाइ कनुं मैं
९ लजीत न ऊंगा। जीसतें मैं ऐसा न जाना जाउं जैसा की मैं
१० तुमहों को पतनीय़ों से डनाय़ा याहता ऊं। कय़ोंकी वे कहते हैं की उसकी पतनीय़ां भानी औन व्रलवंत हैं पन उसका
११ देह साष्पात में नीनव्रल औन व्रोली नींदीत। सो ऐसा जन जान नष्पे की जैसे हम व्रयन में पतनीय़ों से व्रीय़ोग में हैं
१२ वैसाही साष्पात में हमाने कनम भी होंगे। कय़ोंकी हमाना य़ह साहस नहीं की अपने को उन में गीनें अथवा अपने को उनसे तुल कनें जो अपने को सनाहते हैं पनंतु वे अपने को आप
१३ से नाप के औन आप से अपने को मोला के व्रुधमान नहीं। पनंतु हम लोग पनीमान से व्राहन व्रडाइ न कनेंगे पन उस पनीमान की नात के समान जो ईसन ने हमें व्रांट दीय़ा है एक पनीमान
१४ जो तुम लों भी पऊंये। कय़ोंकी हम अपने को अधीकाइ से नहीं व्रढ़ावते हैं जैसा की हम तुम लों नहीं पऊंये हैं कय़ोंकी हम तुम
१५ लों भी मसीह के मंगल समायान को ले पऊंये हैं। न व्रे पनीमान से औनों के पनीसनमों से व्रडाइ कनते पनंतु आसा नष्पते हैं की जव्र तुमहाना व्रीसवास अधीक होय़ की हम लोग तुमहों
१६ से अपनी नीत के समान व्रढ़ जाय़ेंगे। की तुमहाने सीवाने से आगे व्रढ़के मंगल समायान पऊंयावें की औनों की सीघ की ऊइ
१७ व्रसतु पन व्रडाइ न कनें। पनंतु वुह जो व्रडाइ कनता है सो
१८ पनभु में व्रडाइ कने। कय़ोंकी वुह गनाह्य नहीं है जो अपने को सनाहता है पनंतु वुह जीसे पनभु सनाहता है।

११ गय़ानहवां पनव्र।

१ हाय़ की तुम लोग मेनी सुनप्पता को तनीक सहो ञौन हां
२ मेनी सहो। कय़ोंकी सुहे तमहाने लीय़े इसनीय़ हल से हल
है कय़ोंकी मैं ने तुमहें संवाना की सती कंनय़ा के समान प्रेकही
३ पती ञनथात मसीह के संसुप्प कनुं। पनंतु मैं डनता ऊं कहीं
प्रेसा न होवे की जैसा सांप ने ञपने छल से हौवा को ठगा
प्रेसाही तुमहाने मन की सुघाइ को जो मसीह में है व्रीगाड़े।
४ कय़ोंकी वुह जो ञावता है जो दुसने य्रसु का उपदेस कने जीस
का हम ने नहीं कीय़ा ञथवा जो तुम लोग कोइ ञौन ञातमा
पावते जीसे तुमहों ने न पाय़ा ञथवा दुसना मंगल समाय़ान
५ जीसे तुमहों ने न माना तो तुमहें सहना भला होता। कय़ोंकी
मैं व्रुहता ऊं की मैं ञतय़ंत व्रड़े पनेनीतों से तनीक घाट न
६ था। कय़ोंकी य़दपी मैं व्रोल याल में ञनानी ऊं तथापी
गय़ान में नहीं पनंतु हम तो हन प्रेक व्रात में तुमहों में पनगट
७ ऊप्रे हैं। ञपने को दीन कनने में की तुमलोग व्रढ़ जाञो कय़ा
मैं ने ञपनाघ कीय़ा इस कानन की मैं ने तुमहें इसन का
८ मंगल समाय़ान सेंत से सुनाय़ा। मैं ने ञौन मंडलीय़ों को
९ लुट लीय़ा की महीनवानी लेके तुमहानी सेवा कनुं। ञौन
साप्पात होके जव्र सुहे पनय़ोजन था मैं ने कीसी पन व्रोह न
दीय़ा कय़ोंकी जो कुछ सुहे घटती थी उन भाइय़ों ने जो
मकदुनीय़ः से ञाय़े थे भन दीय़ा ञौन हन प्रेक व्रात में मैं ने
ञपने को तुमहों पन भान होने से ञलग नप्पा ञौन नप्पुंगा।
१० मसीह की उस सयाइ की सों जो सुह में है ञप्पाय़ः के देसों
११ में सुहे इस व्रड़ाइ से कोइ न नोकगा। कीस कानन कय़ा इस
कानन की मैं तुमहें पीञान नहीं कनता इसन जानता है।
१२ पनंतु मैं जो कनता ऊं सोही कनता नऊंगा की मैं गवं ढुंढ़नी-
हानों से गवं उठा देउं की जीस व्रात में वे व्रड़ाइ कनते हैं

१३ वे हमाने समान पाये जावें। कयोंकी ऐसे झुठे पनेनीत हैं छली कानज कानी हैं वे अपने को मसीह के पनेनीतों के भेस
१४ में व़द्लते हैं। औान कुछ आसयनज नहीं कयोंकी सैतान
१५ आपही पनकास के दुत के भेस में व़द्ल गया। इस कानन जो उसके सेवक भी धनम के सेवकों के भेस में व़द्ल जावें तो कुछ व़डी व़ात नहीं उनका अंत उनके कानजन के समान होगा।
१६ मैं फेन कहता ढ़ूं की कोइ मुझे मुनप्प न समझे नहीं तो मुझे मुनप्प के समान गनहन कनो की मैं भी थोड़ी सी व़ड़ाइ
१७ कनुं। जो कुछ की मैं व़ड़ाइ के भनोसा में कहता ढ़ूं सो पनभु
१८ की नीत पन नहीं पनंतु मुनप्प के समान। व़ढ़ूतेने देह की
१९ नीत पन व़ड़ाइ कनते हैं मैं भी व़ड़ाइ कनुंगा। कयोंकी तुम लोग व़ुधमान होके मुनप्पों को आनंद से सहते हो।
२० कयोंकी जो कोइ तुमहें व़ंधन में लावे जो कोइ तुमहें नींगले अथवा कोइ तुमहों से कुछ ले अथवा कोइ आप को व़ढ़ाके अथवा जो कोइ तुमहाने मुंह पन थपेड़ा मानेतव़ तुम लोग सहते
२१ हो। मैं अनादन के व़ाप्पै में कहता ढ़ूं ऐसा जैसा की हम नीनव़ल हैं तौसपन भी जीस व़ात में कोइ दीनढ़ है तो मैं
२२ मुनप्पता से कहता ढ़ूं की मैं भी दीनढ़ ढ़ूं। कया वे इव़नानी हैं मैं भी ढ़ूं वे इसनाइली हैं मैं भी ढ़ूं वे इव़नाहीम के व़ंस से
२३ हैं मैं भी ढ़ूं। कया वे मसीह के सेवक हैं मैं मुनप्पता से कहता ढ़ूं की मैं अधीक ढ़ूं पनीसनमों में अधीक औान कोड़े खाने में पनीमान से व़ाहन व़ंदीगीनहों में व़ढ़ूत व़ढ़ूत औान
२४ मीनतुन में व़ानंव़ान। यढ़ूदीयों से मैं ने पांच व़ान ऐक कम
२५ चालीस कोड़े खाये। तीन व़ान मैं छड़ीयों से माना गया ऐक व़ान मैं पथनवाह कीया गया तीन व़ान नावतोड़ में पड़ा
२६ ऐक नात दीन गंभीन में काटा। जातना कनने में व़ढ़ूत नदीयों के भै में चोनों के भै में अपने देसीयों के भै में अंदेसीयों के भै में नगन के भै में व़न के भै में समुदन

२७ के स्रमे में झुठे भाइयों के स्रमे में। थकाहट औन कलेस में
जागने में व्रानंव्रान भूप्य में औन पीआस में उपवास में व्रानंव्रान
२८ सीत औन नंगाइ में भी नहा हुं। व्राहन की व्रसतुन से अधीक
समसत मंडलीओं का सोय मुझ को पीनती दीन दव्रावता है।
२९ कौन नीनव्रल है औन मैं नीनव्रल नहीं हुं औन कौन ठोकन
३० प्याता है की मैं नहीं जलता। जो मुझे व्रडाइ कनना अवेस
३१ है तो मैं अपनी दुनव्रलता की व्रसतु में व्रडाइ कनुंगा। इसन
औन हमाने पनभु यसु मसीह का पीता जो नीतयानंद है
३२ जानता है की मैं झुठ नहीं व्रोलता। दमीसक में उस अधक्ष
ने जो आनीतस नाजा के औन से था मुझे पकडने की इछा
३३ से नगन पन चौकी व्रैठालाइ। औन मैं प्पीडकी में से टोकनी
में भीत पन से लटकाया गया औन उसके हाथों से व्रच
नीकला।

१२ व्रानहवां पनव्र।

१ मैं नीसचय जानता हुं की उचीत नहीं की अपनी व्रडाइ
कनुं तथापी मैं पनभु के दनसनों औन आकास व्रानीयों का
२ व्रनतन कनुंगा। चौदह व्रनस व्रीते होंगे की मैं मसीह में ऐक
मनुष्य को जानता था तो सनीन में मैं नहीं जानता अथवा
सनीन से व्राहन मैं नहीं जानता इसन जानता है वहो तीसने
३ सनग लों पहुंचाया गया। हां ऐसे मनुष्य को मैं जानता था
तो सनीन में अथवा सनीन से व्राहन मैं नहीं जानता इसन
४ जानता है। वुह व्रैकुंठ लों पहुंचाया गया औन ऐसी अकथ
५ व्रातें सुनीं जो मनुष्य के उचानन कनने के जोग नहीं। ऐसाही
मनुष्य की मैं व्रडाइ कनुंगा पनंतु अपने पन व्रडाइ न कनुंगा
६ पनंतु केवल अपनी नीनव्रलता पन। कयोंकी जो मैं व्रडाइ
कीया चाहुं मैं मुनप्य न हुंगा कयोंकी मैं सत व्रोलता पनंतु
थमता हुं न होवे की कोइ मुझे उस से जैसा मुझे देप्यता है

७ अथवा जैसा मेरे विषय में सुनता है अधीक समझे। और न होवे की मैं दरशनें की अधीकाई से वे परीमान फुल जाउं मेरे सरीर में एक कांटा दीया गया सैतान का दुत की मुझे
८ घुंसे मारे न होवे की मैं वे परीमान फुल जाउं। इसके लीये मैं ने परभु से तीन बार बीनती की, की वुह मुझ से दुर हो
९ जाय। परंतु उसने मुझे कहा की मेरा अनुग्रह तेरे लीये बस है कयोंकी मेरा बल नीरबलता में सीध होता है इस कारन मैं अपनी नीरबलता में बहुत आनंद से बड़ाई करुंगा
१० जीसतें मसीह का बल मुझ पर ठहरे। सो मैं मसीह के कारन नीरबलता में और नींदा में दरीदरता में संताप जाने में कलेसों में परसन हुं कयोंकी जब मैं नीरबल हुं तब बलवान हुं।
११ मैं बड़ाई करने में मुरष्प बना हुं परंतु तुमहों ने मुझे बरबस करवाया कयोंकी चाहता था की मैं तुमहों से सराहा जाता कयोंकी कीसी बात में मैं अतयंत बड़े परेरीतों से छोटा नहीं
१२ हुं यद्दपी मैं कुछ नहीं। नीसचय परेरीत होने के चीनह तुमहों में समसत संतोष्प और लछन में और आसचरजन
१३ और परभाव के कारजन से परगट हुआ। कयोंकी तुम लोग कौनसी बात में आन आन मंडलीयों से छोटे थे केवल की मैं
१४ तुमहों पर भार न था मेरा यह अपराध छमा करो। देष्पो मैं तीसरे बार तुमहारे पास आवने पर हुं तीसपर भी तुमहों पर भार न हुंगा कयोंकी मैं तमहारा नहीं ढुंढ़ता परंतु तुमहीं को कयोंकी उचीत है की माता पीता पुतरों के लीये
१५ बटोरें न की पुतर माता पीता के लीये। और मैं तुमहारे कारन बहुत आनंद से उठान करुंगा और उठान होजाउंगा यद्दपी मैं जीतना अधीक तुमहें पीआर करता हुं उतना थोड़ा
१६ पीआर हुं। परंतु यही सही की मैं ने तुमहों पर बोझ न दीया तीसपर भी चतुराई करके मैं ने तुमहें छल से पकड़ा।
१७ जीनहों को मैं ने तुमहारे पास भेजा उन में से कीसी से कया

१८ मैं ने तुमहों से कुछ पनापत कीया। मैं ने तीतस से बीनती की श्रौर उसके संग एक भाइ को भेजा ता कया तीतस ने तुमहों से कुछ पनापत कीया कया हम एकही श्रातमा में श्रौर एकही
१९ डग में न यलते थे। परेन कया तुम लोग समझते हो की हम तुमहों से अपना बयाव करते हैं हम इसर के श्रागे मसीह में बोलते हैं पनंतु हे अती पीनीय यह सारी बातें तुमहारे
२० संवारने के लीये हैं। कयोंकी मैं डरता हूं न होवे की मैं श्राके जैसा तुमहें याहता हूं वैसा न पाउं श्रौर मैं तुमहों से ऐसा पाया जाउं जैसा तुम लोग नहीं याहते न होवे की बीवाद श्रौर डाह श्रौर करोध श्रौर झगड़े श्रौर गुपतबाद श्रौर
२१ परसपरुसाहट श्रहंकार श्रौर डुलर होवे। न होवे की जब मैं श्राउं मेरा इसर मुझे तुमहों में श्राधीन करे श्रौर न होवे की मैं उन में से बहुतेरों के कारन जीनहों ने पाप कीया है श्रौर अपनी अपवीतरता श्रौर बेभीयार श्रौर कामाभीलास से जो उनहों ने कीया पसयाताप न कीया सोक करुं।

१३ तेरहवां परब।

१ यह तीसरे बार मैं तुमहारे पास श्रावता हूं दे। अथवा तीन
२ साख्यीयों के मुंह से हर एक बात ठहराइ जायगी। मैं ने तुमहें श्रागे कहा है श्रौर दुसरे बार श्रागे से कहदेता हूं ऐसा जैसा की मैं साख्यात था श्रौर अब बीयागी होके मैं उनहों को जीनहों ने श्रागे पाप कीये श्रौर श्रौर सभों को लीख्यता हूं की
३ जो मैं परेन श्राउं तो न छोडुंगा। जैसा की तुम लोग मुझ में मसीह के कहने का परमान ढुंढ़ते हो जो तुमहारे लीये नीरबल
४ नहीं है परंतु तुमहों में सामरथी है। कयोंकी यदपी वुह नीरबलता से कुरुस पर मारा गया तथापी वुह इसर के परा-करम से जीता है श्रौर हम भी उस में नीरबल हैं पर उसके संग इसर के पराकरम से जो तुमहारे बीख्ये में है जीवेंगे।

५ अपने को जांचो की तुम लोग बीसवास में हे: की नहीं अपने को परखो कया तुम लोग आप को नहीं जानते की यसु मसीह
६ तुमहों में है नहीं तो तुम लोग अछाप्ते हो। पर मैं आसा रखता हूं की तुम लोग जानोगे की हम अछाप्ते नहीं हैं।
७ परंतु मैं ईसर से बीनती करता हूं की तुम लोग कुछ बुराई न करो इस कारन नहीं की हम छाप्ते हुऐ परगट होवें परंतु की तुम लोग भला करो यदपी हम अछाप्ते के समान होवें।
८ कयोंकी हम सत का बीरूध कुछ नहीं कर सकते परंतु सत के
९ कारन। कयोंकी जब नीरबल हैं तब हम लोग परसन हैं और तुम लोग बली हो और हम तुमहारी सीधता याहते हैं।
१० इस लीये मैं बीयोगी होके ये बातें लीख्ता हूं न होवे की मैं साख्यात होके तुमहों पर उस पराकरम के समान जो परभु ने मुझे सुधारने के लीये दीया और ढा देने के लीये नहीं
११ कठोरता करूं। अंत में हे भाइयो कुसल रहो सीध होओ धीरज धरो ऐक मता होके मीले रहो परेम और मीलाप का
१२ ईसर तुमहारे संग रहेगा। ऐक दुसरे का पवीतर युमा लेकर
१३ नमसकार करो। समसत साधु लोग तुमहें नमसकार कहते
१४ हैं। परभु यसु मसीह का अनुगरह और ईसर का परेम और धरमातमा की मीलाप तुम सभों के संग होवे आमीन।

पुलुस की पतनी गलतीओं को

---

१ पहीला पनव्र।

१ पुलुस पनेनीत जो मनुष्य से नहीं न मनुष्य के दुवाना से पनंतु यसु मसीह से और इसन पीता से जीसने उसको मीनतकन में
२ से उठाया। और साने भाइयों से जो मेने संग हैं गलतीयः
३ की मंडलीयों को। इसन पीता से और हमाने पनभु यसु
४ मसीह के ओन से अनुगीनह और कुसल तुमहों पन होवे। उसने हमाने पापों के कानन अपने को दीया की वुह हमों को हमाने पीता इसन की इछा के समान इस वुने व्रनतमान जगत से
५ वृया लेवे। अनंत महातम उसी के लीये होवे आमीन।
६ मैं अयंभीत हुं की तुम लोग उस से जीस ने तुमहें मसीह के अनुगीनह में वुलाया ऐसा सीघन औनही मंगलसामायान में
७ हट गये। जो दुसना नहीं है पनंतु कीतने हैं जो तुमहें व्रयाकुल कनते हैं और याहते हैं की मसीह के मंगल समायान
८ को व्रीगाड़ें। पनंतु यदी हम लोग अथवा सनग से कोइ दुत उस मंगल समायान का छोड़ जो हमने तुमहें दीया कोइ
९ दुसना उपदेस कने वुह सनापीत होवे। जैसा हमने आगे कहा वैसा मैं फेन कहता हुं की जो कोइ कोसी दुसने मंगलसमायान को तुमहें सीप्पावे उसे छोड़ जीसे तुमहों ने पाया वुह सनापीत

१० होवे। कय़ा मैं अव़ मनुप्पन का अथवा इसन का मन जोगावता ऊं अथवा कय़ा मैं मनुप्पन की नुय ढुंढ़ता ऊं कय़ोंकी जो मैं मनुप्पन को नुयावता तो मैं मसीह का दास न होता।
११ पन हे भाइय़ो मैं तुमहें येता देता ऊं की वुह मंगलसमाय़ान जीसका उपदेस मुह से कीय़ा गय़ा सो मनुप्प की नीत से नहीं है।
१२ कय़ोंकी मैं ने उसको न तो मनुप्प से पाय़ा न सीप्पाय़ा गय़ा
१३ पर्नंतु य़सु मसीह के पनकासीत से पाय़ा। कय़ोंकी तुम लोग मेनी पीछली याल को जव़ मैं य़ऊदीय़ों के मत में था सुने हो की मैं इसन की मंडली को व़े पनीमान संताता था औन उजाड़-
१४ ता था। औन य़ऊदीय़ों के मत में अपनेही देस के लोगों में अपने समान के व़ऊतेने जन से अधीक यतकानी की, की
१५ अपने पीतनन के व़ेवहानों पन अतय़ंत जलीत था। पनंतु जव़ इसन पनसंन ऊआ जीसने मुहे माता के गनभ से अलग कनके
१६ अपने अनुगोनह से व़ुलाय़ा। की अपने पुतन को मुह पन पनगट कने की मैं उसका उपदेस अनदेसीय़ों के व़ीय में
१७ कनं तुनंत मैं ने मांस औन लऊ के संग जु़कत न की। औन य़नोसलीम में उनके पास जो मुह से पहीले पनेनीत थे न गय़ा
१८ पनंतु मैं अनव़ को गय़ा फेन दमीसक को फीना। फेन तीन व़नस पीछे पतनस से भेंट कनने को य़नोसलीम को गय़ा औन
१९ उसके संग पंदनह दीन नहा। पनंतु पनेनीतों में से कीसी
२० दुसने को न देप्पा केवल पनभु के भाइ य़ाकुव़ को। अव़ जो व़ातें मैं तुमहों को लीप्पता ऊं देप्पो इसन के आगे मैं मीथय़ा
२१ नहीं कहता। उसके पीछे मैं सीनीय़ा औन कलकीय़ा के देस
२२ में आय़ा। औन य़ऊदीय़ों की मंडली जो मसीह में थीं मेने
२३ मनुप से अपनीयीत थीं। पनंतु केवल उनहों ने सुना था की वुह जो हम को आगे संतावता था अव़ उस व़ीसवास का उपदेस
२४ कनता है जीसे उसने आगे नसट कीय़ा था। औन उनहों ने मेने व़ीप्पै में इसन की सतुत की।

२ दुसरा पत्र।

१ तब चौदह बरस पीछे मैं बरनबास के संग तीतस को भी
२ संग लेके यरोसलीम को फेर गया। परंतु मेरा जाना पर-
कासीत से ऊआ और वुह मंगलसमाचार उन्हें सुनाया जीसका
उपदेस मैं अंनदेसीयों में करता ऊं परंत् ऐकांत में परतीसठीत
३ लोगों को न होवे की मैं बयरथ दौड़ों अथवा दौड़ा था। परंतु
तीतस युनानी को जो मेरे संग था ख्तनः करवाने का आवेसक
४ न ऊआ। और यह झुठे भाइयों के कारन से जो छीपके
घुस आऐ की उस मुक्त का जो हम लोग मसीह यसु में रख्ते
५ हैं भेद लेवें की वे हमों को बंधन में लावें। पर हम ऐक
घडी भी उनके बस में न ऊऐ की मंगलसमाचार की सचाइ
६ तुमहारे पास बनी रहे। परंतु जो स्रेसठ देख्खे जाते थे सो
जैसे थे वैसे थे मुझे कछ काम नहीं है इसर कीसी के मनुख्तव
पर दीर्सट नहीं करता क्योंकी इनहों ने जो उनमें मान
७ थे मुझ में कुछ नहीं बढाया। परंतु उसका बीपरीत जब उनहों
ने देख्खा की अख्तनः लोगों के लीये मुझे मंगलसमाचार सौंपा
८ गया जैसा की पतरस को ख्तनः कीये गयों के। क्योंकी
जीसने पतरस के परेरीतत के लीये ख्तनः कीये गयों में
गुनकारी की उसीने मुझ में भी अंनदेसीयों के लीये गुनकारी
९ की। और जब याकुब और काफा और युहना ने जो खंभे
की नाईं दीखाइ देते थे उस अनुग्रह को देख्खा जो मुझे
दीया गया था तो उनहों ने मुझ को और बरनबास को साझे
के दहीने हाथ दीये की हम अंनदेसीयों के और वे ख्तनः
१० कीये गयों के पास जावें। परंतु इतना चाहा की हम दरीदरों
११ को समरन करें उसी बात में मैं भी परुनतीला था। और
जब पतरस इनताकीयः में आया तो इस लीये की वुह दोख्ख
१२ के जोग था मैं ने उसका सामना कीया। क्योंकी याकुब के

य्रहां से कइ प्रेक के आनने से पहीले उसने अंनदेसीय्रों के संग प्पाय्रा पनंत जव्र वे आय्रे तव्र वुह प्पतनःकीय्रेगय्रों के भै से पीछे
१९ हटा औान अपने को अलग कीय्रा। और और य्रहुदीय्रों ने भी उसी के समान डौंभ कीय्रा य्रहां लों की उनहों के डौंभ
१४ ने व्रननव्रास को भी ले लीय्रा। पनंतु जव्र मैं ने देप्पा की वे मंगल समायान की सयाइ के समान प्पनाइ से नहीं यलते मैं ने सभों के आगे पतनस को कहा की जो तु य्रहुदी होकन अंनदेसीय्रों के व्रेवहान पन यलता है औान य्रहुदीय्रों के समान नहीं तु कीस कानन अंनदेसीय्रों को व्रनव्रस य्रहुदीय्रों के
१५ व्रेवहान पन यलावता है। हम लोग जो सभाव से य्रहुदी हैं
१६ औान अंनदेसीय्रों में के पापी नहीं। य्रह समझ कन की मनुप्प व्रेवसथा की कीनय्रा से नहीं पनंतु य्रसु मसीह पन व्रीसवास लाने से नीनदोप्प ठहनता है हम लोग भी य्रसु मसीह पन व्रीसवास लाय्रे हैं की हम लोग य्रसु मसीह पन व्रीसवास लाने से न की व्रैवसथा की कीनय्रा से नीनदोप्प ठहनें कय्रोंकी कोइ मनुप्प
१७ व्रैवसथा की कीनय्रा से नीनदोप्प न ठहनेगा। पनंतु जव्र हम प्पोज में हैं की मसीह के कानन से नीनदोप्प ठहनें हम आप पापी पाय्रे जावें तो कय्रा मसीह पाप का सेवक है ऐसा न होवे।
१८ कय्रोंकी जो मैं उन व्रसतुन को जीनहें मैं ने ढा दीय्रा फीनके
१९ व्रनाउं तो मैं अपने को अपनाधी मान लेता हुं। कय्रोंकी मैं व्रैवसथा के कानन व्रैवसथा के औान से मनगय्रा हुं की इसन के
२० लीय्रे जाओं। मैं मसीह के संग कुनुस पन टांगागय्रा हुं तीसपन भी मैं जीवता हुं तथापी मैं नहीं पनंतु मसीह मुझ मे जीवता है औान वुह जीवन जो अव्र मैं सनीन में जीवता हुं मैं इसन के पुतन के व्रीसवास से जीवता हुं की उसने मुझे पीआन कीय्रा
२१ औान आपका मुझे लीय्रे दीय्रा। औान मैं इसन के अनुगीनह को व्रीनथा नहीं कनता कय्रोंकी जो धनम व्रैवसथा से मीले तो मसीह व्रय्रनथ मुआ।

३ तीसना पनव़।

१ हे अव्रीवेक गलतीयो कीसने तुमहों पन टोना कीया की सत
को न मानो जीनकी आंप्पों के आगे यसु मसीह पनतीक्ष
नीत से दीप्पाया गया ऐसा जैसा की तुमहाने मघ में कुनुस पन
२ टांगा गया। तुमहों से मैं केवल इतना जानने याहता ऊं की
तुमहों ने व्रैवसथा की कीनया से आतमा को पाया अथवा
३ व्रीसवास के सुनने से। कया तुम लोग ऐसे अव्रीवेक हो की
आतमा में आनंभ कनके सनीन से अव् सीघ ऊए हो।
४ कया तुमहों ने इतनी व्रातों को वृयनथ सहा यदी अव्
५ भी वृयनथ होय। सो वुह जो तुमहें आतमा देता है औन
तुमहों में आसयनज कनम कनता है सो व्रैवसथा पन यलने
६ से अथवा व्रीसवास के सुनने से। जैसा की इव्रनाहीम इसन
पन व्रीसवास लाया औन वुह उसके लीये धनम गीना गया।
७ सो जानो की वे जो व्रीसवास के हैं सोही इव्रनाहीम के पुतन
८ हैं। औन गनंथ ने आगे देप्प के की इसन अंनदेसीयों को
भी व्रीसवास की नीत से नीनदोप्प ठहनावेगा इव्रनाहीम को
आगेही मंगलसमायान दीया की समसत अंनदेसी तुह्र में
९ आसीस पावेंगे। सो वे जो व्रीसवास के हैं व्रीसवासी इव्रनाहीम
१० के संग आसीस पावते हैं। इस लीये जीतने व्रैवसथा की
कीनया के हैं सनाप के तले हैं कयोंकी लीप्पा है की हन ऐक
जो व्रैवसथा के पुसतक में लीप्पी ऊइ समसत व्रातों को नहीं
११ मानता सनापीत है। पनंतु की कोइ इसन की दीसीट में
व्रैवसथा से नीनदोप्प नहीं ठहनता सो पनतक्ष है कयोंकी
१२ धनमी व्रीसवास से जीयेगा। अव् व्रैवसथा व्रीसवास से नहीं
१३ पनंतु वुह मनुप्प जो उनहें माने उनसे जीयेगा। मसीह ने
हमें व्रैवसथा के सनाप से छुड़ाया की वुह हमानी संती सनापीत
ऊआ कयोंकी लीप्पा है की हनऐक जो व्रीनक्ष पन टांगा है

१४ सनापीत है। जीसतें इव्रनाहीम का आसीस अंनदेसीय़ों पन
ग्रय़ु मसीह के दुवाना से पज्जंचे की हम लोग व्रीसवास के
१५ दुवाना से आतमा की पनतीगा पावें। हे भाइय़ो मैं मनुष्पन की
नीत पन व्रोलता ज्जं य़द्दपी केवल मनुष्प का व्राया होय़ तथापी
जो वुह सथीन कीय़ा जाय़ कोइ मीटावता नहीं ग्रैान न उस में
१६ कुछ मीलावता है। अव्र इव्रनाहीम ग्रैान उसके व्रंस से
पनतीगा की गइ है वुह नहीं कहता ग्रैान तेने व्रंसों को जैसा
व्रज्जतों के पनंतु जैसा एक के कानन ग्रैान तेने व्रंस को जो
१७ मसीह है। अव्र मैं य़ह कहता ज्जं की उस व्राया को जो इसन
ने मसीह के व्रीष्पै में आगे ठहनाय़ा व्रैवसथा जो च्यान सै तीस
व्रनस के पीछे ज्जइ मीटा नहीं सकती की वुह पनतीगा नीसफल
१८ हो जावे। कय़ोंकी जो अधीकान व्रैवसथा से होय़ तो पनतीगा
के कानन से नहीं पर्नंतु इसन ने इव्रनाहीम को पनतीगा से
१९ दीय़ा। सो व्रैवसथा कीस काम की है वुह अपनाधों के लीय़े
मीलाइ गइ जव्र लों की वुह व्रंस जीसके लीय़े पनतीगा की गइ
आवे दुतों के ग्रैान से एक व्रीचवइ के हाथ में सोंपी गइ।
२० अव्र व्रीचवइ एक का नहीं होता पनंतु इसन एक है।
२१ सो व्रैवसथा कय़ा इसन की पनतीगा से व्रीनुध है ऐसा न होवे
कय़ोंकी जो ऐसी व्रैवसथा दी गइ होती जो जीवन दे सकती
२२ तो सच मुच धनम व्रैवसथा से मीलता। पर्नंतु गनंथ ने सभों
को पाप के तले ठहनाय़ा की वुह पनतीगा जो य़सु मसीह पन
२३ व्रीसवास लाने से है व्रीसवासीय़ों को दी जाय़। पर्नंतु जव्र
व्रीसवास नहीं आय़ा हम व्रैवसथा के तले थे ग्रैान उस व्रीसवास
२४ के लीय़े जो पीछे पनगट होनीहान था व्रधे थे। सो व्रैवसथा
हम सभों की गुनु ठहनी की मसीह लों पज्जंचावे की हम लोग
२५ व्रीसवास से नीनपनाध ठहनें। पन जव्र व्रीसवास आय़ुका तो
२६ फेन हम लोग गुनु के व्रस में नहीं नहते। कय़ोंकी तुम सव्रके
२७ सव्र य़सु मसीह के व्रीसवास से इसन के पुतन हो। कय़ोंकी

तुमहों में से जीतनों ने मसीह में सनान पाय़ा मसीह को पहीन
२८ लीय़ा। वहां न य़हूदी न य़ुनानी है न वंधा ज़ुआ न छुटा
ज़ुआ है ओान न मनुष्य न इसतीनी है कय़ोंकी तुम सवके
२९ सव मसीह य़सु में प्रेक हो। ओान जो तुम लोग मसीह के
हो तो इवनाहीम के वंस हो ओान पनतीगा के समान
अघीकानी हो।

४ यैाथा पनव।

१ अव मैं कहता ज़ुं की अघीकानी जव लों वालक है उस में
२ ओान दास में भेद नहीं य़दपी वुह सवका सामी है। पनंतु
उस समय़ लों जो पीता ने ठहनाय़ा है अघापकों ओान अघक्षों
३ के वस में नहता है। प्रेसाही हम लोग भी जव लड़के थे
४ जगत की नीत के वंघन में थे। पनंतु जव संपुननता का समय़
आय़ा तव इसन ने अपने पुतन को भेजा जो इसतीनी से उतपंन
५ होके वैवसथा के वस में पड़ा। की वुह उनहों को जो वैवसथा
के तले थे छुड़ावे की हम लेपालक पुतन होने का पद पावें।
६ ओान तुम जो पुतन हो इसी के कानन से इसन ने अपने पुतन
के आतमा को तुमहाने अंतःकनन में पीता पीता पुकानते ज़ुप्रे
७ भेजा। सो तु आगे दास नहीं पनंतु पुतन ओान जो पुतन है
८ तो मसीह के कानन से इसन का अघीकानी है। पनंतु तुम
लोग आगे जव इसन को नहीं पहीयानते थे उनके वंघन में
९ थे जो पनकीनत से इसन नहीं। पनंतु अव जव तुमहों ने
इसन को पहीयाना अथवा नीज कनके इसन ने तुमहें पहीयाना
तुम लोग फेन कय़ों इन दुनवल ओान दनीदन नीतीन के ओान
जाते हो ओान याहते हो की फेन उनके वंघन में पड़ो।
१० तुम लोग दीनों ओान महीनों ओान समय़ों ओान वनसों को
११ मानते हो। मैं तुमहाने लीय़े डनता ज़ुं न होवे की मैं ने जो
१२ तुमहों पन पनीसनम कीय़ा है वय़नथ होवे। हे भाइय़ो मैं

तुमहारी बीनती करता हुं की मेरी नाइं हा जाओ कयोंकी मैं तुमहारी नाइं बन गया की तुमहों ने मेरा कुछ बीगाड़ा
१३ नहीं। तुम लाग जानते हो की मैं ने पहीले से देह की दुरबलता से तुमहों का मंगलसमाचार का उपदेस दीया।
१४ और तुमहों ने मेरी उस परीक्षा की जो मेरे देह में थी नींदा न की और न तयाग कीया परंतु मुझ का ईसर के दुत के ऐसा
१५ हां मसीह यसु की नाइं गरहन कीया। सा तुमहारा जाना हुआ आसीरबाद कहां कयोंकी मैं तुमहों पर साप्षी देता हुं की जा हा सकता ता तुम लाग अपनी आंषें नीकाल के मुझे
१६ देते। सा इस कारन की मैं तुमहें सत कहता हुं कया मैं
१७ तुमहारा बैरी हुआ। वे तुमहारे मन का जलीत करते हैं परंतु भलाइ से नहीं हां वे तुमहें बाहर कीया चाहते हैं की
१८ तुम लाग उनहें जलीत करो। परंतु अछी बात में सरबदा जलीत हाना अछा है न केवल की जब मैं तुमहारे साप्षात
१९ में हुं। हे मेरे बचा जीनके लीये मैं जनने की पीड़ा में फेर
२० हुं जब लों मसीह तुमहों में सरुप पकड़े। मैं चाहता हुं की अब तुमहारे पास आउं और अपना सबद बदलों कयोंकी
२१ मुझे तुमहारा संदेह है। मुझ से कहा तुमलाग जा बैवसथा के बंद में हुआ चाहते हा कया बैवसथा का नहीं सुनते।
२२ कयोंकी लीप्षा है की इबराहीम के दा पुतर थे एक दासी से
२३ दुसरा नीरबंध से। परंतु जा दासी से था सा सरीर की रीत पर उतपंन हुआ परंतु नीरबंध से था सा परतीगा से था।
२४ जा बातें एक दीसटांत है कयोंकी ये दा बाचा हैं एक ता सीना परबत से जा नीरे बंधन के लीये जनती है यह हाजीरः
२५ है। कयोंकी यह हाजीरः अरब का सीना परबत है और यरोसलीम से जा अब है मीलती है और अपने बालकों के
२६ संग बंधन में है। परंतु यरोसलीम जा उपर है नीरबंध है
२७ सा हम सभों की माता है। कयोंकी यह लीप्षा है की हे

व्रांझ जो नहीं जनती मगन हो औन तु जो पीन नहीं जानती
चीलाके नो कयोंकी नांड के लड़के अहीवाती के लड़कों से
२८ अघीक हैं। अव्र हे भाइयो हम लोग इसहाक की नाइं
२९ पनतीगा के पुतन हैं। पन जैसा उस समय में वुह जीसकी
उतपती सनीन की नीत से थी उसे जोसकी उतपती आतमा की
३० नीत पन थी सतावता था वैसा अव्र भी होता है। पनंतु
गनंथ कया कहता है की दासी को औन उसके पुतन को दुन कन
कयोंकी दासी का पुतन छुटी ऊइ के पुतन के संग अघीकानी
३१ न होगा। सो हे भाइयो हम लोग दासी के नहीं पनंतु छुटी
ऊइ के पुतन हैं।

५ पांचवां पनव्र।

१ सो जो मुकत मसीह ने हमें दी है उस पन सथीन नहो औन
२ व्रंघन के जे तले फेन के न फंसो। देष्पो मैं पुलुस तुमहों
से कहता ऊं जो तुम लोग ष्पतनः कनवाओ तो मसीह से तुमहें
३ कुछ लाभ न होगा। औन मैं हन एक मनुष्य को जीसने
ष्पतनः कनवाया है फेन कह सुनावता ऊं की वह समसत
४ व्रैवसथा पन चलने का नीनी है। तुमहों में से जो कोइ
व्रैवसथा के दुवाना से नीनदोष्प ऊए हैं उनके लीये मसीह
५ नीसफल ऊआ है वे अनुगीनह से भनीसट हैं। कयोंकी
हम लोग आतमा के दुवाना से व्रीसवास से घनम के आसा की
६ व्राट जोहते हैं। कयोंकी यसु मसीह में न ष्पतनः न अष्पतनः
से कुछ पनापत होता पनंतु व्रीसवास जो पनेम से कानज कनता
७ है। तुम लोग तो अछी नीत से दौड़ते थे कीसने तुमहें नोक
८ दीया की अव्र सत के आघीन न होओ। यह मत तुमहाने
९ व्रुलावनीहान के ओन से नहीं। थोड़ा सा ष्पमीन सानै पींड
१० को ष्पमीन कन डालता है। तुमहाने कानन पनभु के ओन
से मुझे भनोसा है की तुमहाना मन औनही न होगा पनंतु वुह जो

तुम्हें व्याकुल करता है कोई क्यों न हो अपना दंड भोगेगा।
११ और हे भाइयो जो अब मैं खतनः का उपदेस करुं तो मैं
अब लों क्यों सताया जाता हूं तो क्रुश का ठोकर उठ गया।
१२ मैं चाहता हूं की वे जो तुम्हें व्याकुल करते हैं आप कट जायें।
१३ क्योंकी हे भाइयो तुम लोग तो मुक्त में बुलाये गये हो केवल
मुक्त को सरीर के ब्योहार के कारन मत करो परंतु प्रेम से
१४ एक दुसरे की सेवा करो। क्योंकी समस्त ब्यवस्था इसी एक
बात में पुरी हुई है की तु अपने परोसी को अपने समान
१५ पीआर कर। परंतु जो तुम लोग एक दुसरे को दांत काटो
और भक्षन करो तो सोचेत रहो की कहीं एक दुसरे से नास
१६ न हो जाओ। सो मैं कहता हूं की आतमा में चलो तो तुम
१७ लोग सरीर की बांछा को पुरा न करोगे। क्योंकी देह की
कामना आतमा से बीरुध है और आतमा की देह से बीरुध
और ये एक दुसरे से बीपरीत हैं यहां लों की तुम लोग जो
१८ कछ कीया चाहते हो उसे नहीं कर सकते। परंतु जो तुम
लोग आतमा से चलाए जाओ तो ब्यवस्था के तले नहीं हो।
१९ अब देह के कारज तो परगट हैं जो ये हो हैं परसतीरीगमन
२० बेभीचार अपवीतरता कामुकता। देव पुजा टोना करना
२१ दुसटता झगड़े रीसका क्रोध बीवाद दंगा उपद्रव। डाह
हतया मतवालपन घुमधाम और ऐसे ऐसे जीनके बीखै में मैं
तुम्हें आगे से कहता हूं जैसा मैं ने आगे कहा की ऐसे कारज
२२ करनीहार ईसर के राज के अधीकारी न होंगे। परंतु
आतमा का फल प्रेम है और आनंद और कुसल और
२३ सहना और कोमलता और भलाई और बीसवास। नमरता
२४ और संयम होना कोई ब्यवस्था ऐसों की बीरोधी नहीं। और
उनहों ने जो मसीह के हैं देह के अभीलास और कामना
२५ को क्रुस पर मारा है। जो हम लोग आतमा में जीवें तो हम
२६ आतमा में भी चलें। हम अनर्थ बड़ाई के चाहनीहार

न होवें और न एक दुसरे को ख्वीजायें और न एक दुसरे पर डाह करें।

६ छठवां पत्र।

१ हे भाइयो जो कोइ जन कीसी दोष में पड़ जाय तो तुम लोग जो आतमीक हो ऐसों को आतमा की कोमलता से थाम लेओ और तु चौकस रह न होवे की तु भी परीक्षा में पड़े।
२ तुम लोग एक दुसरे का भार उठा लेओ और यु मसीह की
३ व्यवसथा को संपुरन करो। कयोंकी जो कोइ कुछ न होके आप
४ को कुछ समझे तो वुह अपने को छल देता है। परंतु हर एक अपनी अपनी करनी को जांचे और तब वुह अपने में आनंद
५ करना पावेगा, और दुसरे में नहीं। कयोंकी हर एक अपना ही
६ बोझ उठावेगा। जो कोइ बचन में सीख्या पावे सीख्यावनीहार
७ को समसत अछी बसतुन में साझी करे। भरमाए न जाओ इसर ठीढाया न गया कयोंकी जो कुछ मनुष्य बोता है सोइ
८ वुह लवेगा। कयोंकी जो कोइ अपने देह के लीये बोता है सो देह से सड़ाव लवेगा परंतु जो आतमा के लीये बोता है
९ आतमा से अनंत जीवन लवेगा। और हमें याहीये की भला कारज करने में थक न जावें कयोंकी जो हम लोग दुरबल न
१० होवें तो ठीक समै में लवेंगे। सो हम लोग जब जब अवसर पावें आओ सब से भलाइ करें नीजकरके उनसे जो बीसवास
११ के घराने के हैं। तुम लोग देखते हो की मैं ने अपने हाथ से
१२ कैसी बड़ी पतरी तुमहें लीखी है। जीतने की देह की सोभा याहते हैं वे तुमहें खींयते हैं की खतनः करवाओ सो केवल इतने लीये की वे मसीह के करुस के कारन संताए न जावें।
१३ कयोंकी न वे आप जो खतनः कीये गये हैं बेवसथा को मानते हैं पर याहते हैं की तुम लोग खतनः करवाओ की वे तुमहारे
१४ देह के बीखै में बड़ाइ करें। परंतु इसर न करे की मैं बड़ाइ

कर केवल हमारे परभु यसु मसीह के कुरस के वीष्ये में जीस से जगत मेरे लीये कुरस पर खींचा गया और मैं जगत के लीये।
१५ कयोंकी मसीह यसु में न खतनः कुछ परापत करता है और न
१६ अखतनः परंतु नइ सीरीसट। और जीतने इस ब्रेवहार पर चलते हैं ब्रीसराम और दया उनके लीये और इसर के
१७ इसराइल के लीये होवे। अब से आगे कोइ मुझे ब्याकुल न करे कयोंकी मैं अपने देह पर परभु यसु का चीनह लीये
१८ फीरता हूं। हे भाइयो हमारे परभु यसु मसीह का अनुगीरह तुमहारे आतमा के संग होवे आमीन।

पुलुस की पतनी अफरसोयां को

---

१ पहीला पनव।

१ पुलुस के औान से जो इसन की इक्षा से यसु मसीह का पनेनीत है उन साधुन को जो अफरसस में मसीह यसु में
२ वीसवासी हैं। हमाने पीता इसन औान पनभु यसु मसीह से
३ अनुगीनह औान कुसल तुमहों पन होवे। हमाने पनभु यसु मसीह के पीता इसन को धंन जीसने हमों को सनगीय वसतुन
४ में अनेक पनकान का आतमीक बन दीया। जैसा की उस ने हमों को जगत के आनंभ से पहीले उस में युना की हम लोग
५ उसके आगे पनेम में पवीतन औान नीनदोष्प होवें। उसने हमको वदा था की अपने सुमनमान की इक्षा के समान यसु
६ मसीह से अपना लेपालक पुतन कनके। अपने अनुगीनह की महीमा को पनगट कने जीस में उसने हमों को उसी पीनीय
७ में गनाह्य कीया। जीस में हम लोग उसके अनुगीनह के धन के समान उसके लोहु के कानन से उधान अनथात पाप का
८ मोचन पावते हैं। जीसमें उसने हमों को समसत गयान औान
९ बुध अधीकाइ से दीया। की उसने अपनी इक्षा के भेद को जो अपने सुमनमान के समान जीसे उसने अपने में ठहनाया
१० हमों पन पनगट कीया। की समयों की संपुननता में सनग औान पीनथीवी दोनों में जीतनी वसतु हैं सभों को मसीह
११ में मीलाके एक के वस में कने। उसके कानन से हमों ने

भी ऐक अधीकार पाया की वृदे ऊऐ होके उसके ठहराऐ ऊऐ
के समान जो अपनीही इछा के मतत की नीत से सव कुछ
११ करता है। की हम लोग जीनहों ने मसीह पर पहीले भरोसा
१२ कीया उसके ऐसरय की सतुत का कारन होवें। जीस में
तुमहों ने भी जव सचाइ के वचन को सुना जो तुमहारे उधार
का मंगलसमाचार है जीस में वीसवास भी लाके तुम लोग
१३ परतीगा के धरमातमा से छाप कीये गये। जो हमारे
अधीकार का वयाना है जव लों मोल ली ऊइ वसतु का उधार
१४ कीया जाय और उसके ऐसरय की वड़ाइ होवे। इस लीये
मैं भी तुमहारे वीसवास को परभु यसु पर और परेम को
१६ समसत साधुन पर सुनके। तुमहारे कारन धन मानने में
और अपनी परारथना में तुमहारा समरन करने में नहीं
१७ थमता। जीसतें हमारे परभु यसु मसीह का इसर जो ऐसरय
का पीता है तुमहें परकासीत और गयान का आतमा देवे को
१८ तुम लोग उसको पहीचानो। की तुमहारे समझ की आंखें
परकासीत होवें की तुम लोग जानो की उसके वुलावने की
कया आसा है और साधु लोग जो उसके अधीकार वने हैं
१९ उस में कया ऐसरय का धन है। और उसके अतयंत
सामरथ की वड़ाइ हमों पर जो वीसवास लाते हैं कया है जो
२० उसके पराक्रम के सामरथ के कारज के समान है। जो उसने
मसीह में कीया जव उसने उसे मीरतु से उठाया और अपनेही
२१ दहीने और सरगीय सथान पर वैठाके। समसत परभुता
और पराक्रम और सामरथ और राज और हर ऐक नाम से
जो न केवल इस जगत में परंतु आवनीहार जगत में भी लीया
२२ जाता है स्रेसठ कीया। और समसत वसतें उसके चरन के
तले कीयां और उस को मंडली के लीये सव का सीरा
२३ वनाया। जो उसका देह है उसकी भरपुरी जो सवको सव
में भरता है।

२ दुसना पनव्र।

१ और उसने तुमहों को जीलाया जो अपनाधों और पापों में
२ मीनतक थे। जीन में तुम लोग पीछले दीनों में इस जगत के
व्रेवहान के समान चलते थे अनथात आकास के पनाकनम के
अधक्ष की नीत पन वुह आतमा जो अव्र अगग्या संग कननीहान
३ पुतनों में कानज कनता है। जीनहों में हम सव्र भी अपने
सनीन की कामना में जीवन नोव्राहते थे को सनीन की औन
मन की इछा कनते थे औन सभाव से औनोंही की नाईं कनोध
४ के संतान थे। पनंतु इसन दया में घनमान होके अपने व्रड़े
५ पनेम से जीस से उसने हमों को पीआन कीया। अनथात जव्र
हम लोग पापों में मीनतक थे हमों को मसीह के संग प्रेकठे
६ जीलाया तुमहों ने अनुगीनह से तनान पाया है। औन हमों
को प्रेकठे उठाया औन मसीह यसु में सनगीय सथानों पन
७ प्रेकठे व्रैठाया। जीसतें वुह अपने अनुगीनह से जो मसीह
यसु के कानन से हमों पन है आवनीहान सभै में अपनी दया
८ के अतयंत घन को दीख्लावे। कयोंकी तुमहों ने अनुगीनह
से व्रीसवास के कानन तनान पाया है औन वुह तुमहाने ही
९ औन से नहीं वुह इसन का दान है। कीनीया से नहीं न हो
१० की कोइ व्रड़ाइ कने। कयोंकी हम लोग उसके व्रनाऐ हुऐ
कानज हैं मसीह यसु में अछे कानजन के लीये सीनजे गये
जीनहें इसन ने आगे ठहनाया की हम लोग उन में चलें।
११ इस कानन समनन कनो की तुम लोग आगे सनीन में पनदेसी
थे औन उनके जो प्पनन: कीये गये कहाते हैं अप्पतन: कहाते
१२ हो की उन का प्पतन: देह में औन हाथ से हुआ था। की
उस समय में तुम लोग मसीह हीन थे औन इसनाइल के नाज
से पनदेसी औन पनतीगा के नीयमों से अनजान थे औन
१३ आसा हीन होके जगत में इसन हीन थे। पनतु अव्र मसीह

यसु में तुम लोग जो आगे दुर थे मसीह के लोहु के कारन
१४ से नीकट कीये गये हो। क्योंकी वही हमारा मीलाप है
जीसने दो को एक कीया और मध की भीत के व्योछेदा को
१५ ढा दीया। अपने देह में सत्रुता को मीटा दीया अरथात
व्येवस्था की आग्याओं को जो व्येवहारों में थीं की वुह अपने
१६ में मीलाप करके दोसे एक नया मनुष्य व्रनावे। और सत्रुता
को व्रधन करके वुह क्रुस से दोनो को एक देह व्रना के इसर
१७ से मीलावे। और आके तुमहें जो दुर थे और उनहें जो
१८ नीकट थे मीलाप का उपदेस दीया। क्योंकी उसीके कारन से
१९ एकही आतमा से हम दोनो पीता लों पहुंचते हैं। सो अव्र
तुम लोग अनजान और परदेसी नहीं हो परंतु सीधों के एकही
२० नगर के व्रासी और इसर के घराने के हो। और परेरीतों
और आगमग्यानीयों पर जो नेउ हैं जोड़े गये हो यसु मसीह
२१ आप कोने का सीरा है। जीस में सारी जोड़ाइ व्रीध के साथ
एकठे कीये जाके इसर के लीये पवीतर मंदीर उठता जाता
२२ है। उस में तुम लोग भी इसर के नीवास के लीये आतमा से
एकठे जोड़ाए गये हो।

३ तीतस का पत्र।

१　इस कारन मैं पुलुस तुम परदेसीयों के लीये यसु मसीह का
२ व्रंधुआ हुं। जो तुमहों ने सुना है की इसर के अनुग्रह का
३ व्रंटवारा तुमहारे लीये मुझे दीया गया। की उस ने परकासीत
से भेद को मुझे जनाया जैसा मैं संछेप से आगे लीख चुका।
४ उसे पढ़के जान सको की मैं ने मसीह के भेद को कया समझा।
५ जो अगीले समयों में मनुष्यन के संतानों को न जनाया गया
जीस रीत से उसके पवीतर परेरीतों और आगमग्यानीयों
६ पर आतमा से परकास कीया गया की परदेसी मंगलसमाचार
के कारन से अधीकार में संगी और एकही देह के और मसीह

७ में उस की परतीगा के भागी होवें। जीस का मैं ईसर के अनुगीनह के दान के समान जो उसके सामरथ की गुनकारी से
८ मुझे मीला सेवक वना। मुझे जो समसत अतयंत छोटे सीधों से छ टा ऊं यह अनुगीनह दीया गया की मैं परदेसीयों के मध
९ में मसीह के धंन का जो खोज से परे है उपदेस देउं। और सभों को दीप्यार्ड की उस भेद में साझी होना कया है जो सनातन समयों से ईसर में गुपत था जीस ने समसथ वसतें यसु
१० मसीह से उतपंन कीयां। की अव मंडली के दुवारा से ईसर का नाना परकार का गयान और परभुता और पराकरम जो
११ सरगीय सथानों में हैं जाने जायें। जैसा उसने मसीह यसु
१२ हमारे परभु में सनातन से यु ठहराया था। जीसमें हम लोग उसी के वीसवास के संग साहस से और भरोसा से पऊंचते हैं।
१३ सो मैं चाहता ऊं की तुम लोग मेरे कसट के लीये जो तुमहारे कारन है और तुमहारी वड़ाइ है नीरवल मत होओ।
१४ इसी कारन मैं अपने परभु यसु मसीह के पीता के आगे घुटने
१५ टेकता ऊं। जीस से सरग में और भुम पर समसत परीवार
१६ के नाम रप्खे गये हैं। की वुह अपनी महीमा के धन के समान तुमहें देवे की तुम लोग उसके आतमा के कारन से अंतर के
१७ मनुष्य में वल से वली कीये जाओ। की मसीह तुमहारे अंत:करन में वीसवास से वास करे की तुम लोग परेम में जड़
१८ पकड़ के और नेउ डालके। समसत सीधों समेत समझ सको की उसकी चौड़ाइ और लंवाइ और गहीराइ और उंचाइ
१९ कीतनी है। और की मसीह के परेम को जानो जो गयान से परे है जीसतें तुम लोग ईसर की सारी भरपुरी से भर जाओ।
२० अव उसके लीये जो कुछ हम मांग सकें अथवा चींता कर सके उस से अतयंत अधीक उस सामरथ के समान जो हमों में कारज
२१ करता है दे सकता है। उसके लीये मंडली में मसीह यसु के दुवारा से समसत पीढ़ी से पीढ़ी अनंत लों महातम होवे आमीन।

४ चौथा पत्र।

१ सो मैं प्रभु का बंधुआ तुम्हों से बीनती करता हूं की जीस
२ बुलावा से तुम लोग बुलाये गये हो उसके जोग चलो। समसत
नमरता और कोमलता के संग संतोष्य से एक दुसरे को प्रेम
३ में सहो। और बतन करो की आतमा की एकता को मीलाप
४ के बंधन में रख्यो। एक देह और एक आतमा है की
तुम लोग अपने बुलावा की एक आसा में बुलाए गये थे।
५।६ एक प्रभु एक बीसवास एक सनान। एक परमेसर और
सब का पीता जो सब से उपर और सब में बयापत और तुम सभी
७ में। परंतु हम में से हर एक को मसीह के अनुग्रह के
८ परमान के समान दान दीया गया है। इस कारन वुह कहता
है जब वुह उपर उठ गया तब उसने बंध को बंधुआ कीया
९ और मनुष्यन को दान दीया। अब वुह जो उपर उठ गया सो
कया है परंतु यह की वुह पहीले पीरथीवी के नीचे के सथानों
१० में उतरा वुह जो उतरा सो वही है जो समसत सरगों से
भी कहीं परे उठ गया जीसतें वुह समसत बसतुन को परीपुरन
११ करे। और उसने कीतनों को प्रेरीत कीया और कीतनों को
आगमगयानी और कीतनों को मंगलसमाचारक और कीतनों
१२ को रख्यवाल और उपदेसक बनाया। की सेवा के कारज के
लीये साधुन को सीध करे और मसीह का देह सुधरता चला
१३ जाय। जब लों की हम लोग बीसवास में और ईसर के पुत्र
की पहीचान में एकता में संपुरन मनुष्य होवें अरथात मसीह
१४ की डील की पुरनता लों पहुंचें। जीसतें हम लोग आगे को
लड़के न बने रहें की उपदेस की हर एक बयार से इधर
उधर डोलते फीरें जो मनुष्यन के कपट छल से जीस से वे
१५ भुलावने के लीये घात में रहते हैं। परंतु प्रेम में सत का
पालन करके समसत बसतु में उस में जो सीर है अरथात

१६ मसीह में बढ़ते जावें। जीस से समसत देह ठीक नीत से मीलाया जाके और हर एक जोड़ की भरती से जोड़ा जाके हर एक वृंद के गुनकारी के समान देह को बढ़ावता है की
१७ अपने को परेम में सुधारे। इस लीये मैं यह कहता हूं और परभु में साखी देता हूं की तुम लोग आगे को आर परदेसीयों की चाल पर जो अपने मन की भुल में चलते हैं न चलो।
१८ की उनकी बुध अंधयारी हो गई की वे उस अगयानता के कारन से जो उनके अंतःकरन की अंधेरीटी से उन में है इसर
१९ के जीवन से अलग हो गए हैं। उनहों ने सुन होके अपने को कामातुर की कोरीया में सौंपा की नाना परकार की अपवीत-
२० रता के कारज लालच से करें। परंतु तुमहों ने मसीह को
२१ यूं नहीं सीखा। तुमहों ने तो उसे सुना है और उस से सीखाए
२२ गए हो जैसा की सचाई यसु में है। की अगीली चलन के बीखै में पुरानी मनुख्यता को जो कपट मदन के समान सड़ी
२३ है उतारो। और अपने मन के आतमा में नए बन जाओ।
२४ और की तुम लोग नई मनुख्यता को पहिन लेओ जो इसर के
२५ समान धरम में और सत पवीतरता में सीरजी गई है। इस लीये हर एक झुट को अलग करके हर एक जन अपने परोसी
२६ से सत बोले कयोंकी हम लोग एक दुसरे के अंग हैं। करुध होओ और पाप मत करो न हो की तुमहारे करोध पर सुरज
२७। २८ असत हो जाय। और सैतान को सथान मत देओ। जीसने चोरी की है चोरी न करे परंतु बीसेख करके परीसरम करे हाथों से ऐसे कारज करे जो अछे हो जीसतें वुह दरीदरों को
२९ कुछ दे सके। कोई सड़ी बात चीत तुमहारे मुंह से न नीकले परंतु वुह जो सुधारने के लाये अछी है जीसतें सुननीहारों
३० पर अनुग्रीह का कारन होय। और इसर के धरमातमा को जीस से तुमहों पर मोख्य के दीन लों छाप कीया गया है
३१ उदास न करो। सारी कड़वाहट और करोध और कोप

श्रीन कोलाहल श्रीन वुनी वात यीत समसत डाह समेत तुमहों
३२ से अलग कीया जाय। श्रीन एक दुसने पन दयाल श्रीन
कीनपाल हो एक दुसने पन छमा कनो जैसा इसन ने भी मसीह
के लीये सेंत से तुमहों पन छमा की है।

५ पांचवां पनव्र।

१ सो तुम लोग पीनीय वालकों के समान इसन का पीछा कनो।
२ श्रीन पनेम में यलो जैसा की मसीह ने भी हमों से पनेम कीया
श्रीन हमानी संती अपने का सुगंध के लीये इसन के श्रागे भेंट
३ श्रीन वलीदान कीया। पनंतु वैभीयान श्रीन हन एक पनकान
को अपवीतनता श्रीन लालय की यनया लों तुमहों में न
४ होवे जैसा की साधुन को उयीत है। श्रीन न मलीनता न मुढ़
वात न ठठोल जो ठीक नहीं है पनंतु वीसेक कनके सतुत कनना
५ होवे। कयोंकी तुम लोग इसे जानते हो की न कोइ वैभीयानी
न अपवीतन जन न लालयी पुनुष्प जो मुनत पुजक है मसीह
६ के श्रीन इसन के नाज में अधीकान नष्पता है। कोइ तुमहों
को अननथ वातों से छल न देवे कयोंकी एेसी वातों के कानन
इसन का कनोध अगया भंग कननीहान वालकों पन पड़ता है।
७।८ सो तुम लोग उनहों के संग साझी न होश्रो। कयोंकी
तुम लोग श्रागे श्रंधकान थे पनंतु श्रव पनभु में पनकास हो
९ सो पनकास के वालकों के समान यलो। कयोंकी श्रातमा
१० का फल समसत भलाइ में श्रीन धनम श्रीन सत में है। पनष्पते
११ हुए की पनभु को कया भावता है। श्रीन श्रंधकान के नीसफल
कानजन में साझी मत होश्रो पनंतु वीसेप्प कनके उनहें दोष्प
१२ देश्रो। कयोंकी उनके गुपत कानजन की यनया भी कनना
१३ लाज है। पनंतु समसत वसतें जो दुष्पीत हैं पनकास से पनगट
की गइ है कयोंकी जो कुछ पनगट कनता है सो पनकास है।
१४ इसी लीये वुह कहता है की तु जो सोता है जाग श्रीन

१५ मीनतकन में से उठ और मसीह तुझे पनकास कनेगा। सो देखो की तुम लोग चौकसाइ से चलो मुनष्यों के समान नहीं पनंतु
१६ गयानीयों के। सो समय को काम जानो कयोंकी दीन वुने
१७ हैं। इस कानन तुम लोग नीनवुध न नहो पनंतु समझ नखो
१८ की पनभु की इछा कया है। और मदीना से मतवाले न होयो
१९ जीस में अघीकाइ है पनंतु आतमा से पुनन होओ। आपुस में भजन और कीनतन और आतमीक गान गाया कनो
२० और मंगल गाके पनभु के लीये गाते वजाते नहो। समसत वसतुन के लीये हमाने पनभु यसु मसीह के नाम से इसन का
२१ अनवात पीता का धंन मानो। और इसन के डन में एक
२२ दुसने के वस में होओ। हे पतनीयो अपने पतीयों के ऐसे वस
२३ में नहो जैसे पनभु के। कयोंकी पती पतनी का सीन है जैसा की मसीह मंडली का सीन और वुह देह का नीसतानक है।
२४ सो जैसा मंडली मसीह के वस में हैं वैसा ही पतनीयां हन एक
२५ वात में अपने पती के। हे पतीयों अपने पतनीयों को पीयान कनो जैसा मसीह ने भी मंडली को पीयान कीया और
२६ अपने को उसकी संती दीया। जीसतें वुह उसको जल से सनान
२७ देके अपने वचन से सुध और पवीतन कने। की वुह उसको अपने सनमुष्य एक तेजोमै मडली कने जीसमें कोइ कलंक अथवा सीकोड़ अथवा कोइ ऐसी वसतु न होवे पनंतु की पवीतन
२८ और नीनदोष्य होवें। पतीयों को चहीये की अपनी पतनीयों को ऐसा पीयान कनें जैसा अपने देह को वुह जो अपनी पतनी
२९ को पीयान कनता है सो अपने को पीयान कनता है। कयोंकी कीसी ने अवलों अपने देह से वैन न कीया पनंतु उसको पालता
३० और पोसता है जैसा की पनभु मंडली को। कयोंकी हम लोग उसके देह के उसके मांस के और उसकी हडीयों के अंग हैं।
३१ इसी कानन मनुष्य अपने माता पीता को छोड़ेगा और अपनी
३१ पतनी से मीला नहेगा और वे दोनो एक देह होंगे। यह

नीगुढ़ भेद है पन मैं मसीह के श्रोन मंडली के वीप्पे में बोलता
हुं तौस पन भी हन येक तुमहों में से अपनी अपनी पतनी
३३ को ऐसा पीआन कने जैसा आप के। कनता है श्रोन याहीये
की पतनी अपने पती का आदनमान कने।

६ छठवां पत्र।

१ हे बालके। तुम लोग पनभु के लीये अपने माता पीता की
२ अगया में नहो कयोंकी यह ठीक है। तु अपने माता पीता के।
३ पनतीसठा दे जो पहीली अगया पनतीगा सहीत है। जीस्तें
तेना भला होवे श्रोन पीनथीवी पन तेना जीवन अधीक होवे।
४ श्रोन हे पीतने। तुम लोग अपने वालकें। के। उदास कनके कुनुच
न कने। पनंतु इसन की सीप्या श्रोन उपदेस में उनका पनतीपाल
५ कने। हे सेवके। तुम लोग उनके जो जगत में तुमहाने सामी
हैं अपने मनकी सीधाइ से डनते श्रोन थनथनाते हुये ऐसे
६ अगया के वस में होश्रो जैसे मसीह के हो। न द्रीसट सेवा
से जैसा मनुप्प के पनसन कननीहानों से पनंतु जैसा मसीह
७ के सेवकें। के समान मन से इसन की इछा पन यले। भला
याहके सेवा कने। जैसा पनभु की श्रोन न जैसा मनुप्पन की
८ कनते हैं। की जानते हो जो काइ कुछ अछा काम कने कया
९ दास कया नीनबंघ पनभु से ऐसाही पावेगा। हे सामीये।
तुम लोग भी उनसे ऐसेही कने। श्रोन घमकी देने में ठकाने से
बाहन न जाश्रो कयोंकी तुम लोग जानते हो की तुमहाना भी
सामी सनग पन है श्रोन वुह कीसी की पनगट दसा पन द्रीसट
१० नहीं कनता। सो अंत में हे मेने भाइये। पनभु के सामनथ के
११ पनाकनम से दीनढ़ होश्रो। इसन के सानें हथीयान बांधे।
१२ की तुम लोग सैतान के छल के संमुप्प ठहन सके। कयोंकी
हम देह से श्रोन लोहु से बुजनी नहीं कनते पनतु पनभुता
श्रोन पनाकनम से श्रोन जगत के अंधकान के महानाजों से

१३ और आतमीक दुसटना से उंचे सथान में। इस कारन तुम लोग इसन के सारे हथीयार उठा लेउ की तुम लोग दुष्प के दीन सामना कर सको और सब्र कारज करके प्पड़े रह सको।
१४ इस लीये अपनी कमर को सतता से कसके घरम का हीलम
१५ पहीरके प्पड़े रहो। और अपने पावों को कुसल के मंगल
१६ समाचार का जुता पहीनाओ। और सभों पर ब्रीसवास की ढाल ब्रांधके जीस से तुम लोग उस दुसट के सारे अगीन के
१७ भालों को ब्रुझा सको। और उधार का टोप और आतमा का
१८ प्पडग जो इसर का ब्रचन है ले लेओ। नीत आतमा में परारथना और ब्रीनती करते हुए और उस पर सारी घुन से और गीड़गीड़ाने से समसत घरमी लोगों के कारन जागते रहो।
१९ और मेरे कारन भी की मुझे उचारन दीया जावे की मेरा मुंह नीरभै से प्पुल जावे जीसतें मैं मंगलसमाचार के भेद को
२० परकास करुं। कयोंकी उसके लीये मैं एक दुत ब्रंद में हुं की मैं उसको नीरभै से ऐसा कहुं जैसा मुझे कहा चाहीए।
२१ और जीसतें तुम लोग भी मेरे समाचार को जानो की मैं कया करता हुं तप्पीकस जो पीआरा भाइ और परभु का ब्रीसवासी
२२ सेवक है तुमहों को सब ब्रातें ब्रताएगा। की मैं ने उसे तुमहारे पास इसी कारन भेजा की तुम लोग हमारी दसा को जानो
२३ और वुह तुमहारे अंतःकरन को सांत देवे। भाइयों को कुसल होवे और इसर पीता के और परभु यसु मसीह के ओर
२४ से ब्रीसवास के संग परेम मीले। उन सभों पर जो हमारे परभु यसु मसीह से सचा परेम रप्पते हैं अनुगीरह होवे आमीन।

पुलुस की पतनी फ़ीलीपीय़ों को

---

१ पहीला पनव़।

१ पुलुस श्रीन तीमताउस से जो य़सु मसीह के दास हैं फ़ीलीपी के समसत साधों का जो मसीह य़सु में हैं श्रायानय़ों श्रीन
२ सेवकों समेत। श्रनुगीनह श्रीन कुसल हमाने पीता इसन
३ श्रीन पनभु य़सु मसीह के श्रोन से तुमहों पन होवे। मैं जव़ जव़ तुमहें समनन कनता ऊं श्रपने इसन का घन मानता ऊं।
४ श्रपनी हन ऐक पनानथना में सदा श्रानंद से तुम सभों के लीय़े
५ पनानथना कनता ऊं। इस लीय़े की तुम लोग मंगलसमायान
६ में पहीले दीन से श्राज लों भागी ऊए हो। इसी व़ात का नीसयय़ नप्पके की जीसने तुमहों में उतम कानज कनना श्रानंभ कीय़ा सो य़सु मसीह के दीन लों कनता यला जाय़गा।
७ जैसा की मुहे उयीत है की तुमहाने व़ीप्पै में ऐसाही समहों कय़ोंकी तुम लोग मेने श्रंतःकनन में हो की मेने व़ंघनों में श्रीन मंगलसमायान के पक्ष श्रीन ठहनावने में भी मेने श्रनुगीनह
८ में साही हो। कय़ोंकी इसन मेना साप्पी है की मैं य़सु मसीह
९ के हीनदै में तुम सभों का कैसा श्रभीलास कनता ऊं। श्रीन मैं य़ह पनानथना कनता ऊं की तुमहाना पनेम गय़ान में श्रीन
१० व़ीवेक में व़ढ़ता यला जाय़। की तुम लोग व़वना की व़ातों का पनप्प सको जीसतें तुम लोग नीसकपट होश्रो श्रीन मसीह
११ के दीन लों ठोकन न प्पाश्रो। श्रीन घनम के फलों से जो य़सु

मसीह से है भनजाओ की दुसन का महातम और सतन की
१२ जाय। पनंतु हे भाइयो मैं याहता हुं की तुम लोग जानो
की जो कुछ मुझ पन बीता है सो बीसेष्प कनके मंगलसमायान
१३ के अधीक फैलने के लीये हुआ। यहां लों की मसीह में मेना
बंधन समसत नाजभवन में और समसत सथानों में पनगट हुआ।
१४ और बहुतेन भाइ ने पनभु में मेने बंधनों से दीनढ़ता पाके
बयन को नीनभै से बोलने का अधीक साहस उतपंन कीया।
१५ कीतने तो डीसका और बीनोघ से और कीतने पनसंनता से
१६ मसीह का उपदेस देते हैं। पहीले के यह समझ के की मेने
बंधन पन पीड़ा अधीक कनें बीनोघ से न की सयाइ से मसीह
१७ का संदेस देते हैं। पनंतु और लोग पनेम से यह जानके की
१८ मैं मंगलसमायान के पक्ष के कानन ठहनाया हुआ हुं। सो
कया तीसपन भी समसत नीत से मसीह का संदेस कीया जाता
है याहे छल में याहे सयाइ में और दुस में मैं आनंद कनता
१९ हुं और आनंद कनुंगा। कयोंकी मैं जानता हुं की तुमहानी
पनानथना से और यसु मसीह के आतमा की बढ़ती से यह
२० मेने उघान का कानन होगा। जैसा की मेना बड़ा भनोसा और
आसा है की मैं कीसी बात में लजीत नहीं पनंतु समसत साहस
से जैसा सदा था वैसा अब भी मसीह मेने देह में याहे जीवन
२१ से याहे मीनतु से महीमा पावेगा। कयोंकी जीवन मेने लीये
२२ मसीह है और मीनतु लाभ है। पनंतु जो मैं देह में जीउं तो
यही मेने पनासनम का फल है तथापी मैं नहीं जानता की मैं
२३ कया याहुं। कयोंकी मैं दो के मघ में सकेत में हुं नीनबंघ
होने को अभीलासी हुं और मसीह के संग होउं जो अती अछा
२४ है। पनंतु देह में नहना तुमहाने कानन अधीक पनयोजन
२५ है। और मैं यह नीसयय कनके जानता हुं की मैं नहुंगा
और तुम सभों के संग ठहनुंगा की तुमहाना बीसवास और
२६ आनंदता बढ़ती जाय। जीसतें तुमहों में मेने फीन आवने के

कानन से मुह्र में तुमहाना आनंद कनना मसीह यसु में अधीक
२७ होवे। केवल तुमहानी यलन मसीह के मंगलसमायान के
जोग होवे की जो मैं आउं ग्रोन तुमहें देख्युं अथवा न आउं
तुमहाना यह समायान सुनं की तुम लोग ग्रेक आतमा में
सथीन हो नहे हो ग्रोन मंगलसमायान के ब्रीसवास के लीये
२८ ग्रेक मन होके ग्रेकठे पनीसनम कनते हो। ग्रोन अपने ब्रोनोघ
कननीहानों से कीसी ब्रात में डनाग्रे न जाग्रो जो उनके लीये
नास का पनंतु तुमहाने लीये इसन के ग्रोन से उघान का
२९ यीनह है। कयोंकी मसीह के कानन से तुमहें केवल यही
नहीं दीया गया की तुम लोग उस पन ब्रीसवास लाग्रो पनंतु
३० यह भी की उसके कानन से दुष्प भी पाग्रो। वही पनीसनम
नष्पके जो तुमहों ने मुह्र में देष्पा ग्रोन अब सुनते हो की
मुह्र में है।

२ दुसना पत्र।

१ सो जो मसीह में कुछ सांतन जो कुछ पनेम की सांत जो
२ आमा का कुछ मीलाप जो कुछ दया ग्रोन सनेह होय। तो
मेनी आनंदता को पुना कनो की ग्रेक सम्भाव नष्पो ग्रेकही
३ पनेम नष्प के ग्रेक जीव ग्रोन ग्रेक मन होग्रो। झगड़े ग्रोन
ब्रयनथ अभीमान से कुछ न कनो पनंतु मनकी नमीनता से ग्रेक
४ दुसने को अपने से अछा समझो। कोइ अपने लाभ का घ्योजी
५ न होवे पनंतु हन ग्रेक ग्रोनों के। तुमहों में वही मन होवे जो
६ मसीह यसु में भी था। उसने इसन का सनुप होके इसन
७ के तुल होना योनी न जाना। तीसपन भी अपने को हीन
कीया ग्रोन दास का सनुप पकड़ा ग्रोन मनुष्प का आकान
८ ब्रना। ग्रोन उसने मनुष्प के सनुप में पनगट होके अपने को
हीन कीया ग्रोन मनने लों अरथात कुनुस की मीनतु लों आगया
९ के ब्रस में ऊग्रा। इस कानन इसन ने भी उसे अतयंत महान

कीया और उसको ऐसा नाम दीया जो समसत नाम से स्रेसठ
१० है। की यसु के नाम पर हरऐक घुटना जो सरग में और
११ पीरथीवी में और जो पीरथीवी के नीचे है टेका जाय। और
की हर ऐक जीह्वा इसर पीता की महीमा के लीये मानले
१२ की यसु मसीह परभु है। सो हे मेरे पीरीय जैसा तुमहों ने
सरवदा अगया मानी है केवल मेरे साख्यात में नहीं परंतु अव
मेरे वीयोग में अधीक डरते और थरथराते अपने उधार के
१३ कारज कीये जाओ। कयोंकी वुह इसर है जो तुमहों में कारज
करता है की तुम लोग उसकी अछी वांछा के समान इछा
१४ और कारज करो। सव काम वीना कुड़कुड़ाते और वीना
१५ वीवाद करते करो। की तुम लोग नीरदोख और सुधे होके
इसर के पुतर दोख रहीत टेढ़े तीरछे लोगों के वीच में वने
रहो जीन में तुम लोग परकास के समान जगत में चमकते हो।
१६ जीवन का वचन लीये ऊऐ जीसतें मैं मसीह के दीन में आनंद
१७ करुं की मेरी दौड़ और परीसरम वृथा न ऊआ। कयोंकी
जो मैं तुमहारे वीसवास की सेवा और वलीदान पर ढाला
जाउं तो आनंद करता ऊं और तुम सभों को वधाइ देता ऊं।
१८ और इसी कारन तुम लोग भी आनंद करो और मेरे संग
१९ वधाइ करो। और मैं परभु यसु में आसा रख्ता ऊं की
तीमताउस को तुमहारे पास सीघर से भेजुं और तुमहारा
२० समाचार वुझ के मैं भी तीरोपत होउं कयोंकी ऐसे मन का
मेरा कोइ नहीं है जो सभाव से तुमहारे लीये चींता में होवे।
२१ कयोंकी सव अपनी अपनी वसतु की खोज में हैं और उन
२२ वसतुन की नहीं जो यसु मसीह की हैं। परंतु तुम लोग उसको
परख के जानते हो का उसने मेरे संग मंगलसमाचार में सेवा
२३ की जैसा पीता के संग पुतर करता है। इस लीये आसा रख्ता
ऊं की अपने उपर जो होनीहार है देखके सीघर उसको भेज
२४ देउं। परंतु मुझे परभु में भरोसा है की मैं आप भी सीघर

२५ आउंगा। तीसपन मी अपाफरोदीतस को तुमहारे समीप भेजना उचीत जाना जो मेना भाइ और संगी सेवक और संगी सीपाही और तुमहाना दुत और मेने आवेसक का सेवक।
२६ कयोंकी वुह तुम सभों का नीपट अभीलासी था और इस कानन की तुमहों ने सुना की वुह नोगी था उदासी न था।
२७ और वुह तो नोग से मनने पन था पनंतु इसन ने उस पन दया की और केवल उसी पन नहीं पनंतु मुझ पन भी न होवे की
२८ मुझ पन सोक पन सोक होवे। सो मैं ने उसे वड़े यतन से भेजा की जव तुम लोग उसे फेन देष्पो तो आनंद कनो और
२९ जीसतें मेना भी सोक घटे। सो तुम लोग उसको पनभु में वड़े आनंद से गनहन कनो और ऐसों को पनतीसठीत समझो।
३० कयोंकी मसीही कानज के लीये वुह मनने पन था की मेने लीये तुमहानी सेवा की घटती को पुना कने अपने पनान को कुछ न समझा।

३ तीसना पनव।

१ अंत में हे मेने भाइयो पनभु में आनंद नहो की ऐकही वात तुमहें फीन फीन लीष्पना मेने लीये कलेस नहीं और तुमहाने
२ लीये कुसल है। कुतों से वचे नहो कुकनमीयों से पने नहो।
३ भोंन कननीहानों से अलग नहो। कयोंकी हम वुह ष्पतनः हैं जो आतमा से इसन की सतुत कनते हैं और मसीह यसु
४ में आनंद कनते हैं और देह का भनोसा नहीं कनते। पनंतु मैं देह का भनोसा नष्प सकता हुं जो और कोइ समझता है
५ की मेने देह के भनोसा के लीये कुछ है तो मैं अधीक। की आठवें दीन में ष्पतनः कीया गया इसनाइल के कुल में का वीनयमीन के पनीवान में का इवनानीयों का इवनानी वैवसथा
६ के वीष्पै में फनीसी। जलन में पुछो तो मंडली का संतावनेवाला
७ और वैवसथा के धनम के वीष्पै में नीनदोष्प। पनंतु जो वसतें

मेरे लाभ की थीं मैं उनही को मसीह के लीये टूटी समझा।
८ हां नीःसंदेह अपने परभु मसीह यसु के गयान की उतमता के वीष्पे में मैं समसत वसतुन को टूटी समझता ऊं मैं ने उसके लीये हर एक वसतु की टूटी सहली और उनहें कुडा की नाई
९ जानता ऊं की मसीह को लाभ में पाउं। और उस में पाया जाउं अपने ही धरम में नहीं जो वेवसथा से है परंतु उसके जो मसीह के वीसवास से है वुह धरम जो ईसर से वीसवास के दुवारा से
१० है। की मैं उसको और उसके जी उठने के पराकरम को और उसके संग दुष्पों में साझी होने को जानुं और उसकी मीरतु
११ की नाई कीया गया। की कीसी रीत से मैं जी उठने के पद
१२ लों पऊंचुं। यह नहीं की जैसा मैं पराप्त कर चुका अथवा सीध हो चुका परंतु पीछा कीये जाता ऊं की उसको धारन करुं
१३ जीसके लीये मसीह यसु से मैं धारन कीया गया ऊं। हे भाइयो मैं यह नहीं समझता की मैं पराप्त कर चुका ऊं पर इतना है की मैं उन वसतुन को जो पीछे हैं भुल भुल के उनके
१४ लीये जो आगे हैं वढ़ा ऊआ जाता ऊं। मैं मसीह यसु में ईसर के वड़े वुलावा के दांव के लीये हंडा के और पीछया
१५ जाता ऊं। सो जीतने हमों में पऊंचे ऊए हैं ऐसा मन रष्पें और जो कीसी वात में तुमहारा मन औरही होय ईसर तुमहों
१६ पर यह परकास करेगा। तीसपर भी जहां लों हमों ने पराप्त कीया है उसी वेवहार पर चलें और उनहीं वातों को मानें।
१७ हे भाइयो मेरे पसचातगामी होओ और उनहें जो ऐसे चलते
१८ हैं जैसा हम तुमहारे लीये वानगी हैं चीनह रष्पो। कयोंकी वऊतेरे चलते हैं जीनकी चरचा मैं ने तुमहों से वारंवार की और अव रो रो के कहता ऊं की वे मसीह के कुरस के
१९ सतरु हैं। उनका अंत नास है पेट उनका ईसर है उनकी
२० लजा उनकी वड़ाई है उनका सभाव लौकीक है। परंतु हमारा वेवहार सरग में है जहां से हम नीसतार करनीहार परभु यसु

२१ मसीह की वाट भी जोहते हैं। ईह अपने पराक्रम के कारज के समान जिस से वुह सभों को अपने वस में करसकता है हमारे नीकमे देह को वदल डालेगा की उसके तेजसी सरीर के समान होय।

४ चैाथा पत्र।

१ इस कारन हे मेरे अती पीरीय और लालसीत भाइयो मेरे आनंद और मुकुट हे अती पीरीय परभु में दीरढ़ता से
२ खड़े रहो। मैं अपुदीयः से और संतकी से वीनती करता हुं
३ की वे परभु में ऐकही मन हो रहें। और हे नीसकपट संगी मैं तेरी भी वीनती करता हुं की उन इसतीरीयों का जीनहों ने मेरे संग मंगलसमाचार की सेवा में परीसरम कीया कलीमन और मेरे और और संगी सेवकों के संग जीनके नाम जीवन
४ के पुसतक में हैं सहाय करु। परभु में सरवदा आनंद करो
५ फेर कहता हुं की आनंद करो तुमहारी धीरता समसत मनुष्यन को जानी जाय परभु समीप है। कीसी वात की
६ चींता न करो परतु हर ऐक वात में तुमहारी पराथना और
७ वीनती धनवाद के संग इसर से की जाय। और इसर की सांत जो सारी समझ से वाहर है तुमहारे अंतःकरन और
८ मन की रखवारी मसीह यसु के कारन करेगी। सो अव हे भाइयो जीतनी वसतें सच हैं जीतनी वसतें जोग हैं जीतनी वसतें नयाय की हैं जीतनी वसतें पवीतर हैं जीतनी वसतें पीरीय हैं जीतनी वसते सुनमान हैं जो कुछ गुन और कुछ
९ सतुत होवे तो इन वातों का समरन करो। और जीन वातों को तुमहों ने मुझ से सीप्पा और अंगीकार कीया और सुना और देप्पा उन पर चला तव सांत का इसर तुमहारे संग रहेगा।
१० परंतु मैं परभु में वहुत आनंदीत हुआ की अव अंत में तुमहारी चींता मेरे लीये फेर लहलहाती है तुम लोग तो आगे मेरे

११ लीये यींता में थे परंतु तुमहें अवसर न मीला। परंतु मैं कुछ याहके नहीं कहता कय़ोंकी मैं ने सीष्या है की जीस दसा में
१२ हूं उसी में संतोष्य करुं। मैं घटने जानता हूं और वढ़ने जानता हूं हर सथान में और सव़ वातों में मैं ने उपदेस पाय़ा है संतुसट होने में भुष्या होने में वढ़ने में और सहने में।
१३।१४ मसीह के सामरथ से मैं सव़ कुछ कर सकता हूं। तौसपर भी तुमहों ने भला कीय़ा की दुष्य में मेरा सहाय़ कीय़ा।
१५ कय़ोंकी हे फीलीपीय़ो तुम लोग तो जानते हो की मंगल समायार के आरंभ में जव़ मकदुनीय़ः से मैं नीकल आय़ा तव़ कीसी मंडली ने केवल तुमहारे देने लेने में मेरा सहाय़ न
१६ कीय़ा। कय़ोंकी तसलुनींकी में भी तुमहों ने मेरे परय़ोजन
१७ के लीये कुछ भेजा। य़ह नहीं की मैं दान याहता हूं परंतु
१८ याहता हूं की फल तुमहारे लीये भरपुर होय़। कय़ोंकी मेरे सव़ कुछ है और अधीक है मैं संपुरन हूं की तुमहारी भेजी हुइ व़सतु अपफरादीतस के हाथ से पाइ सुगंध और
१९ गराह्य व़लीदान जीस से इसर परसन है। परंतु मेरा इसर अपने ऐसवर्य़ के धन के समान तुमहारे हर ऐक परय़ोजन को
२० मसीह य़सु में भर देगा। अव़ हमारे पीता इसर के लीये
२१ सतुत नीत नीत होवे आमीन। मसीह य़सु में हर ऐक सीधों को नमसकार कहो भाइ लोग जो मेरे संग हैं तुमहें नमसकार
२२ कहते हैं। समसत सीध व़ीसेष्य करके वे जो कैसर के घराने
२३ के हैं तुमहें नमसकार कहते हैं। हमारे परभु य़सु मसीह का अनुग्रह तुम सभों पर होवे आमीन।

पुलुस की पतनी कुलसीश्रों के लीऐ

---

१ पहीला पनब्र।

१ इसन की इछा से ग्रसु मसीह का पनेनीत पुलुस श्रीन भाइ
२ तीमताउस। उन सीघों श्रीन मसीह में ब्रीसवासी भाइश्रों के लीश्रे जो कुलसी में हैं हमाने पीता इसन श्रीन पनभु ग्रसु
३ मसीह से अनुगीनह श्रीन यैन तुमहाने लीश्रे होवे। हम इसन का घंनबाद कनते हैं श्रीन हमाने पनभु ग्रसु मसीह के पीता से
४ तुमहाने लीश्रे नीत पनानथना कनते हैं। जब्र से हम ने मसीह ग्रसु में तुमहाना ब्रीसवास श्रीन समसत सीघों पन पनेम
५ सुना। उस आसा के कानन जो तुमहाने लीश्रे सनग पन घनी है जीसका ब्रननन तुमहों ने आगे मंगलसमाचान के सत ब्रचन
६ में सुना। जो तुम लों आश्रा जैसा समसत जगत में है जैसा की तुमहाने मघ में भी जीस दीन से तुमहों ने उसे सुना श्रीन इसन के अनुगीनह को सचाइ से जाना फल लावता है।
७ जैसा तुमहों ने हमाने पीनीश्र संगी सेवक इपाफनस से भी जो तुमहाने कानन मसीह का ब्रीसवासी सेवक है ऐसाही सीखा है।
८ उस ने तुमहाना आतमीक पनेम हम पन पनगट कीश्रा।
९ इस कानन हम ने भी जीस दीन से ग्रह सुना तुमहाने कानन पनानथना कनने से नहीं थमते श्रीन ब्रीनती कनते हैं की तुम लोग उसकी इछा के गश्रान से समसत बुघ में श्रीन आतमीक
१० समझ में भन जाश्रो। श्रीन तुमहानी चाल ऐसी हो जैसी

परभु के लोग होवे सब्र के। परसंन करते ऊए चैार हर ऐक अच्छे काम में फरलीत होओ चैार ईसर के गयान में बढ़ते
११ जाओ। उस के पराकरम के महातम के समान समसत धीरज
१२ चैार संतोष्य चैार आनंद से दीरढ़ता पाके। पीता की सतुत करते रहो जीसने हमको इस लोग कीया की परकास में
१३ सीधों के संग अधीकार के भागी होवें। उसी ने हमको अंधकार के पराकरम से छुड़ाया चैार अपने पीरीय़ पुतर क
१४ राज में लाय़ा। हम उसी में उसके लोड्ड के कारन से उधार
१५ अरथात पाप मोछ्यन पावते हैं। वुह उस अदीरीस ईसर का
१६ सरुप है चैार वुह सारी सरीसट से पहीलैांठा है। कय़ांकी उस से समसत ब्रसतें जो सरग चैार पीरथीवी पर हैं दीरीस चैार अदीरीस कय़ा सींहासन कय़ा अगय़ा कय़ा परभुता कय़ा सुष्टीय़ा सीरजी गई हैं समसत ब्रसतें उस से चैार उसके लीय़े
१७ उतपंन ऊई हैं। वुह सब्र से आगे है चैार उस में सभों की
१८ बसती है। चैार वुह देह का अरथात मंडली का सीर है वही आरंभ है चैार मीरतकन से पहीलैांठा है की समसत ब्रसतुन
१९ में वुह परधानता पावे। कय़ांकी उसे अच्छा लगा की सारी
२० संपुरनता उस में होये। चैार उसके करुस के लोड्ड के कारन से मीलाप करके समसत ब्रसतुन के मीला लेवे हां उसी से सब्र
२१ ब्रसतुन के कय़ा भुम पर कय़ा सरग पर अपने में मीला
२२ लेवे। चैार तुमहों के जो आगे परदेसी चैार कुकरम के कारन से मन में सत्रु थे उसने अब्र अपने सारीरीक देह में मीरतु के कारन से मीला लीय़ा की तुमहें अपनी दीरीसट में
२३ पवीतर चैार नीरदोष्य चैार नीसपाप ठहरावे। जो तुम लोग बीसवास में सथीर चैार दीरढ़ रहो चैार मंगलसमाचार की आसा से जीसे तुमहों ने सुना टल न जाओ जीसका उपदेस समसत सीरीसट के लीय़े जो सरग के नीचे है कीया गय़ा
२४ जीसका मैं पुलुस सेवक ब्रना ऊं। जो अब्र अपने उन दुष्यों में

जो तुमहाने कानन पीड़ीत होता हुं आनंद कनता हुं चौान मसीह के कलेसों की घटती उसके देह के अनथात मंडली के कानन
२४ अपने देह में भन देता हुं। जीसका मैं सेवक हुआ जैसा की यह मंडानपन इसन के चौान से मुझे तुमहाने लीये दीया गया
२५ की मैं इसन के व्रयन का संपुनन उपदेस कनुं। अनथात उस भेद को जो समयों से चौान पीढ़ीयों से गुपत नहा पनंतु अब उसके
२६ सीधों पन पनगट हुआ जीनसों पन इसन ने उस भेद की
२७ महीमा की ब्रहुताइ के जो अनदेसीयों में है पनगट कनने के ठहनाया जो मसीह तुमहों में महीमा की आसा है।
२८ हम उसी का उपदेस देके हन एक मनुष्य के चेतावते हैं चौान हन एक मनुष्य के समसत ब्रुध से सीखा देते हैं की हम हन एक
२९ मनुष्य के मसीह यसु में सीध कनके साष्पात कनें। उसी के लीये मैं भी उसके कानज कनने के समान जो मुझ में पनाकनम से कनता है पनीसनम से यतन कनता हुं।

२ दुसना पनत्र।

१ मैं याहता हुं की तुम लोग जानो की मैं तुमहाने चौान उनके कानन जो लाचोदीकीयः में हैं चौान उन सभों के कानन जीनसों ने सनीन में मेने सनुप के नहीं देखा कैसाही हहट उठावता
२ हुं। जीसतें उनका अंतःकनन सांत पावे की पनेम में चौान पनीपुननता के धन के समुह में बुने जायें की इसन अनथात
३ पीता के चौान मसीह के भेद के मान लेने के लीये। उस में ब्रुध
४ चौान गयान के समसत भंडान गुपत हैं। चौान मैं यह कहता हुं न होवे की कोइ फुसलावने की बात से तुमहें बहकावे।
५ कयोंकी यदपी मैं देह में अलग हुं पनंतु आतमा में तुमहाने संग हुं चौान तुमहाने बीध चौान दीनढ़ता के चौान मसीह
६ में तुमहाने ब्रीसवास के देखके आनंद कनता हुं। सो जैसा तुमहों ने मसीह यसु पनभु के गनहन कीया वैसी उस में यलन

७ चलो। उस में जड़ बांधके श्रीर बनाऐ जाके श्रीर जैसी तुमहें ने सीप्पा पाइ है बीसवास में सथीर हो जाश्रो श्रीर
८ उस में धंनबाद करते ऊऐ बढ़ते जाश्रो। सावधान रहो न होवे की कोइ तुमहें बीदग्रा के कारन से श्रीर बग्रनथ कपट से जो मनुप्प के कहावत के समान श्रीर लौकीक रीत के ऐसा
९ लुट न लेवे श्रीर मसीह के समान नहीं। कयोंकी उस में इसनत
१० की समसत संपुरनता देह सहीत बास करनहीं है। श्रीर तुम लोग उस में संपुरन हो जो सारी परभुता श्रीर पराकरम का
११ मसतक है। उस में तुम लोग भी बीना हाथ के प्पतनः से प्पतनः कीऐ गऐ हो देह के पापों को मसाही प्पतनः के कारन से
१२ तुमहें ने उतार डाला। उसके संग सनान में गाड़े गऐ जीस में तुम लोग भी उस इसर के सामरथ पर बीसवास लावने के कारन से जीसने उसको मीरतकन में से जीलाग्रा उसके संग जीलाऐ
१३ गग्रे। श्रीर उसने तुमहें जो अपराधों श्रीर अपने देह के अप्पतनः से मीरतक थे उसके संग ऐकठे जीलाग्रा की उस ने
१४ तुमहारे सारे अपराधों को छमा कीग्रा। श्रीर हमारे बीप्पै में हाथ के लीप्पे ऊऐ बीध को जो हम से बीपरीत था मीटा डाला श्रीर उसको अलग करके कुरुस पर कील से ठोंकदीग्रा।
१५ श्रीर परभुता श्रीर पराकरम को बीगाड़ के उसने उनहें पर
१६ जै करते ऊऐ परगट में उनको सवांग बनाग्रा। इस कारन प्पाने पीने के अथवा परब के अथवा अमावस के अथवा बीसराम
१७ के बीप्पै में कोइ तुमहारा बीचार न करे। की ये सब ग्रावने वाली बसतुन की परछाइं हैं परंतु देह मसीह का है।
१८ कोइ तुमहें अधीक दीनता श्रीर दुतों की पुजा करने से तुमहारे फल से नीसफल न करे की उन बसतुन में जीनहें उसने नहीं देप्पा घुसता है श्रीर अपने सारीरीक मन से बग्रनथ
१९ फुलता है। श्रीर मसतक को नहीं पकड़ता जीस से सारा देह बंद बंद श्रीर गांठ गांठ परतीपाल पाके श्रीर ऐकठे

२० जड़े जाके ईसर की बढ़ती से बढ़ता है। सो जो तुम लोग
संसारी रीत से मसीह के संग मरे हो तो क्यों उनके समान
२१ जो जगत में जीवते हैं ठहराए हुए के बस में हो। छू मत
२२ चीख मत हाथ न लगा। ये समसत बसतें बरते हुए बिगड़ती
जाती हैं और मनुष्यन की आगयाओं और उपदेसों के
२३ समान होती हैं। ये बसतें अपनी इच्छा की पूजा और
दीनताई में गयान के तुल्य देखी तो जाती हैं और देह का
अनादर करना और सरीर को संतुसटता के कुछ सनमान
के योग्य नहीं।

३ तीसरा परब।

१ सो जो तुम लोग मसीह के संग जी उठे हो तो ऊपर की
बसतुन को खोजो जहां मसीह ईसर के दहीने ओर बैठा है।
२ ऊपर की बसतुन पर चीत लगाओ और उन बसतुन पर नहीं
३ जो भूम पर हैं। क्योंकी तुम लोग मर गये हो और तुमहारा
४ जीवन मसीह के संग ईसर में छीपा है। जब मसीह जो
हमारा जीवन है परगट होगा उसके संग तुम लोग भी ऐसरय
५ में परगट होगे। इस कारन अपने इंद्रीयों को जो भूम पर
हैं अरथात बैभीचार अपवीतरता अतीमोह बुरी लालसा
६ की इच्छा और लोभ को जो मूरत पूजा है मारा करो। उनहीं
के कारन से ईसर का क्रोध आगया भंग करने वाले पुत्रों पर
७ उतरता है। और आगे जब तुम लोग उन में जीते थे उन
८ में तुम लोग भी चलते थे। पर अब तुमहों ने इन सभों को
अरथात रीस और क्रोध और दरोह और पाखंड और
९ फूहर बात चीत को अपने मुंह से नीकाल फेंका है। एक
दूसरे से झूठ न बोलो की तुमहों ने पुरानी मनुष्यता को उसकी
१० करनी समेत उतार फेंका। और नवीन को जो गयान
में अपने सीरजनहार के रूप के समान नवीन हुई है पहीना।

११ वहां न यूनानी है न यहूदी न खतनः न अखतनः न मलेछ न
१२ सकुती न बंध न नीरबंध पर मसीह सब और सब में है। सो
ईसर के चुने हुए पवीतर और पीआरे के समान अंतःकरन
की अत दया नमरता का मन कोमलता और अती सहाव को
१३ पहीन लेओ। जो कोई कीसी से झगड़ा रखे तो एक दुसरे पर
धीरज करे और एक दुसरे पर छमा करे जैसा मसीह ने भी
१४ तुम पर छमा कीआ वैसाही तुम लोग भी करो। और इन
१५ सभों से अधीक परेम को जो सीधता का बंधन है। ईसर
का कुसल तुमहारे अंतःकरन में राज करे जीस में तुम लोग
१६ एक देह होकर बुलाए गए हो धंनमान करो। मसीह के
बचन तुमहों में समसत गयान में अधीकाई से बसें की तुम
लोग एक दुसरे को सीखावते और उपदेस करते गान और
भजन और सुभगीत अपने अंतःकरन में अनुगीरह के संग
१७ परभु के लीये गाते जाओ। और जो कुछ तुम लोग बाचा
और कोरीआ में करते हो परभु यीसु के नाम में करो और
उसी के ओर से ईसर और पीता की सतुत कीआ करो।
१८ हे पतनीओ अपने अपने पती के बस में रहो जैसा परभु में
१९ जोग है। हे पतीओ अपनी पतनीओं को पीआर करो और
२० उन से कडुआ न होओ। हे बालको तुम लोग अपने माता
पीता की हर एक बात में आगया मानो कयोंकी परभु को
२१ यही भावता है। हे पीतरो अपने बालकों को मत कलपाओ
२२ न होवे की वे उदास हो जायें। हे सेवको तुम लोग उनकी जो
सरीर के बीषै में तुमहारे सामी हैं समसत बातों में आगया
मानो पर मनुष्यन के परसन करनीहारों की नाई दीखाने को न
२३ हो परंतु मन की सीधाई से ईसर से डरते हुए। और जो कुछ
करो सो अंतःकरन से जैसा परभु के लीये करो और मनुष्यन
२४ के लीये नहीं। यह जानते हुए की तुम लोग परभु से
अधीकार का फल पाओगे कयोंकी तुम लोग परभु मसीह की

२५ सेवा करते हो। पर वह जो अपराध करता है सो अपने अपराध के समान पावेगा और मनुष्यत पर दृष्टि न होगी।

४ चौथा पत्र।

१ हे स्वामीओ सेवकों के विषै में धरम और न्याय करो यह
२ जानके की तुमहारा भी एक स्वामी स्वर्ग में है। प्रार्थना
३ कीए जाओ और उस में धन्यबाद से चौकस रहो। और उसके संग हमारे लीऐ भी प्रार्थना करो की ईश्वर हमारे लीऐ उच्चारन का दुवार खोले की मैं मसीह के भेद को जीसके
४ लीऐ मैं बंद में भी हुं बरनन करुं। की जैसा मुझे उचीत
५ है वैसा उसको प्रगट करुं। समय को बहुमूल्य जानके उनके
६ संग जो बाहर हैं बुध से चलो। तुमहारी बात सर्बदा अनुग्रह से मीली रहे और लोन से स्वादीत होय जीसतें तुम लोग जानो की हर एक को क्योंकर उत्तर दीआ चाहीऐ।
७ तष्षीकस जो पीयारा भाई और वीसवासी सेवक और प्रभु की सेवा में साझी है मेरे समसत समाचार को तुमहें सुनावे-
८ गा। जीसको मैं ने इस लीऐ तुमहारे पास भेजा है की वुह तुमहारी दसा देख लेवे और तुमहारे मन को सांत देवे।
९ उसके संग ओनीसमस को जो वीसवासी और पीरीय भाई है जो तुमहों में का है भेज दीआ वे तुमहें यहां के समसत संदेस
१० पहुंचायेंगे। अरसतरख्स मेरा संगी बंधुआ तुमहें नमसकार कहता है और बरनबास का भांजा मरकुस जीसके वीषै में तुमहों ने आग्या पाई जों वुह तुमहारे पास आवे तो उसको
११ ग्रहन करो। और ईसु जो युसतस कहावता है जो खतनः कीऐगयों में से है केवल ये ईश्वर के राज के कारन मेरे संगी
१२ सेवक हैं और मेरे लीऐ सांत के कारन हुए हैं। अपाफरास जो तुमहों में से मसीह का दास है तुमहों को नमसकार कहता है और वुह तुमहारे कारन सदा बड़े परीस्रम से

पनानथना कनता है की तुम लोग इसन की समसत इछा में सोच
१३ श्रौन संपुनन होके सथीन नहो। कयोंकी मैं उसका साप्पो ऊं
की वुह तुमहाने श्रौन उनके का नन जो लाउदीकीय़ा में श्रौन
१४ जो हीनुपलस में हैं वृऊत जलीत है। लुका पीनीय़ वैद
१५ श्रौन दामास तुमहें नमसकान कहते हैं। तुम लोग उन
भाइयों को जो लाउदीकीय़ा में हैं श्रौन नमफास को श्रौन
१६ मंडली को जो उसके घन में है नमसकान कहो। श्रौन जव
य़ह पतनी तुमहों में पढ़ी जाय़ तो ऐसा कनो की लाउदीकीय़ों
की मंडली में भी पढ़ी जाय़ श्रौन लाउदीकीय़ा की पतनी तुम
१७ लोग भी पढ़ो। श्रौन श्रनकीपस से कहो की तु उस सेवकाइ
को जो तु ने पनभु से पाइ है चैाकसी से नप्प की तु उसे
१८ संपुनन कने। मुह पुलुस के हाथ से नमसकान श्रौन मेने
वंधनों को समनन कनो श्रनुगीनह तुमहों पन होवे श्रामीन।

पुलुस की पहीली पतनी तसलुनीक्षों की

---

१ पहीला पनव।

१ पलुस श्रीन सलवानीस श्रीन तीमताउस तसलुनीक्षों की मंडली को जो पीता इसन श्रीन पनभु यसु मसीह में है अनुगीनह श्रीन कुसल हमाने पीता इसन श्रीन पनभु यसु
२ मसीह के श्रीन से तुमहाने लीये होवे। हम तुमहाने कानन इसन की सतुत सनवदा कनते हैं श्रीन अपनी पनानथना में
३ तमहें समनन कनते हैं। अपने पीता इसन के आगे तुमहाने वीसवास के कानज श्रीन पनेम के पनीसनम श्रीन सतोप्प की आसा को जो हमाने पनभु यसु मसीह में है नीत समनन कनते
४ हैं। हे पीनीय भाइयो हम जानते हैं की तुम लोग इसन के
५ युने हुए हो। कयोंकी हमाना मंगलसमायान केवल वयन में नहीं पनंत सामनथ में श्रीन घनमातमा में श्रीन वड़े नीसयय में तुमहों में आया जैसा की तुम लोग जानते हो की हम
६ तुमहाने लीये तुमहों में कैसे थे। श्रीन तुम लोग उस वयन वड़े कलेस के संग घनमातमा के आनंद से पाकन हमाने श्रीन
७ पनभु के पीछे हो लीये। यहां लों की तुम लोग मकदुनीयः श्रीन अप्पाइयः के समसत वीसवासीयों के लीये वानगी वने।
८ कयोंकी तुमहों से पनभु के वयन का सवद केवल मकदुनीयः श्रीन अप्पाइयः में नहीं पहुंया पनंतु हन एक सथान म

तुमहारा वीसवास जो इसर पर है फैलगया यहां लों की
९ हमारे कहने का पनयोजन नहीं। कयोंकी वे आप हमारे
वीष्ये में वतावते हैं की हमारा पनवेस करना तुमहों में कैसा
ऊआ और तुम लोग कयोंकर मुरतीन से इसर के आर फीरे
१० की जीवते और सये इसर की सेवा करो। और उसके पुतर
अरथात यसु की जीसे उसने मीरतकन में से जीलाया वाट
जोहो की सरग पर से आवे जो हमें को आवनीहान करोध
से वयावता है।

२ दुसरा पत्र।

१ हे भाइयो तुम लोग तो आप जानते हो की हमारा पनवेस
२ करना तुमहों में वग्रनथ न था। पनंतु जैसा तुम लोग जानते हो
की हम आगे फीलीपी में दुष्‍ख और दुरगती उठाके अपने इसर
में नीरभै थे की इसर का मंगलसमायार वड़े वीवाद के संग
३ तुमहों से कहते थे। कयोंकी हमारा उपदेस करना भरमाने
४ और अपवीतरता और छल से न था। पनंतु जैसा इसर ने
हमें मंगलसमायार सैांपने को जोग जाना वैसाही हम वोलते
हैं न जैसा की मनुष्यन को परसन करते हैं पनंतु जैसा इसर को
५ जो हमारे अंत:करनों को परष्यता है। जैसा तुम लोग जानते
हो की हम फुसलाने की वात से कधीं न वोलते थे न लोभ के
६ आड़ में इसर साष्यी है। न मनुष्य से न तुमहों से न और
कीसी से वड़ाइ ढुंढ़ते थे यदपी हम मसीह के परेरीतों के
७ समान तुमहों पर वोझ डाल सकते थे। पर हम तुमहारे मध
में ऐसे कोमल थे जैसे दाइ जो अपने वालकों की सेवा करती
८ है। सो हम तुमहारे ओर अत दयावान होके चाहते थे की
केवल इसर के मंगल समायार को नहीं पनंतु अपने पनान
को भी तुमहें देवें इस कारन की तुम लोग हमारे पीनीय थे।
९ कयोंकी हे भाइयो तुम लोग हमारे परीसरम और कसट को

समनन कनते हे। कयोंकी हम इस जोग्गे की तुमहें में कीसी पन व्रोह्य न होवें नात दीन हाथ से पनीसनम कनके तुमहें में
१० इसन के मंगलसमाचान का उपदेस कनते थे। इसन चोन तुम लोग साप्पी हो की कयाही पवीतनताइ से चोन सयाइ से चोन नीनदोप्पता से हम लोग तुम व्रीसवासीयों में नीनवाह
११ कनते थे। जैसा की तुम लोग जानते हो की हम तुमहें में हन एक को कयोंकन घीनज चोन सांत देते चोन उपदेस
१२ कनते थे ऐसे जैसे पीता व्रालकों को। की तुमहानी याल इसन के व्रजाए जुऐ के लोग होवे जीसने तुमहें चपने नाज
१३ चोन ऐसनय में व्रुलाया। इस कानन हम नीनंतन इसन का घंन मानते हैं की जव्र तुमहें ने इसन के व्रयन को जीसे तुमहें ने हम से सुना गनहन कीया उसे मनुप्पन के व्रयन के समान नहीं पनंतु इसन के व्रयन के समान की वुह सयसुय है गनहन कीया वुह तुम व्रीसवासीयों में कानज कनता है।
१४ कयोंकी भाइयो तुम लोग इसन की मंडलीयों के जो यहूदीयः में यसु मसीह में हैं सानग पन चले कयोंकी तुमहें ने भी चपने
१५ देसीयों से वैसे दुप्प पाये जैसे उनहें ने यहूदीयों से। जीनहें ने पनभु यसु को चोन अपने आगमगयानीयों को मान डाला चोन हमें को संताया है चोन वे इसन को पनसन नहीं कनते
१६ चोन समसत मनुप्पन के व्रीनोधी हैं। की अपने पाप को नीत भनपुन कनें हमें अंनदेसीयों को व्रयन कहने से की वे उधान पावें व्रनजते हैं कयोंकी इसन का कनोध उनपन अतयंत लों
१७ पहुंया। पनंतु हे भाइयो हमने तुमहें से थोड़ी व्रेन लों साप्पात में अलग कीयाजाके चोन अंतःकनन में नहीं व्रहुत अभीलास से अतयंत जतन कीया की तुमहाना मुंह देप्पें।
१८ इस कानन हमने अनथात मैं पुलुस ने एक अथवा दो व्रान याहा की तुमहाने पास आउं पन सैतान ने हमें नोका।
१९ कयोंकी हमानी आसा अथवा आनंद अथवा आनंद कनने का

मुकुट क्या है क्या तुम लोग हमारे परभु यसु मसीह के आते
१० हुए उसके सनमुष्य नहीं हो। क्योंकी तुमहीं हमारी बड़ाई
और आनंद हो।

३ तीसरा पत्र।

१ इस कारन जब हम आगे सह न सके तो हम मान गये की
२ असीनः में अकेले छोड़े जायें। और हमने अपने भाई और
इसर के सेवक और मसीह के मंगलसमाचार में हमारे संगी
परीसरमी तीमताउस को भेजा की तुमहों को दीरढ़ करे और
३ तुमहारे बीसवास के बीष्ये में सांत देवे। की कोई इन कलेसों
के कारन से न डगमगावे क्योंकी तुम लोग आप जानते हो की
४ हम लोग इनहीं के लीये ठहराये गये हैं। क्योंकी जब हम
तुमहारे पास भी थे तब हमने तुमहें आगे कहा की हम दुष्य
५ पावेंगे जैसा की वही हुआ और तुम लोग जानते हो। क्योंकी
इसी कारन जब मैं आगे सह न सका तो तुमहारा बीसवास
बुझने को भेजा न होवे की तुमहें परीछक ने कीसी रीत से
६ भरमाया हो और हमारा परीसरम ब्यरथ हो जाय। पर
अब जब तीमताउस तुमहों से हमारे पास फीर आया और
तुमहारे बीसवास और परेम का अछा संदेस लाया और की
तुम लोग सदा हमारा अछा समरन करते हो और हमारे
७ देष्यने के अती अभीलासी हो जैसे हम भी तुमहारे। इस
लीये हे भाइयो हमने अपने समसत दुष्य और सोक में
८ तुमहारे बीसवास के कारन से सांत पाई। क्योंकी अब हम
जीते हैं जो तुम लोग परभु में सथीर रहो क्योंकी उन समसत
९ आनंद के लीये जीस से हम तुमहारे लीये इसर के आगे
आनंद करते हैं तुमहारे बीष्ये में क्योंकर धंन मान सकें।
१० हम रात दीन अतयंत धयान से पराथना करते हैं की
तुमहारा मुंह देष्यें और तुमहारे बीसवास की घटती को

११ भन देवें। श्रीर इसन श्रीर हमारा पीता श्राप श्रीर परभु ग्रसु मसीह ऐसा करे की हमारा जाना तुमहारे श्रीर होवे।
१२ श्रीर परभ्रु तुमहों के। श्रापुस की परीत में श्रीर सभों में जैसी
१३ हमको तुमहों से है वढ़ावे श्रीर श्रधीक करे। ग्रहां लों की तुमहारे श्रंत:करन दीरढ़ता पावें की जव हमारा परभु ग्रसु मसीह श्रपने समसत साधुन के संग श्रावे तव तम लोग इसर के श्ररथात हमारे पीता के श्रागे पवीतरता में नीरदोष्प नीकलो।

४ थोथा पत्र।

१ सो जो रह गया है हे भाइग्रो हम तुमहों से परभु ग्रसु के कारन वीनती करते हैं श्रीर उपदेस देते हैं की जैसा तुमहों ने हम से पाया की कग्रोंकर चला चाहीग्रे श्रीर इसर को परसन
२ कीग्रा चाहीग्रे सो उस में श्रधीक वढ़ते जाश्रो। कग्रोंकी तुम लोग जानते हो की हम ने तुमहों के। परभु ग्रसु के श्रोर से
३ कग्रा कग्रा श्रगग्रा दी। कग्रोंकी इसर की इछा तुमहारी
४ पवीतरताइ है की तुम लोग वीभीचार से वचे रहो। की हर ऐक तमहों में से जाने की श्रपने श्रपने पातर के। पवीतरता
५ से श्रीर परतीसठा से रप्पे। श्रीर कामाभीलास में श्रंनदेसीग्रों
६ की नाइं नहीं जो इसर के। नहीं पहीचानते हैं। की कोइ श्रपने भाइ से धुरतता श्रीर छल न करे कग्रोंकी परभु समसत ऐसों का पलटा लेगा जैसा की हम ने श्रागे भी तमहों से कहा
७ श्रीर साप्पी दी। कग्रोंकी इसर ने हमको श्रपवीतरता में
८ नहीं परंतु श्रपवीतरता में वुलाग्रा है। इस कारन जो कोइ श्रवगग्रा करता है सो मनुप्प की नहीं परंत इसर की जीसने श्रपना पवीतर श्रातमा भी हमें दीग्रा श्रवगग्रा करता है।
९ परंत भाइ कीसी परीत के वीप्पे में तुम लोग श्राधीन नहीं की कोइ तुमहें लीप्पे कग्रोंकी तुमहों ने श्राप श्रापस की परीत

१० में इसन से सौप्या पाइ। श्रीन नीसयय़ तुम लोग उन सारे भाइय़ों से जो समसत मकदुनीय़ः में हैं ऐसाही कनते हो परंतु हे भाइय़ो हम तुमहानी बीनती कनते हैं की तुम लोग
११ अधीक बढ़ते जाओ। श्रीन जीस पनकार से हमने तुमहें अगय़ा की, की तुम लोग यैन से नहो श्रीन की अपने अपने काम काज कनने में श्रीन अपने ही हाथों से कानज कनने
१२ में चुन से नहो। जीसतें तुम लोग उनहों के आगे जो बाहन
१३ हैं पनतीसठा से यलो श्रीन कीसी के आचीन न होश्रो। परंतु हे भाइय़ो मैं नहीं याहता की तम लोग उनके बीष्पे में जो सो गय़े हैं अनजान नहो की तुम लोग श्रीनों के समान जो
१४ नीनास हैं सोक न कनो। कय़ोंकी जो हम बीसवास कनें की य़सु मुश्रा श्रीन उठा ऐसाही वे भी जो मसीह में सोए हैं उसके
१५ संग इसन ले आवेगा। इस कानन हम तुमहें परभु के बयन से य़ह कहते हैं की हम जो परभु के आवने के समय़ में जीवते
१६ होंगे उनहों को जो सो गय़े हैं न नोकेंगे। कय़ोंकी परभु आप घुम से परघान दुत के सब्द के संग अनथात इसन के ननसींगे के साथ सनग पन से उतनेगा श्रीन जो मसीह में मुए हैं पहीले
१७ उठेंगे। उसके पीछे हमों में से वे जो जीवते होंगे उन सब समेत मेघों पन हट उठाए जाय़ेंगे की आकास में परभु से
१८ भेंट कनें सो हम परभु के संग सनबदा होंगे। इस लीय़े तुम लोग इनहीं बातों से एक दुसने को सांत देउ।

५ पांयवां पनब्र।

१ परंतु हे भाइय़ो तम लोग उसके आघीन नहीं की समय़ों
२ श्रीन कालों का समायान मैं तुमहें लीष्पुं। कय़ोंकी तम लोग नीसयय़ से जानते हो की परभु का दीन ऐसा आवेगा जैसा
३ नात को योन आता है। क्य़ोंकी जब लोग कहेंगे की कुसल श्रीन बयाव तब जीस नीत से गनभनी पन पीन आ जाती है

४ उन पन आकसमात नास आवेगा और वे न वचेंगे। पनंतु तुम लोग हे भाइयो अंधकान में नहीं हो की वुह दीन चोन
५ की नाइं तुमहें आ घेने। तुम सब के सब पनकास के पुतन और दीन के संतान हो हम नात के नहीं और न अंधकान
६ के हैं। इस कानन औनों की नाइं न सोवें पनंतु जागें और
७ चौकस नहें। कयोंकी जो सोते हैं सो नातही को सोते हैं और जो मतवाले होते हैं सो नातही को मतवाले होते हैं।
८ पनंतु हमें जो दीन के हैं चाहीये की चौकस नहें और वीसवास और पनेम का झीलम और उधान की आसा का टोप पहीनें।
९ कयोंकी इसन ने हम को कनोध के लीये नहीं पनंतु इस लीये ठहनाया की हम अपने पनभु यसु मसीह से उधान पनापत
१० कनें। वुह हमाने कानन मुआ की हम लोग कया जागते
११ कया सोते एकठे उसके संग जीयें। इस लीये तुम लोग एक दुसने को सांत देओ और एक दुसने को सुधानो जैसा तुम लोग
१२ कनते भी हो। और हे भाइयो हम तुमहों से वीनती कनते हैं की तुम लोग उनको जो तुमहों में पनीसनम कनते हैं और पनभु के कानज में तुमहाने पनधान हैं और तुमहों को
१३ चेतावते हैं जान जाओ। और उनके कानज के लीये पनेम से उनका वहुत आदनभाव कनो और आपुस में मीले नहो।
१४ और हे भाइयो हम तुमहें उपदेस कनते हैं की तुम मगने लोगों को चेता देओ नीनवल मनों को सांत देओ दुनवलों को
१५ संभालो और सभों से संतोखी हो। देखो कोइ कीसी से वुनाइ की संती वुनाइ न कने पनंतु तुम लोग आपुस में और
१६ सभों से भला वेवहान कनो। सनवदा आनंद कनते नहो।
१७।१८ नीनंतन पनानथना कनो। हन एक वात में धंन माना कनो कयोंकी तुमहाने वीखे में मसीह यसु में इसन की यही
१९।२० इछा है। आतमा को मत वुझाओ। आगम कहने
२१ का अपमान न कनो। सव वातों को पनखो अछे से अछे

२२ को थांम लेओ। समसत वुनाइ के सनुप से पने नहो।
२३ कुसल ही का इसन आपही तुमहो को व़ाल व़ाल पवीतन
कने औान तुमहाना समसत आतमा औान जीव औान देह
हमाने पनभु य़सु मसीह के आने लें नीनदोष्पता से नहे।
२४ जीसने तुमहें वुलाय़ा वुह वीसवास के जोग है वुह ऐसाही
२५।२६ कनेगा। भाइय़ो हमाने कानन पनानथना कनो। औान
२७ साने भाइय़ों को पवीतन युमा लेके नमसकान कहो। मैं तुमहें
पनभु की कीनीय़ा देता हुं की य़ह पतनी साने पवीतन भाइय़ों
२८ में पढ़ी जाय़। अव़ हमाने पनभु य़सु मसीह का अनुगीनह
तुमहों पन होवे आमीन।

पुलुस की दुसनी पतनी तसलुनीय़ों को

---

१ पहीला पनव़।

१ पुलुस श्रीान सलवानीस श्रीान तीमताउस तसलुनीय़ों की मंडली को जो हमाने पीता इसन श्रीान पनभु य़सु मसीह में
२ हैं। हमाने पीता इसन श्रीान पनभु य़सु मसीह के श्रीान से
३ अनुगीनह श्रीान कुसल तुमहाने लीय़े होवे। हे भाइय़ो उचीत है की हम तुमहाने लीय़े सनव़दा इसन का धनव़ाद कनें इस लीय़े की तुमहाना व़ीसवास अतय़ंत व़ढ़ता जाता है श्रीान तुमहों में हन ऐक का पनेम आपुस में अधीक होता है।
४ य़हां लों की हम आप तुमहाने संतोष्प श्रीान व़ीसवास के लीय़े तुमहाने समसत दुष्पों श्रीान कलेसों में जो तुम लोग सहते हो
५ इसन की मंडलीय़ों में तुमहानी व़ड़ाइ कनते हैं। जो इसन के धनम नय़ाय़ का पनगट लछन होगा की तुम लोग इसन के नाज के जोग गीने जाश्रो जीसके लीय़े तुम लोग दुष्प भी पावते
६ हो। कय़ोंकी इसन के समीप य़ह जथानथ है की उनहों को
७ जो तुमहें कलेस देते हैं कलेस का पनतीफल देवे। श्रीान तुमहों को जो कलेस पावते हो हमाने संग चैन देवे की जव़ पनभु य़सु
८ मसीह सनग से अपने पनाकनमी दुतों के संग। धधकती आग में पनगट होवे श्रीान उनहों से जो इसन को नहीं पहीचानते श्रीान जो हमाने पनभु य़सु मसीह के मंगलसमाचान को नहीं मानते

९ पलटा लेवे। की वे परभु के सनमुष्य से श्रीर उसके पराक्रम
१० के तेज से अनंत वीनास से ताड़ना पावेंगे। जब वुह अपने
साधुन में पैसनयमान होने को आवेगा श्रीर समसत वीसवासीयों
११ में आसयनज का कारन होगा। सो हम तुमहारे लीये सदा
परारथना करते हैं की हमारा इसर तुमहें वुलावने के जोग
जाने श्रीर अपनी भलाइ की मनमान इछा को श्रीर वीसवास
१२ के कारज को सामरथ से पुरा करे। की हमारे इसर श्रीर परभु
यसु मसीह के अनुग्रीरह के समान हमारे परभु यसु मसीह का
नाम तुमहों में पैसनयमान होवे श्रीर तुम लोग उस में।

२ दुसरा पत्र।

१ अब हे भाइयो हमारे परभु यसु मसीह के आवने के श्रीर
उसके समीप हमारे एकठे होने के कारन से हम तुमहारी
२ वीनती करते हैं। की तुमहारा मन सोघर टल न जाय अथवा
व्याकुल न होवे न तो आतमा से न वचन से न पत्री से जैसा
३ की हमारे श्रोर से है ऐसा की मसीह का दीन समीप है। कोइ
तुमहें कीसी रीत से छल न देवे कयोंकी वुह दीन न आवेगा
परंतु जब की पहीले भ्रनसट होना आरंभ होवे श्रीर वुह पाप
४ का जन अरथात नास का पुत्र परगट होवे। जो रोकता है
श्रीर अपने को समसत से जो इसर कहावता है अथवा परार-
थना की जाती हैं वढ़ावता है यहां लों की वुह इसर के समान
इसर के मंदीर में वैठता है श्रीर अपने को दीष्पाता है की मैं
५ इसर हुं। कया तुमहें चेत नहीं की तुमहारे संग होतेहुए मैं
६ ने तुमहें ये वातें कहीं। अब तुमलोग जानते हो की अपनेही
७ समय पर परगट होने में कया उसे रोकता है। कयोंकी वुराइ
का भेद तो अब से कारज करता है परंतु एक है जो रोकता है
८ जब लों वुह पंथ से अलग कीया जाय। श्रीर तब वुह दुसट
परगट होगा जीसे परभु अपने मुंह के सांस से भसम करेगा

९ श्रीन अपने श्रावने के तेज से व्रीनास कनेगा। जीसका श्रावना सैतान के कीये के समान समसत सामनथ श्रीन लछन श्रीन झुठे
१० श्रासचनजों से है। श्रीन समसत नीत के अधनम के छल के संग उनहों में जो नास होंगे इस कानन की उनहों ने सयाइ के
११ पनेम को जीस से वे व्रयाये जाते गनहन न कीया। श्रीन इसी कानन से इसन उनके पास छल की सकती को भेजेगा जीसते वे
१२ झुठ पन व्रीसवास लावें। की वे सव्र जो सत पन व्रीसवास न लाये
१३ पनंतु अधनमता से पनसंन थे दंड पावें। पनंतु हे भाइयो पनभु के पीनीय उचीत है की हम तुमहाने कानन सनव्रदा इसन का धंन माना कनें इस कानन की इसन ने श्रानंभ से श्रातमा की पवीतनता से श्रीन सयाइ पन व्रीसवास लाने से तुमहें उधान
१४ के लीये युना। जीसके लीये उसने तुमहें हमाने मंगलसमायान के दुवाना से व्रुलाया की हमाने पनभु यसु मसीह का ऐसनय
१५ पनापत कनो। सो इस कानन हे भाइयो सथीन नहो श्रीन उन व्रातों को जो तुमहें सैांपी गइ जो तुमहों ने व्रयन से अथवा
१६ हमाने गनंथ से सीप्पीं थामें नहो। अव्र हमाना पनभु यसु मसीह श्राप श्रीन हमाना पीता इसन जीस ने हमें पीयान कीया श्रीन हमें अनुगनह के दुवाना से अनंत सांतन श्रीन अछी श्रासा दी।
१७ तुमहाने मन का सांती देवे श्रीन तुमहों को हन एक अछे व्रयन श्रीन कनम में दीढ़ कने।

३ तीसना पनव्र।

१ सो अंत में हे भाइयो हमाने लीये पनानथना कनो की इसन का व्रयन फैले श्रीन ऐसी महीमा पावे जैसी तुमहों में है।
२ श्रीन की हम अव्रीयानी श्रीन दुसट मनुप्पन से व्रय जावें कयें-
३ की सव्र व्रीवास नहीं नप्पते। पनंतु पनभु व्रीसवास के जोग है
४ वुह तुमहों को दीनढ़ कनेगा श्रीन दुसट से व्रयावेगा। श्रीन तुमहाने कानन पनभु पन हमाना भनोसा है की तुम लोग उन

अगया़ओं पन जो हम तुमहें देते हैं यलते हो औान यलोगे।
५ औान पनभु तुमहाने अंतःकननों को इसन के पनेम में औान सं-
६ तोष्प से मसीह की व्राट जोहने में तमहों को सोष्पावे। पनंतु हे भाइयो हम अपने पनभु यसु मसीह के नाम से तुमहें अगया़ कनते हैं की हनऐक भाइ से जो अननीत से यलता है औान उसे सैांपी ऊइ सीष्पा का जो उसने हम से पाइ नहीं मानता
७ अलग नहो। कयोंकी तुम लोग आप जानते हो की हमानी नाइं कयोंकन यला याहीये कयोंकी हम तो तुमहों में अन
८ नीत से न नहते थे। औान कीसो की नोटी सेंत न ष्पाते थे पनंतु पनीसनम से नात दीन कानज कनके की हम कीसी पन तुमहों
९ में से भान न होवें। इस कानन नहीं की हम को सामनथ नहीं पनंतु की हम आप को तुमहाने लीये व्रानगी ठहनावें की तुम
१० हमानी नाइं यलो। कयोंकी जव्र हम तुमहाने संग भो थे तव्र हम ने तुमहें यह अगया़ की थी की जो कोइ काम न कने सो
११ भोजन न पावे। हम सुनते हैं की कइ ऐक तुमहों में से अन नीत से यलते हैं कोइ काम काज नहीं कनते पनंतु औानों के
१२ कानज में उलहते हैं। हम पनभु यसु मसीह से ऐसों को अगया़ देते हैं औान येतावते हैं की वे युपयाप से कानज कनके अपनी
१३ ही नोटी ष्पावें। औान हे भाइयो तुम भले कानज कनने में
१४ ढील न कनो। पन जदी कोइ हमानी व्रात को जो इस पतनी में हैं न माने तो उसे यीनह नष्पीयो औान उसकी संगत न
१५ कनीयो जीसतें वुह लजीत होवे। तथापी उसको व्रैनी की नाइं
१६ मत समुझीयो पनंतु भाइ के तुल यीता दीजीयो। अव्र कलयान का पनभु तुमहों को समसत नीत से सनव्रदा कलयान देवे
१७ पनभु तुम सभों के संग होवे। मेंने ही हाथ के लीष्पे से सुह पुलुस का नमसकान जो हन ऐक पतनी में यीनह है वैसा मैं
१८ लीष्पता ऊं। हमाने पनभु यसु मसीह का अनुगीनह तुम सभों पन होवे आमीन।

पुलुस की पहीली पतनी तीमताउस को।

१ पहीला पनब्।

१ हमाने मोप्पादाता इसन ग्रौन हमानी आसा पनभु य़सु मसीह के ठहनाए ऊए के समान पुलुस य़सु मसीह का पनेनीत।
२ व़ीसवास में सच्चे पुतन तीमताउस को अनुगीनह दय़ा ग्रौन कुसल हमाने पीता इसन ग्रौन हमाने पनभु य़सु मसीह से
३ होवे। जैसा मैं ने मकदुनीय़ः में जाते ऊए तुझ से व़ीनती की थी की अफसस में ठहनीय़ो की तु कीतनों को अगय़ा
४ कने की नय़ा उपदेस न सीप्पावें। ग्रौन कहानीय़ों ग्रौन अनंत व़ंसाउनीय़ों पन मन न लगावें जो व़ीवाद का व़ीप्पै होता है
५ ग्रौन व़ीसवास में इसन की भकती व़ढ़ाने में नहीं। पनंतु अगय़ा का अभीपनाय़ पनेम पवीतन अंतःकनन से ग्रौन अछे
६ व़ीवेक ग्रौन नीसकपट व़ीसवास से है। जीस से कीतने भटक
७ के अननथ कथनी के ग्रौन फीने हैं। की व़ैव़सथा के उपदेसक होने की इछा नप्पके नहीं व़ुझते की हम कय़ा कहते हैं ग्रौन
८ कीसके व़ीप्पै में व़चन देते हैं। पनंतु हम जानते हैं की व़ैवसथा अछी है य़दी मनुप्प उसे उचीत नीत से कने।
९ य़ह जानके की व़ैवसथा धनमी मनुप्प के लीय़े नहीं पनंतु व़ैवसथा हीन ग्रौन अगय़ा भंगकनीनहान अधनमी ग्रौन पापीय़ों के लीय़े अपवीतन ग्रौन ढीठ के लीय़े ग्रौन पीतन घातकों ग्रौन मातन घातकों ग्रौन मनुप्प घातकों के लीय़े।

१० ब्रैभीयारीयों और परुष्य गामीयों और परुष्पन के चोरों और मीथ्यावादीयों और झुठी कीरीया पानेवालों के कारन और जो उन से और कोइ ब्रसत जो पने उपदेस से उलटी होवे उनके
११ कारन है। घंनमान इसन के तेजोमय मंगलसमाचान के
१२ समान जो मुझे सौंपा गया। और मैं अपने परभु मसीह यसु का जीसने मुझे सामरथ दीया घंनमानता ऊं इस कारन की उसने मुझे ब्रीसवास के जोग समझा और सेवकाइ में रष्या।
१३ मैं तो आगे नींदीक और उपद्रवी और संतानेवाला था परंतु मैं ने दया पाइ इस कारन की मैं ने अब्रीसवासता में मुरष्पता
१४ से कीया। और हमारे परभु का अनुग्रह ब्रीसवास और
१५ परेम समेत जो मसीह यसु में है ब्रहुत उभरा। यह ब्रीसवास के जोग का ब्रचन और सबके गरहन करने के जोग है की मसीह यसु जगत में आया की पापीयों को ब्रचावे जीनहों
१६ में मैं परधान ऊं। परंतु मुझ पर इस लीये दया की गइ की मुझ में जैसा परधान पर यसु मसीह अपने ब्रड़े घीरज को परगट करे की उनके कारन जो उस पर अनंत जीवन के लीये
१७ ब्रीसवास लावें दीरीसटांत ब्रनुं। अब्र राजा को जो सनातन अमर अदीरीस जो अदैत ब्रुधमान इसर है परतीसठा और
१८ ऐसरय सरब्रदा अनंत है आमीन। हे पुतर तीमताउस मैं तुझे उन आगम गयानीयों के समान जो आगे तेरी अवसथा में कीये गये यह अगया देता ऊं की उनहों के कारन से तु
१९ अछी लड़ाइ लड़। और ब्रीसवास और अछे ब्रीवेक को घरे रह जीसे कीतनों ने छोड़के ब्रीसवास के ब्रीष्ये में नाव को
२० तोड़ा। उनहों में से हमीयुस और सीकंदर हैं जीनहें मैं ने सैतान को सौंपा की वे सीष्यें की नींदा न करें।

२ दुसरा परब्र।

१ अब्र मैं उपदेस करता ऊं की सब्र से पहीले ब्रीनती और

पनार्थना श्रीर वीनती श्रीर धंनवाद समसत मनुष्यन के लीये
१ कीश्रा जाय। राजाश्रों के श्रीर उन सभों के लीये जो परा-
क्रमी हैं की हम चैन श्रीर कुसल से समसत भकताइ श्रीर
३ सचाइ में जीवें। कयोंकी हमारे नीसतारक इसर के श्रागे
४ यही भला श्रीर गराह्य है। जो चाहता है की समसत मनुष्य
५ वचाये जावें श्रीर सत के गयान लों पहुंचें। कयोंकी इसर
एक श्रीर इसर श्रीर मनुष्य के वीच में एक मनुष्य श्रर्थात
६ मसीह यसु वीचवइ है। जीसने अपने को सभों के मोछ के
७ लीये दीया की समय पर साछी दी जाय। मैं मसीह में सच
वोलता हूं झूठ नहीं कहता की मैं उसके लीये उपदेसक श्रीर
प्रेरीत ठहराया गया की वीसवास श्रीर सचाइ में श्रनदेसीयों
८ को सीछाउं। सो मेरी इछा यह है की हर एक सथान
में लोग पार्थना करें पवीतर हाथों को नीसकपट श्रीर
९ नीसंदेह उठावें। इसी रीत से इसतीरी भी अपने को लाज
श्रीर संकोच से श्रीर संजम से सवांरे वाल गुथने श्रथवा सोने
१० अथवा मोतीयों श्रथवा वहुमोल के वसतर से नहीं। परंतु
उतम कारजन से सवांरे जैसा इसतीरीयों को जो इसर की
११ सेवाती कहावती हैं जोग है। इसतीरी समसत वस में होके
१२ चुपके से सीखे। परंतु मैं श्रगया नहीं देता की इसतीरी
सीखलावे श्रथवा पुरुष पर परभुता करे परंतु चुप चाप
१३ रहे। कयोंकी पहीले श्रादम वनाया गया पीछे हौवा।
१४ श्रीर श्रादम ने छल न पाया परंतु इसतीरी छल पाके
१५ पाप में पड़ी। तथापी वुह वालक जनने में वचाइ जायगी
जो वे वीसवास में श्रीर परेम श्रीर पवीतरता में संजम के संग
सथीर रहे।

३ तीसरा पर्व।

१ यह वचन परतीत के जोग है की यदी कोइ मंडलाधछ

२ का पद वुक्त याहे वुह अछे कारज को याहता है। सो अबस है की मंडलाधक्ष नीरदोष्प अेान प्रेक पतनी का पती योकस सगयान उतम सभाव अतीथीपालक अेान उपदेस करने
३ में नीपुन होवे। अेान मदप्प अथवा मनकहा अथबा लालयी न होवे परंतु मधम अेान हगरालु अथवा लोभी न होवे।
४ प्रेक जो अपने वालकों को गंभीरता से वुस में रप्पता अेान
५ अपने घन की परघानता अछी रीत से करता है। कयोंकी यदी कोइ अपनेही घन की परघानता करने न जाने तो वुह
६ इसन की मंडली की यो सी कयोंकन करेगा। अेान नया सीप्प न होवे कहीं वुह गरव से फूलके सैतान के दंड की
७ अगया में न पड़े। इस लोये यह भी उयीत है की उनहों से जो वाहर हैं सुभनाम पावे की वुह नींदा में अेान सैतान
८ के फंदे में न पड़े। इसी रीत से याहीये की सेवक गंभीर होवें अेान दो जीभी अथवा मघप अथवा मलीन लाभ के लोभी
९ नहीं। अेान वीसवास के भेद को पवीतर मन से घरे रहें।
१० अेान ये भी पहीले परप्पे जावें तव यदी वे नीरदोष्प नीकलें
११ तो सेवक के पद में कारज करें। इसी रीत से उनकी पतनी भी गंभीर होवें अेान हूठे दोष्पदायक न होवें सगयान अेान
१२ सारी वातों में वीसवास के जोग होवें। सेवक प्रेक प्रेक पतनी का पती होवे अपने वालकों अेान अपने घरों को अछी रीत
१३ से वुस में रप्पते हों। कयोंकी जीनहों ने सेवकाइ के कारज को अछी रीत से कीया सो अपने लोये अछे पद अेान वीसवास
१४ में वड़े ढाढ़स को जो मसीह यसु पर हैं कमाते हैं। ये वातें मैं लीप्पता हुं अेान आसा रप्पता हुं की तुह्न पास सीघर आउं।
१५ परंतु जो मैं अवेर करुं जीसतें तु जान रप्पे की इसर के घर में जो जीवते इसर की मंडली अेान सयाइ का प्पंभा अेान
१६ नेउं है कयोंकर नीवाह कीया याहीये। अेान नीसंदेह इसर की सेवा का भेद महान है इसर सरीर में परगट हुआ

आतमा में नीनदोष्प ठहनाया गया दुतों से देष्पा गया अंन-
देसीयों में उसका उपदेस कीया गया जगत में वीसवास कीया
गया ऐसवर्य में उपन उठाया गया।

४ चैाथा पत्र।

१ पर्नतु आतमा ते प्पोलके कहता है की पीछले समयों में
कीतने वीसवास से फीन जायेंगे की वे भनमावने वाले आतमाओं
२ श्रैान पीसाचें की सीष्पा में चीत लगावेंगे। यह झुठों की
कपटाइ से होगा जीनका मन तपत लाेहे से दागा गया है।
३ वीवाह कनने से वनजेंगे श्रैान मांस ष्पाने से नीसेध कनेंगे
जीनहें इसन ने उतपंन कीया की वे लाेग जो वीसवासी श्रैान
४ सत के गयानी हैं धंनवाद कनके ष्पावें। कयोंकी इसन की
उतपंन की हुइ हन ऐक वसतु अछी है श्रैान तयाग कनने के
५ जोग नहीं यदी वुह धनवाद के साथ ष्पाइ जावे। कयोंकी
वुह इसन के वचन श्रैान पनानथना से पवीतन की गइ है।
६ से जो तु भाइयों को ये वातें चेतावे ते तु यसु मसीह का
अछा सेवक वना नहेगा अनथात वीसवास की वातें में श्रैान
सुसीष्पा में जीसे तु ने पनापत कीया है पनतीपाल पावेगा।
७ पनंतु धनमहीनों श्रैान वुढीयों की कहानीयों को तयाग कन
८ श्रैान इसन की सेवा का साधन कन। कयोंकी सनीन की
साधना थोड़ा लाभ है पनंतु इसन की सेवा सव वातों के लाभ
के लीये है की वनतमान श्रैान भवीस जीवन की पनतीगा
९ नष्पती है। यह वचन वीसवास के जोग है श्रैान सव के
१० गनहन कनने के जोग है। कयोंकी इसी कानन हम पनीसनम
कनते हैं श्रैान नींदा सहते हैं इस लीये की हम ने जीवते
इसन पन आसा नष्पी है जो समसत मनुष्पन का तनान कनता
११ है वीसेष्प कनके वीसवासीयों का। इन वातों की अगया
१२ कन श्रैान सीष्पा। कोइ तेनी तनुनाइ की नींदा न कने पनंतु

तु वीसवासीयों के लीये वचन में और वात चीत में और पनेम में और आतमा में और वीसवास में और पवीतनता में
१२ दीस्टांत वनो। जव लों मैं आउं तु पढ़ता और सीप्पा
१४ करता और उपदेस देता रह। तु उस दान से जो तुझ में है जो तुझे आगमगयान से मंडलाधछों के हाथ रप्पने के आसीष
१५ से दीयागया अचेत न हो। इनहीं वातों को घयान कर और उनहीं में लवलीन रह की तेरा वढ़ता जाना सभों पर परगट
१६ होवे। अपने पर और अपनी सीप्पा पर चौकस रह और उन पर सथीर रह कयोंकी ऐसा करने से तु अपने को और अपने सुननीहारों को वचायेगा।

५ पांचवां पनव।

१ कीसी पनाचीन को मत दपट परंतु पीता के समान और तरुनों
२ को भाइयों के समान। और पनाचीन इसतीनीयों को जैसे माता को और तनुनीयों को जैसे वहीनों को समसत पवीतनता
३ से वुझ दे। वीधवन को जो सचमुच वीधवा हैं पनतीसठा
४ दे। परंतु यदी कोइ वीधवा का पुतन अथवा पोता होवे तो वे पहीले सीप्पें की अपने घर की सेवा करें और माता पीता का भाग भर देवें कयोंकी यह इसन के आगे सोभीत और गराह्य
५ है अव सची वीधवा और अनाथ वुह है जो इसर पर भरोसा रप्पती है और रात दीन वीनती में और पनानथना में लवलीन
६ रहती है। पर जो सुप्प भोगती है सो जीतेजी मीनतक
७ है। और यह आगया कर की वे नीरदोष्प होवें।
८ परंतु यदी कोइ अपनेहो के और वीसेष्प करके अपने घर के लीये नहीं सहेजता तो वुह वीसवास से मुकरगया और
९ अवीसवासीयों से भी वुरा है। कोइ वीधवा साठ वरस के नीचे गीनती में न आवे जो एकही पती की पतनी हुइ होय।
१० और सुभ करम के लीये जसपती होय जो उसने लड़कों को

सीप्पाय़ा हो अथवा पनदेसीय़ों का अपने य़हां टीकाय़ा हो अथवा सीधों के पांव धोए हो अथवा दुप्पीय़ों का सहाय़ कीय़ा
११ हो जो हन एक भले कानज का पीछा कीय़ा हो। पन तनुनी
व्रीधवन के छांट डाल कय़ोंकी जव्र वे मसीह से व्रीनुध प्पेलाड़
१२ होती हैं तो व्रीवाह कनेंगी। श्रान अपने को दोप्प की अगय़ा
के जोग कनती हैं कय़ोंकी उनहों ने अपने अगीले व्रीसवास को
१३ मोटा डाला। श्रान आलसी भी होके घन घन डोलती पीनती
हैं श्रान केवल आलसी नहीं पनंतु व्रड़व्रडी भी अन श्रानों
के कानज में उलह्नेवाली श्रान अनुचीत व्रातें कनती हैं।
१४ इस कानन मेनी इछा है की तनुनी इसतीनी व्रीवाह कनें श्रान
व्रालक जनें श्रान गीनहसथी कनें श्रान सतनु को नींदा कनने
१५ का कानन न देवें। कय़ोंकी कइ एक अभी से सैतान के पीछे
१६ फीनी हैं। पनंतु जो कीसी व्रीसवासी अथवा व्रीसवासीनी की
व्रीधवा हें तो वे उनका उपकान कनें जीसतें मंडली पन व्राह्
न होवे की वुह उन ी जो सयमुय व्रीधवा हैं उपकान कने।
१७ पनायीनों को जो अछी नीत से पनधानता कनते हैं व्रीसेप्प
कनके उनको जो व्रयन श्रान सीप्पा में पनीसनमी हैं दुना
१८ पनतीसठा के जोग जानो। कय़ोंकी गनंथ कहता है की व्रैल
का जो दवंनी कनता है मुंह मत व्रांध श्रान की व्रनीहान
१९ अपनी व्रनी के जोग है। व्रीना दो अथवा तीन साप्पीय़ों के
२० पनायीनों पन अपव्राद मत मान। उनहों को जो पाप कनते
हैं सव्र के सनमुप्प दपट जीसतें श्रानों के लीय़े भी भै होवे।
२१ मैं इसन श्रान पनभु य़सु मसीह श्रान युने हुए दुतों के आगे
अगय़ा कनता हूं की तु पछ छोड़के इन व्रातों को धानन कन
२२ श्रान कीसी की प्पींय मत कन। एकाएक कीसी पन हाथ न
नप्प श्रान न श्रानों के पापों में भागी हो अपने को पवीतन
२३ नप्प। श्रान अव्र से तु जल न पीय़ा कन पनंतु अपने होह
श्रान व्रानंव्रान नीनव्रलता के लीय़े थोड़ा दाप्पनस पी।

२४ कीतने मनुष्यन के पाप पनगट हैं श्रीन आगे आगे व्रीयान लों
२५ पहुंयते हैं श्रीन कीतनें के पीछे पीछे जाते हैं। सो उतम
कानज भी पनगट हैं श्रीन वे जो श्रीन ढव्र के हैं छीपाए जा
नहीं सकते।

६ छठवां पनव्र।

१ जीतने सेवक जूए के नीये हैं अपने सामीयों को समसत
सनमान के जोग जानें की इसन के नाम की श्रीन सीप्पा की
२ नींदा न की जावे। श्रीन जीनहों के व्रीसवासी सामी हैं वे
उनकी इस कानन की भाइ हैं अवगया न कनें पनंतु व्रीसेप्प
कनके सेवा कनें इस लोये की वे व्रीसवासी श्रीन पीनीय श्रीन
३ पदानथ में साझी हैं ये व्रातें सीप्पा श्रीन व्रुझा। यदी कोइ
श्रीन ढव्र की सीप्पा कनें श्रीन सजीवन व्रयन को अनथात
हमाने पनभु यसु मसीह के व्रयन को श्रीन सीप्पा को जो इसन
४ की सेवा के जोग है गनहन नहीं कनता। वुह घमंडी है श्रीन
कुछ नहीं जानता पनंतु उसको व्रयन का व्रीवाद श्रीन झगड़ों
का नोग है जीन से डाह श्रीन झगडा श्रीन गाली गलौझ श्रीन
५ व्रुनी यींता होती हैं। श्रीन उन लोगों के समान व्रीवाद कनते
हैं जीनके यीत व्रीगड़ गये हैं श्रीन जीस में सयाइ नहीं हैं
श्रीन समझते हैं की लाभ इसन की सेवा है तु ऐसों से पने नह।
६ पनंतु इसन की सेवा संतोप्पता के संग व्रड़ा लाभ है।
७ कयांकी हम जगत में कुछ न लाए श्रीन पनगट है की हम उस
८ से कुछ ले जा नहीं सकते। सो भोजन श्रीन व्रसतन पाके हम
९ इनहों से संतोप्प कनें। पनंतु वे जो अपने को घनमान
अवस कीया याहते हैं सो पनीछा श्रीन फंदे में श्रीने मुंह
गीनते हैं श्रीन व्रहुत सी मुनप्पता श्रीन व्रुनी लालसा में पड़ते
हैं जो मनुप्पन का सतयानास श्रीन व्रीनास में देमानती हैं।
१० कयोंकी घन की पनीत समसत व्रुनाइयों की जड़ है कीतने

उसकी लालच करने से विसवास के मारग से भटक गये और
११ नाना परकार के सोक से छेद गये। परंतु हे ईसर के जन
इन वसतुन से भाग और धरम और ईसर की सेवा और
विसवास और दया और संतोष और कोमलता का पीछा कर।
१२ विसवास की अछी लड़ाई लड़ अनंत जीवन के पकड़ ले
जीसके लीये तु बुलाया गया और तुने बहुत से साछीयों के
१३ आगे भला मानना मान लीया है। मैं ईसर के जो समसत
वसतुन के जीलावता है और मसीह यसु के साछात जीसने
परतयुस पीलातुस के आगे भले मानने पर साछी दी तुझे
१४ अगया करता हूं। की तु अगया के नीसकलंक और नीरदोष
हमारे परभु यसु मसीह के परगट होने लों धारन कर।
१५ जीसे वुह अपने समयों में परगट करेगा जो धंन और अदैत
सामरथी राजाओं का राजा और परभुओं का परभु है।
१६ अमरता केवल उसीकी है वुह आगम जोत में वास करता है
जीस के कीसी मनुष्य ने न देखा न देख सकता है उसीकी
१७ परतीसठा और सामरथ सरवदा है आमीन। इस संसार
के धनमानों के अगया कर की मन में गरव न करें और
वे जड़ धन पर आसा न करें परंतु जीवते ईसर पर जो हमारे
१८ भोग के लीये सब कुछ बहुताई से देता है। की वे भला करें
और सुकारजन में धनी और दान करने में सीघ और बांटने
१९ में अभीलासी। और भवीस के लीये एक भली नेंउ धर
२० रखें की वे अनंत जीवन के पकड़ रखें। हे तीमताउस वुह
जो तुझे सैांपा गया जतन से रख और उन अधरम और
वेअरथ बकबक से और उस वसतु के वीवाद से जो झुठाई
२१ से वे दया कहावती हैं मुंह फेर ले। जीसे कीतने अंगीकार
करके वीसवास से भटक गये हैं अनुगरह तुझ पर होवे
आमीन।

पुलुस की दुसरी पतरी तीमताउस को।

---

१ पहीला पनब्र।

१ पुलुस के और से जो जीवन की परतीगया के समान जो मसीह ग्रसु में है इसर की इछा से ग्रसु मसीह का परेरीत
२ है। मेरे पीरीय पुतर तीमताउस को अनुगरीह दया कुसल
३ पीता इसर और हमारे परभु मसीह ग्रसु के और से। मैं इसर का धंर मानता हुं जीसकी सेवा मैं पीतरों के समान नीरमल ब्रीवेक से करता हुं की मैं रात दीन अपनी परारथना
४ में नीरंतर तुझे समरन करता हुं। तेरे आंसुओं को समरन करके मैं बहुत अभीलासी हुं की तुझे देखुं की आनंद से भर
५ जाउं। तमहारे नीसकपट ब्रीसवास को समरन करता हुं जो पहीले तेरी नानी लुइस में और तेरी माता ग्रुनीकी में ब्रास
६ करता था और मुझे नीसचय है की तुझ में भी है। इस कारन से मैं तुझे चेत करवाता हुं की तु इसर के उस दान को जो
७ मेरे हाथ रखने से तुझ में है उसकावे। कयोंकी इसर ने हम को डेठापन का आतमा नहीं दीया परंतु जोधापन और परेम
८ और बुध का। तु इस कारन न तो हमारे परभु की साखी से न मुझ से जो उसका बंधुआ हुं लजीत हो परंतु इसर के
९ सामरथ से मंगलसमाचार के दुखों में भागी हो। उसने हमें बचाया और पवीतरता के बुलावा से हमें बुलाया हमारे

कानजन के समान नहीं पनंतु अपनेही ठहनाये ऊए के चौान अनुगीनह के समान जो मसीह य़सु में सनातन समयों से हमें
१० दीय़ा गय़ा। पनंतु अव्र हमाने मोष्पदाता य़सु मसीह के पनगट होने से पनगट ऊआ जीसने मीनतु को नसट कीय़ा चौान जीवन चौान अमनता को मंगलसमाच्यान के दुवाना से
११ पनकास कीय़ा। जीसके लीय़े मैं उपदेसक चौान पनेनीत
चौान पनदेसीय़ों का सीप्पावनोहान ठहनाय़ा गय़ा ऊं।
१२ कय़ोंकी उसी लीय़े मैं य़ह दुप्प भी पावता ऊं पनंतु मैं लजीत नहीं कय़ोंकी मैं जानता ऊं जीस पन मैं व्रीसवास लाय़ा ऊं चौान नीसयय़ जानता ऊं की वुह मेनी थाती को उस दीन लों
१३ जतन से नप्प सकता है। तु उन योप्पी व्रातों के डौल को जो तु ने मुझ से सुनी य़सु मसीह के व्रीसवास चौान पनेम में दीनढ़ता
१४ से घन नप्प। उस सौंपी ऊइ भली व्रसतु को घनमातमा से जो
१५ हमों में व्रसता है जतन से नप्प। तु य़ह जानता है की सव्र जो आसीय़ा में हैं जीन में से फुजलस चौान हनमोगनस हैं
१६ मुझ से फीन गय़े हैं। पनभु उनोसफुनस के पनीवान पन दय़ा कने कय़ोंकी उसने व्रानंव्रान मुझे व्रहलाय़ा चौान मेने
१७ सीकन से लजीत न ऊआ। पनंतु नुम में होके उसने मुझे व्रड़े
१८ जतन से ढुंढ़ा चौान पाय़ा। इसन उस पन अनुगीनह कने की वुह पनभु से उस दीन दय़ा पावे चौान जो सेवकाइ उसने अफसस के नगन में की तुही उन्हें अछी नीत से जानता है।

२ दुसना पनव्र।

१ हे मेने पुतन तु उस अनुगीनह में जो मसीह य़सु में है दीनढ़
२ हो। चौान जो व्रातें तु ने व्रऊत से साप्पीय़ों के आगे मुझ से सुनों है उसे व्रीसवास के जोग पुनुप्पों को सौंप जो चौानों को
३ भी सीप्पा सकें। सो तु य़सु मसीह के अछे सीपाही के समान

४ कसटों को सहले। कोइ मनुष्य जो जुध को नीकलता है अपने को जगत के व्रेवहान में नहीं उलझावता है की वुह उसे
५ जीसने उसे सीपाही कीया है पनसन कने। और जो कोइ व्रजनी कनता है सो मुकुट नहीं पावता जव्र लों वुह ठहनाये
६ ऊये के समान व्रजनी न कने। अवस है की कीसान पहीले
७ पनीसनम कने और तव्र फरल का भाग लेवे। जो मैं कहता ऊं उसे सोच नष्प और पनभु तुझे समसत व्रातों की समझ देवे।
८ समनन कन की य्रसु मसीह दाउद के व्रंस में का जो मने
९ मंगलसमाचान के समान मीनतकन में से उठाया गया। जीस में मैं कुकनमी के समान यहां लों दुष्प पावता ऊं की व्रंघन में ऊं
१० पनंतु इसन का व्रचन नहीं व्रंघा है। इसी लीये मैं चुने ऊये लोगों के लीये सव्र कुछ कहता ऊं की नीसतान जो य्रसु मसीह
११ में है अनंत प्रैसनय के संग मीले। यह व्रचन व्रीसवास के जोग है की जो हम उसके संग मने तो हम उसके संग जीयेंगे।
१२ जो हम कसट पावें तो हम उस के संग नाज कनेंगे जो हम उस
१३ से मुकन जायें तो वुह भी हम से मुकनेगा। जो हम अव्रीस-वासी होवें वुह व्रीसवास के जोग है वुह अपने को मुकन नहीं
१४ सकता। इन व्रातों का समनन कनाओ और पनभु के सनमुष्प साष्पी दे की लोग व्रातों के व्रीष्पै में झगड़ा न करें जो सनव्रथा
१५ नीसफरल है पनंतु यह की सनोता व्रीगड़ जायें। अपने को इसन का भाया ऊआ ऐक कानज कानी जीसे लजीत होने का कानन न हो सयाइ के व्रचन को ठीक नीत से भाग कनने
१६ में जतन कन। पनंतु अधनम और व्रयनथ व्रकवादों से पन
१७ नह कयोंकी वे अधीक अधनमता में व्रढ़ते जायेंगे। और उनकी व्रातें सुनये की नाइं प्पायेंगी जीन में से हमीनीयुस
१८ और फरलीतस हैं। जो यह कहके की पुननुतथान हो चुका सयाइ के व्रीष्पै से फीन गये और कीतनों का व्रीसवास से भ्नीसट कनते हैं। तथापी इसन की नेउ दीनढ़ व्रनी है

औान ग्रह छाप नप्पती है की पनभु उनहों को जो अपनेही हैं पहीयानता है औान याहोय़े की हन प्रेक जो मसीह का
१० नाम लेता है कुकनम से दुन नहे। कय़ोंकी व़ड़े घन में केवल सोने नुपे के पातन नहीं हैं पनंतु काठ के औान मीटी के भी औान कीतने आदन के औान कीतने अनादन के कानज के
११ लीय़े हैं। इस लीय़े य़दी कोइ अपने को इनहों से पवीतन कने तो वुह आदन का पातन सुघ कीय़ा ऊआ औान सामी के कानज के जोग औान हन प्रेक अछे कानज के लीय़े सीघहोवेगा।
१२ तनुनाइ के नस से भागो औान जो पवीतन मन से पनभु का नाम लेते हैं उनके संग घनम औान व़ीसवास औान पनेम औान
१३ कुसल का पीछा कन। पनंतु मुढ़ औान अपढ़े पनसनों से पने
१४ नह ग्रह जानते ऊप्रे की वे झगड़ा उतपंन कनते हैं। पनंतु उयीत नहीं की पनभु का सेवक झगडा कने पनंतु सव़ से कोमल
१५ नहे सीप्पाने पन सीच औान दुप्प सहनीहान। नमीनता से व़ीनोघ कननीहानों को सीप्पा देवें जो कीसी नीत से सत को
१६ मान लेने के लीय़े इसन उनहें पसयाताप देवे। औान जीसतें वे सैतान के फंदे से जीस ने अपनी इछा पन उनहें व़ंघुआ कीय़ा जाग उठें।

३ तीसना पनव़।

१ औान ग्रह जान नप्प की अंत के दीनों में सकेती का समय़
२ आवेगा। कय़ोंकी मनुप्प अपनेहो पनेमी औान लालयी व़ड़ाइ कननीहान अंहकानी इसन के नींदक माता पीता की अगय़ा
३ भंग कननीहान घर्यनमानी औान अपवीतन। माय़ा नहीत अवची के भंग कननीहान औान मीथय़ापव़ादी औान अजीतें-
४ दीनीय़ औान कठोन औान भले लोगों के नींदक। छली औान मगना औान अभीमानी औान इसन से सुप्प व़ीलास के अघीक
५ पनेमी। इसन की सेवा का नुप नप्पते हैं पनंतु उसके सामनथ

६ से सुकनते हैं ऐसें से पने नह। उनहें में वे हैं जो घन घन घुसके उन ओंकी इसतीनीयों को व्रस में लावते हैं जो पापें से लदी हैं औान नाना पनकान के कामाभीला से घींची गइ हैं।
७ नीत सीष्पा पावती हैं पनंतु सयाइ के मान लेने लें कघी नहीं
८ पऊंय सकती। औान जीस नीत से यंनस औान यंव्रनस ने मुसा का सामना कीया वैसा ये भी सयाइ का सामना कनते हैं नसट
९ व्रुघ लोग जो व्रीसवास के व्रीष्पै में अभ्राए हैं। पन वे भागे न व्रढेंगे कयेंकी उनकी मुनष्पता सभें पन पनगट हो जायेगी
१० जीस नीत से उनकी भी थी। पनंतु तु मेना उपदेस औान व्रोल याल औान अभीपनाय औान व्रीसवास औान अतीसहना
११ औान पनेम औान घीनज। औान संताया जाना औान दुष्पें को जो अंताकीय: औान यकुनीयें में औान लसतना में मुझ पन पड़े अर्को नीत से जानता है की मैं ने कैसे दुष्प उठाये पनंतु
१२ पनभु ने मुझे उन सभें से व्रयाया। हां औान सव्र जो यसु
१३ मसीह में घनम से यलेंगे संताये जायेंगे। पनंतु दुसट औान छली लोग छल देके औान छल पाके व्रुनाइ में अधीक व्रढ़ते
१४ जायेंगे। पन तु उन व्रातें पन सथीन नह जीसे तु ने सीष्पा है औान व्रीसवास लाया है यह जानके की तुने कीस से सीष्पा है।
१५ औान की व्रालकपन से घनम पुसतक तेने जाने ऊए हैं जो सामनथी हैं की व्रीसवास के दुवाना से जो मसीह यसु में है
१६ उघान के लीये तुझे व्रुघमान कने। समसत गनंथ इसन के पनगट कीये ऊये हैं औान सीष्पा औान दोष्प के औान दपटने के औान घनम में उपदेस कनने के लीये लाभ हैं।
१७ जीसतें इसन का जन पनीपुनन होवे औान हन एक उतम कानज में सीघ नहे।

४ यैाथा पनव्र।

१ सो मैं इसन औान पनभु यसु मसीह के आगे जो पनगट होके

अपने राज में जीवतन और मीरतकन का नयाय करेगा
२ अगया करता ढूं। समय में और असमय में वयन का उपदेस
कर वङ्गत सह सह के समझाके दोष्य वृझा और डांट दे
३ और सीष्या कर। कयोंकी समय आवेगा जव वे सजीवन
सीष्या को न सहेंगे पर ष्युजलाते ङ्गुए कान रष्यके अपनी लालसा
४ के समान उपदेसकों को वटोरेंगे। और अपने ययान को
सयाइ के ओर से फेरेंगे और कहानीयों के ओर फीराये
५ जायंगे। परंतु समसत वातों में यौकस रह दुष्य को सह मंगल
६ समायार का कारज कर अपनी सेवा को पुरा कर। कयोंकी
अव मैं वल होने को सीघ ङ्गूं और यलने का समय नीकट है।
७ मैं ने अछा जुघ कीया है मैं ने अपने दौड़ को समापत कीया है
८ मैं ने वीसवास को रष्य लीया है। सो अव घरम का मुकुट मेरे
लीये घरा है जीसे परभु जो घरमी नयायी है उस दीन मुझे
देगा और केवल मुझी को नहीं परंतु उन सभों को भी जो उसके
९ परगट होने के परेमी हैं। तु सीघर से मेरे पास आवने को
१० जतन कर। कयोंकी दीमस ने इस वरतमान जगत को पीआर
करके मुझे छोड़ दीया है और तसलुनी को यला गया करसकंस
११ गलतीयः को और तीतस दलमतीयः को गया। केवल लुका
मेरे संग है तु मरकस को अपने संग ले आ कयोंकी सेवा में वह
१२।१३ मेरे काम का है। मैं ने टकीकस को अफसस को भेजा। तु
वह लवादा जीसे मैं ने तरवास में करपस के घर में छोड़ा और
१४ पुसतकों को वीसेष्य करके यरमी पतरों को लेता आ। सीकंदर
ठठेरे ने मुझ से वङ्गत वुराइ की उसके कारजन के समान
१५ परभु उसको फल देवे। उस से तु भी यौकस रह कयोंकी
१६ उसने हमारी वातों की वङ्गत सतरुता की। मेरे पहीले वयाव
की वात में कोइ मेरे संग न देष्याइ दीया परंतु सभों ने
१७ मुझे छोड़ दीया उसका लेष्या उनहें देना न पड़े। पर परभु
मेरे समीप ष्यड़ा था मुझे वल दीया की मुझ से मंगल समायार

का उपदेस भरोसा के साथ कीया जावे औ सभसत परदेसी
१८ लोग सुनें औ मैं सींह के मुंह से बचाया गया। औ परभु
मुझे हरएक बुरे काज से बचावेगा औ अपने सरग के राज
के लीये जतन से रखेगा उसकी महीमा सरबदा है आमीन।
१९ परसकला औ अकला औ अनीसफरस के घराने को नमस-
२० कार कह। इरासतस करंतस में रहा औ तरफीमस को मैं
२१ ने मीलीतस में रोगी छोड़ा। जतन कर की तु जाड़े से आग
पहुंचे युबुलस औ पुदींस औ लीनस औ कलादीया औ
२२ सभसत भाइ तुझे नमसकार कहते हैं। परभु यसु मसीह तेरे
आतमा के संग होवे अनुगरह तुम्हों पर रहे आमीन।

पलस की पतनी तीतस को।

---

१ पहीला पनव्र।

१ इसन का सेवक पुलुस ओान यसु मसीह का पनेनीत इसन के युनेऊऐ के व्रीसवास के लीये ओान सयाइ को मान लेने के
२ लीये जो इसन की सेवा के समान है। की अनंत जीवन की आसा में जीसे इसन ने जो झुठ नहीं कहीसकता जगत के आनंभ
३ से पहीले अवची कीया। पनंतु उपदेस के दुवाना से अपने व्रयन को समय पन पनगट कीया जो हमाने उघानक ननी-
४ हान इसन की अगया के समान मुझे सैांपा गया। तीतस को जो सामान व्रीसवास की नीत से मेनाही पुतन है अनुगनह दया ओान कुसल पीता इसन से ओान हमाने उघान कननीहान
५ पनभु यसु मसीह के ओान से होवे। मैं ने तुझे इस कानन कीनीत में छोड़ा की तु उन व्रसतुन को जो अघुड़ी थीं सवांने ओान पनायोनों को हनऐक नगन में जैसा मैं ने तुझे अगया की
६ है ठहनावे। जदी कोइ नीनदोष्प ओान ऐक पतनी का पती हो जीन के लड़के व्रीसवासी हैं ओान ऊलन अथवा मगनाइ से
७ दोष्प नहीत ऊं। कयोंकी अव्रस है की मंडलाघछ इसन के भंडानी के समान नीनदोष्प होवे ओान अपना सानथी नहीं
८ तुनंत नीसीआ न जाय न मदप न मनकहा न लालची। पनंत अथीती पालक साधुन का पनेमी सजमी घनमी पवीतन मघमु

९ हे। जैसा उसने सीष्या पाइ है व्रीसवास के व्रचन को दीढ़ता से घने नहे जीसतें वुह योग्यी सीष्या से उपदेस कनसके श्रौन
१० व्रीपनीतों का व्रोघ कन सके। कयोंकी व्रज्ञत से मगने श्रौन व्रयानथ व्रकव्राची हैं श्रौन छली व्रीसेष्य कनके ष्पतनः कीये
११ गयों में से। जीनका मुंह व्रंद कीया याहीये वे श्रनुयीत
१२ व्रातें सीष्या सीष्या के घन के घन का उलटावते हैं। उनहीं में से ऐक ने जो उनका श्रागमगयानी था कहा है की कनीती सन-
१३ व्रदा झुठे हैं व्रनैले पसु श्रौन पेट के भ्नानी हैं। यह साष्पी सत है इस कानन तु उनहें दीनढ़ता से डांट की वे व्रीसवास में
१४ नीनदोष्प होवें। यहुदीयों की कहानीयों पन श्रौन मनुष्यन की श्रगया पन जो सयाइ को मड़ोड़ते हैं घयान न देवें।
१५ पवीतनों के लीये सव्र कुछ पवीतन हैं पनंतु श्रसुघों के श्रौन श्रव्रीसवासीयों के लीये कुछ सुच नहीं पनंतु उनके मन श्रौन
१६ व्रीवेक भ्नी श्रसुघ हैं। इसन के गयानी कहाके कननी से मुकनते हैं घीनीत श्रौन श्रगया भ्नंग कननीहान होके श्रौन हन ऐक सुकनम में सतयानास।

२ दुसना पनव्र।

१ पन तु वे व्रातें कह जो सजीवन सीष्या के जोग ङं।
२ की व्रीनघ पुनुष्प सौंयेत श्रौन गंभ्नीन श्रौन मघम श्रौन व्रीसवास
३ श्रौन पनेम श्रौन संतोष्प में ठीक हों। श्रौन उसी नीत से व्रीनघ इसतीनीयां भ्नी साघुन के जोग की नाइं व्रेवहान नष्पें श्रौन मीथया दोष्प दायक नहीं श्रौन श्रती मद के व्रेवहान नहीं
४ श्रछी व्रात की सीष्पावनीहान हों। की वे तनुनी इसतीनीयों को संजम सीष्पावें की वे श्रपने सामीयों श्रौन व्रालकों को
५ पीश्रान कनें। श्राप यतुनी श्रौन सत श्रौन घन में नहने वाली श्रौन सुष्पभ्नाव श्रपनेही पतीयों को मानें की इसन के व्रचन की
६ नींदा न की जावे। इसी नीत से तनुन पुनुष्पों को भ्नी सीष्पा

७ कर ी वे संजमी होवें। सारी व्रतों में अपने को उतम कारजन की व्रानगी कर दीप्पा सीप्पा में नीरलेपता से गंभीरता
८ से सुघाइ से। सजीवन व्रयन जो प्पंडीत न कीया जाय वुह जो वीपरीत के श्रोर है तुमहों पर कुछ व्रुरी व्रात का कारन
९ न पाके लजीत हो जाय। सेवक अपनेही सामीयों के व्रस में हों श्रौर सारी व्रातों में उनको परसन करें श्रौर फीरके उतर
१० न देवें। श्रौर युरावने में नहीं परंतु समसत श्रच्छी सचैाटी दीप्पावें की वे हमारे मोप्पदाता इसर की सीप्पा को सारी व्रातों
११ में सोभा देवें। कयोंकी इसर के उधार करने का अनगोरह
१२ समसत मनुप्पन पर परगट हुआ। जो हमें सीप्पावता है की अधरमता श्रौर संसारी लालसा से मुकर के हम लोग इस वरतमान जगत में सजम से श्रौर धरम से श्रौर भकताइ से
१३ जीवें। श्रौर इस आसीरवाद की आसा को श्रौर महान इसर श्रौर अपने मोप्पदाता यसु मसीह की महीमा के परगट होने
१४ की व्राट जोहें। की उसने आप को हमारी संती दीया की वुह सारे कुकरमों से हमों को छुडावे श्रौर अपने लये एक नीज
१५ लोग को जो भले कारज में उलीत है पवीतर करे। यह व्रातें कह उपदेस कर श्रौर समसत पराकरम स दपट दे कोइ तेरी नींदा न करे।

३ तीसरा पत्र।

१ उनहें चेता दे की राजाओं श्रौर सामरथीयों के व्रस में होवें की अयकों को मानें श्रौर हर परकार की भलाइ करने
२ पर सीध रहें। कीसी को कलंक न लगावें श्रौर हुगड़ालु न होवें परंतु धीमा श्रौर समसत मनुप्पन को कोमलता दीप्पावें।
३ कयोंकी हम लोग आप भी आगे मुनप्प मगरा भटके हुए थे श्रौर नाना परकार की व्रुरी लालसा श्रौर सुप्पाभीलास के दास थे श्रौर डाह श्रौर हीसका से नीवाह करते थे व्रौरघ के

४ लोग औन आपस में बीनोध कनते थे। पनंतु जब हमाने
मुकत दाता ईसन की दया औन पनेम मनुष्य पन पनगट ऊआ।
५ उसने हमको बचाया न की धनम की कननी से जो हम ने
की पनंतु अपनी दया के कानन से नये जनम के सनान से औन
६ धनमातमा की नवीनता से। जीसे उसने हमाने मुकतदाता
७ ईसु मसीह के औन से बऊताई से ढाया। की उसके अनुगीनह
से धनमी ठहनके अनंत जीवन की असा के समान हम
८ अधीकानी होवें। यह बचन बीसवास के जोग है औन मैं
चाहता ऊं की तु नीत दीनढ़ता से इन बातों के बीष्ये में कह
की वे जो ईसन पन बीसवास लाये हैं उतम कानज कनने में
जतन कनें ये बातें अछी औन मनुष्यन के लीये सफल हैं।
९ पनंतु अगयान पनसनों औन बंसाउनों औन बैवसथा के
बीष्ये में झगड़े औन टंटे से पने नहो कयोंकी वे नीसफल
१० औन बयनथ हैं। उस मनुष्य को जो बेगड़ है पहीले औन
११ दूसने बेन डांटने से पीछे तयाग कन। तु जानता है की ऐसा
जन फीनगया है औन अपनेही से दोष्यी होके पाप कनता है।
१२ जब मैं अनतमस अथवा तकीकस को तेने पास भेजुं जतन कन
की तु मेने पास नीकुपुलीस में आवे कयोंकी मैं ने ठहनाया है
१३ की जाड़ा वहीं काटुं। सासतनी जीना औन अपलुस को
१४ जतन से भेज की वे कीसी बसतु की चाह न नखें। औन
हमाने लोग भी सीष्यें की पनयोजन के लीये अछे कानज
१५ गनहन कनें की वे नीसफल न नहें। सब जो मेने संग हैं
तुझे नमसकान कहते हैं उनको जो हम से बीसवास में पनम
नष्यते हैं नमसकान कह तुम सभों पन अनुगीनह होवे आमीन।

पुलुस की पतनी फरलीमान को

---

१ पलुस के जो मसीह यसु का वंधुआ औन भाइ तीमताउस
के औन से फरलीमान को जो हमाना अती पीनीय औन संगी
२ पनीसनमी है। औन पीआनी अपफरीया औन अनकपस
हमाना संगी सीपाही औन उस मंडली को जो तेने घन में है।
३ अनुगीनह औन कुसल हमाने पीता इसन औन पनभु यसु
४।५ मसीह के औन से होवे। मैं तेने पनेम को जो साने धनमीयों
से है औन वीसवस को जो पनभु यसु पन है सुन के नीत अपनी
पनानथना में तेना यनया कन के इसन का धंनवाद कनता हुं।
६ की तेने वसवास में भागी होना गुनकानी होवे की सानी
७ भलाइयां जो मसीह यसु में तुह में हैं मानली जावें। कयोंकी
हम तेने पनेम से वहुत अनंद औन सांत पावते हैं की हे भाइ
८ तुह से साधुन के जीव वीसनाम पावते हैं। सो यदपी मैं
उचीत वतों में मसीह में साहस से तुहे अगया कन सकुं।
९ तथापी पनेम के कानन से मैं वीनय्प कनके वीनती कनता हुं
कयोंकी मैं पुलुस वीनध औन अव यसु मसीह का वंधुआ भी
१० हुं। सो मैं अपने पतन उनीसमस के लीये जो मेने वंधन में
११ मुह से उतपंन हुआ वीनती कनता हुं। वुह आगे तेने लीये
१२ नीसफल था पन अव तेने औन मेने लीये सफल है। मैं ने

उसे भजा है अब तु उसको अनथात मेरेही अंतडीया को
१२ गनहन न। मैंने याहा था को उसे अपनेही पास नप्पु को
वुह तेनी संती मंगलसनायान के वृघन में मेनी सवा कने।
१४ पनतु मैं ने न याहा की तेनी इछा बीना कुछ कनुं की तेनी
दया आवेसक नीत से नहीं पनंतु मन की इछा से होवे।
१५ कद्ये की कया जाने वह तुह से इस लीये थोडी बेन लों अलग
१६ ऊआ की तु उसे सनबदा के लीये पावे। अब सेवक के समान
नहीं पनंतु सेवक से सनेसठ अनथात पीनीय भाइ के समान
वीसेष्य करके मेने लीये पनंतु तेने लीये सनीन में औान पनभु
१७ में कीतना अधीक। सो जो तु मुहे संगी जानता है तो उसको
१८ मेने समान गनहन कन। जो उसने तेना कुछ बीगाड़ा है
अथवा तेना कुछ घनावता है तु उसे मेने नाम पन लीप्य नप्प।
१९ मुह पुलुस ने अपनेही हाथ से लीप्या है मैं आप भन देउंगा
२० तुह से नहीं कहता की तु अपनेही को मुहे घानता है। हां
भाइ मैं तुह से पनभु में लाभ पाउं मेनी अंतड़ी को पनभु में
२१ सुप्प दे। मैं ने तेनी अधीनता का भनोसा नप्पके तुहे लीप्या
२२ यह जानके की तु मेने कहने से अधीक कनेगा। औान भी
मेने लीये टीकाव साघ कन की मुहे आसा है की मैं तुमहानी
२३ पनानथना के कानन से तुमहे दीया जाउंगा। मसीह यसु
२४ में मेना सगी बंधुआ अपाफनास। औान मनकस औान अनस-
तनप्पुस औान दीमा औान लूका जो मेने संगी पनीसनमा हैं
२५ तुहे नमसकान कनते हैं। हमान पनभु यसु मसीह का अनुगीनह
तुमहाने आतमा के संग होवे आमीन।

पुलुस की पतरी इब्रानीओं को

---

१ पहीला परब।

१ ईसर जीसने आगम गयानीयों के ओर से पीतरों से
२ वारंवार और नाना परकार से वारता की। इनहीं पीछले
दीनों में हमों से पुतर के ओर से कहा जीसे उसने समसत
वसतुन का अधीकारी कीया और जीस से उसने जगतों को भी
३ वनाया। वुह उसके तेज का परकास और उसकी मुरत का
ठीक सरुप है और अपने पराकरम के वचन से समसत वसतुन
को संभालता है आपही से हमारे पापों को सुध करते महीमा
४ के दहीने और उपर जा वैठा। वुह दुतों से ऐसा वड़ा है
५ जैसा उसने अधीकार में उनसे सरेसठ नाम पाया। कयोंकी
उसने दुतों में से कीसके वीषै में यह कभी कहा की तु मेरा
पुतर है आज मुझ से उतपन हुआ और फेर कि मैं उसका
६ पीता हुगा और वुह मेरा पुतर होगा। और फेर जब वुह
पहीलौंठे को जगत में लाता है तब कहता है की ईसर के
७ समसत दुत उसको पुजा करें। और वुह दुतों के वीषै में
कहता है की वुह अपने दुतों को आतमा और अपने सेवकों
८ को आग की लवर करता है। परंतु पुतर से कहता है की हे
ईसर तेरा सींहासन सनातन है तेरे राज का दंड धरम का
९ दंड है। तुने तो धरम से परेम कीया और अधरम से

व्रोनोघ कीय़ा इस कानन इसन ने हां तेने इसन ने आनंद के सुगंघ तेल से तह्हु को तेने संगीय़ों से अघीक अभीसेक कीय़ा ।
१० और यह की हे पनभु तु ने आनंभ में भुम की नेउं डाली और
११ समसत सनग तेने हाथों के व्रने कुऐ हैं । उनका नास हो जाय़गा पनंतु तु नीत नहता है हां वे सव व्रसतन के समान
१२ पुनाने होंगे । और तु उनहें ओढ़ने के समान लपेटेगा और वे व्रदल जाय़ेंगे पनंतु तु जैसा का तैसा है और तेने व्रनस न
१३ घटेंगे । पनंतु उसने दुतों में से कीन से को कभी कहा की तु मेने दहीने हाथ व्रैठ जव लों की मैं तेने सतनुन को तेने पाओं
१४ तले का पीढ़ा कनं । कय़ा वे सव सेवा कननीहान आतमा नहीं हैं जो उघान के अघीकानीय़ों की सेवा के लीय़े भेजे गय़े हैं ।

२ दुसना पनव ।

१ इस कानन य़ाहीय़ की हम उन व्रातों पन जो हम ने सुनीं
२ अत्यंत घय़ान कनें न होवे की हम उनहें खो देवें । कय़ोकी जो दुतों के ओान से कहा हुआ व्रचन दीनढ़ था और हन ऐक अपनाघ और अगय़ाभंग कनना उचीत पलटा का फल पाय़ा ।
३ तो हम कय़ोंकन व्रचेंगे जो इतने वड़े उघान से अचेत नहें जो आनंभ में पनभु से कहा गय़ा और जीनहों ने उसे सुना हमाने
४ समीप ठहनाय़ा । और इसन ने भी आसचनज और लछन और नाना पनकान के अदभुत और घनमातमा के दान से
५ अपनी ही इछा के समान उन पन साखी दी । कयोंकी उसने आवनीहान जगत को जीसके वीखे में हम व्रोलते हैं दुतों के
६ वस में नहीं कीय़ा । पनंतु कीसी ने कहीं साखी देके कहा की मनुष्य कय़ा है जो तु उसको चींता कनता है अथवा मनुष्य
७ का पुतन कय़ा है की तु उसके लीय़े सोच कनता है । तु ने उसको दुतों से तनीक छोटा कीय़ा तु ने उसको ऐसनय़ और

परतीसठा से मुकुट दीया और उसको अपने हाथों के कारज पर प्रधान कीया। तू ने समसत वसतें उसके पांव तले कीयां
८ कयोंकी जब उसने समसत वसतें उसके पांव तले कीयां उसने कोइ वसत न छोड़ी जो उसके वस में न की परंतु अबलों हम
९ नहीं देखते की सारी वसतें उसके नीचे करी गइं। तथापी हम देखते हैं की यसु मीरतु की पीड़ा के कारन से दूतों से तनीक छोटा कीया गया ऐसवरय और परतीसठा से मुकुट पाया जीसतें वह इसवर के अनुगरह से हरएक मनुष्य के कारन
१० मीरतु का चाखे। कयोंकी उसको उचीत हुआ जीसके कारन समसत वसतें हैं और जीस से समसत वसतें को वहुत से पुतरों को ऐसवरय में लावे उनके उधार देनीहार अगुआ को दुखों से
११ सीध करे। कयोंकी वह जो पवीतर करता है और जो पवीतर कीये गये हैं सब एकही के हैं कयोंकी उस कारन से वुह उनहें
१२ भाइ कहने में लजीत नहीं है। की यह कहता है की मैं अपने भाइयों को तेरे नाम का संदेस देउंगा और मंडली के मध में
१३ तेरी सतुत गाउंगा। और फेर यह की मैं उस पर आसा रखूंगा फेर यह की देख मैं और लड़के जो इसवर ने मुझे
१४ दीये हैं। सो जैसा की लड़के देह और लोहू में साझी हैं उसने भी आप उनके संग तैसा भाग कीया जीसतें वुह मीरतु के दुवारा से उसके जीसपास मीरतु का वल है अरथात सैतान को नास
१५ करे। और उन्हें जो मीरतु के भै से जीवन भर वंधन में पड़े
१६ थे छुड़ावे। कयोंकी उसने तो दूतों को नहीं पकड़ा परंतु इबरा-
१७ हाम के वंस को पकड़ा। इस कारन उसे अवस हुआ की वुह सारी वातों में अपने भाइयों के समान होजाय की वुह इसवर के वीषै में दयाल और धरमी परधान याजक होके लोगों के
१८ पापों के कारन परायसचीत करे। कयोंकी जब उसने आप ही परीछा में पड़के दुख पाया तो वुह उनका जो परीछा में पड़ते हैं उपकार करसकता है।

३ तीसना पनव्र ।

१ सो हे पवीतन भाइय्रो जो सनग की व्रुलाहट में भागी हो
तुम लोग हमारे मत के पनेनीत श्रौन पनधान य्राजक अनथात
२ मसीह य्रसु को सोयो। वुह अपने ठहनानेवाले के व्रीसवास
के जोग था जीस नीत से मुसा भी उसके साने घन में था।
३ कय्रोंकी जैसा घन से घन के व्रनाने वाले की पनतीसठा अधीक
है वैसा वुह मुसा से अधीक पनतीसठा के जोग गीना गय्रा।
४ कय्रोंकी हन ग्रेक घन का कोइ व्रनाने वाला है पन जीसने
५ समसत व्रसतें व्रनाइं सो इसन है। श्रौन उन व्रसतुन की साप्पी
के लीय्रे जीसका व्रनन अगोले समय्र में होनेवाला था मुसा
६ उसके साने घन में व्रीसवास के जोग था। पनंत मसीह अपनेही
घन में पुतन के समान था जीसका घन हम लोग हैं जो हम
उस भनोसा श्रौन अनंद कनने की आसा को श्रंत लों दीनढ़ता
७ से थांमे नहें। इस कानन जैसा धनमातमा कहता है जो तुम
८ आज के दीन उसका सव्रद सुनो। अपने श्रंत:कनन को कठोन
न कनो जैसा नीसीयाने में पनीछा के दीन व्रन में कनते थे।
९ जव्र तुमहाने पीतनों ने यालीस व्रनस लों मुझे पनप्पा श्रौन
१० पनीछा की श्रौन मेने कानजन को देप्पा। इस कानन मैं उस
पीढ़ी से कुनुध हुआ श्रौन कहा की य्रे लोग मन में सनव्रदा
भनमते हैं श्रौन उनहों ने मेने मानगों को नहीं पहीयाना।
११ सो मैं ने अपने कनोध में कीनीय्रा प्पाइ की य्रे लोग मेने
१२ व्रीसनाम में कधी पनवेस न कनेंगे। हे भाइय्रो यौकस नहो न
होवे की तुमहों में से कीसी में दुसट श्रौन अव्रीसवासी मन होवे
१३ जो तुमहों को जीवते इसन के समीप से फीनावे। पन जव्र
लों की आज के दीन कहा जाता है ग्रेक दुसने को पनती दीन
उपदेस कनो न होवे को तुमहों में से कोइ पाप के छल के
१४ कानन से कठोन हो जाय्र। कय्रोंकी हम मसीह के भागी हुग्रे

हैं जो हम अपने आनंद्र के भनोसा को अंत लों दीनढ़ता से
१५ थांमे नहें। जब् लों कहा जाता है की आज के दीन जो तुम
उसका सब्द सुनो तो अपने मन को कठोन न कनो जैसा
१६ नीसीआने में कनते थे। कय़ोंकी कीतनें ने सुनके उसे नीस
दीलाय़ा तथापी सभों ने नहीं जो मुसा के ओन से मीसन से
१७ नीकले। ओन वुह कीन से याछीस ब्रनस लों नीस दीलाय़ा
गय़ा कय़ा उनहें से नहीं जीनहें ने पाप कीय़ा जीनकी लोथें
१८ ब्रन में गीनपड़ीं। ओन उसने कीन से कीनीय़ा प्याके कहा की
वे मेने ब्रीसनाम में पनवेस न कनेंगे पनंतु उनहें से जो ब्रीसवास
१९ न लाय़े। सो हम देप्पते हैं की वे अब्रीसवास के कानन से
पनवेस न कनसके।

४ चौथा पनब्र।

१ इस लीय़े हमें डना चाहीय़े न होवे की उसके ब्रीसनाम में
पनवेस कनने की पनतीगय़ा की जाय़ की हम में से कोइ
२ पहुंचने न पावे। कय़ोंकी जैसा उनके वैसा हमाने लीय़े
भी मंगलसमाचान का उपदेस कीय़ा गय़ा पनंतु ब्रचन जो
उनहें ने सुना उनको लाभ न हुआ की सुनने वालों ने ब्रीसवास
३ सहीत न सुना। इस लीय़े हम ब्रीसवास लाके ब्रीसनाम में
पहुंचते हैं जैसा उसने कहा की अपने कनोध में मैं ने कीनीय़ा
प्याइ की वे मेने ब्रीसनाम में पनवेस न कनेंगे य़दपी कानज
४ जगत के आनंभ से सीध हुए। कय़ोंकी उसने सातवें के ब्रीप्पे
में कहीं य़ुं कहा की इसन ने अपने समसत कानज कनके सातवें
५ दीन में ब्रीसनाम कीय़ा। पनंतु इस में फीन कहता है की वे
६ मेने ब्रीसनाम में पनवेस न कनेंगे। सो जैसा की अवस है की
कीतने उस में पनवेस कनें ओन वे जीनके कानन मंगलसमाचान
का उपदेस आगे कीय़ा गय़ा अब्रीसवास के कानन से पनवेस न

७ लीये। फेर वुह ऐक दीन का ठीकाना करके दाउद में कहता है की आज इतना समय बीतने के पीछे जैसा कहा गया है जो तुम आज उसका सब्द सुनो तो अपने अंतःकरन को कठोर न
८ करो। कयोंकी जो युसुअ ने उनहें बीसनाम में पहुंचाया
९ होता तो वुह उसके पीछे दुसरे दीन के बीष्ये में न कहता। सो
१० ऐक बीसनाम इसन के लोगों के कारन धरा है। कयोंकी जीसने उसके बीसनाम में परवेस कीया वुह भी अपनेही कारज
११ से रहगया जैसा की इसन ने अपने से। इस कारन आओ परीसरम करें की हम उस बीसनाम में परवेस करें ऐसा न होवे की कोइ अबीसवास के कारन से उन के समान भ्रस्ट हो जाय।
१२ कयोंकी इसन का बचन जीवता और सामरथी और समसत दोधारा षड्ग से अती चोष्पा है और पराण और आतमा और गांठ गांठ और गुदे को अलग अलग करके चला जाता है और चींतों को और मन के अभीलाखों को जांचता है।
१३ और कोइ सीस्ट उसकी दीस्ट से छीपी नहीं परंतु समसत बसतें उसके नेतर के आगे जीस से हम को काम है नंगी और
१४ षुली हुइ हैं। सो जैसा की हमारे लीये ऐक बड़ा परधान याजक जो सरग से पार चला गया अरथात इसन का पुतर
१५ युसु है आओ अपने मत को दीरढ़ता से थांमे रहें। कयोंकी हमारा ऐसा परधान याजक नहीं है जो हमारी दुरबलता से न छुआ जा सके परंतु सारी बातों में पापों को छोड़ हमारे
१६ समान परष्पा गया है। इस लीये हम अनुगीरह के सींहासन के पास ढाढस से आवें की हम दया पावें की हर ऐक आवसक के समय में सहाय के लीये अनुगीरह पावें।

५ पांचवां पत्र।

१ कयोंकी हर ऐक परधान याजक मनुष्यन के कारन इसन के

ब्रीप्पै को बृषतुन पन मनुप्पन में से लीय़ा जाके ठहनाय़ा जाता
२ है की वुह पाप के लीय़े भेंट ग्रैान ब्रलीदान यढ़ावे। जो
अगय़ानें ग्रैान भटकेऊप्रेन पन दय़ा कन सकता है कय़ोंकी
३ वुह ग्राप भी दुनब्रलता से घेना ऊग्रा है। ग्रैान इसी कानन
से ग्रवस है की जीस नीत से वुह ग्रैानें के लीय़े उसी नीत से
४ ग्रपने लीय़े पाप के कानन यढ़ावे। ग्रैान इस पद को कोइ
मनुप्प ग्रपने उपन नहीं लेता हैं पनंतु वुह जो हानुन के समान
५ इसन से बुलाय़ा गय़ा है। प्रैसा मसीह ने भी पनघान य़ाजक
होने के लीय़े ग्रपनी महीमा न की पनंतु उसने जीसने उसे
६ कहा की तु मेना पुतन है ग्राज मैं ने तुझे उतपंन कीय़ा। जैसा
की वुह ग्रान सथल में कहता है की तु मलकीसीदक की पांती में
७ सनब्रदा का य़ाजक है। वुह ग्रपने सनीन के दीनें में ग्रती
ब्रीलाप कनके ग्रैान ग्रांसु ब्रहा ब्रहा के उसके ग्रागे जो उसको
मीनतु से ब्रयाने पन सामनथी था पनानथना ग्रैान ब्रीनती की
ग्रैान जीस ब्रात से ग्रपनी भकताइ में वुह डनता था सुना गय़ा।
८ य़द्दपी वुह पुतन था तथापी उन दुप्पों से जो उसने पाय़े ग्राघीनता
९ सीप्पी। ग्रैान सीघ होके वुह उनके लीय़े जो उसको ग्रगय़ा
१० मानते हैं सनब्रदा के उघान का कनता ऊग्रा। इसन से
११ मलकीसीदक की पांती में पनघान य़ाजक कहाय़ा। जीसके
ब्रीप्पै में हमाने पास कहने को ब्रऊत है जीनका समझना कठीन
१२ है कय़ोंकी तुम लोग ऊंया सुनते हो। कय़ोंकी तुमहें जब
याहीय़े था की तुम लोग इस समय़ के उपदेसक होग्रो तुम लोग
ग्राघीन हो की कोइ तुमहें फेन सीप्पावे की इसन की ब्रानी के
पहीले सुतन कय़ा हैं ग्रैान प्रैसे ब्रने हो की तुमहें दुघ पीलावे
१३ न की कड़ा भोजन प्पीलावे। कय़ोंकी हन प्रैक जो दुघ
पीता है घनम के ब्रयन में ग्रपनब्रीन है कय़ोंकी वुह ब्रालक
१४ है। पनंतु कड़ा भोजन तनुनों के लीय़े है जीनको ग्रभय़ास
के कानन से भले ग्रैान बुने को पहीयानने की ब्रान पड़गइ है।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ इस कानन हम मसीह की सीख्या के सुतनों को छोड़के सीधता को यले जावें औन मीनतक कानजन के पसयाताप की
२ औन इसन पन ब्रीसवास लावने की। औन सनान के सीख्या की औन हाथ नख्खने की औन मीनतकन के जीउठने की औन
३ अनंत नग्राद्र की नेउ फेन के न डालें। औन जो इसन याहे
४ तो हम ग्रह कनेंगे। कयोंकी जो एक ब्रान पनकासीत झुए औन सनग के दान का सवाद पाग्रा औन धनमातमा में साझी
५ झुए। औन इसन का सुब्रयन औन आवने वाले जगत के
६ सामनथ का सवाद पाग्रा। जो वे भनीसट हो जायें तो उनके ब्रीध्ये में अनहोना है उनहें फेन के नये सीन से पसयाताप कनावे इस लीये की वे इसन के पुतन को दुहनाके अपने लीये कुनुस पन ख्रींयते हैं औन पनगट में लाज दीलावते हैं।
७ कयोंकी भुम जो उस मेंह को जो उस पन ब्रानंब्रान ब्रनसता है पीती है औन ख्येती के कनने वालों के जोग हनीग्राली
८ उपजावती है इसन के आसीस की भागी होती है। पन जो कांटे औन उंटकटाने उपजावती है तयकत है औन सनापीत
९ होने के नीकट है जीसका अंत जलाग्रा जाना है। पनंतु हे पीनीय्र ग्रदपी हम युं ब्रोलते हैं तथापी तुमहाने लीये हमाना उस से अछा पनब्रोध है अनधात ऐसी ब्रसतु जो उधान की
१० संगी है। कयोंकी तुमहाने कानज औन पनम के पनीसनम को जो तुमहों ने उसके नाम पन साधुन की सेवा कनके औन सेवा कनते पनगट कीग्रा है इसन अनयाग्री नहीं है की भुल
११ जाय। औन हम याहते हैं की हन एक तुमहों में से ऐसा ग्रतन कने की भनोसा की संपुननता की आसा अंत लों नहे।
१२ जीस में तुम लोग आलसी न होओ पनंतु उनके पीछे यलने वाले होओ जो धनी सहने औन ब्रीसवास के दुवाना से पनतीगा

१३ के अधीकारी होते हैं। क्योंकी जब ईश्वर ने इब्राहीम को वाचा दीया वुह अपने से बड़ा जीसकी कीरीया खाता न पाके
१४ उसने अपनीही कीरीया खाके कहा। नीश्चय मैं तुझे पर आसीस पर आसीस देउंगा और तुझे बढ़ती पर बढ़ती करुंगा।
१५ और यूं धीरज से ठहर के उसने वाचा को परापत कीया।
१६ क्योंकी मनुष्य तो नीश्चय बड़े की कीरीया खाते हैं और उनके कारन ठहरावने के लीये कीरीया खाते हैं की सारे
१७ झगड़े को समापत करे। इसी लीये ईश्वर अतयंत इछा करके की परतीगया के अधीकारीयों को अपने मंतर की अचलता
१८ को दीखावे कीरीया को मध में लाया। जीसतें दो अचल बसतुन से जीन में ईश्वर का झुठ बोलना अनहोना था हम लोग जो सरन लेने के लीये भागे की आसा को जो हमारे आगे
१९ धरी है धर पकड़ें की दीरढ़ता से सांतन पावें। सोई हमारे परान के लंगर के समान है जो ब्याई ऊई और सथीर है
२० और घुंघट के भीतर के सथान में पऊंचती है। जीधर हमारे अगुआ यसु ने जो मलकीसीदक् की पांत के समान सरबदा के लीये परधान याजक ऊआ हमारे कारन परवेस कीया।

७ सातवां पत्र।

१ क्योंकी यह मलकीसीदक् सलीम का राजा और अती महान ईश्वर का याजक था जो इब्राहीम से जा मीला और आसीस दीया जब वुह राजाओं को मारके फेरे आवता था।
२ उसको इब्राहीम ने समसत बसतुन का दसवां भाग दीया जीसका पहीला अरथ धरम का राजा है और फेर सलीम का
३ राजा अरथात कुसल का राजा। पीता रहीत माता रहीत बंस रहीत जीसके न तो दीनों का आरंभ न तो जीवन का अंत परंतु
४ ईश्वर के पुतर के समान बना था नीत का याजक धरा है। अब

ब्रीयान करे। यह कैसा महापुनुष्य था जीसको पनधान पीता
४ इब्रनाहीम ने लुट का दसवां भाग दीया। से लुइ के पुतनों
को जो याजकता का कानन पावते हैं ब्रेवसथा के समान नीश्चय
अगया है की लोगों से अनथात अपने भाइयों से दसवां भाग
६ लेवें यदपी वे इब्रनाहीम की कट से नीकले। पनंतु उसने
जीसका ब्रंश उनसे न गीना गया इब्रनहीम से दसवां भाग
लीया श्चौन उसका जोस से पनतीगया कीगइ श्चासीस दीया।
७। ८ श्चौन न संदेह छोटा ब्रड़े से श्चासीस पावता है। श्चौन
यहां मनुष्य जो मनते हैं दसवां भाग लेते हैं पनंतु वहां वही
९ जीसके ब्रीष्मै में साष्पी दीगइ की वुह जीवता है। श्चौन लुइ
ने भी जीसने दसवां भाग लीया इब्रनाहीम के दुवाना से दसवां
१० भाग दीया। कयोंकी जब मलकीसीदक उसे जा मीला वुह
११ अपने पीता की कट में था। सो जो सीधता लुइ की याजकता
से ऊइ होती की उसके नीये लोगों ने ब्रेवसथा पाइ तो अधीक
कया पनयोजन की दुसना याजक मलकीसीदक की पांती के
समान नीकले श्चौन हानुन की पांती के समान गीना न जावे।
१२ कयोंकी याजकता के पलट जाने से अवस है की ब्रेवसथा भी
१३ पलट जाय। कयोंकी वुह जीसके ब्रीष्मै मे ये ब्रातें कही जाती
हैं दुसने कुल में से है जीस में से कीसी ने जग ब्रेदी की सेवा
१४ नहीं की। कयोंकी पनगट है की हमान पनभु यहुदा से उप-
जा जीसके कुल की याजकता के ब्रीष्मै में मुसा ने कछ न कहा।
१५ श्चौन भी अधीक पनगट है की दुसना याजक मलकीपीदक की
१६ समता के समान उदय होता है। जो सनीन की अगया की
ब्रेवसथा के समान नहीं पनंतु अनंत जीवन के पनाकनम के
१७ समान ब्रना है। कयोंकी वुह साष्पी देता है की तु मलकीसीदक
१८ की पांती में सन्दा के लीये याजक है। कयोंकी नीनब्रलता
श्चौन नीसफलता के कानन से अगली अगया लोप की जाती
१९ है। कयोंकी ब्रेवसथा ने तो कुछ सीध न कीया पनंतु उस से

अछो आसा के लावने में कीया जीस से हम इसन के नीकट
२०।२१ व्रढ़ते हैं। ग्रोन जैसा की व्रीना कीनीया से न ऊआ। वे तो
व्रीना कीनीया प्याये याजक व्रने हैं पनंतु यह कीनीया से उस
से जीसने उसको कहा की पनभु ने कीनीया प्याइ ग्रोन न पक-
तावेगा तु मलकीसीदक की पांती के समान नीत के लीये याजक
२२ है। इतना अधीक यसु ग्रेक अती अछे नीयम का व्रीयवइ
२३ ऊआ। ग्रोन व्रऊत याजक थे कयोंकी वे मीनतु के कानन से
२४ जगत में नह न सके। पन यह इस कानन की सनव्रदा नहता
२५ है ग्रेसी याजकता नप्पता है जो ग्रयल है। इसी लीये वुह
उनहें जो उसके दुवाना से इसन के पास ग्रावते हैं ग्रतयंत
लें व्रया सकता है कयोंकी वुह उनके लीये व्रीनती कनने
२६ को सनव्रदा जीवता है। कयोंकी ग्रेसा पनधान याजक हयाने
लीये यहीये था जो पवीतन नीनदोप्प नीनमल पापीयों से
२७ अलग ग्रोन सनगों से भी महान है। जो उन पनधान याजकों
के समान पनती दीन ग्रावीन न था की पहीले ग्रपनेही ग्रोन
परेन लोगों के पापों के कानन व्रलीदान लावे कयोंकी उसने
२८ ग्रापको ग्रेक व्रान भेंट देके यह कीया। कयोंकी व्रैवसथा
मनुप्पन की जो नीनव्रल है पनधान याजक ठहनावती है पनंतु
कीनीया का व्रयन जो व्रैवसथा के पीछे था सनव्रदा ग्रभीसेक
कीये गये पुतन को ठहनावता है।

८ ग्राठवां पनव्र।

१ ग्रव्र जो कुछ की हमने कही हैं उसका यह तातपनज है की
हमाना ग्रेसा पनधान याजक है जो महीमा के सींहासन के
२ दहीने ग्रोन सनग में व्रैठा है। जो पवीतन व्रसतुन का ग्रोन
सये तंव्रु का सेवक है जीसे मनुप्प ने नहीं पनंतु इसन ने खड़ा
३ कीया है। कयोंकी हन ग्रेक पनधान याजक भेंट ग्रोन
व्रलीदान यढ़ावने के लीये ठहनाया जाता है इस लीये ग्रवस

४ हुआ की यह मनुष्य भी भेंट के लीये कुछ चढ़ावे। परंतु जो वुह पीरथीवी पर हुआ होता तो याजक न होता क्योंकी
५ याजक तो हैं जो ब्यवस्था के समान भेंट चढ़ावते हैं। जो स्वर्ग की वसतून के द्रीस्टांत ग्रौर परछाहीं के लीये सेवा करते हैं जैसा मुसा को जब वुह तंबू बनाने पर था दरसन में आग्या दी गई क्योंकी वुह कहता है की तु समसत वसतें उस डौल
६ के समान बना जैसा तुझे पहाड़ पर दीष्याया गया। परंतु अब उसको उस से स्रेसठ सेवा मीली की वुह अती अच्छे नीयम का बीचवई हुआ जो उस से अच्छी परतीग्या के संग ठहराया
७ गया। क्योंकी जो वुह पहीला नीयम नीरदोष्य हुआ होता
८ तो दुसरे के सथान की ष्योज न होती। क्योंकी वुह उनको दोष्यी ठहराके कहता है की देष्य वे दीन आवते हैं परमेसु कहता है की मैं इसराइल के घराने ग्रौर यहूदा के घराने के लीये
९ ऐक नया नीयम ठहराउंगा। परमेस्र कहता है की यह उस नीयम के समान न होगा जो मैं ने उनके पीतरन के संग उस दीन जब मैं ने उनका हाथ पकड़ा की उन्हें मीसर के देस से नीकाल लाउं इस कारन की वे मेरे नीयम पर सथीर न रहे
१० ग्रौर मैं ने उनसे आनाकानी की। क्योंकी यह नीयम है इन दीनों के पीछे मैं इसराइल के घराने से करुंगा परमेसु कहता है की मैं अपनी आग्या को उनके मन में डालुंगा ग्रौर उन्हें उनके अंतःकरन में लीष्युंगा ग्रौर मैं उनका इसर होंगा
११ ग्रौर वे मेरे लोग होंगे। ग्रौर कोई अपने परोसी को ग्रौर परेर कोई अपने भाइयों को न कहेगा की तु इसर को पहीचान
१२ क्योंकी छोटे से बड़े लों सब मुझे पहीचानेंगे। क्योंकी मैं उनकी अधरमता पर दया करुंगा ग्रौर उनके पापों
१३ ग्रौर उन की बुराइयों को कभी समरन न करुंगा। जब वुह कहता है की ऐक नया उस ने पहीले को पुराना कीया अब वुह जो पुराना हुआ ग्रौर गलगया सो नास के नीकट है।

९ नवां पनव्र।

१ इस लीये पहीला तंव्रु इसन की सेवा का व्रीच नप्पता था
२ ग्रैान प्रेक संसानी पवीतन सथान। कय्रोंकी पहीला तंव्रु सीच
ऊआ जीस में दीग्रट ग्रैान मंय ग्रैान भेंट की नोटीय्रां थीं य्रह
३ पवीतन सथान कहावता है। ग्रैान दुसने घुंघट के पने वुह
४ तंव्रु था जो पवीतनों से पवीतन कहावता है। उस में सोने
की घुपाउनी थी ग्रैान नीय्रम की संदुक जो यानों ग्रैान सोने
से मीढ़ी थी उस में प्रेक सोने का पातन मंना से भना ऊआ
ग्रैान हानुन की छड़ी जीस में कनप्पी फुटी थी ग्रैान नीय्रम
५ की पटीय्रां थीं। ग्रैान उसके उपन तेजसवी कनोव्रीम थे जो
दय्रा के ग्रासन पन छाय्रा कीय्रे थे जीनके व्रीप्पै में हम सव्र
६ कह नहीं सकते। सो जव्र य्रे व्रसतें इस नीत से ठीक हो युकीं
७ पहीले तंव्रु में य्राजक नीत पनवेस कनके सेवा कनते थे। पन
दुसने में केवल पनघान य्राजक व्रनस में प्रेक व्रान लोऊ सहीत
जीसे वुह ग्रपने लीय्रे ग्रैान लोगों के भुल युक के लीय्रे यढ़ावता
८ था। घनमातमा इस से वुह्रावता था की जव्र लों पहीला तंव्रु
प्पड़ा था तव्र लों ग्रतय्रंत पवीतन में मानग पनगट न ऊआ था।
९ जो व्रनतमान समय्र की उपमा है जीस में भेंट ग्रैान व्रलीदान
यढ़ाय्रे जाते हैं जो सेवा कननीहानों को ग्रंतःकनन के व्रीप्पै
१० में सुघ न कनसके। की वे केवल प्पाना ग्रैान पीना ग्रैान नाना
पनकान के सनान ग्रैान सानीनीक व्रेवहानों से पनय्रोजन
११ नप्पते थे जव्र लों की सुघानने का समय्र न ग्रावे। पन जव्र
मसीह ग्रानेवाली उतम व्रसतुन का पनघान य्राजक हो ग्राय्रा
उस से व्रड़ा ग्रैान ग्रती सीघ तंव्रु के कानन से जो हाथों से
१२ नहीं व्रना ग्रनथात इस सीनीसट से नहीं। ग्रैान व्रकनीय्रों
ग्रैान व्रछीय्रों के लोऊ से नहीं पनंतु ग्रपनेही लोऊ से पवीतन
सथान में प्रेक व्रान पनवेस कीय्रा की उसने हमाने कानन

१३ सनव्रदा का मोप्प पनापत कीया। कयोंकी जो व्रैलों ग्रोन व्रकनीयों का लोऊ ग्रोन व्रछीया की नाप्प जो ग्रपवीतनों पन छाड़की जाय सनीन का पवीतन कनने का पवीतन कनती है।
१४ तो कीतना ग्रधीक मसीह का लोऊ जीसने ग्रपने को नीसकलंक से सनव्रदा के ग्रातमा से इसन के ग्रागे यढ़ाया तुमहाने ग्रंतःकनन को मीनतक के कानजन से पवीतन कनेगा की तुम
१५ जीते इसन की सेवा कनो। ग्रोन वुह इसी लीये नये नीयम का व्रीयवइ है की मीनतु के कानन से उन ग्रपनाधों के मोप्प के लीये जो पहीले नीयम के व्रीप्पै में था की वे जो व्रुलाये गये हैं सनव्रदा के ग्रधीकान की पनतीगया को पनापत कनें।
१६ कयोंकी जहा नीयमपतन है तहां नीयम कननेवाले की मीनतु
१७ ग्रवस है। कयोंकी नीयमपतन मीनतु से दीनढ़ होता है नहीं तो वुह कीसी काम का नहीं जव्र लों उसका सथीन
१८ कननीहान जीता है। इस कानन पहीला भी व्रीना लोऊ से
१९ नहीं कीया गया। कयोंकी जव्र मुसा ने समसत लोगों को व्रैवसथा की नीत पन हन एक ग्रगया कह सुनाइ उसने व्रछड़ों ग्रोन व्रकनीयों का लोऊ जल ग्रोन लाल ऊन ग्रोन जुफा के संग लेकन गनंथ पन ग्रोन समसत लोगों पन छीड़क के कहा।
२० की यह उस नीयम का लोऊ है जो इसन ने तुमहाने लीये
२१ ठहनाया। ग्रोन उसने तंव्रु पन ग्रोन सेवा के पातनों पन भी
२२ लोऊ छीड़का। ग्रोन व्रहुदा समसत व्रसतें व्रैवसथा में लोऊ से पवीतन की जाती थीं ग्रोन व्रीना लोऊ व्रहाये मोप्प नहीं
२३ होता। इस लीये ग्रवस था की सनग की व्रसतुन की व्रानगी ऐसी व्रसतुन से पवीतन की जायें पनंतु सनग की व्रसतें ग्राप
२४ इनहीं से ग्रछे व्रलीदानों से। कयोंकी मसीह ने उस पवीतन सथान में जो हाथों से व्रनाया गया ग्रोन सत व्रसतुन का यीनह है पनवेस नहीं कीया पनंतु सनगही में की ग्रव्र हमाने कानन
२५ इसन के ग्रागे जा पहुंये। पन ग्रवस न था की वुह ग्राप को

वांवार चढ़ावे जैसा प्रधान याजक पवीत्र स्थान में हर
२६ वरस औरों के लोहू से प्रवेस करता है। इस लीये जो
उसको ऐसा अवस होता तो वुह जगत के आरंभ से वारंवार
कसट पाया करता परंतु अब वुह अंत के समय में पाप को
नास करने के लीये अपने को वलीदान देके एकही वार प्रगट
२७ हुआ है। और जैसा की ठहराया गया को मनुष्य एक वार
२८ मरे और उसके पीछे वीचार। वैसा ही मसीह एक वार
वहुतेरों के पापों को उठावने के लीये चढ़ाया गया और उनहों
के उधार के लीये जो उसके दुसरे वार आवने की वाट जोहते
हैं नीसपाप प्रगट होगा।

१० दसवां पत्र।

१ क्योंकी व्यवस्था उन वस्तुन का ठीक रुप नहीं पर आने
वाली अच्छी वस्तुन की परछाही मात्र रष्ष के उन वलीदानों
के चढ़ावने से जो वे हर वरस नीत लावते हैं जो उन करने
२ आवते हैं सीध नहीं कर सकती। नहीं तो उनका चढ़ावना
वंद हो जाता इस कारन की पुजेरी एक वार पवीत्र होके
३ पाप का ष्षटका नहीं रष्षते। परंतु उन में वरस वरस पाप
४ का चेत होता है। क्योंकी अनहोना है की वैलों और
५ वकरीयों का लोहू पापों को मीटावे। इस लीये वुह जगत में
आवते हुए कहता है की वलदान और अरपन को तु ने नहीं
६ चाहा परंतु मेरे लीये एक देह सहेजा। होम से और अरपन
७ से जो पापों के कारन था प्रसन न था। तव मैं ने कहा की
देष्ष मैं आवता हुं पुसतक के कांड में मेरे वीष्षे में लीष्षा है
८ की तेरी इछा पर चलुं हे इसर। उपर कहके की वलीदान
और अरपन और होम और पाप के लीये वलीदान तु ने न
चाहा और उन से प्रसन न हुआ और यह व्यवस्था की रीत
९ पर चढ़ाइ जाती हैं। तव उसने कहा की हे इसर देष्ष मैं

तेनी इच्छा पन चलने को आवता ऊं वुह पहीले को अलग
१० कनता है की दुसने को सथीन कने। उसी इच्छा के कानन से
हम यसु मसीह के देह के एकही बान ब्लीदान होने से पवीतन
११ कीये जाते हैं। और हन एक याजक पनतीदीन ख्ड़ा होके
इसन की सेवा कनता है और एकही पनकान के ब्लीदान जो
पाप को दुन नहीं कन सकते बानंबान भेंट दीया कनता है।
१२ पनंतु वुह एकही ब्लीदान पापों के कानन एकही ब्लीदान
१३ चढ़ाके इसन के दहीने ओन सनब्दा के लीये बैठा है। और
अब से बाट जोहता है जब लों उसके बैनी उसके पांव के पीढ़ा
१४ होवें। कयोंकी एकही अनपन से उसने उनहें जो पवीतन
१५ कीये गये हैं सनब्दा के लीये सीच कीया है। धनमातमा भी
१६ पहीले कहके हमाने लीये साख्षी देता है। की पनभु कहता है
की यह वुह नीयम है जो उन दीनों के पीछे उन से कनुंगा मैं
अपनी बैवसथा को उनके अंतःकनन में डालुंगा और उनहें
१७ उनके मन में लीख्युंगा। उनके पापों और अपनाधों को मैं
१८ कधी समनन न कनुंगा। अब जहां इनहों का मोचन है तहां
१९ पाप के कानन ब्लीदान नहीं है। इस लीये हे भाइयो हम ने
२० यसु के लोहु से एक नये और जीवते मानग से जीसे उसने
आड़ में से अनथात अपने सनीन में से हमाने लीये ठहनाया
२१ पवीतन सथल में पनवेस कनने की छुटी पाई। और महा
२२ याजक इसन के घन पन नख्य के। आओ हम सचे अंतःकनन
और संपुनन बीसवास से बुने बीवेक से अपने मन का छीड़कवा
के और अपने देह को सुध जल से धोलवा के नीकट आवें।
२३ अपने मन की आसा को बीना डगमगाने के दीनढ़ता से थामें
नहें कयोंकी जीसने पनतीगया की है सो बीसवास के जोग है।
२४ और हम एक दुसने को सोचें की हम पीआन और सुकनम
२५ कनने को उसकावें। हम एकठे होने से अलग न नहें जैसा
की कीतनों की नीत है पनंतु उपदेस कनें और यह इतन,

अघीक जेउं जेउं तुम देष्पते हो की दीन समीप आवता है।
२६ कयोंकी जो हम सयाइ के गयान को पनापत कनके जान
वुझ के पाप कनें तो फीन कोइ वलीदान पाप के कानन नहीं
२७ घना है। पनंतु नयाय का नीसयय भयंकन वाट जोहना
ओान अगीन का जलजलाहट जो सतनुन को प्पा लेगा घना है।
२८ जीस कीसी ने मुसा के सासतन की नीनदा की वुह दो अथवा
तीन साप्पीयों के पनमान से वीना दया से माना जाता था।
सो तुम लोग वुझो की वुह कीतने अती कठीन दंड के जोग
गीना जायगा जीस ने इसन के पुतन को पांव तले लताड़ा ओान
नीयम के नुधीन को जीससे वह पवीतन कीया गया सामान गीना
३० ओान अनुगनह के आतमा का अपमान कीया। कयोंकी हम
उसे जानते हैं जो यह वोला की वैन लेना मेना काम है पनभु
कहता है की मैंहीं पलटा देउंगा ओान फेन यह की पनभु अप
३१ ने लोगों का नयाय कनेगा। जीवते इसन के पलले में पड़ना
३२ भयंकन है। पनंतु अगले दीनों को समनन कनो जीन में
३३ तुमहों ने पनकासीत होते ऊऐ जुघ के कसट को सहा। कुछ
तो जव की तुम लोग नीनदा ओान दुप्पों के सवांग वने ओान
३४ कुछ जव की उनके जीनकी यह दसा होती थी साझी थे। कयों
की मेने वंघन में तुम लोग मेने संग दुप्पी थे ओान अपनी संपत
के लुटे जाने को आनंद से गनहन कीया अपनेही में जान के
की हमाने लीये ऐक संपत जो अछी ओान सथीन है सनग में
३५ घनी है। सो तुम लोग अपने भनोस को तयाग न कनो
३६ जीसका वड़ा फल है। कयोंकी तुमहें संतोप्प अवेस है की
३७ इसन की इछा पन यल के पनतीगया का पनापत कनो। कयों
की ओान थोड़ी वेन ओान वुह जो आवता है आवेगा ओान अ-
३८ वेन न कनेगा। पनंतु घनमी वीसवास से जीयेगा तथापी
जो वुह हट जावे तो मेना पनान उस से पनसंग न होगा।
३९ पनंतु हम उन में से नहीं हैं जो नास को हटे जाते हैं

परंतु उनहों में से हैं जो परान ब्रयावने के लीये ब्रीसवास लाते हैं।

११ गय़ारहवां परब्र।

१ अब्र ब्रीसवास उन ब्रसतुन का नीसयीत ब्राट जोहना है जीन
२ पर आसा की जाती है। कय़ोंकी उसही से परायीनों ने साप्पी
३ पराप्त की। बीसवास से हम जानते हैं की जगत इसर के ब्रचन से सृचन गय़ जैसा की जो ब्रसतें देप्पी जाती हैं उन ब्रसतुन से
४ जो देप्पने में आता हैं नहीं ब्रनीं। ब्रीसवास से हाब्रील ने कीन से अछा ब्रलीदान इसर को चढ़ाय़ा उसी के कारन उसने धरमी होने की साप्पी पराप्त की की इसर उसके दान पर साप्पी देता
५ है की वुह मीरतक हो के अब्र लों ब्रोलता है। ब्रीसवास से हनप्प सथानांतर कीय़ा गय़ा जीसतें वुह मीरतु को न देप्पे और न पाय़ा गय़ा कय़ोंकी वुह इसर से सथानांतर कीय़ा गय़ा था कय़ोंकी अपने सथानांतर कीये जाने से पहीले उसने साप्पी
६ पराप्त की, की उसने इसर को परसंन कीय़ा। परंतु ब्रीना ब्रीसवास से परसंन करना अनहोना है कय़ोंकी जो इसर कने आवता है उसके लीये अवेस है की नीसचय़ करे की वुह है और की जो उसको जतन से प्पोजते हैं उनका फल देनवाला
७ है। ब्रीसवास से नुह ने उन ब्रसतुन के ब्रीप्पय़ में जो अब्रलों देप्पने में नहीं आइ थीं इसर से चेताय़ा जाके और भय़ प्पाके जाहाज ब्रनाइ की अपने परीवार का ब्रचावे और उसी से उस ने जगत को दोप्पी कीय़ा और उस धरम का जो ब्रीसवास से
८ मीलता है अधीकार हुआ। ब्रीसवास से इब्राहीम जब्र ब्रुला या गय़ा की एक सथान में ब्राहर जाय़ जीसे वुह अधीकार में पावने को था मान लीय़ा और नीकल गय़ा य़दपी वुह न जानता
९ था की कीधर जाता है। ब्रीसवास से उसने परतीगय़ा की भुम में य़ों ब्रास कीय़ा जैसे परदेस में की वुह इसहाक और य़ाकुब्र

के संग जो उसी अवधी के उसके संग अधीकारी थे तंवुओं में
१० नहा कीया। कयोंकी वुह एक नगन की वाट जोहता था
जीसकी नेवें हैं जीसका वनानेवाला ओान डौल कननेवाला इसन
११ है। वीसवास से सान्ना ने आपी गनभ धानन कनने की सकती
पाइ ओान समय वीते पन पुतन जनी इस कानन की उसने
१२ अवधी कननेवाले को वीसवास के जोग जाना। इस लीये एक
ही से ओान वुह जो इस वीसय में मीनतकसा था आकास के
तानों के समान मंडली में ओान समुंदन के तीन पन के अन
१३ गीनीत वालु के समान उपजे। ये सव पनतीगा को न पाके
वीसास में मन गये पनंतु दुन से उनहें देष्य के ओान पनवुध
होके गनहन कीया ओान अंगीकान कीया की हम पीनथीवी
१४ पन पनदेसी ओान जातनी हैं। कयोंकी वे जो ऐसी वातें कहते
१५ हैं प्योल के कहते हैं की हम एक देस ढुंढते हैं। ओान जो
उनके मन वहां होते जहां से वे नीकले थे तो उनके वस में था
१६ की फीन जाते। सो इस लीये वे एक अती अछे अनथात
सनग के अभीलाषी हे इस कानन इसन लजीत नहीं है की
उनका इसन कहावे कयोंकी उसने उनके लीये एक नगन सोच
१७ कीया है। वीसवास से इवनाहीम ने जव पनीछा में पड़ा इस
हाक को वल में दीया हां जीसने की पनतीगया पाइ थी अपने
१८ एकलौते को चढ़ाया। जीसके वीष्यय में कहा गया की सद्र
१९ हाक में तेना वंस कहा जायगा। यह समुझ के की इसन
मीनतकन से जीलावने को सामनथी है जहां से उसने उसे एक
२० दीसटांत में पाया। वीसवास से इसहाक ने अपनेवाली वस
२१ तुन के वीष्यय में याकुव ओान असु को आसीस दीया। वीस
वास से याकुव ने मनते मनते युसफ के दोनों पतन को आसीस
२२ दीया ओान अपने डंड पन सतुत की। वीसवास से युसफ ने
मनते मनते इसनाइल के वंस की जातना की वात कह। ओान
२३ अपने हडीयों के वीष्यय में अगया की। वीसवास से मुसा

उतपंन होके तीन महीने लों अपने माता पीता से छीपाया गया
क्योंकी उनहों ने देष्पा की बालक सुंदर है और राजा की
२४ अगया से न डरे। बीसवास से मुसा ने तरुन होके न याहा
२५ की फरउन की कनया का पुतर कहावे। की इसर के लोगों
के संग दुष्प में भागी होना अधीक याहा की पाप का भोग
२६ थोड़े लों करे। उसने मीसर के भंडारों से मसीह की नींदा
को अधीक धन समझा क्योंकी उसकी दीनीसटी परती रुल पाव
२७ ने पर थी। बीसवास से उसने राजा के कोरोध से भय न प्याके
मीसर को छोड़ा क्योंकी उसने उसको जो अदीनीस है देष्प के
२८ बल पाया। बीसवास से उसने पार जाने के परब को और
रुधीर छीड़काने को धारन कीया न होवे की पहीलोंटे पुतरों
२९ का नास करनेवाला उनको छूवे। बीसवास से वे लाल समुंदर
से पार गये जैसे सुष्पे से जीसे मीसरी करते ऊए डुब गये।
३० बीसवास से आरीहा की भीतें सात दीन से घेरी जाके गीर
३१ गइं। बीसवास से राहाब बेसया भेदीयों को कुसल से गरहन
३२ करके अबीसवासीयों क संग नास न ऊइ। अब मैं और क्या
कऊं समय घट जाता जो मैं जदीउन और बरक और सम
सुन और यफ़्‌ताह और दाउद और समुइल और आगमगया
३३ नीयों की कथा कहता। जीनहों ने बीसवास से राज को बस
में कीया और धरम का कारज कीया और परतीगया को
३४ परापत कीया और सींहों के मुंह को बंद कीया। और अगीन
के तेज को बुझा दीया पपरग क धार से बच गये दुरबलता में
बलवान ऊए जुध में बीर ऊए और अरदेसीयों की सेनन को
३५ हटा दीया। सतरीयों ने अपने मीरतकन को फेर के जीव
ता पाया और कीतने अती कसट में डाले गये और मोष्प को
गरहन न कीया जीसतें वे अती अच्छे पुनरुतथान को परापत
३६ करें। कीतने ठठों को और कोड़ों की परीछा में पड़े हां
३७ सीकरों और बंधनों में भी पड़े। पथरवाह कीये गये आरे से

यीने गये पनप्ये गये प्पनग से मानो गये भेड़ों श्रीन वकनीयों के प्पाच श्रोढ़े ऊए भ्रनमते परीने सकेती में दुष्प में पीड़ा में
३८ नहे। जगत उनके जाेग न था वे उजाड़ों श्रीन पहाड़ों श्रीन
३९ मांदों श्रीन भुम के गड़हों में भ्रनमते परीने। श्रीन इन सभ्नों ने वीसवास से सुभ्रनाम पाके पनतीगया का पनापत न कीया।
४० इसन ने हमाने लीये श्रती श्रछी वसतु ठहनाई की वे हमें छोड़ के सीच न होवें।

१२ वानहवां पनव्र।

१ सो साप्पीयों के इतने वड़े मेघ से घेने ऊए होके हम हनएक वाेझ श्रीन पाप को जो सहज से हमें छेंकता है तयाग कनके उस दाैड़ानी में जो हमाने श्रागे घनी गई है संतोप्प से दाैड़ें।
२ श्रीन यसु को जो हमाना श्रगुश्रा श्रीन वीसवास का संपुनन कननी हान है ताक नप्यें उसने उस श्रानंद के लीये जो उसके श्रागे घना गया लजा को तुछ समझ के कुनुस को सहा श्रीन वुह इसन
३ के सींहासन के दहीने श्रोन वैठा है। कयोंकी जीसने श्रपने वीनोघ में पापीयों से ऐसी वीपनीतता को सहा उसको सोचो न होवे की तुम लोग थकजाश्रो श्रीन मन में नीनवल हो जाश्रो।
४।५ तुमहों ने श्रव लें नुघीन लें पाप का सामना न कीया। श्रीन उस सीप्पा को भुल गये हो जो तुमहें पुतनों के समान कहोत है की मेने पुतन पनभु की ताड़ना की नींदा न कन श्रीन जव
६ वुह तुहे दपटे नीनवल मत हो। कयोंकी जीसे पनभु पीश्रान कनता है उसे ताड़ना कनता है श्रीन हनएक पुतन को जीसे
७ वुह गनहन कनता हैं पीटता है। जो तुम लोग ताड़ना सहो तो इसन तुमहों से ऐसा वेवहान कनता है जैसा पुतनों से कयों-
८ की वुह कौनसा पुतन है जीसे पीता ताड़ना नहीं कनता। पनंतु जो तुम लोग ताड़ना नहीत होश्रो जीस में सव साझी हैं तो तुम
९ लोग वनन संकन हो श्रीन पुतन नहीं। श्रीन जव हम श्रपने

सनीन के पीता को जीनहों ने हमें ताड़ना की श्रादन कीया
क्या हम कीतना श्रधीक श्रातमा के पीता के वस में न होंगे
१० श्रीन जीयेंगे। कयोंकी उनहों ने थोड़े दीन के कानन श्रपनी
इछा से ताड़ना की पन वुह हमाने लाभ के लीये जीसतें हम
११ उसकी पवीतनता के साझी होवें। सो समसत ताड़ना श्रव
श्रानंद का कानन नहीं सुझ पड़ती पनंतु दुष्प का तथापो पीछे
को वुह उनहें जो उस से साधन कीये गये हैं धनम के सांतीमय
१२ फल को देती है। सो इस कानन ढीले हाथों श्रीन नीनवल
१३ घुठनों को उठाश्रो। श्रीन श्रपने पावों के लीये सीधे मानग
बनाश्रो की जो लंगड़ा है भटक न जाय पनंतु पहीले चंगा हो
१४ जाय। समसत मनुष्यन के संग कुसल का पीछा कनो श्रीन पवी
१५ तनता का की उसके बीना कोइ पनभु को न देष्पेगा। धयान
से देष्पते रहो न होवे की कोइ इसन के श्रनुगनह से गीनजाय
न होवे की कोइ कडुश्राहट की जड़ उगके दुष्प देवे श्रीन उससे
१६ बहुतेने श्रसुच हो जायें। न होवे की कोइ बेभीचानी श्रथवा
श्रधनमी इसौ के समान हो जाय जीसने एक भोजन के कानन
१७ श्रपने जनमभागा को बेच डाला। कयोंकी तुम लोग जानते
हो की पीछे से जब उसने श्रासीस के श्रधीकान को चाहा तब
वुह तयाग कीया गया कयोंकी उसने पसचाताप कनने का
सथान न पाया यदपी उसने श्रांसु बहा बहा के उसे जतन से
१८ ढुंढा। कयोंकी तुम लोग उस पाहाड़ लों नहीं श्राये हो जो छुश्रा
जा सका श्रीन जलती झइ श्रगनी श्रीन गाढ़ा मेघ श्रीन श्रंध-
१९ कान श्रीन श्रांधी। श्रीन तुनही का सबद श्रीन बातों का सबद
जीसे जीनहों ने सुना चाहा की बचन उनहें फेन न कहा जाय।
२० कयोंकी जो कहा गया वे उसे न सह सकते थे श्रीन यदी पसु
मातन पहाड़ को छुवे तो उस पन पथनवाह कीया जायगा
२१ श्रथवा भाले से छेदा जायगा। श्रीन वुह दनसन ऐसा
भयंकन था की मुसा बोला की मैं श्रतयंत डनता झं श्रीन

२२ कांपता ऊं। पनंतु तुम लोग सैऊन के पहाड़ के श्रैान जीवते ईसन के नगन के जो सनग का ग्रौनोसलीम है श्रैान २३ असंप्प दुतों के पास। श्रैान पहीलैाठे की महा सभा के श्रैान मंडली के जो सनग पन लीप्पे हैं श्रैान ईसन के पास जो सब्र का नय्र ग्री है श्रैान सीघ कीये गये घनमीग्रों के २४ श्रातमाश्रों के पास। श्रैान ग्रसु के जो नये नीयम का व्रीयवह है श्रैान छीड़कने के लोऊ के पास जो हाव्रील से श्रच्छी व्रातें २५ व्रोलता है श्राये हो। यैाकस नहो की तुम लोग व्रोलनेवाले को तय्राग न कनो कयोंकी जो वे जीनहों ने उसको जीसने भुम पन कहा था तय्राग कीग्रा न व्रचे तो हम लोग कयोंकन व्रचेगे २६ जो उस से जो सनग से कहता है फीन जायें। जीस के सव्रद ने तव्र भुम को हीला दीय्रा पनंतु अव्र उसने य्रह कही के अवघी कीय्रा की फीन ऐकव्रान मैं केवल पीनथीवी को नहीं पनंतु २७ सनग को भी हीला देउंगा। श्रैान य्रह की श्रैान ऐक व्रान उसका य्रह अनथ है की जो व्रसतें हीलाई जाती हैं टल जायें जैसा व्रनी ऊई व्रसतुन का जीसतें वे व्रसतें जो हीलाई नहीं २८ जातीं व्रनी नहें। सो जैसा की हमों ने अयल नाज पाय्रा श्राश्रो अनुगनह लेवें जीसतें हम लोग गनाह्य की नीत से श्रैान २९ श्रादन से श्रैान घनम के भय्र से ईसन की सेवा कनें। कयोंकी हमाना ईसन भसम कननीहान अगीन है।

१३ तेनहवां पनव्र।

१।२ सो भाई की सी पीनत व्रनी नहे। श्रतीथ की सेवा को मत भुलो कयोंकी उसीसे कीतनों ने व्रीना जाने दुतों की सेवा ३ की है। जो व्रंघन में हैं उनहें ऐसा समनन कनो जैसा की उनके संग व्रंघन में हो उनहें जो दुप्प सहते हैं ऐसा जैसा की ४ तुम लोग भी सनीन में हो। व्रीवाह सव्र में पनतीसठीत है श्रैान व्रीछैाना सुघ है पनंतु ईसन व्रेसय्रागामीयों श्रैान व्रभीयानीयों

५ को दंड देगा। यलन लोभ नहीत होवे औान जो जो वसतु तुमहानी हैं उन से संतोष्य कनो कयोंकी उसने कहा है की मैं तुहे न छोडुंगा औान तुहे कधी कीसी भांत से तयाग न कनुंगा।
६ सो हम हीयाव से कहें की पनभु मेना सहायक औान मैं न
७ डनुंगा मनुष्य मुहे पन कया कनेगा। अपने अगुओं को जीनहों ने तुमहों से इसन की वात कही समनन कनो उनकी यलन
८ के अंत को वीयान कनके उनके वीसवास का पीछा कनो। यसु
९ मसीह कल औान आज औान सनवदा ऐकसां है। वीदेसी औान ना ना पनकान की सीष्या से फीनाये न जाओ कयोंकी भला है की मन अनुगनह में दीढ़ होय भोजन में नहीं जीन से उनहों
१० ने जो उन में नहते थे लाभ न पाया। हमानी तो ऐक जगवेदी
११ है जीस से तंवु के सेवकों को खाने को उचीत नहीं। कयोंकी जीन पसुन का लोहु पाप के लीये पनधान जाजक पवीतन सथान में ले जाता है उनके देह छावनी के वाहन जलाये जाते
१२ हैं। इस कानन यसु भी जीसतें वुह लोगों को अपने लोहु से
१३ पवीतन कने फाटक के वाहन माना गया। इस लीये हम उस की नींदा को सहके छावनी के वाहन उस पास नीकल चलें।
१४ कयोंकी यहां हमाने ठहनने का नगन नहीं पनंतु ऐक को जो
१५ आवनीहान है ढुंढते हैं। इस कानन हम उसी के सहाय से सतुत का वलीदान इसन को नीत नीत चढावें अनथात होठों
१६ का फल उसके नाम का धंनवाद कनते जायं। पनंतु भलाइ औान पुन कनने में मत भुलीयो कयोंकी ऐसे वलीदानों से
१७ इसन पनसंन होता है। अपने अगुओं की आगया मानो औान उनके वस में होओ कयोंकी वे उनके समान जो लेखा देंगे तुमहाने पनान की चौकसी कनते हैं की वे आनंद से देवें औान
१८ सोक से नहीं कयोंकी वुह तुमहाने लीये नीनलाभ है। हमाने लीये पनानथना कनो कयोंकी हमें नीसचय है की हम अछा वीवेक नख्ते हैं की हम सानी वातों में अछो नीत से नीनवाह

१९ कीय्रा याहते हैं। ग्रोन व्रीसेप्प कनके मैं तुमहानी व्रीनती कनता ऊं ग्रह कने। की मैं सीघन से तुमहें फेन के दीग्रा जाउं।
२० ग्रव कुसल का इसन जो सनव्रदा के नीग्रम के लोऊ से हमाने पनभु ग्रसु के। जो महा गड़नीग्रा है मीनतकन में से फेन
२१ लाग्रा। तुमहों के। हन एेक भले कानज में सीघ कने की उस की इछा पन यलो ग्रोन जो कुछ की उसकी दीनीसट में पनसंन है ग्रसु मसीह के लीये तुमहों में कने जीसके। एैसनय्र सनव्रदा
२२ ग्रोन सनव्रदा होवे ग्रामीन। पनंतु हे भाइग्रो मैं तुमहों से व्रीनती कनता ऊं की सीप्पा के व्रयन के। मान लेग्रो की मैं ने
२३ थोड़ी व्रातों में तुमहों के। पतनी लीप्पी।। जाने। की भाइ तीमताउस छुट गग्रा जो वुह सीघन ग्रावे ते। उसके संग होके
२४ मैं तुमहें देप्पुंगा। ग्रपने साने यगुग्रों ग्रोन साघुन के। नमस-कान कहो जो एैतलीग्रः के हैं तुमहें नमसकान कहते हैं।
ग्रनुगनह तुमसभों पन होवे ग्रामीन।

याकूब की पत्री सबके लीये।

---

१ पहीला पर्ब।

१ याकूब का जो इसर और परभु यसु मसीह का सेवक है
२ बारह गोसठीयों को जो बीथरी हुई हैं नमसकार। हे मेरे
भाइयो तुम अपनी ना ना परकार की परीछा में पड़ना पूरा
३ आनंद समुझो। यह जान के की तुमहारे बीसवास के परखा
४ जाने से संतोष्य उतपंन होता है। परंतु संतोष्य अपना पूरा कारज
करने पावे की तुम सीध और परीपुरन होओ और कीसी बात
५ में घाट न होओ। परंतु यदी कोइ तुम में से बुध हीन होवे
तो वुह इसर से मांगे जो समसत मनुष्यन को दातापन से देता
है और ओलाना नहीं देता और वुह उसे दीया जायगा।
६ परंतु डोलायमान न होके बीसवास से मांगे कयोंकी जो डोलता
है सो समुदर की लहर की नाइं है जो पवन से बहती उछलती
७ है। सो वुह मनुष्य न समुझे की मैं परभु से कुछ पाउंगा।
८।९ दो चीता मनुष्य अपनी सारी चाल में असथीर है। भाइ
१० जीसका अलप पद है अपनी बढ़ती पर आनंद करे। परंतु
धनमान अपनी छोटाइ पर इस कारन की वुह घास के फूल
११ के समान जाता रहेगा। कयोंकी जोंहीं सुरज बड़े घाम से उदय
हुआ घास सुरझा जाती है और उसका फूल झड़ जाता है और

उसके सनुप की सोभा नसट होती है घनमान भी ऐसाही अपनी
१२ सानी याल में मुनझा जायगा। घंन वुह मनुप्य जो पनीछा
सहता है कयोंकी वुह जांया जाके जीवन का मुकुट पावेगा जीस
१३ का व्राया पनभु ने अपने पनेमीयों से कीया। जव्र कोइ पनीछा
में पड़े सो न कहे की मैं इसन से पनप्या जाता ऊं कयोंकी इसन
वुनाइयों से पनप्याया नहींजासकता और न वुह कीसी को
१४ पनप्पता है। पनंतु हन कोइ अपनी ही लालसा से प्यींया जाके
१५ और फुसलाया जाके पनीछा में पडता है। और जव्र ल.लस.
गनभीनी ऊइ तो पाप जनती हैं और पाप पुना होके मीनतु को
१६ उतपंन कनता है। हे मेने पीआने भाइयो युक न कनो।
१७ हनएक अछा दान और हनएक संपुनन पुन उपनहीं से है
और पनकास के पीता से उतनता है जीस में कुछ अदल व्रदल
१८ और व्रीकान की छाया नहीं। उसने अपनी इछा से हमें
सयाइ के व्रयन से उतपंन कीया की हम उसकी सीनीसटी में पहीले
१९ फल के समान होवें। सो हे मेने पीआने भाइयो हनएक मनुप्य
सुन लेने में यटक और व्रोलने में घीमा और कनोघ कनने में
२० घीमा होवे। कयोंकी मनुप्य का कनोघ इसन के घनम का कानज
२१ नहीं कनता। इस कानन समसत असुघता और अफनी ऊइ वुनाइ
के फेंक के उस जोड़े ऊए व्रयन को संतोप्प से ले लेओ वुह तुमहाने
२२ पनान को व्रया सकता है। पनंतु अपने को छल देते ऊए केवल
२३ व्रयन के सुंनेवाले मत होओ पनंतु पालनेवाले। कयोंकी यीद
कोइ व्रयन का सुननीहान होय और पालनीहान नहीं तो
वुह उस मनुप्य के समान है जो अपने सभाव्रीक मुंह को दनपन
२४ में देप्पता है। कयोंकी वुह अपने को देप्पता है और यला
जाता है और तुनंत भुलजाता है की वुह कीस पनकान का जन
२५ था। पन जो कोइ मोप्प के सीघ सासतन को सोयता है और
सथीन है वुह भुल का सुनवैया नहीं है पनतु कानज का कनने वाला
२६ है यही मनुप्य अपने कानज में भागमान होगा। यदी कोइ

तुमहारे मध में भकतीमान दीप्पाइ देवे और अपनी जीभ को न रोके परंतु अपनेही मन को छल देवे इसी मनुष्य की भकती
२७ वृयरथ है। पवीतर और नीरमल भकती इसर और पीता के आगे यह है की अनाथ और वीधवें को उन के कलेसें में देप्पना और अपने को जगत से नीसकलंक रप्पना।

२ दुसरा परब।

१ हे मेरे भाइयो हमारा परभु यसु मसी जो तेज का परभु है उसके वीसवास को मनुष्पत पर दीनीसट करके गरहन न करो।
२ कयोंकी जदी एक मनुष्य सोने की अंगुठी और भड़कीला बसतर से और एक कंगाल भी मलीन वसतर से तुमहारी मंडली में
३ आवे। और तुमलोग उस भड़कीले वसतर के पहीनरेवाले का आदरभाव करो और उसे कहो की यहां इस परतीसठीत सथान में बैठ और उस कंगाल को कहो की तु वहां प्पड़ा रह अथवा
४ यहां मेरे पावं तले के पीढ़े के नीचे वैठ। तो कया तुम लोग
५ अपने मन में पक्ष नहीं करते और कुवीचारी नहीं हो। हे मेरे पीआरे भाइयो सुनो कया इसर ने इस जगत के कंगालें को नहीं चुना की वीसवास में धनी होवें और उस राज के जीसका वाचा उसने अपने परेमीयों से कीया है अधीकारी
६ होवें। परंतु तुमहों ने कंगाल का अपमान कीया कया धनमान तुमहों पर अंधेर नहीं करते और तुमहें धरम सभा में नहीं
७ प्पेंचते। और कया वे उस उतम नाम की जीसके तुम कहावते हो
८ अपनींदा नहीं करते। सो जो तुम राजनीत को संपुरन करोगे जैसा गरंथ में है तु अपने परोसी को अपने समान पीआर कर
९ तो भला करते हो। परंतु जो मनुष्पत पर दीनीसटी करते हो तो पाप करते हो और सासतर तुम को अपराधीयों के समान दोप्पी
१० ठहरावता है। इस लीये की जो कोइ समसत सासतर को माने
११ और एक बात में चुक करे तो वह समसत का दोप्पी है। कयों-

की जीसने कहा की व्रेभीयान मत कन उसने यह भी कहा की घात न कन सो जो तु व्रेभीयान न कने पनंतु घात कन
१२ तो तु सासतन का अपनाधी ऊआ। तुम उनके समान जीन
पन मोप्प के सासतन से आगया कोइ जाग्रगी कहो अैान कनो।
१३ कयोंकी जीसने दया न कोइ उसका नयाय नीनदया से होगा अैान दया नयाय पन व्रड़ाइ कनती है। हे मेने भाइयो जो कोइ
कहे की मैं व्रीसवासी ऊं अैान कननी न नप्पे तो कया लाभ है
१५ कया व्रीसवास उसको व्रयासकता है। यदी कोइ भाइ अथवा व्रहीन नंगा होय अैान पनती दीन का भोजन न नप्पती हो।
१६ अैान तुम में से प्रेक उनहें कहे की कुसल से जा संतुसट हो अैान
तात नहु तथापी तुम उनहें देह के पनयोजन की व्रसतें न देउ तो
१७ कया लाभ है। प्रैसाही व्रीसवास जो वुह कननी न नप्पता हो तो
१८ अकेला होके मीनतक है। कया जाने कोइ कहे की तुह में
व्रीसवास है अैान मुह में कननी सो तु अपने व्रीसयास को कननी
से मुहे दीप्पा अैान मैं अपनी कननो से अपना व्रीसवास तुहे
१९ दीप्पाउं। तु व्रीसवास कनता है की इसन प्रेक है भला कनता है
२० सयतान भी तो व्रीसवास कनते हैं अैार थनथनाते है। पनंतु
हे व्रयानथ मनुप्प कया कभी तुहे समुह पड़ेगा की व्रीसवास
२१ कननी व्रीना मीनतक है। कया हमाना पीता इव्रनाहीम अपने
पुतन इसहाक को जगव्रेदी पन लाके कननी से धनमी नहीं
२२ ठहना। सो तु देप्पता है की व्रीसवास ने उसकी कननी के संग
२३ कानज कीया अैान कननी से व्रीसवास पुना ऊआ। अैान गनंथ
जो कहता हैं की इव्रनाहीम इसन पन व्रीसवास लाया अैान
वुह उसके लीये धनम ठहना अैान वुह इसन का मीतन कह-
२४ लाया पुना ऊआ। सो तुमलोग देप्पते हो की मनुप्प कनना से
२५ धनमी ठहनाया जाता है अैान केवल व्रीसवास से नहीं। इसी
नीत से नाहाव्र व्रेसवा जव्र उसने भेदीयों को गनहन कीया
अैान उनहें दुसने मानग से व्राहन कनदीया कननी से धनमी

२६ नहीं ठहरी। कयाकी जैसा देह परान वीना मीरतक है वैसा ही वीसवास भी करनी वीना मीरतक है।

३ तीसरा परव।

१ हे मेरे भाइयो बहुत से उपदेसक न बनो यह जान के की २ हम अधीक दंड पावेंगे। कयोंकी बहुतसी बातों में हम सबके सब चुक करते हैं जदी कोइ बचन में चुक न करे वही सीध ३ पुरुष है और समसत देह को बस में भी रखसकता है। देखो हम घोड़ों के मुंह में बाग देते हैं की हमारे बस में होवें और ४ उनके सारे देह को फेरते हैं। देखो नावें भी यदपी कैसी कैसी बड़ी हैं और परचंड बयारों से उड़ी जाती हैं तथापी बहुत छोटी पतवार से जीधर जीधर मांझी चाहता है उनहें ५ फेरता है। वैसाही जीभ एक छोटासा अंग हैं पर बड़ाही गपी है देखो थोड़ीसी आग बसतुन को बड़ी बड़ी ढेरों को ६ जला देती है। सो जीभ एक आग अरु पाप का एक जगत सो जीभ हमारे अंगों में ऐसे सथापीत है की समसत देह को असुध करती है और संसार के चकर को जलावती है और न- ७ रक से जलाइ गइ। कयोंकी हरएक परकार के बनैले पसु और पछी और कीड़े और जलजंतु मनुष्य से बस कीये जाते हैं और ८ बस कीये गये हैं। परंतु जीभ को कोइ मनुष्य बस में नहीं कर सकता वुह एक अजीत दुसट है मारु बीष्य से भरी हुइ है। ९ उसी से हम इसर अरथात पीता का धंन मानते हैं और उसी से मनुष्यन को जो इसर के सरुप में उतपंन हुए हैं सराप देते हैं। १० एकही मुंह से आसीस और सराप नीकलते हैं हे मेरे भाइयो ११ यों होना उचीत नहीं। कया सोता एकही मुंह से मीठा और १२ खारा उबालता है। हे मेरे भाइयो कया गुलर में जलपाइ और दाख में गुलर फलसकता है ऐसा कोइ सोता से खारा और १३ मीठा पानी नहीं नीकलता। तुम में से बुधमान और गयानी

कौन है सोइ सुचाल से और नम्रता की कोमलता से अपनी
१४ करनी दीखावे। पर जो तुमलोग कड़वी जलन और झगड़ा
अपने मन में रक्खो तो बड़ाइ न करो और सत के बीरुध में
१५ झुठ न बोलो। यह वुह बुध नहीं जो उपर से उतरती है
१६ परंतु पारथीव इंद्रीनीग्रीक सैतानी है। क्योंकी जहां ब्याहा
ब्याही और झगड़ा है तहां घबराहट औा हर एक कुकरम
१७ है। परंतु उपर की बुध जो है सो पहीले पवीत्र है फीर
मीलनसार कोमल सहज से समुझाइ जाय दया और सुफल
१८ संपुरन नीसपक्ष और नीषकपट। और घरम का फल मीलन
सारों के लीये मीलाप में बोया जाता है।

४ चैाथा पत्र।

१ तुमहारे मध में जुध और संग्राम कहां से हैं क्या तुमहारी
२ कामना से जो तुमहारे अंगों में जुध करती हैं नहीं है। तुमलोग
लालयाते हो और नहीं पावते हत्या करते हो और अती लाल
सा करते हो और प्राप्त नहीं करते जुध और संग्राम करते
३ हो तथापी तुमहारे हाथ नहीं लगता क्योंकी मांगते नहीं। तुम
लोग मांगते और नहीं पावते क्योंकी अनरीत से मांगते हो
४ की अपनी कामना में उड़ाव करो। हे बीभीचारीयो और हे
बीभीचारीनीयो क्या तुम नहीं जानते की जगत की मीतरता
इस्वर की सतुरता है इसलीये जो कोइ जगत का मीतर हुआ
५ याहे सो इस्वर का सतरु ठहराया गया है। तुम लोग क्या
समुझते हो की ग्रंथ बीरथा कहता है क्या आतमा जो हम में
बसता है डाह की लालसा करता है। परंतु वुह अधीक अनु-
ग्रह देता है जैसा की कहा है की इस्वर अभीमानीयों का
६ सामना करता है परंतु दीनों पर अनुग्रह करता है। इस
७ कारन अपने को इस्वर के बस में करो सैतान का सामना करो
८ और वुह तुमसों से भाग नीकलेगा। इस्वर के पास बढ़ो और

बुह तुमहारे पास बढ़ेगा हे पापीऐ हाथों को पवीतर करो
९ और हे दोचीतो अपने अपने अंत:करन को सुध करो। उदासीन
होओ बीलाप करो रोओ तुमहारा हंसना कुढ़ने से और तुम-
१० हारा आनंद सोक से बदल जाय। परभु के आगे अपने को
११ नम्र करो और वुह तुमहों को उठायेगा। हे भाइऐ एक
दुसरे की बुरी यरया न करो जो कोइ अपने भाइ की बुरी
यरया करता है और अपने भाइ को दोष्पी ठहरावता है सो
बैवसथा की बुरी यरया करता है और बैवसथा को दोष्पी
ठहरावता है परंतु यदी तु बैवसथा को दोष्पी ठहरावता है
तो तु बैवसथा पर यलनेवाला नहीं परंतु उसका नयायी है।
१२ बैवसथाकरता एक है जो बयावने का और नसट करने का
सामरथ रष्पता है तु कौन है जो दुसरे को दोष्पी करता है।
१३ सो आओ तुम सब जो कहते हो की हम आज अथवा कल ऐसे
नगर में जायेंगे और वहां एक बरस रहेंगे और बैपार करेंगे
१४ और कुछ परापत करेंगे। परंतु नहीं जानते की कल कया
होगा कयोंकी तुमहारा जीवन कया है वुह एक धुआं है जो
१५ थोड़े समय लों देष्पाइ देता है फेर बीनस जाता है। परंत
याहीऐ की उसका उलटा कहो जो परभु की इछा होय और
१६ हम जीवें तो हम ऐसा अथवा जैसा करेंगे। परंतु अब तुम
अपनी गालफटाकी पर बड़ाइ करते हो ऐसी समसत बड़ाइ
१७ करना बुरा है। सो जो कोइ भला करने जानता है और
नहीं करता उसके लीये पाप है।

५ पांयवां परब।

१ अब आओ हे धनमानो उन बीपतीन के सोक से जो तुमहों
२ पर आवती हैं यीला यीला के रोओ। की तुमहारे धन नसट
३ हुऐ और तुमहारे बसतरों में कीड़े लगे। तुमहारे सोने रुपे में
काइ लगी और उनकी काइ तुमहों पर साष्पी देगी और आग

के समान तुम्हारा मांस खायगी तुम्हों ने पिछले दिनों के लिये
४ धन बटोरा है। देखो उन बनिहारों की बनी जिन्हों ने तुम्हारे खेत काटे जिन से तुम्हों ने छल किया पुकारती है और
५ काटनेवालों के शब्द सेना के परम के कान लों पहुंचे। तुम्हों ने भुम पर सुख से और क्रीड़ा से भोग किया तुम्हों ने अपने अपने अंत:करन को मोटा किया जैसा बध के दिन के लिये
६ करते हैं। तुम्हों ने उस धरमी को दोषी ठहराके घात किया
७ और उसने तुम्हारा सामना न किया। सो अब हे भाइयो परमु के आवने लों संतोष करो देखो किसान भुम के अच्छे फल के लिये ठहरता है और उसके बिषय में संतोष करता है जब
८ लों की पहिला और पिछला मेंह न बरस जाय। सो तुम भी संतोष करो और अपने अपने मन को सथीर करो क्योंकि
९ परमु का आवना निकट है। हे भाइयो एक दुसरे पर डाह न करो जिस में तुम दोषी न बनो देखोन्यायी दुवार पर है।
१० हे मेरे भाइयो जो आगमगयानी परमु का नाम लेके बोलते थे उन्हें दुख उठावने का और संतोष करने का दिष्टांत
११ समुझो देखो हम सहनेवालों को धंन जानते हैं तुम्हों ने अयुब का संतोष सुना है और परमु का अन्तीपराय देखा है कि परमु
१२ मया से पुरन और अती दयाल है। पर सब से पहिले हे मेरे भाइयो किरिया न खाओ न तो सरग की न पिरथिवी की न तो और किसी की किरिया परंतु तुम्हारा हां हां हो और
१३ तुम्हारा ना ना न्हो की तुम दोष में पड़ो। तुम्हों में कोइ पिड़ित है तो परारथना करे हरषित है तो भजन गावे।
१४ कोइ तुम्हों में रोगी है तो मंडली के परायीनों को बुला वे और वे परमु का नाम लेके उसके देह पर तेल मलें और उस
१५ पर परारथना करें। और बिसवास की परारथना रोगी को बचायेगी और परमु उसे उठावेगा और जो उसने पाप किये
१६ हों तो वे छमा किये जायेंगे। आपुस में पाप को मान लिया

करो और एक दूसरे के लीये प्रार्थना करो जीसतें तुम चंगे हो जाओ धरमी मनुष्य की प्रार्थना जो आतमा के
१७ बल से की गई है अती गुनकारी है। इलीयास हमारी नाईं दुरबलता से जुकत मनुष्य था और उसने प्रार्थना करके चाहा की मेंह न बरसे और तीन बरस छःमहीने लों भुम पर बरसा
१८ न हुई। उसने फेर प्रार्थना की और सरग ने मेंह दीया
१९ और भुम ने अपने फल उगाये। हे भाइयो यदी कोई तुमहों
२० में से सचाई से भटके और दूसरा उसे फीरावे। तो वुह जाने की जो एक पापी को भरम के मारग से फीरावे सो एक परान को मीरतु से बचायेगा और पापों के समुदाय को ढांकेगा।

पतनस की पहीली पतनी सब्र के लीय़े।

---

१ पहीला पनव्र।

१ पतनस के ओान से जो य़सु मसीह का पनेनीत है उन पन-
देसीय़ों को जो पनतस ओान गलतीय़ः ओान कपादोकीय़ः
२ ओान आसीय़ा ओान ब्रीतीनीय़ः में छीन भीन हैं। जो ईसन
पीता के पुनव्रगय़ान के समान आतमा की पवीतनता से अगय़ा
पन यलने को ओान य़सु मसीह के लोऊ के छीड़कने से युने
ऊये अनुगनह ओान कुसल तुमहाने लीय़े अधीक होता जाय़।
३ धंन ईसन ओान हमाने पनभु य़सु मसीह के पीता को जीसने हम
को अपनी दय़ा की अधीकाई के समान य़सु मसीह के जी उठने
४ के कानन से जीवती आसा के लीय़े फेन के उतपंन कीय़ा। ओान
की अवीनास नीनमल अजन अधीकान के लीय़े जो तुमहाने
५ कानन सनग में धना है। जो व्रीसवास के कानन ईसन के
सामनथ से उस उधान के लीय़े जो पीछले समय़ में पनगट होने
६ को धना है नछा कीय़े गय़े। उस में व्रऊतसा आनंद कनते हो
य़दपी तुम अव्र थोड़े दीन लों जो अवेस होय़ ना ना पनकान
७ की पनीछा से सोकीत हो। जीसतें तुमहाने व्रीसवास की पनीछा
नासमान सोने से अती महंगमोली होके य़दपी वुह आग में
ताय़ा जाय़ य़सु मसीह के पनगट होने के समय़ सतुत ओान
८ पनतीसठा ओान महीमा में पाई जाय़। जीसे व्रीन देख्ये तुम

पीआन कनते हो औन जीस पन यदपी तुम अब नहीं देष्पते
तथापी बीसवास लाके ऐसी अकथ आनंदता से आनंद कनते हो
९ औन महामाले भनी है। अपने बीसवास के अभीपनाय को
१० अनथात अपने पनानें का उधान पनापत कनते हो। उसी
उधान के बीष्पय में आगमगयानीयों ने जीनहों ने उस अनु-
गनह की जो तुमहाने लीये थी आगे से कही ष्पोज कीया औन
११ जतन से ढुंढा। ष्पोज कनते थे की मसीह के आतमा ने जो उन
में था कीस समय को अथवा कैस कैस नीत के समय का
बुझाया जब उसने मसीह के दुष्पों की औन महीमा को जो
१२ उसके पीछे होने पन थी आगे से साष्पी दी। जीन पन यह
पनगट ऊआ की उनहों ने अपने लीये नहीं पनंतु हमाने लीये
इन बातों की सेवा की जो अब तुमहों को उनके ओन से दीया
गया जीनहों ने पनमातमा के सहाय से जो सनग से उतना तुमहें
मंगलसमाचान का संदेस दीया जीन बातों के धयान कनने को
१३ दुतगन अभीलासी हैं। इस कानन अपने मन की कमनें बांध
के औन संजमी होके अंतलों उस अनुगनह की आसा नष्पो जो
यसु मसीह के पनगट होने के समय में तुमहों पन पऊंचाया
१४ जावगा। आधीन पुतनों की नाईं अपने को अगीली लालसा के
समान जो तुमहानी अगयानता के समय में थी मत बनाओ।
१५ पनंतु जैसा की तुमहाना बुलावनीहान पवीतन है तुम भी अपने
१६ समसत बोलचाल में पवीतन बनो। कयोंकी लीष्पा है की पवीतन
१७ होओ की मैं पवीतन ऊं। औन जो तुम पीता को पुकानते हो
जो पनगट दसा पन दीनीसटी न कनके हनएक के कानज के
समान नयाय कनता है तो अपने बीदेस के समय को डनते
१८ ऊए काटो। यह जानके की तुमहों ने बीनासमान बसतुन से
अनथात नुपे सोने से अपने बयनथ सभाव से जो तुमहें पीत-
१९ नन के कहावत से मीला उधान नहीं पाया। पनंतु मसीह के
बऊमोल लोऊ से जैसा नीसकलंक औन नीनदोष्प मेमना का।

२० जो जगत की उतपती से आगे ठहनाया गया पनंतु इनहीं अंत
२१ समयीयन में तुमहाने लीये पनगट ज्ञआ। जो उसी के दुवाना
से इसन पन व्रीसवास नप्पते हो की उसने उसको मौनतकन में
से उठाया और प्रेसनय दीया की तुमहाना व्रीसवास और
आसा इसन पन होवे। सत के आधीन व्रन के आतमा के
दुवाना से अपने मन को सुच कीया यहां लों की तुमहों में
भाइयों का सा नीसकपट पनेम ज्ञआ सो प्रेक दुसने को सुच
२३ अंतःकनन से व्रज्ञतसा पीआन कनो। तुम नासमान व्रीजों से नहीं
पनंतु अव्रीनासी से अनथात इसन के व्रयन से जो जीवता है
२४ और सनव्रदा नहता है फीन के उतपन ज्ञप्रे हो। कयोंकी
समसत मांस घास के तुल हैं और मनुष्य की समसत महीमा
घास के फुल के समान घास मुनझा जाती है और उसका फुल
२५ झड़ जाता है। पनंतु इसन का व्रयन सनव्रदा नहता है सो यह
वही व्रात है जीसका उपदेस मंगल समायान में तुमहें दीया
गया है।

२ दुसना पनव्र।

१ इस कानन समसत दनोह और समसत छल और कपट और
२ डाह और व्रुनी व्रातयीत को अलग कनके। नये जनमे व्रयों के
समान व्रयन के नीनाले दुघ के अभीलासी होओ की तुम उस से
३ व्रढ़ते जाओ। कयोंकी तुमहों ने सवाद पाया है की पनभु दयाल
४ है। जीस कने जैसा जीते पतथन के पास आय वो मनुष्यन से तो
नीकमा जाना गया पनंतु इसन का युना ज्ञआ और पीनीय।
५ तुम लोग भी जीते पतथनों की नाइं आतमीक घन व्रने हो प्रेक
पवीतन याजकता की आतमीक व्रलीदानों को यढ़ाओ जो यसु
६ मसीह के कानन से इसन को भावते हैं। इस कानन गनंथ में
भी है की देष्प मैं प्रेक सनेसठ कोने का पतथन युनाज्ञआ और
व्रज्ञमुल सेज्ञन में घनता ज्ञं और जो कोइ उस पन अ सा नप्पता

७ है लजीत न होगा। सो तुमहाने लीये जो वीसवास लाये हो वुझ मुल है पनंतु उनके लीये जो आगया नहीं मानते वही पतथन
८ जीसे थवइयों ने नीकमा जाना होने का सीना ङुआ। और ठेस दीलानेवाला पतथन और ठोकन खीलानेवाली यटान जो आगया नहीं मान के वुयन से ठोकन खाते हैं जीसके लीये
९ ठहनाये भी गये थे। पनंतु तुमलोग युने ङुये वंस और नाजीय याजकता येक पवीतन वुनन और नीज लोग हो जीसतें तुम उस के गुनानुवादों को पनगट कनो जीसने तुमहें अंधकान से अपने
१० आसयनज के उंजीयाले में वुलाया। जो आगे लोग न थे पनंतु अव इसन के लोग हो और जो दया न पाये थे पनंतु अव दया
११ पाये हो। हे पीनीय मैं तुमहों से जैसे वीदेसीयों और अतीथीयों से वीनती कनता ङुं की तुम सानीनीक कामना से जो
१२ आतमा से जुध कनते हैं पने नहो। और तुमहानी वीलयाल अनदेसीयों के मध में सयाइ से होवे की जैसा तुमहें कुकनमी जानके तुम पन वुना कहते हैं तुमहाने भले कानजन पन
१३ दीसीसट कनके कीनपा के दीन में इसन की सतुत कनें। पनभु के लीये मनुष्पन के हनयेक ठहनाये ङुये के आधीन होओ याहे
१४ नाजा के जो सव से वड़ा है। अथवा अधक्षों के जैसा उसके भेजे ङुये के समान की कुकनमीयों को दंड देवे पनंतु सुकनमी
१५ की सनत के लीये। कयोंकी इसन की इछा युं है की तुमलोग सुकनम कनके सुढ़ मनुष्पन की सुनप्पता के मुंह को वंद कनो।
१६ नीनवंध के समान पनंतु अपनी नीनवंधता को दुसटता का आड़ मत कनो पनंतु इसन के सेवकों के समान। समसत मनुष्पन
१७ का आदन कनो भाइयाना को पीआन कनो इसन से डनो नाजा
१८ को पनतीसठा देओ। हे सेवको संकोय से अपने सामीयों के वसीभुत होओ केवल अछे और कोमल के नहीं पनंतु कुननो
१९ के भी। कयोंकी यदी कोइ इसन के लीये वीवेक से अंधन में
२० पड़के दुप्प सहे तो यह सोभाजुकत है। कयोंकी यदी पाप

करके तुमलोग पीटे गये और सहीलीया तो कौनसी बड़ाइ है परंतु यदी भलाइ करके दुष्प पाओ और उसे सहो तो यह
२१ सोभाजुकत है। कयोंकी इसी लीये तुम बुलाये गये हो मसीह भी तुमहारे लीये दुष्प पाके येक दीनीसटांत तुमहारे लीये दुष्प पाके येक दीनीसटांत तुमहारे लीये छोड़ गया है की उस
२२ के डग पर यले जाओ। उसने पाप न कीया और न उसके
२३ मुंह में छल पाया गया। उसने गालीया पाके गाली न दी और दुष्प पाके धरकाया नहीं परंतु अपने को उस को सौंप दीया जो
२४ धरम से नयाय करता है। वह आप हमारे पापों को अपनेही देह में वीरीछ पर उठालीया जीसतें हम पापों से मोष्प पाके धरम के लीये जीवें उसी के कोड़ों के कारन से तुम यंगे ऊये हो।
२५ कयोंकी तुम भटकी ऊइ भेड़ों के समान थे पर अब अपने परानों के गड़रीये और रष्पवार के पास फीर आये हो।

३ तीसरा पपब्र।

१ इसी रीत से हे पतनीयो अपने अपने पतीयों के बसीभूत होओ की यदी कोइ बयन को न माने तो वे बीना बयन के
२ अपनी पतनीयों की यलन स प्पींया जायं। की वे तुमहारी
३ पवीतर यलन को भय में देष्पें। तुमहारा सींगार बाहरी न हो जैसे सीर गुंथना सोने का पहींना अथवा बसतर से बीभुसीत
४ होना। परंतु अंतःकरन का गुपत मनुष्पत जो अबीनासी है और सांत और कोमल आतमा जो इसर के आगे अती बड़
५ मोल का है। कयोंकी पवीतर सतीरीयां भी जीनका भरोसा इसर पर था अगीले समय में इसी रीत से अपना सींगार करती
६ थीं और अपने अपने पतीयों के बस में रहती थीं। जैसा सारः इबराहीम को मान के उसको परभु कहती थी सो जबलों तुम लोग बीसमीत न होके भले कारज करो तबलों उसकी पुतरीयां
७ हो। वैसाही हे पतीयो गयान की रीत पर उनके संग नीवाह

कनो श्रौन इसतीनी को कोमल पातन समुझकन श्रादन देश्रो। जैसा जीवन के श्रनुगनह के श्रधीकान में साझी हो जीसतें तुम-
८ हानी पनानथना नोकी न जाय। सो श्रंत में सब्र के सब्र एक मन हो श्रापुस में दया नप्पो भाइ कीसी पीनीत में पुनन होश्रो कीन-
९ पाल श्रौन दयाल होश्रो। बुनाइ की संती बुनाइ न कनो गाली की संती गाली मत देश्रो पनंतु उसके उलटे श्रासीस कहो यह जान
१० के की तुम श्रासीस के श्रधीकानी होने को बुलाये गये हो। कयोंकी जो जीवन को पीश्रान कीया याहे श्रौन भले दीनों को देप्पा याहे सो श्रपनी जीभ को बुनाइ से श्रौन श्रपने होठों को छल
११ की बात बोलने से पने नप्पे। बुनाइ से फीने श्रौन भला कने मी-
१२ लाप की प्पोज श्रौन पीछा कने। कयोंकी पनभु की दीनीसट धनमीयों पन श्रौन उसके कान उनकी पनानथना पन है पनंतु
१३ इसन का मुंह कुकनमीयों से बीनुध है। श्रौन जो तुमलोग भलाइ का पीछा कननेवाले होश्रो तो कौन तुमहें दुप्प देगा।
१४ पनंतु जो धनम के लीये दुप्प पाश्रो तो धन हो इस कानन उनके
१५ डनाने से मत डनो श्रौन घबना मत जाश्रो। पनंतु पनभु इसन को श्रपने मन में पवीतन जानो श्रौन सदा यौकस नहो की हन एक को जो तुम से उस श्रासा के बीप्पय में जो तुमहों में है पूछे
१६ कोमलता श्रौन भय से उतन देश्रो। श्रछे बीवेक को नप्प के की जीन में वे कुकनमी जान के तुमहाने बीप्पय में बुना कहते हैं जो तुमहानी श्रछी मसीही यलन को नोंदा कनते हैं सो लजीत
१७ होवें। कयोंकी यदी इसन की इछा होय तो भला कनके दुप्प
१८ पावना श्रती उतम है की बुना कनके। कयोंकी मसीह ने भी एकबान पापों के कानन कसट पाया धनमी ने श्रधनमीयों के कानन जीसतें वुह हम को इसन के पास पहुंयावे की सनीन में
१९ तो मानागया पनंतु श्रातमा से जीलायागया। जीस से उसने
२० उन श्रातमाश्रों को जो बंधन में थे जाके उपदेस कीया। जो बहुत दीन से जब इसन के संतोप्प ने नुह के समय में धीनज

कीय़ा जव्र नाव व्रन नही थी जीस में थोड़े से अनथात आठ
२१ पनानी जल से व्रय गये। वैसाही यींह अनथात सनान प.वना
हम को अव्र व्रयावता है देह की मैल का छुड़ाना नहीं पनतु
उतम व्रीवेक से ईसन को उतन देना हम को य़सु मसीह के
२२ पुननुतथान से व्रयावता है। वुह सनग वन जाके ईसन के दहीने
आेान है चैान दुतगन आेान पनाकनम आेान पनभुता उसके व्रस
में की गई हैं।

४ चोथा पनव्र।

१ सो जैसा की मसीह ने हम.ने कानन सनीन में कसट पाय़ा
ईसी नीत से अपने को वैसाही मन से चैाकस नष्पो कय़ोंकी
२ जीसने देह में कसट पाय़ा सो पाप से थमगय़ा। की वुह आगे
को मनुष्यन के कामाभीलासों के समान नहीं पनंतु ईसन की
३ ईछा के समान सनीन में अपना समय़ काटे। कय़ोंकी हमाने
जीवन से जो याल की अन देसीय़ों की ईछा पन व्रीत गई है
सो व्रस है जव्र की हमलोग लंपटता चैान व्रुनी लालसा चैान
अती मदपान चैान उतसव्र कनने में चैान मतवालपन में चैान
४ मुनतीन की घीनीत पुजा में समय़ काटते थे। ईन के व्रीष्पय़
में वे अयंभा मानते हैं की तुम उनके संग अघीक घुम घाम में
५ नहीं व्रढ़ते तुमहानी व्रुनाई कनते हैं। वे उसको लेष्पा देंगे
जो जीवतन चैान मीनतकन का नय़ाय़ कनने पन सीघ है।
६ कय़ोंकी मीनतकन को मंगल समायान का उपदेस ईस लीय़े
दीय़ा गय़ा की मनुष्यन के समान सनीन में उनका व्रीयान
७ कीय़ा जाय़ पन ईसन की नीत पन आतमा में जीवें। पनंत
समसत व्रसतुन का अंत नीकट है ईस लीय़े सगय़ान होआें
८ पनानथना में चैाकस नहो। व्रीसेष्प कनके घनेना पनेम नष्पो
९ कय़ोंकी पनेम पापों की व्रऊताई को ढांप देता है। चैान
१० आपुस में व्रीना कीनपनता से अतीथ की सेवा कनो। जैसा

हनपेक के दान मीला है वैसा इसन के अघीक अनुगनह के
११ उतम भंडनी के समान आपुस में वांटे। यदी कोइ वोले तो
वुह इसन की वानी के समान वोले यदी कोइ सेवा कने तो
इसन के दीये रूपे सामनथ के समान कने जीसतें इसन समसत
वातों में यसु मसीह के दुवाना से महीमा पावे जीनके लीये
१२ सतुत औान पनभुता नीत नीत होवे। हे पीनीय तुम उस
अगन की पनीछा से जो तुमहाने पनषने के लीये है यह
समुद्र के आसयनज न कनो की हम पन कोइ अनोषी वात
१३ वीत गइ है। पनतु जैसा की तुमलोग मसीह के दुषों में साझी
हो आनंद कनो की जव उसका महीमा पनगट होवे तुम भी
१४ वड़ी आनंदता से मगन होओ। जो तुमलोग मसीह के नाम
के कानन से नींदीत हो तो घंन हे। कयोंकी महीमा का औान
इसन का आतमा तुम पन नहता है वुह उनके औान से वुना
१५ कहा गया है पतंतु तुमहाने औान से महीमा पाइ है। पनंतु
तुम में से कोइ हतयाने अथवा चोन अथवा कुकनमी अथवा
औानों क वीषय में अजोग यनयक के समान संताया न जाय।
१६ पन यदी कीनीसटीआान होने के कानन कोइ दुष पावे तो
लजीत न होवे पनंतु इस वीषय में इसन की महीमा कने।
१७ कयोंकी समय है की इसन के घनाने पन दंड का आनंभ है
औान यदी हम से आनंभ है तो उनका अंत कया होगा जो
१८ इसन के मंगल समाचान को नहीं मानते। औान जो घनमी
कठीन से वचाया जावे तो अघनमी औान पापी का ठीकाना
१९ कहां। इस लीये वे भी जो इसन की इछा के समान दुष पावते
हैं उसको वीसवसत कनता जानके भले कानज में अपने पनानों
को उसे सोंपें।

५ पांचवां पनव।

१ उन पनाचीनों को जो तुमहो में हैं मैं भी जो पनाचीन ऊ.

और मसीह के दुखों का साखी और उस महीमा का जो परगट
२ होगी साझी हुं चेतावता हुं। की इसर के उस झुंड की जो
तुमहों में है रखवाली करके चर वें पर दबाव से नहीं परंतु
चाया से और मलीन लाभ के लीये नहीं परंतु सीध मन से।
३ और परभु के अधीकार पर परभुता न करो। परंतु झुंड के लीये
४ दीरीसटांत बनो। और जब परधान चरवाहा परगट होगा तब
५ तुम महीमा का अबीनासी मुकुट पाओगे। ऐसा हे तरुनों तुम
सब परायीनों के बस में होओ हां सब के सब एक दुसरे के
आधीन होवें और दीनताई से पहीनाये जाओ कयोंकी इसर
अभीमानीयों का सामना करता है परंतु दीनों पर अनुगरह
६ करता है। सो इसर के पराकरमी हाथ के नीचे दीन होओ
७ की वुह तुमहें समय पर उभारे। अपनी सारी चींता उस पर
८ डाल देओ कयोंकी वुह तुमहारे लीये चींता करता है। चौकस
होओ जागते रहो कयोंकी तुमहारा सतरु सयतान गरजते
हुए सींह के समान ढुंढता फीरता है की कीसको भछ कर डाले।
९ जीसका सामना बीसवास में दीढ़ होके करो यह जान के की
वही कलेस तुमहारे भाइयों पर जो जगत में हैं पड़ते जाते हैं।
१० परंतु समसत अनुगरह का इसर जीसने हमको अपनी अनंत
महीमा के लीये मसीह यसु में बुलाया है की तुमहारे थोड़ेलों
दुख सहने के पीछे तुमहें सीध और सथीर और दीढ़ करे
११ और ठहरावे। महीमा और राज सरबदा और सरबदा उसी
१२ का है आमीन। मैं ने तुमहें सलवानस के ओर से जो मेरी
समुझ में बुधमान भाई है संछेप से लीख के सीखा और साखी
दी की इसर का सचा अनुगरह वही है जीस में तम दीढ़ हो।
१३ बाबुल की मंडली जो तुमहारे संग चुनी गई और मेरा पुतर
१४ मरकस तुमहें नमसकार कहते हैं। परेम का चुमा लेके आपस
में नमसकार करो तुम सभों पर जो मसीह यसु में हो कुसल
होवे आमीन।

पतनस की दुसनी पतनी सत्र के लीये।

---

१ पहीला पनव्र।

१ समउन पतनस के ओान से जो य्रसु मसीह का दास ओान पनेनीत है उनको जीनहों ने हमाने इसन ओान मोप्पदाता य्रसु मसीह के धनम से हम ने संग प्रेनीतोंनाइ के व्रक्सुल व्रीसवास
२ पाय्रा। इसन के ओान हमाने पनभु य्रसु मसीह के पहीयान का
३ अनुगनह ओान सांती तुमहाने लीये व्रढ़ता जाय्र। जैसा की उसके इसनीय्र पनाकनम ने हमें समसत व्रसतें दीइं जो जीवन ओान भकतता के व्रीप्पय्र में है उसी के गय्रान के कानन से जीस ने हमें
४ प्रेसनय्र ओान धनम के लीय्रे व्रुलाय्रा। जीस से हमें अतय्रंत व्रड़े ओान अती मोल के व्राय्रा दीय्रे गय्रे की इनके कानन तुमलोग उस सड़ाव से जो जगत में व्रुनी इछा के कानन से है व्रयकन
५ इसनीय्र सभा में भागी हो जाओ। ओान इसके कानन समसत जतन कनके अपने व्रीसवास पन धनम ओान धनम पन गय्रान।
६ ओान गय्रान पन व्रनाव ओान व्रनाव पन संतोप्प ओान संतोप्प पन
७ भकतता। ओान भकतता पन भाइ का सा सनेह ओान भाइ के से
८ सनेह पन पनेम व्रढ़ाओ। कय्रोंकी य्रदी य्रे व्रातें तुम में हों ओान भनपुन हों तो तुमको हमाने पनभु य्रसु मसीह के गय्रान
९ में नीकमा ओान नीसफल होने न देंगी। पनंतु जीस कीसी में य्रे व्रातें घटी हैं वुह अंधा है ओान आप्पें मुयता है ओान भुलगय्रा

१० है की वुद्द अगीले पापों से पवीतन कीय़ा गय़ा था। इस लीय़े हे भाइय़ो अधीक जतन कनो की तुमद्दाना वुलावा औान युना जाना दीढ़ होय़ कय़ोंकी जो तुम ऐसे कानज कनो तो कभी
११ भनसट न होओगे। कय़ोंकी य़ुं तुमद्दें हमाने पनभु औान मुकतीदाता य़सु मसीह के अनंत नाज में ऊताइ से पनवेस
१२ मीलेगा। इस लीय़े तुमद्दें इन व्रातों को सदा समनन कनावने में मैं न युकुंगा य़दपी तुम उनद्दें जानते हो औान इस सत पन
१३ सथीन हो। पनंतु उयीत जानता ऊं की जव्र लों मैं इस तंव्र
१४ में ऊं तुमद्दें उसका उसका के समनन कनाउं। य़ह जान के की मैं सीघन इस तंव्र को छोडुंगा जैसा की हमाने पनभु य़सु मसीह
१५ ने मुझे व्रतलाय़ा। पनंतु मैं जतन कनुंगा की तुम लोग मेने
१६ मनने के पीछे इन व्रातों को नीत येत कीय़ा कनो। कय़ोंकी जव्र हम ने अपने पनभु य़सु मसीह के सामनथ की औान उसके आवने की तुमद्दों को जनाय़ा तव्र हम ने यतुनाइ की व्रनाइ ऊइ कहानीय़ों का पीछा नहीं कीय़ा पनंतु उसकी महीमा के
१७ पनतछ साछी थे। कय़ोंकी जव्र अतय़ंत तेज से उसके लीय़े ऐसा सव्रद ऊआ की य़ह मेना पनीय़ पुतन है जीस से मैं पन-
संन ऊं तव्र उसने इसन पीता से सनमान औान महीमा पाइ।
१८ औान जव्र हम उसके संग पवीतन पहाड़ पन थे य़ह सव्रद सनग
१९ से आवते सुना। औान हम ऐक अधीक दीढ़ आगम की व्रात नष्पते हैं जीसको यीकसी कनने से तुमलोग अछा कनते हो जैसा की दीपक से जो अंधीय़ाने सथान में व्रनता है जव्रलों दीन की पौ न फटे औान पनातःकाल की तान तुमद्दाने अंतःकननों
२० में उदय़ न होवे। य़ह पद्दीले जान के की आगम की लीष्पी
२१ ऊइ कोइ व्रात कीसी की अपनी ही कही ऊइ नहीं है। कय़ोंकी आगम की व्रात पनायीन समय़ में मनुष्पन की इछा से नहीं आइ पनंतु इसन के पवीतन लोग धनमातमा के वुलवाय़े ऊऐ व्रोलते थे।

२ दुसना पनव्र।

१ पनंत् हुठे आगम गय़ानी भी लोगों में थे जैसा की हुठे उपदेसक तुम में भी होगे जो छीप के नसट कननेवाले उपद्नव लावेंगे अनथात उस पनभ्रु से जीसने उनहें मोल लीय़ा सुकनेंगे
२ श्रोन अपने पन सीघन नसटता लावेंगे। श्रोन व्रुहुत से उनकी व्रुनाइयों का पीछा कनेंगे जीनके कानन से सयाइ के मानग
३ की नींदा की जाय़गी। श्रोन लोभता से वे छल की व्रातों से तुम को व्रय़ापान कनेंगे जीन पन दंड की अगय़ा व्रहुत दीन से आवने में व्रीलंव्र नहीं कनती श्रोन उनकी नसटता नहीं उंघती।
४ कयोंकी जव्र इसन ने पापी दुतों को न छोड़ा पनंतु ननक में
५ डाला की अंघकान के सीकनी में व्रीयान लों पड़ें नहें। श्रोन पनायीन जगत को न छोड़ा तथापी जलमय़ को अघनमी जगत पन लाके आठवें जन को व्रयाय़ा अनथात नुह को जो घनम का
६ उपदेसक था। श्रोन उसने सदुम श्रोन गमनन: के नगनों पन नसटता श्रोन भसम कनने के दंड की अगय़ा देके उनहें आवने
७ वाले अघनमीयों के लीये यीनह व्रनाय़ा। श्रोन घनमी लुत को व्रयाय़ा जो व्रुने लोगों की अपवीतन यलन से उदास था।
८ कयोंकी वुह घनमी पुनुप्प उन में नहीके उनकी अनयीत यलन को देप्प देप्प श्रोन सुन सुन पनतीदीन अपने नीसकपट मन से
९ पीड़ीत था। पनभ्रु भकतों को पनीछा से छुड़ाने श्रोन अघनमीयों को नय़ाय़ के दीन लों दंड पावने के लीये नप्प छोड़ने
१० जानता है। पनंतु व्रीसेप्प कनके उनको जो अपवीतन अभीलाप्पों से सनीन का पीछा कनते हैं श्रोन पनभुता की नींदा कनते हैं वे मगने श्रोन सेछक श्रोन महत पद के व्रीप्पय़ में व्रुना कहने
११ को नहीं डनते। तथापी दुतगन जो पनाकनम श्रोन सामनथ में उनसे व्रड़े हैं पनभ्रु के आगे व्रुना कहीके उन पन दोप्प
१२ नहीं देते। पनंतु ये लोग अयेत पसुन के समान हैं जो नसट होने के लीये व्रुलाये गये उन व्रसतुन की नींदा कनते हैं जीनहें

१३ वे नहीं समुझते श्रीन अपने सड़ाव में नसट होंगे। वे अधनमता का फल पनापत कनते ऊपे दीन में नाय नंग को सुख मानते हैं कलंक श्रीन ष्पोट श्रीन तुमहाने संग जेवनान कनते ऊपे
१४ अपने छल से कीनीड़ा कनते हैं। कीनाला से भनी ऊइ श्राष्पें नष्पते हैं श्रीन पाप से थम नहीं सकते वे असथीन पनानों को फंदावते हैं उनके मन लोभ के कानज से साधे ऊपे हैं
१५ सनाप के संतान हैं। वे सीधे मानग को छोड़ के भटक गये हैं श्रीन व्रोउन के पुतन व्रलश्राम के मानग का पीछा कीये हैं जोसने
१६ अधनमता की महीनवानी को याहा। पनंतु अपने अपनाध का दपट पाया की गुंगे गदहे ने मनुष्य के सव्रद से व्रोल के उस श्रागम
१७ गयानी की व्रौड़ाहापन को नोक नष्पा। वे जल हीन सोते हैं श्रीन मेघ जीनहें व्रवंडन उड़ा ले जाता है उनके लीये सनव्रदा
१८ के श्रंधकान की कालीष्प धनी ऊइ है। श्रीन वे घमंड की व्रयनथ कही कहीके उनहें जो भटके ऊश्रों में से व्रय नीकले हैं सानी-
१९ नीक कामाभीलास में श्रीन लुयपने में फंदावते हैं। मोष्प का व्राया उनसे कनके श्राप व्रीनास के दास हैं कयोंकी जीस कीसी
२० से कोइ जीता गया सो उसी के व्रंद में भी पड़ा। कयोंकी यदी पनभु श्रीन मोष्पदाता यसु मसीह की पहीयान के कानन जगत की मलीनता से व्रयकन उन में फीन के फसें श्रीन उनके व्रस में होयं तो उनकी पीछली दसा पहीली से अधीक व्रुनी है। कयों-की धनमता का मानग न जानना उनके लीये उस से अधीक भला था की जान के उस पवीतन श्रागया से जो उनहें सैांपी गइ
१२ थी फीन जावें। पनंतु उन पन सयी कहावत के समान व्रीत गइ है की कुता अपने छांड़ के श्रोन श्रीन सुश्रनी जो धोइ गइ थी यहले में लोटने को फीन गइ है।

३ तीसना पतव्र ।

१　हे पीनीय मैं तुमहे अव्र दुसनी पतनी लीष्पता ऊं जीस में तुम-

२ प्याने पवीतन मन को समनन कनाके उसकावता ऊं। जीसतें उन
व्रातों से जो पवीतन आगमगय़ानीओं से आगे कही गई थीं
औान हमानी अगय़ा से जो पनभु औान मोप्पदाता के पनेनीत
३ हैं यैतन हो जाओ। य़ह पहीले जान के की पीछले दीनों में
नींदक आवेंगे जो अपने कामाभीलाष की नीत पन यलेंगे।
४ औान कहेंगे की उसके आवने का व्राया कहां है कय़ोंकी जव्र से
पीतनगन सो गय़े सनीसट के आनंभ से अव्र लों सव्र कुछ वैसा
५ ही है। पनंतु इसे जान व्रुह के अगय़ान हैं की इसन की व्रानी
से सनग आद में ऊप्रे औान भुम जल से औान जल में ठहनी
६ है। जीस से जगत जो तव्र था जल में डुव्र के नसट ऊआ।
७ पनंतु सनग औान पीनथीवी जो अव्र हैं उसी व्रयन से आगनी
के लीय़े नय़ाय़ के दीन औान अधनमी मनुप्पन के नास लों धनी
८ हैं। पनंतु हे पीनीय़ य़ह व्रात तुम पन छीपी न नहे की पनभु
कने प्रेक दीन सहसन व्रनस के तुल है औान सहसन व्रनस प्रेक
९ दीन के। पनभु अपने व्राया के व्रीप्पय़ में व्रीलंव्र नहीं कनता
जैसा की कई प्रेक व्रीलंव्रता समुझते हैं पनंतु हम पन संतोप्प
कनता है औान नहीं याहता की कोई नसट होवें पनंतु की सव्र
१० पसयाताप कनें। सो पनभु का दीन प्रैसा आवेगा जैसा योन
नात को आवता है उसी में सनग व्रड़े सव्रद से जाते नहेंगे औान
समसत तत अती तपन से गलजाय़ेंगे औान पीनथीवी उन की-
११ नीय़ा समेत जो उस में हैं जल जाय़गी। सो जैसा की य़े सव्र
व्रसतें गलजाय़ंगी तो तुम को पवीतन यलन औान भकती में
१२ कैसा होना उयीत है। इसन के दीन की व्राट जोहते औान
पुनतीला होते जीस में समसत सनग पनजलीत होके गल
१३ जाय़ंगे औान तत अती तपन से पीघल जाय़ंगे। पनंतु उसके व्राया
के समान हम नप्रे सनग औान नई पीनथीवी की जीन में धनम
१४ व्रसता है व्राट जोहते हैं। इस कानन हे पीनीय़ प्रैसी व्रसतुन
की आसा नप्पते ऊप्रे जतन कनो की तुम नीसकलंक औान नीन-

१५ दोष्प उस में कुसल से पाऐ जाओ। ौान हमाने पनभु के संतोष्प
को अपना उघान जाने। जैसा की हमाने पीनीय़ भाइ पुलुस ने
भी उस वुध के समान जो उसे दीइ गइ तुमहाने लीय़े लीष्पा
१६ है। जैसा की समसत पतनीय़ों में भी उन वातों के वीष्पय़ में
कहता है ौान उन में कइ वात हैं जीन का समुझना कठीन है
जीनहें सुनष्प ौान असथीन लोग अपनी नसटता के लीय़े फेन-
१७ ते हैं जैसा ौान ौान गनंथों को भी कनते है। इस कानन
हे पीनीय़ आगे जानके चैाकस नहो न होवे की तुम भी दुना-
यानीय़ों की युक में पड़के अपनी दीढ़ता से भनसट हो जाओ।
१८ पनंतु अनुगनह में ौान हमाने पनभु ौान मोष्पदाता य़सु
मसीह के गय़ान में वढ़ते जाओ उसी को ऐसनय़ अव ौान
नीत होवे आमीन।

य़ुहना की पहीली पतनी सत्र के लीय़े।

---

१ पहीला पनत्र।

१ जीवन के व्रयन के व्रीप्पय़ में जो आनंभ से था जीसे हम ने सुना है औान अपनी आप्पों से देप्पा है औान ताक नप्पा है औान
२ हमाने हाथों ने छुआ है। अनथात जीवन पनगट ऊआ औान हम ने देप्पा औान साप्पी देते हैं औान उस अनंत जीवन को जो पीता के संग था औान हम पन पनगट ऊआ तुमहें जनावते हैं।
३ जो की हम ने देप्पा है औान सुना है उसका संदेस तुमहें देते हैं की तुम भी हमाने संग मेल नप्पो औान नीसयय़ हमाना मेल
४ पीता से औान उसके पुतन य़सु मसीह से है। औान य़े व्रातें हम तुमहें इस कानन लीप्पते हैं की तुमहाना आनंद संपुनन
५ हो जाय़। औान य़ह वुह संदेस है जो हम ने उस से सुना है औान तुमहें देते हैं की इसन जोत है औान उस में अंधकान कुछ
६ भी नहीं। य़दी हम कहें की हम उस से मेल नप्पते हैं औान अंधकान में यलें तो झुठे हैं औान सयाइ पन नहीं यलते।
७ पन य़दी हम जोत में यलें जैसा की वुह आप जोत में है तो हम आपुस में मेल नप्पते हैं औान उसके पुतन य़सु मसीह का लोऊ
८ हमको समसत पापों से पवीतन कनता है। य़दी हम कहें की हम में पाप नहीं है तो हम अपने को छल देते हैं औान सयाइ
९ हम में नहीं। य़दी हम अपने पापों को मान लेवें तो वुह हमाने

पापें को क्षमा कनने को श्रौन समसत श्रधनमता से पवीतन
१० कनने को सया श्रौन नय़ाय़ी है। य़दी हम कहें की हम ने
पाप नहीं कीय़ा तो हम उसे हुठावते हैं श्रौन उसका व्रयन
हम में नहीं है।

२ दुसना पनव्र।

१ हे मेने व्रयो ये व्रातें मैं तुमहें लीष्पता ऊं की तुम पाप न कनो
पनंतु य़दी कोइ पाप कने तो पीता के पास हमाना प्रेक पष्प
२ व्रादी धनमी य़सु मसीह है। श्रौन सोइ हमाने पापें के लीय़े
पनाय़सयीत है श्रौन केवल हमाने नहीं पनंतु समसत संसान के
३ भी। य़दी हम उसकी श्रगय़ा को पालन कनें तो हम इस से
४ जानते हैं की हम उस से पनीयय़ नष्पते हैं। वुह जो कहता
है की मैं उसे जानता ऊं श्रौन उसकी श्रगय़ा को पालन नहीं
५ कनता सो हुठा है श्रौन सयाइ उस में नहीं। पनंतु वुह जो
उसका व्रयन पालन कनता है उस में नीःसंदेह इसन का पनेम
६ सीध ऊश्रा है हम इस से जानते हैं की हम उस में हैं। वुह जो
कहता है की मैं उसमें नहता ऊं याहीय़े की श्राप प्रेसा
७ यले जैसा वुह यलता था। हे भाइय़ो मैं तुमहाने कानन
कोइ नइ श्रगय़ा नहीं लीष्पता पनंतु पुनानी श्रगय़ा जो तुम
श्रागे से नष्पते थे पुनानी श्रगय़ा वुह व्रयन है जो तुम ने श्रानंभ
८ से सुना था। फ्रेन प्रेक नय़ी श्रगय़ा मैं तुमहें लीष्पता ऊं जो
उस में श्रौन तुम में सत है कय़ेकी श्रंधकान व्रीत गय़ा श्रौन
९ श्रव्र सया उंजीय़ाला यमकता है। वुह जो कहता है की मैं
उंजीय़ाले में ऊं श्रौन श्रपने भाइ से व्रैन कनता है श्रव्रलें श्रंध-
१० कान में है। वुह जो श्रपने भाइ को पीश्रान कनता है उंजी-
य़ाले में नहता है श्रौन उस मे ठोकन का कानन नहीं है।
११ पनंतु जो की श्रपने भाइ से व्रैन नष्पता है सो श्रंधकान में है
श्रौन श्रंधकान में यलता है श्रौन नहीं जानता की कीधन को

को जाता है कयोंकी अंधकार ने उसकी आंखें अंधी कीया है।
१२ हे वूयो मैं तुमहें लीष्पता हुं इस कारन की उसके नाम से तुम-
१३ हारे पाप छमा कीये गये हैं। हे पीतरो मैं तुमहें लीष्पता हुं
इस कारन की जो आरंभ से है तुम ने उसे जाना है हे तरुनों
मैं तुमहें लीष्पता हुं इस कारन की तुम ने उस सतनु को जीता
है हे वूयो मैं तुमहें लीष्पता हुं इस कारन की तुम ने पीता को
१४ जाना है। हे पीतरो मैं ने तुमहें लीष्पा है इस कारन की जो
आरंभ से है तुम ने उसे जाना है तरुनों मैं ने तुमहें लीष्पा है
इस कारन की तुम बलवान हो और इसर का वचन तुम में
१५ रहता है और उस सतनु को तुम ने जीता है। जगत को और
जगत की वसतुन को पीआर मत करो यदी कोइ जगत को
१६ पीआर करे तो पीता का पीआर उस में नहीं है। कयोंकी
सब कुछ जो जगत में है अरथात सरीर का अभीलास और
आंख का अभीलास और जीवन का अभीमान पीता से नहीं।
१७ परंतु जगत से है। और जगत और उसकी कामना बही जाती
है परंतु जो इसर की इछा पर चलता है वही सरवदा रहता
१८ है। हे वूयो यह पीछला समय है और जैसा तुम ने सुना है
की मसीह वीरुध आवता है सो अभी बहुत से मसीह वीरुध
१९ हैं जीस से हम जानते हैं की यह पीछला समय है। वे हम
में से नीकले पर हम में के न थे कयोंकी यदी वे हम में के होते
तो नीःसंदेह हमारे संग ठहरते परंतु यह इस लीये है जीसतें
२० परगट होवे की वे सब हम में के न थे। और तुम ने उस पवीतर
२१ मय के ओर से अभीसेक पाया और सब कुछ जानते हो। मैं
ने तुमहें इस कारन नहीं लीष्पा है की तुम सत को नहीं जानते
परंतु इस लीये की तुम उसे जानते हो कयोंकी हर एक झुठ
२२ सत में से नहीं है। कौन झुठा है परंतु वुह जो यसु के मसीह
होने को मुकरता है जो पीता और पुतर को मुकरता है सो
२३ मसीह वीरुध है। जो कोइ पुतर को मुकरता है सो पीता को

नहीं नप्पता ग्रीन जो कोइ पुतन को मानता है पीता को भी
२४ नप्पता है। इस लीये जो की तुमहों ने आनंभ से सुना है
सोइ तुम में नहे ग्रदी वुह जो तुम ने आनंभ से सुना है तुम में
२५ नहे तो तुम भी पुतन ग्रीन पीता में नहोगे। ग्रीन वुह व्राया
२६ अनंत जीवन है जो उसने हम से कीय़ा है। मैं ने य़े व्रातें तुम
२७ को उनके व्रोप्पय़ में जो तुमहें छल देते हैं लीप्पी हैं। ग्रीन
अभीसेक जो तुम ने उस से पाय़ा है तुम में नहता है ग्रीन
आचीन नहीं हो की कोइ तुमहें सीप्पावे पनंतु जैसा य़ही
अभीसेक तुमहें सव्र व्रातों के व्रोप्पय़ में सीप्पावता है ग्रीन सत
है ग्रीन असत नहीं है अनथात जैसा उसने तुमहें सीप्पाय़ा है
२८ वैसा तुम उस में नहो। हां अव्र हे व्रचो तुम उस में नहो की
जव्र वुह पनगट होवे तो हम साहसी होवें ग्रीन उसके आवने
२९ पन उसके आगे लजीत न होवें। सो जैसा की तुम जानते हो
की वुह धनमी है तो जानते हो की हन ग्रेक जो धनम पन
चलता है सो उसी से उतपन ऊआ है।

३ तीसना पत्र।

१ देप्पो पीता ने हम पन कीस नीत का पनेम कीय़ा है की हम
इसन के पुतन कहावें इस कानन जगत हम को नहीं जानते
२ कय़ोंकी उसको नहीं जाना। हे पीनीय़ अव्र हम इसन के पुतन
हैं ग्रीन अव्र नहीं दीप्पाइ देता की हम कय़ा होंगे पनंतु हम
जानते हैं की जव्र वुह पनगट होगा हम उसके समान होंगे
३ कय़ोंकी जैसा वुह है वैसा उसे देप्पेंगे। ग्रीन हन ग्रेक जो य़ह
आसा उस पन नप्पता है अपने को उसके समान पवीतन कनता
४ है। हन ग्रेक जो पाप कनता है व्रेवसथा को भी भंग कनता है
५ कय़ोंकी पाप व्रेवसथा की भंगता है। ग्रीन तुम य़ह जानते हो
की वुह हमाने पाप दुन कनने के लीय़े पनगट ऊआ ग्रीन उस में
६ कोइ पाप नहीं है। हन ग्रेक जो उस में नहता है पाप नहीं

करता और हर एक ने जो पाप करता है उसे न देख्या है न
७ जाना है। हे बच्चो तुमहें कोइ छल न देवे जो कोइ धरम करता
८ है सो धरमी है जैसा वुह आप धरमी है। जो पाप करता है सो
सैतान से है कयोंकी सैतान आरंभ से पाप करता है और
इसर का पुतर परगट हुआ की सैतान के कारज को बीनास करे।
९ जो की इसर से उतपन हुआ है सो पाप नहीं करता कयोंकी
उसका बीज उस में धरा है और वुह पाप नहीं कर सकता कयोंकी
१० वुह इसर से उतपन हुआ है। इससे इसर के पुतर और सैतान
के पुतर परगट हैं जो कोइ धरम नहीं करता और जो अपने
११ भाइ को पीआर नहीं करता सो इसर से नहीं है। कयोंकी
यह वुह संदेस है जो तुम ने आरंभ से सुना है की हम
१२ एक दुसरे को पीआर करें। और कैन के समान नहीं जो उस
दुसट का था और अपने भाइ को घात कीया और उसने उसे
कीस लीये घात कीया इस कारन की उसके अपने ही करम
१३ बुरे थे और उसके भाइ के धरम के थे। हे मेरे भाइयो यदी
१४ जगत तुम से बीरोध करे आसयरज न करो। हम तो जानते
हैं की हम मीरतु से पार होके जीवन में आये कयोंकी हम
भाइयों को पीआर करते हैं जो भाइ को नहीं पीआर करता
१५ सो मीरतु में रहता है। जो कोइ अपने भाइ से बैर रखता
है हतयारा है और तुम जानते हो की कीसी हतयारे में
१६ अनंत जीवन नहीं बसता। इस से हम उसके परेम को पही-
यानते हैं की उसने हमारे कारन अपना परान धर दीया
१७ और हमें याहीये की भाइयों के कारन परान धर देवें। इस
कारन जीस कीसी के पास जगत की बसतु होय और अपने
भाइ को दरीदरी देख के अपने हीरदय को उस से अलग
१८ रखे तो इसर का परेम उस में कयोंकर बसता है। मेरे बालको
हम बयन से और जीभ से परेम न करें परंतु करनी और
१९ सयाइ से। और हम इस से जानते हैं की हम सत के हैं और

२० अपने अंतःकरनों को उसके आगे सथीर करनप्पेंगे। कयोंकी यदी हमारा अंतःकरन हम पर दोप्प देवे तो ईसर हमारे
२१ अंतःकरन से वड़ा है ऋैार सव कुछ जानता है। हे पीरीय जो हमारा अंतःकरन हमें दोप्प न देवे तो हम ईसर के आगे
२२ भरोसा रप्पते हैं। ऋैार जो कुछ हम मांगते हैं उस से पावते हैं कयोंकी हम उसकी अगयाओं का पालन करते हैं ऋैार जो
२३ कुछ उसो भावता हैं सो करते है। ऋैार उसकी अगया यह है की हम उसके पुतर यसु मसीह के नाम पर वीसवास लावें ऋैार जैसा उसने अगया की है एक दुसरे को पीआर करें।
२४ ऋैार जो उसकी अगया का पालन करता है सो उस में रहता है ऋैार वुह उस जन में रहता है ऋै। ईस से हम जानते हैं की वुह हम में रहता है अरथात उस आतमा से जीस को उसने हमें दीया है।

४ चैाथा पत्र।

१ हे पीरीय हर एक आतमा का परतीत न करो परंतु आतमा को परप्पो की वे ईसर के ऋैार से हैं की नहीं कयोंकी वहुत से
२ मीथया आगमगयानी जगत में नीकलगये हैं। तुम ईस से ईसर के आतमा को जानते हो जो आतमा मानलेता है की
३ यसु मसीह देह में परगट ऊआ सो ईसर से है। ऋैार जो आतमा नहीं मान लेता की यसु मसीह देह में आया ईसर के ऋैार से नहीं है ऋैार यह वही मसीह वीरोध है जीसका समा-याचार तुम ने सुना की आवता है ऋैार अव जगत में आ चुका
४ है। हे पीरीय वच्चो तुम तो ईसर के हो ऋैार उन पर परवल ऊए हो कयोंकी वुह जो तुम में है उस से वड़ा है जो जगत में
५ है। वे जगत के हैं ईस कारन जगत की वोलते हैं ऋैार जगत
६ उनकी सुनता है। हम ईसर के हैं वुह जो ईसर को पही-चानता है हमारी सुनता है जो ईसर से नहीं है सो हमारी

नहीं सुनता इस से हम सयाइ के आतमा और भनम के आतमा
७ को जान लेते हैं। हे पनीय़ हम ग्रेक दुसने को पीआन कनें
कयोंकी पीआन इसन से है और हन ग्रेक जो पीआन कनता
८ है इसन से उतपन ऊआ है और इसन को जानता है। जो की
पीआन नहीं कनता उसने इसन को नहीं नाना है कयोंकी
९ इसन पीआन है। इसन का पीआन जो हम से है इस से पनगट
ऊआ की इसन ने अपने ग्रेक होते पुतन को जगत में भेजा की
१० हम उसके कानन से जीवें। इस में पीआन है य़ह नहीं की
हम ने इसन को पीआन कीय़ा पनंतु की उसने हमें पीआन
कीय़ा और अपने पुतन को भेजा की हमाने पापों का पनाय़स-
११ यीत होवे। हे पीनीय़ य़दी इसन ने हम से ग्रेसा पीआन कीय़ा
१२ तो हमें कैसा ग्रेक दुसने को पीआन कीय़ा याहीये। कीसी ने
इसन को कभी नहीं देप्पा य़दी हम ग्रेक दुसने को पीआन
कनें तो इसन हम में नहता है और उसका पीआन हम में
१३ सीघ ऊआ है। हम इसी से जानते हैं की हम उस में नहते
हैं और वुह हम में की उसने अपने आतमा में से हमें
१४ दीय़ा। और हम ने देप्पा है और साप्पी देते हैं की पीता
१५ ने पुतन को भेजा की संसान का मुकतदाता होवे। जो कोइ
मान लेवे की य़सु इसन का पुतन है सो इसन में और इसन
१६ उस में नहता है। और इसन के पीआन को जो हम से है हम
ने जाना और उस पन व़ीसवास कीय़ा इसन पीआन है और जो
कोइ पीआन में नहता है सो इसन में और इसन उस में नहता
१७ है। इस से हम में पनेम संपुनन होता है की हम नय़ाय़ के
दीन साहस नप्पें कयोंकी जैसा वुह है वैसा हम भी जगत में हैं।
१८ पनेम में भय़ नहीं है पनंतु संपुनन पनेम भय़ को दुन कनता है
कयोंकी भय़ में दुप्प है जो डनता है सो पनेम में संपुनन नहीं
१९ ऊआ। हम उसे पीआन कनते हैं कयोंकी पहीले उसने हम
२० को पीआन कीय़ा। य़दी कोइ कहे की मैं इसन को पीआन

कनता ऊं ग्रौन अपने भाइ से व्रैन नप्पता है ता हुठा है कयोंकी जो कोइ अपने भाइ का जीसे उसने देप्पा है पीआन नहीं कनता सो इसन को जीसे उसने नहीं देप्पा कयोंकन पीआन कन सकता
२१ है। ग्रौन हम ने उस से ग्रह अगया पाइ है की जो कोइ इसन को पीआन कनता है सो अपने भाइ को भी पीआन कने।

५ पांयवां पनव्र।

१　जो कोइ व्रीसवास लावता है की ग्रस् वही मसीह है सो इसन से उतपन ऊआ है ग्रौन जो कोइ उतप दक को पीआन कनता है सो उसको भी पीआन कनता है जो उस से उतपन ऊआ है।
२ इस से हम जानते हैं की इसन के व्रालकों को पीआन कनते हैं जव्र की हम इसन को पीआन कनके उसकी अ-
३ गया को पालन कनते हैं। कयोंकी इसन का पीआन ग्रह है की हम उसकी अगया को पालन कनें ग्रौन उसकी अगया
४ तो कठीन नहीं है। कयोंकी जो इसन से उतपन ऊआ है सो जगत पन पनवल होता है ग्रौन ग्रही वुह जय हैं जो जगत पन
५ पनवल होता है अनथात हमाना व्रीसवास। वुह कौन है जो जगत पन पनव्रल होता है केवल वही जो व्रीसवास नप्पता है
६ की ग्रसु इसन का पुतन है। ग्रह वही है जो पानी से ग्रौन लोऊ से आया अनथात ग्रसु वह मसीह केवल पानी से नहीं पनंतु पानी ग्रौन लोऊ से ग्रौन आतमा है जो साप्पी देता है ग्रौन
७ आतमा सत है। कयोंकी तीन हैं जो सनग में साप्पी देते हैं
८ पीता ग्रौन व्रयन ग्रौन घनमातमा ग्रौन ग्रे तीनों एक हैं। ग्रौन तीन हैं जो भुम पन साप्पी देते हैं आतमा ग्रौन पानी ग्रौन
९ लोऊ ग्रौन ग्रे तीनों एक में मीलत हैं। ग्रदी हम मनुप्पन की साप्पी मानें तो इसन की साप्पी अधीक व्रड़ी है कयोंकी इसन
१० की साप्पी जो उसने अपने पुतन के कान दाइ है ग्रह है। जो की इसन के पुतन पन व्रीसवास लावता है सो साप्पी अपने ही में

रष्पता है जो की ईसर पर वीसवास नहीं लावता सो उसको झुठा करता है कयोंकी उसने उस साष्पी पर जो ईसर ने अपने
११ पुतर के बीष्यय में दी है वीसवास नहीं कीया। और साष्पी यह है की ईसर ने हमें अनंत जीवन दीया और यह जीवन
१२ उसके पुतर में है। जो की पुतर को रष्पता है सो जीवन को रष्पता है जो की ईसर के पुतर को नहीं रष्पता सो जीवन
१३ नहीं रष्पता है। मैं तुमचों को जो ईसर के पुतर के नाम पर वीसवास लाये सो यह वातें लीष्पता हुं जीसतें तुम जानो की अनंत जीवन रष्पते हो और जीसतें तुम ईसर के पुतर के नाम
१४ पर वीसवास लाओ। और यह वुह भरोसा है जो हम उस पर रष्पते हैं की यदी हम उसकी इछा के समान कुछ मांगे तो
१५ वुह हमारी सुनता है। और यदी हम जानें की जो कुछ हम उस से मांगते हैं वुह हमारी सुनता है तो हम जानते हैं की
१६ जो कुछ हम ने उस से मांगा है सो हम पावेंगे। यदी कोइ अपने भाइ को देषे की मीरतु के अजोग पाप करता है तो वुह मांगे और उसे जीवन दीया जायगा यह उसके लीये है जो मीरतु के अयोग पाप करता है ऐक पाप मीरतु के योग है मैं
१७ नहीं कहता की वुह उसके बीष्यय में परारथना करे। समसत
१८ अधरम पाप है परंतु कोइ पाप मीरतु के अजोग है। हम जानते हैं की जो कोइ ईसर से उतपन हुआ है पाप नहीं करता परंतु वुह जो ईसर से उतपन हुआ है अपनी चौकसी
१९ करता है और वुह दुसट उसे नहीं छुता। हम जानते हैं की हम ईसर से हैं और समसत संसार दुसटता में पड़ा है।
२० परंतु हम जानते हैं की ईसर का पुतर आया है और हमें समुझ दीया है की हम उसको जो सत है जानें और हम उसमें हैं जो सत है अरथात उसके पुतर यसु मसीह में वुह सत ईसर
२१ और अनंत जीवन है। हे लड़के वयो अपने को मुरतीन से बचा रष्पो आमीन।

युहना की दुसरी पतरी।

---

१ परायीन के ओर से युनी ऊइ इसतोरी को ओर उसके पुतरों को जीनहें मैं सत में पीआर करता ऊं ओर केवल मैं
२ नहीं परंतु वे सव्र भी जो सत को जानते हैं। उस सत के कारन
३ जो हम में व्रसता है ओर हम में नीत रहेगा। अनुगरह ओर दया ओर सांत पीता इसर के ओर से ओर परभु यसु मसीह पीता के पुतर के ओर से तुमहारे संग सत में ओर परेम में रहें।
४ जव्र मैं ने तेरे पुतरों में से कइ एक को उस अगया के समान जो हम ने पीता से लीइ सयाइ पर यलते पाया मैं ने व्रऊत
५ आनंद कीया। ओर अव्र हे इसतोरी मैं तेरी व्रीनती करता ऊं यह नहीं की तुझ को कोइ नइ अगया लीष्पता ऊं परंतु वही जो हम ने आरंभ से पाइ थी की हम एक दुसरे को पीआर
६ करें। ओर पीआर यही है की हम उसकी अगया की रीत पर यलें यह वही अगया है जैसा तुम ने आरंभ से सुना है की तुम
७ उस पर यलो। कयोंकी व्रऊतेरे छली जगत में नीकले हैं जो नहीं मान लेते हैं की यसु मसीह देह में आया यही छली ओर
८ मसीह व्रीरुघ है। अपनेही को यौकस रष्पो की जो कारज हम
९ ने कीया है उसे न ष्पोवें परंतु पुरा फल परापत करें। जो कोइ अपराघ करता है ओर मसीह की सीष्पा में नहीं रहता

सो इसन को नहीं नष्पता जो मसीह की सीष्पा में नहता है सो
१० पीता श्चान पुतन को भी नष्पता हैं। यदी कोइ तुमाने पास
आवे श्चान यह सीष्पा न लावे तों उसे घन में न बेठ श्चान न
११ उसके कानज पन आसीस याहो। कयोंकी जो कोइ उसके
कानज पन आसीस यहता है सो उसके वुने कानजन में भागी
१२ होता है। तुमहें वुऊत सी वातें सीष्पने को नष्प के मैं नहीं
याहता की पतन श्चान मसी से लीष्पुं पनंतु आसा नष्पता ऊं
की तुमहाने पास आश्चों श्चान सनमुष्प कहों जीसतें हमाना
आनंद संपुनन हो जाय। तेनी युनी ऊइ वुहीन के लड़के तुहें
नमसकान कहते हें आमीन।

य़हना की तीसनी पतनी।

---

१ पनायीन के ओान से पीनीय़ गाय़स के जीसके मैं सत में पीआन
२ कनता ऊं। हे पीनीय़ मैं समसत नीत से याहता ऊं की जैसा तेना
पनान भागमान है तु भागमान होवे ओान कुसल में नहे।
३ कय़ोंकी जव़ भाइय़ों ने आके तेनी सयाइ पन जैसा तु सयाइ से
४ यलता है साप्पी दीइ मैं ने नीपट आनंद कीय़ा। इस से मेना
काइ व़ड़ा आनंद नहीं की मैं सनुं की मेने पुतन सयाइ पन
५ यलते हैं। हे पीनीय़ तु जो कुछ भाइय़ों से ओान पनदेसीय़ों से
६ कनता है सो व़ीसवास के साथ कनता है। उनहों ने मंडली के
आगे तेने पनेम के व़ीप्पय़ में साप्पी दी है उनहें तु जो इसन के
७ जोग जातना में व़ढ़ाता है अछा कनता है। कय़ोंकी वे अनदेसी-
य़ों से कुछ नहीं लेते ऊप़े उसके नाम के कानन व़ाहन नीकले।
८ इस कानन उयीत है की हम ऐसों को गनहन कनें की हम
९ सयाइ में संगी सेवक होवें। मैं ने मंडली को लीप्पा है पनंतु
दीय़ातनफ़ीस ने जो उन में पनघान ऊआ याहता है हमें गन-
१० हन न कीय़ा। सो जव़ मैं आउंगा तो उसके कीए ऊए कानजन
को समनन कनुंगा की हीसका की व़ातें से हमाने व़ीनोघ में
व़ुना व़कता यला जाता है ओान इस से संतोप्प नहीं कनके
भाइय़ों के आप गनहन नहीं कनता अनु ओानों का जो उनहें
गनहन कीय़ा याहते हैं नोकता है ओान मंडली से व़ाहन

११ नीकालता है। हे पीरीय वुराइ का पीछा न करो परंतु भलाइ का जो की भला करता है सो इसर से है परंतु जो की वुरा
१२ करता है उसने इसर को नहीं देप्पा। दीमीतरयुस समसत मनुप्पन से चैार सयाइ से भी अछी साप्पी रप्पता है चैार हम भी साप्पी देते हैं चैार तुम तो जानते हो की हमारी यूह
१३ साप्पी सत है। लीप्पने को वुह्रत कुछ मेरे पास है परंतु मैं
१४ मसी चैार लेप्पनी से तुहे न लीप्पुंगा। परंतु तुहे सीघर देप्पने
१५ को आसा रप्पता ह्रं तव्र हम सनमुप्प कह लेंगे। तुह्र पर सांत होवे मीतरगन तुहे नमसकार कहते हैं तु भी मीतरों के नाम लेके नमसकार कह।

यहूदा की पतनी सबके लीये।

---

१ यसु मसीह का दास औन याकुब का भाइ यहूदा के ओन
से उनको जो पीता इसन में पवीतन कीये गये औन यसु मसीह
२ में बुलाये गये औन नछा कीये गये हैं। दया औन सांत औन
३ पनेम तुमहाने कानन बढ़ता जाय। हे पीनीय तुमको सामान
उघान के बीष्पय में लीष्पने को समसत जतन कनते हुए
मैं ने उचीत जाना की उपदेस कनके तुम को लीष्पुं की
उस बीसवास के लीये जो आगे साधुन को सौंपा गया अतयंत
४ पनीसनम कनो। कयोंकी कीतने घुस गये हैं जो इस दंड की
अगया के लीये बहुत दीन से ठहनाये गये हैं अधनमी लोग
जो हमाने इसन के अनुगनह को लुचपने से पलटते हैं औन
इसन से जो केवल सवामी है औन हमाने पनभु यसु मसीह से
५ मुकनते हैं। पनंतु मैं तुमहें चीतावता हुं यदपी तुम उसे
आगे जानते थे की पनभु ने लोगों को मीसन की भुम से बचाके
६ फेन उनहें जो बीसवास न लाये नसट कीया। औन उन दुतों
को भी जो अपनी पहीली दसा में न ठहने पनंतु अपने ठीक
नीवास को छोड़ दीया उसने सनबदा के सीकनों में अंधकान के
७ तले महा नयाय के दीन लों नष्पा। उसी नीत से सदुम औन
गमनन: औन उनके आसपास के नगन जीनहों ने उनके समान
छीनाला कीया औन पनाये सनीन का पीछा कीया चीतावने

के लीये धरे हैं और सनवदा के अगनी की पीड़ा का पलटा
८ पावते हैं। सो ये सपनदेनसी भी सनीर को असुच करते हैं
और परभुता को हलुक समुझते हैं और महत पदों की नींदा
९ करते हैं। परंतु मीकाइल परधान दुत ने जब सैतान के संग
मुसा की लोथ के वीष्पय में वीवाद कीया तो साहस न कीया की
उस पर छीड़कने का अपवाद देवे परंतु कहा की परभु तुझको
१० दपटे। परंत जीन वातों को ये नहीं जानते नींदा करते हैं
और जीनहें सभाव से पसु के समान जानते हैं इन में वे अपने
११ को सतयानास करते हैं। धीक उन पर कयोंकी वे कीन के
मारग पर यलेगये हैं और वलआम के से युक में लोभके लीये
अपने को वहा दीया और कुरह के वीपरीत में नसट हुए।
१२ तुमहारे परेम के जेवनार में वे कलंक हैं जब वे तुमहारे उतसव
में नीडर से अपने को पीलावते हैं वे नीरजल मेघ हैं जो पवन
उड़ाये जाते हैं वीरछ हैं जीनकी कोपलें मुरझागइ हैं नीस-
१३ फल हैं दोवार मीरतक हैं जड़ से उप्पाड़े गये। समुदर की
परयंड लहरें हैं अपनी लजा का फेन फेंकते हैं भरमते
हुए तारे हैं जीनके लीये सनवदा के अंधकार की कालीमा
१४ धरी है। अखनुख ने जो आदम से सातवां था उनके वीष्पय
में आगम कहा था की देख परभु अपने करोड़ों साधुन के संग
१५ आता है। की सभों पर दंड वीयार करे और उनहें जो उन
में से अधरमी हैं उनहों के समसत अधरम कारजन पर जो
उनहों ने अधरमता से कीये हैं और सारी कठोर वातों पर
जो अधरम पापीयों ने उसके वीरुध में कही हैं दोष देय।
१६ ये कुड़कुड़ानेवाले हैं नींदक हैं और अपने कामाभीलास पर
यलते हैं और मुंह से वड़ी वोली वोलते हैं मनुष्य की परतीष्टा
१७ को अपने लाभ के लीये बढ़ावते हैं। परंतु हे पीरीय तुम उन
वातों को जो हमारे परभु यसु मसीह के परेरीतों के और से
१८ आगे कही गइं समरन करो। कयोंकी उनहों ने तुमहें कहा

दीया है की अंतय समय में यीढानेवाले आवेंगे जो अपने अ-
१९ घनम कामाभीलास पन यलेंगे। ये वे हैं जो अपने को अलग
२० कनते हैं नसीया हैं और आतमा उनमें नहीं हैं। पनंतु हे
पीनीय आप को अपने पवीतन वीसवास पन सुधानते हुए और
२१ घनमातमा से पनानथना कनते हुए। अपने को इसन के पनेम
में नखो और अनंत जीवन के लीये हमाने पनभु यसु मसीह की
२२ दया की वाट जोहो। और भेद कनके कीतनों पन दया
२३ कनो। और उनके साथ कीतनों को आग में से खींय वयाओ
और वसतन से भी जीस में देह का छींटा लगा वीनोध कनो।
२४ अव उसके लीये जो तुमहें भनसट होने से वयासकता है और
अपने प्रेसनय के सनमुख अतयंत आनंद से नीनदोख खडा
२५ कनसकता है। हमाने मुकतीदाता नीनकेवल वुधमान इसन
को महीमा और पनताप और पनभुता और पनाकनम अव
और सनवदा होवे आमीन।

य़ुहना दैव का पनकासीत।

---

१ पहीला पनव़।

१ य़सु मसीह का पनकासीत जो इसन ने उसे दीग्रा की उन व़ातों को जो सीघन होनवाली हैं अपने सेवकों को दीप्पावे ग्रैान उनहें अपने दुत के ग्रैान से भेज के अपने दास य़ुहना को
२ जनाय़ा। जीसने इसन के व़चन की ग्रैान य़सु मसीह की
३ साप्पी पन जो कुछ उसने देप्पा साप्पी दी। घन वुह जो पढ़ता है ग्रैान वे जो इस भवीस व़ानी को सुनते हैं ग्रैान उन व़ातों को जो इस में लीप्पी हैं पालन कनते हैं कय़ोंकी समय़
४ नीकट है। य़ुहना उन सात मंडलीय़ों को जो ग्रासीग्रा में हैं उसके ग्रैान से जो है ग्रैान था ग्रैान ग्रानेवाला है ग्रैान सात ग्रातमा से जो उसके सींहासन के ग्रागे हैं ग्रनुगनह ग्रैान सांत
५ तुमहाने लीय़े होवे। ग्रैान य़सु मसीह से जो व़ीसवासी साप्पी है ग्रैान मीनतकन में से पहीलौंठा ग्रैान पीनथीवी के नाजाग्रों का महानाज है वुह जीसने हम सभों को पीग्रान कीय़ा ग्रैान हमें
६ हमाने पापों से अपने लोहू में घो डाला। ग्रैान हमको नाजा ग्रैान अपने पीता इसन का य़ाजक व़नाय़ा महीमा ग्रैान पन-
७ भाव सनव़दा उसीको ग्रामीन। देप्पो वुह मेघो पन ग्राता है ग्रैान हनप्रेक की दीनीसट उस पन पड़ेगी हां जीनहों ने उसे छेदा उसको देप्पेंगे ग्रैान भुम पन के समसत व़नन उसके लीय़े

८ छाती पीटेंगे ऐसा होवे आमीन। पनन्तु ग्रुं कहता है की मैं अलफा और उमेगा हूं आद और अंत जो है और था और
९ जो आनेवाला है सनव् सामनथी। मैं युहना जो तुम्हाना भाइ भी और ग्रसु मसीह के दुष्प में और नाज में और संतोष्प में तुमहाना साझी हूं उस टापु में जो पतमस कहावता है इसन के
१० व्रयन के और ग्रसु मसीह की साष्पी के कानन था। मैं पनभु के दीन आतमा में हुआ और अपने पीछे तुनही का सा महा-
११ सव्द सुना। जो कहता था की मैं अलफा और उमेगा हूं आद और अंत और जो कुछ तु देष्पता है गनंथ में लीष्प और आसीया की सात मंडलीयों को भेज अनथात अफसस को और समनन: को और पनगमस को और थग्रातीन: को और सानदीस को और फलादलफीय: को और लाउदी-
१२ कीय: को। मैं उस सव्द को जो मुझ से कहता था देष्पने को
१३ फीना और फीनकन सोने की सात दीअट देष्पीं। उन सात दीअटों के मध में ऐक जन मनुष्य के पुतन सा देष्पा की ऐक लंवा पहीनावा पहीने हुऐ और सोने का पटुका छाती पन वंधा
१४ हुआ। उसका सीन अनथात वाल उंनके समान उजला और
१५ पाला सा सेत था और उसकी आंष्पें जैसे आग की लवन। और उसके पांव योष्पे पीतल के से जो भटी में नीनाला कीया गया हो
१६ और उसका सव्द वहुत से पानीयों का सा सव्द था। और उसके दहीने हाथ में सात तानें थे और उसके मुंह से योष्पा दोधाना ष्पड़ग नीकलता था और उसका सनुप सुनज के समान जव वुह
१७ वड़े पनाकनम से यमकता है। और जव मैं ने उसे देष्पा तव उसके यनन पन मीनतक सा गीनपड़ा तव उसने अपना दहीना हाथ मुझ पन नष्पके कहा की मत डन मैं पहीला और पीछला
१८ हूं। वही हूं जो जीता हूं और मुआ था और देष्पो मैं सनवदा लों जीवता हूं आमीन और मुझ पास पनलोक और मीनतु की
१९ कुंजीआं हैं। जो वसतें तु देष्पता है और वे जो हैं और जो

२० पीछे होनेवाली हैं उनहें लीप्प नप्प। उन सात तारों का जीनहें तु मेरे दहीने हाथ में देप्पता है और उन सोने के सात दीअटों का भेद यह है की सात तारे सात मंडलीयों के दुत हैं और सात दीअट जो तु देप्पता है सात मंडली हैं।

२ दुसरा परब्र।

१ वुह कहता है जीसके दहीने हाथ मे सात तारे हैं और सोने के सात दीअटों के मध में फीरता है की अफरसस की मंडली
२ के दुत को ये ब्रातें लीप्प। की तेरे काम और तेरा परीसरम और तेरा संतोप्प और की तु ब्रुरों को नहीं सही सकता मैं जानता हुं और तु ने उनको जो अपने को परेरीत कहते हैं
३ और नहीं हैं ताड़ा और झुठा पाया। और तु ने सहलीया है और संतोप्प कीया है और मेरे नाम के कारन परीसरम कीया
४ है और उदास न हुआ। तीसपर भी तुझ से यह अपब्राद
५ रप्पता हुं की तु ने अपना पहीला परेम प्पो दीया। सो जीस से तु गीरा चेत कर और पसचाताप कर और अपने अगीले कारज कर नहीं तो मैं तुझ पास सीघर आउंगा और यदी तु पसचाताप न करे तो तेरी दीअट को सथान से अलग करुंगा।
६ तीस पर भी तुझ में यह है की तु नीकलाइयों के कारजन से
७ ब्रैर रप्पता है जीन से मैं भी ब्रैर रप्पता हुं जो कान रप्पता है सो सुने की आतमा मंडलीयों को कया कहता है की मैं उस को जो जय पावता है जीवन के ब्रीरीछ से जो ईसर के ब्रैकुंठ के
८ ब्रीचोंब्रीच है फल प्पाने को देउंगा। जो पहीला और पीछला है और मुआ था और जीवता है सो कहता है की समरना की
९ मंडली के दुत को ये ब्रातें लीप्प। की मैं तेरे कारज और दुप्प और दरीदरता को जानता हुं परंतु तु तो धनवान है और उनका जो अपने को यहुदी कहते हैं और नहीं हैं परंतु
१० सैतान की मंडली हैं पाप्पंड ब्रकना जानता हुं। जो जो ब्रात तुझे

भोग कनने पडेगा उन में कीसी से मत डन देप्प सैतान तुम में
से कइ प्रेक को ब्रंघन में डालेगा की तम पनप्पे जाओ और दस
दीन लों पीड़ा पाओगे तु मीनतु लों व्रीसवासी नह और मैं जीवन
११ का मुकुट तुहे देउंगा। जो कान नप्पता है से सुने की आतमा
मंडलीओं को कया कहता है की जो जयमान है दुसनी मीनतु
१२ से संताया न जायगा। वुह जो चोप्पा दोधाना प्पड़ग नप्पता
है कहता है की पनगमस की मंडली के दुत को ये व्रातें लीप्प।
१३ की मैं तेने कानज और तेने नीवास को जहां सैतान का सींहा-
सन है जानता हुं और तु मेने नाम को दीढ़ता से धनता है
और उन दीनों में भी जव मेना व्रीसवासी साप्पी अंतपास तुमहें
में माना गया जहां सैतान नहता है मेने व्रीसवास से न मुकना।
१४ तीस पन भी मैं तुह से कुछ अपवाद नप्पता हुं की तेने यहां
वे हैं जो व्रलआम कीसी सीप्पा को धानन कनते हैं जीसने व्रल-
आम को सीप्पाया की इसनाइल के संतान के आगे ठोकन
प्पीलानेवाला पथन डाल नप्पे की उन व्रसतुन को प्पावें जो मुन-
१५ तीन को व्रलीदान की गइ और छीनाला कनें। और इसी
नीत से उनहें भी नप्पते हो जो नीकलाइओं की सीप्पा को
१६ गनहन कनते हैं जीसका मैं व्रीनोधी हुं। पसयाताप कन नहीं
तो मैं तुह पास सीधन आउंगा और मैं उनके संग अपने मुंह
१७ का प्पड़ग लेके लडुंगा। जो कान नप्पता है से सुने की आतमा
मंडलीओं को कया कहता है की जयमान को मैं गुपत मना
प्पाने देउंगा और मैं उसे प्रेक सेत पथन देउंगा और उसी
पथन पन प्रेक नया नाम लीप्पा हुआ की उसको छोड़ जीसने
१८ उसे पाया कोइ और उसे नहीं जानता। इसन का पुतन जीस
की आप्पें अगीन की लवन के समान हैं और पांव जैसे चोप्पे
पीतल के हैं कहता है की सवातीन: की मंडली के दुत को ये
१९ व्रातें लीप्प। की मैं तेने कानजन को और पनेम को और
सेवा को और व्रीसवास को और संतोप्प को जानता हुं और

२० और तेने पीछले कानज अगीले से अती अधीक हैं। तथापी मैं तुह से कुछ कुछ अपवाद नप्पता ऊं की तु उस इसतीनी यज़ावील को जो अपने को आगमगयानोनी कहती है सीप्पाव-ने और मेने सेवकों को परसलाने देता है की वे छीनाला कनें

२१ और मुनतीन को वलीदान की ऊइ वसतुन को प्यावें। और मैं ने उसको अवकास दीया की अपने छीनाला से पसयाताप

२२ कने और उसने पसयाताप न कीया। देप्प मैं उसको वीछौना पन डालुंगा और उनहें जो उसके संग छीनाला कनते हैं यदी वे अपने कानजन से पसयाताप न कनें वड़ी वीपत में डालुंगा।

२३ और उसके पुतनों को पनान से मानुंगा और समसत मंडली जानेंगी की मैं वही ऊं जो हीनदयों और लंको का पानप्पी ऊं और मैं तुम में से हन ऐक को तुमहाने कानजन के समान

२४ देउंगा। पनंतु तुमहें अनथात सवातीनः के बचे ऊऐ लोगों को जीन में यह सीप्पा नहीं और जो सैतान की गहीनाइ को जीस को यनया कनते हैं नहीं जानते यह कहता ऊं की मैं तुम पन

२५ और वोझ न धनुंगा। तथापी जो नप्पते हो उसको मेने आवने

२६ लों दीढ़ता से धने नहो। और उसके लीये जो जयमान होता है और मेने कानजन को अंत लों नप्पता है मैं जातों पन पना-

२७ कनम देउंगा। और वुह लोहे के दंड से उन पन पनभुता कनेगा और वे कुमहान के पातनों के समान यकनायुन होंगे

२८ जैसा की मैं ने अपने पीता से भी पाया है। और मैं उसे पनातः

२९ काल का तानां देउंगा। जो कान नप्पता है सो सुने की आतमा मंडलीयों को वया कहता है।

३ तीसना पनव।

१ वुह जीस पास इसन के सात आतमा और सात तानें हैं यह कहता है की सानदीस की मंडली के दुत को ये वातें लीप्प की मैं तेने कानजन को और उस वात को जानता ऊं की तु जीवता

२ कहावता है पनंतु मीनतक है। योकस हे। ग्रैान जो व्रसतें की नह गइ हैं ग्रैान जो मनने पन हैं उनहें नीमन कन कय़ोंकी
३ मैं ने तेने कानजन को इसन के ग्रागे संपुनन नहीं पाय़ा। इस कानन येत कन की तु ने कीस नीत से लीय़ा ग्रैान सुना ग्रैान छोड़ता से थाम ग्रैान पसयातापकन सो य़दी तु योकस न हो तो मैं तुह पन योन के तुल्य ग्राउंगा ग्रैान तु न जानेगा की मैं
४ कीस घड़ी तुह पन ग्राउंगा। सानदीस में भी तु थोड़ासा नाम नप्पता है जीनहों ने ग्रपने पहीनावा को ग्रसुच न कीय़ा ग्रैान
५ वे मेने संग सेत में फरीनेंगे कयोंकी वे जोग हैं। ग्रैान जय़मान जो है सो सेत व्रसतन से पहीनाय़ा जाय़गा ग्रैान मैं उसका नाम जीवन के पुसतक से न मीटाउंगा पनंतु ग्रपने पीता के ग्रैान
६ उसके दुतों के ग्रागे उसके नाम को मान लेउंगा। जो कान नप्पता है सो सुने की ग्रातमा मंडलीय़ों से कय़ा कहता है।
७ वुह जो पवीतन मय़ ग्रैान सतमय़ हैं जो दाउद की कुंजी नप्पता है वुह जो प्पोलता है ग्रैान कोइ व्रंद नहीं कनता ग्रैान व्रंद कनता है ग्रैान कोइ नहीं प्पोलता य़ह कहता है की फिला-
८ दलफीय़ः की मंडली के दुत को य़े व्रातें लीप्प। की मैं तेने कानजन को जानता ङं देप्प मैं ने तेने ग्रागे ग्रेक प्पुला ङग्रा दुवान नप्पा है ग्रैान कोइ उसे व्रंद नहीं कनसकता कय़ोंकी तु थोड़ा व्रल नप्पता है ग्रैान मेने व्रयन को धानन कीय़ा है ग्रैान
९ मेने नाम से मुकन नहीं मय़ा। देप्प मैं सैतान की मंडली के लोगों को देउंगा की वे ग्रपने को य़ङदी कहते हैं ग्रैान नहीं हैं पनंतु झुठ कहते हैं देप्प मैं ग्रेसा कनुंगा की वे ग्रावें ग्रैान तेने यनन के ग्रागे डंडवत कनें ग्रैान वे जानेंगे की मैं ने तुहे
१० पीय़ान कीय़ा है। इस कानन की तु ने मेने संतोप्प की व्रात को धानन कीय़ा है मैं भी उस पनीप्पा की घड़ी से जो समसत संसान पन ग्रावेगी की पीनथीवी के व्रासीय़ों को पनप्पे तेनी
११ नछा कनुंगा। देप्प मैं सीघन ग्रावता ङं जो तुह पास है उसकी

१२ नक्का कन की कोइ तेना मुकुट न लेले। जयमान जो है मैं उसे अपने इसन के मंदीन का प्यंम्रा कनुंगा ग्रोन वुह परेन वाहन न जायगा ग्रोन मैं अपने इसन का नाम ग्रोन अपने इसन के नगन का अनथात नये यौनोसलीम का नाम जो मेने इसन से सनग से नीचे उतना है ग्रोन अपना नया नाम उस पन लीप्पुंगा।
१३ जो कान नप्पता है सो सुने की ग्रातमा मंडलीयों से कया
१४ कहता है। वुह जो ग्रामीन ग्रोन वीसवास के जोग ग्रोन सया साप्पी है ग्रोन इसन के सीनीसट का ग्रानंभ है यूं कहता है
१५ की लाउदीकीया: की मंडली के दुत को ये वातें लीप्प। की मैं तेने कानजन को जानता हुं की तु न तो ठंढा न तपत है मैं
१६ याहता की तु ठंढा ग्रथवा तपत होता। सो इस कानन की तु सुसुम है ग्रोन न ठंढा न तपत मैं तुहे अपने मुंह से उगील
१७ देउंगा। कयोंकी तु कहता है मैं घनी हुं ग्रोन अपने को घन मान कीये हुं ग्रोन कीसी वसतु के ग्रघीन नहीं हुं ग्रोन नहीं जानता की तु दुनगत ग्रोन दुप्पीत ग्रोन कंगाल ग्रोन ग्रंघा ग्रोन
१८ नंगा है। मैं तुहे मंतन देता हुं की सोना जो ग्राग में ताया गया मुह से मोल ले की तु घनमान होवे ग्रोन सेत वसतन ले जीसतें तु वीभुसीत होवे ग्रोन तेने नंगापन की लाज दीप्पाइ न देय ग्रोन
१९ अपनी ग्रांप्पों में ग्रंजन लगा की तु देप्पे। जीनको मैं पीग्रान कनता हुं उनहें दपटता हुं ग्रोन ताड़ना कनता हुं इस कानन
२० जलीत हो ग्रोन पसयाताप कन। देप्प मैं दुवान पन प्पड़ा हो के प्पटप्पटाता हुं यदी कोइ मेना सवद सुनके दुवान प्पोले मैं उसके घन के भीतन ग्राउंगा ग्रोन उसक संग भोजन कनुंगा
२१ ग्रोन वुह मेने संग। जयमान जो है मैं उसे अपने सींहासन पन अपने संग वैठने देउंगा जैसा की मैं भी जय पाके अपने पीता के
२२ संग उसके सींहासन पन वैठा हुं। जीस कीसी के कान है सो सुने की ग्रातमा मंडलीयों को कया कहता है।

४ चैाथा पनव्र।

१ इन व्रसतुन के पीछे मैं ने दीनीसट की ते। कय्रा देप्पता ज्ञं की सनग में ऐक दुवान प्पुला ज्ञ्रा श्रोन पहीला सव्रद जो मैं ने सुना तुनही का सा था जो मुह से कहते ज्ञऐ व्रोला की इचन उपन श्रा श्रोन मैं तुहे देप्पाउंगा की श्रागे के। कय्रा होगा।

२ श्रोन तुनंत मैं श्रातमा में ज्ञश्रा ते। कय्रा देप्पता ज्ञं की सनग में ३ ऐक सीँहासन घना ज्ञश्रा श्रोन उस पन कोइ व्रैठा था। श्रोन वुह जो व्रैठा था दीनीसट में सुनजकांत श्रोन मानीकमनी के ऐसा था श्रोन ऐक व्रानसीक घनुप्प जो गानुतम की नाइं दीप्पाइ ४ देता था उस सीँहासन के यानों श्रोन था। श्रोन उस सीँहासन के यानों श्रोन चैाव्रीस सीँहासन थे श्रोन उन सीँहासनों पन मैं ने चैाबीस पनायीनों के। सेत व्रसतन पहीने ज्ञऐ व्रैठे देप्पा श्रोन ५ उनके मसतकों पन सोने के मुकुट थे। श्रोन उस सीँहासन से व्रीजली श्रोन गनजन श्रोन सव्रद नीकलते थे श्रोन श्रगीन के सात दीपक उस सीँहासन के श्रागे सदा व्रनते थे जो इसन के ६ सात श्रातमा हैं। श्रोन उस सीँहासन के श्रागे कांय का समुदन फटीक के समान था श्रोन सीँहासन के मघ में श्रोन सीँहासन के श्रास पास यान जीवते जंतु थे जो श्रागे पीछे श्राप्पों से भने ७ थे। श्रोन पहीला जंतु सीँह सा था श्रोन दुसना व्रछड़ा सा श्रोन तीसना मनुप्प का सा मुंह नप्पता था श्रोन चैाथा जंतु उड़ते ८ गीघ सा था। श्रोन यानों जीवते जंतुन के छः छः पन यानों श्रोन थे श्रोन उनके भीतन श्रांप्पें भनी थीं श्रोन वे नात दीन इस कहने से चैन न कनते थे की पवीतन पवीतन पवीतन पनभु इसन समसत पनाकनमी जो था श्रोन है श्रोन श्रावने के। है। ९ श्रोन जव्र वे जीवते जंतु उसका जो सीँहासन पन व्रैठा है श्रोन सनव्रदा जीवता है महातम श्रोन पनतीसठा श्रोन घनव्राद १० कनते हैं। वे चैाव्रीस पनायीन उसके सनमुप्प जो सीँहासन पन व्रैठा है गीनपड़ते हैं श्रोन उसकी जो सनव्रदा जीवता है पुजा

करते हैं और अपने मुकुट यह कहते हुए उसके सींहासन के
११ आगे डाल देते हैं। की हे परभु तु जोग है की महीमा और
परतीसठा और पराकरम पावे कयोंकी तु ने समसत वसतें उत-
पंन कीयां और वे तेरीही इछा के लीये उतपंन की गइ हैं।

५ पांचवां परव्र।

१ और मैं ने उसके दहीने हाथ में जो सींहासन पर व्रैठा था
एक पोथी देषी जीस में भीतर व्राहर लीषा हुआ था और
२ सात छाप से छपी थी। और मैं ने एक पराकरमी दुत को
देषा की व्रड़े सव्रद से यह पुकारता था की कैान जोग है की
३ इस पोथी का षोले और उसके छापों का तोड़े। और न ताे
सरग में न पीरथीवी पर न पीरथीवी के तले कीसी का सामरथ
४ हुआ की उस पोथी का षोले अथवा उस में देषे। तव्र मैं व्रहुतसा
रोया इस कारन की कोइ जोग न ठहरा की पोथी का षोले
५ और पढ़े अथवा उस में देषे। तव्र उन परायीनों में से एक ने
मुझे कहा की मत रो देष उस सींह ने जय पाया है जो यहुदा
के घराने का और दाउद का मुल है की उस पोथी को लेवे
६ और उसके सात छापों को तोड़े। तव्र मैं ने दीनीसट की तो
कया देषता हुं की उस सींहासन के मघ में और चार जीवते
जंतुन के और उन परायीनों के व्रीच में एक मेमना षड़ा था
जो व्रधन कीया गया था जीस के सात सींगें और सात आंषें थीं
ये इसर के सात आतमा हैं जो सारी पीरथीवी पर भेजे गये
७ हैं। और उसने आके उसके दहीने हाथ से जो सींहासन पर
८ व्रैठा था उस पोथी को लीया। और जव्र उसने पोथी ली तव्र
वे चारों जीवते जंतु और चैाव्रीस परायीन उस मेमना के आगे
गीर पड़े और हर एक के पास व्रीना और सोने के पातर सु
९ गंध से भरे हुए थे जो साधुन की परारथना हैं। और वे एक
नया राग गाने लगे की तु ही जोग है की उस पोथी को लेवे

ग्रोन उसके छापों के तोड़े कद्योंकी तु मारा गया ग्रोन हमें हन
प्रेक कुल ग्रोन भाष्पा ग्रोन लोग ग्रोन जात से इसन के लीये ग्र-
१० पने नुधीनसे मोल लीया। ग्रोन हमको हमारे इसन के लीये
राजा ग्रोन याजक व्रनाया ग्रोन हम पीनथीवी पन नाज करेंगे।
११ ग्रोन मैंने दीनीसट की ग्रोन सींहासन के यानों ग्रोन से व्रछत
से दुतों का ग्रोन जीवते जंतुन का ग्रोन उन पनायीनों का
सव्रद सुना जो ग्रटकल में कोटीन पन कोटीन ग्रोन सहसनों
१२ पन सहसन थे। व्रड़े सव्रद से कहते थे की मेमना जो मारा
गया जोग है की पनाकनम ग्रोन धन ग्रोन व्रुध ग्रोन व्रल
१३ ग्रोन पनतीसठा ग्रोन महीमा ग्रोन ग्रासीस पावे। ग्रोन मैं ने
हन प्रेक जंतु को जो सनग में ग्रोन पीनथीवी पन ग्रोन पीनथीवी
के तले हैं ग्रोन उनको जो समुदन में हैं ग्रनथात समसत
व्रसतुन को जो उन में हैं यह कहते सुना की उसके लीये जो
सींहासन पन व्रैठा है ग्रोन मेमना के लीये धंन ग्रोन पनतीसठा
१४ ग्रोन महीमा ग्रोन पनाकनम सनव्रदा है। ग्रोन यानों जीवते
जंतु व्रोले ग्रामीन ग्रोन चैाव्रीसों पनाचीन ने गीन के उसकी जो
सनव्रदा जीवता है पुजा की।

६ छठवां पनव्र।

१ ग्रोन जव्र मेमना ने उन छापों में से प्रेक को तोड़ा तव्र मैं ने
उन यानों जीवते जंतुन में से प्रेक को सुना जीसने गनजन के
२ से सव्रद से कहा ग्रा ग्रोन देष्प। ग्रोन मैं ने दीनीसट की तो
कया देष्पता हुं की प्रेक सेत घोड़ा ग्रोन उसका यढ़नेवाला
धनष्प नष्पता था ग्रोन प्रेक सुकुट उसे दीयागया ग्रोन वुह जय
३ पाते हुप्रे ग्रोन जय कनने को नीकला। ग्रोन जव्र उसने दुसना
छाप तोड़ा तव्र मैं ने दुसने जीवते जंतु को यह कहते सुना
४ की ग्रा ग्रोन देष्प। तव्र प्रेक दुसना घोड़ा लाल नीकला ग्रोन
उसके यढ़नेवाले को यह दीया गया की कुसल को पीनथीवी

पर से उठाडाले औार की वे प्रेक प्रेक के मारडालें औार प्रेक
५ महा प्पड़ग उसे दीया गया। औार जव़ उसने तीसरा छाप तोड़ा
तव़ मैं ने तीसरे जीवते जंतु के यह कहते सुना की आ औार
देप्प फेर मैंने दीनीसट की ते। कया देप्पता ऊं की प्रेक काला
घोड़ा औार उसका यढ़नेवाला अपने हाथ में तुला लीये था।
६ औार मैं ने उन यारों जीवते जंतुन के मघ में से यह कहते
प्रेक सव़द सुना की गोऊं सुकी सेर औार जव़ सुकी का तीन
७ सेर तीसपन भी तु तेल औार मदीना मत घटाना। औार
जव़ उसने योथा छाप तोड़ा तव़ मैं ने योथे जीवते जंतु के
८ सव़द के यह कहते सुना की आ औार देप्प। फेर मैं ने ताका
ते। कया देप्पता ऊं की पीला घोड़ा औार उसके यढ़नेवाले का
नाम मीरतु था औार नरक उसके पीछे पीछे जाता था औार उसे
योथाइ पीरथीवी पर पराकरम दीया गया की वे प्पड़ग औार
अकाल औार मीरतु से औार पीरथीवी के व़नैला पसुन से संसार
९ के व़घन करे। औार जव़ उसने पांयवां छाप तोड़ा तव़ मैं ने
उनके आतमा के जे इसर के व़यन के लीये औार उस साप्पी
के लीये जे उनहों ने दी थी मारे गये यगव़ेदी के नीये देप्पा।
१० औार उनहों ने व़ड़े सव़द से पुकार के कहा की हे परभु पवीतर
औार सत तु कव़तों नयाय न करेगा औार हमारे लुघीर का
११ पलटा पीरथीवी के व़ासीयों से न लेगा। तव़ उन में से हर
प्रेक के सेत व़सतर दीया गया औार उनहें कहा गया की तुम
औार घोड़े लों व़ीसराम करो जव़ लों तुमहारे संगी सेवक औार
भाइ जे याहीये की तुमहारे समान मारे जावें संपुरन होवें।
१२ औार जव़ उसने छठवां छाप तोड़ा तव़ मैं ने दीनीसट की ते।
कया देप्पता ऊं की व़ड़ा भुयाल ऊआ औार सुरज व़ाल के
टाट की नाइं काला औार यंदरमा लुघीर के तुल हो गया।
१३ औार आकास के तारे प्रेस पीरथीवी पर गीर पड़े जैसे गुलर
का व़ीरीछ अपने असमय के गुलरों के जे परयंड आंघी से

१४ हीलाया गया है गीनावता है। और आकाश पतन के समान ऐकठे लपेटे गये और हन ऐक पहाड़ और हन ऐक टापु अपने
१५ अपने सथान से टल गया। और पीनथीवी के नाजाओं ने और महत लोगों ने और धन मानों ने और सेनापतीयों ने और सामनथी लोगों ने और हनऐक वंधायमान ने और हन ऐक नीनवंध पुनुष्प ने अपने के मांदों में और पहाड़ के पथनों की
१६ ओट में छीपाया। और पहाड़ों से और पथनों से कहने लगे की हम पन गीनो और हमको उसके सनुप से जो सींहासन पन
१७ वैठा है और मेमना के कनोघ से छीपा लेओ। कयांकी उसके महा कनोघ का दीन आ पहुंचा है और कैान ठहन सकता है।

७ सातवां पत्र।

१ और इन वसतुन के पीछे मैं ने पीनथीवी के यानों कोनों पन यान दुतों को पड़े देप्पा की पीनथीवी के यानों पवन को थामते थे ऐसा न हो की पवन पीनथीवी पन अथवा समुदन पन अथवा
२ वीनछों पन वहे। फीन मैं ने ऐक और दुत को सुनज के उदय से उठते देप्पा जीसके पास जीवते इसन का छाप था उसने वड़े सवद से उन यान दुतों को जीनहें यह दीया गया था की पीन-
३ थीवी और समुदन को सतावे यीला के कहा। जव लों हम अपने इसन के दासों के ललाटों पन छाप न कन लें तुम पीनथीवी
४ को और समुदन को और वीनछों को न सताना। और जीन पन छाप कीये गये थे मैं ने उनकी गीनती सुनी की इसनाइल
५ के संतानों में से ऐक सैा चवालीस सहसन छापे गये। यहुदा के कुल में से वानह सहसन छापे गये नोवीन के कुल में से वानह सहसन छापे गये जद के कुल में से वानह सहसन छापे गये।
६ असन के कुल में से वानह सहसन छापे गये नफतुली के कुल में से वानह सहसन छापे गये मनससे के कुल में से वानह सहसन
७ छापे गये। समउन के कुल में से वानह सहसन छापे गये लुइ के

कुल में से व्रानह सहसन छापे गये यूसाकन के कुल में से व्रानह
८ सहसन छाके गये। जव्रलुन के कुल में से व्रानह सहसन छापे
गये यूसफर के कुल में से व्रानह सहसन छ पे गये व्रनयमीन के
९ कुल में से व्रानह सहसन। इस के पीछे मैं ने ताका ते क्या
देष्पता ऊं की व्रड़ी मंडली जीसे कोइ गीन न सका हन ग्रेक
जात में से औान कुल औान लोग औान भाष्पा में से थे सेत व्रस-
तन पहीने ऊग्रे औान ष्पजुन की डालें हाथों में लीये ऊग्रे उस
१० सींहासन औान मेमना के आगे ष्पड़ी थी। औान व्रड़े सव्रद से
पुकान के कहती थी की नीसतान हमाने इसन से जो सींहासन
११ पन व्रैठा है औान मेमना से। औान समसत दुत जो उस सींहा-
सन के यानों ओान ष्पड़े थे औार वे पनायीन औान वे यानों जीवते
जंतु उस सींहासन के आगे औांधे गीन पड़े औान इसन की सतुत
१२ कनके। कहने लगे की आमीन घनव्राद औान महीमा औान
व्रुघ औान सतुत औान पनतीसठा औान पनाकनम औान सामनथ
१३ सनव्रदा हमाने इसन के लीये आमीन। औान उन पनायीनों
में से ग्रेक उतन देके मुझ को कहने लगा की वे जो सेत व्रसतन
१४ पहीने ऊग्रे हैं कैान हैं औान कहां से आये हैं। तव्र मैं ने कहा
की हे महासय तु जानता है तव्र उसने मुझे कहा की ग्रे वे हैं
जो व्रऊत कसट से नीकल आये हैं औान अपने व्रसतनों को
१५ घोया है औान उनहें मेमना के लोऊ से सेत कीया। इसी लीये
वे इसन के सींहासन के आगे हैं औान उसके मंदीन में नात
दीन उसकी सेवा कनते हैं औान वुह जो सींहासन पन व्रैठा है
१६ उनहों के मघ में नहता है। वे अव्र कभी भुष्पे न होंगे औान
न पीआसे होंगे औान सुनज औान कीसी नीत का घाम उन पन
१७ न पड़ेगा। कयोंकी मेमना जो सींहासन के मघ में है उनहें
यनावेगा औान उनहें जल के जीते सोता लों ले जायगा औान
इसन उनकी आंष्पों से समसत आंसुओं को वोंछेगा।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ और जब उसने सातवां छाप तोड़ा तब सरग पर एक आधी
२ घड़ी मौनता हुई। और मैं ने उन सात दूतों को जो ईश्वर
३ के आगे खड़े थे देखा की उन्हें सात तुरही दी गई। फेर एक
और दूत आया और सोने की धूपाउरी लिये हुए जगवेदी के
पास जा खड़ा हुआ और बहुत सा सुगंध उसे दीया गया की वुह
उसे सारे साधुन की प्रार्थना के संग उस सोने की जगवेदी पर
४ जो सिंहासन के आगे थी चढ़ावे। और उस सुगंध का धुआं
साधुन की प्रार्थना के संग दूत के हाथ से ईश्वर के आगे ऊपर
५ उठा। और उस दूत ने धुपाउरी को लीया और उसको जग
वेदी की आग से भरदीया और पिरथीवी पर उंडेला तब सबद
६ और गरजन और बीजली और भुंईडोल हुए। और सात
दूत जिन पास सात तुरही थी सबद करने पर सीध हुए।
७ और पहीले दूत ने सबद कीया तो लोहू से मीली हुई ओला
और आग हुई और पिरथीवी पर उंडेली गई और बीरछों की
८ तीहाई जल गई और समस्त हरी घास जलगई। फेर दूसरे
दूत ने सबद कीया और ऐसा हुआ जैसा महा परबत अगीन से
जलता हुआ समुद्र में फेंका गया और समुद्र की तीहाई लोहू
९ हो गई। और तीहाई जीवधारी जो समुद्र में थे मर गये
१० और तीहाई नावें नसट हुईं। फेर तीसरे दूत ने सबद कीया
तो सरग से एक बड़ा तारा दीपक सा जलता हुआ गीरा और
११ नदीयों की तीहाई पर और जल के सोतों पर गीरा। और
उस तारा का नाम नागदौना है और तीहाई पानी नागदौना
हो गये और बहुत से मनुष्य उन पानीयों से मर गये क्योंकी
१२ वे कड़वे हो गये थे। और फेर चौथे दूत ने सबद कीया और
तीहाई सूरज और तीहाई चंद्रमा और तीहाई तारे मारे
पड़े यहां लों की उनकी तीहाई अंधेरी हो गई और दीन की

१३ तीहाइ ग्रोन नातनी की भी पनगट न झइ। ग्रोन मैं ने देप्पा ग्रोन सनग के मच में ग्रेक दुत के उडते ग्रोन वड़े सवद से यह कहते सुना की तीन दुत जो तुनही का सवद कनने के नह गये हैं उन के सवद के लीये पीनथीवी के नीवासीयों पन संताप संताप संताप है।

९ नवां पनव।

१ फेन पांयवें दुत ने सवद कीया ग्रोन मैं ने देप्पा की सनग से ग्रेक ताना पीनथीवी पन गीना ग्रोन उस अथाह गड़हे की कुंजी
२ उसे दीइ गइ। ग्रोन उसने उस अथाह गड़हे के प्पोला ग्रोन उस गड़हे से वड़े भटे के घुग्रां सा घुग्रां उठा ग्रोन उस
३ गड़हे के घुग्रें से सुनज ग्रोन ग्राकास ग्रंघेने हो गये। ग्रोन उस घुग्रें में से पीनथीवी पन टीडीयां नीकलीं ग्रोन उन्हें वैसाही सामनथ दीया गया जैसा पीनथीवी के वीछु सामनथ नप्पते हैं।
४ ग्रोन उनहें यह कहा गया की पीनथीवी की घास ग्रथवा कोइ हनीयाली ग्रथवा कीसी वीनछ के न सतावें पनंतु केवल उन
५ मनुप्पन के जीनके ललाटों पन इसन का छाप नहीं है। ग्रोन उनहें दीया गया की वे उनके पनान से न मानें पनंतु की वे पांय महीने लों कसट पावें ग्रोन उनका कसट ग्रेसा था जैसे के
६ वीछु के डंक मानने से मनप्प के कसट होता है। ग्रोन उन दीनों में मनुप्प मीनतु ढुंढेंगे ग्रोन न पावेंगे ग्रोन मीनतु के ग्रभीलासी
७ होंगे ग्रोन मीनतु उनसे भागेगी। ग्रोन उन टीडीयों का सनुप उन घोड़ों की नाइं था जो जुघ के लीये लैस होवें ग्रोन उनके मसतकों पन सोने के मुकुट थे ग्रोन उनके मुह मनुप्प के मुंह
८ के से थे। ग्रोन उनके वाल इसतीनीयों के वाल के से ग्रोन उनके
९ दांत सींह के से थे। ग्रोन वे लोहे की झीलीम सी झीलीम नप्पते थे ग्रोन उनके पंप्पों का सवद गाडीयों का सा ग्रोन वहुत से घोड़े
१० लड़ाइ में झपटे जाते हैं। ग्रोन उनकी पुंछ वीछु की सी थीं

श्रौन उन की पुंछों में डंक थे श्रौन उनहें सामनथ था की पांच
११ महीने लों मनुष्पन को सतावें। श्रौन उनका ऐक नाजा था वुह
उस श्रथाह गड़हे का दुत था जीसका नाम हीव्रनी भाष्पा में
१२ श्रव्रदुन श्रौन युनानी में श्रपलुन है। ऐक संताप व्रीत गया
१३ श्रौन देष्पो श्रौन दो संताप श्राते हैं। फरेन छठवें दुत ने सव्रद
कीया श्रौन मैं ने सोने की व्रेदी के जो इसन के श्रागे थी यानों
१४ कोनों में से ऐक सव्रद सुना। जो छठवें दुत को जीसके पास
तुनही थी यह कहता था की उन यान दुतों को जो फनुनात
१५ की व्रड़ी नदी में व्रंद हैं ष्पोल दे। फरेन वे यानों दुत छुड़ाये
गये जो ऐक घड़ी श्रौन ऐक दीन श्रौन ऐक महीने श्रौन ऐक
१६ व्रनस में लैस थे की तीहाइ मनुष्पन को मान डालें। श्रौन घोड़
यढ़े गीनती में व्रीस कड़ोन थे श्रौन मैं ने उनकी गीनती यूं
१७ सुनी। श्रौन मैं ने उन घोड़ों का श्रौन उनके यढ़नेवालों को
यूं देष्पा की श्रगीन श्रौन नीलमन श्रौन गंघक के हीलीम
नष्पते थे श्रौन घोड़ों के सीन सींह के से थे श्रौन उनके मुंह से
१८ श्राग श्रौन घुएं श्रौन गंघक नीकलते थे। श्राग श्रौन घुएं श्रौन
गंघक इनहीं तीनों से जो उनके मुंह से नीकलते थे तीहाइ
१९ मनुष्प मानें गये। श्रौन उनके सामनथ उनके मुंह में श्रौन उनकी
पुछों में थे श्रौन उनकी पुंछ नाग की नाइं हैं श्रौन सीन नष्पते हैं
२० श्रौन उनसे वे सतावते हैं। श्रौन नहे ऊऐ मनुष्पन ने जो इन
मनीयों से मानें न गये श्रपने हाथों के कानजन से पसयाताप न
कीया वे पीसायों की श्रौन सोने नुपे श्रौन पीतल श्रौन पथन श्रौन
लकड़ी की मुनतीन की जो न देष्प सकतीं न सुन सकतीं न यल
२१ सकतीं हैं पुजा कनते हैं। श्रौन उनहों ने श्रपनी हतया श्रौन
टोना श्रौन छीनाला श्रौन योनीयों से पसयाताप न कीया।

१० दसवां पनव्र।

१ फरेन मैं ने ऐक श्रौन व्रलवान दुत सेघ को पहीने ऊऐ सनग से

उतरते देखा उसके सीर पर बारसीक धनुष था और उसका मुंह सुरज की नाईं और उसके पांव आग के खंभे के तुल्य
२ थे। और उसके हाथ में एक छोटी पोथी खुली हुई थी और उसने अपना दहीना पांव समुद्र पर और बायां पीरथीवी पर
३ धरा। और उसने महा सब्द से जैसे सींह गरजता है पुकारा और जब उसने पुकारा तब सात गरजन ने अपना अपना सब्द
४ कीया। और जब वे सात गरजन अपना अपना सब्द कर चुके मैं लीखने पर था और सरग से मुझ से कहते हुए मैं ने एक सब्द सुना जो की सात गरजन ने कहा है उन पर छाप कर और
५ मत लीख। तब उस दुत ने जीसे मैं ने समुद्र और पीरथीवी पर खड़ा देखा अपने हाथ को सरग के ओर उठाया।
६ और उसकी जो सरबदा लों जीवता है जीसने सरग को और सबको जो उस में हैं और पीरथीवी को और सब कुछ जो उस में हैं बनाया कीरीया खाके कहा की फेर समय न होगा।
७ परंतु सातवें दुत के सब्द करने के दीनों में जो तुरंत सब्द करने पर था ईसर का भेद जैसा उसने अपने दास आगमगयानीयों
८ पर मंगलसमाचार को परगट कीया पुरा होगा। और उस सब्द ने जीसे मैं ने सरग से सुना फेर मुझ से कहीके बोला की उस दुत के हात से जो समुद्र और पीरथीवी पर खड़ा है
९ खुली हुई छोटी पोथी ले ले। तब मैं ने उस दुत क पास जाके उसे कहा की छोटी पोथी मुझे दीजीये तब उसने मुझे कहा की ले और इसे खा जा और वुह तेरे ओदर को कड़वा कर देगी
१० परंतु तेरे मुंह में मधु के ऐसी मीठी होगी। तब मैं ने वुह छोटी पोथी उस दुत के हाथ से ली और उसे खा गया और वुह मेरे मुंह मे मधु के ऐसी मीठी थी परंतु जब मैं ने उसे खा
११ लीया मेरा ओदर कड़वा हो गया। और उसने मुझे कहा अवस है की तु लोगों के और जात के और भाखाओं के और राजाओं के आगे आगम फेर कहे।

११ गयानहवां पनव।

१ फरेन छड़ी क समान ऐक नल मुझे दीया गया ओन वुह दुत
खड़ा होके कहता था की उठ ओन इसन के मंदीन को ओन
जगवेदी को ओन उनको जो उस में पनानथना कनते हैं नाप।
२ पनंतु उस आंगन को जो मंदीन से व़ाहन है छोड़ दे ओन
उसे मत नाप कयोंकी वुह अनदेसीयों को दीया गया है ओन
३ वे उस पवीतन नगन को व़यालीस महीने लों लताड़ेंगे। ओन
मैं अपने दो साख्खीयों को सकती देउंगा ओन वे टाट पहीन के
४ ऐक सहसन दो सौ साठ दीन लों आगम कहेंगे। ये वे दो
जलपाइ के व़ीनछ ओन दो दीवट हैं जो पीनथीवी के इसन के
५ आगे खड़े हैं। ओन यदी कोइ उनहें संतावे तो उनके मुंह से
आग नीसलेगी ओन उनके सतनुन को भछन कनलेगी ओन
यदी कोइ उनहें संतावे अवस है की वुह उस नीत से माना
६ जावे। ये सामनथ नख्ते हैं की सनग को व़ंद कनें यहां लों की
उनके आगम कहने के दीनों में पानी न व़नसेगा ओन पानीयों
पन सामनथ नख्ते हैं की उनहें लोहू व़ना डालें ओन जव़ जव़
याहें तव़ तव़ पीनथीवी को हन पनकान की मनी से मानें।
७ ओन जव़ वे अपनी साख्खी पुनी कन युकेंगे वुह व़नैला पसु जो उस
अथाह गड़हे से नीकलता है उनसे जुध कनेगा ओन उनहें जीते
८ गा ओन उनहें मानडालेगा। ओन उनकी लोथें व़ड़े नगन की
हाट में पड़ी नहेंगी जो आतमीक से सदुम ओन मीसन कहावता
९ है जीस में हमाना पनभु भी कुनुस पन खींया गया। ओन
लोग लोग ओन कुल कुल ओन भाखा भाखा ओन जात जात
उनकी लोथों को साढ़े तीन दीन लों देख्खेंगे ओन उनकी लोथों
१० को समाधीन में नख्ने न देंगे। ओन पीनथीवी के व़ासी उन
पन मगन होंगे ओन आनंद कनेंगे ओन ऐक ऐक को व़ैना
भेजेंगे कयोंकी ये दो आगमगयानीयों ने पीनथीवी के व़ासीयों

११ को सनाया। श्रीन साढ़े तीन दीन के पीछे छीवन का आतमा इसन के श्रोन से फेन उन में पनवेस कीया श्रीन वे अपने पांश्रों पन प्पड़े हो गये तव् जीनहों ने उनहें देप्पा उन पन वड़ा त्रय
१२ पड़ा। श्रीन उनहों ने सनग से येक महा सव्द उनहें कहते सुना की इघन उपन आश्रो तव् वे मेघ पन सनग को उठ गये श्रीन
१३ उनके सतनुन ने उनहें देप्पा। फेन उसी घड़ी वड़ा मुंइडोल ऊश्रा श्रीन उस नगन का दसवां भाग गीन पया श्रीन उस मुंइडोल से सात सहसन मनुप्प मानें पडे श्रीन व्ये ऊए डन गये श्रीन
१४ सनग के इसन की महीमा की। दुसना संताप व्रीत गया देप्पो की
१५ तीसना संताप तुनंत आवता है। तव् सातवें दुत ने सव्द कीया श्रीन सनग में व्डे व्डे सव्द कहने लगे की इस जगत के समसत नाज हमाने पनभु श्रीन उसके मसीह का ऊश्रा श्रीन वुह सनव्दा
१६ श्रीन सनव्दा नाज कनेगा। श्रीन यौव्रीस पनायीन जो अपने सींहासन पन इसन के आगे व्ठे थे श्रौंधे मुंह गीने श्रीन यह
१७ कहके इसन की पुजा की। हे पनभु इसन सनव् सामनथी जो है श्रीन था श्रीन आवने पन है हम तेनी सतुत कनते हैं की तु
१८ ने अपना व्डा सामनथ ले लीया श्रीन नाज कीया है। श्रीन समसत जात कनोघी थीं श्रीन अव् तेना कोप आया श्रीन समय पऊंया की मीनतकन का नयाय कीया जाय श्रीन तु अपने दास आगमगयानीयों श्रीन सीघों को श्रीन उनको जो तेने नाम से डनते हैं कया छोटे कया व्डे फल देवे श्रीन उनको जो पीन-
१९ थीव्री को नास कनते हैं नास कने। श्रीन इसन का मंदीन सनग में प्पुल गया श्रीन उसके मंदीन में उसके नीयम की संदुक दीप्पाइ दी श्रीन व्रीजलीयां सव्द श्रीन गनजन श्रीन मुइंडोल श्रीन व्डे श्रोले ऊए।

१२ व्रानहवां पनप।

१ श्रीन सनग में येक व्डा आसयनज दीप्पाइ दीया की येक

इसतीनी सुनज से व्रीम्रसीत औान यंदनमा उसके पांओं तके
२ औान उसके सोन पन व्रानह तानों का सुकुट। औान वुह गनभीनी
होके जंने के कसट में पड़के यीलाइ औान उस पन जंने की
३ पीड़ा ऊइ। औान देष्पो की एक औान व्रड़ा आसयनज की एक
व्रड़ा लगीनी अजगन जीसके सात सीन औान दस सींग औान सात
४ सुकुट उसके सीनों पन थे सनग में दीष्पाइ दीया। औान उसकी
पुंछ ने सनग के तीहाइ तानों को ष्पींयलीया औान उनहें पीन-
थीवी पन डाल दीया औान वुह अजगन उस इसतीनी के आग
जो जंने पन थी ला ष्पड़ा ऊआ की जव्र वुह जने ता उसके
५ व्रये को भछन कने औान वुह पुनुष्प व्रालक जनी जो समसत
जातों पन लाहे की छड़ी लेके पनभुता कनने को था औान उस
का लड़का इसन के अनथात उसके सींहासन के आगे उठाया
६ गया। औान वुह इसतीनी व्रन में जहां इसन ने उसके लीये
सथान ठीक कीया था भाग गइ जीसतें वुह वहां व्रानह सैा साठ
७ दीन लों पनतीपाल पावे। औान सनग में संगनाम ऊआ मीका-
इल औान उसके दुतों ने उस अजगन से संगनाम कीया औान
८ अजगन ने औान उसके दुतों ने उनहों से संगनाम कीया। तीस
पन भी वे जीत न सके औान उनके लीये सनग में आगे को
९ सथान न नहा। औान यूं वुह व्रड़ा अजगन नीकाला गया वही
पुनाना सांप जीसका नाम इव्रलीस औान सैतान है जो समसत
जगत को छल देता है पीनथीवी पन गीनाया गया औान उसके
१० दुत भी उसके संग गीनाये गये। फेन मैं ने सनग में एक व्रड़ा
सव्रद यह कहते सुना की अव्र उधान औान पनाकनम औान
हमाने इसन का नाज औान उसके मसीह का सामनथ आया
कयोंकी हमाने भाइयों का दोष्प दायक जो हमाने इसन के
११ आगे नात दीन उन पन दोष्प देता था गीनाया गया। औान
उनहों ने मेमना के लोऊ से औान अपनी साष्पी के व्रयन से उसे
जीता औान उनहों ने अपने पनानों को मीनतु लों पीआन न

१२ कीया। इस कानन तुम हे सनग और तुम जो उन में नहते हो आनंद कनो संताप पीनथीवी के और समुदन के वासीयों पन इस लीये की सैतान वड़े कनोध से तुम पन उतना की वुह
१३ जानता है की मेना समय थोड़ा है। और जव उस अजगन ने देष्या की पीनथीवो पन गीनाया गया तो उसने उस इसतीनी
१४ को जो पुनुष्य वालक जनी थी सताया। और उस इसतीनी को वड़े गीध के दो पंष्य दीये गये जीसतें वुह अजगन के सनमुष्य से वन को अपने सथान लों उड़ जाय जहां वुह ऐक समय और समयों और आधा समय लों उस नाग के सनमुष्य से पन-
१५ तीपाल पावे। फेन उस नाग ने अपने मुंह से पानी नदी के समान उस इसतीनी के पीछे वहाया जीसतें वुह उसको धाना
१६ से लीवा जाय। और पीनथीवी ने उस इसतीनी का सहाय कीया की पीनथीवी ने अपना मुंह ष्योला और उस वाढ़ को
१७ जो अजगन ने अपने मुंह से वहाया था पीलीया। और वुह अजगन इसतीनी पन कनोधीत ज्ञआ और चला गया की उसी के नहे ज्ञऐ वंस से जो इसन की अगया मानते हैं और यसु मसीह की साष्पी नष्पते हैं जुध कने।

१३ तेनहवां पनव।

१ और मैं ने समुदन के वालु पन ष्पड़ा होके ऐक वनैले पसु को समुदन से नीकलते ज्ञऐ देष्पा जीसके सात सीन और दस सींग थे और उसके सींगों पन दस मुकुट और उसके मसतकों पन
२ इसन की अपनींदा का नाम। और वुह पसु जो मैं ने देष्पा चीता के समान था और उसके पांव भालुक के से और उसका मुंह सींह के मुंह के समान और उस अजगन ने अपना सामनथ
३ और अपना सींहासन और महा पनाकनम उसे दीया। और मैं ने उसके ऐक सीन पन मीनतु के घाव की नाइं देष्पा और तथापी उसका मानु घाव चंगा हो गया और समसत पीनथीवी

४ उस व्रनैले पसु के पीछे ष्पासय्यनज कनती थी। ष्पौन वे उस ष्पजगन की जीसने उस व्रनैले पसु को ष्पपना पनाकनम दीय़ा पुजा कनके व्रोले कौन इस पसु के समान है कौन उस से लड़
५ सकता है। ष्पौन उसे प्रेक मुंह व्रड़ी व्रोली व्रोलने को ष्पौन इसन की ष्पपनींदा कनने को दीय़ा गय़ा ष्पौन उसे सामनथ
६ दीय़ा गय़ा की व्रय़ालीस महीने जुध कने। ष्पौन उसने ष्पपने मुंह को व्रीनोच में इसन की ष्पपनींदा में प्पोला की उसके नाम की ष्पौन उसके सथान की ष्पौन उनहों की जो सनग में नहते
७ हैं नींदा कने। ष्पौन उसे दीय़ा गय़ा की सीधों से जुध कने ष्पौन उनहें जीते ष्पौन समसत कुल ष्पौन भाप्पा ष्पौन जात पन
८ उसे पनाकनम दीय़ा गय़ा। ष्पौन पीनथीवी के समसत व्रासी जीनके नाम उस मेमना के जो जगत के ष्पानंभ से व्रलीदान कीय़ा गय़ा जीवन की पोथी में लीप्पे नहीं गय़े उसकी पुजा
९।१० कनेंगे। य़दी कीसी के कान होवें तो सुने। जो व्रंधुष्पाइ को लीय़े जाता है सो व्रंधुष्पाइ में पड़ेगा ष्पौन जो प्पड़ग से मानता है वही प्पड़ग से माना जाय़गा सीधों का संतोप्प ष्पौन
११ व्रीसवास य़हां है। फेन मैं ने प्रेक ष्पौन पसु को पीनथीवी से उठते देप्पा जो मेमना की नाइं दो सींग नप्पता था पनंतु
१२ ष्पजगन की नाइं व्रोलता था। ष्पौन वुह पहीले पसु के समसत पनाकनम को उसके ष्पागे पनगट कनता है ष्पौन पीनथीवी से ष्पौन उसके व्रासीय़ों से पहीले पसु की जीसका मानु घाव चंगा
१३ हुष्पा पुजा कनावता है। ष्पौन वुह व्रड़ा ष्पासय्यनज दीप्पावता है य़हां लों की वुह मनुप्पन के ष्पागे सनग से पीनथीवी पन
१४ ष्पाग व्रनसावता है। ष्पौन उन ष्पासय्यनजों से जो उसे दीय़े गय़े की उस पसु के ष्पागे दीप्पावे पीनथीवी के नीवासीय़ों को छल देता है की पीनथीवी के नीवासीय़ों को ष्पगय़ा कनता है की उस पसु की जीसको प्पनग का घाव था ष्पौन जीय़ा मुनत
१५ व्रनाष्पो। ष्पौन उस में सामनथ था की उस पसु की मुनत को

सास देवे की उस पसु की मुनत वृात यीत कने ग्रैान उन सभों
को जो उस पसु की मुनत को दंडवत न कनें घात कनवावे।
१६ ग्रैान कया छोठे कया व्रड़े कया धनवान कया कंगाल कया
नीनवृंध कया वृंधापमान सवृके दहीने हाथ ग्रैान कपालों पन
१७ प्रेक यीनह लेने कनावता है। ग्रैान की कोइ मनुप्प न मोल
ले सके न व्रेय सके केवल वुही जीस में वुह यीनह ग्रथवा उस
१८ पसु का नाम ग्रथवा उसके नाम की गीनती हो। गयान ग्रहां
है वुह जो गयानमान है पसु की गीनती को गीने कयोंकी वुह
प्रेक मनुप्प की गीनती है ग्रैान उसकी गीनती छः सै। छीग्रा-
सठ है।

१४ यौादहवां पनवृ।

१ फरेन मैं ने दीनीसट की तो कया देप्पता ऊं की प्रेक मेमना
सीऊन के पहाड़ पन प्पड़ा था ग्रैान उसके संग प्रेक लाप्प
यवालीस सहसन जीनके कपालों पन उसके पीता का नाम
२ लीप्पा था। ग्रैान मैं ने सनग में से प्रेक सवृद सुना जैसा व्रऊत
पानीग्रों का सवृद ग्रैान जैसा महा गनजन का सवृद ग्रैान मैं ने
३ वृीना के वृजानेवालो का सवृद सुना। ग्रैान वे सींहासन के
ग्रागे ग्रैान उन यान जीवते जंतुन ग्रैान पनायीनों के ग्रागे
जैसा प्रेक नये नाग गानहे थे ग्रैान कोइ उन प्रेक लाप्प यवा-
लीस सहसन को छोड़ जो पीनथीवी से मोल लीये गये थे उस
४ गीत को नहीं सीप्प सकता था। ग्रे वे हैं जो इसतीनीग्रों के संग
ग्रसुध न ऊप्रे की वे कुमान हैं ग्रे वे हैं जो मेमना के पीछे जहां
कहीं वुह जाता है जाते हैं ग्रे इसन के ग्रैान मेमना के लीग्रे
५ पहीले परल होके मनुप्पन में से मोल लीग्रे गये हैं। ग्रैान उनके
मुंह में छल न पाया गया कयोंकी वे इसन के सींहासन के ग्रागे
६ नीनदोप्प हैं। ग्रैान मैं ने दुसने दुत को सनग के मध में से जो
सनवृदा का मंगल समायान लीग्रे ऊप्रे उड़ नहा था देप्पा की

पीरथीवी के नीवासीयों के और लोगों के बीच उपदेस करके।
७ बड़े सबद से कहता था की ईसर से डरो और उसकी महीमा
करो। क्योंकी उसके नयाय की घड़ी आई और जीसने सरग
और पीरथीवी और समुदर और पानी के सोते उतपंन कीये
८ उसकी पुजा करो। और उसके पीछे एक दुसरा दुत आके यों
बोला की बाबुल वह बड़ी नगरी गीर पड़ी गीर पड़ी क्योंकी
उसने अपने बेभीचार के करोध की मदीरा सब जाती को
९ पीलाई। फेर एक तीसरा दुत उनके पीछे एक बड़े सबद के
साथ आके बोला की यदी कोई उस पसु और उसकी मुरत की
पुजा करे और उसके चीनह अपने कपाल में अथवा अपने हाथ
१० पर लेवे। वही ईसर के करोध की नीराली मदीरा जो उसके
करोध के कटोरे में भरी गई पीयेगा और वुह पवीतर दुतों के
११ और मेमना के आगे अगीन और गंधक में पीड़ा पावेगा। और
उनकी पीड़ा का धुआं सरबदा उठता रहता है और उनको जो
उस पसु और उसकी मुरत की पुजा करते हैं और उनको जो
उसके नाम का चीनह लीये हैं रात दीन कभी बीस्राम नहीं
१२ पावते। सीधों का संतोष यहां है ये वे हैं जो ईसर की आग्या
१३ और यीसु के बीस्वास को लीये रहते हैं। फेर मैं ने सरग
से एक सबद मुझ से कहते हुए सुना की लीख धंन वे मीरतक
जो अब से परभु में मरते हैं आतमा कहता है हां की वे अपने
परीसरमों से चैन पावते हैं और उनके कारज उनके पीछे पीछे
१४ चले आवते हैं। फेर मैं ने दीरीसट की तो क्या देखता हुं
की एक सेत मेघ और उस मेघ पर कोई मनुष्य के पुतर के
ऐसा बैठा था जीसके सीर पर सोने का मुकुट और हाथ में एक
१५ चोखा हंसुआ था। और एक और दुत मंदीर से बड़े सबद
से उसको जो मेघ पर बैठा था पुकारते हुए नीकया की
अपना हंसुआ लगा और काट क्योंकी तेरे लवने का समय
१६ आन पहुंचा की पीरथीवी की खेती पकी है। और उसने जो

मेघ पन व्रैठा था अपना हंसुआ पीनथीवी पन घना ग्रैान पीन-
थीवी लवी गइ। फेन प्रेक ग्रैान दुत मंदीन से जो सनग में
१८ है नीकला उस पास प्रेक चोप्पा हंसुआ था। ग्रैान प्रेक ग्रैान
दुत जीसका पनाकनम आग पन था जगव्रेदी से नीकला उसने
उसको जीस पास चोप्पा हंसुआ था व्रड़े सव्रद से पुकान के कहा
की अपना चोप्पा हंसुआ लगा ग्रैान पीनथीवी के दाप्प के गुछों
१९ को काट की उसके दाप्प पक चुके। फेन उस दुत ने अपना
हंसुआ पीनथीवी पन घना ग्रैान पीनथीवी के दाप्प को काटा
ग्रैान इसन के कनोघ के दाप्प के व्रड़े कोलङ्ग में डाल दीया।
२० ग्रैान वुह दाप्प का कोलङ्ग नगन के व्राहन नैांदा गया ग्रैान
उस दाप्प के कोलङ्ग से लोङ्ग प्रेक सहसन छः सै नल के घंट
कल प्रैसा व्रहा की घोड़ों के व्राग लों पङ्गंया।

१५ पंदनहवां पनव्र।

१ फेन मैं ने प्रेक ग्रैान व्रड़ा आसयनज लछन सनग में देप्पा की
सात दुत जीसके पास पीछली सात मनी थीं इस कानन की
२ उनहों में इसन का कनोघ संपुनन होने पन था। ग्रैान मैं ने
देप्पा जैसा की कांच का समुदन आग से मीला ङ्गआ ग्रैान वे
जो उस पसु ग्रैान उसके मुनत ग्रैान उसके चीनह ग्रैान उसके
नाम की गीनती पन जय़ पाये थे उस कांच के समुदन पन इसन
३ की व्रीनाओं को लीये ङ्गप्रे प्पडे थे। ग्रैान वे इसन के सेवक
मुसा की गीत ग्रैान मेमना की गीत यह कहते ङ्गप्रे गाते थे की
महान ग्रैान आसयनज तेने कानज हे पनभु इसन सनव्र-
सामनथी तेने मानग सचे ग्रैान ठीक हैं हे साधुन के नाजा।
४ हे पनभु कौन तुझ से न डनेगा ग्रैान तेने नाम की महीमा न
कनेगा कयोंकी तु अकेला पवीतन नीसचय़ समसत लोग आवेंगे
ग्रैान तेने आगे पुजा कनेंगे कयोंकी तेने जथानथ व्रीचान पन-
५ गट कीये गये हैं। ग्रैान इसके पीछे मैं ने दौनीसट की तो

वह्या देष्पता ऊं की साप्पी के तंवु का मंदीन सनग में प्पोला
६ गय़ा। श्रोन वे सात दुत जो उन सात मनी को लोये ऊपे घे
पावन श्रोन यमकता ऊश्रा व्रसतन पहीने ऊपे श्रोन सोने का
७ पटुका छाती पन लपेटे ऊपे मंदीन से नीकल श्राये। श्रोन उन
यान जंतुन में से प्रेक ने सोने की सात कटोनीय़ां नीत जीवते
८ इसन के कोप से भनी ऊइ उन सात दुतें को दीय़ा। श्रोन
वुह मंदीन इसन के प्रैसनय़ श्रोन उसके सामनथ के कानन धुप्रें
से भन गय़ा श्रोन जव्र लों उन सात दुतें की सात मनी संपुनन
न ऊइ कोइ उस में पनवेस न कनसका।

१६ सोलहवां पनव्र।

१　फेन मैं ने मंदीन से प्रेक व्रड़ा सव्रद सुना जो उन सात दुतें
से कहता था की जाश्रो श्रोन इसन के कोप की उन कटोनीय़ें
२ को पीनथीवी पन उंडेलो। सो पहीला तो यला गय़ा श्रोन
श्रपनी कटोनी को पीनथीवी पन उंडेला सो उन मनुप्पन पन
जो उस पसु का यीनह नप्पते थे श्रोन उन पन जो उसकी मुनत
की पुजा कनते थे श्रती वुना श्रोन पीड़ादाय़क घाव पड़ा।
३ फेन दुसने दुत ने श्रपनी कटोनी समुदन पन उंडेली श्रोन वह
मने मनुप्य के लोऊ सा हो गय़ा श्रोन हनप्रेक जीवता पनान
४ समुदन में का मनगय़ा। फेन तीसने दुत ने श्रपनी कटोनी
नदीय़ें में श्रोन पानी के सोतें में उंडेली श्रोन वे लोऊ होगये।
५ श्रोन मैं ने सुना की पानीय़ें के दुत ने कहा हे पनभु जो है श्रोन
था श्रोन होगा तु जथानथ है कय़ोंकी तु ने यें व्रीयान कीय़ा
६ है। कय़ोंकी उनहें ने सोघें श्रोन श्रागमगय़ानीय़ें का लोऊ
व्रहाय़ा है सो तु ने उनहें लोऊ पीने को दीय़ा कय़ोंकी वे जोग
७ हैं। फेन मैं ने दुसने को व्रगव्रेदी में से य़ह कहते सुना हां हे
पनभु इसन सनव्र सामनथी तेने व्रीयान सये श्रोन जथानथ हैं।
८ फेन योथे दुत ने श्रपनी कटोनी सुनज पन उंडेली श्रोन उसे

९ सामरथ दीया गया की मनुष्यन को आग से झुलसावे। और मनुष्य महाताप से झुलस गये और उनहों ने इसर के नाम की जो उन मरीओं पर सामरथ रख्ता है अपनींदा की और पस
१० याताप न कीया की उसकी महीमा करे। फेर पांचवें दुत ने उस पसु के सींहासन पर अपनी कटोरी उंडेली और उसका राज अंधकार हो गया और उनहोंने मारे पीड़ा के अपनी
११ जीभ यबाई। और अपनी पीड़ा और घाओं के कारन सरग के इसर की अपनींदा की और अपने कारजन से पसयाताप
१२ न कीया। फेर छठवें दुत ने अपनी कटोरी महा नदी फुरात में उंडेली और उसका पानी सुख गया जीसतें पुरव के राजाओं
१३ के लीये मारग बनाया जाय। फेर उस अजगर के मुंह से और उस पसु के मुंह से और उस झुठे आगमगयानी के मुंह से मेंढुकों की नाई मैं ने तीन अपवीतर आतमा को नीकलते
१४ देख्या। कयोंकी ये आसयरज दीख्यानेवाले पीसाचों के आतमा हैं जो पीरथीवी के राजाओं के पास और समसत जगत में जाते हैं की उनहें सरबसामरथी इसर के महा दीन के जुध के लीये
१५ एकठा करें। देख मैं चोर की नाई आवता हुं धंन वुह जो जागता है और अपने बसतरों की चौकसी करता है न हो की
१६ वुह नंगा फीरा करे और लोग उसकी लजा देखें। फेर एक सथान में जो हीबरी भाख्या में अरमगदुन कहावता है उस
१७ ने उनको एकठा कीया। फेर सातवें दुत ने अपनी कटोरी आकास में उंडेली तब सरग के मंदीर के सींहासन से एक महा
१८ सबद यह कहते हुए नीकला की हो चुका। तब सबद होने लगे और गरजने लगे और चौकने लगे और महान और बड़ा भुइंडोल हुआ की जब से मनुष्य पीरथीवी पर हुए ऐसा बड़ा
१९ भुइंडोल न हुआ था। और वुह बड़ी नगरी तीन भाग हो गई और भीन देसीओं के नगर गीर गये और बड़ी बाबुल इसर के आगे समरन की गई की उसे अपने कोप के अतयंत जल

२० जबजलाहट की मदीना की कटोनी देवे। तव्र हन प्रेक टापु
२१ भाग गया श्रीन परेन पहाड़ न पाप्रे गये। श्रीन सनग से
मनुष्पन पन मन मन भन के व्राेह्र के श्राेले पड़े श्रीन मनुष्पन
ने श्राेलों की मनी से इसन की अपनींदा की कयोंकी उसकी
मनी अतयंत व्रड़ी थी।

१७ सतनहवां पनव्र।

१ श्रीन उन सात दुतों में से जीन पास सात कटोनीयां थीं प्रेक
श्राके मुह्र से व्रातयीत कनके कहने लगा की श्रा मैं तुह्रे उस
व्रड़ी व्रेसवा का जो व्रक्रत से पानीयों पन व्रैठी है दंड दीप्पा
२ उंगा। जीसके संग पीनथीवी के नाजाश्रों ने व्रैभीयान कीया है
श्रीन जीसके व्रैभीयान की मदीना से पीनथीवी के व्रासी मतवाले
३ ऊप्रे हैं। सो वुह मुह्रे श्रातमीक नीत से व्रन में ले गया श्रीन
मैं ने प्रेक इसतीनी को लाल व्रनैला पसु पन व्रैठी देप्पा जो
इसनापनींदक नामों से भना था उसके सात सीन श्रीन दस सींग
४ थे। श्रीन वुह इसतीनी व्रैंजनी श्रीन लाल व्रसतन पहीने थी
श्रीन सोने श्रीन नतन श्रीन मोतीयों से व्रीभुसीत थी श्रीन प्रेक
सोने का कटाेना घीन से श्रीन अपने व्रैभीयान की अपवीतनता
५ से भना ऊश्रा अपने हाथ में लीये थी। उसके कपाल पन प्रेक
नाम लीखा था नीगुढ़ भेद व्रड़ी व्राव्रलुन व्रेसवाश्रों की श्रीन
६ पीनथीवी की घीन हटों की माता। श्रीन मैं ने देप्पा की वुह
इसतीनी साधुन के लोह्र से श्रीन यसु के साप्पीयों के लोह्र से
मतवाली हो नही थी श्रीन उसका देप्पकन मैं व्रड़े व्रीसमय से
७ व्रीसमीत हो गया। तव्र उस दुत ने मुह्रे कहा तु कयों अयंभा
कनता है मैं उस इसतीनी का श्रीन उस पसु का भेद जीसके सात
८ सीन श्रीन दस सींग हैं तुह्र से कऊंगा। वुह पसु जो तु ने देप्पा
सो था श्रीन अव्र नहीं है श्रीन उस अथाह गड़हे से नीकलेगा
श्रीन व्रीनासता में जायगा श्रीन पीनथीवी के व्रासी जीनके नाम

जगत के आनंभ से जीवन के पुसतक में नहीं लीष्पे हैं उस पसु को देष्पकन जो था ओान नहीं है तथापी है अयंभा कनेंगे।
९ जो बुध की गयान नष्पती है यह है वे सात सीन सात पहाड़
१० हैं जीन पन वुह इसतीनी बैठी है। ओान सात नाजा हैं पांच तो गीन गये ऐक है ओान दुसना अवलों नहीं आया ओान ज . वुह
११ आवेगा तव थोड़े समय लों उसका नहना होगा। ओान वुह पसु जो था ओान अव नहीं वही आठवां है ओान उन सातों में
१२ से है पनंतु नासता में जाता है। ओान दस सींग जो तु ने देष्पे दस नाजा हैं जीनहों ने नाज अवलों न पाया पनंतु उस पसु के
१३ संग ऐक घड़ी भन नाजाओं के ऐसा पनाकनम पावते हैं। इन सभों का ऐकही मन है ये अपने पनाकनम ओान सामनथ उस
१४ पसु को देंगे। वे मेमना से जुध कनेंगे ओान मेमना उनहें जीतेगा कयोंकी वुह पनभुओं का पनभु ओान नाजाओं का नाजा है ओान वे जो उसके संग हैं सव वुलाये गये ओान चुने गये ओान
१५ वीसवास से भने ऊऐ हैं। फेन उसने मुझे कहा वे पानी जीनहें तु ने देष्पा जीन पन वुह वेसवा बैठी है लोग ओान मंडली ओान
१६ जात ओान भाष्पा हैं। ओान उस पसु के दस सींग जो तु ने देष्पे उस वेसवा से वीनोाध कनेंग ओान उसे उजाड़ ओान नंगी कनेंगे
१७ ओान उसका मांस ष्पायेंगे ओान उसे आग से जलावेंगे। कयोंकी इसन ने उनके अंतःकननों में डाला की उसकी आगया को वजा लावें अनथात ऐकही वीचान को पुना कनें ओान अपने नाज उस पसु को देवें जव लों की इसन के वचन संपुनन न होवें।
१८ ओान वुह इसतीनी जीसे तु ने देष्पा वुह वड़ी मगनी है जो पीनथीवी के नाजाओं पन नाज कनती है।

१८ अठानहवां पनव।

१ इसके पीछे मैं ने ऐक दुत को वड़े पनाकनम के संग सनग से उतनते देष्पा ओान पीनथीवी उसकी महीमा से पनकास होगई।

२ और उसने पराक्रम के बड़े शब्द से पुकार के कहा की बड़ी
ब बबुन गीनपड़ी गीनपड़ी और अब पीसाचें का नीवास और
अपवीतर आतमा का गढ़ और हर एक अपवीतर और नींदीत
३ पछीओं का पींजरा झई। क्योंकी उसने सब जातों को अपने
बैभीचार के क्रोध की मदीरा पीलवाई और पीरथीवी के राजा-
ओं ने उसके संग बैभीचार कीया और पीरथीवी क बैपारी
४ उसके भोगबीलास की अधीकाई से धनी झए। फेर मैं ने एक
और आकासबानी यह कहते सुनी की हे मेरे लोगो उस में से
बाहर आओ जीसतें तुम उसके पापों के भागी न होओ और
५ उसकी मरीयों में से कुछ न पाओ। क्योंकी उसके पाप सरग लों
पझंच गये हैं और उसके अधम करम ईसर के आगे समरन के
६ लीये आये हैं। जैसा उसने तुम से बेवहार कीया तुम भी उस से
वैसाही बेवहार करो और उसे उसके करम के समान दुना
पलटा देओ उस कटोरे में जीसे उसने मीलाया है दुना मीला
७ देओ। जीतना उसने अपने को बढ़ाया है और भोग बीलास में
रही है उतनाही उसको पीड़ा और सोक देओ क्योंकी वुह
अपने मन में कहती है की मैं रानी की नाईं बैठी झं और
८ बीधवा नहीं झं और सोक को न देखुंगी। सो उसकी मरी
एक दीन आवेगी अरथात मीरतु और बीलाप और काल
और वुह आग से जलाई जायगी क्योंकी परभु ईसर जो उसका
९ बीचार करता है सामरथी है। और पीरथीवी के राजा
जीनहों ने उसके संग बैभीचार और भोगबीलास कीया है
उसके जलने का धुआं देख के रोवेंगे और बीलाप करेंगे।
१० और उसके कलेस के डरके मारे दुर खड़े झए कहेंगे हाय हाय
वुह बड़ी नगरी बाबुल बलवंती नगरी क्योंकी घड़ी भर में
११ तेरा दंड बीचार आ पझंचा है। और पीरथीवी के बैपारी
उसके लीये बीलाप और सोक करेंगे क्योंका अब कोई उनका
१२ बैपार मोल नहीं लेता। सोना और रुपा और बझमोल की

मनी ओर मोती ओर मेहीन कपड़ा ओर वैंजनी ओर चीकनी
ओर लाल वसतन ओर हन ऐक सुगंध कासठ ओर हाथीदांत
के पातन ओर समसत पनकान के बहुमोल कासट के पातन
ओर पीतल ओर लोहे ओर मनमन के समसत पनकान के
१३ पातन। ओर दानु चीनी ओर सुगंध ओर मुन ओर लुवान
ओर मदीना ओर तेल ओर चोप्पा पासान ओर गोहूं ओर
पसु ओर भेड़ें ओर घोड़े ओर नथ ओर दास ओर मनुप्पन
१४ के पनान हैं। ओर तेने मन के अभीलास के फल तुझ से अलग
हो गये हैं ओर सानी अछी अछी ओर भड़कीली वसतें तुझे
१५ छोड़ गइं ओर तु उनको फेन कभी न पायेगी। इन वसतुन
के वैपानी लोग जो उसके कानन घनी बने थे उसके कसट के डन
१६ के माने दुन प्पड़े नहीके नोयेंगे ओर वीलाप कनेंगे। ओर
कहेंगे की हाय हाय वुह बड़ी नगनी जो मेहीन वसतन ओर
वैंजनी ओर लाल वसतन से वीभुसीत थी ओर सोने ओर बहु
१७ मोल के मनी ओर मोतीयों से सवांनी गइ थी। कयोंकी यह
समसत घन घड़ी भन में नसट हो गये हैं ओर हन ऐक मांझी
ओर सानें जहाज के हन ऐक लोग ओर डांडी ओर जोतने की
१८ समुदन पन वैपान कनते हैं दुन प्पड़े नहे। ओर उसके जलने
का घुआं उठते देप्पकन पुकाना की उस बड़ी नगनी के समान
१९ कौनसी है। ओर उनहों ने अपने सीनों पन घुल उड़ाइ ओर
नोते पीटते ओर वीलाप कनते यों पुकान उठे हाय हाय ऐसी
बड़ी नगनी जीस की उठान की बहुताइ से सब जो समुदन में
जहाज नप्पते थे घनी हो गये कयोंकी घड़ी भन में वुह उजड़
२० गइ। हे सनग ओर पवीतन पनेनीतो ओर आगमगयानीयो
उस पन आनंद कनो कयोंकी तुमहाने लीये इसन ने उस पन
२१ दंड की आगया दीइ हैं। फेन ऐक बलवान दुत ने ऐक पथन
बड़ी चकी के पाट की नाइं उठाया ओर समुदन में यह कहीके
फेंका की बाबलुन वुह बड़ी नगनी यों पनबल से फेंकी जायगी

२२ और फेन कभी पाइ न जायगी। और वीना वजानेवालों का और वाजेवालों का और वांसनीवालों का और सींगानीयों का सवद तुह में फेन सुना न जायगा और हन ग्रेक वैपान का कानजकानी तुह में फेन पाया न जायगा और चकी का सवद
२३ तुह में फेन न सुना जायगा। और दीपक का पनकास तुह में फेन न होगा और तुह में दुलहा दुलहीन का सवद कभी सुना न जायगा कयोंकी तेने वैपानी पीनथीवी के महाजन थे कयोंकी
२४ तेने टोना से समसत जात ठगे गये। और आगमगयानीयों और सीधो का और जीतने पीनथीवी पन मानें गये थे उनका लोऊ उसी में पाया गया।

१९ उनीसवां पनव्र।

१ इन वसतुन के पीछे मैं ने सनग में वड़ी मंडली का सा सवद ग्रह कहते सुना की हलेलूया ईसन का धन माना मुकत और महीमा और पनतीसठा और पनाकनम हमाने पनभु ईसन के लीये।
२ कयोंकी उसके नयाय सत और जथानथ हैं इस लीये की उसने उस वड़ी वेसवा का जीसने अपने छीनाला से पीनथीवी को सड़ा दीया नयाय कीया और अपने दासों के लोऊ का पलटा उसके
३ हाथ से लीया। फेन उनहों ने दुसनी वान कहा की हलेलूया
४ धंन माना और उसका धुआं सनवदा के लीये उठता है। और वे चौवीस पनाचीन और चान जंतु औंधे गीन पड़े और ईसन को जो सींहासन पन वैठा है यूं कहीके पुजा की की आमीन
५ हलेलूया। और सींहासन से ग्रह कहते हुग्रे ग्रेक सवद नीकला की तुम जो उसके दास हो और तुम जो उस से डनते हो कया छोटे और कया वड़े सव हमाने ईसन का धंन
६ माना। और मैं ने वड़ी मंडली का सा सवद और वहुत से पानीयों का सा सवद और महा गनजने का सा सवद ग्रह कहते सुना की हलेलूया कयोंकी सनवसामनथी पनभु ईसन

७ नाज वनता है। हम आनंद और ऊलास करें और उसको महीमा देवें कयोंकी मेमना का व्रीवाह आ पऊंया और उसकी
८ पतनी ने अपने को सीघ कीया है। और उसे दीया गया की वुह मेहीन और सुघ और जगमगी व्रसतन से पहीनाइ जाय
९ और मेहीन व्रसतन घनमीयों का कनम है। और उसने सुह से कहा की लीष्प घंन वे हैं जीनका नेउता मेमना के व्रीवाह की व्रीयानी में कीया गया है और उसने सुहे कहा की ये इसन के
१० सत व्रयन हैं। और उसकी पुजा के लीये मैं उसके यनन पन गीन पड़ा और उसने सुहे कहा की देप्प ऐसा नकन की मैं तेना और तेने भाइयों का जीन पास यसु की साप्पी है संगी सेवक ऊं इसन की सतुत कन कयोंकी आगमगयान का आतना यसु
११ की साप्पी है। फेन मैं ने सनग को प्पुला देप्पा और कया देप्पता ऊं की ऐक सेत घोड़ा और वुह जो उस पन यढ़ा था व्रीसवासी और सत कहावता था और वुह घनम से नयाय और
१२ जुघ कनता है। उसकी आंप्पें अगीन के लवन कीसी थीं और व्रऊत से सुकुट उसके सीन पन थे जीस पन ऐक नाम लीप्पा था
१३ की उसको छोड़ कोइ न जानता था। और वुह लोऊ में व्रोने ऊऐ व्रसतन से व्रीभुसीत था और उसका नाम इसन का व्रयन
१४ कहावता था। और सेना जो सनग में हैं मेहीन और सेत और सघ व्रसतन पहीने ऊऐ सेत घोड़ों पन उसके पीछे पीछे होलीयां।
१५ और उसके मुंह से योप्पा प्पड़ग नीकला की वुह उस से अन देसीयों को मानें वुह लोहे के दंड से उन पन पनभुता कनेगा और वुह सनव्रसामनथी इसन के कोप और जलजलाहट के
१६ कनोघ की मदीना के कोलऊ को लताड़ता है। और उसके व्रसतन और जांघ पन यह नाम लीप्पा था नाजाओं का नाजा
१७ और पनभुन का पनभु। फेन मैं ने ऐक दुत को सुनज में प्पड़ा ऊआ देप्पा उसने सानें पंछीयों को जो आकास के मघ में उड़ते हैं यह कहीके व्रड़े सव्रद से पुकारा आओ और अती महान

१८ इसन की व्रीय्रानी में प्रेकठा होश्रो। की तुम नाजाश्रों का मांस श्रोन सेनापतीय्रों का मांस श्रोन पनाकनमोय्रों का मांस श्रोन घोड़े का श्रोन उनके यढ़नेवालों का श्रोन नीनव्रंधों का श्रोन व्रंधापमानों का कय्रा छोटों का कय्रा व्रड़ों का मांस प्याश्रो।
१९ फेन मैं ने उस पसु को देप्पा श्रोन पीनथीवी के नाजा श्रोन उन की सेना प्रेकठे ऊइ की उस से जो घोड़े पन यढ़ा था श्रे उसकी
२० सेना से लड़े। श्रोन वुह पसु श्रोन उसके संग वुह झुठा श्रागम गय्रानी जीसने उसके श्रागे श्रासयनज दीप्पाय्रे जीस से उसने उनको जीनहों ने उस पसु के यीनह को लीय्रा श्रोन उनको जो उसकी मुनत को पुजते थे छल दीय्रा दोनो के दोनो उस उस श्राग की झील में जो गंधक से जल नही है जीते डालेगय्रे।
२१ श्रोन व्रये ऊप्रे लोग उस प्पड़ग से माने गय्रे जो उस घोड़े के यढ़नेवाले के मुंह से नीकलता था श्रोन सानेे पछी उनके मांस से श्रघा गय्रे।

२० व्रीसवां पनव्र।

१ फेन मैं ने प्रेक दुत को उस श्रथाह गड़हे की कुंजी श्रोन प्रेक व्रड़ा सीकन हाथ में लीय्रे ऊप्रे सनग से उतनते देप्पा।
२ श्रोन उसने उस श्रजगन को उस पुनाने सांप को जो इव्रलीस श्रोन सैतान है पकड़ा श्रोन सहसन व्रनस लों जकड़ नप्पा।
३ श्रोन उसको उस श्रथाह गड़हे में डाल दीय्रा श्रोन व्रंद कनके उस पन छाप कीय्रा जीसतें वुह श्रागे लोग को छल न देवे जव्र लों प्रेक सहसन व्रनस पुने न होवें तव्र श्रव्रस है की वुह
४ थोड़े समय्र के लीय्रे छुट जाय्र। फेन सींहासनों को श्रोन उन पन के व्रैठनेवालों को मैं ने देप्पा श्रोन नय्राय्र उनहें दीय्रा गय्रा श्रोन उनके श्रातमाश्रों के जीनके सीन य्रसु की साप्पी श्रोन इसन के व्रयन के लीय्रे काटे गय्रे श्रोन जीनहों ने न तो उस पसु को श्रोन न उसकी मुनत को पुजा श्रोन न उसका यीनह श्रपने

कपालों पन औान अपने हाथों पन लीया औान वे जीये औान
५ मसीह के संग सहसन वनस लों नाज कीये। पनंतु नहे रूपे
लोग न जीये जव लों सहसन वनस पुने न रूपे यह पहीला
६ पुननुथान है। धंन औान पवीतन वुह जो पहीले पुननुथान
में भाग नप्पता है ऐसों पन दुसने मौनतु का पनाकनम नहीं पनंतु
वे इसन औान मसीह के याजक होंगे औान उसके संग सहसन
७ वनस लों नाज कनेंगे। औान जव सहसन वनस हो युकेंगे
८ सैतान अपने वंधन से छुटेगा। औान वुह उन जातों को जो
पीनथीवी के यानों प्पुंट में हैं अनथात जुज औान माजुज को
जुध के लीये ऐकठे कनके नीकलेगा जीनकी गीनती समुदन के
९ वालू के तुल है। वे पीनथीवी की यौड़ा पन यड़गये औान सीधों
की छावनी को औान पीनीय नगन को घेनलीये तव सनग से
१० इसन के पास से आग उतनी औान उनको भछ कीया। औान
सैतान जीसने उनको छल दीया आग औान गंधक की झील में
डाला गया जहां वुह पसु औान वुह झुठा आगमगयानी है औान
११ नात दीन सनवदा सनवकाल पीड़ा में नहेंगे। फेन मैं ने ऐक
वड़ा सेत सींहासन को औान उसको जो उस पन वैठा था देप्पा
जीसके सनमुप्प से पीनथीवी औान सनग भाग गये औान उनके
१२ लीये कहीं सथान न मीला। फेन मैं ने देप्पा की मीनतक
कया छोटे कया वडे इसन के आगे प्पडे हैं औान पोथीयां प्पोली
गइं औान ऐक दुसनी पोथी जो जीवन की है प्पोली गइ औान उन
पोथीयों में लीप्पे के समान जैसी उनकी कननी थी मीनतकन
१३ का वीयान कीया गया। औान समुदन ने उन मीनतकन को
जो उस में थे औान मीनतु औान पनलोक ने उन मीनतकन को जो
उनमें थे सोंप दीया औान हन ऐक का उसकी कननी के समान
१४ वीयान कीया गया। फेन मीनतु औान पनलोक आग की झील
१५ में डाले गये यह दुसनी मीनतु है। औान जो जीवन के पुसतक
में लीप्पा न था वुह आग की झील में डाला गया।

२१ इकीसवां पत्र।

१ फेर मैं ने एक नये सरग और एक नइ पीरथीवी को देष्या क्योंकी अगीले सरग और अगीली पीरथीवी जाती रही और
२ कोइ समुद्र न था। और दुलहीन की नाइ जो अपने पती के लीये सीघ और वीभुसीत होवे मैं युहना ने पवीतर नगरी नइ यीरोसलीम को इसर के और से सरग से उतरते देष्या।
३ और यह कहते मैं ने सरग से एक वड़ा सबद सुना की देष्य इसर का तंबु मनुष्यन के संग है और वुह उनके संग वास करेगा और वे उसके लोग होंगे और इसर उनका इसर उनके वीय
४ में। और इसर उनकी आंष्यों से आंसु पोंछेगा और फेर मीरतु और सोक और रोना पीटना और पीड़ा न होगी
५ क्योंकी अगीली वसतें जाती रहीं। और वुह जो सींहासन पर वैठा था वोला देष्य मैं समसत वसतुन को नइ वनाता ऊं और उसने मुझ से कहा की लीष्य क्योंकी ये वातें सत और
६ परतीत के जोग हैं। और उसने मुझे कहा की हो चुका मैं अलफा और उमगा आद और अंत ऊं मैं उसको जो पीआसा है अमीरत जल के सोते से सेंत देउंगा। जयमान समसत
७ वसतुन का अधीकारी होगा और मैं उसका इसर ऊंगा और
८ वुह मेरा पुतर होगा। परंतु भयमान और अवीसवासी और घीनौना और हतयारा और वैभीचारी और टोनहा और मुरत पुजक और सारे झुठे उसी झील में जो आग और गंधक से जलती है अपना अपना भाग पावेंगे यह दुसरी मीरतु
९ है। अव एक उन सात दुतों में से जीन पास सात कटोरीयां पीछली सात मरी से भरी ऊइ थीं मुझ पास आया और मुझ से यूं कहीके वोला की इधर आ मैं तुझे मेमना की पतनी दुल-
१० हीन को दीष्याउंगा और वुह मुझे आतमा में एक वड़े और उंचे पहाड़ पर ले गया और उसने उस वड़े नगर पवीतर यीरो-

सलीम को सनग पन से इसन के पास से उतनते मुहे दीप्पाया।
११ उस में इसन का तेज था औान उसका पनकास ग्रती मोल के मनी का सा उस सुनजकांत के समान था जो फटीक के ऐसा
१२ नीनमल हो। औान उसकी भीत वड़ी औान उंची थी औान उसके व्रानह फाटक थे औान फाटकों के उपन व्रानह दुत औान उन पन इसनाइल के संतानों के व्रानह घनानों के नाम लीप्पे
१३ छपे थे। पुनव् को तीन फाटक उतन को तीन फाटक दप्पीन
१४ को तीन फाटक औान पछयीम को तीन फाटक थे। औान उस नगन की भीत की व्रानह नेवें थीं औान उनमें मेमना के व्रानह
१५ पनेनीतो के नाम। औान जो मुह से व्रोल नहा था उसके हाथ में सोने का ऐक नल था जीस से वुह उस नगन औान उसके
१६ फाटक औान उसकी भीत को नापे। औान वुह नगन यैकोन था औान उस की लंव्राइ उसकी यैाड़ाइ के समान थी उसने उस नगन को उस नल मे नाप कन व्रानह सहसन व्रान पाया औान
१७ उसकी लंव्राइ औान यैाड़ाइ औान उंयाइ समान थी। फेन उसने भीत को नापा तो उस मनुप्प के हाथ से जो वुह दुत है
१८ ऐक सो यवालीस हाथ पाया। औान उस भीत की जोड़ाइ सुनजकांत की थी औान वुह नगन योप्पे सोने का था नीनमल
१९ कांय के समान। औान उस नगन की भीत की नेवें अनेक पन-कान के मनी से व्रीभुसीत थें पहीली नेंव सुनजकांत की दुसनी
२० नीलकांत की तीसनी लालड़ी की यैाथी गानुतमत की। औान पांयवीं व्रैदुनज की औान छठवीं यंदनकांत की औान सातवीं सुनहले की औान आठवीं लसुनीय़ की औान नवीं पदमनाग की औान दसवीं गोदंत की औान गयानहवी फीनोजा की औान
२१ व्रानहवीं मनतीसे की। व्रानह फाटक व्रानह मोती थे हन फाटक ऐक ऐक मोती का औान उस नगन की सड़क योप्पे सोने
२२ की नीनमल कांय के समान थी। पनंतु मैं ने उस में कोइ मंदीन न देप्पा कयोंकी पनभु इसन सनव्रसकतीमान औान

२३ मेमना उसके मंदीन हैं। श्रोन वुह नगन सुनज श्रोन यंदनमा से कुछ पनयोजन नहीं नप्पता था की उनसे पनकासीत हो कयोंकी इसन के तेज ने उसे पनकास कन नप्पा श्रोन मेमना
२४ उसका पनकास है। श्रोन उन जातों के लोग जीनहों ने मुकत पाइ है उसके पनकास में फीनेंगे श्रोन पीनथीवी के नाजा श्रपनी
२५ महीमा श्रोन श्रपना पनतीसठा उस में लाते हैं। श्रोन उसके फाटक दीन को कभी बंद नहीं होंगे कयोंकी वहां नात नहीं
२६ होगी। श्रोन वे लोगों की महीमा श्रोन पनतीसठा को उस में
२७ लावेंगे। श्रोन कोइ श्रपवीतन श्रोन घीन कानज कननेवाली श्रोन झुट उस में कीसी नीत से पनवेस न कनेगी पनंतु केवल वे ही जो मेमना के जीवन के पुसतक में लीप्पे हैं।

२२ ब्राइसवां पनब्र।

१ श्रोन उसने मुझे श्रमीनत जल की ऐक सुघ नदी नीनमल फटीक के समान इसन के श्रोन मेमना के सींहासन से नीकलती
२ हुइ दीप्पाइ। श्रोन उसके सड़क के मघ में श्रोन उस नदी के वान पान जीवन का ब्रीनछ था जो ब्रानह फल लावता था हन ऐक महीने में ऐक फल श्रोन उस ब्रीनछ के पते लोगों के यंगा
३ कनने के लीये थे। फेन कोइ सनाप न होगा श्रोन इसन श्रोन मेमना का सींहासन उस में होगा श्रोन उसके सेवक उसकी सेवा
४ कनेंगे। श्रोन वे उसका सनप देप्पेंगे श्रोन उसका नाम उनके
५ कपालों पन होगा। वहां नांत न होगी श्रोन उनको दीपक श्रोन सुनज के पनकास का पनयोजन नहीं कयोंकी पनभु इसन उनको पनकासीत कनेगा श्रोन वे सनब्रदा के लीये नाज
६ कनेंगे। फेन उसने मुझे कहा की ये ब्रातें सत श्रोन ब्रीस-वास के जोग हैं श्रोन पवीतन श्रागमगयानीयों के पनभु इसन ने श्रपने दुत को भेजा है की उन ब्रसतुन को जो सीघन होवेंगी

७ अपने दासों पन पनगठ कने। देष्प मैं सीघन आवता ऊं घंन वुह जे। इस गनंथ के आगम की वातों को गनहन कनता है।
८ औान मैं यूहना ने उन वसतुन को देष्पा औान सुना औान जव मैं ने सुना औान देष्पा मैं उस दुत के यनन पन जीसने ये वसतें
९ मुहे दीष्पाइं पुजा के कानन गीन पड़ा। तव उसने मुहे कहा यैाकस नह पैसा न कन कयोंकी मैं तेना औान आगमगयानीयों का जो तेने भाइ हैं औान उनका जो इस गनंथ की वातों को
१० गनहन कनते हैं संगी सेवक ऊं इसन को भज। फेन उसने मुह से कहा की तु इस गनंथ के आगम की वातों पन छाप मत
११ कन कयोंकी समय नीकट है। जो अनयायी है सो अनयायी हो नहे औान जो मलीन है सो मलीन हो नहे जो घनमी है सो
१२ घनमी हो नहे औान जो पवीतन है सो पवीतन हो नहे। औान देष्प मैं सीघन आवता ऊं औान मेना फल मेने संग है की हन
१३ पेक को उसके कानज के समान पलटा देउं। मैं अलफा औान
१४ उमगा आद औान अंत आनंभ औान समापत ऊं। घंन वे हैं जो उसकी अगया पन यलते हैं की वे जीवन के वीनछ के जोग होवें
१५ औान वे उन फाटकों से नगन में पनवेस कनें। कयोंकी कुते औान टोनहा औान छीननेे औान हतयाना औान मुनत पुजक औान जो कोइ झुठ वोलता है औान उसे पीआन कनता है सव वाहन हैं।
१६ मैं यसु ने अपने दुत को भेजा है की इन वातों की साष्पी तुहे मंडलीयों में देवे मैं दाउद का मुल औान वंस औान पनातःकाल
१७ का तेजसी तानाा ऊं। औान आतमा औान दुलहीन कहतीं हैं आ औान वुह जो सुनता है कहे आ औान जो पीआसा है सो
१८ आवे औान जो कोइ याहे सो अमीनत जल संत से लेवे। औान मैं हन पेक जन के लीये जो उन आगम की वातों को जो इस गनंथ में हैं सुनता है यह साष्पी देता ऊं की यदी कोइ इन वातों में कुछ मीलावेगा तो इसन उन मनीयों को जो इस
१९ गनंथ में लीष्पी ऊइ हैं उस में मीलावेगा। औान यदी कोइ

इस ग्रंथ के आगम की बातें में से कुछ नीकाल डाले तो ईसर
उसका भाग जीवन के पुसतक और पवीतर नगर से और उन
२० बसतुन से जो इस ग्रंथ में लीख्खी हैं दुर करेगा। जो इन
बसतुन की साख्खी देता है यह कहता है की मैं नीशचय सीघर
आवता हुं आमीन हां हे परभु यसु आ हमारे परभु यसु मसीह
का अनुगरह तुम सभों पर होवे आमीन।